Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम रसायन

१६२१

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कविचक्रवर्त्ति केशवदासविरचित

रामचन्द्रायन

रसायण.

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ श्रीः ॥

रामरसायन।

गोलोकवासी रामभक्त कविवर

रसिकविहारी-कृत।

जिसमें

सच्चिदानंद आनंदकंद जगवंद्य कोशलराज श्रीमन्महाराज रामचंद्रजीकी संपूर्ण नरलीला सुखशीला हरिकथामृताभिलाषियोंके पानार्थ विविध प्रकारके मनहरण छन्दोंमें वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीमान् महाराज कनोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजी की आज्ञानुसार और सहायतासे,

कलिमलग्रसित मनुष्योंके उपकारार्थ

अत्यंत शुद्धता और स्वच्छता पूर्वक

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकट किया।

पौष संवत् १९७८, शके १८४३.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार "श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षने स्वाधीन रक्खाहै

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रस्तावना.

महाशय काव्यानुरागियो ! इस नवीन काव्यशिरोमणि पदललित भावकूट ग्रन्थके अवलोकन करनेसे अवश्य अतुल प्रेम उत्पन्न होकर श्रीरामचन्द्रजीकी भक्तिका प्रवाह हृदयमें विस्तृत होताहै. इसे श्रीमान् महाराजाधिराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजीकी सभास्थ कवियोंमें अग्रगण्य श्रीरामचंद्रकृपाधिकारी गोलोकवासी कविवर रसिकविहारीजीने समस्त प्राणियोंके भवसागर उत्तीर्णार्थ श्रीरघुनाथजीके जन्मकी मनोहर कथा, व्याहोत्सव, वनगमन, विपिनचरित्र, सुग्रीवमिलन, अंजनीनंदनका लंकागमन, बिभीषण आगमन, रावणवध, राज्याभिषेक, रामाश्वमेध, सीतारामरासविलास इत्यादि कथाएँ मनोहर छंदोमें वर्णन की हैं, उक्त कविने जो मनभावन रुचिउपजावन रामयश वर्णन किया है, वह समस्त प्रेमी जनोंके दृष्टिगोचर है.

आपका-विद्वज्जनकृपाकांक्षी-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्ष-मुंबई

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली सम्बादा जैन निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर वहीं प्रकाशित किया।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भूमिका।

प्रकट हो कि प्राकृत काव्योंमें अग्रगण्य यह नवीन ग्रंथ "रामरसायन" श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणके आशयसे रचागया है, इसमें श्रीमद्रामचंद्रजीके जन्मसे स्वर्गगमन पर्यंतके परमपावन तथा अद्भुत-चरित्र श्रुतिस्मृति पुराणादिकोंके उदाहरणों युक्त वर्णित है; इस प्रमाणिक ग्रंथमें काव्यभी ऐसी ललित मनभावन रुचि उपजावन है कि जिसके पठन पाठनसे कलिमलग्रसित मनुष्योंका हृदयाब्ज भगवद्भक्तिरूपी अखंड मार्त्तंडकी दीप्तिसे विकसित तथा आह्लादित होता है. किंतु वे बिनाप्रयास भवसागरोत्तीर्ण होवे हैं;इसके रचयिता गोलोकवासी श्रीमहाराज जानकीप्रसादजी अयोध्याकनकभवनके महंत जिनका उपनाम रसिकविहारीजी तथा रसिकेश करके कवितामें प्रसिद्ध है.उक्त कविवरजीने इसके सिवाय २६ छब्बीस ग्रंथ और रचे हैं जिनका चक्र पृष्ठ ३ में है,अब छब्बीसमेंसे जितने ग्रंथ जिस स्थानसे प्रकाशित हुये हैं उनकी व्यवस्था नीचे लिखी जाती है कि काव्यरसिक वहाँसे लेकर मुदित होवें.

अमदाबाद मामाकी हवेली युनाइटेड प्रेन्टिंगप्रेसमें "१ काव्य सुधाकर" "२ सतरंजबिनोद" श्रीकाशीजी अमरयंत्रालयमें "१ इश्क अजायब" "२ ऋतुतरंग" और वहीं तिमिरनाशक यंत्रालयमें "१ विरहदिवाकर" और वहीं मु० नैपालीखपरा हरिप्रकाश यंत्रालयमें "१ रसकौमुदी" "२ सुमतिपचीसी" ३ सुयशकदम" लखनऊ पं० वैजनाथजीके यन्त्रालयमें "कानून मजमूआ" जावते अदालत निस्बत कुलरियासत पन्ना, यह पुस्तक विना पन्ना रियासतकी आज्ञाके नहीं मिलती; श्रीउदयपुर सज्जनंयत्रालयमें "राग चक्रावली" कानोड रावतजी साहेब श्रीनाहरसिंहजीने अपने व्ययसे छपवाइके बिना मूल्य प्रदान करते हैं जिस किसीकी इच्छा हो मँगालेवे, अब २६ के सिवाय ग्रंथ लिखे जाते हैं, "१ संग्रहकवित्तावली" सुंदर २ कवित्त सवैया प्रत्येक विषयोंके हैं, "२ मदनमंजन" मित्रद्रोहके विषयमें; "३ संगृहीत संग्रही" गानेकी चीजैं पद ठुमरी ग़जल इत्यादि हैं; "४ गुप्त पचीसी" आदि छोटे २ ग्रंथ और भी हैं विशेष ग्रंथकर्त्ताका वृत्तान्त स्थान जन्मकुंडली पृष्ठ नं४ में स्पष्ट लिखा है—

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीरसिकविहारीजी श्रीअयोध्याजीसे आनन्दपूर्वक तीर्थाटन करतेहुए मेवाड़में चित्रकोट उदयपुरके समीप स्थान कानोड श्रीमद्रावतजी साहब श्रीनारहसिंहजीके यहां पधारे सत्संग करके इनसे अत्यन्त प्रसन्न हुए.और वहाँ स्वस्थितिकी रुचि प्रकट की, अतएव कविराजके चित्तकी वृत्तिसे श्रीमद्रावत महाशयजी सौख्यप्रद स्थानमें स्थापीकर सत्संग सुखामृत पान करते रहे, उसी सुख सरसावन समयमें श्रीमद्रावतजीकी अनुमतिसे उक्त ग्रंथ निर्मित हुआ जो आपलोगोंके दृष्टिगोचर है—

अब संक्षेपसे सूर्यवंश शिशोदियाकी वंशोत्पत्ति लिखते हैं, श्रीरघुकुल मुकुटमणि श्रीमद्रामचन्द्रजीके पूर्व पिता पितामहादिकोंकीवंशावली तो श्रीमद्भागवतादि पुराणोंमें स्पष्ट लिखी है तथा कुछ इस पुस्तक पृष्ठ नं० १७में भी कही है, श्रीरामचंद्रजीके पुत्र लवजीसे शिशोदिया वंश वृद्धिका वृत्तांत ऐसा है कि १ लवके पुत्र २ अतिथि इनके पुत्र ३ नशीद इनके ४ नभ आदि लेके राजा हुये, और १ पद्मादत्तजीसे दत्तनाम कहलाये इनके पुत्र २ शिवादत्तजी इनके३हीरादत्तजी आदि हुये, और १ रावल बापाजीसे रावल कहलाये, इनके पुत्र२ रावल षुमाणजी इनके रावल३गोइंदजी आदि लेकरके हुये और महाराणाजी रायबजीसे राणा कहलाये, और वर्त्तमान मेदपाठ चित्रकोट उदयपुरके महाराणाजी कहलाते है, इस वंश में बडे २ प्रतापी हुये इनके बहुतसे ग्रंथ हैं, और कितनेही इतिहास टाटनामा आदि प्रसिद्ध है; इहोंने कितनेही यवन बादशाहोंसे युद्धकर विजय प्राप्त की है प्रायःप्रतिदिन इस वंशकी उन्नति होतीरही, और इस वंशके आचार ऐसे हैं, "श्लोक ॥ देवः श्रीएकलिंगो हरित ऋषिगुरुर्वाणमाताकुलंबा पर्वाणित्रीणिसूत्रे यजुरितिनिगमःशाखमाध्यं-दिनीये ॥ वाप्ये मूलंनरेशो द्विजसुरभिदया वैजवापायनगोत्रे चित्राद्रि-र्मूलभूमिर्दशरथभिरथैर्जातशीशोदवंशः ।।१।।" और वर्त्तमान आर्यकुलक-मल दिवाकर महाराणाजी श्री१०८श्रीफतहसिंहजी मेदपाठेश्वर हैं सना-तन धर्मपर पूर्ण दृष्टि है और राज्यकार्य मन्वादि स्मृतियोंक अनुकूल वर्त्तते हैं जिससे प्रजा परमानंदित है, श्रीजगदीश्वर दीर्घाऽऽयु करें।

अब हम कानोड रावतजी साहबके वंशका वर्णन करते हैं, मेदपा-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ठेश्वर महाराणाजी श्रीलाषाजीके कुँवर १ अजोजी हुये उनके महारावतजी २ श्रीसारंगदेव जी जिससे सारंग देवोत्कहलाए और वंश चला. सारंगदेवोत्पुत्र ३ जोगोजी उनके पुत्र ४ नृपतजी उनके पुत्र ५ नेताजी उनके पुत्र ६ भाणजी उनके पुत्र ७ जगन्नाथसिंहजी उनके पुत्र ८ मानसिंहजी उनके पुत्र९महासिंहजी उनके पुत्र छोटा १० सारंगदेवजी उनके पुत्र ११ पृथ्वीसिंहजी उनके पुत्र १२ जगत्सिंहजी उनके पुत्र १३ जालमसिंहजी उनके पुत्र १४ अजित्सिंहजी उनके पुत्र १५ उमेदसिंहजी उनके पुत्र वर्त्तमान १६ श्रीनाहरसिंहजी इन्हींके बडोंने कई युद्ध करके महाराणासाहबकी विजय करी जिसके कितनेही काव्य हैं, और कितनेही प्रशंसनीय प्रशंसापत्र हैं विशेष विस्तार होनेसे नहीं लिखा महाराजाजी श्रीउमेदसिंहजी महारावतजी श्रीनाहरसिंहजीके पिताथे वे बहुत धर्मज्ञ श्रुतिस्मृति धर्मानुचरण परमार्थिक व्यावहारिकादि कार्योंमें तत्पर थे, जिनकी पूर्व प्रशंसा लिखनेमें लेखनी कटिबद्ध नहीं होती, श्रीमद्रावत नाहरसिंहजीके लघुभ्राता लक्ष्मणसिंहजी परमोदार दयालु शुद्ध अन्तःकरणसे परस्पर भ्रातृस्नेह रखते हैं; जहाँ तक इनकी प्रशंसा लिखी जावे वह थोड़ी है. श्रीमद्रावत नाहरसिंहजीकी सनातन धर्मपर विशेष दृष्टि रहती है और सर्व कामोंमें कुशल हैं, निदानं हम इनकी चातुरीकी प्रशंसा कहांतक लिखैं, पाठकोंको इस ग्रन्थके अवलोकन करनेसे महाराज जानकीप्रसादजीकी बुद्धिमत्ता ज्ञात होगी; कि ये नूतन कवियोंमें अग्रगण्य इस कारण हुए; और उनके स्नेही श्रीमद्रावत नाहरसिंहजीकी सज्जनता और चातुरता प्रकट होगी कि जिन्होंने ऐसे परमोदार महात्माको निवास कराय निजव्ययसे लोकहितार्थ उक्त ग्रन्थ मुद्रित कराय प्रसिद्ध किया; ऐसे परोपकारोद्यत श्रीरावत नाहरसिंहजीको शतशः धन्यवाद देते हैं, दीर्घाऽऽयु; जगदीश्वर देवें ॥ श्लोक ॥ श्रीमज्जानकीदासेन कृत्वा रामरसायनम् ॥ भूयास्तच्छ्रेयसे नृणां राघवाय समर्पितम्॥१॥ उर्वीमंडलमंडिते धनवतां प्रज्ञावतां सौख्यदे कानोडे पृथुमंदिरे सुनगरे दंड्यान् पुनर्दंडयन् ॥ नित्यं च प्रतिपालयन् विनयिनः पाखंडिनः खंडयन्नस्ति श्रीनृपनाहरसिंहसुमतिः सत्पण्डितान्मं-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

डयनू॥ २॥कवित्त॥रामचन्द्र वारि क्रतुराज नित पूर चहु सावसुख लीन्हें मतवेदित अनन्दके॥गुरु वेद पितु मातु आज्ञा अनुकूल रहे सुजनकुंटुबीप्रजा मोदरस कंदके ॥ लक्ष्मणसो भ्राता लक्ष सत्यको सुरक्षन हैं शांति स्वरूप स्वच्छ अच्छ मनुचंदके ॥ अवध नरेशवारि विभूति विचारि आजु रसिक-विहारी सारी नाहरनरेन्दके ॥ ३ ॥

इति ॥

आपका कृपापात्र-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालय मुंबई.

इसके आगे श्रीमहाराजजीकी संस्कृत प्रशस्तिपत्रिका है.
अवश्य देखनेयोग्य है.-

॥ श्रीः ॥

प्रशस्तिपत्रम् ।

पृथ्वीमण्डलमण्डनायितमहापाण्डित्यवन्मण्डितोनानादेशविदेशवासिविबुधप्रत्यक्षकल्पद्रुमः ।
धैर्योदार्यसुवीर्यशौर्यसुकलाशौटीर्यशाली सदाश्रीमन्नाहरसिंहरावतमहाराजोऽवतान्मेदिनीम् ॥ १ ॥
धन्यं गोत्रमिदं हि भूमिवलयं श्रीबैजवापायनं धन्यं तत्कनकं पुरं च विमलः शीशोदवंशः कृती ॥
यत्र श्रीमदुमेदसिंहधरणीनाथात्मजो राजते श्रीमन्नाहरसिंहरावतमहाराजोऽधिराजश्रिया ॥ २ ॥
विद्याबुद्धिविवेकनीतिनिपुणःसद्धर्मविश्रंभवान्गोविप्रप्रियसर्वकार्यकरणे दक्षः सभेयप्रियः ॥
श्रीमन्नाहरसिंहरावतमहाराजानुजो भाग्यवाञ्श्रीमल्लक्ष्मणसिंहजिद्विजयतां सौभाग्यसंपत्तिभिः ॥
श्रीमंताविह मुंबयीपुरि यदाऽऽयातोतदास्वोत्सवादागम्यातिसुशोभितं मम महाभाग्येन मुद्रालयम्
दृष्टं सर्वमपीह कृत्यभवनं संभाषिताः शास्त्रिणो मन्ये धन्यमिदं शुभागमवशाच्छ्रीवेङ्कटेशालयम् ॥
श्रीमन्नाहरसिंहरावतमहारा जैर्विपश्चिद्गणाः सन्मान्या अतिमानिता इति यशो लोकत्रयं व्याश्नुते ॥
तच्चैतादृशसाधुवर्यरचितग्रंथप्रकाशाज्ञया सत्यं स्वानुभवप्रसिद्धमिति तान्वन्यांश्च मन्यामहे ॥५॥
श्रीजानकीप्रसादेन कविना राचतं शुभम् । सर्वार्थसाधनपरं श्रीमद्रामरसायनम् ॥ ६ ॥
अस्य प्रकाशनं कर्तुं सर्वोपकरणक्षमः । प्रैषयन्मुद्रणागारे श्रीमन्नाहरसिंहजित् ॥ ७ ॥
तन्मया सुंदरैर्वर्णैः पुष्टचिक्कणपत्रके । स्वकीये "श्रीवेंकटेश" मुद्रायंत्रे सुमुद्रितम् ॥ ८ ॥
एतद्ग्रंथप्रकाशेन मोदंतां सज्जनाः सदा । महाराजयशश्चापि त्रैलोक्यं पूरयत्वलम् ॥ ९ ॥
श्रीकृष्णदासतनयः खेमराजाभिधेयवान् । विद्वद्गुणगणप्रेमी समाशास्ते प्रशस्तिकाम् ॥ १० ॥

महाराजविजयाभिलाषी-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बंबई.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीवेङ्कटेशाय नमः ।

अथ रामरसायनकी अनुक्रमणिका ।

विधान	विभाग	विषय	पृष्ठांक
(१)	१	वंदना-श्लोक मालिनीछंद	१
,,	,,	रसिकविहारीकृत ग्रंथचक्र	३
,,	,,	रसिकविहारीकी कुण्डली	४
,,	२	वंदना तथाकविके हृदयमेंभगवत्की प्रेरणाकथाप्रबंध	५
(२)	१	अवधराजश्रीवर्णन	१४
,,	२	दशरथयज्ञवर्णन	१९
,,	३	हनुमज्जन्मवर्णन	२१
,,	४	श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नकी जन्मकुण्डलीतथाश्री रामचन्द्रजीकेवश्रीलक्ष्मणादिकेसखायोंका निर्णयचक्र तथा रामजन्मोत्साह वर्णन	३०
,,	५	रघुचरित्र वर्णन	५२
,,	६	रावण वृत्तान्त वर्णन	५६
,,	७	श्रीसीताजन्म वणन	६२
,,	८	शुकचरित्र वर्णन	७३
,,	९	कुलदेव पूजन वर्णन	७८
(३)	१	धनुषयज्ञारंभ वर्णन	८१
,,	२	विश्वामित्रको अयोध्याप्रति आगमन वर्णन	८४
,,	३	विश्वामित्र चरित्र वर्णन	९०
,,	४	जनकपुर दर्शन वर्णन	९८
,,	५	वाटिका प्रसंग वर्णन	१०४

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विधान	विभाग	विषय	पृष्ठांक
,,	६	धनुषभंग वर्णन	११६
,,	७	परशुराम संवाद वर्णन	१२३
,,	८	विवाह वर्णन	१३०
,,	९	हास विलास वर्णन	१३८
,,	१०	श्रीजनकनन्दिनी बिदा वर्णन	१४९
,,	११	विवाहान्त वर्णन	१४७
(४)	१	श्रीरामवनगमन वर्णन	१५७
,,	२	ग्रामवधू समागम वर्णन	१७६
	३	ग्रामवधू विलाप	१८७
,,	४	ग्रामवधू नेहकथन	१९५
,,	५	चित्रकूट निवास वर्णन	१९८
,,	६	दशरथराज देहत्याग वर्णन	२००
,,	७	रामभरत संवाद वर्णन	२०४
,,	८	चित्रकूट चरित्र वर्णन	२१०
,,	९	मुनिसमागम वर्णन	२१६
,,	१०	पंचवटीवास वर्णन	२१८
(५)	१	सीताहरण वर्णन	२२४
,,	२	जनकनंदिनी विलाप वर्णन	२३०
,,	३	रघुनंदनविलाप वणन	२३६
,,	४	रघुनंदनका लक्ष्मणसहित वन अटन ...	२४९
,,	५	सुग्रीव मिलाप वर्णन	२५६
,,	६	वालिवध वर्णन	२६३
,,	७	जनकनंदिनीशोध वर्णन	२६७
,,	८	हनुमानजीका जनकनंदिनी दशन वर्णन ...	२७४
,,	९	लंकादहन वर्णन	२८८
,,	१०	सीता संदेश प्राप्ति वर्णन	२९७

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विधान	विभाग	विषय	पृष्ठांक
,,	११	श्रीरघुनाथजीका ससैन्य लंकापयानवर्णन...	३०५
(६)	१	रावणसभा मंत्र वर्णन	३०९
,,	२	विभीषण शरणागत वर्णन	३१५
,,	३	सेतुबंधन वर्णन	३२२
,,	४	रावणदूत प्रेषण वर्णन	३२६
,,	५	दलथापन वर्णन	३३१
,,	६	रावणसुग्रीव मल्लयुद्ध वर्णन	३३४
,,	७	अगद रावण संवाद वर्णन	३३७
,,	८	नागफांस बंधमोचन	३४२
,,	९	धूम्राक्ष प्रहस्तादि युद्ध तथा वध वर्णन ...	३४९
,,	१०	रावण युद्ध वणन	३५२
,,	११	कुम्भकर्ण युद्ध तथा वध वर्णन ...	३६१
,,	१२	नरान्तक अतिकायादि युद्ध वर्णन ...	३६८
,,	१३	इन्द्रजित अंतरिक्ष युद्ध वर्णन ...	३७३
,,	१४	लंकादहन तथा मकराक्ष युद्ध वध वर्णन ...	३७८
,,	१५	मेघनाद युद्ध व वध वर्णन	३८३
,,	१६	सुलोचना सत्य वर्णन	३९४
,,	१७	महिरावण वध वर्णन	३९६
,,	१८	मूलदल युद्ध वध वर्णन	४००
,,	१९	रावण युद्ध कालनेमि वध वर्णन ...	४०२
,,	२०	रावण युद्ध वध वर्णन	४१२
,,	२१	श्रीसीताराम मिलन वर्णन ...	४२७
(७)	१	श्रीरामचन्द्र अवध आगमन वर्णन ...	४३३
,,	२	श्रीरामचन्द्र राज्याभिषेक वर्णन ...	४४१
,,	३	श्रीरामचन्द्र राज्यरीति वर्णन ...	४४७
,,	४	वाक्य विलास वर्णन	४५२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विधान	विभाग	विषय	पृष्ठांक
,,	५	सतसंग वर्णन	४६१
,,	६	सुग्रीवादि गमन वर्णन	४७४
,,	७	न्याय वर्णन	४७७
,,	८	लवणासुर वध वर्णन	४८०
,,	९	द्विजपुत्र संजीवन वर्णन	४८३
,,	१०	महारावण वध वर्णन	४९०
,,	११	हनुमत पर्यटन वर्णन	४९६
,,	१२	गौरांग कथा वर्णन	४९८
(८)	१	विहारविधाने अष्टयाम रीति वर्णन ...	५०२
,,	२	हिंडोल विहार वर्णन	५०९
,,	३	रासविहार वर्णन	५२०
,,	४	मिथिला विहार वर्णन	५२८
,,	५	फाग विहार वर्णन	५४४
,,	६	कुशलवादि जन्म वर्णन	५५३
,,	७	अश्वमेध यज्ञारम्भ सुबाहुयुद्ध वर्णन ...	५५८
,,	८	विद्युन्माली युद्ध वर्णन	५६४
,,	९	वीरमणि युद्ध वर्णन	५६६
,,	१०	सुरथ युद्ध वर्णन	५७२
,,	११	लव कुश युद्ध वर्णन	५७८
,,	१२	अश्वमेध यज्ञान्त वर्णन	५८७
,,	१३	राज्यविभाग वर्णन	५९३
,,	१४	श्रीरामचरित्र प्रभाववर्णन	५९८
,,	१५	सुरलोक विहार वर्णन	६००

इति अनुक्रमणिका समाप्त

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ श्रीरामरसायनकी सूचनिका ॥

विधान	॥१॥	॥२॥	॥ ३ ॥	॥४॥	॥ ५ ॥	॥ ६ ॥	॥ ७ ॥	॥ ८ ॥
नाम	निर्णय	जन्म	विवाह	बन	विधान	युद्ध	अभिषेक	विहार
विभाग	॥२॥	॥९॥	॥ ११ ॥	॥१०॥	॥ ११ ॥	॥ २१ ॥	॥१२ ॥	॥ १५ ॥
पत्रा	॥९॥	॥५७॥						

॥ निर्णय ॥ १ ॥ प्रथमविधानकी सूचनिका ॥ १ ॥

विभाग	वर्णन	पत्रा
॥ १ ॥	ग्रन्थकारव्यवस्था	३
॥ २ ॥	प्राचीनप्रमाण	९

॥ जन्म ॥ २ ॥ द्वितीयविधानकी सूचनिका ॥ २ ॥

विभाग	वर्णन	निर्णय	पत्रा
॥ १ ॥	अवधराज श्री		१६
॥ २ ॥	दशरथयज्ञ		२३
॥ ३ ॥	हनुमतजन्म		२६
॥ ४ ॥	श्रीरामजन्म		३७
॥ ५ ॥	रघुचरित्र		६३
॥ ६ ॥	रावणवृत्तान्त		६९
॥ ७ ॥	श्रीसीताजन्म		७७
॥ ८ ॥	शुकचरित्र		९०
॥ ९ ॥	कलदेवपूजन		९७

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छंदनाम	इस छन्दके चारौ चरणमें इतने वण सही	इस छंदके चारौ चरण में इतने वण अनुमानसे	यह छंद बत्तीस वर्णके हिसाबसे इतने श्लोककाहै	यह छंद ग्रंथभर में सब इतने ह	यह सब छद ग्रंथ भरके इतनी संख्या ३२ वर्णके हिसाबसे है
मालिनि	६०		३॥=)	१	२
उपजाति	४४		१=)	१३	१८
शार्दूलवि०	७६		२॥=)	७	१६
श्रुति	५८			९	२
इंद्रवज्रा	४४			२	३
वसंततिलका	५६			२	४
उपेंद्रवज्रा	४४			७	१०
रथोद्धता	४४			१	१
अनुष्टुप	३२			३५७	३५७
कुमारदंडक	१५२			४	१९
घनाक्षरी	१२४			४०३	१५६२
दोहा	३६			२४५१	२७५७
चौपाइ	४८			१४४७	२१७०
सोरठा	३६			२६७	३००
काव्य	५६			८	१४
हरिगीतिका	८०			१२७	२१८
सवैया	९६			१३१	३९३
पद्धरी	५२			२८९	४७०
छप्पय	११२			१	३
तोमर	४०			२७९	७०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्रिभंगी	९२			२१	६०
भुजंगप्रयात	४८			१८	२७
दोवइ	८४			३८१	१०००
बरवै	२४			८५	६४
कुंडलिया	९६			६	१८
दंडक	१२८			७	२८
तोटक	४८			४८	७२
पद्धरी	६०			१६	३०
कवित्त	५६			६८	११९
हरिक	६४			१३	२६
अधावेला	६०			१५	२८
लीला	३६			५	६
चारी	८०			३५	८८
नगस्वरूपिणी	३२			४	४
चौपैया	८८			१९	५२
भीम	६०			४१	७७
चामर	६४			१०	२०
मोतीदाम	४८			३१	४६
चक्र	६०			१७	३२
अमृतध्वनि	१२१			१	४
भुजंगी	४४			७	१०
लतिका				२६	४५
					१०५४५

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृतरामायणादि ।

नाम	की. रु. आ
श्रीरामचरित्र मानस–(गोस्वामितुलसीदासजीकृत उन्हीके हाथकी हस्तलिखित प्रतिसेचतुर्थावृत्तिकेसा यानिशासी कोदौरामजीके द्वारा प्राप्तकर मोटे अक्षरोंमें छापी है ...	६–०
श्रीरामचरित्र मानस–उत्तम छोटा गुटका लवकुशकांड समेत (पाकिटबुक)सुनहरी जिल्दमें नवाह्निक पाठविधि सहित	१–०
तुलसीकृतरामायण सटीक–लवकुशकांडसहित प्रत्येक दोहा चौपाईका अर्थ पंडित ज्वालाप्रसादजीकृत भाषाटीका अतिउत्तमसंपूर्णक्षेपकोंके अर्थमाहात्म्यतुलसीदासजीका जीवनचरित्र गूढार्थ रामवनवास, तिथिपत्र, कोष, हनुमानजीका चित्र और सूर्यवंशका वृक्ष सहित सुंदरजिल्द बडा अक्षर (ग्लेज) कागज	१६–०
तथा उपरोक्त अलंकारसहित रफकागज ...	१४–०
तुलसीकृतरामायण सटीक–ऊपरके सबालंकारों समेतसुंदर-जिल्द मध्यम अक्षरोंमें छपी तैयार है ग्लेज कागज ...	८–०
तथा रफकागज	७–०
तुलसीकृतरामायण–उपरोक्त अलंकारोंसमेत संजीवनी टीकासहित बारीक गुटका मुसाफिरीमें संग रखनेयोग्य इसकी शोभा देखनेही लायक है	४–०
तुलसीकृतरामायण बडेटाईपका-अतिउत्तम श्लोकार्थ गूढार्थ प्रसंगार्थ छन्दार्थ अष्टम लवकुशकांड इतिहास तुलसीदासजीका जीवनचरित्र रामचंद्रजीके वनवासकातिथिपत्र दृष्टांत बखारामायण और ३८०० टिप्पणीके जिसमें संपूर्ण क्षेपक और कोषभी हैं ग्लेज ...	१०–०
तथा रफकागज	८–०

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–प्रेस बंबई.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

❀ श्रीरामपंचायतन ❀

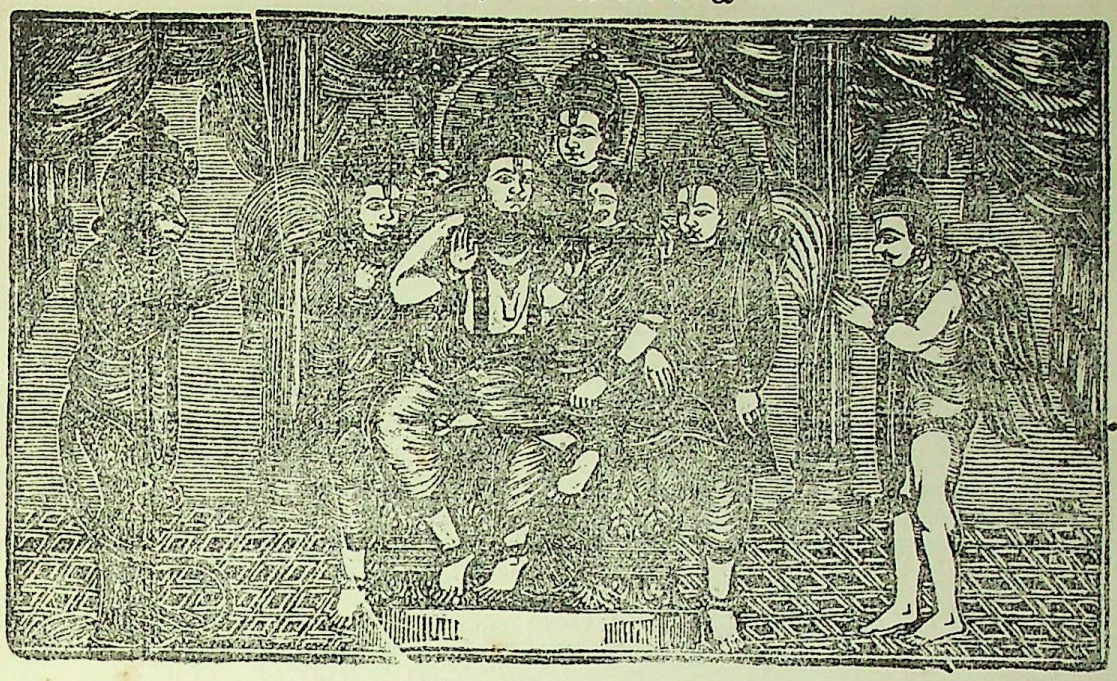

❀ बालकाण्डम् ❀

दोहा-राम चरण रति जो चहै, अथवा पद निर्वान ।
भाव सहित सो यह कथा, करै श्रवण पुटपान ॥

चौपाई-मनकामना सिद्धि नरपावैजो यह कथा कपट तजिगावै ।
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपद इव भवनिधितरहीं ॥

श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना-मुम्बई.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

❀ श्रीरामपंचायतन ❀

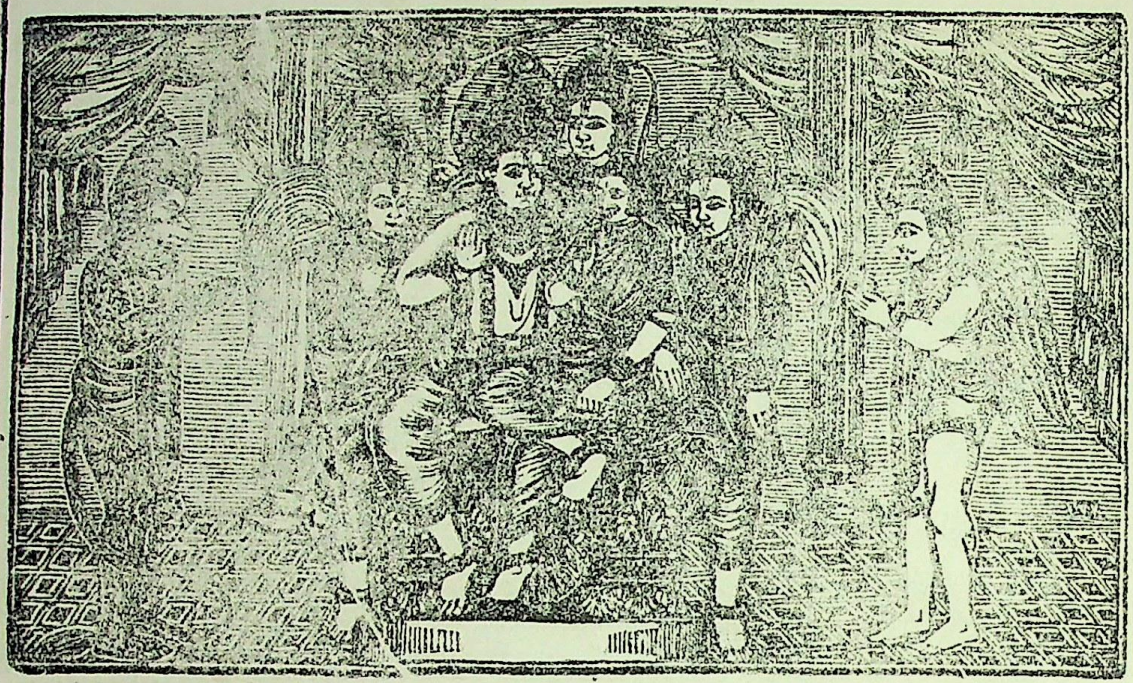

❀ अयोध्याकाण्डम् २ ❀

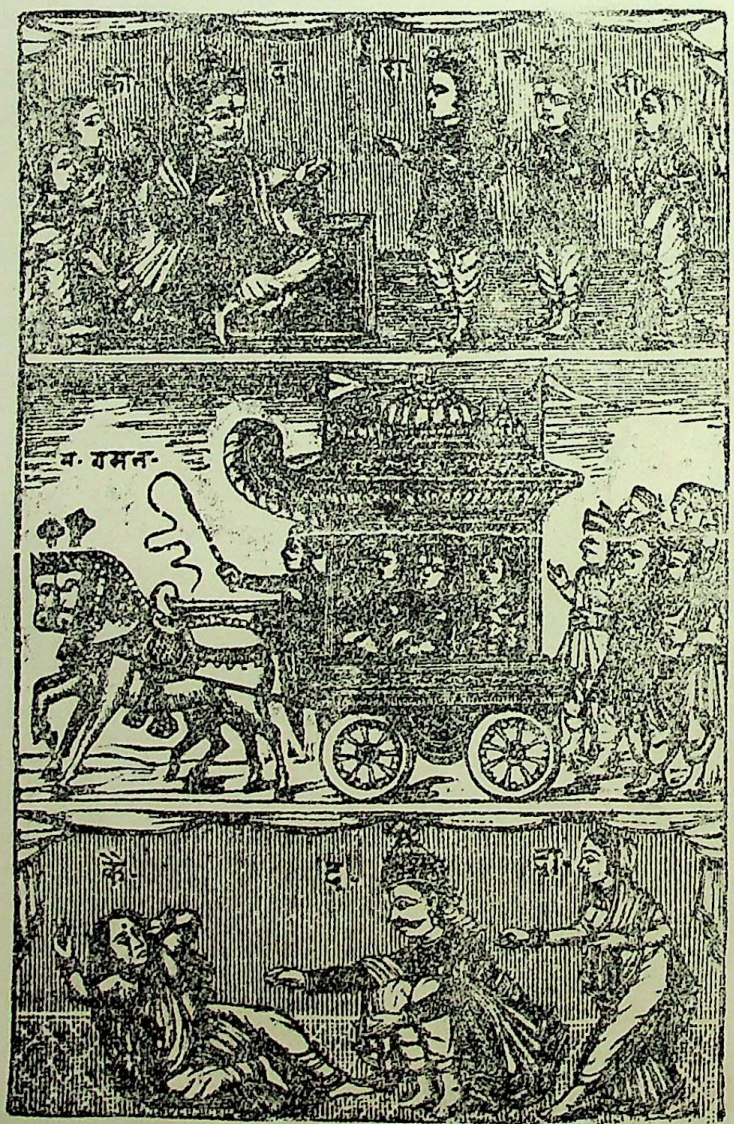

दोहा-मुनि दुर्लभ हरि भक्तिनर, पावहिं बिनहिं प्रयास ॥
जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि बिश्वास ॥

चौ०-जे अति कथा पाय परिहरहीं। केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं॥
ते जड़ कामधेनु गृहत्यागी। खोजत आकफिरहिं पयलागी॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

❀ श्रीरामपंचायतन ❀

❀ आरण्यकाण्डम् ३ ❀

दोहा—सो कुल धन्य उमा सुन, जगत्पूज्य सुपुनीत ॥
श्रीरघुवीर परायण, जेहि नर उपजे विनीत ॥

चौ०—इहि कलिकाल न साधन दूजा। योग यज्ञ जप तपव्रत पूजा ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं। सन्तत सुनिय राम गुण ग्रामहिं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

❀ श्रीरामपंचायतन ❀

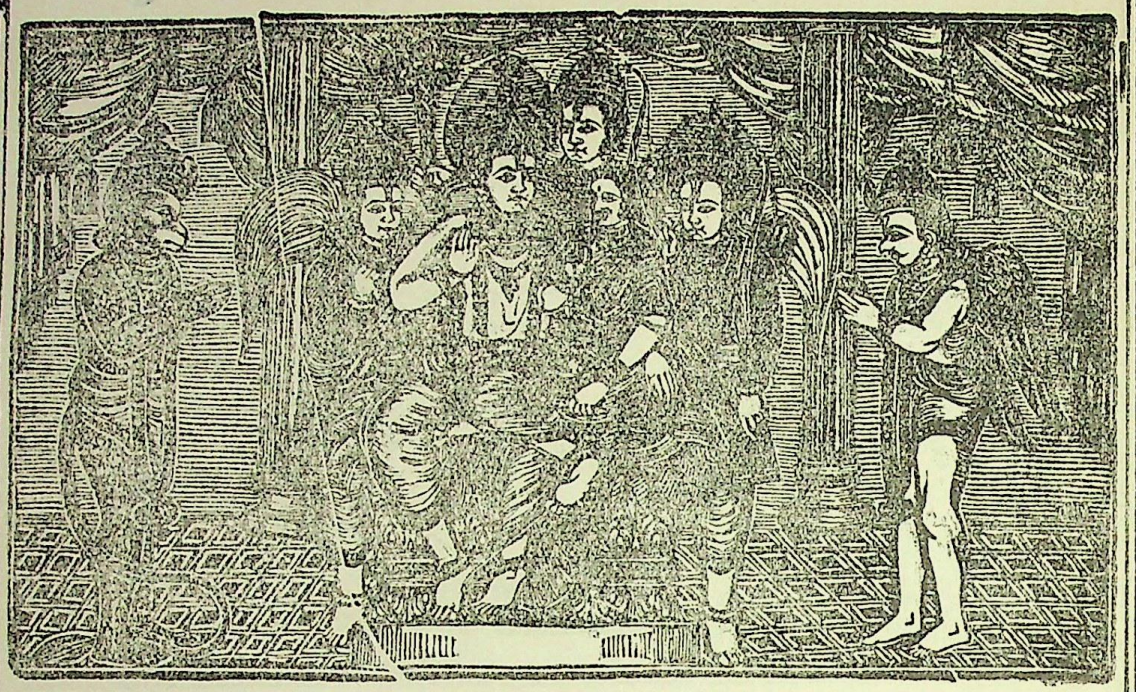

❀ किष्किन्धाकाण्डम् ४ ❀

दोहा–वारि मथे बरु होइ घृत, सिकताते बरु तेल ॥
बिन हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धान्त अपेल ॥

चौ०–संसृत रोग सजीवन मूरी । राम कथा गावहिं श्रुति भूरी ॥
अति हरि कृपा जाहि पर होई । पाँव देइ एहि मारग सोई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

❀ श्रीरामपंचायतन ❀

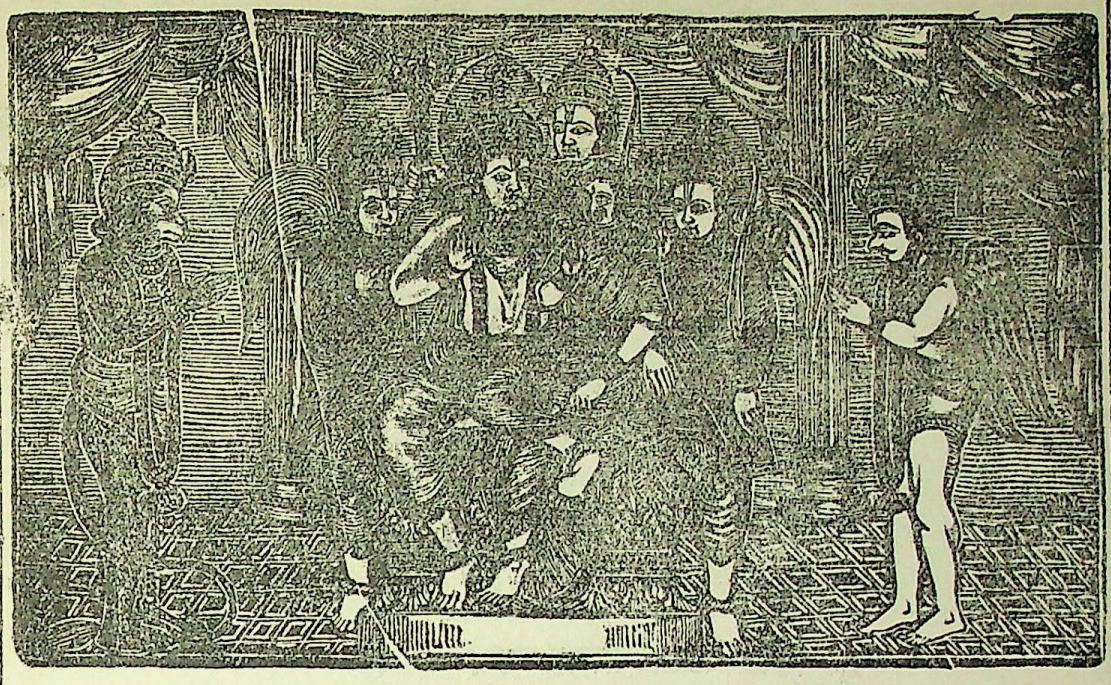

❀ सुन्दरकाण्डम् ६ ❀

दोहा-यह रहस्य रघुनाथ कर, बेगि न जानै कोइ ॥
जानै ते रघुपति कृपा, सपनेहु दुःख न होइ ॥

चौ०-तृषा जाइ बरु मृग जल पाना। बरु जामहिं शश शीश बिषाना ॥
अन्धकार बरु रबिहि न नाशै। राम बिमुख सुख जीव न पावै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

❀ श्रीरामपंचायतन ❀

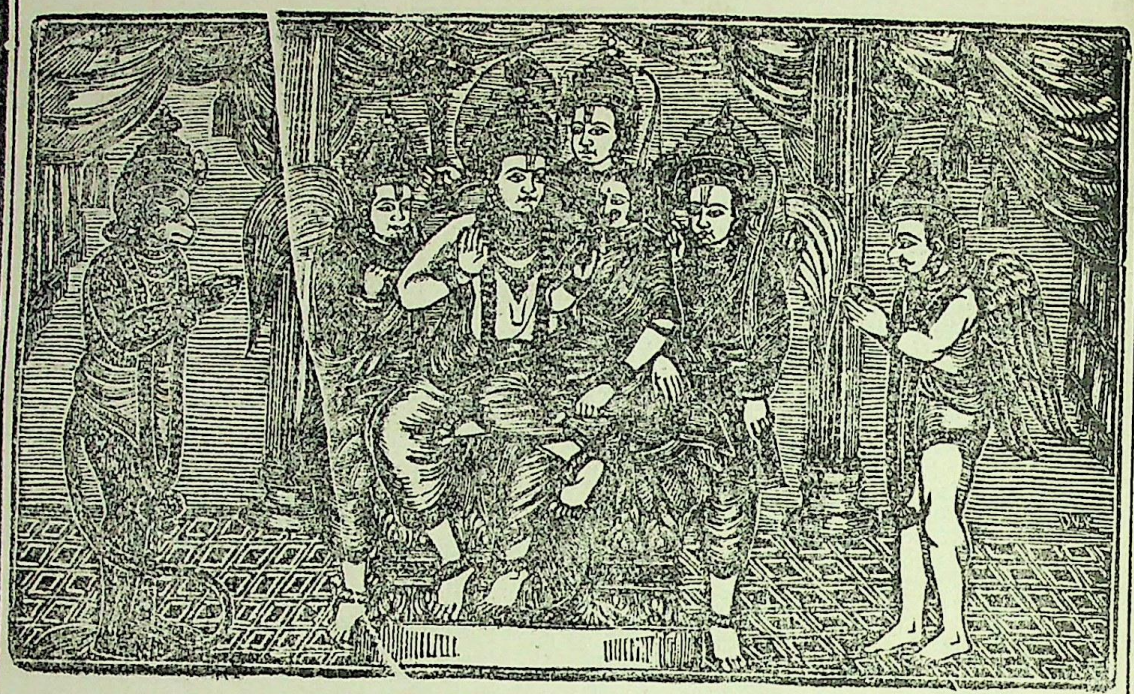

❀ लंकाकाण्डम् ६ ❀

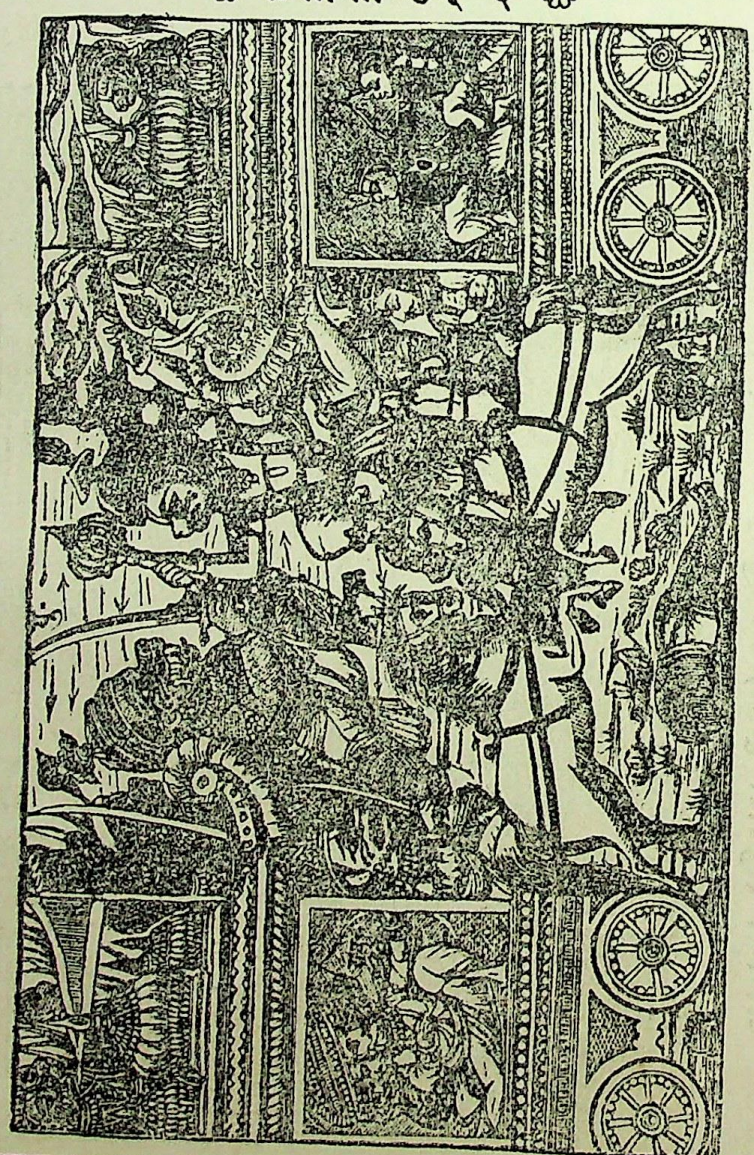

दोहा—समर बिजय रघुबीरके, चरित जे सुनहिं जे गावहिं।
बिजय बिवेक बिभूति नित, तिनहि देहिं भगवान ॥ १ ॥

दो०—भवभंजन गंजन संदेहा। जनरंजन सज्जन प्रियएहा ॥
रामउपासक जे जगमाहीं। इह सम प्रिय तिन कहँ कछु नाहीं ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

दोहा-बार बार वर मांगौं, हर्षि देहु श्रीरंग ॥
पद सरोज अन पावनी, भक्ति सदा सतसंग ॥

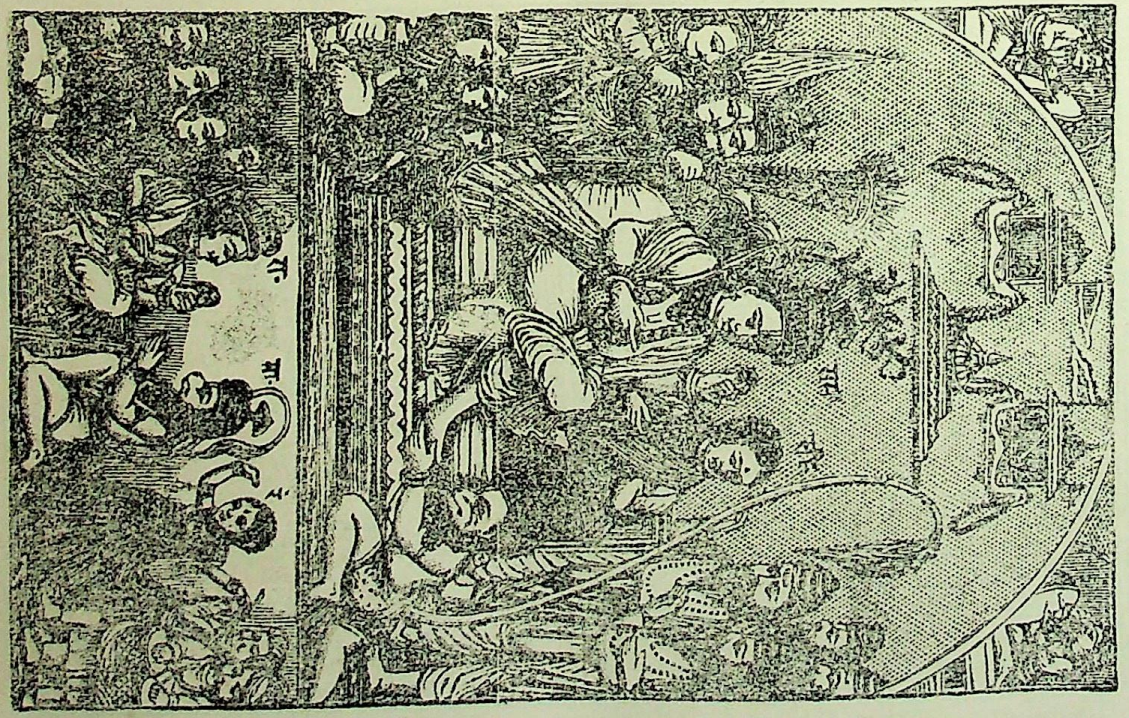

❀ श्रीरामपंचायतन ❀

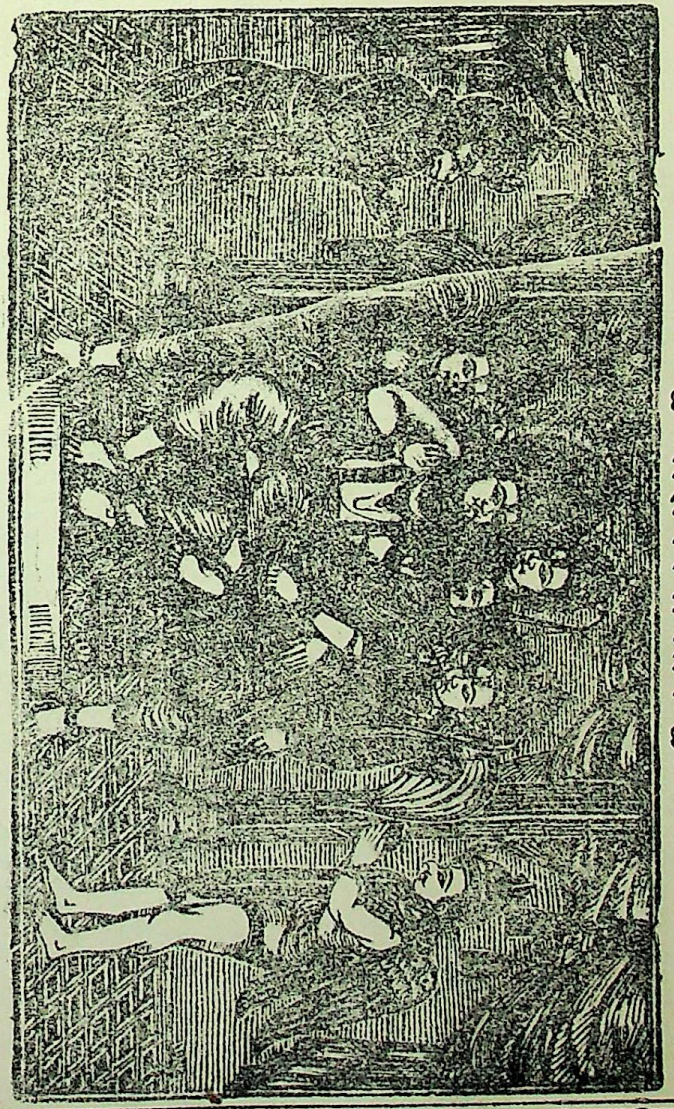

❀ श्रीरामदरबार ❀

चौ०-जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं।सुख सम्पति नाना विधि पावहिं॥
सुर दुर्लभ सुख करि जगमाहीं। अन्तकाल रघुपति पुर जाहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

❀ श्रीरामपंचायतन ❀

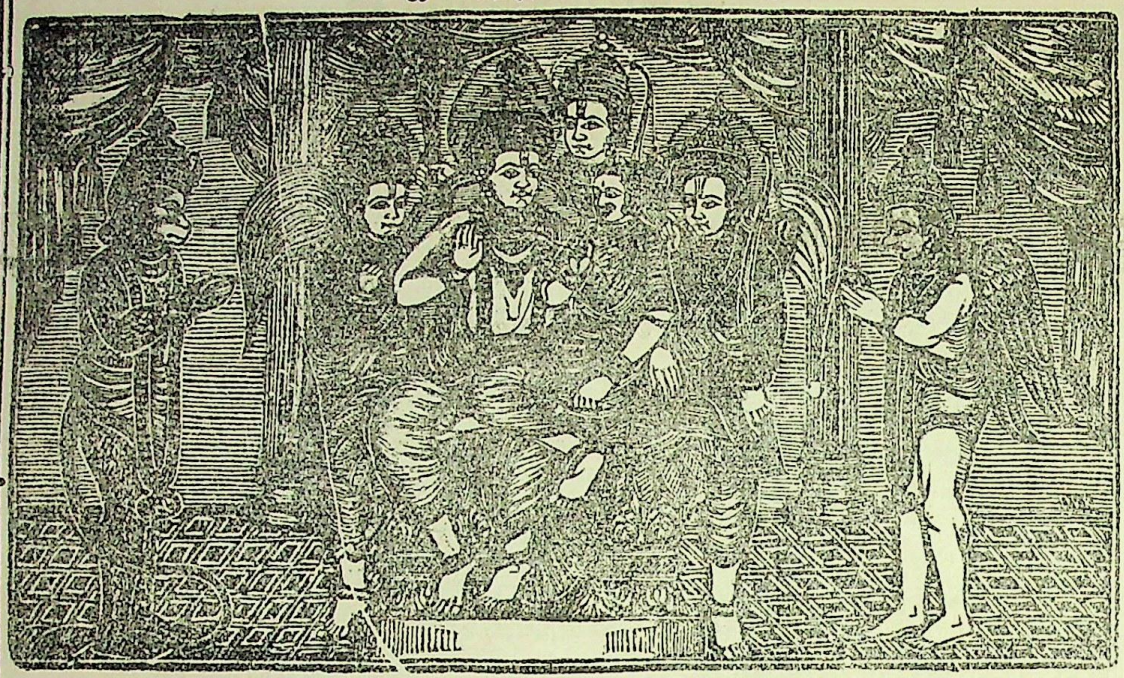

❀ रामाश्वमेधे लवकुशकाण्डम् ८ ❀

दोहा–मुनि दुर्लभ हरि भक्तिनर, पावहिं बिनहिं प्रयास।
जो यह कथा निरंतर, सुनैं मान विश्वास ॥

चौ०–यह रघुनाथ भक्ति श्रुतिगर्दा राम कृपा काहू यक पाई ॥
मनक्रम वचन जनित अघजाई सुनहिं जे कथा श्रवण मनलाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ श्रीरामरसायनप्रारम्भः ।

श्लोक-मालिनीछन्द ।

सकलसुकृतसारंचार्थधर्मस्यसारंबहुगुणगणसारंभक्तिसारंचनित्यम्
प्रचुरप्रणवसारंसर्वदामोक्षसारंदशरथहृदिसारंरामनामैववंदे ॥ १ ॥

पद्य अनुष्टुप्छन्द ।

श्रीरामंसीतयासार्द्धंलक्ष्मणेनहनूमता ॥ कोटिकंदर्प्पदर्प्पघ्नंशिरसा
प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥ गुरुंगणेशंगिरिशंगिरंचगरुडध्वजम् ॥ वाल्मीकिं
बुद्धिदंवंदेकविंकाव्यकलानिधिम् ॥ ३ ॥ दृढबद्धौभवाब्धौयद्वाथासे-
तूसुविस्तरौ ॥ तुलसीसूरदासौचवंदेतौपुरुषोत्तमौ ॥ ४ ॥

उपजातिछन्द ।

अनेकजन्मार्जितदुष्कृतेनतेनोद्भवाःसंतिअपारक्लेशाः ॥
तेषांविनाशायसुभेषजंसत्सिद्धीकृतंरामरसायनंमे ॥ ५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

शोभितसतीकेसतीभारतीरतीकेकरसेवितसुतीके सुरतीकेनरतीकेहैं
विमलरतीके विरतीके विरतीके दानिशुद्धविरतीके सुरतीकेसुरती-
केहैं रसिकविहारी सुगतीकेसुमतीके नित्यकारक पतीके दृढहारक
छतीकेहैं देववंदिनीके निमिवंश चंदिनीके युगनीके पदकंजमिथि
लेश नंदनीकेहैं ॥ ६ ॥ तारी ऋषिनारी वज्र अंकुशादिधारी चित्रकूट
बनचारी सहचारी त्रिपुरारीके ॥ अधम उधारी मुनि मानस विहारी
सारी विपति विदारी पूज्य कपि गिरिधारीके ॥ सोचके सँहारीपाप

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तमके तमारी दीन दास निरधारी प्रिय जनकदुलारीके॥रसिकविहारी भारी दोष दुःखहारी सदा सब सुखकारी पद अवधविहारीके ॥७॥मानकी भरन भूरि भानकी छरन देव प्राणकी शरण वेगितरन दिसानकी ॥सानकी हरन यातुधानकीदरन उद्ध त्रानकी धरन-ढार ढरन सुवानकी ॥ वानकी वरन पूरी आनकी अरन वोज नित्य प्रति रसिक विहारी सुखदानकी ॥ दानकी करन जानकीस जानकी सजान हद्द हठ हिम्मत हठीले हनुमानकी ॥ ८ ॥

दोहा–सन्त सुकवि कोविद सुजन, जे जग दीनदयाल ॥
ते सब अपनी ओर लखि, मोपर होहु कृपाल ॥ ९ ॥
राम कथा कछु रचतहौं;सुरस सत्य सुख धाम ॥
राम रसायन नाम यह, बरनौं ग्रन्थ ललाम ॥ १० ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

राम राम राम पुनि राम फिर राम राम रामचन्द्र सम्वत् १९३९यों विक्रम विचारौजू ॥ रामको जनम मांस लषनसु जन्म तिथि भरत सु बन्धु जन्म वासर सम्हारौ जू॥हनुमत जन्म पक्ष वासंव भयोग साध्य बालव करण रामलगन निहारौ जू॥रसिक विहारी भयो अधिक सुखारी अब पायकै रसायन समस्त निरधारौजू॥ ११ ॥

दोहा–रसिकविहारी मुदितभो, राम रसायन पाय ॥
दुरित दाह दारिद्र दुख, सबही गये दुराय ॥ १२ ॥
भई सुद्धि वर बुद्धि तब , राम कथा चित चाव ॥
उपजो अति आनन्द उर;हरि गुरु कृपाप्रभाव॥ १३ ॥
यदपि रचे पूरव विविधि, भाषा ग्रन्थ अनेक ॥
तदपि रामसिय चरित पुनि,वरनौं सहित विवेक १४॥
मम कृत ग्रन्थनको लखौ, चक्र लिखी सब बात ॥
संख्या नाम प्रसङ्ग अरु,समय सकल दरशात ॥ १५॥

१ चैत्र। २–११ । ३ मंगल । ४ कृष्ण । ५ । ज्येष्ठ ६–४

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ रसिक विहारी कृत ग्रन्थ चक्र।

ग्रथांकी गिनती	ग्रथोंके नाम	बननेका संवत्	श्लोक संख्या	ग्रंथोंके वर्णनकी सूक्ष्म सूचना
१	काव्यसुधाकर	१९२०	४०००	साहित्यरीति २४ ग्रथ मत पूर्वक
२	मानसप्रश्न	१९२२	१२५	श्रीतुलसी रामायणसे प्रश्न देखना
३	नामपचीसी	१९२२	१००	श्रीसीताराम नामप्रभाव
४	सुमतिपचीसी	१९२४	३०	धर्मनीतिज्ञानका प्रश्नोत्तर
५	आनंदवेलि	१९२४	३००	श्रीतुलसीकृत अनुसारवाटिकाप्रसंग
६	पावसविनोद	१९२४	३२५	श्रीसीतारामजीकी हिंडोललीला
७	सुयशकदंब	१९२५	१७५	विभीषणकी शरणागत
८	ऋतुरंग	१९२५	१४०	षटऋतु
९	नेहसुंदरी	१९२७	२७५	नायकविरह
१०	रसकौमुदी	१९२७	१६००	विहारीसतसईके३१६ दोहापर कवित्त
११	विपरीतिविलास	१९२८	१५०	विपरीतरति
१२	इश्कअजायब	१९२८	२५०	उर्दूहिंदीमिश्रितप्रीतिविरह
१३	बजरंगबत्तीसी	१९३०	१२५	श्रीहनुमानजीके कवित्त
१४	विरहदिवाकर	१९३१	६००	श्रीरामवनगमनग्रामवधूप्रीतिदुःख
१५	ग्रंथप्रभाकर	१९३१	७५	ज्योतिषमतयात्राविचार
१६	कानूनइस्प	१९३४	२००	रियासतपंनाकेनिसबत
१७	कानूनजाप्तेअ०	१९३५	२५००	रियासतपंनाकेनिसबत
१८	सतरंजबिनोद	१९३५	५००	सतरंजकेनकसेऔरकायदा
१९	नवलचरित्र	१९३६	४०००	नवीनइतिहास
२०	षटऋतुविभाग	१९३६	२०	नईरीतिसे ऋतुनका विभाग
२१	रागचक्रावली	१९३७	३५०	रागरागिनीसुरादिनिर्णय
२२	मोदमुकर	१९३७	१२००	रसिकविहारीकृत कवितासंग्रह
२३	कल्पतरुकवित्त	१९३८	१२००	एक २ कवित्तके ३२ बत्तीसअर्थ
२४	कवित्तवर्णावली	१९३८	१५००	हरएकअक्षरमात्राकेकवित्त
२५	दारिद्रमोचन	१९३८	५३	श्रीहनुमानजीकी स्तुति
२६	श्रीरामरसायन	१९३९	११०००	श्रीसीतारामचारित्र प्रमाणसहित

दोहा—नहिं कविहौं कोविद न हौं, नहीं कछू गुणमन्त ॥
हरि दासनको दासहौं, कृपा करत सब सन्त ॥ १६ ॥
अवध पुरीके मध्यमें, कनक भवन स्थान ॥
सिय रघुवरको सुख सदन, है प्राचीन प्रमान ॥ १७ ॥
रहे तहांके अधिपवर, सोमेरे गुरु देव ॥
षटश्री प्यारे रामजी, नाम विदित चहुँ येव ॥ १८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कान्यकुब्ज द्विज पुत्रहौं, श्रीधर पितुको नाम ॥
नृप मन्त्री मो जन्मथल, झांसी धाम सुठाम ॥ १९ ॥

चौ० चन्द्र १ अकास ० नन्द ९ महि १ जानौ ❀ सोबिक्रमको संवतमानौ।
पौष शुक्ल सप्तमी निहारौ ❀ कुज द्विपाद रेवती बिचारौ २० ॥
बान ५ वेद ४ विधिमुख ४ गुणगहिये ❀ इष्ट जन्मको यह ध्रुव लहिये ॥
बान ५ बान ५ पुनिबान ५ गनीजे ❀ जन्म भूमि पलभा लखिलीजे
वेद ४ वेद ४ शशि १ शर ५ दृग २ नन्दा ❀ भानु अंश यह शुद्ध अमन्दा ॥
सिंह लग्न मधि जन्म सुपायो ❀ परे अचल ग्रह दृढठहरायो २२
चौथे मङ्गल राहु परेहैं ❀ बुध भृगु पञ्चम दुहूँ खरेहैं ॥
षष्टम भवन भानु शनि बैठे ❀ अष्टम चन्द्र जीव मिलि पैठे २३
दशम केतु मेरे ग्रह ऐसे ॥ परे करत सबही फल तैसे ॥ यदपि साधुपै ग्रह अनुसारा ॥ रहै सुकविताचाहअपारा ॥ २४ ॥ पुनिसबतेबलिष्टप्रभु इच्छा ॥ प्रेरत सकल हृदय करि शिक्षा ॥ देखहु मैं कितते कहँ आयो ॥ कोहों बहुरि कहा पद पायो २५

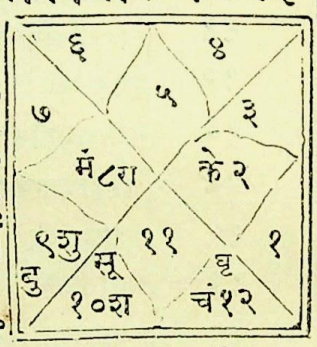

तीन मासको बालक जबहीं ❀ आयौ संत शरण मैं तबहीं ॥
जबहौं भयो वर्षयक बाला ❀ मृत्यु भई तब संध्या काला २६ ॥
सबनिशि रहो मृतक तनु मेरो ❀ संत उठायो होत सबेरो ॥
सरयू जल प्रवाहके काजा ❀ मोहिं लैगये सुजन समाजा २७ ॥

दोहा—करन लगे परवाह जब, सरयू जल अन्हवाय ॥
ताही छिनमो दृग खुले, प्राण देह मधि आय ॥ २८ ॥
सकल संत ताहि समै, कहो सहित अहलाद ॥
याको नाम सुआजते, है जानकी प्रसाद ॥ २९ ॥

चौ० प्रौढ कियो गुरु पालि पढ़ाई ❀ राजपुत्र सम साज सजाई ॥
पुनि विष अस्त्र शस्त्रकी घाता ❀ भई होय कह जब हरि त्राता
जब श्रीगुरु हरि धाम पधारे ❀ तब मिलि संत महंत जपारे
नाम पतित पावन तड़भारी ❀ जिन कंठी सुकंठ मम डारी
दै पदवी महंत मुहिं भाखो ❀ कीनी कृपा शरण निज राखो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहि महंत जानकी प्रसादा ❀ नाम पुकारत युत मरयादा॥३२॥
सो यह नाम छन्दके मांही ❀ कहूँ कहूँ अति अमिल लखाहीं॥
याते निज कवितामधिराखौं ❀ और नाम द्वैसो इति भाखौं॥३३॥
रसिक विहारी नाम उचारो ❀ कितहूँ है रसिकेश निहारो॥
मम कृत छन्द प्रबन्ध सुजेऊ। तिन महँ प्रगट नाम ये दोऊ॥३४॥

दोहा-सूक्षम निज वृत्तांत मैं, धरो इहां इहि हेत॥
सुनि सज्जन निजजानि मुहि, करिहैं कृपा सचेत ३५॥
पुनि प्रणामौं कर जोरिके, करौ कृपाते धन्य॥
हौ सिय सिय वरके सदा, जे प्रिय रसिक अनन्य॥३६॥
निजनिज प्रकृतिप्रभावमो, औगुण निरखि अनंत॥
कृपा करौ मोपै सदा, दोऊ संत असंत॥३७॥

इति श्रीमद्रसिकविहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायनग्रन्थे प्रथमविधाने प्रथमो विभागः॥ १॥

सोरठा-शिव विरंचि सुरराय, नारदादि सनकादिऋषि॥
वंदौं मन वच काय, मुनि वसिष्ठ कौशिक सकल॥१॥
राम चरित अभिराम, नाम रूप लीला बहुरि॥
धाम सहित सुख धाम, वरनों मति अनुसार कछु॥२॥
राम चरित्र अपार, नेति निगम आगम भनै॥
पै निज बुधि अनुसार, कहौ कहैं पुनि कहँहिंगे॥३॥
राम चरित अति गूढ, विन हरि कृपा जनात नहिं॥
सो कह जानै मूढ, पगे विवाद प्रमादमें॥४॥
राम उपासक होय, गहैं अनन्य उपासना॥
हरि गुरु कृपा सुजोय, राम चरित तब जानहीं॥५॥
वर उपासना ग्रंथ, हैं प्राचीन प्रणाम बहु॥
राम चरितको पन्थ, जातें सकल दिखातहैं॥६॥
पै वे बहु सतसंग, कीने विना न पाईये॥
यातें तजि जगरंग, सेवै संत अभंग चित॥७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम चरितको भेद, जब जानै गुरुकी कृपा ॥
तब छूटै सब खेद, राम उपासक होय दृढ ॥ ८ ॥
यातें लखि उपकार, कलि जगजीव उधार हित ॥
लघु मतिके अनुसार, राम कथा कछु रचतहौं ॥ ९ ॥
पूरव ग्रंथ प्रमान, संस्कृत अरु भाषा विविध ॥
सब संमत उर आन, रास रसायन ग्रन्थ किय ॥ १० ॥
दोहा–राम रसायनके विशद, हेरौ आठ विधान ॥
प्रति विधान सुविभाग बहु, यथा योग अनुमान ॥ ११ ॥
निर्णय १ जन्म २ विवाह ३ वन ४, अरु० वियोग ५ पुनि० युद्ध ६ ॥
वर अभिषेक ७ विहार ८ ये, आठ विधान विशुद्ध ॥ १२ ॥
हैं बहु गुप्त प्रतक्ष जे, सिय रघुचन्द्र चरित्र ॥
पूरव कथित प्रमाण जे, बरणौं परम पवित्र ॥ १३ ॥
जन्म कथातें आदिलै, मध्य चरित्र अनंत ॥
वरण तहौं साकेत निज, गुप्त वास परयंत ॥ १४ ॥
रास विलास हुलास बहु, सुख दुख योग वियोग ॥
यथा उचित सिय रामयश, कहौं सुनौ सत लोग ॥ १५ ॥
सिय रघु चंद्र चरित्र सुनि, संका करौ न कोय ॥
है प्रमाण युत सत्य सब, वर्णन कीनो जोय ॥ १६ ॥
जे जन कबहूँ नहिं सुने, राम उपासन ग्रन्थ ॥
पुनि दृग भरि देखो न कहुँ, रसिक जननको पंथ ॥ १७ ॥
ते सुनि रासादिक कथा, सिय रघुवरकी सोय ॥
करि करि विविध वितर्क मन, चकित रहत चितजोय ॥ १८ ॥
चौ० जिनहिकछू शंका जियहोई ❀ ते यह यतन करौ सबकोइ ॥
सीता राम उपासक हेरो, ❀ तिनहूँमें अनन्य निरवेरो १९
पुनि तिनमें अति रसिक जु होई ❀ रसिकनमें विद्वान सु जोई ॥
ताढिगजाय करौं सतसंगा ❀ तनमनधनयुत प्रीतिअभंगा ॥ २०
तब ता मुख अनेक वर गाथा ❀ सुनौ चरित जे सिय रघुनाथा
वरणे सुर मुनि संत अपारा ❀ ग्रन्थ अमितजे लघुविस्तारा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संस्कृत अरु प्राकृत हैं कोऊ ❀ परम प्रमाण वाक्य वर दोऊ ॥
लिखौं नामते सकल निहारौ ❀ इमि अनेक और हूविचारौ२२॥

ग्रन्थनाम ।

चौ० हनुमंतसंहिता १हिलखिलीजे ❀ पुनि वसिष्ठसंहिता२ कहीजे
अरुअगस्त्यसंहिता३विचारौ ❀ त्यों० निरुक्तिसंहिता निहारौ४,२३
लखौ सदाशिवसंहिता५हिगुनि ❀ रामरसामृत सिंधु६भलोपुनि॥
बहुरि चरण चामर७वर देखौ ❀ रामरास तिहि८ सुंदर पेखौ२४॥
वालमीकिरामायण ९ हेरौ ❀ सुंदररामायण १० निरवेरौ ॥
पुनि भुशुंडिरामायण११पेषो ❀ बहुरि महारामायण१२देखो२५
फेरि बालरामायण१३जानौ ❀ पुनि हनुमन्नाटक१४ दृढठानौ ॥
कौशलखंड १५बहोरि विचारो ❀ अरुसियगुणवल्ली १६निरधारो२६
संग्रह उत्सवसिंधु १७अनूपा ❀ अरु गुणावली १८ सुखदसरूपा ॥
महासुंदरी तंत्र १९निहारो ❀ पुनि नवरत्न२० हि निरखिविचारो२७
इते ग्रन्थ संस्कृतके पेखो ❀ पुनि प्राकृत ग्रन्थनको देखो ॥
अष्ट जाम२१नाभाकृत हेरो ❀ तुलसीकृत२२सबग्रन्थ निवेरो २८
बहुरिलखौ सीतायन२३ग्रन्था ❀ कादंबरी२४विशद शुभपंथा ॥
नेहप्रकाश२५विशदजियजानौ ❀ पुनितरंगिनी२६परमप्रमानौ२९
इनहि आदि बहु ग्रन्थन माहीं ❀ सीताराम चरित्र मिलाहीं ॥
रास विलास अनेक प्रकारा ❀ समय मास ऋतुदिन अनुसारा३०
वरनी कथा पुरातन जोई ❀ बिरचैं राम रसायन सोई ॥
अब इतकछु प्राचीन प्रमाना ❀ सूक्षम धरौं करौं बहु ज्ञाना॥३१॥

प्रमाण—वाल्मीकीये । अयोध्याकांडे ॥ सर्ग २ ॥

श्लोक—गांधर्वेषु भुवि श्रेष्ठो बभूव भरताग्रजः ॥
कल्याणाभिजनः साधुरदीनात्मा विचक्षणः ॥ १ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ सुन्दरकांडे ॥ सर्ग ॥ २८ ॥

पितुर्निदेशंनियमेनकृत्वावनान्निवृत्तश्चरितव्रतश्च॥
स्त्रीभिस्तुमन्येविपुलेक्षणाभिः संरंस्यसेवीतभयःकृतार्थः ॥२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनः ॥ तत्रैव ॥ सर्ग ॥ ३६ ॥

नमांसंराघवोभुंक्तेनचैवमधुसेवते॥वन्यंसुविहितंनित्यंभक्तमश्नातिपंचमम्॥ ३॥नैवदंशान्नमशकान्नकीटान्नसरीसृपान्॥ राघवोपनयेद्वात्रात्त्वद्वतेनांतरात्मना॥ ४॥नित्यंध्यानपरोरामोनित्यंशोकपरायणः॥नान्यंचिंतयतेकिंचित्सतुकामवशंगतः॥ ५ ॥ अनिद्रः सततंरामःसुप्तेपिचनरोत्तमः॥सीतेतिमधुरांवाणींव्याहरन्प्रतिबुध्यते६॥ दृष्ट्वाफलंवापुष्पंवायच्चान्यत्स्त्रीमनोहरम् ॥ बहुशोहाप्रियेत्येवश्वसंस्त्वामभिभाषते ॥ ७ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ युद्धकांडे ॥ सर्ग ॥ २१ ॥

ततःसागरवेलायांदर्भानास्तीर्यराघवः॥अंजलिंप्राङ्मुखंकृत्वाप्रतिशिश्येमहोदधेः॥ ८ ॥बाहुंभुजंगभोगाभमुपधायारिसूदनः॥ जातरूपमयैश्चैवभूषणैर्भूषितंसदा॥९॥मणिकांचनकेयूरमुक्ताप्रवरभूषणैः॥ भुजैःपरमनारीणामभिमृष्टमनेकधा ॥ १० ॥

पुनः ॥ तत्रैव उत्तरकांडे ॥ सर्ग ॥४२ ॥

अशोकवनिकांस्फीतांप्रविश्यरघुनंदनः।आसनेचशुभाकारेपुष्पप्रकरभूषिते ॥ ११॥कुशास्तरणसंस्तीर्णेरामःसन्निषसादह ॥ सीतामादायहस्तेनमधुमैरेयकंशुचि ॥१२॥पाययामासकाकुत्स्थःशचीमिवपुरंदरः ॥मांसानिचसुमिष्टानिफलानिविविधानिच ॥ १३ ॥ रामस्याभ्यवहारार्थंकिंकरास्तूर्णमाहरन्॥ उपानृत्यंश्चराजानंनृत्यगीतविशारदाः॥१४॥अप्सरोरगसंघाश्चकिन्नरीपरिवारिताः॥दक्षिणारूपवत्यश्चस्त्रियःपानवशंगताः॥ १५ ॥उपानृत्यंतकाकुत्स्थंनृत्यगीतविशारदाः ॥ मनोभिरामारामास्तारामोरमयतांवरः ॥१६ ॥ रमयामासधर्मात्मानित्यंपरमभूषिता॥ सतयासीतयासार्धमासीनोविरराजह॥ १७ ॥रमयामासवैदेहीमहन्यहनिदेववत् ॥ तथातयोर्विहरतोःसीताराघवयोश्चिरम् ॥१८॥दशवर्षसहस्राणिशतानिसुमहात्मनोः ॥ प्राप्तयोर्विविधान्भोगानतीतःशिशिरागमः ॥ १९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनः ॥ निरुक्तिसंहितायाम्।

सौगंध्योज्ज्वलसौकुमार्य्यकलिताकौमल्यदाकेलिदासंगीतामृतवर्षिणीप्रतिपदंप्रेयःप्रयासापहा॥ एणाक्षीस्वकटाक्षकल्पितसुरैश्वर्यादिकाशक्तिदायद्वेद्याविबुधोत्तमोत्तमशिवाजाभ्यांजयेज्जानकी२०॥ याःसख्यःकलिताःसताभगवतागस्त्येनते कोटिशस्ताभिस्त्वंसममे वनाथदयितंत्वाह्लादयंतीरहः॥मच्चित्रेस्फुरसुंदरस्फुटगुणस्मेरायमाणाननानानाभावविनोदिनीहजनकक्षीरोदजातेसदा॥२१॥कांच्याद्यारणनंचरंगकरणंमंजीरमंजुध्वनिंश्रोतुंत्वांरमणोविहारयतितेसामाद्गिानोद्गतिम्॥ संगीतंसुरसेवितंचसमयेसीते विदूरेभजन्व्यर्थं तन्नचसर्वथा सकुरुतेमानार्हमानप्रदः॥ २२॥ साधर्म्ययदवाप्तमात्ममननात्सर्वात्मनातन्नवास्यादित्येवपरीक्षितुंतवसखीःकांतोयदाश्लिष्यति॥एकैकांहिविवक्तिचान्यवनितांत्वत्साम्यशंकीतियत्तेमर्मतुदंनमर्ममधुरामुग्धासियन्मैथिलि॥२३॥ पुनः ॥सदाशिवसंहितायां ॥उर्वशीमेनकारंभाराधाचंद्रावलीतथा॥हेमाक्षेमावराराहा पद्मगंधासुलोचना॥२४॥ हंसिनीमालिनीपद्माहरिणीमृगलोचना ॥ रामस्यपरिनृत्यंतिगीतवाद्यैर्मोहिताः॥२५॥

पुनः महारामायणे।

अनंतसखिभिःसार्द्धंरामचंद्रःससीतया॥स्वेच्छयाकुरुतेरासंताःकुजागात्रसंभवाः॥ २६ ॥मध्योवयःकिशोरश्चानंतरूपोरघूत्तमः॥ किशोर्य्यःसकलाःसख्योभूषिताश्चंद्रिकादिभिः ॥ २७॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥

मुनिवेषधरंरामंनीलजीमूतसन्निभम् ॥रमंतेयोषितीभूतारूपंदृष्ट्वा महर्षयः॥२८॥ईषद्धास्यकृतोरामोदृष्ट्वातेषामिमांगतिम्॥यूयंधन्यतरा ज्ञानंमत्प्रसादेनसांप्रतम्॥२९॥ रमिताराममूर्तौतेस्त्रियोरूपास्तपश्चरन्॥अतोदेवीरमुक्रीडारामनाम्नैववर्तते ॥३० ॥इत्यादि ॥

चौ०—योंहीं अमित ग्रंथ विस्तारा ❀ तिनमहँ रामचरित्र अपारा॥
सो प्रमाण मय मैं कछु भाखो ❀ मोपर कृपा सदा सब राखो३२॥
राम रसायन ग्रंथ अनूपा ❀ प्रगट भयो शुभ मंगलरूपा॥
यह सुग्रंथ विरचो जिहि कारन ❀ सुनौ सकल मैं करौं उचारन३३

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो०—येक दिवस मध्याह्न मंवि, वालमीकिअभिराम ॥
मैं अवलोकन करतहौं, सुंदरकांडललाम ॥ ३४ ॥
रावण भाषित कटु वचन, जनकसुता कृतखेद ॥
सो प्रसंग लखि दुःखते,मो हिय भयो विभेद॥ ३५ ॥

चली अश्रुधारा दृगन, शिथिल भयो तनु मोर ॥
कछु आलस आई सुमैं, पौढि रहो तिहि ठौर ॥ ३६ ॥
नहिं जागत सोवत नहीं, और न कछू प्रतक्ष ॥
स्वप्न नहीं अचरज महां,मोहिं भयो यह लक्ष ॥ ३७॥
कानन विशद विशाल तहँ, यक वट वृक्ष ललाम ॥

तापर सकल समाज युत, बठह सिय राम ॥ ३८ ॥
तहँ दंपति ढिग मैं खडो, पैकछु जीय उदास ॥
याते हिय अकुलाय मुहि, आई दीह उसास ॥३९ ॥
सुनि उसास सियराम जू, विहँसे मोदिशि हेरि ॥
इक इक फूल कदंबको, दियो दुहूँ मुहि फेरि ॥ ४० ॥
ताछिन आई एक तिय, लिये चारिकपि संग ॥

करन लगी कौतुक विविध,बीन बजाय सुढंग ॥४१॥
पुनि मोसन सो तिय कही, सिया राम गुण गान ॥
तुमहुँ करौ हिय हुलसिकै, दंपति पद उर आन॥४२॥
सो सुनिकै सिय राम दुहुँ, मोहिंदई मणि एक ॥
कही लेहु यह कल्पमणि, येहौ विमल विवेक ॥४३॥
ऋद्धि सिद्धि वर बुद्धि बहु, मणि प्रभावते होय ॥
इतनेमें मुहि धायकै, गहि लीनो कपि दोय ॥ ४४ ॥
ताछिन घिरि आये जलद, परनलगी जलधार ॥
इते माहिं मोदृग खुले, आनँद भयो अपार ॥ ४५ ॥
मैं उठि बैठो चकित चित, कीनों अमित विचार ॥
सिया राम यश कछु रचौं, यही भयो निरधार ॥४६॥
यह विचारके करतहौं, औचक उर उमगाय ॥
राम रसायन नाम हिय, आपहि पर्‍यो जनाय ॥४७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब सिय रघुवरकी कृपा, दृढ जानी सब भांति ॥
वर्णन लागो विमल यश, गुप्त प्रगट गुण पांति ॥ ४८ ॥

चौ०—यातेहैं यह ग्रंथ अनूपा ❀ सब सुखदानि सुमंगलरूपा ॥
जो इहि बांचै सुनै सुनावै ❀ दुहूँ लोक आनंद सुपावै ४९॥
सहित प्रतीति प्रीति युतनेमा ❀ पढै सुनै होवैं सब क्षेमा ॥
विरुज अंग बल तेज अपारा ❀ वृद्धि लहैं संतन परिवारा५० ॥
विद्या विजय विभूति बडाई ❀ सुयश सुबुद्धिसुकृतशुचिताई॥
लहि सुखभोगि लोक इहि माहीं ❀ अंतकालहरिरूपमिलाहीं५१॥
रामरसायन मंगलकारी ❀ तन मन धन सुखदानिनिहारी
जो यह पढै सुनै चितलाई ❀ रामकृपातिहिंपरअधिकाई५२
यामें बहु ग्रन्थनके अंगा ❀ धरे यथोचित निरखिप्रसंगा ॥
छंद अनेक नायिका नायक ❀ अलंकाररसजोजहँ लायक५३
भावविविधध्वनिव्यंग्यघनेरी ❀ कोष व्याकरण शब्द निवेरी ॥
निज लघु मतिकीगतिअनुसारा ❀ विरचों ग्रंथसमेतविचारा५४॥
पै निज बुधि भरोस नहिंआवै ❀ लखि स्वमंदताहियसकुचावै॥
याते सब सज्जन समुदाई ❀ दीन जानिकै करौ सहाई५५॥
अनुचित मोर क्षमा सब कीजो ❀ जहँअशुद्धतहँशुद्धकरि दीजो॥
पै यह सुधि राखियो सदाही ❀ पक्षपात नहिंरंचबनाही॥५६॥
याते विनय करौं करजोरी ❀ क्षमियो सकल ढिठाई मोरी॥
प्राकृत और संस्कृत दोऊ ❀ कविता भेद लखे जोहोऊ५७॥
पुनि बहु ग्रंथ प्रसंग निहारे ❀ पक्षवाद जिन दूरहि टारे ॥
जे ऐसे जन सुमति उतंका ❀ शुद्ध करै ते याहि निशंका५८
मैं यह ग्रंथ रचो करि हेतू ❀ सुखी होहिं सुनि बुद्धि निकेतू॥
सो सब मैं अभिलाष पुजावों ❀ दीन जानि दायादरशावों५९

दोहा—पुनि सबसज्जन जननतें, बिनय करौं करजोरि ॥
रामरसायन देखिकै, मोहिं न दीजो खोरि ॥ ६० ॥
रघुवर प्रेरित शारदा, आय बसी हिय धाम ॥
सोई वर्णन करतहै, सिय सियपति गुणग्राम ॥ ६१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यही भांति पूरव रचे, बहु विधि ग्रंथ अनेक ॥
प्रथम भागके चक्रको, निरखे होत विवेक ॥ ६२ ॥
तिनहूँ ग्रंथनके रुचिर; निज विरचित बहु छंद ॥
यथा उचित या ग्रंथ में , धरिहौं निरखिप्रबंद॥६३ ॥
औरहु विविधि प्रसंगके, नूतन छंद प्रबंद ॥
रुचिहौं प्रेरित भारती, राम चारित निरद्वंद ॥ ६४ ॥
प्रगट कियोहै शारदा, पढैं सुनैं हरि भक्त ॥
सिया रामजूकी कृपा, ग्रंथ प्रकाशै जक्त ॥ ६५ ॥
अब वंदौ श्री अवधपुर, मन वच कर्म समेत ॥
जो सिय राम विहार थल,नित्य धाम साकेत ॥६६॥
परहूते पर अवधपुर, जाते परे न और ॥
वर प्राचीन प्रमाण है; वर्णनीय बहु ठौर ॥ ६७ ॥

प्र०—अथर्वणवेदे श्रुतिः ।

यायोध्यासर्ववैकुंठानांमूलाधारः मूलप्रकृतेःपरात्परातत्सद्ब्रह्म-मया विरजोत्तरादिव्यरत्नकोशाढ्यातस्यांनित्यमेवसीतारामविहारस्थलमस्तीति ॥ १ ॥

पुनः ॥ पद्मपुराणे ॥ श्लोकाः ।

श्लोक-विष्णोःपादमवंतिकांगुणवतींमध्येचकांचीपुरींनाभौद्वारवतीं तथाच हृदये मायापुरींपुण्यदाम् ॥ग्रीवामूलमुदाहरंतिमथुरानासाग्रवाराणसीमेतद्ब्रह्मपदंवदंतिमुनयोयोध्यापुरींमस्तके॥ ३१॥मथुराद्याःपुरःसर्वाअयोध्यापुरदासिका ॥अयोध्यामेवसेवंतेप्रलयेप्रलयेपिच॥ ३२॥षष्टिवर्षसहस्राणिकाशीवासेषुयत्फलम्॥ तत्फलंनिमिषार्धेनकलौ दाशरथीपुरी॥ ३३ ॥ पुनः॥महारामायणे॥गोलोकाच्चपरंज्ञेयं साकेतान्तःपुरंप्रियम् ॥ गोप्यागोप्यतरानित्यासायोध्यातीवदुर्लभा ॥ ३४ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—पुनि बंदौं सरयू सरित, राम रूप अभिराम ॥
सकल सरितकी शीश मणि,विशद विदित गुणग्राम६८।
सो सरयू तट विशद वर, द्वादश वन अभिराम ॥
विमल विशाल अनूपअति,सकल समै सुखधाम॥ ६९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्वादशनवनाम काव्यछंद ॥

प्रथम-अशोक १ प्रमोद २ बहुरि-संतानक ३ जानौ ॥
पारिजाद ४ मंदार ५ सु-चंदन ६ चंपक ७ मानौ ॥
रमनक ८आम्र ९पलास १०कदम ११सोहै-तमाल १२ घन ॥
ये सरयूके तीर अनूपमहैं द्वादश वन ॥ ७० ॥

दोहा-मृदुल भूमि शुचि पुण्य थल, सुन्दर दोऊ तीर॥
सुर पावनकारी सदा, निर्मल सरयू नीर ॥ ७१ ॥
नाम लेत नियरात सुख, दुख दुरात दरशात ॥
परसत पाप नशात जिहि, मज्जत राम मिलात॥७२॥
श्रीसरयू जलपान करि, वसत अवधपुर मांहिं ॥
धन्य अवधवासी सकल, जिन लखि देव सिहांहिं॥७३॥
अवधपुरी सरयू नदी, अवध निवासी तत्व ॥
विदित प्रमाण पुराणमें, वर्णो महत महत्व ॥ ७४ ॥

पु० ॥ अगस्त्यसंहितायाम् ॥

अयोध्याचपरब्रह्मसरयूःसगुणःपुमान्॥तन्निवासीजगन्नाथःसत्यं सत्यंब्रवीमिते॥ ३५ यथासर्वावताराणामवतारीरघूत्तमः॥तथासर्वे-षुतीर्थेषुपावनीसरयूसरित्॥३६॥ यावन्नजायतेतस्यांस्नानपाननि-षेवणम् ॥ तावन्नजानकीनाथेप्राप्यतेभक्तिरुत्तमा ॥३७॥

पुनः ॥ पद्मपुराणे ॥

मन्वंतरसहस्रेषुकाशीवासेनयत्फलम्॥ तत्फलंसमवाप्नोतिसरयू-दर्शनेकृते ॥३८॥प्रयागेयोनरोगत्वामासानांद्वादशंवसेत॥तत्फला-दधिकंप्रोक्तंसरयूदर्शनेकृते ॥ ३९ ॥ मथुरायांकल्पमेकंवसतेमानवो यदि ॥ तत्फलादधिकंप्रोक्तंसरयूदर्शनेकृते ॥ ४० ॥ गयाश्राद्धेन यत्पुण्यंपुरुषोत्तमदर्शने ॥तत्फलादधिकप्रोक्तंसरयूदर्शनेकृते॥४१॥ पुष्करेषुनरोयातिकार्तिक्यांकृत्तिकायुते ॥तत्फलादधिकंप्रोक्तंसरयू-दर्शनेकृते ॥ ४२ ॥ इत्यादि ॥

दोहा-यौंहीं अमित प्रमाणहैं, वेद पुराणन माहिं ॥
ग्रन्थ अपार अपार वच, कहँलों वर्णे जाहिं ॥ ७५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाम रूप लीला बहुरि, धाम राम गुण ग्राम ॥
अमित अपार विचार कछु, वरणौं यश अभिराम ७६
सिय रघुवर वर चरित बहु, सुर मुनि किये बखान ॥
ग्रन्थ लखौ प्राचीनते, जानौ परम प्रमान ॥ ७७ ॥

इति श्रीमद्रसिकबिहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायने प्रथमविधाने द्वितीयो विभागः ॥ २ ॥ इति श्रीमद्रसिकविहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायने निर्णयवर्णनो नाम प्रथमो विधानः ॥ १ ॥

अथ जन्मविधानप्रारंभः ।

दोहा—श्रीसीतावर सहित पुनि, लषण सर्मीर कुमार ॥
पुर परिजन संयुत सबहिं, बंदौ वारंवार ॥ १ ॥

चौ०—अबवर्णतहौं कथा प्रसंगा ❀ जाते होय अनंद अभंगा ॥
बीच बीच पुनि थल अनुमाना ❀ धरिहौं वर प्राचीन प्रमाना २
नाय संत गुरु द्विज पद माथा ❀ विरचौं सिय रघुवर गुण गाथा ॥
सकल दोष दुख विघ्न विहाई ❀ रामकृपा सदग्रन्थ बनाई ॥ ३ ॥

दोहा--प्रथम करौं श्रीरामकी, वंशावली बखान ॥
ता पाछे पुनि होय बहु, विशद कथाको गान ॥ ४ ॥

अथ वंशावली ।

नारायण १ की नाभिते--कमल २ प्रगटभो आन ॥ ताते पुनि-ब्रह्मा ३ भये, विरचो सकल जहान ॥ ५ ॥ ब्रह्मातेसु--मरीच ४ भे, तिनके--कश्यप ५ मान ॥ कश्यपके--सूरज ६ प्रगट, सूरजके--मनु ७ जान ॥ ६ ॥ मनुकेहैं--इक्ष्वाकु ८ सुत, तिनके-- कुच्छ ९ विचार ॥ तिनके भये--विकुच्छ १० पुनि, तिनके--बान ११ निहार ॥ ७ ॥ बान पुत्र--अनरन्य १२ नृप, तिनके--पृथु १३ पृथिपाल ॥ तिनके भये त्रिशंकु १४ जो, स्वतनुस्वर्गगे हाल ॥ ८ ॥ धुंधुमार १५ तिनके भये, तिनकेहैं--युवनाश्व १६ ॥ मांधाता १७ तिनके सुजिन, भजीधरा सरवस्व ॥ ९ ॥ तिनकेभये--सुसंधि १८ पुनि, तिनकेहैं--ध्रुवसंधि ॥ ॥ १९ ॥ तिनके--भरत २० सुजासुकी, फैलि रही यश गंधि ॥ १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भये–असित २१ सुत भरतके, तिनके--सगर२२महान ॥तिनके–
असमंजस२३लखौ,भूप भूरि बलवान॥ ११॥अंशुमान२४ तिनके
प्रगट.तिनके पुत्र–दिलीप २५॥भये भगीरथ२६ तासुके लाये गंग
समीप॥ १२॥तिनके प्रगट–ककुस्थ२७भे,तिनके–रघु२८विख्या-
त॥तिनके हैं–कल्माष २९पद.अंत–पाद२९कहिजात॥ १३॥ति-
नके–संखन ३०तासुके; भये–सुदर्शन ३१ भूप॥ अग्निवरण ३२
तिनके प्रगट;तेजवंत वर रूप ॥ १४॥ शीघ्र गमन ३३ तिनके सु-
वन,तिनके–मरु३४महराज ॥ भये–प्रसुश्रुक ३५ तासुके, जिनको
सुयशदराज॥ १५॥अंबरीष ३६ तिनके बहुरि,तिनके--नहुष ३७
सुभाग॥तिनके भये--ययाति३८पुनि,तिनके सुत नाभाग ३९ ॥
॥१६॥ तिनके अज ४० अजके भये--श्रीदशरथ ४१ महाराज॥
भूप चक्रवर्ती प्रबल, तिहूँ लोक शिरताज॥ १७॥लसैं तीनसै साठ
जिहि, पटरानी वर रूप ॥ परम प्रवीन पतिव्रता, सब गुण ज्ञान
अनूप ॥ १८ ॥यदपि सकल समहैं तदपि, तिनमहँ परम प्रधान॥
तीन महारानी रुचिर, नृप बहु राखत मान॥ १९॥पुनि तिनहूँ महँ
मुख्य वर, श्रीकौशल्या देवि॥और सबै जिनकी सदा,अनुगामिनी
रुचि सेवि ॥२०॥ श्रीकौशल्या कैकयी,बहुरि सुमित्रा आदि ॥
सब महरानी परस्पर, राखहिं प्रीति अनादि ॥ २१ ॥

चौ०–वरपटरानिन सहित नृपाला ❀ परमानंद रहत सब काला॥
प्रीति रीति शुचि नीति समेता ❀ राजकाज बहुहोत सचेता२२॥
मंत्री आठ प्रवीन प्रधाना ❀ धर्म धुरंधर नीति सुजाना ॥
वीर उदार धीर शुचिचारी ❀ प्रजापाल नृपआज्ञाकारी॥२३॥

दोहा–धृष्ट१जयंत २ सुमंत३ अरु, विजय४अशोक५प्रधान॥
मन्त्रपाल६ सिद्धार्थ७पुनि, अर्थसाधक८हि जान॥ २४ ॥
श्रीदशरथ महिपालके, ये वसु मन्त्री मान ॥
पुनि द्वै प्रोहित मुख्यवर, त्रिकालज्ञ गुणमान ॥२५ ॥
श्रीवसिष्ठ१गुरु ज्ञान निधि, वामदेव२ मति धर्म ॥
शुभचिंतक।निरलोभ दुहुँ, कृत सन्तत सत कर्म ॥ २६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

येद्वै गुरु प्रोहित सुवे, मन्त्री आठ महान ॥
दश दशरथ महराजके, राज काज करं जान ॥ २७ ॥
सुरपुर नरपुर नागपुर, अवध नाथ आधीन ॥
सकल सुखी सब भांति नृप, आज्ञा पाल प्रवीन ॥२८॥
श्रीदशरथ महराजको, अनुपम साज समाज ॥
तेज स्वरूप प्रताप बल, शोभित सुयश दराज॥२९॥

घनाक्षरी कवित्त ।

जाको नाम प्रगट प्रताप तिहुँ लोकनमें रहत सशंक दिगपाल लोकपाल सब ॥ चलत चूमके हियहूके होतभूके अति उठत भाभूके शेषजूके शीश हाल तब ॥ राजनके राजा महाराजा दश स्यन्दनजू कढत सवारी घनी शस्त्र नोकशाल जब ॥ रसिक विहारी अवधेश चक्र वैनरेश सोहै और कोहै जौन जोहै झोकजाल अब॥ ३० ॥ कर कर होतहै कठोर पीठ कच्छकी थर थर कँपतहै ग्रीवाअहिराज की ॥ तर तर शब्द होत दाढतेंबराह हूके धरधरछातीधरकातगज राजकी ॥ छाय जातधूरिनभ मण्डल छिपायजाति आसनडगाय जात शिव सुरराजकी ॥ रसिकविहारी जै जै सोर सरसायजात कढत सवारी जब रघुकुल राजकी ॥ ३१ ॥ जाकी ओर भूलिहू कृपाकीकोरकीनी भूपताकेदुखदारिदपरायकै जनीभये ॥ जाहीके भरोसे सुरपालहूँ निशंक रहैं जाके तेज पुञ्जशेष सहस्त्र फनी भये॥ रसिकविहारी ऐसे भयेहैं न ह्वैहैं अब जैसे अवधेश धर्म थपन पनी भये॥जाकी प्रभुताई दई पाई प्रभुताई सब जाके धन दीनेसे कुबे-रहू धनी भये ॥ ३२ ॥

सो०--ऐसो अमित प्रताप; श्रीदशरथ महाराजको ॥
सो कौशलपुर आप, रैनि दिवस पालत प्रजहि ॥३३॥

चौ० अवधपुरी दशरथरजधानी ❀ जिहिं लखिअमरावतीलजानी॥
चहुँदिशिविशद विचित्र ललामा ❀ सदनसरित सरमगआरामा३४
उत्तर अरु दक्षिण दिशि मांहीं ❀ योजन तीन प्रमाण रहांहीं ॥
पुनि पूरब पश्चिम दिगजोहै ❀ द्वादश योजन अवध बसोहै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अष्टावृत्त बद्ध प्राकारा ❀ परम रम्य दृढ उच्च अपारा॥
ताबिच रहत अमित पुरवासी ❀ यथायोग प्रमुदित सुखरासी ३६
पुर पैठत जो प्रथम प्रकारा ❀ ताबिच शूद्र सदन विस्तारा॥
ताते पुनि द्वितीय प्राकारा ❀ तहां वैश्य गृह विविधप्रकारा ३७
ता आगे जो तृतिय प्रकारा ❀ तामधि विप्र धाम शुचिसारा॥
ताते पुनि प्राकार चतुर्था ❀ तामहँ क्षत्रिय सकल समर्था ३८
जो पञ्चम प्राकार तहांई ❀ बन्धु वर्गते सकल रहांई॥
है षष्ठम प्राकार तहांहीं ❀ संनिध सेवक विशद बसांहीं ३९
अति विचित्र सप्तम प्राकारा ❀ तामधि राजसदन विस्तारा॥
द्वै योजन प्रमाण वर हेरा ❀ भूप भवन मण्डल चहुँ फेरा ४०
परम विचित्र धाम वर सोहैं ❀ सुरपति सदन जाहिलखि मोहैं॥
यथा योग सब थल सुखकारी ❀ साजे साजअमितमनहारी ४१॥
कुंज निकुंज वाटिका नाना ❀ सर आराम पंथ सुरथाना॥
सभा धाम इत्यादि अनेका ❀ सुंदर सकल एकते एका॥४२॥
पुनि अष्टम प्राकार अनूपा ❀ अति उत्तम वर विशद सुरूपा॥
तहँ अंतहपुर सदन सुहाये ❀ द्वैयोजन मंडल चहुँछाये॥४३॥
कौशल्यादि सकल नृपदारा ❀ सबके विलग विलग आगारा॥
सरस एकते एक घनेरे ❀ तहँ लौकिकगतिमिलैनहेरे ४४॥

दोहा—शोभा संपति साज सुख, नित नूतन सरसाय॥
दासी वेष बनाय जहँ, रिधि सिधि बसैं सदाय॥४५॥

लघुते लघु सेवक भवन, हैं सुर सदन समान॥
पुनि कौशलपति महलको, को करि सकै बखान॥४६॥
तीन लोक महँ और थल, अवधपुरी सम नाहिं॥
जाहि विलोकि विरंचि हरि; शिव सुरराजसिहांहिं॥४७॥
निज निज मंडल बसहिं सब, विविध मंडली धाम॥
यथा उचित मरयाद मय, सकल सुपास सुठाम॥ ४८॥
यद्यपि सदन विशाल बहु, सघन तदपि सब भांति॥
चहुँ फराक मग स्वक्षता, वर शोभा सरसाति॥ ४९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवध सदन संख्या सकल, किमि वर्णौं मति थोरि॥
याते मुख्य अगारते, कहौं यथा बुधि मोरि॥ ५० ॥
अवध मध्य मुनि ७ लक्षवर, देवागार ललाम॥
अंबर०नभ०ऋषि७बान५शशि१, नंद९राम३द्विजधाम५१
ख०ख०रवि१२तिथि१५वसु८अवधमें, क्षत्रियभवनअछेह॥
ख०ख०नभ०सर५रस६नाग८मुनि७, चंद्र१वैश्यगणगेह५२
वसु८दृग२ग्रह९सर५चंद्र१ऋषि७राम३पक्ष२महि१ जान॥
सदन शूद्र गणके इते, अवधपुरी मधि मान॥ ५३ ॥
वापी बाग तडाग वर, लस त्रयोदश १३ लक्ष॥
अवध मध्य ऋषिगण कुटी, सपद कोटि, १ अतिस्वक्ष ५४

अथ संख्या चक्र।

प्राकार	१	२	३	४	५	६	७	८
अंतर	इसमें	इसमें	इसमें	इसम	इसमें	इसमें	इसमें	इसमें
निवास	शूद्र	वैश्य	ब्राह्मण	क्षत्रिय	बंधुवर्ग	समीपी सेवक	राज भवन	रनिवास

॥ प्राकारनिर्णय चक्र।

भवनांक	भवननिर्णय
७०००००	देवस्थान--सातलाख
३९१५७००	ब्राह्मणोंके स्थान--उनचालीसलाख पन्द्रहहजार सातसौ
८१५१२००	क्षत्रियोंके स्थान--इक्यासीलाख इक्यावनहजार दोसौ
१७८६५०००	वैश्योंके स्थान--एककरोड अठत्तरलाख पैंसठहजार
१२३७१५९२८	शूद्रोंके स्थान--बारहकरोड सैंतीसलाख पन्द्रहहजार नौसौअठावीस
१३०००००	बावडी--कुँवा--तालाव--बाग--तेरहलाख
१२५०००००	मुनीनकी कुटी--सवाकरोड

राजभवन और निवास-- और प्राकार बाहर वे न्यारेहै॥ ये ६ प्रकारमें मुख्य मुख्यहैं॥

मुख्य निवासी स्थान संख्या चक्र।

दोहा--अंतहपुर अरु नृप भवन, इतने विलग बखान॥
पुनि प्रकार बाहर प्रजा, ते गृह न्यारे जान॥ ५५ ॥
षट् प्राकार सुमध्य जो, लसैं अमित आगार॥
तिनमें जे गृहमुख्य यह, संख्या लेहु विचार॥ ५६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रुद्र याम लहि देखिये, तहँ बहु करि निरधार॥
अवध नगर वृत्तांत सब, लिखो सहित बिस्तार॥ ५७॥

प्र० ॥रुद्रयामले।

अयोध्यायांप्रदृश्यंतेपंचकोटिशतानिच ॥ प्रासादाश्चमहाभागे अर्बुदान्येकविंशतिः॥ १॥तन्मध्येराजराजस्यराजतेराजमंदिरम्॥ सुविभागंमहाकक्षंतारागणामिव चंद्रमाः॥ २॥ इत्यादि॥

दोहा-वर्णन कौशल नगरको, करौं कहा मैं मंद॥
शारद शेष गणेशहू, भाषि न सकहिं सुछंद॥ ५८॥
जहां चक्रवर्ती नृपति, श्रीदशरथ महाराज॥
धर्मराज संतत करत सकल भूप शिरताज॥ ५९॥
पुर परिजन संयुत नृपति, रहत सदा सानंद॥
विपुल विलास विभूति मय, राज्य करत निरद्वंद॥ ६०॥

इति श्रीरामरसायन द्वि० वि० अवधराजश्रीवर्णनोनाम प्रथमोविभागः॥ १॥

दोहा-धर्म धुरंधर भूपवर, दानी परम प्रवीन॥
प्रबल चक्रवर्ती सदा, तिहुँ पुर जिहि स्वाधीन॥ १॥

चौ० सोइकदिनदशरथमहिपाला ❀ मुकुरलखो निजवदनविशाला
वृद्ध वैस चिह्नित तनु देखी ❀ नृप हिय चिंता भई विशेखी
बीती वय किशोर तरुणाई ❀ आय वृद्धता अंगन छाई॥
अजहूँलों सुत एकहु नाहीं ❀ पुत्रहीन यह राज्य वृथाहीं २॥
इमि ससोच नृप सचिव समेता ❀ आतुर गये वसिष्ठ निकेता॥
गुरुहि पूजिपद धरिनिज शीशा ❀ विनय करी कर जोरि महीशा॥
सुनिनृपविनयमुदितमुनिज्ञानी ❀ बोले त्रिकालज्ञ वर बानी॥
वेद मूल तव पुत्र भुवाला ❀ ह्वैहैं अति सन्निधि वह काला॥
सुनि वरवचनमुदितहियभयऊ ❀ गुरुहि वंदि भूपति गृह गयऊ॥
तहां सुमंत रहसि लखि भूपा ❀ वर्णी पूरव कथा अनूपा॥ ६॥
अंग देश तुव सखा सुदेशा ❀ रोमपाद बलवंत नरेशा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अनावृष्टि तिहि राज मँझारी ❀ महाकाल वश प्रजा दुखारी॥७
तब सो नृप यह मंत्र दृढावा ❀ शृंगीऋषि कर परम प्रभावा ॥
सो मम धाम आय ऋतु करही ❀ होइ वृष्टि तौ सब सुख भरही॥८
इमि विचारि गणिकान सिखाई ❀ भेजीं सो ऋषि पास सिधाई ॥
जाय ऋषिहि करि दंड प्रणामा ❀ बूझी कुशल कपट करि वामा॥
शृंगीऋषि तिहि तियन निहारी ❀ यह जानी ये मुनि वनचारी ॥
तिन प्रति कहे वचन हुलसाई ❀ धन्य दरश दीने ऋषि राई ॥
कश्यप तनय विभांडक नामा ❀ हम तिहि पुत्र बसैं इहि ठामा॥
तुम मुनि रहौ कौन वन माहीं ❀ फेरि कबौं मिलि दरश कराहीं
सो सुनि तियवर मोदक दीने ❀ शृंगीऋषि फल जानि सुलीने॥
भोजन किये स्वाद अति लागे ❀ बहुबखान कीनोअनुरागे॥१२
तब गणिका बोलीं तिन पाहीं ❀ हम जिहि आश्रम सदारहांहीं
ता वनके फल ये द्विजराई ❀ यों कहि मुनि लीने भरमाई॥
मिसही मिस इत उत बहराई ❀ शृंगीऋषिहि देश मधिलाई ॥
रोमपाद नृप हर्ष समेता ❀ मुनिहि पूजि लै गये निकेता॥
ताही छिन वर्षा चहुँ भारी ❀ भई भये सब लोग सुखारी ॥
पुनि नृप मुदित होय मन माहीं ❀ शांता नामसुता तिनव्याहीं १५
सनतकुमार सकल यह भाखी ❀ कथा प्रथमतैं मैं मुनि राखी॥
पुनि तिन कही अवध भूपाला ❀ दशरथ नाम धर्म प्रतिपाला १६
जब शृंगीऋषिआनहिं जाई ❀ सविधि यज्ञ ठानैं हुलसाई ॥
तब नृप चारि पुत्र वर पावैं ❀ तिहूँ लोक कल कीरति छावैं १७
सचिव वचनसुनि नृप तहँ जाई ❀ लाये शृंगीऋषिहि लिवाई
सरयू उत्तर दिशि थल पावन ❀ ख्यात मनोरम भूमिसुहावन १८
तहां यज्ञ मंडप वर साजा ❀ आये चहूँ देशके राजा ॥
सुर नर मुनि गंधर्व अपारा ❀ जुरे समस्त सहित सुतदारा॥ १९
वेद विहित सब साज सजाई ❀ अमित अपार ऋद्धि सिधि छाई
शृंगीऋषि वासिष्ठ अगवाना ❀ पुनिबहु द्विजमुनिकुशलसुजाना

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अश्वमेध मख सविधि करायो ❀ पुत्र हेतु पुनि यज्ञ दिढायो ॥
वेद मंत्र मय आहुति दीनी ❀ सकल सुरीति यथोचित कीनी २१
सो०—ता छिन समय निहार, अग्निदेव नररूप धरि ॥
लैकर पायस थार, यज्ञ कुण्डते प्रगटभे ॥ २२ ॥
ऋषिहि दयो सो आय, ऋषि दीनों नरनाथको ॥
भूपति उठि हरषाय, लीनों शीश चढाय कर ॥२३॥
सो पायस ले भूप, चारि भाग कीने उचित ॥
यथायोग लखि रूप, तिहुँ पटरानिनको दये ॥२४॥
सब पायसको अर्ध, सो नृप कौशल्यहि दियो ॥
शेषरहो तिहि अर्ध, दयो कैकयिहि मुदितह्वै ॥२५॥
शेष रहो पुनि ताहि, करि द्वै भाग महीप मणि ॥
दयो सुमित्रहि चाहि, लहि तिहुँ तिय प्रमुदित भई॥२६॥
संयुत प्रीति प्रतीति, रानी कौशल्यादि तिहुँ ॥
पायस पाय पुनीत, भई गर्भवंती रुचिर ॥ २७ ॥
जादिनते नृपतीय, तिहूँ गर्भवंती भई ॥
ता दिनते सब हीय, पुनि परिजन प्रमुदित महा॥२८॥
शिव विरंचि सुरराय, संयुत सुर ऋषि नाग सब ॥
नित प्रति हिय हुलसाय राम दरश आशा लगी २९॥
अमित देव नर नारि, धारि मानुष वपु अवधमें ॥
बसे अनंद विचारि, राम जन्म सुख लखन हित॥३०॥

इति श्रीरामरसायन द्वि० वि० दशरथयज्ञवर्णनो
नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

चौपाई—अब वर्णों सो सहित उमंगा ❀ विधि प्रेरित जो देवप्रसंगा
जब दशरथ नृप यज्ञ सुठाना ❀ अश्वमेध वर विधि अनुमाना॥१॥
तबते प्रथम विरंचि विचारी ❀ प्रगटे राम अवध सुखकारी ॥
तिहूँ लोकको सब दुख हरिहैं ❀ अतिविचित्र लीला बहुकरिहैं॥२॥
यातें सुर गंधर्व सुनागा ❀ निज अंशन युत सकल सभागा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रगटि बसैं महि जहँ तहँ जाई ❀ वानर ऋक्ष मनुज समुदाई ॥३॥
जो विचारि विधि आयसु दीनी ❀ सो सब उचित शीशधारिलीनी
रूप तेज गुण बल जिहि जैसे ❀ प्रगटे बिविध अंशते तैसे॥४॥

दोहा-प्रथम भये विधि अंशते, जाम्बवंत ऋच्छेश ॥
वाली सुरपति तेजते, कपिपति प्रगट सुरेश ॥ ५ ॥
भानु अंश सुग्रीव भे, सुरगुरु कपि तार ॥
बहुरि गंधमादन लखौ, अंश कुबेर सुढार ॥६॥
विश्वकर्माके अंश नल, अनल तेज कपि नील ॥
हैं अश्विनीकुमार ते, द्विविद मयंद सुशील ॥ ७ ॥
पुनिसुखेन वर वरुण ते, शंभु अंश हनुमान ॥
धीर वीर तिहुँ लोकमें, जा सम कोउ न आन॥ ८ ॥
इच्छा तनुधारी सकल, तिहुँ पुर चारी कीश॥
यदपि तदपि हनुमंत गुण, सबते अधिक सुदीस॥९॥
अति समर्थ बल तेजनिधि, कपि केसरी कुमार ॥
जन्म कथा तिनकी कछू, कहौं सुमति अनुसार ॥१०॥

चौ०-कपि बलवन्त केसरीनामा ❀ तिनकी तिय अञ्जनीललामा ॥
वर वानरी स्वइच्छा चारी ❀ एकदिवस सो हर्षितभारी ११॥
करि शृंगार मानुषी रूपा ❀ विरचतही गिरि शिखरअनूपा॥
नखशिखसकल अङ्ग शुचिसोहे ❀ तिहि लखि पवन देव मनमोहे
आय वेगि करि तिहि तनु परसो ❀ मनसिज अँग अँग अतिसरसो॥
तिनहिं देखि अञ्जनी रिसानी ❀ बोलीविलखिक्रोधमयवानी १३
देव मंदमति यह कह कीनो ❀ सब मम कर्म धर्म हरि लीनो॥
पवन कहो सुनि अञ्जनि वानी ❀ तुम सुन्दरी वृथा रिस ठानी १४
हौं न अधर्म कियों तुम पाहीं ❀ पतिव्रत भंग भयो कछुनाहीं॥
लेहु मुदित यह मम वरदाना ❀ पैहो सुत मोसम बलवाना १५॥
पवन वचन सुनि केसरि नारी ❀ सकुची प्रगट हिये मुद भारी ॥
भई स गर्भ अञ्जनी जबहीं ❀ प्रतिदिनद्विगुनतेजतनुतबहीं १६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

योंहीं गर्भ समय सब बीता ❀ आयो कातिकमास पुनीता ॥
तिथी चतुर्दशि मङ्गल वारा ❀ असित पक्ष दिन अंत विचारा १७
स्वातीनखत लगन शुभ मेषा ❀ ग्रह बलिष्ठ सब योग विशेषा ॥
भई अंजनी तबहिं प्रसूता ❀ प्रगटो सुंदर पुत्र अभूता॥ १८ ॥
कंचन वर्ण सुअंग अनूपा ❀ अतिचंचल तनु पुष्ट सुरूपा ॥
लखि अंजनी पुत्र हरषानी ❀ जानी सत्य पवनकी वानी १९॥
प्रसव अंत लगि क्षुधा विशेखी ❀ अंधकार कानन निशि देखी ॥
विन जल फल सब रैनि बिताई ❀ प्रात होत आतुर उठि धाई २०॥
सुतहित्यागि तहँ जाय उताला ❀ खोजत फिरत अहार विहाला॥
सरस पत्र फल फूल सुहाये ❀ इत उतधाय उदरभरि खाये २१॥
इत विन मात बालकपि रोवै ❀ विलम भयो बहु क्षुधा विगोवै ॥
ता छिन प्रगट भये रवि आई ❀ अरुण वर्तुलाकार सुहाई॥२२॥
अंजनि पुत्र क्षुधातुर भारी ❀ लख पक्व फल सारिस तमारी ॥
तडकि तडाक भानु गहि लीनो ❀ बाल बुद्धिभ्रम कछु नाचीनो २३
जा छिन रविहिगहोकपिबाला ❀ ताछिन रहो ग्रहणको काला ॥
आयो भानु निकट द्रुत राहू ❀ सो लखि भयो क्रोध उर दाहू २४
पै लखि पवनपुत्र बल भारी ❀ गयो इंद्र ढिग वेगि सुरारी ॥
कहे सुरेशहि वचन रिसाई ❀ अब विरंचि नव सृष्टि बनाई॥२५॥
दूजो राहु आज रवि तोप्यो ❀ मेरो सकल पराक्रम लोप्यो ॥
सुनि सुरपतिलै कुलिश कराला ❀ चढि ऐरावत चले उताला २६
संग राहु वासव तहँ आये ❀ जहँ केशरी सुवन रवि छाये ॥
दूरहिते लखि राहुहि श्यामा ❀ कपि तिहि फलजानौ अभिरामा २७
रवि तजि गहो राहुको धाई ❀ सो लखिकै धाये सुरराई ॥
आवत उज्ज्वल गज कपिदेखो ❀ ऐरावतहि शुभ्र फल लेखो २८॥
तजि सिंहिका सुतहि तिहिं ठाये ❀ सुरपति गज गहिवेको धाये॥
आवत देखि बाल कपि योधा ❀ मारो कुलिश इन्द्र करि क्रोधा २९
वज्र घात पीडित कपि बाला ❀ आय गिरे गिरिपर बेहाला ॥
लागत सुरपति कुलिश अभंगा ❀ किंचित भयो वाम हनु भंगा ३०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा--पवन देखि निज सुत विकल, अंक उठायो धाय ।।
तिहि लै बैठे कुपित ह्वै, गिरि कन्दर दुरि जाय।।३१।।
मरुत कोपते जीव सब, विकल भये तिहुँ लोक ॥
प्रलयकाल आयो अबै, यों अकुलात सशोक ॥३२॥
सब इन्द्रिय मग रुद्ध भे, नेक न पवन प्रचार ॥
प्राण कण्ठगत छिनकमें, भये जीव गणझार॥३३॥
सकल सुरासुर विकल ह्वै, आरत करत पुकार ॥
लखि कलेश सब अमर युत, वेगि चले करतार॥३४॥
जहां पवन निज पुत्र युत, रहे कन्दरा धाम ॥
शिव विरंचि आदिक सकल, सुर आये तिहिंठाम ३५॥
पवन हेरि सुर मण्डली, उठे सुतहि लै अंक ॥
करि प्रणाम विधिचरणपै, पुत्रहि धरा निशंक ॥३६॥
तब करता करिकै कृपा, कर फेरो शिशुमाथ ॥
पुत्र भयो प्रमुदित पवन, जान्यो जन्म सनाथ ॥३७॥
अति प्रसन्नह्वै वायु तब, कियो लोक सञ्चार ॥
विरुज भये सब जीवगण, लहों अनन्द अपार॥३८॥
मुदित देव गण जीव सब, जाने विगत कलेश ॥
स्वारथ परमारथ मिलत, बोले वचन सुदेश ॥३९॥
सकल देव मिलि दीजिये, मारुति हित वरदान ॥
तब मघवा बोले मुदित, संयुत अर्थ प्रमान ॥ ४०॥
बंक भयो हनु वज्रते, याते कपि सुत नाम ॥
ख्यात रहे हनुमान इव, होंय तेज बल धाम ॥ ४१ ॥
पुनि प्रसन्न मम दत्तवर, यह हनुमत हित जान ॥
अमर सदा मो वज्रते, रहै अमित बलवान ॥४२॥
पुनि दिनेश निज कलनते, दीनों सत कल अंश ॥
परमप्रकाशित अंगभो, हनुमत कपि अवतंश ॥४३॥
कहो भानु पुनि होय जब, सप्त वर्ष हनुमान ॥
तब हम देहैं इनहिं वर, सकल सुविद्यादान ॥४४"

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रमुदित वर दीनों वरुण, हनुमन्तहि सुखदाय ॥
जलते अरु मम पाशसे, रहै अवध्य सदाय ॥ ४५ ॥
यम बोले हरषाय नित, निरुज रहै बलवन्त ॥
पुनि अवध्य मम दण्डते, विचरै सकल दिगन्त ॥४६॥
हनुमन्तहि पुनि विशद वर, दीनो मुदित कुबेर ॥
चण्ड गदाते अमरह्वै, कपि बिचरै चहुँ फेर ॥ ४७ ॥
हैं त्रिशूल आदिक विविध, जो मम शस्त्र सुझारि ॥
तिन सब ते कपि अमर यों, वर दीनो त्रिपुरारि ४८॥
कहो विश्वकर्मा हरषि, मम कृत जिते हथ्यार ॥
अमर होए तिन सबनिते, सन्तत पवनकुमार ॥ ४९ ॥
वर विरंचि दीनो हरषि, ब्रह्मदण्ड सब जोय ॥
हनूमान तिनते सदा, अवशि अवध्य सुहोय ॥ ५० ॥
पुनि विधि बोले मरुत प्रति, हो तव पुत्र अजेय ॥
चिरजीवी बलवंत शुचि, रहै सदा मति श्रेय ॥ ५१ ॥
मित्रपाल होवै अमित, कामरूप रिपु शाल ॥
वर त्रिलोकगामी प्रबल, पूज्य अंजनी लाल ॥ ५२ ॥
याविधि सुरवर दै कपिहि, गये सु निज निज धाम ॥
वन बिचरत निश्शंक नित, पवनपुत्र अभिराम ॥५३ ॥

चौपाई-दैवरदानगयेसुरजबते ❀ प्रतिदिन बढै तेज बल तबते ॥
हनुमान निज इच्छाचारी ❀ विचरतचहुँनितविपिनमँझारी५४
कपि चंचलपुनि बालनिशंका ❀ वर प्रभाव अतुलित बलबंका ॥
जाय नित्य शिशुकेलिकराहीं ❀ सोलखिवनचर अपर डराहीं५५
तरुउखारि नभ ओर चलावैं ❀ धरि हलाय गिरि शिखर ढहावैं॥
कूदैं किलकि चढैं द्रुम जाई ❀ मंथै सर सरिता जल धाई ॥५६॥
जाय मुनिनके आश्रम माहीं ❀ लैवल्कल मृगचर्म पराहीं ॥
काहू परन कुटी झकझोरैं ❀ काहू नीर पात्र गहि ढोरैं॥५७॥
काहूकी पादुका बहावैं ❀ काहूके फल फूल नशावैं ॥
जो कोऊ ऋषि रंचहु डाटैं ❀ तौ तिहि धाय कोप करि काटैं५८

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भय वश रहैं सबै चुप साधी ❀ पवनसुवन नित करैं उपाधी ॥
भयेविकलऋषिगणवनवासी ❀ भृगु अंगिरा आदि तपरासी ५९॥
ते त्रिकालदर्शी मुनि ज्ञानी ❀ ज्ञान दृष्टि कपिवर गति जानी॥
रहे मष्ट कछु दिवस बहोरी ❀ हनूमान निज बानि न छोरी ॥
सबहीभयेबिकलअतिजबहीं ❀ दीनों शाप क्रोध करि तबहीं ॥
पवनपुत्र बल विस्मृत रहई ❀ संतत सरल चित्तनिरवहई॥६१॥
जब कोऊ बल सुरतिकरावै ❀ तबहिं वीरता कपि तनु आवै ॥
इमि शापित ह्वै पवनकुमारा ❀ भूले निज बलसकलअपारा ६२॥
शांत रूप विचरै वन मांहीं ❀ कबौं न कछु मुनि विघ्न करांही॥
इहि विधि सप्त वर्ष वय बीती ❀ रहत सदा शास्त्रामृगरीती॥६३ ॥
अष्टम वर्ष प्रवेश विचारी ❀ बोले पवन समय अनुहारी॥
जाहु पुत्र दिनकरके पासा ❀ करौ सकल विद्याअभ्यास!६४॥
तुम्हैं जबहिं सब सुरवरदीना ❀ तबहीं यह दिनेश प्रण कीना ॥
हम वर विद्या सकल पढैहैं ❀ वेद शास्त्र गुणबिधिसिखैहैं६५॥
सुनि पितु वचन मौनहनुमाना ❀ सो लखि पवन आचरज माना॥
बोले मरुत सुवैन बहोरी ❀ जान्यो बाल केलि मत भोरी६६
पुत्र सु बाल बुद्धि परिहरहू ❀ विक्रम बल विद्या उर धरहू ॥
यदपि देव वर विदित प्रभावा ❀ बालकेलिकल्पित तुम पावा६७॥
तदपि परम उत्तम यह बाता ❀ रवि ढिग जाहु पढ़नहित ताता॥
ह्वै मम सुत मोसम बलवाना ❀ रविढिगगमनसुनतचुपठाना ६८
केलि कलोल वीरता करहू ❀ रवि तम गज गहिवे नभ चरहू॥
विद्या पढन हेतु हरि पासा ❀ जातहोतहियअधिकहिरासा ६९
सुनि पितु वचन वीरता बाढ़ी ❀ भई पुच्छ रोमावलि ठाढी ॥
नभ दिशि देखि हर्षि हनुमाना ❀ तमकि गगन कूदे बलवाना७०॥
परे जाय उदयाचल बंका ❀ तेज पुंज कपि निपट निशंका ॥
औचक देखि दिनेश डराने ❀ पुनि धरिधीरभानु पहिचाने ७१
धाय गहे रविपद हनुमंता ❀ दिनमणिआशिष दीन अनंता ॥
पुनि कर जोर केशरी वारे ❀ मृदुल नम्र वर वचन उचारे ७२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पितु सिखदै प्रभु पास पठायो ❀ गुरुपद रज सेवन मैं आयो ॥
लखि सेवक हरि कृपा करीजे ❀ विद्यादान मुदित मुहिं दीजे७३
सुनि कपि वचन प्रसन्न तमारी ❀ एवमस्तु वर गिरा उचारी ॥
खगपति बोले वचन बहोरी ❀ पवनपुत्र तव वय अति थोरी७४
मम रथ कबहुँ रहत थिर नाहीं ❀ अमित वेग वर वाजि चलाहीं॥
चलत संग अतिही श्रम पैहौ ❀ किहिविधिविद्यामेंचितदैहौ७५

घनाक्षरी कवित्त ।

काम क्रोध लोभ मोह विवश प्रमादी मूढ संतत दरिद्री दुःखी मत्त मद भावैहै॥मानीअभिमानी व्यग्रचंचलअयान अति कृपण कुसंगी सोच सकुच रहावैहै॥आलसी अभागी अनचाही अनाचारी बहु सरुज अनौसरी अधीर अकुलावैहै॥रसिकविहारी भनै भानु हनुमान सुनौ येतनको पूरी वर विद्या नाहिं आवैहै ॥ ७६ ॥

सो०-भानु वचन सुनि वीर, नाथ शीश कर जोरि दुहुँ॥
बोले हरषि सुधीर, नाथ कही सो सत्य सब॥ ७७ ॥
मो लघुमति अनुसार,मैं निज हिय दृढ कीन यह ॥
गुरुकी कृपा अपार, अगम होय सो सुगम अति ॥ ७८॥
मोहिं दास दृढ जानि, नाथ साथ निज लीजिये ॥
वर विद्या शुभ दानि,कृपा दृष्टि करि दीजिये ॥ ७९ ॥
यौंहीं बहु बतरात, तात जात अति दूरलौं ॥
पिछले पगन चलात, गगन गये रवि संगही ॥ ८० ॥
सो गति देखि दिनेश, कृपा सहित अति मुदितह्वै ॥
करन लगे उपदेश, वेद शास्त्र विद्या विशद ॥ ८१ ॥
रवि रथ आगे वीर, चलत पाछिले पगनतें॥
विद्या पढी सुधीर, स्वल्प दिवसमें पवन सुत ॥ ८२ ॥
सामादिक चहुँ वेद, व्याकरणादिकशास्त्र षट ॥
संयुत सकल विभेद, पढि रविते कपि निपुणभे ॥ ८३ ॥
विद्या विशद अनूप, तेज धाम कापिको दई ॥
सुमति तेज बलरूप, लखि सब देव सराहहीं॥ ८४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि आदित्य दयाल, कह्यो जाहु कपि निज भवन ॥
वर विद्या सबकाल, अनभ्यास जानि राखियो ॥ ८५ ॥
गुरु आयसु धरि माथ, चरण वंदि बुधिमंत कपि ॥
कही जोरि युग हाथ, नीत प्रीत संकोच युत ॥ ८६ ॥
दोहा—नाथ कृपा करि मुहिं दई, विद्या विमल अपार ॥
गुरुतें उरण तौन जो, सेवौं जन्म हजार ॥ ८७ ॥
पै मर्याद प्रमाण यह, प्रभुहि विदित सब सोय ॥
विन दीने गुरु दक्षिणा, विद्या सफल न होय ॥ ८८ ॥
याते प्रभु करिकै कृपा, यथाशक्ति अनुमान ॥
लीजे कछु गुरु दक्षिणा, मुहि निज सेवक जान ॥ ८९ ॥
पवनपुत्रके वचन सुनि, बोले तेज निकेत ॥
सत्य धर्म मर्याद यह, भाषी सुमति सचेत ॥ ९० ॥
निरखि शक्ति तुव पवनसुत, हम जो करहिं रजाय ॥
देहु वही गुरुदक्षिणा, मम हिय अति हुलसाय ॥ ९१ ॥
अंशुमान हनुमान प्रति, भाषो सहित सनेह ॥
वीर धीर गुरु दक्षिणा, प्रीति सहित यह देह ॥ ९२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

दुष्ट दल दंडिबेको रहियो उदंड चंड मंडितह्वै कीजो बल खंडित सुरारीको॥सकल दराज साज साज राम काज काज संयुत-समाज सुख दीजो धनुधारीको॥तुम हनुमान बलवान वर बुद्धिमान हूजो अनुरक्त भक्त जक्त रखवारीको ॥ देश परदेशमें हमेश सब भाँति घनो राखियो आनंद सदा रसिकविहारीको ॥ ९३ ॥

चौ०—यौंकहि पुनि बोले दिनराई ❀ परम प्रीति संयुत हुलसाई ॥
यह रजाय दृढ गहो हमारी ❀ येही गुरु दाक्षिणा तिहारी॥
सुनि गुरु आयसु कपि गुणवंता ❀ दृढ करि हिय धरि लई तुरंत
निरखि दिवाकर कपि धुरधर्मा ❀ ह्वै प्रमुदित वर दयो सुपर्मा॥
फलित होय विद्या तुव कीशा ❀ पूरण कृपा करैं जगदीशा ॥
जे जन तुव सेवा चित लावैं ❀ ते सब निज इच्छित फलपावैं ९६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यों कहि कपि शिरपर कर फरो❀कृपा सहित सिखदै बहुतेरो ॥
बिदा किये हनुमंतहि ईशा ❀चले हरषि गुरुपदधरि शीशा९७
कूदि कुधर अस्ताचल पाहीं❀नभ मारगह्वैकै छिन माहीं ॥
आय दुहूँ पद माथ नवायो ❀पितु जननी सुतलखिसुखपायो॥
विचरत सुख युत इच्छाचारी ❀तिहूँ लोक मुद मंगल कारी ॥
रामचन्द्र दरशनकी आसा ❀लागि रहीगुरुवचविश्वासा९९॥
गुरुसिखहियधरिअंजनिलाला❀ रसिक विहारीपाल कृपाला ॥
इमि हनुमंत जन्म गुण गाथा ❀ वर्णियथाश्रुतभयोसनाथा१००
अब हनुमंत जन्म तिथि मासा❀ है प्रमाण पूरब जो खासा ॥
उत्सव सिंध ग्रंथके माहीं❀है सो लिखौंसत्य इहि ठांहीं१०१

प्र० ॥ उत्सवसिंधौ।

ऊर्जस्यचासितेपक्षेस्वात्यांभौमेकपीश्वरः ॥
मेषलग्नेञ्जनागर्भाच्छिवः प्रादुरभूत्स्वयम् ॥ १ ॥

दोहा–लिखो हनूमत जन्मको, है इतिहास पुरान ॥
चैत मास पूनौ तहां, सोऊ वाक्य प्रमान ॥१०२॥
कल्पभेदसों जानिये, यामें कछू न फर ॥
वर्तमानके कल्पको, निश्चय यही निबेर ॥ १०३॥
उत्सवसिंधु सुग्रन्थ अरु, वाल्मीकि ये दोउ ॥
होत एकता बुद्धिते, लखौ सुबुध सब कोउ ॥ १०४॥
वाल्मीकिमें है सुकछु, लिखौं इहां लखि लेहु ॥
शब्द अर्थ भावार्थतें, निश्चय सकल करेहु ॥ १०५ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये ॥ उत्तरकाण्डे ॥ सर्ग ॥ ३५ ॥

शालिशूकनिभाभासंप्रासूतेमंतदांजना॥फलान्याहर्तुकामावैनि ष्क्रांतागहनेवरा ॥२॥ एषमातुर्वियोगाच्चक्षुधयाचभृशार्दितः॥रुरो-दशिशुरत्यर्थंशिशुःशरवणेयथा॥३॥ततोद्यंतंविवस्वतंजपापुष्पोत्क रोपमम्॥ ददर्शफललोभाच्चद्युत्पपातरविंप्रति ॥ ४ ॥बालार्का-भिमुखो बालोबालार्कइवमूर्तिमान्॥गृहीतुकामोबालार्कंप्लुवतेंबरम-ध्यगः॥५॥यमेवदिवसंह्येषगृहीतुंभास्करंप्लुतः॥तमेवदिवसंराहुर्जि-घृक्षतिदिवाकरम् ॥ ६ ॥ इत्यादि॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा--जो पूरणिमा कहिय तौ, सूरज ग्रहण न होय ॥
याते हनुमत जन्म तिथि, असित चतुर्दशि सोय १०६॥
पुनि स्वाती नक्षत्रसो, ज्योतिष गणित प्रमान ॥
आवै कातिक कृष्ण तिथि, इमि चतुर्दशी जान १०७॥

इति श्री०रा०र०द्वि०वि०हनुमज्जन्मवर्णनोनाम तृतीयोविभागः॥ ३ ॥

चौ०--अब वर्णौं सो सकलप्रसंगा ❀ राम जन्म रस रंग उमंगा ॥
जिहि उत्सव हित सुर मुनि झारी ❀ अमित दिवस आशाउरधारी १
अवधपाल दशरथ नृप रानी ❀ कौशल्यादि तिहूँ सुखदानी॥
जबते भई सगर्भ अनूपा ❀ तबतेप्रतिदिनबढतसुरूपा २॥
पुरवासी सब मगन अपारा ❀ घर घर होत मङ्गलाचारा ॥
सुख सम्पति निशिदिन अधिकाई ❀ राजमहल शोभा सरसाई ३॥
राम जन्म औसर नियरायो ❀ तिहूँलोकआनन्दउमगायो॥
लंका त्यागि और सब काहू ❀ जड़ चेतन तनु भरो उछाहू ॥४॥

घनाक्षरी कवित्त ।

ठौर ठौर मंजुल रसाल झौर झौर फूले तरुण भयेहैं नव पल्लव लह लहे ॥ मुदित मलिंद डोलैं निर्तत मयूर चारु करैं कमनीय कीर कोकिल कह कहे ॥ रसिकविहारी सुखकारीहै तयारी सब देव नर नारी भारी आनँद डह डहे ॥ औसर बिलोकि रामजन्म को विलोक चहूँ आपहीते होन लागे मंगल गह गहे॥ ५ ॥ राम जन्म सुखके निरंतर विलोकिबेको आनँद सुमिर देव हृदयउमाहैंहैं अति पछितायँ रहिजायँ अकुलायँ फेरि बार बार अवध निवासिन सराहैंहैं ॥ रसिकविहारी आयो औसर आनन्दकारी सब सुर झारी भारी भरत उछाहैंहैं ॥ बिधि बिधिताई त्यागि वामदेवभयो चाहैं शंभुतजि शंभुता वशिष्ठहोनचाहैंहैं ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–राम जन्मते प्रथमहीं, लीनी विरचि विरंचि ॥
चहूँ बंधुकी पत्रिका, धरि राखी अति संचि ॥ ७॥
सों चतुरानन समय लखि, शेष रहे दिन तीन ॥
चारु चारिहूँ कुंडली, सुरगुरुके कर दीन ॥ ८ ॥
कही विधाता देव गुरु, ये पत्री सुखदाय ॥
शुभ दिन आज वशिष्ठको, देहु अवधपुर जाय॥९॥
सुर मन्त्री सुनि मुदित ह्वै, चले अवध चित लीन॥
वेगि आय वर पत्रिका, चहूँ वशिष्ठहि दीन ॥ १० ॥
पितु विरचित लखि कुण्डली, अति वशिष्ठ हुलसाय॥
सुर गुरु संयुत वेगहीं, अविलोकत चितलाय ॥११॥

कुंडलीवर्णन–घनाक्षरी कवित्त ।

चैत सित नौमी सोम नषत पुनर्वसू है शूल योग कौलव करण शुभकारीहै ॥ कर्क है लग्न तहां सोहैं गुरु चन्द्र दोउ शनिहैंतुलाके धन केतु रिपुहारीहै ॥ भौमहैं मकर मीन कर्क मेष भानु देख मिथुन परेहैं बुध साथ तम भारीहै ॥ रसिकविहारी राम कुण्डली अनूप ऐसी विशद विचित्र या विधाता निरधारीहै ॥ १२ ॥

दोहा–भरत जन्म ग्रह रामतें, ध्रुव न्यारे ध्रुव एक ॥
यह विभेद सो जानिहैं जिनके विमल विवेक ॥ १३ ॥
चैत शुक्ल दशमी नखत, पुष्य भौम दिन जान ॥
गंड योग तैतिल करण, भरत सुजन्म प्रमान॥१४॥
राम धर्म सो भरत तन, खेचर एक समस्त ॥
भरत कुंडली कल कलित, विधि इमि लिखीप्रसस्त ॥१५॥
पुनि लछमन रिपुदमनको, जन्म येकही संग ॥
याते एकहि लग्न ग्रह, एक पांचहू अङ्ग ॥ १६ ॥
चैत शुक्ल एकादशी, अश्लेषा बुधवार ॥
वृद्धियोग गर करणमें, दुहू जन्म निरधार ॥ १७॥
लषण शत्रुहन लग्न ग्रह, राम सरिस सब ठान ॥
चहूँ कुंडली याहि विधि, विधि विरचित शुभ दान॥१८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथ श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जन्म कुण्डली ॥

श्रीरामचंद्रजीकी कुंडली ।

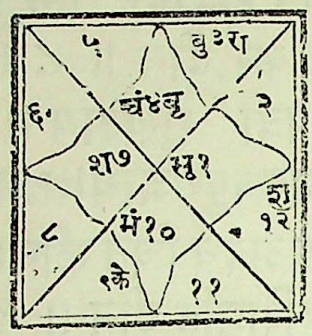

श्रीभरतजीकी कुंडली ।

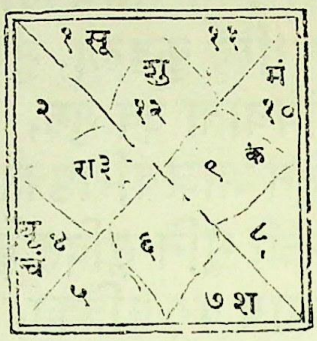

श्रीलक्ष्मणजीकी कुंडली ।

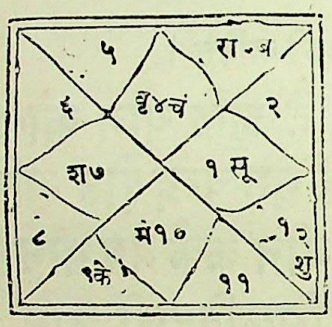

श्रीशत्रुघ्नजीकी कुंडली ।

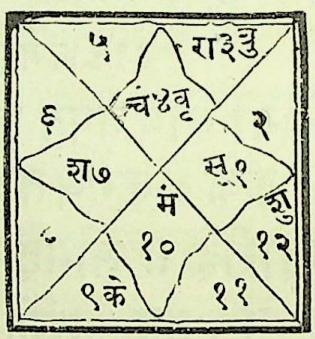

दोहा–विधि विरचितवर पत्रिका, विशद विचित्र ललाम ॥
लखि वशिष्ठ सुरगुरु सहित, मुदित सुमिरि उरराम ॥ १९ ॥

हरिगीतिका छन्द ।

इमि राम जन्म उछाह औसर जानि सुर नर मुनि चहूँ ॥
छाये अवधमें आय भौन विहाय डोलैं जहँ तहूँ ॥
इहि भांति भारी भीर महि आकाश बिच अबकासना ॥
सविलास सकल सुपास हृदय हुलासको उहिरासना ॥ २० ॥
सजि अङ्ग आनन विविध जानन वर विमानन राजहीं ॥
सुर नाग नर गंधर्व यूथन यूथ बहु छबि छाजहीं ॥
आयो सु औसर अमल अनुपम अवधपति अनुरागको ॥
फल पर्म धर्म सुकर्म संतत भागको अरु जागको ॥ २१ ॥
दुख दवन खल दल सवन भक्तन अवन हिय हुलसायकै ॥
सुख छवन जन मन रवन दशरथ भवन प्रगटे आयकै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

औचक उजास विकास विमल प्रकाश दश दिग आसभो ॥
तिहुँ भास भो महि खासभो अहिवासभो आकाशभो ॥२२॥
तिहि देखि शेष महेश अरु अमरेश अति चित चकितभे ॥
सब देश सहित नरेश भेस दिनेशह्वै थिर थकितभे ॥
नहिं शेष कहुँ तम लेश सकल कलेश गो असुरेशमें ॥
रसिकेश रूप रमेश मोद प्रवेशभो अवधेशमें ॥ २३ ॥
पुनि सबहि जानो हर्ष मानो राम रूप प्रकाशभो ॥
जै जैति अवध किशोर शोर त्रिलोक सहित हुलासभो ॥
नभ जाय देव बजाय दुंदुभि सुमन झरि बहु लावहीं ॥
पुनि आय कौशल नगर लखि सुखदाय आनँद पावहीं ॥२४॥
गंधर्व किन्नर करहिं गान सु अप्सरा गण नाचहीं ॥
सब अंग पूर उमंग ढंग अभंग रंग सुराचहीं ॥
सुत मुख विलोकत कौशलाके हीय सुख न समात है ॥
मानहु निहारि मयंक पूरण सिंधु अति उमगातहै ॥ २५ ॥
नृप नारि सब सानंद अति मुख चंद लखि रघुचंदको ॥
मणि वसन भूषण वारि परसहिं अंग सुत सुख कंदको ॥
दासी जुखासी दासि दासी तेउ सुवन निहारिकै ॥
पावैं सु औरहु वारि डारै वित्त वित्त बिसारिकै ॥ २६ ॥
तिहि समय दशरथ राज हियको अमित सुख को कहि सकै ॥
है अकथ वरनन जाहि वरनत शारदा रसना थकै ॥
जिहि भाग्य प्रभुता हेरि लघु लागत विभव सुरराजको ॥
तिहुँ लोक पति भो पुत्र सो महाराज सम है आजको ॥ २७॥
सब अवधवासी सुकृतरासी हिय हुलासी धावहीं ॥
आनन्द भरि भरि दान करि करि अमित वित्त लुटावहीं ॥
प्रति सदन शोभित हेमकुम्भ पताक वन्दनवार हैं ॥
वर नारि गावहिं सोहि ले बहु होत मंगलचारहै ॥ २८ ॥
बहु भीर भारी भूप द्वार खुले भँडार अपार है ॥
जन देत दान यथेच्छ लेत सु देत सकल उदारहै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चहुँ नत्य गान अनूप अगणित बाजने बहु बाजहीं ॥
छायो सु दुंदुभि शोर मानहुँ घोर घन घन गाजहीं ॥ २९ ॥
आनँद परमानंदके मधि और महदानंद भो ॥
सुत तीन प्रगटे बहुरि रघुवर बंधुवर निरद्वंदभो ॥
है एक राम समान श्याम जु दोय और सुरूपहैं ॥
तनु तेज शोभा सरस चारहु सुवनपर अनूपहैं ॥ ३० ॥
सुललाम सब सुखधाम शोभित कौशला सुत रामहै ॥
छबि मन हरत बहु भरत कैकेयी सुवन अभिरामहै ॥
द्वै पुत्र लछमन शत्रुहन सुठिहैं सुमित्राके भले ॥
तिहुँ कल्पलतिकामें यथोचित सरस फूल मानहु फुले ॥ ३१ ॥
चहुँ बाल सुंदर तदपि सबते सरते शोभा रामकी ॥
जिहि निरखि लागत चंद मंद लाग छबि शत कामकी ॥
सुनि जन्म उत्सव अवध आवै देव दशरथ द्वारपै ॥
अति होत मोद विनोद भारी भीर भूप अगारपै ॥ ३२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

प्रगटे अनूप पुत्र चारि अवधेशजूके जैजैकार जोकार चहुँ ओर सोर उतंकु ॥ भारी भीर भूप द्वार भवन भँडार खुले दान भो अपार कोऊ जगमें रहो न रंकु॥दिवस भयो सो येक मासको अभूत हेरि रसिक विहारी गुणी गणक गनैहै अंकु॥रंचहु न पावै भेद अधिक अचंभा जानि हेरि हेरि भानु फेरि फेरि कै मिलावै संकु॥३३॥

दोहा–भयो अमित आनंद चहुँ,प्रगटे चारि कुमार ॥
किये विधान अनेक वर, लोक वेद अनुसार ॥ ३४ ॥
छठी दिवस उत्सव महा, भयो यथोचित जान ॥
भूप भवन रनिवास मधि, अति अनन्द उमगान ॥ ३५॥
सो०–अमित नारि नर वृंद,साजि साजि वर साज बहु ॥
आवहिं अतिसानंद,राम बधाई हित हरषि ॥ ३६ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

नीर भरे विशद विचित्र कुंभ कंचनके शोभित सपल्लव सदीप शीशधारेहैं ॥ थार वर वानिक जडाऊ मणि माणिकके लीने साज

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मंगल जे पूरित सँवारेहैं॥ रसिकविहारी सुख दैनी गुणऐनी तीय नख शिख अंग शुचि सकल सिंगारेहैं॥मंजु मृगनैनी पिक वैनी कल गान कीने वृन्द वृन्द आवैं नित कौशिलाके द्वारेहैं ॥३७॥

दोहा-इमि एकादश दिवस जब, बीते सहित हुलास ॥
नामकरन हित सकल जन, जुरे आय रनिवास॥३८॥
तब वशिष्ठ शुभ समय लखि,भूपति रुचि अनुसार ॥
अर्थ सहित चहुँ सुतनके, कीने नाम उचार ॥ ३९ ॥
बहुरि चारिहू सुतनके,विधि विरचित ग्रह जोय ॥
सविधि पुजाय नृपाल युत,सबहि सुनाये सोय ॥ ४०॥
ग्रह फल सुनि प्रमुदित नृपति,सहित सकल रनिवास ॥
दोऊ गुरु द्विज वृन्द युत, पूजे सहित हुलास ॥ ४१॥
पुनि आनंद उछाह अति, दान मान बहु कीन ॥
पाय एकते एकसो, अपर एक इक दीन ॥ ४२ ॥

सो०-जैसो दान अपार,देत नृपति सुत जन्म सुख ॥
ताहूते अधिकार, होत सकल रनिवासनित ॥ ४३ ॥
इत नृप उत नृप नारि, पुर परिजन सेवक सखा ॥
निज निज वित्त बिसारि,करत दान सब मानयुत ४४
नृपदशरथ सजिसाज, करी सभा आनंदमय ॥
राजैं सकल समाज;यथा उचित मर्यादयुत॥ ४५ ॥
देश देशके भूप, आये रघुवर जन्म सुनि ॥
सब सोहैं सुठि रूप,अवधनाथ दरबार बिच ॥ ४६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कौशलाधिराज सोहै सहित समाज साज राजैं द्विजराज दोऊ विधिसे महेशसे॥मंत्री वसुवेस देश देशके नरेश चहुँलस्वत निदेश देश शोभित सुरेशसे॥ रसिकविहारीहैं धनेशसे धनेश कोऊ शेष शेष रोष तोष कारक जलेशसे ॥ दशरथ राज महाराजकी सभामें भूप भ्राजत वनेशसे गनेशसे दिनेशसे ॥ ४७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो०—या विधि अवध नरेश, विशद सभा बैठे रुचिर ॥
राजत मनहुँ रमेश, देवमण्डली मध्यमें ॥ ४८ ॥
नृत्य गान रसरंग, होत कुतूहल विविध बहु ॥
सब उरभरे उमंग, राम जन्म आनन्द अति ४९ ॥
ताही छिन तहँ आय; द्वारपाल कीनी विनय ॥
सादर शीश नवाय, महाराज अवधेशसों ॥ ५० ॥
राजराज महाराज, विविध अपूरव कौतुकी ॥
सुनि प्रभु सुयश दराज;आये उत्तरदेशते ॥ ५१ ॥
जो तिन होय रजाय, तौ इत सकल सुआवहीं ॥
राज दरश वर पाय, निज इच्छित फल सो लहैं ५२ ॥
द्वारपालके बैन, सुनि भूपति आज्ञा दई ॥
आवैं सब गुणऐन, दरशावैं निज निज कला ॥ ५३ ॥
द्वारपाल हरषाय; शीश नाय तहँ जाय तिन ॥
दीनी मुदित रजाय,आये भूपति निकटसब ॥ ५४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कोऊ बालरूप वर विमल अनूप अति कोऊ बहु वृद्ध सिद्धतेज तनु छायेहैं॥कोऊ हैं किशोर कोउ तरुण सजोर कोऊ वसनविहीन कोऊ भूषण सजायेहैं॥कोऊ झुकि झूमैं कोऊ गिरि गिरि भूमैं उठैं कोऊ व्यंग्य बोलै कोऊ नृत्य गीत लायेहैं ॥ रसिकविहारी हेरि कौतुकी अनोखे चोखे सहित समाज राज मंद मुसक्यायेहैं ॥५५॥

दोहा—लखि भूपहि मुद जैति कहि, सोकौतुकी सुजान॥
करन लगे लीला रुचिर, तनु धरि विविध विधान॥ ५६ ॥

अथ कौतुक—शंभु॥ घनाक्षरी कवित्त ।

आयो एक अंबरके मारग दिगंबर ह्वै गावत सुढंग रंगछावत छटानतें ॥ कबहूँ दिखावै पंच आनन दुरावैकबौं तीय बनिजावै अरधंगीके नटानतें॥रसिकविहारी कबौं खडग त्रिशूल धारी बीर पदचारी भुजा फेरत पटानतें॥कबौं प्रगटावै भाल ज्वाल दरशावै व्याल कबौं वारिधारा शुभ्र छोड़त जटानतें ॥ ५७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वीरभद्र ।

वीर बनि आयो एक कौतुकी नरेश ढिग कह्यौ महाराज राज भवन पधारिये॥ रसिक विहारी सुखकारी साज साजे गेह रावरेहीहेतकीनी सकल तयारिये॥ अशन धतूर आदि भूर भांतिभांतिनके सरशअभंग भंग नीर मद कारिये॥ वृश्चिक विषारे कारे नाग फन वारे बहु देहों यह भेटे मेरे संग जो सिधारिये ॥ ५८ ॥

ब्रह्मा ।

ताहि छिन दूजो द्विज रूप धरि बोलो वेगि आयो दूरी तेहों सुनि सुयश प्रतापको ॥ वृद्धहों घनेरो पीत केश ममहेरो भूप रसिकविहारी नित्य कारी वेद जापको ॥ देखौं आठ नैनते सुनौं मैं आठ श्रौननतें ताहू पै न पायो भेद बूझौं तब आपको ॥ औरनके एक मुख मेरे क्यों बनाये चार दीजिये बताय का बिगारो विधि बापको ॥ ५९ ॥

यमधर्मराज ।

एक वर कौतुकी सुकीनी है अनूपकला उछलि महीतें नभ मंडल समायगो ॥ लैकै संग अमित अनेक जीव जंगमको वेगहि तड़ाक पुनि ताहि ठाम आयगो ॥ देखत सभाके ते सु देव भये जंतु सब आपहै कराल रूप बहुरि दुरायगो ॥ रसिकविहारी फेरि धरिकै सु देश वेश बनिकै नरेश अवधेशहि रिझायगो ॥६०॥

सनकादिक—सवैया ।

आय अचानक बीच सभा वर बालक चार सुनाचन लागे ॥ नाचतहीं तिय रूप भये चहुँ चञ्चल चारु सु जोंबन पागे ॥ फेरि विलोकतहीं शिशुह्वै मचले पुनि हंसबने उडि भागे ॥ देखतहीं रसिकेश नरेश महाअनुराग आनन्दमें पागे ॥६१ ॥

गणेश—कवित्त ।

एक आय बोलो मेरे गेहके चरित्र भूप सत्य सुनिये पैहोंतौ कहत डरातहौं॥ बापहै भिखारी मम माता मतवारी पुनि भ्राताक्रोधकारी तिहुँ शोचमें रहातहौं ॥ रसिकविहारी महाराज बात भारी और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रावरे समीप सोऊ भाषत लजातहौं ॥ माई सेर भाईहु छसेर पितु पांच सेर आपहीमैं थोरो नित्य मन भर खातहौं ॥ ६२ ॥

षट् वदन ।

स्वांगी एक आयघबरायकै पुकारो धाय धर्मराज तोऊ ऐसो कलह सचोरहै ।।धावै मात वाहनरिसायतात वाहन पै त्योंहींमात वाहन पै तातहू खचोरहै ॥ वाहन हमारो झहराय पितु भूषणपै भूषण पिताको बन्धु वाह पैत चोरहै ॥ रसिकविहारी नृप कीजिये निसाफ़ आप मेरे घर नित्य यह झगरो मचो रहैं ॥ ६३ ॥

इंद्र ।

एक कछु बोल ढोल दैकै भूप भौन बीष ओट करि वेगै कल्पवृक्ष रचि दीनोहै ॥ रंचक दुराय चिंतामणिको बनायोमेरु रसिकविहारी गुणी परम प्रवीनोहै ॥ हरित तुरङ्ग औ मतंग प्रगटाये सेत फेरो निजरूप फेरि परतन चीनोहै ॥ निरखिअनोखे खेल चोखेपारितो-षे नृप नीको इन्द्र जाली इन्द्र जाल जाल कीनोहै ॥ ६४ ॥

नारद ।

बोलो येक आय बात सुनिये अवधराय अनुचित आयपैकहौं हौं सुनि नारीसो॥जोई तुव नारी तुव तातकी सुनारी तातातातकी सुनारी तात तात तात नारीसो॥फेरि तुव नारी तुव पुत्रकीसुनारी पुत्र पुत्र की सुनारी पुत्र पुत्र पुत्र नारीसो ॥ रसिकविहारी सुखका रीया अशीशभारीभोगौयुग कोटिधर्मधारीवरनारीसो६५इतिको०

पद्धरीछन्द ।

इति भांति विशद कौतुक अनेक । सब किये येक पहँ सरस येक॥ लखि मुदित होय दशरथ नृपाल ।दीनी रजाय सेवकनहाल ॥६६॥ धन धाम ग्राम भूषण अपार । गज बाजि साजि इच्छानुसार ॥ इन सकल कौतुकिन देहुजाय।सुनि कह्योसकलतिनहर्षछाय॥६७॥ राजाधिराज कौशल नरेश । हम लहो सकल सुनि नृप निदेश॥ धन धाम ग्रामकछुचहियनाहिं।दीजैसु जोय मम हृदय माहिं॥६८॥ सुनि वैन भूप कछु बिहँसि मंद । बोले सु वाक्य वर भरि अनन्द अभिलाष होय तुव जोय जोय। पूरैं प्रसन्न हम सोय सोय॥६९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनिसकल कौतुकी हर्ष पाय। बोले सुजैति जै अवधराय ॥
तुव पुत्र चारि प्रगटे अनूप। हम सबहिं चहैं तिन दरश भूप॥७०॥
नृप रूप प्रेम कौतुकिन केर। लखि कह्यो गुरुहि करजोरि हेर॥
इन यथायोग लै सबहिं साथ। दीजे दिखाय चहुँ सुवन नाथ॥७१॥
सुनिकै वसिष्ठ लै सबहिं संग। वर उचित रीति संयुत सुढंग ॥
छबिधाम चारहु सुत ललाम। दरशाय दये हिय भरि सुठाम७२॥
सो सकल कौतुकिन हेरि बाल। किलकैं चलाय कर चरण लाल
स्वाँगी सुदेखि शोभित स्वरूप। हिय लई धारि वह छबि अनूप॥७३
आनन्द मगन ह्वैकै अपार। कीनी सु देव वाणि उचार ॥
कहि जैति जैति कौतुकिय वृंद। गवने सु गेहजित तितसुछंद॥७४॥
इमि राम जन्म उत्सव अभंग। चहुँ होत अवधपुर राग रंग ॥
नट भाट नर्तकी गण अपार। वर विविधकौतुकीझुंडझार॥७५॥
द्विज वृन्द और याचक अनेक। गुण मंत्र एकते अधिक एक ॥
नित आय आय अवधेश द्वार। निज निज कलानठानैंप्रचार॥७६।
ते सबहि यथोचित दान मान। लहि होत हीय आनँद महान ॥
लखि नृपति दान प्रतिदिन सुरेश। सकुचात डरत संयुत धनेश॥७७॥

दोहा---अवध नृपतिके दानको, कछू न पारावार ॥
शेषहु भाषि सकै न जो, वरणैं युगन हजार॥ ७८ ॥

घ० कवित्त।

दीने अवधेश ते गयंदनके भार भूमि बार बार झूमै शीशेशष-
के छिलतहैं॥रसिकविहारी दान सुनिकै त्रिकूट कूट कंचन रजत
मेरु शंकते हिलतहैं॥संकलप नीर भई सरिता गम्भीरबहु जिनके
प्रवाहना पयोधि पै झिलतहैं॥खोजेहु अखंड नवखंड महि मण्डल
में एकहु नपूगीफल तंदुल मिलतहैं॥ ७९ ॥ अंबरते अंबर
दिगम्बर वरंवरभो भूषणकी भूषण रहीहै भूषणनको ॥
मानको नमान मानको नमान मान देखि सूखनते रूखन मिटो-
है रुखननको॥रसिकविहारी भये रसिकविहारी सबै दूषन विदूषन
भयोहै दूषननको॥दशरथ दानके निदानको निदान यही पूषनते
पूषन जनात पूषननको ॥ ८० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा--याहीविधि नितहोत बहु, दान विधान अपार ॥
लोक वेद कुलरीति मय, सकल मंगलाचार ॥ ८१ ॥
राम दरश हित आवहीं, सुर नर नाग अपार ॥
अवध निवासी रूप धरि, सेवत विविध प्रकार ॥ ८२ ॥
पुर परिजन सेवक सखा, सुर नर सब रतधर्म ॥
कुशल हेतु चहँ बंधुकी, संतत करत सुकर्म ॥ ८३ ॥
यौंहीं अति आनंदमें, पगे सकल पुर लोग ॥
कहत मुदित अब सफलभो, नेम धर्म जप योग ॥ ८४ ॥
मुदित अयुध्यानगरके, वासी परम सुजान ॥
वर्णत चारहु बंधुके, गुणगण रुचि अनुमान ॥ ८५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

अगम सनेह सिंधु उमगों विलोकि जाहि सज्जन चकोरनकेहीय सुख ह्वै गयो॥रानीअनुमेदिनी कुमोदिनीविकासीं मंजुभूपउरभूमिमें प्रकाश अतिहीं छयो॥रसिकविहारी पाप ताप तमटारीलोकशोकहर शीतकर शीत करतेदयो॥पूरण कलाकोशुद्ध प्राचीदिशि कौशिलाते स्वच्छ रामचंद्र चारु चन्द्रमा उदै भयो॥८६ ॥मंजुल मृणालि मृदु कौशलादि रानी शुभ्र जिनते प्रगटि रूप अनुपम भासेहैं॥ लोचन विशाल पत्र कोस हिय मध्य भूरि पूरित पराग कृपा विमल विलासे हैं ॥ रसिकविहारी भूप धर्म रवि तेज फूले फैली जस गंधि भक्तभ्र मर हुलासेहैं ॥ अवध तडाग भरो सलिल सनेहतामें राजपुत्रचारु चारिकमल विकासेहैं ॥ ८७ ॥

दोहा --इहि विधि पुरवासी सकल, नाम रूप गुण गान॥
करत चारहूँबंधुके, धन्य जन्म निज जान॥ ८८॥
अवध वासिनी सकल तिय, नित प्रति हिय हुलसाय ॥
बार बार चहुँ बंधुको, लखैं जाय दुलराय ॥ ८९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

आरती उतारैं कोउ राई नोनवारैं नीर कोऊफेरि डारैं कोऊ मंत्र-न तें झारैंहैं॥कोऊ दुलरावैं मलरावैं हलरावैं कोउ चुटकी बजावैंको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऊ देति करतारैं हैं॥रसिकविहारी भरीं परमप्रमोद नारी सहित वि नोद गोद लैकै चुचुकारेहैं॥ आय आय आनँद उमाय चित चाय चाय धाय धाय जाय चहुँ बालक निहारेहै॥ ९० ॥

दोहा-सकल मातु अवधेश युत,पुर परिजन समुदाय॥
निरखत चारहु बंधुकी,बालकेलि सुख पाय॥ ९१ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

छोटे पद पाणि लाल छोटी आंगुरीहु लाल छोटे नख लाल छोटी रेषा लाल लालहैं॥ कलित कपोल लाल लोचन ललित लाल अधर अनूप लाल लाल मुख लालहैं॥लाल लाल भूषण वसन तन लाल लाल रसिक विहारी सब साज भौन लालहैं॥लाल पालनामें लाल फूलनकी सेज लाल खेलैं नृपलाल लै खिलौना लाल लाल हैं॥९२॥झूलैं मणि मोतिनके झुमका विशाल तिनैं हेरैं टकलाय हँस फेरि हेरि फूलैं हैं फूलैंहैं विलोकि बाल चहुँ दिशि जोवैं पुनि होवैंहैं अधीर रोवैं सब सुधि भूलैंहैं॥भूलैंहैं रुदन जब मातु पय प्यावैं तब बहुरि आनंद ह्वै कलोलनमें तूलैंहैं॥तूलैंहैं न या सुखपै कोटि ब्रह्मलोक सुख रसिकविहारी लाल पालने सुझूलैंहैं॥ ९३ ॥ कौशिला सु कैकयी सुमित्रा आदि रानी सबै एकनते बालन लै एकन झिलावतीं॥ कोऊ ले उछंग दुलरावतीं उमंग रंग कोऊ चूमि चूमि मुख मुखसों मिलावतीं॥रसिकविहारी मन मुदित हँसावतीं हैं अंगुरी ते कलित कपोलन हिलावतीं॥ भूषन वसन धन वारिकै लुटावतीं हैं हिय हुलसावतीं यों सुतन खिलावतीं॥९४ रसिकविहारी प्यार करि करि राम मात बार बार झंगुली नवीन पहिरावै है॥ कबहुं गुलाबी आबी धानी आसमानी कबौं कबहूँ गुलाली औ जंगाली सरसावैहै॥कबहूँ सुरंग श्वेत नारंगी बदामी श्याम कबहूँ हरित पीत नील छबि छावैहै॥मानो ऋतु पावसमें सजल पयोद श्याम संध्या समै अमित सुरूप दरशावैहै॥ ९५॥ चित्रित कपोल कल कज्जलविलोकिहठि कौशिला हरषि हीयसुत मुख धोयोहै॥ ता छिनकी शोभा मंजु वरणी नजाय मोपै रसिक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिहारी जो अनूप रूप जोयो है॥श्याम जल बूँदैं पीत रंगके झंगापै परीं तापै लसो वघना विचित्र गुन पोयो है॥ मानों नीलगिरिपै बिछायकै वघंबर सों अंबर विहाय बालचंद आय सोयो है॥९६॥ कबौं अति रोवैं कबौं निपट अधीर होवैं कबौंनहींसोवैं टकलायकै निहारैहैं॥ कबौं नाहिं छीवैं मातु अंचल न पीवैं पय अंकमें रहै ना पानि पद झझकारै हैं॥ सुतहि विलोकि जिय जननी विहाल ह्वैकै बांधैं जंत्र तंत्रकारि राई नोन वारैहैं॥रसिकविहारी होयँ मुदित घनेरे जब आयकै वसिष्ठ राममंत्र पढिझारैहैं ॥९७॥चीकै चौंकि चौंकि अतिरोवैं नाहिंसोवैं रंचहोवैंहै अधीर क्षीर पीवतहींभूलैरी॥किलकै न नेकौकाहू हेरि हिलकैनहेली निरखि रमैयामो हियेमें दुखहूलैरी रसिकविहारी मातु कौशिलासहेलिनसों कहैकोउ लावो झारी लावै गात धूलैरी॥कलनापरैहै एक पल ना भयो धौंकाह ललना हमरो आज पलना न झूलैरी ॥ ९८ ॥

दोहा-इहि विधि बीते मासषट, शुभदिन समय निहार॥
अन्नप्राश नीको विशद,उत्सव भयो अपार ॥ ९९ ॥
भोजन दान विधानको, वरणौं इतो न ज्ञान ॥
अकथनीय आनन्द सों,बनत कियेही ध्यान॥१००॥
प्रतिदिन दशरथ भवन जो, उत्सवहोयँ सदायँ ॥
सो शतशेष गणेशपै, रंचहु कहे नजायँ ॥ १०१ ॥
नित नित होत अनन्द अति,दूनो हृदय हुलास ॥
दूनो नृपसुत तेज बल, संतत करै प्रकास ॥ १०२ ॥

घनाक्षरी कवित्त

दिन दिन दूनो प्रगटात रूप राघवको दिन दिन दूनो तनु तेज वरसातहै ॥दिन दिन दूनो औध मंगल जनात चहुँ दिन दिन दूनो लंक दुख दरशातहै ॥दिन दिन दूनोहीं सनेह उमगात उर दिन दिन दूनो नित्त चित्त हरसातहै ॥ रसिकविहारी दिन दूनो अधिकात वित्त दिन दिन दूनो सबै सुख सरसातहै॥ १०३॥शोभित सुवन चारौ कौशिला महलमध्य विचरत जानु पानि इत उत घेरि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घेरि॥गिरत सु भूमि उठि रोवैं पुनि जोवैं चहुँ आप चुप होवैं एक एकनको गेरिगेरि॥धूसरित धूरि भूरि पूरित वसनअंग खेलत उमंगते अमंग रंग फेरि फेरि॥अति सुख छावैं मात आनंद अघावैं भावैं रसिकविहारी हुलसावैं हिय हेरि हेरि॥१०४॥धावत बकैंया ह्वै चिरैया गहिवेको कबौं देखि परछैंया कबौं रोवत डरायके॥ कबौं मचलाय भूमि लोटत रिसाय कबौं चारौ भाय खेलैं एक एकन गिरायके॥कबौं प्रतिबिंब मणि खंभन विलोकि हँसैं रसिक विहारी कबौं रहत चुपायके॥जननी निहारि मुख हरषिउठावैं अंक तब हुलसाय रहैं अंक लपटायके॥१०५॥विथुरी लटूरी मुखसोहैं घुंघुरारी कारी रुचिर दंतूली दोय लागत पियारीहैं॥धूसरित धूरि अंग पूरित उमंग भरे रसिकविहारी चहुँ बंधु सुखकारीहैं॥करत उमाह गहि भीत उठिवेकी फेरि गिरत बहोरि जोर भरत हुँकारी-हैं॥ सब जननीके जननीके मन मोद हेरि अवधविहारी खेलैं अजिर विहारीहैं॥ १०६॥

सवैया—कवित्त।

बात कहैं तुतरात हँसात लसैजलजातसों आनन नीको॥आंगुरी हात गहात चलात डरात चलैं निरखात महीको॥पायँडगात रुकात लखात सुमात उठातहैं जीवन जीको॥ज्योंरसिकेश हिये लपटात त्यौं नेहबढ़ात घनों जननीको॥ १०७॥

दोहा--कबहूँ हठि अचगरि करै, छिन मचलैं उमगाय॥
मात भुरावैं जबहिं तब, मौन रहैं हरषाय॥ १०८॥

घनाक्षरी कवित्त।

लाऊँ मैं मिठैया औ मलैया सो खवाऊँ तुमैं आऊँलैचकैयाझं झनैया सो सुनाऊँमैं॥ नाऊँ मैं झपैया दरुपैया जोमँगाऊँ गैया द्वारे है ववैया जोडरैया सो भगाऊँमैं॥गाऊँ मैं सुहैया गीत रसिक विहारी सुनौ दैया जो पपैया रंग रैया सो बजाऊँमैं॥जाऊँमैं बलैया कहै मैया जो रनैया तुम सोवो नेक भैया तौ जुन्हैयाकोबुला-ऊँमैं॥ १०९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–इहिविधि बालविनोद बहु, करत लखत पितु मात ॥
प्रतिदिन तन बल रूप गुन, अधिक अधिक अधिकात ११०

ठुमकि चलैंहैं मातु संग गहि आंगुरी को ठहरैं ठुनकिफेरिमछ-लि रहैं जबै॥कौशला प्रमोद भरि गोदमें उठाय चूमि अतिदुलरावैं सुख पावैं विहसैं तबै ॥रसिकविहारी नर नारी लखिलालनपै तन मन प्रान धन वारत रहैं सबै॥नितहि मनावै मैया दैया लै धनैयां कर संगतिहुँ भैया मो रमैया खेलिहैं कबै ॥ १११ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सो०योंही नित प्रति माय, देव मनावै हुलसि हिय ॥
बड़े भये रघुराय, खेलत बन्धु सखान मिलि ॥ ११२ ॥
नारदादि ऋषिराज, ब्रह्मादिक सुरवृन्द बहु ॥
राम दरशके काज, गुप्त रूप नित आवहीं ॥ ११३ ॥
निरखत हिय भरि नित्त, सकल सुलक्षण रामके ॥
पुलकित प्रमुदित चित्त, करत परसपर गुण कथन॥११४॥
चारहु बन्धु ललाम, सखन संग शोभित भले ॥
वर विनोद अभिराम, करत लखत सब मुदित मन ॥११५॥

घनाक्षरी कवित्त ।

हृदय हुलास भरि देवता दरश आश आवैं बनिभिक्षुक बजावैं द्वार तुन्तुनू॥त्योंहीं सुरवामा होय मानुषी अनूपरूप भूप भौन भीतर सुआय नचैं थुन्थुनू ॥रसिकविहारी रघुरैयातिहुँभैयां संग खेलैं धाय नूपूर बजाय पाय छुंछुनू॥ सब नरनारी हेरि शोभा मनलोभा थकैं व्यापैं अंग अंग अनुराग भई झुंझुनू ॥ ११६॥
छोटे छोटे बाल संग लीने करवाल छोटी छोटी ढाल छोटे तून बान औ कमान हैं॥छोटी शीश चौतनी सुरंग अंग छोटेझंगाकाटि पट पीत छोटे छोटे पद त्रान हैं ॥ छोटे कण्ठ कठुला जलजहार छोटे छोटे छोटीछोटी पैंजनीविराजैं छबिमानहैं।रसिकविहारी चहुँ बन्धु चारु छोटे छोटे धाय धाय खेलैं सबै सुषमा निधान हैं११७
अंगन फटिक भूमि विमल विशाल तहां चारौ बाल करत कलोल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कल केलैं हैं ॥ लीने धनुबान त्यौं प्रफुल्लित प्रकाश मान जग सुख दान करकंदुक सुझेलैं हैं ॥ रसिकविहारी लपटाय रघुराय अङ्ग तीनौ भाय धाय धाय गल भुज मेलैं हैं॥मानौं रतिनाथ ऋतुनाथ रातिनाथ तिहूँ शुभ्र सरिपाथर सनाथ साथ खेलैं हैं ॥ ११८ ॥

दोहा०—यहि विधि कौशलराजके, चारहु पुत्र अनूप ॥
विहरत भूपति भवनमें, मुदित मनोहर रूप ॥११९॥
समै समै सब सविधि वर, सहित वेद कुल रीति ॥
भये अमित उत्साह चहुँ, मुण्डनादि उपवीति॥१२०॥
पढी सकल विद्या निपुन, भये परम गुणमान ॥
चारहु सुत अवधेशके, हैं सब कला निधान॥१२१॥
धर्म कर्म धारी चतुर, दानी परम दयाल ॥
नीति प्रीति ज्ञाता बली, चारहु दशरथ लाल १२२ ॥
यद्यपि चारहु बन्धुवर, रूपवन्त मतिवन्त ॥
तदपि सबहिते रामको, बल गुण तेज अनन्त॥१२३॥
राम अनन्त अनन्त गुण, सुयश चरित्र अनन्त ॥
नाम एक त्रिभुवन विदित; यो वरणै सब सन्त १२४ ॥
सो कौशलपति पुत्रके, विशद चरित नवनित्त ॥
जनक जननि पुर लोग सब, निरखत प्रमुदित चित्त १२५॥

सवैया—कवित्त।

कबहूँ गहि बान कमान सजैं कबहूँ रथ वाजिगयन्द चढैं॥कब हूँ मृगया बन खेलत हैं लखि मात पिता मन मोद बढैं॥कबहूँ भर हेरनको निकसैं चतुरंग अनी चहुँ संगकढैं॥रसिकेसलहैं पुर लोग आनन्द भली विरदावलि बन्दि पढैं ॥ १२६ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

थर थर कम्पत है शेषके सहस्र शीश दिग्गज अधीर ढारैं भर भर आंशू अच्छ॥गाढकै वराह डाढ रोपत रुपैन बाढ हलत सुमेरु खल भलत पयोधि मच्छ॥दशरथ नन्द महाराजा रामचन्द्र जूकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चमू चतुरंग देखि दंग होत देवरच्छ ॥ रसिकविहारी जबै कढत सवारी तबै आहि करि कसककराहि रहि जात कच्छ॥ १२७ ॥

सवैया—कवित्त ।

खौर दिये शिर चंदनकी धनु बान लिये औ कसे कटि भाथै॥ मत्त गयन्दसी चाल चलैं छबिसों निरखैं सरयू सरि पाथै॥बाल सखा शुचि सेवक वृन्द सुबन्धु लसैं रसिकेशहुसाथै ॥ औध निवासी सबै धनि जो इहिभांति लखैं नितहीं रघुनाथै ॥१२८॥

दोहा—चारहु सुत अवधेशके,संग सखा अभिराम ॥
विचरैं सरयू तीरसो, लखैं मुदित मन वाम ॥ १२९ ॥

सवैया—कवित्त ।

ढोटाहैं ये अवधेशक मानों सुबाल मरालकेजोटाहैं आछे॥ लाल झँगा शिर चौतनी चारु लसैं कटिमें पट पीत सुकाछे॥हैंरसिकेश सु एकहि बैसके संगसखाचहुँओरते गांछे ॥ देखु सखी सुखधाम छटा तिहुँ बंधु ललामहैं रामके पाछे ॥ १३० ॥

दोहा—विशद विनोदी रामत्यो, तीनहु बन्धु अनूप ॥
सरयू तट युत सखनके,खेलैं रचि रचि रूप ॥ १३१ ॥
जैसे बल गुण रूप निधि, चारौ दशरथ लाल ॥
संग सखा तैसें सकल, रघुवंशिनके बाल ॥१३२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कोऊ धनु बान धारी कोऊ तो कृपान धारी कोऊ शक्ति धारी शूल धारी गदा धारीहैं ॥ कोऊ कुंत धारी वज्र धारी चक्रधारी कोऊ कोऊ खड्ग धारी औ उदंड दंड धारीहैं ॥ यूथप सखान पारी बन्धुनकी न्यारी न्यारी ठानैं कला भारी एक येकन प्रचारीहैं ॥सरयूके तीर खेलैं सहित उमंग रंग रसिक बिहारी संग अवध विहारीहैं॥ १३३॥कोऊलैतुरंगस्याहसबजा सुरंगनील नुकरा कुमैतलाखी अबलख साजेहैं॥ चलतसुचालैं सहगामऔरु हालैं कोउ धावा कोउकावा दै लगूरीकोउ छाजेहैं ॥कोउमल्लयुद्धै ठानि रुद्धैहैं उदंड दंड मुद्गर प्रचण्ड फेरि कोऊ ताल बाजेहैं॥रसिक-विहारी कोउ बाना फेकि पट्टनते कोऊ भल्ल बानाके निशाना घालि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गाजे हैं ॥१३४॥ चीता श्वान जुर्रा कुही बाज बहिरीलै कोउ चलत अहेरी वर बीरता बखानके॥ चंद्र कुज भागैं विधि सेनप सुभारती औ दुर्गा पत्र हेरिछोडें पौरुषपषानके ॥ निरखि कृपान बान वाहन सुरेश सती दुरत विहाय बल दशन नखानके॥ रसिकविहारी अव धेशके कुमार चारु खेलत अहेर बन संयुत सखानके ॥ १३५ ॥

दोहा–कबहुँ चारहू नृप सुवन, संग सखा समुदाय ॥
रचत अनूप सुखेलवर, सरयू तट हुलसाय ॥१३६॥

घनाक्षरी कवित्त।

बनत रमेश राम भरत महेश होत लछमन शेष औ सुरेश शत्रु शालहैं ॥ सखन बनावैं हैं धनेश औ गणेश काहू रचत दिनेश काहू करैं निशिपालहैं॥ काहू रूप साजैं कपि रीछ औ निषाद काहू निश्चर बनावैं काहू काहू मुनि बालहैं ॥ रसिकविहारी इमि ठानिकै अनोखो ख्याल सरयूके तीर खेलैं दशरथ लालहैं॥ १३७॥काहूको बनाय मच्छ कच्छ जल बोरतहैं काहूको बराह रूप रचत करालहैं॥ काहूको बनावैं मृगराज दीह देहधारीकाहूलघु रूप कलाकरतविशालहैं॥काहूको बनावैं गौर काहूको बनावैं श्याम काहूको कलंकी करदेवैं करवालहैं ॥ ऐसे स्वांग अमित सखानके बनाय हँसै रसिक बिहारी खेल खेलैं रघुलालहैं ॥१३८॥

दोहा–इहि विधि नित कौशल नगर, विहरत राजकुमार ॥
खेलत खेल अनूप अति, निज इच्छा अनुसार॥ १३९ ॥
निरखि राम गुण रूप बल, मुदित सकल पुर लोग ॥
चारु चार सुत संग बहु, सखा यथा जिहियोग ॥१४० ॥
सुर किन्नर आदिक विविध, नरतनु धरि हुलसाय ॥
सखा भये चहुँ बन्धुके, अवध आय प्रगटाय ॥ १४१ ॥
विषै, प्रगटे चारु कुमार ॥
सकल सखा नृप सुत चहूँ, वय बल वपु इकसार॥१४२॥
शिशुताते इक संगही, सब सुख भोग विनोद ॥
उचित निरंतर परस्पर, रहत सनेह प्रमोद ॥१४३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सखा मातु नृप सुत जननि, यौं जानै सत भाव ॥
है मेरेही सुवन सब, रंच न कछू दुराव ॥ १४४ ॥
चारहु राजकुमारके, मुख्य सखा तिन नाम ॥
वर्णतहौं इतने अपर, अमित सकल अभिराम ॥ १४५ ॥

छप्पय छन्द ।

सुन्दर १ सेषर २ वीरसेन ३ मणिभद्र ४ निहारौं ॥ तेजरूप ५ रसिकेश ६ कलाधर ७ हृदय विचारौ ॥ बाणरूप ८ रसरास ९ मनोहर १० और गुणाकर ॥ ११ ॥ मानद १२ पुनि पत्रीस १३ बहुरि वनपाल १४ गदाधर १५ ॥ रमनेश १६ पद्मकर १७ शीलनिधि १८ रसिकविहारी जानिये ॥ रघुवीर सखा ये अष्टदश अंतरंगपहिचानिये ॥ १४६ ॥

दोहा–रसिक रसाल १ सुभद्र २ अरु, कमलाकर ३ श्रुतिजात ४ ॥
कुशल ५ जटाधर ६ वीरमणि ७, भरतसखा ये सात १४७
वज्रशाल १ रसमत्त २ पुनि, वातप ३ मंडन ४ मानि ॥
बहुरि विहारी ५ लषनके, पञ्च सखा ये जानि ॥ १४८ ॥
चार शत्रुहनके सखा, संतानक १ सुखदान ॥
दमन २ राज रंजन ३ लखौ, चामीकर ४ बलवान ॥ १४९ ॥
मुख्य सखा ये जानिये, पुनि इनके स्वाधीन ॥
अष्टोत्तर शत प्रति सखा, यूथप सखा प्रवीन ॥ १५० ॥
प्रति यूथप आधीनहैं, सखा पञ्चशत जानि ॥
पुनि सेवक सब सखनके, इतने न्यारे मानि ॥ १५१ ॥
अरु चारहु वर बन्धुके, सेवक दास अपार ॥
अन्तरङ्ग शुचि सुभगतनु, बली प्रवीन उदार ॥ १५२ ॥
सखादास संयुत सकल; तीनहु बन्धु ललाम ॥
प्रीति सहित रघुचन्दको, सेवतहैं वसु याम ॥ १५३ ॥
बन्धु सखा सेवक सबहि, रघुवर युत सनमान ॥
यथा उचित राखत सदा, प्राणहुते प्रिय जान ॥ १५४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीरामचन्द्रजीके सखानका निर्णय चक्र।

सखानकी संख्या.	सखानके	सखाप्रति यूथप	यूथपप्रति सखा	सर्वयूथपनके सखा	प्रतिमुख्य सखाके स्वाधीन
१	सुन्दर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
२	शेषर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
३	वीरसेन	१०८	५००	५४०००	५४१०८
४	मणिभद्र	१०८	५००	५४०००	५४१०८
५	तेजरूप	१०८	५००	५४०००	५४१०८
६	रसिकेश	१०८	५००	५४०००	५४१०८
७	कलाधर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
८	बाणरूप	१०८	५००	५४०००	५४१०८
९	रसरास	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१०	मनोहर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
११	गुणाकर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१२	मानन्द	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१३	पत्रीस	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१४	वनपाल	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१५	गदाधर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१६	रमनेश	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१७	पद्मकर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१८	शीलनिधि	१०८	५००	५४०००	५४१०८
सर्व	१८	१९४४	९०००	९७२०००	९७३९४४

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीभरतजीके सखानकानिर्णय चक्र।

सखानकी संख्या	१	२	३	४	५	६	७	सब
सखानके नाम	रसिक रसाल	सुभद्र	कमला कर	श्रुतिजात	कुशल	जटाधर	वीरमणि	७
सखाप्रति यूथप	१०८	१०८	१०८	१०८	१०८	१०८	१०८	७५६
यूथपप्रति सखा	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००	३५००
यूथपनके सखा	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	३७८०००
प्रतिमुख्य सखाके स्वाधीन सखा	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	३७८७५६

श्रीलक्ष्मणजीके सखानका निर्णय चक्र।

सखानकीसंख्या	१	२	३	४	५	सब
सखानकेनाम	वज्रसाल	रसमत्त	वातप	मंडन	विहारी	५
सखाप्रतियूथप	१०८	१०८	१०८	१०८	१०८	५४०
यूथपप्रतिसखा	५००	५००	५००	५००	५००	२५००
यूथपनकेसखा	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	२७००००
प्रतिमुख्यसखाके स्वाधीनसखा	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	२७०५४०

श्रीशत्रुघ्नजीके सखानका निर्णय चक्र।

सखानकी संख्या	१	२	३	४	सब
सखानके नाम	संतानक	दमन	राजरंजन	चामीकर	४
सखाप्रतियूथप	१०८	१०८	१०८	१०८	४३२
यूथपप्रति सखा	५००	५००	५००	५००	२०००
सर्वयूथपनकेसर्व सखा	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	२१६०००
प्रतिमुख्यसखाके स्वाधीन सखा	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	२१६४३२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—नीति प्रीति मर्याद मय, रामधर्म धुर जान ॥
यथा योग चहुँ बंधुवर, करत काज सुखदान ॥ १५५ ॥
इहि विधि चारहु नृप सुवन, भये समर्थ सुरूप ॥
पितु ढिग सुकुचे रहत अति, सो लखि प्रमुदितभूप॥ १५६
निरखि चतुर्दश वर्षके, सुत चारहू अनूप ॥
सकल साज मय भवन वर, चहुँन दये तब भूप ॥ १५७ ॥
रंग भवन रघुचंदको, खचित रचित मणि जाल ॥
रूप भवन शुचि भरतको, सुंदर विमल विशाल॥ १५८॥
क्रांति भवन वर लखनको, विशद प्रकाशित धाम ॥
चित्र भवन रिपुदमनको, अमल अधिक अभिराम ॥ १५९॥
निज निज भवन सखान युत, रीति सहित नृप नंद ॥
हास विलास निशंक उर, करत सदा सानंद ॥ १६० ॥
पगे परसपर प्रेममें, यदपि चारहूँ भाय ॥
राम लषण रिपुहन भरत, तदपि मिले अधिकाय ॥ १६१॥
तिहूँ बंधु निज सखन मिलि, संयुत प्रीति प्रतीति ॥
सेवहिं श्रीरघुवीरको, सहित धर्म नृप नीति ॥ १६२ ॥
इहि बिधि दशरथ राजके, चारहु कुँवर सुजान ॥
सबहि देत आनन्द अति, दान ज्ञान सनमान ॥ १६३ ॥
मातु पिता पुर लोग अरु सकल लोक नरनारि ॥
मुदित होत चहुँ बंधुको, बल गुण रूप निहारि ॥ १६४ ॥
कवि कोविद नट नर्तकी, जे जग गुणी अपार ॥
राम निकट सब आवहीं, पावहिं बहु सतकार ॥ १६५ ॥
द्विज मुनि संत गुणीनकी, सभा करत नित राम ॥
इहि विधि कौशल नगरमें, रहत मोद वसु याम ॥ १६६ ॥
सुर ब्रह्मादि प्रशंसहीं, अवध जननको भाग ॥
धन्य धन्य जे रामके, पगे परम अनुराग ॥ १६७ ॥

इति श्री० रामर० द्वि० वि० श्रीरामजन्मवर्णनो नाम चतुर्थोवि० ॥४॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौपाई-एक समयनारदहुलसाये ❀ विचरत अवध नगरमें आये॥
राम दरश लालस उरधारे ❀ प्रमुदित रंग भवन पग धारे॥१
सखन सहित तहँ चारहु भाई ❀ हास विलास करत हरषाई ॥
मुनिहिनिरखिसब उठिपगवंदे ❀ किये उचित सतकार अनंदे॥२
समय प्रसंग सरिस बहु गाथा ❀ कहत परसपर मुनि रघुनाथा॥
पुनि नारद बोले मतिधीरा ❀ हौं कछु कहौं सुनौ रघुवीरा॥३
जक्त माहिं क्षत्रिय सब जेते ❀ सुर द्विज धेनु पाल बहु तेते ॥
तिनहूँ महँ पुनि जे रघुवंसी ❀ धर्मसिंधुते परम प्रशंसी ॥ ४ ॥
तिनहूँ महँपुनि अवध नरेशा ❀ भये एकते एक सुदेशा ॥
नृपति चक्रवर्त्ती धुर धीरा ❀ दान धर्म दाया रणवीरा ॥ ५॥
तुव कुलके अपार गुण गाथा ❀ मैं बरणौं कहँलग रघुनाथा ॥
कहौं कछू रघु नृप प्रभुताई ❀ सुनहु सबंधु राम मन लाई॥६
भये चक्रवर्त्ती रघुराजा ❀ कियो धर्म संयुत बहु राजा ॥
तिहूँ लोक नृप आज्ञाकारी ❀ एक चक्रबल निर्भय भारी॥७॥

दोहा-एक समय रघु भूप बन, बिचरत करत अहेर
संग स्वजन छूटे सकल,भ्रम कानन मग फेर ॥ ८ ॥
ग्रीषम ऋतु पुनि मध्य दिन,क्षुधित तृषित अति भूप॥
तहां नहीं जल फल कहूँ,विहबल भये विरूप ॥ ९ ॥
ताछिन औचकहीं तहां, आयो यक बनपाल ॥
तिहिं विलोकि ढिग टेरिकै,निज गति कही नृपाल॥१०॥
सो सुनि वेगहिं विपिनते, लायो कंद अनूप ॥
तिहिं भोजन करि तृप्तह्वै, मुदित भये अति भूप॥ ११ ॥
रघु प्रसन्न बोले बनप, मांगु जु तो रुचि होय ॥
मौन रहो मुसक्याय सो, भूपति मुख दिशि जोय ॥ १२॥
पुनि बोले नृप मांगु जो, अबहिं देउँ तुहि सोय ॥
सोरिसाय भाषी महा, दुस्तर दैवो होय ॥ १३ ॥
दै न सकौ जो हम चहैं काह तिहारे पाहँ ॥
सुनि सकोप तब नृप कही,मांग जु तो मन माहँ ॥ १४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो अनखाय रिसायके, बोलो महा उदार ॥
याही छिन इहि ठौर मुहि, स्वर्ण देहु शतभार ॥१५॥
चकित भये नृप सुनतही, कीनो हृदय विचार ॥
अब याही छिन विन दिये, धर्म सुयश हो छार॥१६॥
करि विचार भूपति तुरत; लै अनामिका रक्त ॥
तृणते पत्र सुपत्रपै, लिखो हाल कछु व्यक्त ॥ १७ ॥
बाण बांधि तिहि धनुष धरि, छोडो वेगि नृपाल ॥
सो शर जाय कुबेर ढिग, पहुँचो अतिहि उताल॥१८॥
लखि धने वहश पत्र द्रुत; लै सुवर्ण बहु भार॥
नभ मंडलह्वै भूप ढिग, वरसो आय अपार ॥ १९ ॥
चारि दंड नभते भई. वरषा हेम अखंड ॥
बनप गिरो नृप चरणपै, देखि प्रताप उदंड ॥ २० ॥
समाधान करि भूप अति, सकल कनक तिहि दीन ॥
चढि तुरंग मग बूझिके, बेगि पयान सु कीन ॥२१ ॥
ऐसे रघु गुण अमितहैं, एक एक अधिकाय ॥
पुनि प्रताप कछु औरहू, कहौं सुनौ रघुराय ॥ २२ ॥

चौ०·एक समय लंकापति रावन ❀ धरि द्विज रूप अनूप सुहावन॥
आय अवध लखि अति हरषायो ❀ पुनिरघुकेरनिवाससिधायो२३
रघुरानी बहु तियन समेता ❀ सुखयुत बैठीं मुदित निकेता ॥
तहँ लंकेश विप्र तनु धारी ❀ गयो विलोकि उठीं सब नारी२४
द्विज वरजानिसकलशिर नायो ❀ हेम सिंहासन बेगि धरायो ॥
सो प्रतापमय रघु नृप केरा ❀ जटित अमोल रत्नचहुँ फेरा२५
तेजमंत सिंहासन भारी ❀ तापर दियो द्विजहि बैठारी ॥
बैठतहीं सब छल प्रगटाने ❀ दश शिर बीस भुजादरशाने२६
सो देखत भागीं सब बाला ❀ धाय धसीं गृहअतिहि विहाला
सोडारि उठिद्विजतनुपुनिकीनो ❀ रावण चलो कोऊनहिंचीनो२७॥
इत सब तीय हीय भय पैठी ❀ दै कपाट शंकित चुप बैठी ॥
उत दशमुखकछु डरपिलजायो ❀ पुनिधरिधीरभूप ढिग आयो२८

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताछिन सरयू तट रघुराजा ❀ करत हुते संध्या शुचि साजा॥
द्विज लखिकै सादर बैठारो ❀ करनलगे पुनि कृत्यसुखारो २९
औचक संध्या करत नृपाला ❀ कियो आचमन अतिहिंउताला॥
पुनि करलै जलदर्भ सक्रोधा ❀ दक्षिणदिशि घालो नृपयोधा३०
पुनि आचमन कीन रघुराई ❀ करन लगे संध्या चित लाई ॥
सो नभेद रावण कछुजानो ❀ चकितचित्तअतिजियअकुलानो३१
करै कल्पना अमित सुरारी ❀ बैठो चकित मौन मनमारी ॥
जब नृपसुचितभये करिनेमा ❀ तब बूझी विप्रहि सबक्षेमा॥३२॥
दै अशीश कहि कुशलबहोरी ❀ दशमुख बोलो नृपहि निहोरी॥
महाराज जो दर्भ चलायो ❀ सो गुण श्रवण हेतु हुलसायो ३३
तब नृपकही बात कछु नाहीं ❀ लंका ढिग इक धेनु चराहीं ॥
तिहि भक्षण धायो बनराई ❀ सो सुरभी मो दई दुहाई॥ ३४ ॥
हतो केहरी गाय बचाई ❀ या हित कुश घालो अतुराई ॥
सुनि विस्मितह्वै शोक दुरायो ❀ पुनि अशीशदै भवन सिधायो३५
वेगि जाय सोई गति पेखी ❀ मृतक सिंह सुरभी मुद देखी ॥
ह्वै सशंक अतिआतुर धाई ❀ सकल कथानिजतियहिसुनाई३६
मंदोदरी सुनत अकुलानी ❀ कही कंत सब लंक नशानी ॥
रघु प्रताप तुम रंच न जानो ❀ तिहि गृह मांहिंजायछलठानो३७
तब दशकंठ कही बिलखाई ❀ प्रिया कहा अब करौं उपाई ॥
जाते बचै प्राण परिवारा ❀ नृपति चक्रबलप्रबलअपारा३८॥
तब मयसुता उपाय बिचारी ❀ पतिहि संगलै भवन सिधारी ॥
तहां जाय इक पीठ धरायो ❀ ताहि हेठ रावणहिंदुरायो॥३९॥
निपट नग्नह्वै वसन विहाई ❀ बैठी ताहि पीठपर आई ॥
करन लगी मंजन मिसधारी ❀ अतिहि सभीतदुहूँ पतिनारी४०
इत रघु भूपहि महल बुलाई ❀ तियनदशा निज सकल सुनाई॥
जानो दशमुख छल महिपाला ❀ भये क्रोधवशलोचनलाला४१॥
तुरत भूप शुचि नीर मँगायो ❀ लै मंत्रित करि भूमि गिरायो ॥
तहँ महिते इक शर तनुधारी ❀ प्रगट भयोनृपआज्ञाकारी४२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अति सकोप नृप दई रजाई ❀ लंकहि जाय वेग बल छाई ॥
बीसहुकर दशकंधर केरे ❀ बांधिअबहिंआनौंममनेरे४३॥
पायरजाय बाण करि कोहा ❀ गयो लंक रावण चहुँ जोहा॥
तिया भवन पत्रीदृढ जानो ❀ नग्ननारिलखिहियसकुचानो४४॥
रोको द्वार शोर करि भारी ❀ कह्यो आव इत दुष्ट मुरारी॥
लखि कराल शर कंपहि लंका ❀ भयेनिशाचरसकलसशंका४५
करत विचार बाण अकुलाई ❀ नग्न नारि देखौं किमिजाई ॥
पट धारे तिय जबहिं अन्हाई ❀तबहौंगहौंरावणहिं धाई॥४६॥
इहि विधि गुणत भई बहु बारा ❀ उठत नहीं रजनीचर दारा ॥
इत विलंब लखि भूप रिसाये ❀ तीनबाणपुनिकोपपठाये४७॥
तेऊ जाय नग्न लखि नारी ❀ रुके द्वार चहुँ क्रोधितभारी ॥
तिनहुँ गये अति भयो विलंबा ❀ तबरघुकीनोकोपकदंबा॥४८॥
सप्त बाण पुनि बोलि नृपाला ❀ दीनी तिनहिं रजाय कराला॥
बाण सहित रावण गहि आवो ❀ कैलंकहि उखारिइतलावो४९॥
सुनि रजाय सो बाण कराला ❀ गयेलंकसब अतिहिं उताला ॥
पुर पहुँचत त्रिकूट चहुँ फेरा ❀ उठीज्वालअतिभयोउजेरा५०
भयो सिंधु खलभलमहिकंपी ❀ धूरि पूरि लंका सब झंपी॥
तब मयसुता हीय दृढ जानी ❀ अबसबभांतिप्राणकीहानी ५१
यह विचारि आतुर पटधारी ❀ आय द्वार कहि त्राहिपुकारी॥
तृण दबाय द्विज दुहुँ करजोरी ❀ विहवल बोलीबचननिहोरी५२
हौं रघुराज शरण युत ईशा ❀ बधौ मोहिं आगे यह शीशा॥
सुनत बैन सब शर अनुमानी ❀ हैअवध्यअबलादृढजानी५३॥
पुनि रघुराज शरण कहि टेरी ❀ अब कीजे कह जतन निवेरी॥
यौं विचारि शर एक उताला ❀ नृपढिगआयकहोसबहाला५४
सुनि शरमुख तियबैन सुदीना ❀ पुनिअवध्यअबलादृढ कीना॥
ताहू पै सो शरण पुकारी ❀सकल बातइमिहीयविचारी५५
तब बोले रघुराज कृपाला ❀ धर्म शरण रक्षण हम पाला॥
याते चूक क्षमा सब कीनी ❀अबलाजानिअभयतिहिदीनी५६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाहुसकलशर निजनिज ठामा ❀ इयुसुनिपुनिआयोतिहिंधामा॥
कहो मानि रघु वचन प्रमाना ❀ लंकात्यागि गयेसब बाना५७
जब सब बाण गये तजि लंका ❀ तब रजनीचर भये निशंका॥
तुव कुल ऐसे बली नृपाला ❀ प्रगटेविपुलसुनौरघुलाला५८॥
सो रावण अब सबहिं सतावै ❀ हिये भीतिरंचहु नहिं लावै॥
महि निछत्र यौं दशमुख जानै ❀ मनमानै अधर्म सो ठानै५९॥
महाबीर लंकापति रावण ❀ अस्त्र शस्त्र विद अमरसतावन॥
यहिविधिअमितव्यंग्यमुनिभाषी ❀ नारदगिरारामउर राषी॥६०॥

इति श्रीरामर०ज०वि०रघुचरित्रवर्णनो नाम पंचमोविभागः ॥५॥

दोहा–पुनि बोले मुनिराजसुत, रावण यदपि प्रचंड॥
तदपि भानुवंशी अधिक, ताहूते वरवंड॥ १॥
जिहि दशमुखको तेज बल, विदित लोक तिहुँ माहिं॥
अति उदंड रघुराज सो, तृणहुँ गिनों तिहि नाहिं॥२॥
चौ०–सुनिमुनिमुखलंकेशप्रशंसा ❀ हँसि बोलेरविकुल अवतंसा॥
कहिय कछू रावण कर गाथा ❀ तब भाखी नारद ऋषिनाथा।३
दोहा–सुनौ राम रावण प्रगटि, प्रथम महातप कीन॥
ह्वै प्रसन्न करतार तिहि, परम प्रबल वर दीन॥४॥
नर वानर तजि सबहिंते, भयो अवध्य सुरारि॥
परम प्रचंड उदंड चहुँ, कीनी विजय प्रचारि॥५॥
लंका बंक कुबेर ते, बरबस लई छुड़ाय॥
सैन कुटुंब समेत तहँ, दशमुख रहै सदाय॥ ६॥
अति उतंकहै लंक वर, बंक निशंक अखंड॥
यातुधानरक्षित सदा, चंड मंड वरिबंड॥ ७॥

घनाक्षरी कवित्त।

खाई सिंधु वितत त्रिकूट शतयोजनको तापै मणि हेममईनगर बसै निशंक॥बीस दश योजनको आयत वितार जाके चार दृढ द्वार सबै रक्षित सुवीरबंक॥अयुत सुलक्ष दश लक्ष कोटि कोटि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शत पूरनादि मध्य जोधा पाहरू विचारी अंक॥रसिकविहारी साज अपर अपार भूरि चमू चतुरंगहै अभंग यौ उतंक लंक ॥ ८॥

दोहा–पुनि दशमुखके त्रासते,बहु सुर मुनि गंधर्व ॥
जाय जाय लंका सदा,सेवतहैं तिहि सर्व ॥ ९ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

वेद धुनि छावैं विधि ग्रहन बतावैं गुरु शारदा बजावैं वीन गंधरव गावैंहैं॥सदन समीर झारैं वरुन सुनीर ढारैं चंद्र छत्र धारैं भानु चँवर चलावैंहैं॥अनल सुपाककारी द्वारपाल दंडधारी देव त्रिपुरारी आय प्रातहि पुजावैंहैं॥रसिकविहारी तेज भारी यौं दशाननको अमरसं शकयातें लंक नित जावैंहैं ॥ १० ॥

दोहा–परम प्रतापी अति बली, ऐसो निश्चरराय ॥
जाय जाय तिहुँ लोक चहुँ, विजय करी हरषाय ॥ ११ ॥

चौ०–अतिवरिवंडउदंडसुरारी ❀ सुर नर नाग सबहिं दुखकारी
धाय धाय तिहुँलोक मँझारी ❀ हरी अमित वरबसवर नारी १२
पुनि कुबेरको धर्षित कीनो ❀ पुष्पकवर विमान हरि लीनो॥
मेघनाद तिहि सुत बलवाना ❀ सोसुरपतिहिजीतिहरषाना १३

दोहा–याही विधि दशकंठ बहु,करै सदा उतपात ॥
पै तिहि बल गुण तेजते,सुर नर नाग डरात ॥ १४ ॥
एक समय कानन विषे,होत रहो वर जाग ॥
सकल अमर बैठे तहां,लीने निज निज भाग ॥ १५ ॥
ताही छिन तहँ लंकपति,आयो अति बलवंत ॥
दूरहिते तिहि देखि सुर,जहँ तहँ भगे तुरंत ॥ १६ ॥
निज निज तनु सुर गुप्त करि,धरे औरही रूप ॥
देव चरित सो रंचहू,लखो न निश्चर भूप ॥ १७ ॥
धरो सुरेश मयूर वपु,धर्मराजभे काग ॥
सरठ कुबेर सुहंसहै,वरुन दुरे इमि भाग ॥ १८ ॥

चौ०–इहि विधि सब रावण भयभारी ❀ दुरे रहेसुर निपट दुखारी
जब दशकंठ गयो ध्रुव जाने ❀ सकल देव तब अति हरषाने १९

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ह्वै निशंक निज निज तनु धारे ❀ परम प्रसन्न सुबैन उचारे ॥
जो सुर जाहि सुरूप दुराना ❀ ताहिदियो सो वरवरदाना॥२०
मोरहि कही इन्द्र हुलसाई ❀ रहौ व्याल ते अभय सदाई ॥
सहस नैन जिमि मो तनु माहीं ❀ तिमि तुव पक्ष चिह्न दरशाहीं२१
नील वर्ण तनु प्रथम तुमारा ❀ पै अब वर प्रभाव विस्तारा ॥
चित्रित पंख वर्ष प्रति पावो ❀ सुन्दर रूप अनूप लखावो॥२२॥

दोहा—धर्मराज तब वायसहिं,वर दीनो हुलसाय ॥
विन वध मृत्यु न होय तुव,रहौ निरोग सदाय ॥ २३ ॥
पुनि जो तुमहि करायहै,भोजन विशद बनाय ॥
तिनके सकल कुटुंबि जन,मम पुर तृप्त रहाय ॥ २४ ॥

सो०—तब कुबेर वर दीन,हर्ष सहित कृकलासको ॥
द्रव्य सहित शिर पीन,रहै अंग कंचन सरिस ॥ २५ ॥

पद्धरीछंद ।

वर वरुण दीन हंसहि अनूप । तुव श्याम श्वेत मिश्रित सुरूप॥
तनु सकल आजते शुभ्र होय । अतिक्रांतिमंत वर विमल सोय

चौ०—सुर वरदैनिज निजथलआये ❀ दुखीरहत दशमुखभयछाये
इमि लंकेश तेज बल भारी ❀ सुनि पुनि मुनिहि कही धनुधारी
कहिय मुनीश आजलग रावण ❀ कीने कर्म अनेक अपावन ॥
कहा हेत कितहूँ नहिं हारो ❀ वीर विहीन लोक भो सारो२८
तब नारद मुनि कही सुबानी ❀ सुनौ राम धनुसायकपानी ॥
बहुते ठौर पराजय पाई ❀ कहूँ बँधो कहुँ गयो पराई॥२९
एक बार सो निश्चर राई ❀ लियो जाय कैलास उठाई ॥
तबशिवलखिदशमुखकरदापा ❀ पद अंगुष्ठ वाम गिरि चापा३०
दबे बीशहू भुज भूधरतर ❀ रोय कीन बहु वर्ष विनय वर॥
तब दयालुह्वै छोडि दये कर ❀ रावण नाम धरो ताको हर॥३१
कियो समर पुनि हरिसे जाई ❀ तहँते दशमुख गयो पराई ॥
सहसबाहुसे सब विधि हारो ❀ वाली कपि तिहिको मद गारो
पुनि इत अवधमाहिं बहु वारा ❀ भिरो आय दशकंधर हारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इहि विधि अमित बार रघुराई ❀ सो बहु ठौर पराजय पाई ३३
पै वह निज भुज बल अधिकाई ❀ करत अनीति देव दुखदाई ॥
धर्म कर्म शुभ सकल निवारे ❀ द्विजसुरमुनि गोवृन्द सँहारे३४

दोहा—सुनि नारदमुनिके बचन, गर्भित अर्थ प्रमान ॥
बोले दुहुँ कर जोरिकै, दशरथसुत मतिमान ॥३५॥

चौ०-इमिअपराधरजनीचरकीना ❀ शापहुकोउकबहुँतिहि दीना॥
सुनि बोले नारद हुलसाई ❀ भई शापसोकह्योंबुझाई॥३६॥
एक समै अभिमान बढाई ❀ मुनिन दईलंकेश रजाई ॥
हौं भूपति ऋषि प्रजा अपारा ❀ दंड भरैं सबवित अनुसारा३७
सुनि सुनि सकल कहीहमपांहीं ❀ कुशवल्कल मृगचर्म रहांहीं ॥
कंद मूल दल फल नित खांहीं ❀ यहतजिऔरपदारथनांहीं३८॥
सुनि लंकापति कोपि सुनाई ❀ दण्ड न भरैं दण्ड सो पाई ॥
तब सब ऋषिन क्रोधउरछायो ❀ एक कुंभ अतिवेगि मँगायो३९
तामहँनिजनिज रुधिरनिकारो ❀ शोणितभरो सबनि घटसारो॥
घोरशाप करि शोर सुनाई ❀ यहिघटतेंरावणविनशाई ४०॥
यों कहि घटभेजो तिहि पासा ❀ हम मुनिकरैं विपिनमें वासा॥
है नहिं कछू भरैं कह दंडा ❀ नृप आज्ञा अतिभईउदंडा४१
यातें भरो दंड हम येहू ❀ है मुनि गणको शोणित लेहू॥
यौं सुनि शाप डरपि लंकेशा ❀ वेगहिदीनोजनन निदेशा४२॥
यह घटलै अति दूर सिधावो ❀ तिरहुत देश माहिं तुम जावो॥
तहां भूमि खनि खात सुभारी ❀ ताबिचधरो कुंभदृढकारी४३॥
जातें फेरि न घट प्रगटावै ❀ बहुरि काहयह विघ्न जनावै ॥
सुनिजनजायजुक्तितिमिकीनी ❀ जिमिलंकेश रजायसुदीनी४४॥

दोहा—एक शाप यह मुनिनकी, सो जानौ रघुनाथ ॥
पुनि दूजी गंधर्वकी, भई कहौं सो गाथ ॥४५॥
एक समय मग जातहो, रावण संयुत सैन ॥
बीच लखो अति रुचिर गिरि, उर आयो तिहि चैन४६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताभूधर पर लंकपति, कियो मुदित विश्राम ॥
तिहि मगह्वै एक तिय कढी, सजे अंग अभिराम ॥४७॥
नारिहि लखि लंकेश तब, भाषे मंजुल बैन ॥
को सुन्दरी अकेलि तुम, कहां चली अधरैन ॥ ४८ ॥
तिय बोली हौं अप्सरा, इति गंधर्व रहात॥
नल कूबर जिहि नामहै, तिन ढिग मैं नित जात॥ ४९॥
सुनि बोलो ह्वै कामिनी, हौं लंकेश निहार ॥
काह लहौ गंधर्व ढ़िग, मो मिलि करौ बिहार॥ ५० ॥
सो सुनि तिय सब भांति ते; समुझायो लंकेश ॥
सो नहिं मानो रंचहू, ता हिय भयो कलेश ॥ ५१ ॥
ता छिन मदन विहालह्वै, गही तिया भुजबीस ॥
वरबस कियो विहार तहँ, अति निशंक दशशीश॥ ५२ ॥
सो अप्सरा विहाल बहु, नल कूबर ढिग जाय ॥
रुदन कियो कहि निज दशा, गिरि चरण पर धाय॥५३॥
तब गंधर्व सु ध्यान धरि, देखो सत्य सुहाल ॥
जैसो निपट अधर्म हठि, सकल कियो दशभाल॥ ५४ ॥
ह्वै क्रोधित गंधर्व तब, दई रावणहिं शाप ॥
जाते फेरि न भूलि इमि, करै निशाचर पाप ॥५५ ॥
आजहिते परतीय गहि, जो हठि करै विलास॥
तौ मम शाप प्रभावते, होय लंकपति नास ॥ ५६ ॥
रावण सुनि यह शाप दृढ़, तबहीतें भय मान ॥
गहै नारि पै शंकते, रहै ताहि रुच जान ॥५७ ॥
द्वितिय शाप रावणहिं यह, घोर दई गंधर्व ॥
वेदवतीकी बात पुनि, कहौं सुनौ वह सर्व ॥ ५८ ॥

चौ०—एक समय सजि पुष्प विमाना ❀ बैठिकियोलंकेशपयाना॥
कन्या विमल विपिनइकदेखी ❀ वर सुन्दरितप रूपविशेखी५९
निश्चरपति आयो तिहि पासा ❀ कहे बैन भारे हीय हुलासा॥
क्यों सुन्दरी विपिन बिच डोलौ ❀ कोहौ कहानाम तुवबोलौ६०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शुद्ध हृदय निश्शंक सुबाला ❀ बोली विमल सुवैन विशाला॥
कुशध्वजनाम ब्रह्मऋषिख्याता ❀ सोममपिता वेद वर ज्ञाता६१
वेद पढतहै मम पितु ज्ञानी ❀ तबहौं तिहि मुखतें प्रगटानी॥
वेदवती याते मो नामा ❀ अर्थसहितराखोअभिरामा ६२
सो मम तात सत्य प्रण धारा ❀ विष्णु संग मो व्याहविचारा॥
यहसुनिशंभु दैत्यपति कोप्यो ❀ खलमलीनसबधर्महिलोप्यो६३
अर्ध रैनि सो शंभु सिधारो ❀ सोवत मम पिताहि हतिडारो॥
तब मो मात पतिहि लैअंका ❀ जरीअनलअतिदुखितनिशंका६४
तबते मैं नितहरि आराधौं ❀ पितु प्रण सत्य हेतु तप साधौं॥
सुनि दशकंठ मुदितह्वैभाखी ❀ यह अभिलाषवृथाहियराखी ६५
मम भामिनी होहु अबबाला ❀ त्यागौ तपहि कलेश कराला॥
हौं कलेश तिहूँ पुर स्वामी ❀ मोसन्मुखकहँ खगपतिगामी६६
सुनि बोली रे अधम सुरारी ❀ कह अधर्म यह बात उचारी॥
मोहग ओट वेग खल होई ❀ पातकलगो वदनतुवजोई॥६७॥
सो सुनिरावण अधिकरिसाई ❀ खल तिहि केश गहे वरियाई॥
ताछिन वेदवती कर हाथा ❀ भयो कृपानसरिसरघुनाथा६८॥
सोकन्यानिजकर निजकेशा ❀ छिन्न किये द्रुत पाय कलेशा॥
पुनि रावण प्रति बहु तपधारी ❀ बोलत भई क्रोध करि भारी६९॥
रेखल हतौं तोहिं छिन माहीं ❀ पै यह बात उचित मुहिं नाहीं॥
करौं शाप दै जो अब छारा ❀ तौ नशाय मम तप फल सारा७०

दोहा—याते हौं पुनि जन्मलै;करौं वेगि तुवनास॥
यौं कहि वेदवती तबै,कियो अग्निमें वास॥ ७१॥
वेदवती जबहीं क्रुधित, अनल दाह तनु कीन॥
तबहिं भये दशवदनके,दशहू वदन मलीन॥ ७२॥
येही विधि लंकेशको, भई अनेकन शाप॥
तउ रजनीचर मंदमति, करै अमित नित पाप॥७३॥
पै अब रावण शीश पै,फिरै काल मडरात॥
जानि परै ध्रुव वेग सो, साहित कुटुंब नशात॥७४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याही विधि बहु वार लग, नारद मुनि बहु गाथ ॥
कहे अनेक प्रसंगके,मुदित सुने रघुनाथ ॥ ७५ ॥
राम मुदित कर जोरि दुहुँ, ऋषि पद शीश नवाय ॥
बोले बंधु सखान युत, धन्य धन्य मुनि राय७६
अहो भाग्य मम आज प्रभु,दरश कृपा करि दीन॥
भयो कृतारथ अतिहिमैं, नाथ सुपावन कीन ॥७७ ॥
तब प्रसन्नह्वै मुनि कही, राम सकल गुण धाम ॥
जानत हौ सब हीयकी, हौ परिपूरण काम ॥७८॥
सुनि नारदके बचन वर, गर्भित अर्थ सहेत ॥
विहँसि राम मुनि पद गहे,बंधु सखान समेत ॥ ७९ ॥
जैति राम कहि मुनि गये, प्रमुदित सबहि सुनाय॥
रघुवर ऋषिहिं प्रशंसहीं,कहि कहि अमित प्रभाय॥८० ॥
येही विधि रघुवंश मणि,नित सज्जन सतसंग ॥
करत रहत विचरत अवध,लखि सब हिये उमंग ॥ ८१ ॥

इति श्रीरामर० ज० वि० रावणवृत्तांत वर्णनोनाम षष्ठोऽभागः ॥ ६ ॥

दोहा–अवध निवासी नारि नर, संयुत नृप रनिवास ॥
चरित चारहू बंधुके, लखि हिय होत हुलास॥ १॥
व्याह योग्य नृप सुत चहूँ,लखि सब करत विचार॥
वधुन सहित कब देखिये,सुंदर राज कुमार ॥ २ ॥
सो इत अवध नरेशके,जब जनमें सुत चार ॥
तिहि पाछे मिथिलेश गह,कन्या भई सुढार ॥ ३ ॥
सीरध्वज मिथिलेशकी, कन्या युगल अनूप ॥
अरु कुशध्वज नृप बंधुकी,दोय सुता सुख रूप॥४॥
भूमिसुता मिथलेश गह,प्रगट भई जिहि भांति ॥
जन्म कथा तिनकी कहौं,सहितरूप गुण पांति॥५॥

चौ०-मिथिला नाम सुमंडल भारी ❀ विदितजनकपुर आनँदकारी
विशद विशालनगरशुचिसोहै ❀ तिहिविलोकिसुरलोकविमोहै ६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तहँ महीप सीरध्वज नामा ❀ तिनके कुशध्वज बंधु ललामा ॥
सो नृप परम धर्म नयनागर ❀ जिहिको यश तिहुँलोक उजागर ७॥
ज्ञानीवर विरक्त भूपाला ❀ परमसंत गुणवंत विशाला ॥
सत्य विदेह देह धर राजा ❀ विमल विवेकी सकल समाजा ८॥
सीरध्वज अरु जनक विदेहूँ ❀ एकहि रूप नाम तिहु येहू ॥
पटरानी नृपकी मति ऐना ❀ धर्म रूप जिहि कहत सुनैना ॥ ९॥

दोहा—जनक राजके पुत्र वर, बीर विशद गुण रूप ॥
लक्ष्मीनिधि यह नामजिहि, यश विख्यात अनूप १०॥
प्रोहित नृप मिथिलेशके, शतानंद मतिमान ॥
वेद नीति ज्ञाता कुशल, त्रिकालज्ञ शुभदान ॥ ११ ॥
सुत संपति तिय धर्म सुख, सज्जन सहित समाज ॥
जनक नगरमें जनक नृप; करत अकंटक राज ॥ १२॥

चौ०—एकसमय मिथिलामधि भारी ❀ परो अवर्षणकालदुखारी॥
कालहु पर दुकाल पुनि देखी ❀ चहुँ दिशि पीडितप्रजाविशेषी १३
सो कलेश लखिके नर नाहा ❀ हृदय भयो अतिदारुण दाहा ॥
पूजन दान अनेक प्रकारा ❀ किये अमितमिथिलेशउदारा १४॥
तदपि न कहूँ रंच जल वरषै ❀ प्रति दिन प्रजा नीरहित तरसै ॥
तब भूपतिसब मुनिद्विजज्ञानी ❀ गुणी बुलाय सभावरठानी १५॥
यथा योग सनमानि नृपाला ❀ सविनय बोले वचन रसाला ॥
सबहीसुजन कृपा करि हाला ❀ कहियेजतनमिटै जिहिकाला १६
वरषै वेगि वारिधर वारी ❀ होय सकल मम प्रजा सुखारी॥
नृपातीबचन सुनि सकलदृढाई ❀ यज्ञ भये बिनकाल नजाई १७॥
यह सुनि दई रजायसु राजा ❀ वेगहि सजौ यज्ञ कर साजा ॥
होय शीघ्र मखसहितविधाना ❀ यथा वेद क्रतु कर्म बखाना १८
वेद विहित सब साज सजाई ❀ नृप कर महिशोधनविधिआई॥
कचनहल वर विशद बनावा ❀ यथाउचित द्विजमुनिनबतावा १९
सतानंद आयसु लै राजा ❀ चले मुदित महि शोधन काजा॥
भूपति चलत सगुण वर भारीं ❀ भये निरखि सब भये सुखारी २०

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्विजन सहित तहँ जायनरेशा ❀ सविधि कृत्यकरि सकलसुदेशा॥
पुनि हल गहिकर जनक सुजाना ❀ महिशोधन अरंभवर ठाना२१
सप्तावृत्त होत हलरेषा ❀ महिगत कुशभो अचल विशेषा॥
सो हल रंच न चलै चलावा ❀ रुको सीतनृप लखि दुखपावा२२

दोहा—औचकहीं तहँ भूमिमें, भयो प्रकाश अपार ॥
लखि चौंके चित चकितह्वै, सकल लोग इकबार॥२३॥
पुनि नृप हेरे सीत ढिग, हल रेखा विस्तार ॥
भूमि विवर मगह्वै कढी, प्रबल अनल सम झार ॥२४॥

चौ०—बहुरि सीत संयुतइककन्या ❀ भूदलतेप्रगटी अति धन्या ॥
नृप विलोकि तिहि धाय उठाई ❀ दीपति दिव्य देहबहु छाई२५॥
अमित तेज तनु भयो प्रकाशा ❀ छायो भ्रम दशहू दिगआसा॥
सो विलोकि जहँ तहँ तिहुँ लोका ❀ दौरेविपुलसु होयविशोका२४

घनाक्षरी कवित्त ।

पद नखपानि अरु अधर कपोल नैन भ्रुकुटी सुकंठ नाभि एडी औ चरण रेख॥ कंज भानु पल्लव सुबिंब औ मुकर बाण चाप कंबु कुण्ड फल सरिता अनूप लेख॥ भौंर कोक कोकिल सुकीर कमला अनंग इंद्र हारि,देव वृन्द कीस शफरी विशेष ॥ रसिक विहारीसिया प्रगटत येते सब भ्रमवशधाये भयेचकित सुरूपदेष२७

चौ०-कन्याअमलअनूपनिहारी ❀ भये जनकहियअतिहिसुखारी॥
आवतही नृप अंक मझारी ❀ रुदन करन लागी सुकुमारी॥२८ ॥
रुदन शब्द सुनि सब जनधाये ❀ भूपति निकट वेगि ते आये॥
जे मुनि त्रिकालज्ञ वर ज्ञानी ❀ तेउर माहिं सकलगतिजानी२९
कन्या निरखि भूप कर माहीं ❀ द्विज मुनि सब बोले नृप पाहीं॥
महाराज यह सुता अनूपा ❀ प्रगटी रमा मनौधारिरूपा॥३०॥
आप भूमिपति भू तुव नारी ❀ महाराज यह सुतातिहारी ॥
सीतद्वार महिते प्रगटानी ❀ सीता नाम सुमंगलदानी ३१॥
सुनि वर वचन मुदितह्वै राजा ❀ वंदेसब द्विज संत समाजा ॥
नभते सुमन विबुध गन वरषे ❀ चहुँदिशिसकल चराचरहरषे३२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्रिविध समीर चलो सुखकारी ❀ गिरे मेघ मंडल चहुँ भारी ॥
गगन हेरि सबही हुलसाये ❀ शतानन्द तब नृपहि सुनाये३३
दोहा—जनकराज तुव सिद्धि भो, सकल काज अबआज ॥
आय गये सुरराज बहु, लीने मेघ समाज ॥ ३४ ॥
वेगहिभवन पधारिये, साज समाज समेत ॥
भूपसुता पग धारिये, आतुर राज निकेत ॥ ३५ ॥
सुनि वर वचन महीप मणि, बहु मणि गण धन वारि॥
सुता गोदलै हरष युत, आये भवन पधारि ॥ ३६ ॥
सुभग सुनैना सदनमें, गये भूप हुलसाय ॥
सुता दई तिय गोद मधि, परम प्रमोद अघाय ॥ ३७ ॥
महरानी मन मुदितह्वै, सुतलाई जब गोद ॥
तब तनुते पय स्रवित भो, बाढो परम प्रमोद ॥ ३८॥
ताही छिन चहुँ ओरते, माचि उठे घन घोर ॥
राचि उठे सब रंगमें, नाचि उठे वन मोर ॥३९॥
वरसन लागे मेघ जल, महि मण्डल चहुँ छाय ॥
धारा धर धारा अमित, धारन धरनि समाय ॥४० ॥
भई पंचदश जामलों, वरषा अमित अखण्ड ॥
नीर भूरते पूर महि, चहूँ ओर नवखंड ॥ ४१ ॥
मिथिला मंडल सकलमें, छायो परमानन्द ॥
दुख छूटो सबही भये, जडचेतननिर्द्वन्द्व ॥ ४२॥
प्रमुदित प्रजा विलोकि बहु, सुखपायो मिथिलेश ॥
शोर होत चहुँ ओरते, जै जै जनक नरेश ॥ ४३ ॥
मिथिलापुरवासी सकल, सहित भूप रनिवास ॥
सिया जन्म उत्साह हित, छिन छिन कियो हुलास॥४४
पै अपार जल वृष्टिते, उत्सव नीकी भाँति ॥
होत घनो वर तदपिहू, जिय उमँग रहिजात ॥ ४५ ॥
इहि विधि बीते पंच दिन, भूमि स्वच्छ नभ देखि ॥
उमड़ो आनँद जनकपुर, सुर नर मुद चहुँ पेषि॥४६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सदन सदन प्रति जनकपुर, बीथी पंथ बजार ॥
साजे साज अपार सुठि, होत मंगलाचार ॥४७॥

घनाक्षरी कवित्त ।

चित्रित कराये नव भवन लिपाये रंभ खम्भन रुपाये दल अंकुर सुछाये हैं ॥ तोरन बँधाये त्यों वितान तनवाये मंजु ध्वज फहराये हेम कलश धराये हैं॥ सुमन सजाये चौक मोतिनपुराये मणिदीपक दिपाये बर बाजने बजाये हैं ॥जनकदुलारी भई प्रगट उछाह भारी रसिकविहारी नर नारी हुलसाये हैं ॥ ४८ ॥ लीने सौंज मंगल सुढंगते शृँगारकीने अधिक उमंग अंग रंग छबि छावैं हैं॥गावैं हैं बधाई कोउआवैं कोउ जावैंचहूँ वृन्द वृन्दजुरिकै आनन्दउपजावैं हैं रसिकविहारी रनिवास भीरभारीतऊ रुचिअनुसारी नर नारीसुख पावैंहैं॥फेरि धन वारैं औ निहारैं मुख फेरि फेरि जनक ललीको हेरि हेरि हुलसावैं हैं ॥ ४९ ॥मिथिला निवासी सियाजन्मकेहुलासी सब परम उपासी काहू प्रेमकोनछेह है॥ अमित उमंगमें अभंगरंग राचे घने रसिकविहारी हीय उमडो सनेह है ॥सुरति न वित्तकी न हित्तकी न चित्तहूकी जानैं हैं न कोऊ कित देह कित गेह है ॥ भाषैं देव देखौ इतै विपुल विदेह वसैंआजलोंसुनी यौं सदा एकही विदेह है ॥ ५० ॥ आई पांच नारी धौंकहांतेमिथिलेश भौन भरीं गुण तेज रूप मद प्रभुताईमें ॥ ऋद्धि सिद्धि लक्ष्मी भुक्ति मुक्ति सकुचानी हीय निज सम देखींवामविपुल बधाईमें॥सकल सुनैना पास जाय पि पांय बोलीं दासी हमैं कीजै रैंहैं रावरी रजाईमें ॥ रसिकविहारीदीनजानि महारानी तिनैंराखी कृपा करिकै सियाकी सेवकाईमें ॥ ५१ ॥

सोरठा–सिया जन्म उत्साह, होत महा आनन्द युत॥
हिय उमँगे नरनाह, करत दान सन्मान बहु ॥५२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी कवित्त।

आनँद अथाह सिया जनम उछाह माँह गति नरनाहकी न परत पिछानीहै॥ औरै दान औरै मान औरै ज्ञान औरै ध्यान औरै प्रीति नीति रीति औरै प्रगटानी है॥ रसिकविहारी न्यारी उमँग विलोकि भारी सब नर नारी सत्य येही उर ठानी है॥ कैतो अधिकानी या विदेहकी विदेहताई आजके विदेहकी विदेहता भुलानी है॥ ५३॥

सोरठा—इत नृप जनक उदार, ज्यों उमँगे आनंदमें॥
त्यों सिय मातु अपार, दान निछावरि करहिं बहु॥५४॥
येही विधि दिन रैन, जनकनगर उत्साह नित॥
लखि पावैं सब चैन, छाके परम प्रमोदमें॥ ५५॥
अमित देव मुनि वृन्द, सुरी किन्नरी आदि बहु॥
दरश हेत सानंद, जनक द्वार नित आवहीं॥ ५६॥

घनाक्षरी कवित्त।

शतानंद होवैं विधि कौशिक महेश बनै जनक स्वरूप त्यौं सुरेश निज ठानैं हैं॥ अंग ज्यों कुशध्वजको धारत कुबेर त्योंही वरुण सुगालवको गात निरमानैं हैं॥ रसिकविहारी नर नारी देव देवी और वपु विरचैहैं बहु जैसे मन मानैहैं॥ मिस करि आवैं सब सीयके दरशहेत भीरमें न कोऊ भेद जानैं ना पिछानै हैं॥ ५७॥ धाय ह्वै सुधात्री धाय धाय पय प्यावै सदा पद्मा प्रोहितानी है सुनेग निरवारतीं॥ किन्नरी नरी ह्वै पुरवासिनी सुगीत गावैं शारदा सुवासिनी ह्वै आरती उतारतीं॥ रसिकबिहारी रूप रचिकै रिझावै रती जननी सखी ह्वै शची सीतहि शृँगारतीं॥ अंग उपटावै नागकन्या नव नायन ह्वै गिरिजा गुसायन ह्वै आय नित झारतीं ५८॥

दोहा—जनकललीके शिशु चरित, रूप अनूप ललाम॥
पुर परिजन पितु मातु सब, मुदित लखत वसुयाम॥ ५९॥

घनाक्षरी कवित्त।

झँगुली सुपीत जरतारी ते जटित मंजु रंग रंग मणिन मढीसो अंग खूलैहै॥ कारी चिकनारी शीश लटुरीं लखात लोनी शोभित डिठौना भाल सुखमा अतूलैहै॥ रसिकविहारी सुरनारी पुरवारी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब लेतिबलिहारी हेर हेर हिय फूलैहै ॥ कहति अलीसों अली जनक लली को देख कमल कलीसी भली पालने सुझूलैहै॥६०॥

दोहा–निरखि सुता मुख मात नित, करै निछावर दान ॥
पुनि पसार अंचल मुदित, मांगे रुचि वरदान ॥६१॥

घनाक्षरी कवित्त ।

शंभु अभिषेक शुचि सविधि करैहौं सदा गिरिजा पुजैहौं बाल मुदित मुखी रहैं॥मोदक चढैहौं गणराजको घनेरे नित्य रसिकविहारी कबौं रंचन दुखी रहै ॥द्विजन जिमैंहौं दान देहौं व्रत लेहौं बहु देवी देव ग्रहन मनैंहौं सो पुखी रहै॥अंचल पसार प्रात उठीकै निहोरे मात मेरी प्राण प्यारी सिया संतत सुखी रहै ॥ ६२ ॥

चौ०–यही भांति पितुमातु अपारा ❀ करत सुकर्म अनेक प्रकारा॥
बीते कछुक दिवस तब सीता ❀ खेलै सखियन संग पुनीता॥६३

घनाक्षरी कवित्त ।

छोटे छोटे पांयनमें पैजनी सु छोटी छोटी नूपुर जु छोटे छोटे रुनझुन बाजैहै॥छोटे छोटे कंकन चुरीहु कर छोटी छोटी छोटे श्रौन छोटे झूमकाहु छबि छाजैहै॥रसिकविहारी छोटी छोटीही सहेली संग छोटे छोटे भूषन बसन सब साजे है॥धाय जाय आय माय अंक लपटाय सीय खेलै हुलसाय मिथिलेश भौन भ्राजैहै॥६४॥ मंजन कराय माय सकल सजाय अंग भालपै डिठौना दियो रुचिर सुधारिकै॥जनकदुलारी किलकारी दै सखीन संग खेलै धाय धाय मन मुदित निहारिकै ॥ श्रम जलपाय श्याम विंदुसो वितारभयो हिय हुलसायो मंजु उपमा विचारिकै॥ रसिकविहारी चंद्र मंडलमें एक ओर बैठो अलिछोना मनो पंखन पसारिकै॥६५

दोहा–इहिविधि बाल विनोद बहु, करत सीय सुखदानि॥
सो विलोकि सुर परस्पर, वचन कहत अनुमानि ॥ ६६ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

फूलो हिय कंज मंजु रानीकौशिलाकोउत महिषी सुनैना इतैनलिनी विकासीहै ॥ रसिकविहारी धर्मको कभो विशोक उतै इतहि चकोरी भक्ति अमित हुलासीहै॥असुर अनीत शीत भीत उत दूर भई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सकल त्रिताप दाप ताप इत नासीहै ॥ अवध चहूँधा उत छायोहै दिनेश तेज इत मिथिलामें चंद्र चंद्रिका प्रकाशीहै ॥ ६७ ॥

दोहा–यहि विधि सब सुर मुदित मन,वर्णत सिय गुण रूप ॥
जबते प्रगटी भूमिजा, तबते सुगति अनूप ॥ ६८ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

हरष विषाद सुख शोक औ उमंग व्रीडा कंप तेजजड़तासुधीर परसावैहै॥देवासुर जनक पिनाक राम सिंधु लंक कीश औ हरीश संत क्रम सरसावैहैं॥रसिकविहारी या अनूप गति सारी हेरि छिन छिन भारी मोद उर वरसावैहैं ॥ जनकदुलारी प्रगटीहैं तबही ते नित्य शुभाशुभ दोऊ दिन दूने दरशावै हैं ॥ ६९ ॥

दोहा–इहिप्रकार सिय जन्मते, चहुँदिशि होत चरित्र ॥
मनहीं मनते मुदित जे, ज्ञानी परमपवित्र ॥ ७० ॥
जबते प्रगटीहैं सिया, जनकनगरमें आय ॥
तबते सुर मुनि गुनहै,नित दरशन करिजाय॥७१॥
एक दिवस नारद प्रगट,आये जनक समीप ॥
ऋषिहि नाय शिर उचित विधि,पूजे मुदित महीप॥७२॥
पुनि बोले नृप जोरि कर,भवन पधारिय नाथ ॥
कृपा सुता पर कीजिये,हाथ धरिय तिहि माथ ॥७३॥
सुनि प्रमुदित मुनि वर तुरत, मिथिलाधिपके संग ॥
आये अंतः पुर हिये, बाढी परमउमंग ॥७४ ॥
निरखि सुनैना ऋषिहि उठि,सविधि पूजि शिरनाय ॥
लै सीतहि निज अंकते,मुनि पग धरी सुधाय ॥ ७५ ॥
तब नारद अतिहर्ष युत, सियहि लई निज अंक ॥
ताछिन मुनिमन मोद ज्यों, पारस पायो रंक ॥ ७६ ॥
लखि मुनिवरहि प्रसन्न चित, सविनय कही नरेश ॥
नाथ सुताके चिह्न लखि,दीजे मोहिं विदेश ॥ ७७ ॥
सुनत वचन मुनि मुदित ह्वै,नखशिख सियहि निहारि॥
बोले नृपति विदेह सों, ज्ञानी विमल विचारि ॥७८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भूप सुताके अमित गुण, कहौं कहा मति मोरि ॥
शेषहु भाषि सकै न जो, वरणैं वर्ष करोरि ॥७९॥
तुव पुत्रीके चिह्न जो, परे चरण कर भूप ॥
अवधनाथ सुतके सकल, येही लखे अनूप ॥ ८० ॥
सुनि त्रिकाल ज्ञाता नृपति, मुनिहि कहो कर जोरि ॥
श्रवण करनको चिह्न सो, चाहतिहै मति मोरि ॥ ८१ ॥
तब मुनि बोले रामके, लक्षण सकल अपार ॥
पैपद करके कछु कहौं, निजमतिके अनुसार ॥ ८२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

स्वस्तिकतक १ त्रिकोण २ बाण ३ कल्पतरु ४ कंज ५ चक्र ६ वज्र ७ छत्र ८ चौंर ९ रथ १० अष्टदल ११ ऊर्द्धरेष १२ ॥ सिंहासन १३ अंकुश १४ मुकुट १५ हल १६ मूशल १७ श्री १८ वसु १९ अहि २० दंड २१ ध्वजा २२ नर २३ जवमाला २४ लेष॥ रसिकविहारी रेष ऊरधके वाम सोहैं, एक बीस २१ ताके दिशि दक्षिणसुद्वै २ विशेष॥ येहैं वीसचारि चिह्न दक्षिणचरण चारु राजैं रामचंद्रकेमैं मुदित भयोहौंदोष॥८३॥ गोपद १ पताका २ शंख ३ भू ४ घट ५ त्रिकोण ६ गदा ७ जंबू ८ जीव ९ सरयू १० छकोन ११ तिल १२ चंद १३ जान ॥ शक्ति १४ वीन १५ त्रिवली १६ पियूषसर १७ मीन १८ हंस १९ तूण २० धनु २१ वंसी २२ नैनबिंब २३ शशिबिंब २४ मान॥ द्वादश १२ अनूप सरयूके दिशि दक्षिणहैं एकादश १ ताके वाम ओर वर कीनो थान ॥ रसिकविहारी चिह्न चौबिस विशाल येई रामपद वाम मैं विलोके मनमोद मान ८४॥ चिंतामणि १ कामधेनु २ ऊरध ३ तुरंग ४ गज ५ कुंभ ६ षटकोण ७ लता ८ चक्र ९ ध्वज १० भ्राजै हैं ॥ वज्र ११ पंचकोण १२ कंज १३ मंदिर १४ त्रिकोण १५ बान १६ षड़ग १७ त्रिशूल १८ मीन १९ चंद्र २० रवि २१ राजैहैं॥ अष्टकोण २२ कुंडल २३ प्रसून २४ तिल २५ रंभा २६ क्रीट २७ माल २८ फल २९ चंद्रिका ३० गिरीश ३१ ग्राम ३२ साजैहैं॥ रसिकविहारी रघुचंदकर दाहिनमें विशद

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बतीस वर चिह्न छबि छाजैहैं ॥ ८५ ॥ कंकण १ कदंब २ चाप ३ अंकुश ४ मलिंद ५ तुला ६ योनि ७ नरमुण्ड ८ रथ ९ कुंभ १० मणिमाल ११ है ॥ माछ १२ शक्ति १३ तोमर १४ पयोध १५ महि १६ कीर १७ केतु १८ नलिनी १९ सरोज २० शंख २१ भानु बिंब २२ लालहै ॥ पारिजात २३ मंजरी २४ अशोक २५ मृग २६ मीन २७ सिंह २८ तारा २९ सरिता ३० पियूषकुंड ३१ शशिबाल ३२ है ॥ रसिकविहारी ये बतीस वर चिन्हनते रामको सुवामकर चिह्नित विशाल है ॥ ८६ ॥

दोहा—दोऊ पद कर दुहुँनके, येकहि चिह्न ललाम ॥
दक्षिण वाम जु वाम सो, दक्षिण सीताराम ॥ ८७ ॥
पुनि मुनि बोले नृपति मणि, सुनौ कहौं दृढ बैन ॥
राम भामिनी तुव सुता, ह्वैहै संशय हैन ॥ ८८ ॥
इनकी प्रभुता जगतमें, ह्वैहै वर विख्यात ॥
रूप तेज बल गुण सहित, चिरुजीवै कुशलात ॥ ८९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

सुन्दरी सुरी औ नरी किन्नरी अनूप सदा इनकी सुतीय सबै रैहैं अनुगामिनी ॥ देव द्विज वृन्द संत सुखसर सैहैं भक्ति मुक्ति मुक्ति पैहैं गुण गैहैं दिन यामिनी ॥ रसिकविहारी हीय मोद उमगैहैं यश प्रभुता बढैहैं औ कहैहैं राम भामिनी ॥ धर्म निरवैहैं पतिव्रतहि दिढैहैं सत्य कंत प्रिय ह्वैहैं तिहुँ लोकनकी स्वामिनी ॥ ९० ॥

दोहा—सुनि भूपति नारद वचन, बोले हिय हुलसाय ॥
सुखीरहै संतत सुता, मुनि तव कृपा प्रभाय ॥ ९१ ॥
इहि विधि मुनिवर दरशलै, सियहि दई नृप गोद ॥
कहि जैजै कीनो गमन, पुलकित परम प्रमोद ॥ ९२ ॥
मुनिहि चलत नृपतियसुता, संयुत उठि शिरनाय ॥
कही दरश फिर दीजिये, गेह रावरो आय ॥ ९३ ॥
दै अशीश नारद गये, इत रानी नरनाथ ॥
कहत परस्पर मुनि कृपा, भो यह गेह सनाथ ॥ ९४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि बोले नृप मुनि जिती, कही सत्य सब सोय ॥
विधि हरि हरनारद वचन, कबहुँ मृषा नहिं होय॥९५॥
बैन सुनत पितु मातके, सिय हिय भयो प्रमोद ॥
सो दुराय लागीं करन, इत उत बालविनोद ॥ ९६॥
सिय लघु भगिनी तीन जे, बहु गुण रूप ललाम ॥
कहत मांडवी उर्मिला; श्रुतिकीरति ये, नाम ॥ ९७ ॥
ते मिलि सखिगण सङ्गमें, खेलैंखेल अनूप ॥
चहुँ नृपकन्यासकल अलि, परमहनोहर रूप ॥ ९८ ॥
यद्यपि चारहु नृपसुता, हैं गुण रूप प्रधान ॥
तदपि सबहिमें जानकी, सुभग शिरोमणि मान ॥९९॥
मात पिता पुर नारि नर, लखि सिय बालविनोद ॥
छिन छिन पुलकित होत हिय, पावत परम प्रमोद१००
जबते सिय प्रगटीं अवनि, तबते नृप मतिमान ॥
सहस धेनु तिहि हाथते, नितहि करावत दान॥१०१॥
अपर दान उत्सव अमित, समय समय अनुसार ॥
सकल यथाविधि होत नित, जिनको कथन अपार१०२
सिया जन्म दिनते जनक, करत सदा जो दान ॥
ता प्रभावते रंक बहु, भये कुबेर समान ॥१०३ ॥
धर्म तेज पितु मातको, भाग्यवंत पुनि आप ॥
याते नित प्रति सीयको, छिन छिन बढ़ै प्रताप १०४॥
थोरी वय स्यानी लखत, बलगुण रूप अपार ॥
सकल कला विद्या निपुण, संतत विशदविचार १०५
शिशुताई ते सीय हिय, रुचै अधिक वसु८रीत ॥
दान१दया२शुचि३धर्म४बल५,प्रीति६नीति७संगीत८॥१०६
इहि विधि जन्म अनूप भो, जनकसुताको जान ॥
शुक्लपक्ष नवमी लखौ, माधव मास प्रमान ॥ १०७॥
नषत उत्तरा फाल्गुनि, मध्य दिवस गुरुवार ॥
सिंह लग्नमें अवनि ते, सिय प्रगटीं सुखसार ॥१०८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्र०महासुंदरीतंत्रे--श्लोक।

नवम्यां शुक्लवैशाखे ह्युत्पन्ना सावनीसुता ॥ सीतामुखात्सा संजाता पालिता जनकेन च ॥ १ ॥ रामपत्नी महाभागा सीता नामेति विश्रुता ॥ तस्मिन्दिने रामभक्ताः श्रद्धाभक्तिसमन्विताः॥ ॥२॥ महोत्सवपराः सर्वे वित्तशाठ्यविवर्जिताः ॥ गीतवादित्र नृत्याद्यैःरामभक्तिपरायणाः ॥ ३ ॥ नवम्यां सितवैशाखे पुराण-पठनं तथा ॥ लक्ष्मीसूक्तं पठंस्तत्र याति रामं सनातनम् ॥ ४ ॥ सौभाग्यं धनधान्यं च पुत्रसंततिविस्तृतम् ॥ रामप्रसादाल्लभते मुच्यते सर्वपातकात् ॥ इत्यादि ॥

इति श्रीरामरसायने श्रीसीताजन्मवर्णनो

नाम सप्तमो विभागः ॥ ७ ॥

सोरठा--सिय गुण रूप निधान, सखी वृन्द संयुत सदा ॥
सकलहीय सुखदान,जनक भवन मधि राजहीं ॥१ ॥

चौ०-एकसमैसियसखिनसमेता ❀ विचरतहीं आराम निकेता॥
बाग विलोकि चहूँ रुचिराई ❀ जहां सदा ऋतुराजरहाई ॥२॥
अलि न सहित तिहिबागमँझारी ❀ प्रमुदित फिरत विदेहदुलारी
इक रसाल तरु लखि हरषानी ❀ कछुकबारितिहितरबिलमानी३
ताछिन इक शुक शुकी अनूपा ❀ आये तहँ विचरत वर रूपा
बैठे सो रसालपर दोऊ ❀ परम प्रसन्न शंकनहिंकोऊ॥४॥
करत परस्पर केलि कलोलैं ❀ प्रमुदित दुहूँ मनोहर बोलैं ॥
रुचै जोइ सोई वरवानी ❀ कहैंसुनैंनिजनिजमनमानी५॥
कबहुँ शुद्ध सुर गिरा उचारैं ❀ कबहुँक नरवाणी विस्तारैं ॥
कबहूँ शुक भाषा निज बोलैं ❀ दुहूँपरस्परजियगतिखोलैं॥६॥
मधुर शुद्ध वरसुनि शुकबानी ❀ सखिनसहितसियहियहुलसानी
सीता कह्यो जतन सो कीजै ❀ सुंदर शुक जोरी गहिलीजै७॥
वचन सुनत आली इक जाई ❀ फंद डारि गहिबेको धाई ॥
शुक उड़ि गयो हाथ नहिंआयो ❀ शुकीगहीतनुफांस फँसायो८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिहि गहि कनक पिंजरा डारी ❀ शुकी देखि सियभई सुखारी ॥
भूषण वसन अमोल नवीने ❀ प्रमुदित ह्वै सो आलिहिदीने९॥
परि पिंजरा शुकी अकुलानी ❀ रोवन लगी दीन कहि बानी ॥
हा सुखदान हाय शुक प्यारे ❀ हा मम जीवन प्राणअधारे१०
यौं कहि तलफत पिंजर माहीं ❀ छिन छिनताहि कल्पसमजाहीं
सियविलोकितिहिव्याकुलभारी ❀ लैपिंजरचुचुकारिदुलारी११॥
फल मेवा पकवान अनेका ❀ मीठे सरस एकते एका ॥
कनक कटोरिन सकल सजाये ❀ नीरसहितितिहिनिकटधराये१२
शीश धुनै सो पंख पसारी ❀ रोवै शुक विहीन शुक नारी ॥
कछू न खाय पियै नहिं नीरा ❀ करैविलापसुनिपटअधीरा१३
बोली शुकी दीन ह्वै वानी ❀ हे सीता तुम परम सयानी ॥
हम पक्षी फल फूल अहारी ❀ रहैंस्वतंत्रसदावनचारी १४॥
ताहू पै पुनि हौं इहि काला ❀ दुखीसगर्भ अतिहि बेहाला ॥
याते मोहिं तजौ वैदेही ❀ मिलौंजायशुकपरमसनेही १५
सुनि जानकी कही मृदुबानी ❀ शुकीअतिहितुममोहिं सुहानी
याते सत्य कहौं हे प्यारी ❀ तोहिं दृगनतेकरौंनन्यारी१६
भई निराश शुकी सुनि बैना ❀ दृढजानीअबसिया तजैना ॥
शुक वियोग ज्वाला अति जागी ❀ घोरशोर पुनिरोवनलागी१७
शुक तरु पल्लव ओट दुराई ❀ शुकीसीय गतिलखी चुपाई॥
भयो अधीर दुखी तिय देखी ❀ आईनिकट मृत्युदृढलेखी १८
तब शुकह्वै प्रतक्ष तरु पाहीं ❀ हेरत चकित चहूँ जहँ ताहीं॥
सिय सन्मुख सुबैठि द्रुम शाषा ❀ बोलोविशदमानुषीभाषा१९॥
सुनौ वचन वर जनककुमारी ❀ या छिन त्यागिदेहुममनारी॥
ह्वै प्रसन्न सुत जनै सुबाला ❀ कछुक दिवसकरितिहिप्रतिपाला २०
पुनि हम दुहुँ आवै तुव पासा ❀ सदाराखियो सहित हुलासा ॥
हम तुमते मिथ्या नहिं भाखैं ❀ रंचहियेछल छिद्रन राखैं२१॥
सुनि बोलीं हँसि जनक किशोरी ❀ रे द्विज यौं जनिकरहिठगोरी ॥
हौं सब गति जानतिहौं तोरी ❀ तूमतिमानभईमैं भोरी॥२२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बचो फंदते तू उडि भागो ❀ अब बहु बात बनावन लागो
सुनि बोलो शुक सियहि बहोरी ❀ तुव हिय होय प्रतीति न मोरी
सुनौ सिया शुक मोहिं न जानौ ❀ हौं गंधर्व सत्य करि मानौ ॥
पक्षी देह हेतु जिहि पाई ❀ सकल कहौं वह कथा बुझाई२४

पद्धरीछंद।

गंधर्वलोक मेरो सुधाम। हौं नृत्य गानकारी ललाम ॥
गंधार्विनी सु यह तीय मोरि। संगीत कला यामें करोरि॥२५॥
तिय सहित सदा सुरलोक जाउँ। सुरराज सभा सब निशि रहाउँ
तहँ नित्य होत वर नृत्य गान। गंधर्व अप्सरा जुरहिं आन॥२६॥
सुरपति रजाय जब जाहि होय। तब नृत्य गान तहँ करहि सोय ॥
इहि हेतु सबै हाजिर रहात। अमरेश सभा नित सकल जात॥२७
इक दिवसतीय संयुत तहांय। हम गये नित्य जिहि समय जांय ॥
तिहि दिन सभा न आये सुरेश।मोजिय विचार आयो सुदेश२८॥
है अमरराजको अति विलंब। पुनि नृत्यगानकारी कदंब ॥
चलिलखिय आज अमरावतीहि। बरविशद वाटिका भावतीहि२९
तिहि मध्य विना वासव रजाय। सुर किन्नरादि कोऊ न जाय॥
याते दुराय गंधर्व देह। शुक रूप धारि हम दुहुँ सनेह ॥ ३० ॥
नभ पंथ होय तहँ जाय दोय। मन मुदित भये आराम जोय ॥
तरु बेलि फूल फल अति अनूप। मणिहेम धाम,शुचि विविधरूप
तिहि देखि अमित आनंद फूलि। दुहुँ गये सभाकी सुरति भूलि॥
लहि विमल धाम पुनि तीय संग। विचरे अपार बाढी उमंग॥३२॥
उत सभा आय राजे सुरेश। दीनी रजाय मोहित सुदेश ॥
दरबार माहिं पायो न मोहिं। थाके समस्त जन जोहि जोहि॥३३
तब कियो अमित सुरराज कोप। तिहि समय हीय राखो सुगोप॥
किन्नर सु किन्नरी अमित और। ते नृत्य गान ठाने सुठौर ॥३४॥
इत अर्धरैनि लग करि विहार। तिय सहित फेर निज देहधार ॥
हौं सभा मध्य गवनो सशंक। लखि भई इन्द्र भ्रुकुटी जु बंक॥३५॥
तिहि देखि भयो मैं अति विहाल। जान्यौं सतीय आयो जु काल॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहि त्राहित्राहिअकुलाय धाय । शिर धरो जाय सुरराज पाय॥ ३६
सहरोष कही तबइन्द्र मोहिं । गुण पाय बढो अभिमान तोहिं ॥
रेदुष्ट भंगकी नीरजाय । तिय सहित मूढ़ वध योग आय ॥ ३७॥
कहु सत्य रहो किहि ठौर आज।क्यों करि विलंब आयो समाज॥
मिथ्या न बोल तौ वचिहि प्रान । नत वध्य होय या छिन निदान
हौ सुनत लई दृढ हीय ठान । अब दुहूँ भांति है प्राणहान ॥
याते असत्य भाषौ नरंच । सो होय होय जो पूर्व संच ॥ ३९ ॥
यौं ठानि कहो सब सत्य हाल । सुनि भये इन्द्र दुहुँ नैन लाल॥
बोले सुरेश पुनि अतिसरोष । दुरि कियो दुष्ट तू अमित दोष॥४०
आज्ञा सुभंग द्वै कीन मोरि । तिय सहित मृत्यु आई सु तोरि ॥
कहकरौं चरणगहि लीन धाय । अब हतौं तोहिंतौ धर्म जाय॥४१
इहि हेतु देउँ तुहि शापदंड । या समय रोष मो अति प्रचण्ड ॥
हो खलउलूक तियसाहित जाय । नरलोक विपिननिर्जन बसाय४२
सुनि घोर शाप तिय विकल होय । द्रुत गिरी धाय तिन चरणरोय
हौं शरण पाहि बोली पुकार । यह दुसह शाप कीजे उधार॥४३॥
अबला विलोकि अतिहीं विहाल । पुनि कृपाकीन बहु ह्वै दयाल
देवेश तबै बोले सुबैन । मो शाप अन्यथा होय है न ॥ ४४ ॥
पैकहौं लाय दाया सु हीय । ह्वैहो उलूक ध्रुव पुरुष तीय ॥
सत वर्ष रहौ सो देहदोउ ।तिहि अंत फेरिशुकरूप होउ ॥४५ ॥
इमि जन्म मरण भोगौ अपार । शुकयोनि वर्ष पैहौ हजार ॥
पुनिरजक भवन दुहुँ प्रगट होय।दशसहस वर्षसुख अवध जोय४६
सो देह त्यागि नर नारि दोउ । पुनि स्वर्ग लोक तुव वास होउ॥
इमि इन्द्र शापवश ह्वै सदाय।शुकशुकी पुरुष तिय जगरहाय॥४७
सुहि पूर्वजन्मको सकल ज्ञान । तुझ निकट सत्य कीनो बखान॥
यातेप्रतीति मन मानि मोरि।सियदेहु वेगि मम शुकिहिछोरि ४८॥

दोहा—सुनत कही सिय सखि न ते,शुक अति मोहिं सुहाय ॥
याहूको गहिलेहु तौ, दोउ रहैं यक ठाय ॥ ४९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि सीता वाणी शुकी, सब विधि होय हिरास ॥
मति वियोग दृढ़ जानिकै, तजी प्राणकी आस॥५०॥
शिर धुनि धुनि पिंजर विषे, दोऊ पंख पसारि॥
प्राण त्यागि दीनों शुकी, सबही रहीं निहारि॥५१॥
शुक विलोकि निज तिय मरन, रोयो विकल पुकारि॥
निपट दीनह्व रोषयुत, बोलो सियहि प्रचारि ॥५२॥
जनकलली कीनी भली, लये दुहुँनके प्रान ॥
याको फल भलपायहौ, कहौं कहा अब आन॥५३॥
अवध लेहुँगो जन्ममैं, जाय रजकके भौन ॥
तब याको फल देहुँगो, जाविधि बनिहै जौन॥५४॥
यों कहिकै शुक विकलह्वै, गिरो धरणि प आय ॥
हाय हाय प्यारी शुकी, मोहिं गई तजि हाय ॥५५॥
बहु विलापकरि छिनकमें, शुकहु तजो निज प्रान ॥
सो लखिकै सिय सखिन युत,कीनी अमितगलान५६॥
शोच विवश पछिताय चित, भई जानिकी मौन ॥
तिहि कमला पर बांहदै, चलीं मन्द निज भौन ॥
पुनि दृगजल भरिकै सिया, सखिन कही बिलखाय॥
सत्यप्रीति की रीति वर, लखौ अली यह आय॥५८॥

सवया—कवित्त ।

चित चाहको चाहक पाय सदा धिग है तिहि फेरि जु चाहै वियै॥
करि नीके अमीरस पान घनो धिगहै पुनि जो कटुवारि पियै ॥
जिय चाहै चलो विन प्रीतमके धिग वाहि जु धीर धरावै हियै॥
रसिकेश कहायकै नेही तबैधिग ताहिजु मीतबिछोहैजियै ॥५९॥

दोहा—यों कहि सिय बोलीं बहुरि,सखि हौं अति पछिताउँ॥
मोपै बनी न बात कछु, आपहि आप लजाउँ॥६०॥
सुनि बोलीं आली सब, स्वामिनि हौ मतिमन्त॥
होनी होय सु नहिं टरै, यौं भाषैं सब सन्त ॥ ६१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिय सखीन मिलि परस्पर, योंही बहु बतराय ॥
आईं गेह विलम्बभो, मातहिं निपट सकात ॥ ६२ ॥
निरखि मात सिय मुदितह्वै, गोदलई बैठारि ॥
कियो प्यार मृदु वचन कह, मुख अंचल पट झारि ६३ ॥
प्रम निरखि निज मातुको, सिय हिय भयो अनन्द ॥
सकलसखीप्रमुदित अमित, लखि स्वामिनि मुखचन्द ॥
पुरवासी पितु मातु सखि, सदा सिया मुख देखि ॥
निशिदिन रहत अनन्दमें, धन्य जन्म निज लेखि ६५ ॥

इति श्रीरामरसायन ज० वि० शुकचरित्रवर्णनो
नाम अष्टमो विभागः ॥ ८ ॥

दोहा–जनक नन्दिनी सखिन युत, मुदितरहै वसुयाम ।
मात पिता शिखमानिकै, करैं सदा सब काम ॥ १ ॥

चौ०-एकसमैशुभऔसर जानी ❀ दई रजाय सुनैनारानी ॥
कुलपति पूजन सदा सुहायो ❀ होत समय सो अतिनियरायो २
याते वेगि सौंजसजि सारी ❀ होय देव पूजन तैयारी ॥
सुनि आज्ञा सेवक हुलसाये ❀ सपदि यथोचित साज सजाये ३
पूजन दिन सुघरी जब आई ❀ तब प्रमुदित जानकिहिं बुलाई ॥
सुता सुशील धर्म रत जानी ❀ कही मात मंजुल मृदुवानी ॥ ४ ॥

दोहा–पूजानिजकुल देवकी, होत सदा यह नेम ॥
जाते सकल कुटुम्बमधि, संतत रहै सुक्षेम ॥ ५ ॥
पुत्री सो दिन आजहै, याते तुम निज हाथ ॥
कछु कारज कुलदेव हित, करिकै होहु सनाथ ॥ ६ ॥
मात वचन सुनि जानकी, बोलीं हिय हुलसाय ॥
करौं काज सो वेगि जो, जननी होय रजाय ॥ ७ ॥
सुनि माता सियके वचन, श्रद्धाभक्ति समेत ॥
पुत्रिहिले निज गोद यों, भाषी हरषि सहेत ॥ ८ ॥
पूजन जहँ कुलदेवको, होत सदा सो धाम ॥
गोमय लेपन उचित है, तुव करते तिहि ठाम ॥ ९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—माय रजाय पायकै सीता ❀ धाय जायतिहि ठाँयपुनीता॥
शुचि गोमय जल तुरत मँगाई ❀ लेपन करन लगीहरषाई १०॥
लेपन करत सिया जिहि धामा ❀ तहां धरो यक धनुअभिरामा॥
मंजूषा वसु चक्र सँवारी ❀ तामधिरहैचापअतिभारी ११॥
पंच सहस्र वीर बरियारा ❀ मंजूषा खैचैं इक बारा ॥
चलै चक्र बलतै तब सोई ❀ धनुष उठायसकैकिमि कोई १२
देवरात निमि वंश जु भूपा ❀ तिनहि दयोशिव धनुषअनूपा॥
तबते धरो चाप गृहमाहीं ❀ सुरसम पूजन होत सदाहीं १३॥
दश सहस्र भट चहैं उठावा ❀ केवल चाप दापकरि दावा ॥
तिन पहँ रंचहु टरै न टारा ❀ तामधिअतिअपारइमि भारा १४
ता ढिग लेपन करत कुमारी ❀ बाल स्वभाव सहीय विचारी॥
जो सब थल लेपन ह्वै जावे ❀ तौ मम मात निरखिहरषावे १५

दोहा—दक्षिणकर गोमय लिपित, याते गहि कर वाम ॥
मंजूषा युत चापसो, धरो दूसरे ठाम ॥ १६ ॥

चौ०—सहजहिधनुधरिदूजे ठामा ❀ लेपन कियो सकलवहधामा
कर पखारि पुनि सहित हुलासा ❀ आईसियजननीके पासा १७ ॥
बोली सिय चलि मात निहारो ❀ मैं लेपन कीनो थल सारो ॥
यौंकहि गहि जननिहिवारि याई ❀ लायसकलशुचिभूमिदिखाई १८
दूजे थल धनु निरखि सुनैना ❀ चकित थकित मुख कढे न बैना
लखि जननीरुख सियाडरानी ❀ अनुचितकछूभयोजियजानी १९
गद्गद कंठ नयन भरि वारी ❀ जोरि पाणि मृदुगिरा उचारी॥
भयो होय जो अनुचित मोते ❀ क्षमै मात यह विनवों तोते २०॥
सियहि सशंक देखि महतारी ❀ लाय अंक बहु भाँति दुलारी॥
दै धीरज पुनि कही अभीता ❀ किन टारो इतते धनु सीता २१॥

दोहा—सुनि सिय बोली मातु मैं, धनु धरि लेपो धाम॥
भूली सुधि याते न फिरि, लाय धरो इहि ठाम॥२२॥
अब उठाय धरि देहुँ मैं, चापहि याही ठौर ॥
भयो यही अपराधकै, कहु जननी कछु और ॥ २३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०--यौं कहि धाय विदेहदुलारी ❀ मंजूषा सहजहिं कर धारी ॥
जबलग मातु गहै सिय जाई ❀ तबलग धनु तहँ धरो उठाई २४
निरखि मातमन विस्मय भारी ❀ चकितभईलखि अपर सुनारी ॥
रानी तुरतहि नृपहिं बुलाई ❀ कही सकलगतिधनुदरशाई२५॥
भूपति भूमिसुता बल देखी ❀ प्रगटो उर आचरज विशेषी ॥
ईश चरित्र विचित्र विचारी ❀ नृपरानी विस्मय सबटारी २६॥
पुनि पुत्रिहि गहिजनकसुनैना ❀ करचूमें कहि मंजुल बैना ॥
करी सिया यह कह लरिकाई ❀ मुरकी होय न मृदुलकलाई२७॥
यौं कहि बार बार नरनाथा ❀ लखत रानि युत सिय दुहुँहाथा॥
हरषितह्वै बोले अवनीशा ❀ कीनी दया बालपर ईशा॥२८॥
है यह बात अमित भी ताकी ❀ करवर टरी आज सीताकी ॥
यौं कहि भूपति विप्र बुलाई ❀ लक्षधेनु वर दान कराई॥२९॥
मणिभूषण पट वित्त अपारा ❀ कियो दान माता बहुबारा ॥
आये जनक नगर नर नारी ❀ दई वस्तु बहु सिय पैवारी३०॥
जो जो सुनै सुविस्मित होवैं ❀ आयआय सब सियमुखजोवैं॥
इहि विधि युगलयामदिनआयो ❀ कुलपतिपूजनसमयलखायो३१
तब सिय मात सियहि लै संगा ❀ गई गेह युत नेह उमंगा ॥
करि मंजन शृंगार शुचि साजी ❀ कुलपति पूजन हेतुविराजी ३२
इष्टदेव कुलदेव सप्रीती ❀ पूजे सविधि सनातन रीती ॥
गीत वाद्य भोजन युत दाना ❀ भये काजसबसहित प्रमाना३३
इहि विधि कुलपति पूजनकीनी ❀ पुनिबखशीशयथोचितदीनी॥
प्रमुदित हृदय सकल नर नारी ❀ जैजै शोर होत चहुँभारी॥३४॥

दोहा--यौंही नृपति विदेह गृह, बहु उत्साह अपारा॥
होत रहत प्रतिदिन सदा, लोकवेद अनुसार ॥ ३५ ॥

इति श्री० रा० र० ज० वि० कुलदेवपूजन वर्णनो
नाम नवमो विभागः॥ ९ ॥

इति श्रीमद्रसिकविहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायने जन्मचरित्रवर्णनो नाम द्वितीयोविधानः ॥ २॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा--श्रीसीतापति पद कमल, वंदों मन वच काय ॥
जाकी कृपाकटाक्षते, सकल चरित दरशाय ॥ १॥
जबते प्रगटीं जनकजा, जनकनगरमें आय ॥
तबते अति आनंद चहुँ, अधिक अधिक अधिकाय२
सिय गुणरूप अनूप लखि, कहत यहै सब लोग ॥
अब सुख तब जब सुभग वर, मिलै जानकी योग३॥
जनकसुता गुणरूप बल, प्रतिदिन बढत अपार ॥
सो विलोकि पितु मात उर, आवैं व्याह विचार॥४॥
पै नारदके बचन उर, धरे सिया पितु मात ॥
याते धीरज राखि अति, उर प्रति दिन उमगात॥ ५॥
होम दान पूजन विविध, सिय मंगल हित नित्त ॥
करत रहत नृपरानि दुहुँ, श्रद्धा सहित सुचित्त॥६॥
येही विधि निशि दिवस सब, प्रेम मगन नर नारि ॥
सिय विवाह अभिलाष हिय, रहे सकल जन धारि७॥

चौ० एक दिवस नृप रानि समेता ❀ प्रमुदित बैठे रहसि निकेता॥
ता छिन सिया मात सुखदानी ❀ बोली पतिहिजोरियुगपानी८
कंत मोहि यह परम उमाहा ❀ हगभारिकबैलखौंसियव्याहा॥
याते जतन कीजिये सोई ❀ समसंबंध वेगिजिहिहोई॥९॥
रानी बचन सुनत मिथिलेशा ❀ हर्षित बोले बचन सुदेशा ॥
प्रिया धीर धारौ मन माहीं ❀ ईश कृपा कछु दुर्लभनाहीं१०
यों कहि भूप सभा मधि आये ❀ मान सहितजनसकलबुलाये॥
पुनि बोले नृप सबहि सुनाइ ❀ धर्मनीतिमय गिरासुहाई११॥
हे सीता अयोनिजा कन्या ❀ प्रगट भई अवनीतल धन्या॥
ताको गुण बल तेज अपारा ❀ सबहिविदितकाकरौंउचारा१२
सो गुरु सुहृद सचिव पुरवासी ❀ सब मतिवंत ज्ञान गुणरासी॥
सज्जन सकल सुमति अनुसारा ❀ सीयव्याह करकरौविचारा१३
जनक बचन सुनि सब हरषाने ❀ धन्य धन्यकहिनृपहिबखाने ॥
ता छिन शतानंद वरज्ञानी ❀ बोले नीतधर्ममयबानी॥१४॥

दोहा–धेनु सुता तिहुँलोक में, हैं दोऊ अति दीन ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इनको दुख सुख रहतहै, संतस्वामि आधीन॥ १५॥
कन्या धेनु दुहूँनको, देय सुठौर कुठौर ॥
याते अधिक न हैं कहूँ, पुण्य पापकछु और॥ १६॥
पुनि वर कन्या रूप बल, कुल गुण तेज निहारि
यथायोग जहँ होय तहँ, कीजे व्याह बिचारि १७॥
शतानंदके वचन सुनि, बोले जनक नरेश ॥
परम कृपाकारि आप यह, दीनो वर उपदेश॥ १८॥
सो शिर धारि उपदेश यह, कहौं यथा रुचि मोरि॥
सुनि मुनि उचित विचारि हिय, करिय रजाय बहोरि १९
सहज उठायो सीय जो, चाप विदित सो बात॥
याते मेरे हीयमें, यह विचार ठहरात ॥ २० ॥
सुर नर वर कोऊ जु यह, चाप चढ़ावै आय ॥
सो सुयशी सुकृती मुदित, सियहि व्याहि लैजाय॥ २१

चौ०--जनकराजकी सुनि वरबानी ❀ सभावृन्दबोले शुभजानी॥
भूप बात यह भली विचारी ❀ धर्मनीतिदुहुँरीतिसुधारी २२
सुनि पुनि बचन जनक हरषाई ❀ बोलिसचिवगणकहीबुझाई॥
सिया व्याह हित हम प्रण ठाना ❀ आजहितेयहसत्यप्रमाना २३
जो वरबीर पिनाक उठावै १ ❀ भंजै २तौले३तनै४चढावै५॥
पंचकर्म मधि एकहु करई ❀ मुदित देहुसीता सोवरई २४॥
यह प्रण सत्य सकल संसारा ❀ वेगि यथोचित करौ प्रचारा॥
अरु सब धनुष यज्ञ कर साजा ❀ साजहुअमितकह्योमहराजा २५
नृप रजाय सुनि सचिव प्रवीना ❀ बहुजनबोलि निदेश सुदीना॥
सजौ वेगि सब साज सचेता ❀ लिखेपत्र पुनिरीतिसमेता २६

घनाक्षरी–कवित्त ।

प्रगट भईहै एक कन्या अवनीते चारु सोई मिथिलाधिराजपुत्री प्रिय प्रानकी॥गुण बल तेज रूप अमित अनूप याते भूपति दिढाई बात परम प्रमानकी॥रसिकविहारी शंभु चाप अति भारी ताहि तौलन समर्थ होय काहू बलवानकी॥आवै वरवीर तौ चढावै धनु छावै यश मोद उपजावै व्याहि जावै देउँ जानकी॥ २७ ॥

दोहा–दै पत्री इहि भांति चहु, भेजे दूत अपार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिय गुण रूप विदेह मण, विदित भयो संसार ॥ २८ ॥
सुनि मानी महिपाल बहु, विपुल बली हुलसाय ॥
आये मिथिला नगरमें, निज निज साज सजाय ॥२९॥
सन्माने सबही जनक, यथा उचित शुचि भाय ॥
पुनि दरशायो चाप नृप, निज प्रण सकल सुनाय ॥३०॥
लखि कोदंड अखंड अति, परम प्रचंड उदंड ॥
भूप महावर बंडते, हृदय भये शत खंड ॥ ३१
कोऊ नृप लखि दूरही, रहे न लायो हाथ ॥
कोऊ भूपति हेरिकै; चापहि नायो माथ ॥ ३२ ॥
कोऊ अतिमानी सुते, गहि बल कियो अपार ॥
रंचहु डगो न शंभु धनु, रहे मानि हिय हार ॥ ३३ ॥
कोऊ धनु गरुता सुनत, गवने नहीं सुठाम ॥
कोऊ आवत बीचते, लौट गये निजधाम ॥ ३४ ॥
कोऊ हठि सिय लेन हित, ठानो कुटिल बिचार ॥
युद्धकियो मिथिलेश ते, तऊ न पायो पार ॥ ३५
तन मन धन जन मान गुन, ज्ञान सान घनकान ॥
खोय गये निज निज सबै, रावणसे बलवान ॥ ३६ ॥
याही विधि आवैं सदा, जनकनगर बहु भूप ॥
चाप डगत नहिं काहुते, खोय जात सब रूप ॥ ३७ ॥
जनक नगर नित रैनि दिन, भारी भीर रहात ॥
चहूँ ओरके भूप वर, इक आवत इक जात ॥ ३८ ॥
पुनि भेजे नृप पत्र वर, सकल मुनिनके धाम ॥
आये कौतुक लखनको, धनुष यज्ञ अभिराम ॥ ३९ ॥
येही विधि बहु दिवसलों, आये बली अपार ॥
डगो चाप नहिं जनक तब, दुखित भये हिय हार ॥ ४० ॥
निशि दिन नृपरानी सकल, पुरजन दैव मनाय ॥
कहैं सियाको व्याह वर, निरखैं ईश सहाय ॥ ४१ ॥

इति श्रीरामरसायन व्या० वि० धनुषयज्ञारंभ-
वर्णनो नाम प्रथमोविभागः ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-दिशिदिशितेबहुऋषिगणआये ❀ मिथिलाचहूँओरसबछाये
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी ❀ धनुषयज्ञ दरशन मति ठानी १॥
पै मुनि मन अति खेद रहावै ❀ पूरण होम होन नहिं पावै ॥
अनल धूम लखि निश्चर भारी ❀ करैं विघ्नऋषि रहैंदुखारी॥२॥
कौशिकमुनि मन सोचअपारा ❀ किमि पूरण मख होय हमारा ॥
पुनि ऋषिराज सुहीय विचारी ❀ जाते बनै यज्ञ रखवारी ॥ ३॥
ह्वै प्रसन्न मुनि अवध सिधाये ❀ दशरथ राजद्वार पहँ आये ॥
मुनि नरेश उठि आगे आने ❀ करि प्रणाम पूजे सनमाने ४॥
सिंहासन पर मुनि पधराये ❀ वेगि चारहूँ कुवँर बुलाये ॥
ऋषि चरणन मेले तिन भूपा ❀ कौशिक भये मगनलखिरूपा५

सो०-पुनि करजोरि बहोरि,भूप सभाशिर नायकै ॥
कियो प्रणाम निहोरि,मुनि अशीश सबहीदयो ॥ ६ ॥
पुनि वसिष्ठ द्विजवृन्द,मिले यथोचित कौशिकहि ॥
बूझि कुशल सानंद,निज निज थल बैठे सकल ॥ ७ ॥
तब कर जोरि बहोरि, भूप कही ऋषि राजसों ॥
कीनी कृपा करोरि,नाथ मोहिं दरशन दियो ॥ ८ ॥
जो कुछ होय रजाय,सो शिर धरि वेगै करौं ॥
सुनि कौशिक हुलसाय, बोले दशरथ रायसों ॥ ९ ॥
यज्ञ न पूरण होत, याते हम अति दुखित हैं ॥
सदा निशाचर गोत,विघ्न करत हैं आय बहु ॥ १० ॥
याते तुव सुत राम, लषण देहु खल दलन हित ॥
हो परिपूरणकाम,सुयशरहै तिहुँ लोकमें ॥ ११ ॥
सुनि मुनि वचन नृपाल,बिकल भये बहु शोचवश ॥
पुनि धरि धीर उताल,कह्यो कौशिकहि जोरिकर ॥ १२॥
नाथ बाल रघुनाथ, युद्ध कहा जानैं अबै ॥
सजि अनीक प्रभु साथ, हौं चलि मख रक्षा करौं॥ १३ ॥
सुनि बोले मुनि बैन, हम कानन वासी तपी ॥
संग लेय नहिं सैन, राम लषण याचत तुमैं ॥ १४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि चुप रहे नरेश, तब वसिष्ठ बहु भांतिते ॥
नृपहि दियो उपदेश, ज्ञान धर्म वर नीति कहि॥१५॥
तब ह्वै मुदित भुवाल, कहो कौशिकहि जोरि कर ॥
दुहूँ रावरे बाल, लै निज संग सिधारिये ॥ १६ ॥
पैजो होहि रजाय, राम सखा सँग रहहिं तौ ॥
सुनि बोले मुनिराय, नृपशंका निरवारिकै ॥१७॥

चौ०-सुनिय अवध पति वचन हमारे ❀ तुव सुत सकलप्राणतेप्यारे
याते राम लषण हम याचे ❀ निरखे सबै प्रेम पन सांचे १८ ॥
लषण रहैं रघुवरके सँगा ❀ संयुत प्रीति प्रतीति उमंगा ॥
और समाज साज नहिं कोऊ ❀ केवल चहिय भूप सुतदोऊ १९॥
रंचहु कछु कलेश नहि पैहैं ❀ गृहते सरस सुखी नित रैहैं ॥
ज्यों सुत हैं तुव प्राण अधारे ❀ तिहिते अधिकमोहिदुहुँप्यारे२०
सुनि भूपति दुहुँ सुतन बुलाई ❀ धर्मनीति रणरीति शिखाई ॥
कह्यौ जाहु सँग दोउ भाई ❀ निजपितु गुरु जानौ ऋषिराई२१
सुनिप्रमुदित पितुपदशिरनाई ❀ लै धनु बाण सुअंग सजाई ॥
चरण वंदि सब मातन केरे ❀ दई धीर कहि वचन घनेरे२२॥
बन्धुसखनमिलिमिलिबहुवारा ❀ नृपहिकियो पुनिआय जुहारा॥
पुनि प्रोहित द्विज वृन्द समेता ❀ वन्दन किये सुबुद्धि निकेता२३
तब भूपति दुहुँसुत उर लाये ❀ गद्गद कण्ठ नैन जल छाये ॥
बोले मुनिहि दीन करजोरी ❀ सुनियनाथयह विनती मोरी२४
सो उपाय कीजे मुनिनाथा ❀ निरखौं वेगि लषण रघुनाथा ॥
यों कहि दुहुँ सुत करगहि राई ❀ सौंपेमुनिहिप्रतीति दिढाई२५॥
सहितसमाज ऋषिहि नृप वन्दे ❀ पुनि मिलिद्विजगुरुसकलअनंदे
दै अशीश भूपहि मुनिनाथा ❀ चले राम लछमन लै साथा२६

तोमरछन्द।

लै राम लछमन सङ्ग ॥ मुनि चले पुलकित अङ्ग ॥
मग जातहीं अधबीच ॥ लखि ताड़का तिय नीच ॥२७॥
आई सुप्रेरित काल ॥ धाई सक्रोध कराल ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लखि कही कौशिक राम ॥ इहि हतौ यह खल वाम॥२८॥
रघुवीर आयसु मान ॥ मारो जु इक शर तान ॥
तनु भयो प्राणविहीन ॥ लखि दीन तिहि गतिदीन ॥२९॥
तिहि वध विलोकि मुनीश॥ रघुवरहि दीन अशीश ॥
दुहुँ बन्धु हिय हुलसाय ॥ लीने सुहृदय लगाय ॥३०॥
पुनि दुहुँनको ऋषि भूप ॥ दीने सु अस्त्र अनूप ॥
विद्या सु और अनेक ॥ इकते विशद वर एक ॥३१॥
मुनि राम लषणहि दीन ॥ भे दुहूँ बन्धु प्रवीन ॥
तनु तेज बल सरसान ॥उर अमित सुख दरशान॥३२॥
पुनि आश्रमहि निज आय॥ मुनि कही अब रघुराय ॥
हम करहि यज्ञरचाय ॥ दुहुँ बन्धु रहहु सहाय॥३३॥
ह्वै सजग नृपति किशोर ॥ दुहुँ बीर वर वर जोर ॥
मखपाल भये उतंक ॥ मुनि कियो यज्ञ निशंक॥३४॥
दिन पञ्च मख मुनि कीन ॥ जब पूर्ण आहुति दीन ॥
तब उठो धूम अपार ॥ भो गगन लों विस्तार॥३५॥
अवलोकि नभ मख धूम ॥ धाये असुर करि धूम ॥
मारीच दल युत नीच ॥ आयो सुबाहु समीच॥ ३६ ॥
कीने अमित उतपात ॥ तम छयो कछु न दिखात ॥
बरषै उपल मल धूरि ॥ दशहूँदिशा भरि पूरि॥३७॥
नभ भूमिमें चहुँ ओर ॥ बहु घोर छावत शोर ॥
कितहूँ न कोउ जनात ॥दुहुँबन्धु अति अकुलात॥३८॥
तब मरुत शर रघुवीर ॥ छोडो सकोप सुधीर ॥
ह्वै तुरत सब तम नाश ॥ भो दशहुदिशहिप्रकाश॥३९॥
वह बाण विन फर जाय ॥ मारीच लागसुधाय ॥
सो करत घोर चिकार ॥उडिपरो जलनिधि पार॥४०॥
लखि यातुधान सकोप ॥ धाये दशौ दिशि गोप ॥
कीनो अमित सँग राम ॥ निरद्वंद लछमन राम ॥४१॥
करि क्रोध दोउ सुबीर ॥ छोडे विशिखवर तीर ॥
सो कालदण्ड समान ॥ लीने जु खलबलप्रान॥४२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगि अनलशर कर दाहु ॥ भो भस्म बीर सुबाहु ॥
पुनि अपर दलहि सँहार ॥ कीनो सु पलक मझार ॥ ४३ ॥
इहि भांति मारि सुरारि ॥ दुहुँ बंधु अंग सम्हारि ॥
आनंद हिय हुलसाय ॥ आये गहे गुरु पाय ॥ ४४ ॥
हिय लाय मुदित मुनीश ॥ दुहुँ दीन अमित अशीश ॥
आकाश अवनि मझार ॥ चहुँ भयो जैजैकार ॥ ४५ ॥
इहि भांति ऋषि मखपाल ॥ बोले दुहूँ रघुलाल ॥
अब और काह रजाय ॥ सो भाषिये मुनिराय ॥४६॥
दोहा–सुनि बोले कौशिक हरषि, सुबल तिहारे राम॥
निरखि यज्ञपूरण भये, हम परिपूरण काम॥ ४७ ॥
सुनि दुहुँ बंधु सुजोरि कर,कही सकुचि शिरनाय॥
बनै बाल ते काह यह,सब रावरो प्रभाय ॥ ४८॥
तब दोऊ नृप सुतनसों, बोले पुनि सरवज्ञ ॥
चलौ जनकपुर देखिये,रचो जनक धनुयज्ञ ॥४९॥
सुनि आज्ञा मन मुदित ह्वै,गुरु पद नायो माथ ॥
चले जनकपुर बन्धु दुहुँ,कौशिक मुनिकेसाथ५०॥
चले गाधिसुत मुदित मग,वर्णत बहु इतिहास ॥
रामलषण मुनिजन सकल, सुनि हिय होतहुलास५१
इहि बिधि आये बिपिन इक,लखीउपलमयवाम॥
पूछो भेद सु मुनिहिसे,चकित चित्त ह्वैराम ॥५२॥
विश्वामित्र प्रसन्न ह्वै, कही सुनौ रघुनाथ ॥
यह तिय पाहन जिमि भई,वर्णत हौं सब गाथ ॥ ५३ ॥
चौ०-गौतमऋषिसर्वज्ञसुजाना ❀ जिनकीकीरतिविदितजहाना ॥
है तिनही मुनिकी यह वामा ❀ अतिसुंदरी अहल्यानामा५४॥
या मिलि कियोअमरपतिपापा ❀ उपलभईनिज पतिके शापा ॥
ताको फल सुरेश भल पायो ❀ जो सहस्रभग नाम कहायो५५॥
एक समै सुरराज सिधाये ❀ गौतम भवन मुदितह्वै आये ॥
लखिमुनिनारिनिपटमनलोभे ❀ मनसिजविवशचित्तअतिछोभे ५६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तहँते गये विकल निज धामा ❀ सुरपति हिये वसी मुनि वामा॥
पुनि वासव दृढ़ युक्ति विचारी ❀ जाते मिलै अहल्यानारी॥५७॥
ऋषि आश्रम आये सुरराया ❀ अर्धरैनि कीनी यह माया॥
कछु उजासभो प्रात समाना ❀ बोलन लगेपक्षिगणनाना ५८॥
मंजन समय जानि मुनिराई ❀ गये वेगि तिय सदनविहाई॥
ताही दिन ऋतुते मुनि नारी ❀ भईपुनीतरीतयुतसारी॥५९॥
सून भवन जब सुरपति देखा ❀ तब आये करि गौतम भेषा॥
सोमुनि तिया इन्द्र पहिचानो ❀ पै चुपरहीमदन उमगानो६०॥
लखि बोली हँसिबचन सुहाये ❀ आजवेगि मंजन करि आये॥
सुनि मुनि कपट वेष सुरराई ❀ कहे बचन बहु प्रीतिबढाई६१॥
तब दोऊ अनंग उमगाई ❀ कियो विहार बेगि भय छाई॥
तहँते बहुरि रूप सोधारे ❀ सुरपति शंकितचलनविचारे ६२
तब तिय कही सुनिय सुरराई ❀ निज मम रक्षा करहु सदाई॥
जो मुनि भेद रंचहू पैहैं ❀ हम तुम दुहुँके प्राण नशैहैं६३॥
तब सुरेश बोले तिहि पाहीं ❀ रहौ निशंक शंक कछु नाहीं॥
यौं कहि इन्द्र तियहि उरलाई ❀ कढे वेगि गृहते सचुपाई॥६४॥
इत यह इन्द्र कियो छल भूरी ❀ उत ऋषिगयेजबहिं कछु दूही॥
तब नभ दिशि हेरे मुनि ज्ञानी ❀ हैबहुनिशा अबहिंयहजानी६५
ह्वै विस्मित धरि ध्यान मुनीशा ❀ देखो सो जु कियो सुरईशा॥
क्रुधित वेगि निज भवन सिधारे ❀ वासव कढतलखोवपुधारे ६६॥
तब मुनीश कटु वचन उचारी ❀ इन्द्रहि दई शाप अतिभारी॥
रे खल वृषण नष्ट होजाई ❀ भग सहस्रतो तनु प्रगटाई६७॥
तुरतहिं वृषण गिरे तब ताके ❀ सुरप विकलभोविवशविथाके॥
तत्क्षण भग सहस्र सब अंगा ❀ प्रगटे स्रावित रुधिरअभंगा६८
दुखित होय सुरपति गृहगयऊ ❀ गौतम तियहि शाप तब दयऊ॥
हो अधमा तुव उपल शरीरा ❀ बन बसि सहै पवन तपनीरा६९

दोहा-सुनत शाप तिय विकल ह्वै, गिरी चरण पै धाय॥
रोई दीन अधीन बहु, विनय करी सतभाय ७०॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब दयालु ह्वै मुनि कही, होय न मिथ्या शाप ॥
पुनि कछु दुख भोगे बिना, मिटै नहीं तुव पाप ॥७१॥
याते पाहन रूप ह्वै, बन कछु काल रहाय ॥
पुनि राघव पद परसते; होय शुद्ध हरषाय ॥७२॥
इत तिय मुनिवर शापते, भई सुपाहन रूप ॥
वृषणहीन तनु भगनते; उतै विकल सुरभूप ॥७३॥
लज्जा निवश न धामते, कबहूँ कढ़त सुरेश ॥
भग सहस्र तनुमें भये, लागत निपट भदेश ॥७४॥
वासव व्याकुल देखिके, सकल देव समुदाय ॥
करि विचार लै मेषके, दीने वृषण लगाय ॥७५॥
पुनि सब सुर गंधर्व मुनि, देवराज लैसाथ ॥
आये गौतम निकट बहु; विनय करी सुरनाथ॥७६॥
तब मुनि बोले इन्द्रसों, घोर पाप तुव आय ॥
या कारणते चिह्नतौ, रैहैं अंग सदाय ॥७७॥
पै सहस्रभगते सकल, दृग होवैं अभिराम ॥
रहैं एक भग अङ्गमें, तीन होय तुव नाम ॥ ७८ ॥
मेष वृषण इक दूसरो, हो सहस्र भग जान ॥
सहसनैन पुनि तीसरो, सुरपति नाम प्रमान ॥७९॥
वर प्रभाव भगदृगभये, सुरह्वै पूरण काम ॥
मुनिहिवंदि वासव सहि, सकल गये निज धाम ॥८०॥
सो सुरेश शुचिह्वै सुखी, अब यह पाहननारि॥
तुव पद रजके परशकी, रही आश उरधारि ॥ ८१ ॥
याते अब रघुवीर इहि, वेगि सुपद परशाय ॥
करौ अहल्या शुद्धतौ, पुनि पति सेवै जाय ॥ ८२ ॥
गुरु आज्ञा सुनि सकुचिकै, राम सकल गुणधाम ॥
निज पद परसायो तुरत, भई शुद्ध वर वाम ॥ ८३ ॥
मुनिगण जैजैकार किय, तिय हिय अति हरषानि ॥
करी अहल्या विनय बहु, दीन जोरि युगपानि॥ ८४॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अस्तुति करि शिरनाय उत, गई वाम पति धाम ॥
जनकनगर गमने इतै, मुनि सँग लछमरनाम ॥ ८५ ॥
सुरसरि आदिक बहु कथा, कही सुनी हरषाय ॥
मुनि दुहुँ नृपसुत जनकपुर, पहुँचे सुख सरसाय ॥ ८६ ॥
लखि सब भांति सुपास थल, शुचि रसाल आराम ॥
दुहूँ बंधु मुनि सहित मुनि, कियो तहां विश्राम ॥ ८७ ॥
इति श्री० रा०र० वि०वि० विश्वामित्र आगमनवर्णनो-
नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

दोहा—कौशिक आगम सुनि जनक, शतानन्दलै संग ॥
संयुत सकल समाज शुचि, आये भरे उमंग ॥ १ ॥
मुनिहिं यथेचित वंदि पुनि, सब तब कियो प्रणाम॥
कुशल प्रश्न करि परस्पर, बैठे निज निज ठाम॥ २ ॥
मुनिहिं प्रशंसि महीपमणि, पुनि निज विनय सुनाय॥
निरखि रामदिशि नेह युत, बूझौ हिय हुलसाय ॥ ३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सरस सलोने लोने रूप अनहोने दोउ मंजु मृग छोने रचे कोने जगजोंहैं ये । निरखि अनंगदंग होवैं यों सुढंगअंग आनन्द अभंगते उमंग संग सोहैंये ॥वरसे उमेह मेह नेहको अछेह देखि देह धर कोहै पै विदेहमनमोहैं ये ॥ रसिकविहारी सुखकारी धनु बानधारी चित्तचोरि युगल किशोर वर कोहैं ये ॥ ४ ॥

सो०—सुनि सनेह युत बैन, मंजुलमिथिला नाथके ॥
मुनि कौशिक मति ऐन, बोले हृदय हुलास भरि ॥५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

लोक अवतंसी दिव्य अंशी रघुवंशीवीर असुर विधंसी औ प्रशंसी प्रण वारेहैं॥सब गुण वारे प्रीति वारे नीति रीति वारे यज्ञरखवारे ये हमारे प्राणप्यारे हैं ॥ लाजके जहाज राज साजके समाज साज राजदोऊ कौशलाधिराजकेदुलारे हैं॥रसिकविहारी सुखकारी धनु धारी सदा सब दुखहारी प्रिय पाहुने तिहारेहैं ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–यौंकहि पुनि कौशिक सकल,कथा सहित विस्तार॥
बरणी जनक नरेशसों,प्रमुदित बारंबार ॥७ ॥

चौ०–सुनिमुनिवचन भूपहुलसाये ❀ उठि दुहुँ बंधु सुअंक लगाये
अवधनाथकी सब कुशलाई ❀ पूछी रामसु सकल सुनाई॥८॥
शतानंद सुनि मात उधारा ❀ पायो उर आनंद अपारा ॥
उमँगि हीय दुहुँ नृपसुत भेटे ❀ दुसह शोकसंभवदुख मेटे ॥९॥
पुनि मुनि मुनिहि प्रशंसनलागे ❀ सरस सनेह परस्पर पागे ॥
शतानंद अति हिय हुलसाई ❀ सबहिगाधिसुतकथा सुनाई १०
प्रथम रहे कौशिक वर भूपा ❀ शोभित राज समाज अनूपा॥
सबल सैन चतुरंग अपारा ❀ सकलसाजवरणैकोपारा ११ ॥
एक समय वर विपिन मँझारी ❀ करि अहेर अति भयेसुखारी॥
कछुक दूर चलिलखिशुचिठामा ❀ दल समेत कीनो विश्रामा १२
सो आश्रम वशिष्ठ ऋषि रहहीं ❀ जोविधिपुत्रविदितजगअहहीं ॥
सुनि महीप प्रमुदित तहँ जाई ❀ दरशलये सादरशिरनाई ॥१३॥
नृपहि यथोचित ऋषि सनमाने ❀ भूप बहोरि पाहुने जाने ॥
या हित वर विचार मुनि कीना ❀ राजहिसदल निमंत्रणदीना १४
मुनि आज्ञा शिर धरि नृपआये ❀ मनहीमन विस्मित सचुपाये ॥
इत वशिष्ठढिगऋधिसिधिधामा ❀ कामधेनुसबलाजिहिनामा १५
सो वशिष्ठकी आयसु पाई ❀ सौंज यथोचित बहु प्रगटाई ॥
असन वसन भूषण धन धामा ❀ दासीदासअमितअभिरामा १६
सुर दुर्लभते सकल पदारथ ❀ अगणित उचित अनूपयथारथ
इहिविधि सबला साज सजाई ❀ करीसदलकौशिकपहुनाई १७
नृत्य गान भोजन बहु भोगा ❀ सबनिशि पगे भूप सब लोगा॥
प्रातहोत सो कछु न दिखाना ❀ विश्वामित्र आचरजमाना १८॥
निरखी भूप अमित प्रभुताई ❀ मनहींमन विस्मय अधिकाई ॥
वेगि वशिष्ठ निकट तब जाई ❀ करिप्रणाम बैठेसचुपाई ॥१९ ॥
चपल चित्त चहुँ इतउत देखी ❀ संपति वस्तु न कछु कहुँपेखी॥
परन कुटी वल्कल इक गाई ❀ दंड कमंडलुयही लखाई २० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विश्वामित्र देखि दृढठानी ❀ है यह कामधेनु सुखदानी ॥
याहीके प्रभाव मुनिराई ❀ अनुपमकीनी ममपहुनाई २१॥
यह विचारि नृपअधिकलुभाने ❀ कहे बैन बहु स्वारथ साने ॥
दास जानि मुनि कृपा करीजे ❀ एक वस्तुमुहिमांगेदीजे॥२२ ॥
भूषन वसन धेनु धन धामा ❀ मणि मुक्ता गज वाजिसुग्रामा॥
जो भावै सो सब कछु लेहू ❀ मुनि यह कामधेनु मुहिंदेहू२३
सुनि वशिष्ठ बोले वर बैंना ❀ कछू वस्तु हम रंच चहैंना ॥
है सबला यह धेनु अनूपा ❀ सोनदेहिंगवनोगृहभूपा॥२४॥

दोहा-सुनि बहोरि बोलेनृपति, सकल राज्य मम लेहु ॥
पै मुनिवर करिके कृपा, यहसुरभी मुहिं देहु॥२५॥
तब पुनि कही वशिष्ठ हम,देहिं न सबला काहु ॥
तुम नृप उचित न याचिबो,यह विचारि घरजाहु ॥२६ ॥
सुनि कौशिक करि कोप तब,दीनीतुरत रजाय ॥
बरबस धेनु छुराय लै,चले हिये हरषाय ॥ २७ ॥

सोरठा-जब नृप सदल बलिष्ठ,कामधेनु बरबस लई ॥
व्याकुल भये वशिष्ठ,तब निज धर्म विचारिकै ॥२८॥
उत सबला अकुलाय, दृढ बंधन तिहि भँजिकै ॥
धाय परी मुनि पाय,बोली दीन विलाप करि २९ ॥
अनुचित कीनो काह, जाते त्यागी नाथ महि ॥
सुनि बोले मुनिनाह,लिये जात हठकै नृपति ॥ ३० ॥
कह्यो तबहिं वरगाय,जो प्रभु आज्ञा होय तौ ॥
अमित बीर प्रगटाय, कौशिक दल नाशी सबै॥ ३१ ॥
सुनि सबलाके बैन, प्रमुदित मुनि आज्ञा दई ॥
भयो धेनु चित चैन, प्रगटे बीर सुअंगते ॥ ३२ ॥
यवन अनेक प्रकार, पह्लवादि हुंकारते ॥
प्रगटे बीर अपार, विदित जक्त बर्बर सकल ॥ ३३ ॥
बहुरि शृंगते बीर, विविध किये उत्पन्न पुनि ॥
रोमकूपते भीर, कढी मलेच्छनकी आमित ॥ ३४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

योनि अंगते भूरि, यवन भये बलवान बहु ॥
रहे विविध भट पूरि, सबला तनु प्रगटायकै ॥ ३५ ॥
दोहा-पह्लव सक बर्बर यवन, अरु कंबोज अपार ॥
पुनि हारीत किरात ये, म्लेक्ष सकल निरधार ॥ ३६ ॥
चौ०-धेनु अंगते वीर अपारा ❀ प्रगटि सकल नृप दल संहारा॥
नीति जानि भूपतिहि बचायो ❀ सबला आय मुनिहि शिर नायो ३७
पुनि कौशिकके शत सुत धाये ❀ सबल शस्त्र गहि मुनि पहँ आये
निरखि वसिष्ठ कियो हुंकारा ❀ ते सब भये तुरत जरि छारा ३८
लगि कौशिक ह्वै अमित दुखारी ❀ गे हिमि निकट सुदुर्ग मँझारी॥
तहां भूप तप कीन अपारा ❀ भये प्रसन्न महेश उदारा॥ ३९॥
आय कौशिकहि अस्त्र सिखाये ❀ अमित उदंड प्रत्यक्ष दिखाये॥
लहि बहु अस्त्र भूप हरषाये ❀ सहित प्रहार निवारण पाये ४०
अग्नि अस्त्र १ ब्रह्मास्त्र २ प्रचंडा ❀ विष्णुचक्र ३ गन्धर्व ४ उदंडा॥
कालपाश ५ ऐ शक्ति ६-७ सुघोरा ❀ वज्र अस्त्र ८ कापाल ९ सजोरा ४१
वरुणअस्त्र १० असि ११ शूल १२ विलापन १३ प्रश्वापन १४ मादन १५ संतापन
गदा १७ शक्ति १८ असि १९ बाण २० वज्र २१ वरइनहि आदि बहु अस्त्र दिये हर
पाय अस्त्र बल बहु दल साजा ❀ आये पुनि वशिष्ठ ढिग राजा॥
त्रिकालज्ञ मुनिवर विज्ञानी ❀ दये अस्त्र शंकर यह जानी ४३॥
तब वशिष्ठ करि कोप प्रचंडा ❀ लैकर ब्रह्मदंड वरिबंडा ॥
वेद मात सुमिरन युत गाढे ❀ बाहर कुटीद्वार भे ठाढे॥ ४४॥
विश्वामित्र मंत्र बलभारी ❀ पुनि बहु संग अनीक जुझारी॥
आये मुनि सन्मुख अति क्रुद्धा ❀ कियो अपार अस्त्रमय युद्धा ४५
दोहा-जिते अस्त्र शिवदत्तते, सब घाले नृपचंड ॥
ब्रह्मदंडते मुनि सकल, बिन श्रम कीने खंड ॥ ४६ ॥
अग्नि अस्त्र ब्रह्मास्त्रजे, घाले नृपति कराल ॥
ब्रह्मदंडमें सब मिले, बढी अनल सम ज्वाल ॥ ४७ ॥
ताप भई तिहुँ लोंकमें, सुर मुनि सब अकुलाय ॥
मुनि सन्निध द्रुत आय बहु, विनय करी समुझाय ॥ ४८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब वशिष्ठ द्विज दंडको, तेज शांत सब कीन ॥
ब्रह्मदंड बल हेरिकै नृप मुख भयो मलीन ॥ ४९ ॥
चौ०-ब्रह्मदंडकर देखि प्रतापा ❀ भूपति कही सहित संतापा ॥
धिगधिगधिगक्षत्रिय बल तोही ❀ राजसाजधिगधिगधिगमोही५०
यौं गलानि उर आनि नृपाला ❀ गये बहुरि तपहेतु उताला ॥
तप बल हूजे ब्रह्म ऋषीशा ❀ यहदृढ प्रणकीनो अवनीशा५१
यौं विचारि बहु काल न रेशा ❀ तप कीनो सहि अमित कलेशा
तब विरंचि नृप संनिध आई ❀ भये राजऋषि कही बुझाई५२
भूपति मन अभिलाष न पूरी ❀ बहुरि करन लागे तप भूरी ॥
होउँ ब्रह्मऋषि मन हठ एही ❀ सहैं अपार कष्ट निज देही५३॥
तब यह भयो विघ्न इक भारी ❀ जाते निफल गई तप सारी ॥
रविकुल नृपति नाम पृथिपाला ❀ तिनके सुत त्रिशंकु भूपाला५४
सो त्रिशंकु नरपति मतिमाना ❀ भावीवश विचार यह ठाना ॥
काहू विधि इमि बात बनाई ❀ बसौं सदेह देवपुर जाई॥५५॥
तब वसिष्ठ ढिग भूपति जाई ❀ करि विनती अभिलाष सुनाई
सुनि मुनि कही सुनी दृढ राजा ❀ हम न करैं यह अनुचित काजा
दोहा-तहँते भूपति वेगि उठि, करि क्रोधित दृगलाल ॥
जहँ वसिष्ठ शत सुत करत, तप तहँ आये हाल ॥ ५७॥
तिन प्रति निज इच्छा कही, अरु वसिष्ठ संवाद ॥
कहि बोले नृप करहुसो, हो जिहि हिय अहलाद५८॥
सुनि वसिष्ठ शत सुत कही, पितु न कियो जो काम॥
सो अनुचित हम क्यों करैं, जाहु भूप निजधाम॥५९॥
सुनि त्रिशंकु बोले रहौ, पिता पुत्र निज ठौर ॥
तव करनी जानी अबै, हम करिहैं गुरु और ॥ ६० ॥
अनुचित इच्छा भूपकी, पुनि कृत पितु अपमान ॥
सुनि मुनि सुत नृपको दई, शाप क्रोध उर आन॥६१॥
शापित ह्वै चंडाल भो, नृप तब कियो विचार ॥
कौशिक ढिग जो जाउँ तौ, यह दुख मिटै अपार॥६२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-कारित्रिशंकुइहिभांतिविचारा ❀ विश्वामित्रनिकटपगधारा॥
आतुर जाय गेह ऋषि चरना ❀ कहि प्रभु पाहिदीन दुखहरना६३
नृपहि सकल बूझी ऋषिराई ❀ सो निजगति वरणी अकुलाई ॥
भूप बैन सुनि कौशिक बोले ❀ वृथा चहूँ इत उत बहु डोले॥६४॥
अब उर धीर धरौ भूपाला ❀ जैहौ स्वर्ग सदेह उताला ॥
यौं कहि यज्ञ साज सजवाये ❀ चहुँदिशिते मुनिसकलबुलाये६५
ऋषि रजाय सुनि सब मुनि धाये ❀ शत सुतयुतवसिष्ठ नहिंआये ॥
सोलखिक्रोधकौशिकहिछावा ❀ जानत हिये मुनीश प्रभावा६६॥
याते नहिं वसिष्ठ हित भाषे ❀ दीनी सुतन शाप मन भाषे ॥
शत सुत मुनिकेअबहिं नशावैं ❀ सप्तजन्म लघुयोनि सुपावैं॥६७॥
कौशिक शाप देत ततकाला ❀ जरे वसिष्ठ पुत्र शत ज्वाला ॥
सोई सब निषाद कुल जाई ❀ जनमें नीच कर्म नित पाई ॥६८ ॥
तिन महँ ज्येष्ठपुत्र अभिरामा ❀ रहो अनूप महोदयनामा ॥
सोई राम सखा गुह भयऊ ❀ जन्मनिषादभवन जबलयऊ ६९
पुनि कौशिक इत यज्ञ सुठाना ❀ कीने सकल प्रमान विधाना ॥
पै कोऊ सुर तहां न आये ❀ तब कौशिकबहु क्रोध समाये७०
लैजल दर्भ संकलप कीना ❀ निज तप फलबहु भूपहि दीना॥
सो प्रभावते नृपति सदेहा ❀ चले अमित प्रमुदित सुरगेहा ७१
देवन लखो मनुज तनुधारी ❀ नरपति आवत स्वर्ग मँझारी ॥
तब सुरगण बोले अकुलाई ❀ भूमि पतन होवेगिपराई७२

दोहा--द्रुत सुर बचन प्रभावते, पद ऊरध अधशीश ॥
स्वर्ग पंथते पलटिकै, गिरन चहो अवनीश ॥७३॥
तब त्रिशंकु अति दीनह्वै, ऋषिहि कही कर शोर ॥
त्राहि त्राहि कौशिक जबहि, सुन्यो महा रवघोर७४॥
निरखि नृपहि आवत अवनि, बोले ऋषी बलिष्ठ ॥
गच्छ गच्छ भो भूपवर, तिष्ठ तिष्ठ नभतिष्ठ ॥७५॥

चौ०--यौंकहि मुनि अमर्षकरिभारी ❀ रचना करीअनूपमन्यारी॥
भूपहेतु नवरीति चलाई ❀ निज प्रभाव दीनो दरशाई ॥७६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अमित अन्न कौशिकप्रगटाये ❀ नवल लोक नवधाम बसाये ॥
दूजोस्वर्गविरचिनृपकाजा ❀ राखो तहँ त्रिशंकु ऋषि राजा ७७

दोहा--एकबार कौशिक सु यह, महा आचरज कीन ॥
जाते गाधिकुमार को, भोसब तप बल छीन ॥ ७८ ॥

चौ०-- पुनि ऋषि पुष्कर तीरथजाई ❀ महा घोरतपप्रबल दिढाई॥
तब हूँ एक विघ्न यह आयो ❀ अंबरीष नृप अवध सुहायो७९ ॥
करनलगे वर यज्ञ सुदेशा ❀ तिनको मख पशु हरो सुरेशा ॥
सो नृप पशु हेरत चहुँ घाई ❀ भृगु आश्रम पहुँचे अकुलाई ८०
तहँ ऋचीक मुनियुत सुत दारा ❀ करत रहे तप प्रबल उदारा ॥
तिनके तीन पुत्र लखि राजा ❀ माँगोएक यज्ञबलि काजा८१॥
लघु पुत्रहि माता नहिं दीनो ❀ जेठहिनिज ऋचीक करिलीनो॥
रहो मध्य शुनशेफ जु नामा ❀ सो जानौं हौं एक निकामा८२॥
तब शुनशेफ दीन ह्वै भाषो ❀ मोहिं लेहु नृप कोउ न राषो ॥
सुनि महीप गोलक्ष सुदीनी ❀ गहि शुनशेफहिम ारग लीनी ८३
भूपति पुष्कर किय विश्रामा ❀ सुनिऋचीकसुतकौशिकनामा॥
ऋषि ढिग जायकहो सबहाला ❀ गाधिसुवनह्वैअतिहिदयाला८४॥
तप बलदै द्वै मंत्र सिखाये ❀ कियो अभै शिर कर परशाये ॥
सो शुनशेफ हीय हुलसायो ❀ अंबरीषसँगअवध सिधायो॥८५

दोहा—लै शुनशेफहि सविधि जब, बाँधो जूपहि आन ॥
तब मुनि सुत सो मंत्र दुहुँ, पढे समय अनुमान ॥ ८६॥
मंत्र पढत सब देवगण, तुष्ट भये सुख पाय ॥
यज्ञ समापत मुनि तनय, बचो सदेह सुहाय ॥ ८७ ॥
दूजो विघ्न जु कौशिकहि, भयो तबै ऋषिराज ॥
पुनि तप ठान्यो प्रबल अति, त्यागि सकल जगकाज८८
एक समै वर अप्सरा, लखि लोभे ऋषिनाथ ॥
बहुत वर्ष तप त्यागिके, रमन कियो तिहि साथ ॥ ८९ ॥
एही विधि बहु वार ऋषि, कियो अमित तप जाय ॥
चहूँ ओर सहि दुसहदुख, भये विघ्न बहु आय ॥ ९० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०–तप महँ भये विघ्न बहु बारा ❀ जाते रहो निफल श्रमसारा
तऊ न कौशिक तपहि विहाई ❀ करीअमितविधि चहुँ दिशिजाई
पुनि बहुतप कीना ऋषिकानन ❀ तब अतिमुदित भये चतुरानन॥
आय दियो जिय रुचि वरदाना ❀ कहे ब्रह्म ऋषि युत सनमाना९२
तब कौशिक बोले करजोरी ❀ जक्तपिता इक विनती मोरी॥
आय वशिष्ठ ब्रह्म ऋषि भाषैं ❀ सो कीजे हम यह अभिलाषैं९३
ह्वै दयालु विधि वेगहि जाई ❀ कही वशिष्ठहि बहु समुझाई॥
पितु आज्ञावश मुनि तहँ आये ❀ बोलिब्रह्मऋषिभवनसिधाये९४

दोहा–जबकौशिकहि वशिष्ठ मुनि, कहे ब्रह्मऋषि आय॥
तबते गाधिकुमार द्विज, भये सु तपबल पाय॥ ९५॥
यदपि ब्रह्मऋषि ह्वै गयो, तपबलते महिपाल॥
तदपि सुमिरि पूरबदशा, होय कबौं उरशाल॥ ९६॥
पुनि वसिष्ठ तप तेज लखि, कौशिक कीन विचार॥
जौ लग रहैं वशिष्ठ जग, तौ लग मोर नसार॥ ९७॥
यौं दृढ ठानि विचार हिय, महि बिचरत इक बार॥
मुनि वशिष्ठ आश्रम गये, आधीरैनि मँझारि॥ ९८॥
कुटी निकट तरु ओट गहि, ठाढे करत विचार॥
जो वशिष्ठ बाहर कढ़ैं, तो अब डारौं मार॥ ९९॥
सो निशि पूरण शरद शशि, छायो विशद प्रकाश॥
लखि वशिष्ठ सो शिष्य प्रति, बोले सहित हुलास॥ १००॥
आज शरद शशि चंद्रिका, यों अनूप दरशाय॥
ज्यों कौशिक तप तेज जग, रहो विमल यश छाय॥ १०१॥

चौ०–मुनिवशिष्टकेबचनसुहाये ❀ कौशिकमुनिअतिहियपछिताये
विधिसुतकी विलोकि सरलाई ❀ गहे धाय पद पंकज जाई १०२
लखिकौशिक वसिष्ठ हियलाये ❀ मिले परस्पर दुहुँ हुलसाये॥
मुनि मुनि कियो परम दृढ प्रेमा ❀ हृदय शुद्ध दोऊ युत क्षेमा १०३
तबते दुहूँ मुनीशनमाहीं ❀ काहूविधि कछु अंतरनाहीं॥
इहिविधि गाधिपुत्र अवनीशा ❀ तप बलभयेसुब्रह्मऋषीशा १०४

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्रिकालज्ञ ज्ञानी गुणमाना ❀ इन सम कोउ नहीं जग आना॥
परम समर्थ मुनीश उदारा ❀ इनै न कछु दुर्घट संसारा १०५
यों कहि शतानंद विज्ञानी ❀ पुनिमुनिकीरति अमित बखानी
सुनिनिजगुरुकी विपुल बडाई ❀ रामलषणहियअतिहुलसाई १०६

दोहा—सतानंद मुखते कथित,कौशिक कथा अपार ॥
धन्यवाद दीनो अमित,सुनि समस्त दरबार ॥ १०७॥
पुनि मिथिलाधिप विनय युत, ऋषिहि समाज स मेत
सब सुपासकरि वासवर,दीनों नगर निकेत ॥ १० ८

चौ०—मुनिहि वंदि नृप भवन पधारे ❀ वर्णतकौशिक गुणगणसारे
इत ऋषि वृंद सहितऋषिनाथा ❀ कहतअमितभूपतियशगाथा १०९

इतिश्रीरामरसायन वि० वि० विश्वामित्र चरित्र वर्णनो
नाम तृतीयोविभागः ॥ ३ ॥

दोहा—राम लषण मुनि सहि मुनि,कियो सुभोजन पान ॥
तीन याम दिन बीतिगो,नृप यश करत बखान ॥ १ ॥

चौ०—शेष दिवस इक याम निहारी ❀ दुहूँ बंधु जन आनँदकारी
गुरु आयसुलै हिय हुलसाये ❀ वेगि जनकपुर लषण सिधाये२
चहुँदिशि जाय लखी पुरशोभा ❀ राम लषण चकृत चितलोभा॥
जनकनगरछबि वरणि न जाई ❀ कहत शेष शारद सकुचाई॥३॥

त्रिभंगी छंद ।

मंगलमय अवनी अद्भुत रवनी हिय सुख दवनी सुखधामा ॥
नव सदन सुहाये सुर मन भाये स्वकर बनाये जनुकामा ॥
जहँ ऋधिसिधि डोलैं कोउ न बोलैं करत कलोलैं पुरवासी॥
अमरावति निंदैं सब जन वंदैं जनक नरिंदैं सुखरासी ॥ ४ ॥
सब धनिक सुजाना धनद समाना परमप्रधाना गुण माना॥
निज सुकृत विशेषैं सिय मुख देखैं धन्य सुलेखैं अभिमाना॥
अतिरूप उज्यारी सुंदर नारी सक शृंगारी अभिरामा ॥
पतिधर्म सयानी बहु गुणखानी नवरस ज्ञानी सुखधामा॥५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहु छैल छबीले गुणगरवीले रंग रँगीले कुक्करोटा ॥
सब सुखमासागर अति नयनागर शुभमति आगर पुर ढोटा॥
दशहूँ दिशि दरशैं आनँद वरसैं मंगल सरसैं जनकनगर ॥
मनमोद न मावैं अतिसुखपावैं सिय गुण गावैं डगरबगर॥६॥
तहँ राजमहलकीअतिछबिछलकीलखिमतिललकीरतिपतिकी
शारद बुधि हरनी अद्भुतकरनी कछू न करनीविधिगतिकी॥
बहु उपवन बागा सरस तड़ागा हिय अनुरागा इमि शोभा ॥
सुंदर अमराई नव फुलवाई निरखि सुहाई मनलोभा ॥ ७ ॥
इक बाग सुहावन लखि मनभावन सुंदर पावन सुखकारी ॥
तहँ अगणित भांती द्रुम बहुजाती कहि न सिरातीछबिभारी
फल फूल अनेका सहित विवेकारक्ष कटेका अति शोभा ॥
अमरावति कोहै इहि विधि सोहैसुरनरमोहैमन लोभा ॥८ ॥
चहुँ ओर दिवालैं लसति विशालैं बहुमणिजालैंललितखची॥
मुक्ता मणि जट्टी महिगत पट्टी सरल उलट्टी सुगम रची ॥
निर्मल जल नहरैं राजति गहरैं लेती लहरैं सुठि सोहैं ॥
सर सुभग सुहावन तपनि सिरावनलखिमनभावनअस कोहैं९
हाटकमय साजे घाटविराजे बहु छबि छाजे क्यों कहिए ॥
तिहि तीर अगारा लघु विस्तारा वरणि न पारा सो लहिए ॥
सोपान सुहाए विशद बनाये मणिन जडाये छबि सरसै ॥
अतिनिर्मल नीरा अधिकगँभीरा त्रिविध समीरातनपरसे १०
पंकज बहुरंगा लसंत अभंगा गुञ्जत भृंगा मदमाते ॥
सारस चक हंसा सर अवतंसा करत प्रशंसा रँगराते ॥
अगणित लघुमीना अरु पाठीना रंग रँगीना प्रेमभरी ॥
डोलैं मन हरषी रंच न करषी प्रीति न परषी जातषरी ॥११॥
मानस मति थाकी लैसर झाकी यह समताकी छटाकहां ॥
लखि लजत पुरंदर पावन सुंदर गिरिजा मंदिर लसैतहां ॥
शिव प्राणपियारी रूप उज्यारी सब सुखकारी राजिरही ॥
इच्छित फल दानी शुभगुणखानीमातभवानीप्रगटसही॥१२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो वरणै शोभा अस कवि को भा लघुमति शोभारहतथकी॥
सर सरस विभागा अनुपम बागा अगम सुलागाबुद्धिजकी॥
द्रुम वेलि अतूला नव फल फूला सब सुख मूला छबिछाजैं॥
बहु वरण विहंगाअगणितरंगानिजनिजसंगामिलिराजैं॥ १३॥

भुजंगप्रयातछंद ।

कहूँहैं कदंबा कहूँहैंरसाला॥कहूँ दाडिमो शिंशुपा औ तमाला॥
कहूँ पीपरोपाकरीहैंअशोका॥लवंगी लतासोकहूँलेति झोका॥ १४॥
कहूँ चिंचिनी श्रीफलौ हैंबदामा॥कहूँ नागवल्ली सुएला ललामा॥
कहूँ वृक्ष फूले कहूँसो फरेहैं॥ कहूँपत्र पीरे झरे औ हरेहैं॥ १५॥
कहूँ तौ गुलाबौ चमेली जुसोहै॥निवारी जुही सेवती चित्त मोहै॥
कहूँ मालती औरबेलाविराजै॥कहूँकेवरोकेतकीगंधछाजै॥ १६॥
कहूँ कुंद केसर्सुगन्धैं झकोरैं॥ कहूँ सांवनी और गेंदा हिलोरैं॥
सुवृन्दारका वृन्द सोहैं अनूपा । जुदौना कहूँ पानडीहैसुरूपा १७
कहूँ भूमि चंपा जु गुल्चांदनी हैं।कहूँ इश्कपेचा कि बेलैं घनी हैं॥
कहूँ विष्णुक्रांती छटा दै रहीहै।सुचंपा सुगंधै कहूँ छै रहीहैं॥ १८॥
गुलब्बास गुल्दाउदीहै जुखासी । कहूँ रोसपै राजहीनातरासी॥
कहूँ फूल फूले कहूँ तौ कलीहैं॥छहूँ वृक्ष बेली दुबीचे गलीहैं १९॥
कहूँ तौ भली भांति छूटैं फुहारे॥भरे नीर राजैं कहूँ हौज भारे॥
कहूँ दूबसेहैहरीभूमि नीकी॥छटा बागकी मोहिनीहै सुजीकी२०॥
कहूँ कोकिला कूकदैकै पुकारैं । पपीहा कहूँ शब्दऊँचे उचारैं॥
कहूँ शारिकाबैन मीठेसुनावैं।कहूँकीरनीकीगिरा चित्त भावैं२१॥
कहूँ मोर नाचै महामोद मानैं । कहूँ भौंर गुंजैं घने प्रीति सानैं॥
कहूँ तीतरो लाल सोहैं कपोती।कहूँ बुल्बुलोंकीघनीजुट्ट होती२२॥
कहूँ नीलकण्ठा सुश्यामा सुहावैं॥कहूँ तौ हरे वालवा चित्त भावैं॥
कहूँ हंसराजौ बटेरैं घनेरी।कहूँ बाज जुर्रा कुही देत फेरी॥२३॥
कहूँ तौ परेवा सु चंडूल सोहैं। कहूँ तौ चकोरी कहूँ खञ्जनो हैं॥
भरे मोद पक्षी सबै मत्त डोलैं।कलोलैं करैं भावते बैन बोलैं॥२४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-इमि शोभा लखि बागकी,मुदित भये दुहुँ भाय ॥
लखत फिरत चहुँ ओर पुर, सानंद इत उत जाय२५॥
निरखत निरखत नगर बिच; आये राजकुमार ॥
धाये पुर नर नारि बहु, शोभा लखत अपार ॥२६॥
जबते लखि आये नृपति, तब ही ते बहु शोर ॥
रूप तेज बल गुण सुयश, फैलि रहो चहुँ ओर ॥२७॥
बाल युवा अरु वृद्ध सब, पुरवासी नर नारि ॥
राम लषणके लखनकी, रहे आश उर धारि ॥२८॥
आये पुर अवलोकिबे, सुनि सबही हुलसाय ॥
धाम पंथ इत उत चहूँ,चितवत हैं चित लाय ॥२९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कोऊ धायहेरैं कोऊ काहूकहँ टेरैं कोऊ जाय लखैं नेरैं कोऊदूरिते सिधारैं हैं। कोऊ काहु बूझैं कोऊ काहुतेअरुझैंकोऊकाहूहठि झूझैं कोऊ काहूको निवारैंहैं॥कोऊद्वारकोऊहैंदिवारकोऊछज्जनपै कोऊ तौ अटारी नरनारीयोंनिहारैं हैं॥रसिकविहारी सुखकारीधनुधारी दोउ पुर अवलोकैं मन्द मन्दही पधारैंहैं ॥३०॥नृपतिकिशोर श्याम गौर द्वै अनूपरूप पुर अविलोकिवेको आये हैंबजारमें ॥छायोशोर भारी चहुँ ओर नर नारी भीर सुरति नकाहू देह गेहकीसम्हारमें॥ रसिकविहारी वरवामजे सुधाम सबैं आई धाय आंगन अटारी कोऊद्वारमें॥फिरैं फिरैकीसी भौंनथिरकी रहैंनानेककोऊखिरकीमें कोउ हिरकी किवांरमें ॥३१॥ कोऊ मिलकी सोंकछूभाषैदिलकी न नेक हिलकी जुलैलै हिय राखैं हियकी हिलोर॥कोऊससकैहैं लै उसांस मसकै हैं उर रसकैं करेजे कसकैं हैं मनकी मरोर॥ कोऊ मुख अञ्चल छिपायकै दुराय दीठ करि करि हाय रहि जायँ नेहकी झकोर ॥ रसिकविहारी लखि रसिकविहारी रूप सारी हैं दुखारी भारी विरह व्यथाके जोर॥ ३२॥झूमि झूमि हूमें कोऊ हूमि हूमि द्मैं कोऊ दूमि दूमि घूमैं कोऊ घूमि गिरैं भू मैंहैं फेरि फेरि हेरैं कोऊ हेरि हेरि टेरि टेरि घेरैं कोऊ घेरि गहि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लूमैं हैं ॥ रसिकविहारीमिथिलाकी नौल नारीसारीरूपमदछाकी मतवारी करैं धूमैं हैं ॥धाय धाय आवैं आय आय रहिजावैंयाय जाय गुण गावैं गाय गाय झुकि झुमैं हैं॥ ३३ ॥ कोऊ कहैं कारो मणिवारो है बिसारो भारो कोऊ कहैं फंदी फन्दवारो वटपारोरी॥ कोऊकहैंनिपटधुतारोठगहारोमहारो महा कोऊकहैंसूधोहै विचारो संगवारोरी ॥ को कहैं गोरोहै न भोरो बिसबोरो सोउ जानौ जनि थोरो ताहि नीकेहीं निहारोरी ॥ रसिकविहारी कहैं कोऊ नौल नारी आली कैसहु तुमैं है पै हमैंहै प्राणप्यारोरी ॥३४॥ कोई कहैं दोई ननदोई तुव आली देखे कोई कहैं दोई बहनोई तो सिधारे हैं॥ कोई कहैं दोई जेठ तेरे तन हेरेभट्टकोई कहैं गोरे तोरे देवर निहारे हैं ॥ रसिकविहारी परनारी संगवारी सबै मोदते विनोद बैनविविध उचारे हैं ॥ तौलौं एक बोली कन्त सांवरे हमारे सब बोली यों हमारे हैं हमारें हैं हमारेहै॥३५॥कोऊ दूरहीतेदृगजोरती निहोरती है कोऊ चित्त चोरतीं बहोरि मुखमोरतीं ॥ कोऊ मुसक्यावतीं सुनावती है व्यंग कोऊ सैनन बुलावती हैं नैनन मरोरतीं॥कोऊ नीरवारतीं उतारतीं हैं आरती लै आनन निहारती हैं कोऊ तृण तोरतीं ॥ रसिकविहारी गुण वारी रूपवारी नारी अवधविहारीको सनेह सिंधु बोरतीं ॥३६॥ कुन्तल कृपाणनते काटत करेजोआन भ्रुकुटी कमान तान तालकै चढ़ाये है॥तापै नैनबाणको सँधान हठिलेवैं प्राण जनकपुरी में घमसानयों मचाये हैं ॥ रसिकाविहारी एक नारी धाय बावरी सी घावरी है द्वार द्वार बचनसुनायेहैं ॥ कोऊ मृगनैनी वाम धामतेजुकाहूं काम कितहूँनजैयोदो शिकारी आज आये हैं ॥ ३७ ॥ धाये पुर बालक विलोकि जुरि वृंद आये ढिम सकल विनोद मोद भीने हैं ॥ जानै नहिं सब रंक निपट निशं बंक चञ्चल उतंक चपलाई चित्त दीने हैं॥कोऊ पदपानिपट पीत धनु बाण कोऊ कोऊ कोऊ लंक जंघ जानु गहि लीने हैं॥ रसिक विहारी ह्वै अनन्द रघुनन्द तिनै कहि मृदुबैन मन माये तोष कीनेहैं॥३८अंगअंग परशैं सुढंगरंगरंगगरचैंसहित उमंग संग संग

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चहुँ डोलैं हैं ॥ कोऊ इतरायँ अनखायँ औ रिसायँ कोऊ कोऊ बतरायँ कोऊ करत कलोलैं हैं ॥ रसिकविहारी नेहवश रघुलाल तिनैं करत निहाल प्रीति रीति अनमोलैं हैं ॥ कोऊ देत गारी कोऊ देतकरतारी कोऊ करैं मनुहारी कोऊ बालहँसि बोलैं हैं ॥३९॥कोऊ कोहैं श्याम तुव ग्राम है कहां सो कहो कोहै पितु पात औ बतावो कित धामहै ॥ कोऊ कहैं लाल किहि देशते पधारे फेरि जैहौ किहि देश इस आये कौन कामहै॥कोऊ कहैं मीत हम आज यों सुनीहै मुनि दोय बाल लाये एक गौरएक श्यामहै॥रसिकविहारी पुर बालक अनंद छके बार बार बूझैं रावरोई नामरामहै ॥४०॥कोऊ बालबालसों कहैं हैं हम ऐसी सुनी बीरता बढाय चाप तोरिबे सिधाये हैं ॥ कोऊ कहैं कौतुक विलोकिवे पधारे दोउ कोऊ कहैं कौशिक भुराय इन लाये हैं ॥ कोऊ कहैं हेरत बटोही पुर कोऊ कहैं रसिकविहारी आज भूपति बुलाये हैं ॥ कोऊ कहैं जानैं हम सत्य सो बखानै सुनौ जनकललीके व्याहिबेको इत आये हैं ॥ ४१ ॥ कोऊ बाल बोले लाल अब ना तजैंगे तुम्हैं कोऊ कहैं यार संग तेतौनाहिंटारौगे ॥ कोऊ कहैं मीत प्रीन करि मिलि रैहैं सदा कोऊ कहैं श्याम कबौ रोष तो न धारौगे ॥ रसिकविहारी कहैं कोऊ तौ बनैगी बात जो पै कहूँ काहूँ कुछ दोष ना निहारौगे॥कोऊ कहैं प्यारे हम सकल सुखारे संग चलिहैं तिहारे जब सदन सिधारौगे ॥ ४२ ॥ कोऊ बाल बोले धनुशालको उताल चलौ ह्वै है अतिकाल तौ नृपाल बहु माखैंगे कोऊ कहैं श्याम इत आवहु हमारे धाम देहै मातु मेवा औ मिठाई मिलि चाखैंगे ॥ कोऊ कहैं रसिकविहारी हितकारी बात सुनहु हमारी तौ तिहारे कान भाषैंगे ॥ कोऊ कहैं कितहूँ न जाहु अब ह्याई रहौ जनकदुलारीकी सवारी संग राखैंगे ॥ ४३ ॥ कोऊ जे प्रवीण प्रौढ सर ससनेही शुद्ध ते लखि अनूपरूप अधिक लुभाने हैं ॥ तिनकी सुप्रीति श्याम सुंदर विलोकि साँची रसिकविहारी अतिहीय हुलसाने हैं ॥ कहिरस वैन चैन दीनोहै कमलनयन लाय निज ऐनते अपार सनमाने हैं॥सुख सरसाने मनमाने पहिचाने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाने सत्य प्रण ठाने नेहजाल उरझानेहैं ॥ ४४ ॥ लूटीहै लुनाई लोनी मिथिला निवासिनने रसिकविहारी दुहूँ भाई प्रीति जूटीहै जूटी चहूँघाई छाई नेहकी सचाई तब छैल रघुराई निठुराई सब छूटी है ॥छूटी धीरताई बीरताई औ गंभीरताई अंग अतुराई चतुराई चित्तखूटी है खूटी नूर भूरके गरूर की गरूरताई नेहमें निकाई प्रभुता गई लूटीहै ॥ ४५ ॥ सुंदर अनूप रूप साँवरो किशोर लोनो देखि देखि मिथिलानिवासी हुलसा वहीं ॥ सब नर नारी एक एकते कहैं हैं रुचि तोरे धनु येही तौ अपार सुख छावहीं ॥ जनककिशोरी मिलि जोरी श्याम गोरी भली विधिहि निहोरी करजोरी यौं मनावहीं ॥ रसिकविहारी हित-कारी बात होवै वेगि सकल विचारी सत्य येही यश पावही४६

चौ०इहिविधिजनक नगरनर नारी ❀ राम लषण लखि भयेसुखारी
प्रमुदित पुर विलोकि दुहुँ भाई ❀ गुरुढिग चले हीय हुलसाई४७॥
संध्या समय आय दुहुँ भ्राता ❀ गहे मुदित मुनि पद जलजाता॥
करि संध्यावंदन शुचि रीती ❀ अमितसराहत पुरजन प्रीती ४८
पुनिमुनिमुनिलछमनअरुरामा ❀ करि भोजन रजनीइकयामा॥
कहत सुनत पुरछबि अभिरामा ❀ अर्ध रैनि कीनो विश्रामा४९॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० पुर दर्शन वर्णनो
नाम चतुर्थोंविभागः ॥ ४ ॥

चौ०-प्रात समै दुहुँ राजकुमारा ❀ नित्यकृत्यकीनोशुचिसारा॥
वेगि आय गुरुपद शिरनाई ❀ मुदितभयेशुभआशिषपाई १॥
गुरु पूजनको समय निहारी ❀ चले प्रसून लेन फुलवारी ॥
दुहूँ बंधु नख शिख वर अंगा ❀ कर धनु शरकटिकसेनिखंगा२
करि प्रणाम गुरु आयसु पाई ❀ गयेदुहूँ नृप सुत हरषाई ॥
गिरिजा बाग विचित्र अनूपा ❀ रहतजहाँषटऋतु धरिरूपा३॥
जाय दुहूँ नृपसुत तिहिद्वारे ❀ द्वारपाल रुचि लखि पग धारे
लेत प्रसून फिरत चहुँ ओरा ❀ प्रमुदित हेरत राज किशोरा४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–ताही औसर जनकजा; जननी आयसु पाय ॥
आई गिरिजा दरशहित, संग सखी समुदाय ॥ ५ ॥
करि मज्जन शृंगार सजि,सकल अलीन समेत ॥
पूजन सौंज अपार युत,गवनी गौरि गिकेत ॥ ६ ॥
राजसुता अरु सखिनकी,शोभा अमितअनूप ॥
ध्यान किये सुख होय हिय,किमि वरणौं वह रूप ॥ ७ ॥

तोमरछंद।

पदकंज अधिक ललाम। सुखसीम वर छबिधाम॥
जिनकी परत महि ज्योति। सो लाल मणिमय होति८॥
पुनि चरण अंगुलि मंज। मानहु मृदुल दल कंज ॥
उपमा सु और लखाय। जनु चंप कलिक सुहाय॥ ९ ॥
नख गणनकी नव क्रांति।लखि कोटि शशि द्युति भ्रांति॥
जनु रसिक जन सुख हेत।चिंता सुमणि छबिदेत॥ १०॥
बिछिया ललित सुखधाम। नूपुर अधिक अभिराम ॥
रव मधुर सरस सुहात। सुनि राजहंस लजात ॥ ११ ॥
युग जानु सुंदर गोल। लखि मन विकत बिनमोल ॥
जनु उभय कंचन खम्भ।मिटिजात मनसिज दंभ ॥१२॥
जंघा युगल अभिराम । जनु कदलि खंभ ललाम ॥
अतिसुभग उभय नितंब। मति कहत गहत विलंब ॥१३॥
कटि अधिक सूक्षम जान। उपमा न जगमहँ आन ॥
देखी न सुनियत लंक। ज्यों ब्रह्म निर्गुण शंक ॥ १४ ॥
लहँगा ललित लहरात । बहुघेर छबि छहरात ॥
जरतार जटित जराय। निज कर मनोज बनाय ॥ १५ ॥
जगमगत मणि गणजोत। द्युतिमन्द रवि शशि होत ॥
सोहत अनूपम कोर। जनु दामिनी चहुँ ओर ॥ १६ ॥
वूटे सुललित ललाम । फैली प्रभा अभिराम ॥
सुन्दर सरस सुखधाम । लखि लजत शत रतिकाम १७॥
मृदु उदर अधिक सुहात। जनु लसै सुरतरुपात ॥
ज्यों सिंधु सब गुणकेर। है कृपासदन निवेर ॥ १८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाभी सुलखित गँभीर । जनुसिंधु भँवर सुधीर ॥
है सुभगता कर खानि । उपमा जु यह पुनि जानि ॥१९॥
मणि जटित पदिक सुहाय । नवग्रह रहे जनु आय ॥
कंठी सुकण्ठ विराज । भूषण अधिक छबिछाज ॥२० ॥
भुज मूल बाहु विशाल । मनु मृदुल पंकजनाल ॥
युग सुभग वर भुजबन्द । मणि जटित क्रांति अमंद२१॥
कर युगल कोमल मंजु । मानौ मृदुल दलकंज ॥
कंकन सुदेश अनूप । मिलि अँग एकहि रूप ॥ २२ ॥
नव वलय की झनकार । मृदुमन्द अति सुखसार ॥
मुँदरी हरित नग क्रांति । मृग साव कहि कर भ्रांति २३॥
पुनि कलित कण्ठ सहाय । जहँ पान पीक लखाय ॥
लखि लजत कंबु कपोत । भूषण सरस छविहोत ॥ २४ ॥
सोहै चिबुक छबिधाम । तिहि मध्य तिल अभिराम ॥
जनु हेम संपुट माहि । मणि नील जटितत सुहाहि॥२५॥
युग अधर सुन्दर लाल । जनु लसत बिंब प्रवाल ॥
दंतावली छबिधाम ॥ जनु कुंदकली ललाम ॥ २६ ॥
नासा अनूप सुढार । शुक तुंड सम सुखसार ॥
नथझूमका लहरात । मुक्ता बुलाक सुहात ॥ २७ ॥
हैं सुभग युगल कपोल । आदर्श मनहुँ अमोल ॥
आसन किधौं अभिराम । रसराजकी सुखधाम ॥ २८ ॥
युग श्रवण हैं अभिराम । अति मृदुल अमल ललाम ॥
कुंडक सुझूमक झूल । भूपषण विराज अतूल ॥ २९॥
लोचन युगल अभिराम । जनु कंज मीन ललाम ॥
खञ्जन मृगी सम जान । शरमैनके अनुमान ॥ ३० ॥
भ्रुकुटी कुटिल सुखरूप । युग धनुष मनहु अनूप ॥
ठौ तिहिबीच कुंकुम बिंदु । इकठौर शनि कुज इन्दु॥३१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नवगौर सरस सुरूप। सुन्दर ललाट अनूप ॥
बेंदा बिशाल विराज। जनु नवग्रहन समाज ॥३२॥
बदी लसै कमनीय। मणिजटित द्युति रमनीय ॥
मुक्ता अमोल सुहाय। सुंदर अधिक छबिछाय ॥३३॥
शिरचंद्रिका लहराति। झुकि झूमि छबि छहराति ॥
मणिजटित क्रांतिविराज। कोटिन प्रभाकर लाज३४॥
चिक्कन कुटिल मृदुकेश। वेणीगुही वर वेश ॥
छूटत सुगन्ध झकोर। ह्वै मत्त डोलत भौर ॥ ३५॥
सारी सुनील सुहाय। जनु मेघमंडल छाय ॥
जरतारकी नवकोर। सोदामिनी चहुँ ओर ॥३६॥
बरसै सुछबि मय नीर। सौपरत सीय शरीर ॥
दरशात आनँद रूप। शोभा अभंग अनूप ॥ ३७ ॥
नख शिख सबै सुठि सीय। शृङ्गार पुनि रमनीय ॥
गजगामिनी मृदुगात। गिरिजाहि पूजन जात ॥ ३८॥
जैसी सिया अभिराम। तैसी सखी छबि धाम ॥
शिख नख स्वरूप सुढंग। शृङ्गार शोभित अङ्ग॥३९॥
तिनके अमित गुणरूप। तनु तेज अमल अनूप ॥
सिय सहचरी जु अनेक। है सरस एकहि एक॥४०॥

दोवई—छन्द।

रूपरंगीली गुणगरवीली सुघर सलोनी बाला ॥
नवल नागरी अति उजागरी छाकी प्रेमपियाला॥
नखशिख भूषण अमल अदूषणज्यों शशिपूखनसोहैं॥
वसन सुरंगा शोभित अंगा निरखि शची रतिमोहैं॥४१॥
पंकजनैनी हैं पिकबैनी गजगामिनी ललामा ॥
वैसकिशोरी श्यामल गोरी मनहरनी सुखधामा॥
उरज उतंगा नवल अनंगा परम प्रवीन पियारी ॥
रंगरंगीली नेह पगीली सुंदररूप उज्यारी ॥ ४२ ॥
गानकलामैं छन्द छलामैं परम ललामैं राजैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहु सुखदानी अधिक सयानी अङ्ग अनूपम साजैं ॥
रसिकविहारी मति अति हारी कहत पारको पावै ॥
तिनकी दाया सों बल आया तिहि भरोस कछु गावै ४३
काहूकी वेणी फूलन सों गुही विराजतनीकी ॥
काहूकी गूंथी मोतिनसों सरस मोहनी जीकी ॥
काहूके वरवेस पीठ पै छूटै केश सुहावैं ।
मानो तरुण नागिरी कारी मदमाती लहरावैं ॥४४॥
अरुण सरस सिंदूर सुहावै मोतिन मांग भरी है ।
श्याम फरी पै शोखितसनी सुमानौं असी धरी है ॥
काहूकी पोशाक घनी है सुन्दर रंग सुरंगी ॥
काहूकी कासनी बनी है काहू अंग नरंगी ॥४५॥
काहूकी जंगाली राजै काहू लसै हरीरी ।
काहूको बैंगनी सुहाई काहूके तन पीरी ॥
काहूकी अरई चंपई काहू फालसई है ॥
काहूकी ऊदी असमानी काहू फाकतई है ॥ ४६ ॥
काहूलसै मजीठी प्याजी काहू है अव्वासी ।
काहूकी धानी अंगूरी काहूकी है मासी ॥
काहूकी सोसनी पिरोजी काहूकी है लाखी ॥
काहूकी मोतिया बदामी काहू चित्रित राखी॥४७॥
काहूकी सरबाती सुरमई काहूकी है नीली ।
काहूकी सरदाई गुलाबी जरतारन चमकीली ॥
काहूकी सिंगरफी मूँगिया काहूकी सितसाजै ।
अमितरंगके वसन विभूषन सखियनके तनुराजै॥४८॥
चन्द्रमुखी सब रूप गुमानी चञ्चल हैं चपलासी ॥
जनकनंदिनी संग सुहावै शारद शचीरमासी ॥
पहुँची गोरिसदन में सिय जू विधिवत पूजा कीनी ।
धूपदीप नैवेद्य आरती करि पुष्पांजली दीनी४९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दै प्रदक्षिणा पदपंकजगहि बहुविधि विनती कीनी।
मन भायो मांगो वर सुंदर परम प्रेम रस भीनी॥
ताही समय अली इक लोनी गईविलोकनबागा।
डोलत फिरत लखत द्रुम बेली हिय उमँगेअनुरागा॥५०॥
ताहि छिन गुरु आयसु लकै राजकुँवर दुहुँ आये।
निरखत बाग उतारत फूल न दोना करन सुहाये॥
औचक दृष्टि परे सो ताके लखत विहाल भईहै।
भूषण वसन अपान चातुरी भोरी सबै गई है॥ ५१॥
इकटकरही निहारि चकितह्वै नैन निमेष नलावै।
रघुनंदन छबि छकी छबीली मनमें मोद नमावै॥
लोक लाज कुलकानि त्यागि के दौरि मिलनको चाहै।
ह्व सकोच मनमारि रहै जिय अंतर मनसि जहा है॥ ५२॥
हिय बिचारि कुलकानि जानितिय धर्मधीर कछु धारी।
चलीद्वैक डग परै न पग मग भई नेह मतवारी॥
तहँ ते चलै फेरि फिरि लोटै इहि विधि करि बरि आई।
झूमत झुकतचकित सी चितवत अली अलिन विचआई५३

बरवा छंद।

तिहि विलोकि सिय सखियां बूझति बैन॥ कहा भयो तुहि हेली तू मतिऐन॥५४॥ सोहे रति नहिं काहुहि उत्तर देत॥ लै उसास युग आंखियां भरि भरि लेत॥ ५५॥ पुनि कर गरि सिय बूझति बैन रसाल॥ निजगति कहति न काहे नवला बाल॥५६॥ सुमिरि श्याम उर अंतर हिय धारिधीर। सियसों बोली सुंदरि बैन गँभीर॥५७॥अवधनृपति दशरथ के सुत अभिराम॥ कौशिक सँग सो आये सुखमाधाम॥ ५८॥ राम लषण दुहुँ भैया श्यामल गोर॥ सुंदर ताके सोहैं जो शिरमौर॥ ५९॥ धनुषयज्ञ सुनि आये हैं अतिवीर॥ इनहि ताडकामारी एकहि तीर॥ ६०॥ हति सुबाहु मारीचहिं बिनफलबान॥ सिंधुपार तिहि पठयो राखे प्रान॥ ६१॥ गये जनकपुर देखन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोऊ भाय । नगर नारि नर निरखत रहे लुभाय ॥६२॥सुने सकल मैं उनके सुयश अनूप । लखन न पायो दृगभरि सुंदर रूप ॥६३॥ अबहीं मैं फुलवारी देखनकाज । गई रही इत तजिकै सखीसमाज ॥ ६४ ॥ राम लषण मुहिं मिले सुतहँ दुहुँवीर ॥ तिनहि विलोकत मैं अति भई अधीर ॥ ६५ ॥ यद्यपि हैं दुहुँ भैया सुखमा धाम । तदपि अधिक सुखसागर नागर राम ॥६६॥शिर शोभित है ताज सुजटित जराय । जिहि लखि रवि शशि दोऊ मंद लगाय॥६७॥ केश कुटिल चिकनारे शोभादेत । देखतहींसो वरवस मन हरि लेत ॥६८॥ललित लिलार सुहाई केसर खौरि । सबै हिरानी जिहि लखि धीरज मोरि ॥६९॥भ्रुकुटि कुटिल सुहाई सुंदर रूप । जनु रति पतिके राजैं धनुष अनूप ॥७०॥ रतनारे कजरारे लोचन लोल । को अस जो न विकावै लखि बिन मोल ॥ ७१ ॥ कंज मीन मद खंजन गंजन नैन॥अमी सुरा विषप्याले सुखमाऐन ॥ ७२॥ पंच बानहूँते अति तीक्षणमानी ॥ नैनबाण उर अंतर लगत न जानि ॥७३॥पीछे अति कठिनाई कसकत जीय॥जिहि लागै सो जानै अपने हीय ॥ ७४ ॥ श्रवण सुहाए कुंडल छबि छहरात ॥ मोतिन झुमका झूमै बहु लहरात ॥ ७५ ॥ कलित कपोल अनूपम मन हरि लेत ॥ कबहुँ अलक झुकितापै शोभादेत ॥ ७६ ॥ सुभग नासिका सोहै मुक्ताचारु ॥ हलनि हिएमें पैठी सुखमासारु ॥ ७७ ॥ अधर अधिक अरुणारे मनहुँ प्रवल ॥ पानपीक द्युति सोहै सरस विशाल ॥ ७८॥दशननकी द्युति दमकै अति सुखदान ॥ मंदहँसन है तीखी मनहु कृपान ॥ ७९ ॥ चिबुक छटा किमि भाषौं कहीन जात ॥ जित निरखौं दृग तितहीं अधिक लुभात ॥८०॥ग्रीवा सब सुखसींवा रेखा तीन ॥ गज मोतिनको कंठा लसत नवीन॥८१ भुज आजानु अनूपम सुभग विशाल ॥मनहु मृदुल युगराजैं पंकज नाल ॥ ८२ ॥ रतन जटित भुजबंद सु अतिकमनीय॥बाल दिवाकर शशि गुरु द्युति दमनीय ॥ ८३ ॥ अरुणारे कर कोमल अति अभिराम ॥ रतन जटित युग पहुँची लसत ललाम ॥ ८४ ॥ कर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अँगुरी नखराजैं विमललाम ॥हैं बहु सुखमासागरआगर राम॥ ॥८५॥अतिविशाल वक्षस्थल सुखमाधाम॥जहँभृगुचिन्ह विराजै बहु अभिराम॥८६॥उर मणिमाल सुहाई अधिकअमोल ॥ मनहुँ त्रिवेनी राजै रुचिर अलोल॥८७॥ रतन जडित पदिकसो छबि सरसात॥बालभानु बिच ग्रह जनु चहूँ लखात ॥८८॥ बागो हरित सुहायो शोभादेत॥लसे रुचिर जरतारन मनहरिलेत ॥८९ ॥ उदर सुहावन पावन सब गुणगेह॥ भरो सुभग सर मानो सलिल सनेह ॥९०॥ नाभि गँभीर सुहाई सुखमाकुंड॥ रोमावली विराजै जनु अलिझुंड॥९१॥ पीतबसन कटि सोहै सो फहरात ॥ मानो घनबिच चपला दुरि दुरिजात ॥९२॥धोती धवल सुहाई सुखमा ऐन ॥ अतिचिक्कन छबिछाई लखि हिय चैन ॥ ९३ ॥ जंघा युगल सुहाये सुखमा ऐन॥गोलगुल्फ छबिछाजैआनँददैन ॥ ९४ ॥ पदपंकज अरुणारे अधिक अनूपा।नूपुर ललित सुहायेसुखमारूप९५ जिहि महि परत सुहियरा मोर डराय।कहुँ गुलाबकी पखुरी गडि जनिं जाय ॥९६॥ रघुनंदन आंखन बिच राखन योग। क्यौं सहिये हे प्यारी विषम वियोग॥९७॥हम विधिसे यह माँगिय रुचि वरदान।तोरैं धनुष सुयेही श्यामसुजान ॥ ९८ ॥ यही लाभ पुनि चाहिय कछू न और ।दृगभरि हम अविलौकै श्यामल गौर॥९९॥ सुनत सखी मृदुबाणी सिय मनमाह॥भई प्रीति अतिबाढी दरशन चाह ॥ १०० ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

बानी नेह सानी सुखदानी मनमानी बहु प्रीति सरसानी सुनि रूपकी निकाईको॥संगलै सहेली अलबेली जो नवेली सबै देखन चली हैं घनश्याम रघुराईको॥ जनकदुलारी सुकुमारी मोदभारी हिये रसिकविहारी सोनिहारी चहुँ घाईको ॥ निरखत झांकी छबि बांकी देहथाकी सिया प्रेममद छाकी लखिलालकीलुनाईको १०१

कुंडलिया छंद ।

बोली सिय सखियानसों,हेली राजकिशोर॥हेरौछबिमुखचंदकी,लोचन चारु चकोर॥लोचन चारु चकोर इक टकरूप निहा-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रौ॥ सरसमाधुरी पियौ भली विधि पलक न टारौ॥अलीआजसु-खसाज सबै निज निज हिय खोली॥निरखिलेहु भरिनैनबैन यौं सिय जू बोली ॥ १०२ ॥

दोहा—औचकराज किशोरकी,परी दृष्टि इत आय ॥
जनकनंदिनी रूपलखि,प्यारे रहे लुभाय ॥ १०३ ॥
सिय मुख पंकज रसरसिक,रघुनंदन मनभौंर ॥
रम्यो सुछबि मकरंदमें,कछू सुहात न और ॥ १०४ ॥
राजकुँवर वर बन्धुसे,बोले वचनरसाल ॥
धनुष यज्ञ इन हेतु ये,जनकलली नवबाल ॥ १०५ ॥
सिय सुंदरता नेहमय,कहत लषण रघुचंद॥
भये लतनकी ओटमें,ज्यों घनबिच युगचंद ॥ १०६ ॥
अकुलानी सिय सखिन युत, लखे न श्यामसुजान ॥
बढी अगिन तनु बिरहकी,भूलो सबहि अपान ॥१०७ ॥
भई सबै अतिबावरी, बोलति अटपटबैन ॥
राजकुँवर बिछुरे अबै,रंचहु परै न चैन ॥ १०८ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

क्यौं नजरजायरी पतंगआय दीपकमें क्यौंनमणिहीन जो भुजंग प्राणत्यागैरी॥रजनीमलीन बिन चंद क्यौं नहोय भट्ट स्वातिबिन चातक अधार क्यों न वागैरी॥रसिकविहारी बिनसुधरसनेही मिले कोटिहूं उपायते न हीय अनुरागैरी॥ बिछुरे नीर क्यों न मीन मरिजाय हेली जानैसोवियोग पीर जाके जिय लागैरी ॥ १०९॥ विरही वियोगिनीन देखिकै अधीन दीन अधिक सतावैंभट्टमिलिकै अनेकसे॥कसकत छाती सुनिकारीकोकिलाकीकूकगरजतकारेघनमान तन नेकसे ॥रसिकविहारी कारी जुलफैंचुभीहैं हिय विरह मनोज अंग दाहै अविवेकसे॥कारे कजरारे नैन कीनी कतलामघनी हेली हम जानी कारे कारे सब एकसे॥११०॥बूझैंद्रुमवेलीसबैविकल सहेलीघनी रसिक रसाल रघुलालको बतावोजू॥कलित कदंबकैसो बहत बिलंब ऐसो नबल अशोक तुम शोक तौ नशावोजू ॥ तरुन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तमाल इत लाल अविलोके कहूँ रसिकविहारी मोहिं वेगि दरशावोजू। एहो मृग छोना जाय करहु सहाय येती पीर यह मेरी दौरि श्यामको सुनावोजू॥ ११॥ कोऊ नवपल्लव गहति कर जानि कोऊ जानि पद पंकजको कंज शीश नावहीं॥ कलित कपोल जानि चूमत गुलाब फूल कोऊ गहिके तमाल बिरह सुनावहीं॥ रसिकविहारी कोउ हेरतीं चरण चिह्न पावैं कहुँ ताकी रेणु दृगन लगावहीं॥ नेह रसमाती सिया आली बिलखाती सबै पातीदै पतौवनकी पक्षिन पठावहीं॥ ११२॥ नृपति कुमार सुनि लीजिये पुकार येजू हमतौ तिहारे श्याम रूप रस प्यासीहैं॥ प्यावो छबि नीर तनु तपनि सिरावो लाल विरह विहाल हाल करि मति नासीहै॥ येहो रघुराय अबै जानोना वियोग पीर रसिकबिहारी तुमैं लागत जुहांसीहै॥ नैननकी सैन दरशाय दुरे कुंजनमें हाय वह भई सो हमारे गर फांसी है॥ ११३॥ कोऊ कहैं आली इमि होतीहौ अधीर काहे येई धनुतोरी तिहुँ लोक यश छायहैं जोरी गौर श्यामकी संयोग रचि राखो विधि कंठ इनहीके जयमाल सरसायहैं॥ रसिकविहारी मन भाई सब ह्वैहै भट्ट राम घनश्याम सिया दामिनी सहाय हैं॥ उमँगि चलैगो उर आनँद घनेरो सखी नागरी सहेली सबै मंगल जुगायहैं॥ ११४॥ कोऊ सखी बोलीं राजकुँवर सलोने मृदु शंभु चाप निपट कठोर क्यों चढावैंगे॥ कोऊ कहैं बैस अति थोरी पै अपार बल तोरि धनु पंकजकी नाल ज्यौं बहावैंगे॥ रसिकविहारी सुनि सकल सुखारी भईं हम सब धन्य ऐसो नैन फल पावैंगे॥ परशि सलोनो गात मुख जलजात देखि कोमल रसीलेबैन बिहँसि सुनावैंगे॥ ११५ मन अकुलानी सिया सुमिरि पिताको प्रण अति सुकुमार घनश्याम राम जाने हैं॥ निपट कठोर शंभु चाप लखि भारी घनो केते भूप थाके वीर परम सयाने हैं॥ अधिक अधीर भई हीयना धरैहै धीर दरशन हेत युगनैन अकुलान हैं॥ रसिकविहारी दृग चंचल अचंचलभे मानौ जालबीच नवमीन उरझाने हैं॥ ११६॥ येरे विधि परम सयानो तू बनायो जग मेरे हित हेत ऐसो भयो मतिहीनो क्यों॥ जो पै श्यामसुंदर सो मिलकै

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिछोह भयो तोपै सुखमांगो मोहिं मरनन दीनो क्यों॥रसिकविहारी रघुनंदन अनूपरूप तिनके हियेते मोह सब हरि लीनों क्यों ॥ जबै मिथिलामें धनुयज्ञ सुनि आये तबै शंभुको शरासन सुकोमल न कीनों क्यों॥ ११७ ॥ येहो शंभु परमकृपालु हौं निहोरौं तुमें मांगौं मनभामो बरदान यह पाऊंमैं॥ दीजे ह्वै प्रसन्न अति दाता फल चारके हौ जाते गौरि संयुत तिहारो गुण गाऊंमैं ॥ कैतौ तात त्यागैं प्रण कैतौ मृदु होवैं चाप तबै सांवरेको जयमाला पहिराऊंमैं ॥ रसिकविहारी व्याहि आनंद उमंग रंग राम घनश्याम संग अवध सिधाऊंमैं ॥ ११८ ॥ कीजिये उपाय क्यों न कोटिन कछूना चलै सोई अब ह्वै है जो विधाता लिखि दीनों भाल॥शंभुचाप तात प्रणरेखा या ललाटकीसो टारेनाटरै है नेक तीनों ये अचल चाल॥रसिकविहारी सुखदानी मनमानी यही भाषिये न काहूँसो कछूक निजहीको हाल॥जोपै रघुराय सों हमारो नेह सांचो लगो तोपै हम जानी हमैं सांचहू मिलैंगे लाल ॥ ११९ ॥

हरिगीतिका छन्द ।

इहि भांति सिय जू सखिन युत रस नेहके छाकीं घनी ॥
प्रगटे लतनकी ओटते ताहीं समैं रघुकुल मनी ॥
आनंद हिय उमँगो रहीं जकि चित्रसी सब जहँ तहीं ॥
मानो शरद निशि चन्द्रको यकटक चकोरी लखिरहीं १२०॥
कोऊ कहैं सखि दौरि मिलिये त्यागिये जग लाजको ॥
इनते विहीनो जो भयो सुरराज तौ किहि काजको ॥
कोऊ कहैं हम धन्य सजनी लखे श्याम सुजानको ॥
ते मूढ कैसे श्याम राम विहाय ध्यावै आनको ॥१२१ ॥
जरि जाय सो जप योग ज्ञान सनेहसो जरि जायरी ॥
जरि जाय जननी जनक सुत हित जिनहिं येन सुहायरी॥
जरि जाय सो गुरु बंधु तन मन प्राण धन जरि जायरी ॥
जो भजत रघुकुल चन्दको नहिं करत अधिकसहायरी १२२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह प्रीत साने बैन आली जनकनंदिनि युतकहैं ॥
सब श्याम छबि छाकी सखी कोऊ न गृह जैवोचहैं ॥
मन मानिकै भय मातकी तब सीय हिय धीरज धरी ॥
उर राखिकै रघुराय गमनी गेहको आनँद भरी ॥१२३॥
लखि जात जनककुमारिको नृप नंद अति व्याकुल भये ॥
हा भामिनी गजगामिनी मृदु बैन यौं बोलत नये ॥
हा लाडिली नवला किशोरी प्राणप्यारी नागरी ॥
हा जानकी सुखदायिनी गुण रूप शील उजागरी ॥१२४॥
क्यों नैन बान चलाय प्यारी करि चली घायल हियो ॥
मुसक्यान मन्द कृपानसी लागी सुतन व्याकुलकियो ॥
हे सुन्दरी नवला सलोनी फेरि रूप दिखाइयो ॥१२५॥
दृगनीर तुव छबि नीर बिन तलफत तिनै रसप्याइयो ॥
तुव रूप उर अन्तर लिखो बिलगाय क्यों पल एकहू ॥
मन तो तिहारे संग गमनो धरत धीर न नेकहू ॥
इहि भांति कहि मृदुबैन राजिवनैन गुरु ढिगको चले ॥
इत लाल उतप्यारी चितव फिरि२ चितव आनँद भले १२६
इत आय दोऊ भाय गुरु पद पूजि अति आनँदलहै ॥
नृपबागके संवाद सरल सुभाय मुनिते सब कहे ॥
ह्वै अधिक हृदय प्रसन्न कौशिक सुभग शुभ आशिष दये॥
चिरजियहु मन अभिलाष पूरै राम सुनि प्रमुदितभये १२७
उत गई सखिगण संग सिय जू गौरिसदन बहोरिकै ॥
पदकंजगहि मृदुबैनते विनती करी करजोरिकै ॥
जैजैति जैशिव प्राणप्यारी जैति अभिमत दायनी ॥
जै दीनगन भय भंजनी जैभक्त जनमन भायनी ॥१२८॥
जै शम्भु तन अरधंग वासिनि जैति सुरगन मण्डनी ॥
उत्पत्ति स्थितिलयकारिणी जै जैति खल दल खण्डनी ॥
जगजननि जै गिरिजा भवानी जैति इच्छाचारिणी ॥
जै जैति जै गजवदन अम्बा जैति मंगलकारिणी॥१२९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विश्वास करि अति प्रीतिसे पदकमल जोतुव ध्यावहीं ।
तिनको अगम सब सुगम होत अभीष्ट फल सो पावहीं॥
किहि भांति मैं विनती करों तुम सकल अन्तर्यामिनी ।
मन भावतो वर दीजिये अब मोहिं शंकरभामिनी॥१३०
बहु दिवस बीते तुमहि सेवत सफल सेवा कीजिये ।
जा भांति रघुवर वर मिलैं करि कृपा आशिष दीजिये ॥
धनु होय कोमल कै तजै प्रण तात रामहि देखिके ॥
जिहि विधि मिले मुहिं सांवरो सो जतन वन हि विशेषिके १३१
सुनि सीयकी वर विनय गिरिजा परमआनन्द पायके ।
दीनी सुखद आशीश सीतहि सकल सखिन सुनायकै ॥
मन भावतो वर पाय हौ संशय तजौ सब जानकी ॥
दिन कछू बीते होहु दुलही रामरूप निधानकी १३२ ॥
सुनि गौरि वचन प्रमोद बाढो सीय हिय न समायसो ॥
आनन्द जो सखियानके किहि भांतिते कहि जायसो ॥
गिरिजाहि शीश नवाय आलिन सङ्ग सिय मंदिरगई ॥
रघुचन्द दशरथ नन्दमें उर प्रीति बाढी अतिनई ॥१३३॥
दोहा–है सिय जिय रघुवीर बिच,सिय बिच रघुवर जीय॥
प्रीति सनातन परस्पर, दुहूँ बसैं दुहुँ हीय ॥ १३४ ॥
वर्णत शोभा छिनहि छिन, उत सिय इत रघुलाल ॥
दोऊ दुहूँ निहारिकै, फँसे प्रेमके जाल ॥ १३५ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० वाटिका प्रसङ्ग वर्णनो
नाम पंचमोविभागः ॥ ५ ॥

दोहा–रामसिया सियरामको, सुमिरत निज निज ठाम ॥
मनसंकल्प विकल्प मधि, बीती सकल त्रिजाम ॥१ ॥
उठे प्रात लखि बन्धु दुहुँ, नित्य कृत्य सब कीन ॥
गुरुपद पूज मुदित ह्वै, मुनि अशीश वर दीन ॥२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताही छिन भेजै जनक, शतानंद मतिधाम ॥
सादर चले लिवाय मुनि, सहित लषण अरु राम ॥ ३ ॥
सुन्दर विशद विशाल वर, बनी धनुष मखशाल ॥
मध्य चाप चहुँ ओर बहु बैठे बली नृपाल ॥ ४ ॥
शतानद कौशिक सहित, दोऊ राजकुमार ॥
गये तहां लखि सब उठे, कियो जनक सतकार ॥ ५ ॥
परम उच्च आसन सुभग, तहँ करगहि नृप आय ॥
राम लषण संयुत मुनिहि, बैठारे हुलसाय ॥ ६ ॥
राज कुँवर कौशिक सहित, आये धनु मखशाल ॥
सुनि धाये सब दरशहित, तरुण वृद्ध अरु बाल ॥ ७ ॥
रुचिर यज्ञशाला निकट, उचित बने बहु धाम ॥
यथायोग मर्याद जहँ, बैठि लखैं सब वाम ॥ ८ ॥
ताछिन रघुवर रूप सब, निरखो निज निज भाव ॥
परम विचित्र चरित्र सो, नेक न परो लखाव ॥ ९ ॥
तब बंदीजन आयकै, कहो जनक प्रण टेरि ॥
सोसुनिकै भूपति बली, उठे धनुष दिशि हेरि ॥ १० ॥
जाय जाय सब लाय बल, थाके चाप उठाय ॥
रंच डगो नहिं करहुते, बैठे भूप लजाय ॥ ११ ॥
तब कौशिक लखि रामदिशि, बोले हिय हुलसाय ॥
तात विलोकौ धनुष तौ, लीजे जनक रजाय ॥ १२ ॥
सुनि रघुवर कर जोरिकै, कहीजु आयसु होय ॥
तौ देखो धनु जाय मैं, नृपरुचि लीजे जोय ॥ १३ ॥

चौ० तब मुनीश औसरअनुमानी ❀ जनकहि कही मनोहर वानी ॥
राजराम धनु देखन चाहैं ❀ बडीवारते हृदय उमाहैं ॥ १४ ॥
सुनि करजोरि कहीअवनीशा ❀ परम उचित यह बात मुनीशा ॥
तब आज्ञा दीनी मुनिनाथा ❀ उठे राम गुरुपद धरि माथा १५ ॥
नखशिखसुभगश्यामसृदुगाता ❀ वय किशोर लोचन सुखदाता ॥
रघुवर रूप निरखि नरनारी ❀ भये नेहवश गिरा उचारी ॥ १६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सवैया-कवित्त ।

कोउ कहैं हित ह्वै इहि औसर भूपहि कोउ नहीं समुझावै ॥
काह करै नरनाह वृथा जिहिते सबके उर दाह बढावै ॥
है कर कोमल राघवके यह शंकर चाप कठोर लखावै ॥
क्यों रसिकेश गहैं मिथिलेशके हीय दयाहु को लेश न आवै॥ १७
कोउ कहैं इत होत अनीत लखौ न अबै चलिये निज गेहू॥
कोउ कहैं नृप बावरोहै तब तो सब भाषत नाम विदेहू ॥
कोउ कहैं सब कोउ कठोर सुराज समाज दया नहिं केहू ॥
कोउ कहै रसिकेश अबौं नृप लालहि बाल चलौ गहिलेहू १८

दोहा-कोउ कहैं आली सुनौ, मोहिय इमि दरशात ॥
तृण समान धनु तोरिहै, दृढ मानौ मम बात ॥ १९ ॥
इहि विधि पुर नर नारि सब, कहत परस्पर बैन ॥
हेरि हेरि रघुचन्द मुख, रंचहु धीर धरै न ॥ २० ॥
विकल सुनैना अति भई, कहैं सखिनसों बात ॥
कैसे धनुष उठाय हैं, राम श्याम मृदु गात ॥ २१ ॥
करति सोच सिय मनहिमन, शंकर गौरि मनाय ॥
कहति सखिन धीरे सकुचि, अलि अब ईश सहाय॥२२॥
सुमिरि राम बल जनक नृप, छिनक हिये उमगात ॥
पुनि पिनाक गुरुता समुझि, मनहीमन अकुलात ॥ २३॥
सो गति सब हियकी लखी, रघुवर उर उमगाय ॥
आये वेगि पिनाक ढिग, हेरे सहज सुभाय ॥ २४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

आयो चाप भंग समै सबहि जनायो ढंग मानी नृप हिय तबै धरकि धरकि उठे ॥ रसिकविहारी नेहवारी पुर नारिनके कंचुकी सुबंद आप तरकि तरकि उठे ॥ उर उमगे हैं भूप कौशिक लषण आदि राम भुजदंड दोऊ थरकि थरकि उठे ॥ जनककिशोरी जूके सखिन समेत दोऊ लोचन सफल चारु फरकि फरकि उठे॥२५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दंडक छंद।

राम धनु निरखि वर नृपन बल धरषि बहु परखि सब हीय गति हरषि रुख पायकै॥ धर्मधुर धीर रघुवीर रणधीर तिहि सहज करधारि गुरु शिवहि शिर नायकै॥ सपदि संधानि ध्रुव भंग अनुमानि कसि कान लगतानि निरखो न कोऊ वियो॥ वेगि वरिबंड जस मंड भुज दंड ते चंडको दंड द्वैखंड खंडित कियो॥ २६॥ घोर धनु भंगको शोरचहुँ ओरभो सुनत तिहुँ लोक चर अचर औचक चके॥ विष्णु विधि शंभु सुरपालदिगपाल अहिपाल महिपाल तिहिकाल झझके जके॥ होत घर घर धरा कुधर थर हलत सिंधु खलभलत उछलत रवि शशि थके॥ चिक्करत मत्तगज सिंह मृग आदि बहु फिक्करत विकल मणि विपिन कंदरतके॥ २७॥

दोहा—धनुष भंग इहि विधि भहो, औचक काहु न देख॥
गिरो खंड द्वै भूमि तब, चकित रहे सब पेख॥ २८॥
जै रघुवर जै राम जै, जैजै अवध किशोर॥
जै रघुवीर सुधीर जै, चहूँ मचो यह शोर॥ २९॥
निरखि शंभु धनु भंग सब, जनक नगर नर नारि॥
करहिं निछावर आरती, बहु मणिगण धनवारि॥ ३०॥
जनक सुनैना सीय हिय, जो कछु भयो अनंद॥
भाषिसकै नहिं शेष सो, मैं वरणौं कहमंद॥ ३१॥

सोरठ--कौशिक लषण अपार, मुदित भये धनु भंग लखि॥
मानी नृपति निहार, सकुचाने श्रीहत सकल॥ ३२॥
समय निरखि सानंद, शतानंद आज्ञादई॥
जयमाला निरद्वंद, सियमेलै रघुचन्द उर॥ ३३॥
तब नृप दई रजाय, सुनि सिय मन आनंद भो॥
सखिन संग हुलसाय, चली विशद जैमाल लै॥ ३४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी–कवित्त ।

आईरघुचन्ददिगजनक किशोरीगोरीदेखो खंड खंड तहँ शंभु धनुबंकको॥रसिकविहारीऐसोआनंदसियाकेचित्त जैसेवरवित्तपाय होवै सुख रंकको॥दोऊ कर उमँगि उठाये जयमाल लीने कवि हुलसाये हेरि उपमा उतंकको॥क्षीरसिंधु गहिकै सनाल युग कंजनते मुक्तमाल देत मानो पूरन मयंकको॥ ३५॥सोहैं सिय सहित उमँग सखिसाजे अंग भूषण सुरंग रंग वसन विशाल सों॥करि कर ऊँचे दोउ ठाढी हैं विदेहसुता कैसे कंठ डारै माल छोटी रघुलालसों॥ रसिकविहारी तिहि औसर निहारी छबि उपमा विचारी सो उचारी है उतालसों॥कनक लताकी नववल्ली द्वै अनूप कढि ऊरध उठी हैं मनो मिलन तमाल सों ॥ ३६ ॥

सोरठा--एक सखी मुसकाय, तब बोली रघुचन्दसों ॥
सादर शीश नवाय, जयमाला उर धारिये ॥ ३७ ॥
सुनि रघुवर सकुचाय, शीश नवायो सियहि लखि ॥
जनकसुता हुलसाय, पहिराई जयमालउर ॥ ३८ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

अतिहि उताल ह्वै निहाल रघुलाल कंठ मेली जयमाल भयो आनँद अपारो है॥रसिकविहारी श्याम गोरी नवजोरी हेरी सब नरनारी निज प्राण धनवारो है ॥माल पहिराई दुहुँछाई सो अपार शोभा ताछिन अनूप रूप रुचिर निहारो है ॥ धरि तिय भेष मंजु मुदित वसंत मानो आज ऋतुराज पै प्रसून जाल डारो है ॥३९॥

सोरठा-- सखिन सिखाई सीय, गहे राम पद कंज तब ॥
आई प्रमुदित हीय, मातु निकट बैठी सकुचि ॥४० ॥
उत रघुवर हुलसाय, कौशिक पद शिरनायके ॥
बैठे आशिख पाय, सहित लषण शोभित भये॥ ४१॥
पुरवासी नर नार, निरखि शंभु धनुभंगको ॥
निज निज मति अनुसार, कहत परसपर मुदितमन ॥४२॥

दोहा--कोउ कहैं सब भांति विधि, आज सुधारी बात ॥
दशरथ राजकुमारको, सुयशरहों कुशलात ॥ ४३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी कवित्त।

ताडका जु मारी करी यज्ञरखवारी फेरि तारी मुनिनारी येतो बल जस खूटतो॥ पुनि सुरनारी नरनारी औ सुरारिनारी हँसती जुन्यारी बीर नाम वह छूटतो॥रसिकविहारी ईश सबहि सुधारी यह कीरति अपारी धौ न जानौं कौन लूटतो॥जनकदुलारी होतीं निपट दुखारी भारी अवधविहारी ते न जो पै धनु टूटतो॥४४॥

दोहा—कोऊ कहति दिढायजिय,सबहि अधिक समुझाय॥
चाप आपही भंग भो,बात सत्य यह आय॥ ४५॥

घनाक्षरी कवित्त।

सुनिकै उदंड बल प्रथमैकोदंड दुरि जाय कै लजायसो मँजूषा माहिं सोगयो॥रसिकविहारी तऊ अवधविहारीताहिहठकै उठायो मान ताको सबखोगयो॥ शंभु धनु हीय हो गरूर गरुताको भूर चूर धूर ह्वै सो सूरताको नूर धोगयो॥ सोई हूक लूक की भभूक फूक फाटो हीय याही ते पिनाक आप टूक टूक होगयो॥४६॥

दोहा—कोऊ कहति विचारिजिय,भयो जु भंग पिनाक॥
सो कारण हम लखिलयो, सुनौ कहैं दै हांक॥४७॥

घनाक्षरी कवित्त।

राम करकोमल कठोर शंभुचाप हेरी मिथिलानिवासिनकेसोच हिय भरिगो॥निपट हिरासलैं उसांस सब भाषी यह रसिकविहारी कौन भूप मौन धरिगो॥ जीरन भयो पै तऊ आज लौं कराल भरी येते जौस माहीं धनु गरिगो न सरिगो॥एकै वारऐसीपरीआय सबहीकी धाय लाय लगी हायकी पिनाकयाते जरिगो॥ ४८॥

दोहा—कोउ कहैं हम एकहू,नहिं माने ये बात॥
निज भुजबलते रामधनु,भंजो प्रगट जनात॥ ४९॥
सो सुनि बोली कोउ तिय,आली मेरी जान॥
जिहि प्रभाव टूटो धनुष,सो मैं करौं बखान॥ ५०॥

घनाक्षरी कवित्त।

परि परि पाय जाय गिरिजा निहोरी नित्यशंकरमनायेपूजे गणपति भावसे॥दीने दान विविध विधान जपकीने बहु नेम व्रतलीने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिय सहित उछावसे॥रसिकविहारी मिथिलेशकी दुलारीदृढ प्रीति उरधारी अवधेश सुत चावसे॥जनक किशोरीके प्रतापतेपिनाक टूटो टूटो है न जानौ राम बलके प्रभावसे ॥ ५१ ॥

दोहा--इहि विधि उत पुर नारि नर, कहैं परस्पर वैन ॥
मन भाई सबकी भई,उर आयो अतिचैन ॥ ५२ ॥
इत सिय मात प्रमोद युत, कही नीरभरि नैन ॥
भंजौ राजकुमार धनु,क्यौं भाषौ यह वैन ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कहति सखीसों सियमाय हुलसाय हीय हेली हौं भई हौं अति चकित निदारिके॥रसिकविहारी भूरि भारी हो पिनाकजाहिनिरखि अपार वीर बैठे बलहारिकै॥भंजो ताहि बालरघुलालहौंन मानौं यह बात इक आई उर भाषौंसो विचारिकै॥मेरीजान काम राम रूप धरि आयो आज शंभु धनु तोरो वैर पाछिलो सम्हारिकै॥५४॥

दोहा--यौं कहि रानी बहुरि लखि,सीतहि दई रजाय ॥
सखिनसंगलैसाजसजि,गिरिजहि पूजौजाय ॥ ५५ ॥
मात वचन सुनि मैथिली,सकल सौंज लै साथ ॥
जाय अलिन युत पूजिकै,गिरिजहि नायो माथ ॥ ५६ ॥
ताछिन इक आली कही,सुन हेली मम बैन ॥
गौरि सरिस कितहूँ कहूँ; कोऊ सुर तिय हैन ॥ ५७ ॥
जाके पदपूजत सदा, पूजत सब अभिलाख ॥
सकल सुरासुर नारि नर,पूजत हिय दृढ राख॥५८ ॥
सुनि बोलीं सबही सखी, आली कही प्रणाम ॥
पै फल मिथिला वासको, है यह मेरी जान ॥ ५९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

शंभुगिरि वासी विंध्यवासी या गिरीशवासी रहतींउमाक्यों तहां जानकी सिधावतीं॥काशीकी सुवासी तथा कांचीपुर वासी तऊ तितहूँ न जाय सीता सुमन चढ़ावतीं॥रसिकविहारी पूजी जनकदुलारी यातें नारी त्रिपुरारीकी त्रिलोकमें पुजावतीं॥मिथिला निवासिनी उपासिनी न होतीं फेरिकैसेयहऐसीगरुताईगौरिपावतीं६०॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा--इहि विधि सबही परस्पर, कहत सुनत हुलसाय ॥
सिया सहित आईं भवन, वेगहिं गौरि पुजाय ॥६१॥
छायो अति आनन्द चहुँ, करैं नारि कलगान ॥
बजत बाजने विविध विधि, होत निछावर दान॥६२॥
राम लषण मुनि जनक सिय, हिय बहु बढ़ीं उमंग ॥
पुर नर नारि अनन्द युत, कहत भयो धनुभंग॥ ६३ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० धनुषभंगवर्णनो
नाम षष्ठो विभागः ॥ ६ ॥

दोहा—धनुषभंग लखि जनक नृप, अति अनन्द उमगाय ॥
करत दान बकसीस बहु, भूषण वसन लुटाय ॥ १ ॥
ताही छिन चहुँ ओरते, भयो कुलाहल सोर ॥
औचक आये परशुधर कन्ध कुठार कठोर ॥२ ॥
जटाजूट शिर भस्म तनु, भाल त्रिपुण्ड विशाल ॥
करधनु शरवर तेज बहु, चपल चाल दृग लाल ॥३॥
परशुरामको सकल नृप, उठि उठि कियो प्रणाम ॥
शतानन्द कौशिक तिनै, उचित मिले लखि वाम ॥४ ॥
मुनिहि मिलत लखि बन्धु दुहुँ, सादर नायो शीश ॥
निरखि परशुधर रूप सब, विकल भये अवनीश ॥५॥
ताछिन औचक धनुष दिशि, हेरि कुठार उठाय ॥
अतिसकोप बोले तमकि, मिथिलापतिहि बुलाय ॥६॥
बोले मूढ़ नृप वेगि यह, किन भंजो भव चाप ॥
देव असुर नर कौन जो, भयो कालवश आप ॥ ७ ॥
सुनि कराल भृगुपति वचन, नृप चुप रहे सशंक ॥
तब रघुवीर सुवेगहीं बोले निपट निशंक ॥ ८ ॥
परशु नाम ते डरपि कै, कहै न कोऊ नाम ॥
पै धनुभंजन हेतु सब, लेत, रावरो नाम ॥ ९ ॥
सुनि भृगुनाथ रिसाय अति, परशु उठायो हाथ ॥
कही अबहिं सब खलनके, गात करौं बिन माथ ॥ १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महि मण्डल सब छिनकमें, अबहीं होत निक्षत्र ॥
माला क्षत्रिन शिरनको, कोटिन बनैं इकत्र ॥ ११ ॥
परशुरामके वचन सुनि, लषन कहो अनखाय ॥
अवनीकरै निक्षत्र अस, कोउ न हमै लखाय ॥ १२ ॥
लषण और तब परशुधर, लखे विलोकनिबंक ॥
राम बंधु पुनि रोष युत, बोले वचन निशंक ॥ १३ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

अनुचित भाषी तुम जैसी यह सखी सब राखीमनहींमें हमनिज रिस मारिकै । एको नादिखाय ऐसो वीर सामुहे जो आयफेरि घर जाय रघुवंशिन प्रचारिकै ॥ वृद्धजानि छोरौं कर जोरौंऔं निहोरौं वेगि भवन सिधारो रोष सकलनिवारिकै॥रसिकविहारीछत्रधारी युद्ध कारी कोउ सकैना निहारी या कुठारीको निहारिकै ॥ १४॥

पद्धरीछंद ।

सुनि लषण लाल वाणी निशंक।द्विज नैन लाल करि भौंहबंक॥
बोले रिसाय रे मंदबाल । क्यों होत कालवश आतेउताल॥ १५॥
तू अबहिरंच जानै न मोहि । चुप जाय बैठ का कहहुँ तोहि ॥
सुनि फेरि कही लछमन हँसाय ।भाषोचरित्र निज मुखहिगाय १६
देखो विचारि यह जक्त रीति । जाने विना न हो प्रीति भीति ॥
याते जु हाल पूछैं प्रशस्त । सो सत्य सत्य भाषौ समस्त ॥ १७॥
तुव रूप देखि मम हीय माहिं । एकौ प्रतीति कछु होत नाहिं ॥
सुर हौ तथापि हौ नाग कोउ । नरहौ सुभाषहू जोइ होउ॥ १८॥

घनाक्षरी कवित्त ।

विप्र कहिये क्यों कर लीने हो हथ्यार याते क्षत्री कहिये क्यों वीरताई ना जनात है । संत कहिये क्यों क्रोध मंतहोअनंत अरु भूप कहिये क्यों रूप तौर ना लखात है॥रसियबिहारीहै तिहारी रीति न्यारी कछु सब दरशात शुद्ध एकौ ना मिलात है॥आपनों बतावो नाम ठाम तब जानै हम भाषौ का गुरु है कौन तात मात भ्रात है ॥ १९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पद्धरी छंद।

सुनि कही कुपित रे बाल वाम। मो नाम ख्यात जग परशुराम॥
बहु बार भूमि कीनी निक्षत्र। बैठे महीप बहु बूझ अत्र॥ २०॥

दोहा—सुनि लछमन हँसिकै कही, धन्य भाग्य मम आज॥
दीन जानि कीनी दया, दरश दियो द्विजराज॥२१॥

घनाक्षरी कवित्त।

पाऊं अनुशासन तौ आसन बिछाऊं वेगि वासन भराऊंवेगि धीर उर राखिये॥ द्विज गुणमान ज्ञान त्यौं विचार मान कीजे छोहकोहतें इतो न मनमाहँ माखिये॥ देखि धनु बान क्षत्री जान पुनि वीर मान कीनो हम रोषसो कृपाते दोष नाखिये॥रसिकविहारी सदा पूज्य हौ हमारे याते मीठो दधि मोदक मँगाऊं बैठि चाखिये॥ २२॥

पद्धरी छंद।

तब कही कोपि भृगुवर जु छिप्र॥ जनि जान मोहिं केवल सुविप्र॥
मोसमन और जग कोउ वीर॥बहु शूर मोहिं लखत तजत धीर॥२३॥
सौमित्र कही तब विहँसि धीर॥ नव सुनी आज हम विप्र वीर
पैजिय प्रतीति नहिंरंच होय॥ द्विजराज सत्य गुण सुनहु सोय२४

घनाक्षरी कवित्त।

वेद पढि जानै जप यज्ञ बढि जानैं पाप पुण्य मढि जानैं बहु बातैं गढि जानैंहैं॥ शापवेमें जानै वर थापवे में जानै दोष ढ़ापवेमें जाने तप तापवेमें जानै हैं॥ खाय जानै खूब औ अजूबजा चिलाय जानै रसिकविहारी बालहू पढ़ाय जानै हैं॥ येती पुनि औरहू अनेक रीति जानै एक युद्धवर वीरताई विप्र नहिं जानै हैं॥ २५॥

पद्धरी छंद।

भृगुनाथ फेरि बोले सक्रोध। अज्ञान तोहि रंचहु न बोध॥
वर वीर मौलिमणि शूल पानि।सोशंभुदास ले मोहीं जानि२६

दोहा—लषण कहो गुरु शिष्यको; बल अरु सुयश अपार॥
को अस जो जानै नहीं, विदित सकल संसार॥ २७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी कवित्त ।

मदन निहारो सो प्रसून बान वारो मारो दुर्बल विचारो यह शंभुबल भूरता ॥ अबला अपारी वृद्धनारी महतारी ताहि तमकि सँहारी या तिहारी तेज पूरता ॥ रसिकविहारी दुहुँकाज दुराचारी तिनै भारी करि भाषै या कवीनकी है कूरता ॥ हम तौ धनैयांही विलोकि अनुमानीजानीसकलपिछानी स्वामीसेवककीशूरता२८

दोहा-यौं कहि बोले लषण पुनि, मोहिं रुची इक बात ॥
स्वामी सेवक दुहुँनके, गुण समान दरशात ॥२९॥

घनाक्षरी कवित्त ।

उन द्विज मारो तुम क्षत्रिन संहारो उन लाज सब छोरी मर-जाद तुम तोरीहै ॥ मुंड उनधारे तुम अक्षि गलधारे उन खप्पर लयो है हाथ लीनी तुम झोरीहै ॥ उनै विष वारे तमैं क्रोध तनु-जारैं उनैं भाई मति भोरी तुम वाद बुद्धि बोरी है ॥ रसिकवि-हारी त्रिपुरारी औ तिहारी भली एकसी अनूप स्वामी सेवककी जोरीहै ॥ ३० ॥

पद्धरी छंद ।

सुनि बैन लषणके परशुराम । बोले रिसाय रे बालवाम ॥
अब वेगि भाग ह्याँते दुराय । तन छेनक माँह जम लोकजाय॥३१॥
सुनि स्वामि निंद जे चुप रहायँ । ते अधम मूढ़ वेगे नशाय ॥
हो रहौं दोष लखि रोष मार । भो आज काह कुंठित कुठार ॥३२

दोहा-सुनि बोले हँसि कै लषण, करौ न सोच अपार ॥
लाय देहुँ इक उपल तिहि, लेहु सुधारि कुठार ॥३३ ॥
कुंठित भयो कुठार जिहि, सो कारण यह आय ॥
लखि लीजे निज हीयते, मैं सब कहौं बुझाय ॥ ३४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कैतो कर कंपत गिरो हैकहुँ पाहनपैपरशु तिहारो तबहीते छीन धार भो ॥ कैतौ कहुँ कानन कठोर तरु कीने छिंद जाते बाढ़मंदहै हथ्यार विन कार भो ॥कैतो लोहकाचेको बनायोहै अजानकोऊ कैतो यह आजलों न काहू पै प्रहार भो ॥ रसिकविहारी सत्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

येही दरशात याते कंध पै धरेही धरे कुंठित कुठार भो ॥ ३५॥
चौ०-सुनि भृगुनाथलषणकीबानी ❀ जनकहिकहीमहारिससानी
रे नृप गहो मौन नहिं बोलै ❀ लखौंकालद्रुव शिरपर डोलै॥ ३६ ॥
वेगि बताव चाप किन तोरो ❀ लखौं ताहि कैसो रिपु मोरो ॥
महावीर जेते जगलोगा ❀ कोउ न धनुष भंजिवे योगा॥ ३७ ॥
भारी भूरि कठिन कोदंडा ❀ परम उदंड प्रचंड अखंडा ॥
मम गुरु कर पिनाक जिन भंगा ❀ करौं खड़ तिहिकोद्रुतअंगा३८॥
सुनि भृगुपतिके वचन कठोरा ❀ कहो बहुरि लछमन वरजोरा॥
बारबार बूझौ भृगुनाथा ❀ धनुषभंग भो परशत हाथा ॥३९॥
सहज राम चापहि कर परसो ❀ तुरतटूटि अवनी पर दरसो॥
धनु गरुताकछुनाहि दिखानी ❀ भईबात सो सकल पिछानी४०॥

घनाक्षरी कवित्त।

तेज ते नभारीगुणरूप ते न भारी शंभु संयुत तिहारे दीह दोषनते भारी भो। सुनो भृगुनाथ रघुनाथ हाथ लागतहीं चापके सुपापनको भार जरि छारी भो॥ रसिकबिहारी राव दुरित दुरानो तब धनुष पुरानो वृद्ध विशद विचारी भो॥ फेरि अनुमानो तुव आगम पिनाकयाते पातकडरन तनत्यागिकै सुखारी भो॥४१॥

दोहा—यौं कहि बोले लषण पुनि,नेक न आवै लाज॥
धनुही को बहु बार तुम, कहौ धनुष बिनकाज॥४२॥

घनाक्षरी कवित्त।

छोटे छोटे छोहरा छबीले रघुवंशिनके करत कलोलैंयूथ निज निज जोरि जोरि॥ येहो भृगुनाथ चलौ अवध हमारे साथ देखौ तहँ कैसे चहुँ खेलत हैं कोरि कोरि॥ रसिक विहारी ऐसी अमित अमानै सदा आनैं गहि तानैं एक एकनतेछोरि २॥ कोऊ झकझोरैं कोऊ पकरि मरोरैं योंहीं खोरि खोरि नितहि बहावैं बाल तोरि तोरि॥ ४३॥

दोहा--रही तिनहुँ ते अति हरू, निपट निजोर निकाम॥
यह धनुहीं कैसी हुती,मोहिं बतावो राम॥ ४४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी कवित्त ।

तूलती रही के काहू फूलकी रही के मृदु मूलकी रही के धूलसान के सजाईती ॥ सांटीकी रही के कहौं सांची स्वच्छ माटी लाय कांची काहू कुशल कुलाल ते कराईती॥ रसिकविहारी भृगुनाथ भाषिये तौ नेक शंकर समीप या कहां ते किमि आईती॥ हौंतौ यह जानौं अनुमान ते जु कोऊ बाल ख्यालहेतु धनुही मृणालकी बनाईती ॥४५॥

चौ०—यों कहि लषण बहुरि मुसकाई ❀ बोले रोषतजौ भृगुराई ॥ भूले इक धनुहीं जो टूटी ❀ और अमित जगमें कह खूटी ॥ ४६ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

ऐसीही कमान बालकेलिकी रुचै तौ बहु होवैंगी विदेह गेह अबहिं कढाऊँमैं ॥ रसिकबिहारी जो तिहारी प्रीति याही माहिं तोपै दुहुँ खंडखचिवेगहीबढाऊँमैं॥नीकी जिय भावै भृगुनाथ तौ निदेश दीजे हेमकीरचाय मणि माणिक मढाऊँमैं॥जोपैतुमैं चाहिये कहौ तौ द्विजराज अबैयाहू ते अनोखीचोखीअमितगढाऊंमैं४७॥

दोहा—लषण वचन सुनि परशुधर,परशु उठायो घोर ॥
कहो हतहुं इहिं बालकहि, मोहिं न दीजो खोर॥४८॥
कटुवादी निंदक कुटिल, याहि वधे नहिं दोष ॥
करौं क्षमा हठिकै तऊ, मोहिं बढावै रोष ४९॥
सुनि भृगुपतिके बचन तब, रघुवर मृदु मुसकाय ॥
जोरि दुहूँ कर सामुहे, बिनय करी शिरनाय ॥ ५० ॥
महावीर वर धीर प्रभु, क्षमिये शिशु अपराध ॥
कृपा करत हैं बाल पै,सबही साध असाध ॥५१ ॥
लषण छुवो नहिं चापको, सत्य कहौं भृगुनाथ ॥
हौं अपराधी रावरो, यह तुव कर मम माथ ५२॥
सुनि रघुवर वाणी सरल, विशद विनय गभीर ॥
शमित भयो उर कोप कछु,भृगुपति धारी धीर ॥ ५३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-पुनिभृगुवरविचार उरकीना ❀ निजकरधनुरघुनाथहिदीना
नृप सुत छुअत सगुन भो चापा ❀ लखो राम तब राम प्रतापा५४
तब भृगुनाथ प्रेम उर भारी ❀ बारबार रघुबरहि निहारी ॥
नख शिख रूप अनूप अपारा ❀ चकितचित्तहियकरतविचारा५५

घनाक्षरी कवित्त।

कैधौं जटा जूट कैधौं कंचन मुकुट सोहे चंदनकी खौरि कैधौं चंद अभिरामहै ॥ कैधौं मुण्डमाल कैधौं नाग मुकताकी माल कैधौं अंगराग कै विभूति छबि धामहै ॥ कैधौं है त्रिशूल कैधौं शर सुख मूलकर कैधौं पटपीत कै बघंबर ललामहै॥रसिकविहारी छबि न्यारी या अनूप भारी राम रूप शंभु कैधौं शंभु रूप रामहै५६

चौ०-यौं विचारि पुनि दृढ अनुमाने ❀ सकल ईश धनुधरपहिचाने
तब जानो रघुवीर प्रभावा ❀ परमानन्द ज्ञानउरआवा॥५७
परशुराम हिय अति सकुचाई ❀ दुहुँबंधुन वर विनय सुनाई ॥
निज अनुचित सब क्षमा कराई ❀ प्रमुदित गये वेगिभृगुराई॥५८

दोहा-अतिसशंक जिय विकलह्वै, परे रहे दुखकूप ॥
लखि पयान भृगुनाथको, सुखीभये सब भूप ॥ ५९ ॥
पुनि मानी महिपाल सब, करि करि विविध विचार ॥
गमन कियो निज निज भवन, अमित मानि मनहार॥६०॥

चौ० जनकनगर चहुँआनँद भारी ❀ कहत परस्पर पुर नर नारी॥
अब दुख शोक सकलविनशाये ❀ खलमलीनसबभवनसिधाये६१
जनकराज उठि अधिक अनंदे ❀ सादर मुनि कौशिक पद वंदे॥
पुनि कर जोरि कही मृदुवानी ❀ अब सनाथ सीता मैं जानी६२
मुनिवर करिय रजायसु सोई ❀ उचित होय इहि औसर जोई
सुनि कौशिक बोले हुलसाई ❀ लोकरीतिअबचहियसुहाई६३
सजि वरात दशरथ नृप आवैं ❀ रामव्याहलखि हिय हुलसावैं॥
यह दृढ करि मुनि लछमन रामा ❀ परमानंदगये निज ठामा॥६४

इति श्री० रामरसायनवि० वि० परशुरामसंवाद
वर्णनोनाम सप्तमोविभागः ॥ ७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा--आये जे महिपाल ते,किते गये निज गेह ॥
किते सुजन मिथिला रहे,राखे नृपति विदेह ॥ १॥
पुनि मिथिलाधिप पत्र चहुँ,भेजे उचित लिखाय॥
सकल ठौर मग साजते,निज दिशि दिये सजाय ॥२॥
चौ०--पुनि प्रवीन वर दूत बुलाये ❀ दै पत्री तिन अवध पठाये ॥
शुचि सेवकन कही महिपाला ❀ व्याह साज सबसजौउताला३
समै जानि नर तनु धरि देवा ❀ करतकाजसियकी लखिसेवा
मंडप सजो अनूप विशाला ❀ रचितखचितकंचनमणिजाला
असन वसन भूषन बहु नाना ❀ विविध वास वाहन वर जाना
जनक भवन अरु नगर मँझारा ❀ सुर निर्मितसबसाज अपारा४
उत वर दूत अवध पुर जाई ❀ युत मर्याद नृपहि शिर नाई॥
करि बहु विनय पत्रिका दीनी ❀ ह्वैप्रमुदितसुमंतकरलीनी॥६॥
जनक पत्रिका बांचि सुनाई ❀ पुनि मुनि पत्र पढो हरषाई॥
नृप सुनि समाचार हुलसाने ❀ सकल लोगआनंद अघाने॥७
बूझी कथा दूत वर वरनी ❀ राम लषण नृप कौशिक करनी
कहो बहोरि सु व्याह विचारा ❀ साज समाज सहित विस्तारा८
सुनि सब चरित भूप हुलसाये ❀ भूषन वसन अनूप मँगाये ॥
प्रमुदित देनलते बकशीशा ❀ लै सुदूत बोले धरि शीशा॥९॥
कौशलपाल कृपा करि दीनी ❀ हम सानंद शीश धरि लीनी॥
धर्मपाल महराजहि जानी ❀ विनती करैं जोरि दुहुँपानी१०
जिमि ममईश विदेह नृपाला ❀ तिमि स्वामी अवधेश कृपाला
पै हम है मिथिलापुरवासी ❀ जनकसुताके रहत उपासी११
सो जानकी रामसों व्याहैं ❀ वह नातो जिहि भांति निबाहैं
याते धर्मनीति जिमि होई ❀ भूपति करियरजायसु सोई१२
दूतवचन सुनि सकल सराहे ❀ कहे वचन नरपति जिय चाहे॥
नृप रुख लखि सो शीश चढाई ❀ पुनिबकशीशधरीतिहिठाई १३
बहुरि जोरि कर विनती कीनी ❀ राजराज आज्ञा मुहि दीनी ॥
अति उताल कौशलपुर जाई ❀ आवो बेगहि नृपहि लिवाई१४

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याते राज रजायसु दीजे ❀ वेगि जनकपुर पावन कीजे ॥
सुनि सुमंत दिशि भूप निहारी ❀ आज्ञा दई यथोचितसारी १५ ॥
सुनि सुमंत दूतन सँग लाये ❀ सहित सुपास निवासदिवाये ॥
पुनि बहु सेवक सुमति बुलाई ❀ साज सजनहितदई रजाई १६ ॥
पुनि बहु निवत पत्र लिखवाये ❀ दै सुदूत चहुँ ओर पठाये ॥
इहि विधि गुरु मंत्री मतिमाना ❀ कियेकाजसबसहितप्रमाना १७
जबते राम व्याह सुधि पाई ❀ सकल मातु तबते हुलसाई ॥
गानतान बकशीश सुदाना ❀ छिगछिनकरैं अनेकविधाना १८
भरत शत्रुहन अति हुलसाये ❀ सकल सखा सेवक हरषाये ॥
निज निजसाजसजैं सब भारी ❀ करैं जनकपुरचलनतयारी १९ ॥
पुरवासी अनंदमें फूले ❀ देह गेह सुधि बुधि सब भूले ॥
करैं सकल मंगल मय काजा ❀ साजैं बर बरात कर साजा २० ॥
साजे सकल सदन बहु भांती ❀ जटित हेम मुक्तामणि पांती ॥
कंचन कलश सुबंदनवारे ❀ ध्वज वितान नव रंगअपारे २१ ॥

सोरठा-बीथी भवन बजार, राज महल बहु साज सजि ॥
छाई छटा अपार, राम व्याह मंगल अवध ॥ २२ ॥

मातु सकल हुलसाय, लोक वेद कुल रीति युत ॥
अति आनंद अघाय, नेग योग कीने विविध ॥ २३ ॥
पुरवनिता वर वृन्द, मंगल साज सिंगार सजि ॥
गावत भरी उमंग, आवत राज अगारमें ॥ २४ ॥
इहि विधि सहित उमंग, भये सकल मंगल सुखद ॥
सजी बरात सुढंग, जुरो लोग चहुँ ओरते ॥ २५ ॥
समय विलोकि वसिष्ठ, बोले दशरथ राजसों ॥
है यह योग बलिष्ठ, वेगि बरात पयानको ॥ २६ ॥
सुनि गुरु वचन नरेश, दोऊ राजकुमार युत ॥
पूजे गौरि गणेश, कियो पयान मुहूर्त शुभ ॥ २७ ॥

दोहा-गज तुरंग रथ पालकी, सकल अनूप अपार ॥
पदचर संग समाज बहु, चले महीप उदार ॥ २८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुरु नृप स्यंदन प रुचिर, कुँवर तुरंगन पाहिं ॥
यथा उचित वाहन अपर, सजे जनकपुर जाहिं ॥ २९ ॥
बजत बाजने विविध विधि, गान तानको शोर ॥
जै जैजै अवधेश नृप, शब्द होत चहुँओर ॥ ३० ॥
जनक नगर ते अवध लग, जनक सजे सब साज ॥
मग सुपास गृहतें अधिक, लखि मन मुदितसमाज ॥ ३१ ॥
अति उताल यौं जनकपुर, आये अवधनरेश ॥
इक योजन अगवान तिन, लाये सजि मिथिलेश ॥ ३२ ॥
दियो विशद जनवास नृप, करि बहु सकल सुपास ॥
दोऊ दिशिअतिप्रीतिभरि, छिनछिन बढत हुलास ॥ ३३ ॥
भयो शोर चहुँ जनकपुर, धाये सब नर नारि ॥
मुदित भये अवधेशको, साज समाज निहारि ॥ ३४ ॥
भरत शत्रुहन रूप लखि, चकित चितब सब कोउ ॥
कहत परस्पर कुँवर ये, राम लषण सम दोउ ॥ ३५ ॥
ताही छिन नृप सुतन युत, कौशिक हिय हुलसाय ॥
आय मिले अवधेशसों, परमानंद बढाय ॥ ३६ ॥
राम लषण सौंपे नृपहि, प्रमुदित सकल निहारि ॥
देत अशीश उमंग सब, चिरुजीवो सुतचारि ॥ ३७ ॥
पुर परिजन सेवक सखा, चारहु सुतन समेत ॥
जनकनगरमें अवधपति, राजे सहित जनेत ॥ ३८ ॥
पुनि कौशिक मिथिलेशसों, कहि ठाने चहु व्याह ॥
हरषाने दुहुं ओर सब, बाढोअमित उछाह ॥ ३९ ॥
लोक वेद कुल रीति बहु, यथा उचित सतकार ॥
दान मान दुहुं ओरते, नित प्रति होत अपार ॥ ४० ॥
तितहि भरत मातुल मुदित, नाम जुधाजित सोय ॥
आये सादर अवध ह्वै, लखि प्रसन्न सब कोय ॥ ४१ ॥
लखि मिथिलावासी मुदित, कौशल नाथ समाज ॥
सुखी अवधवासी निरखि, जनकराज वर साज ॥ ४२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इहि विधि बीते कछु दिवस, भई सकल जगरीत ॥
आयो समय विवाहको, शुभ दिन परम पुनीत ॥ ४३ ॥
अगहनकी सित पञ्चमी, वृषभलग्न भृगुवार ॥
सुखद समय गोधूलिका, रामविवाह विचार ॥ ४४ ॥

प्रमाण उत्सवसिंधौ—श्लोक।

विधिः—पंचम्यां मार्गशीर्षे तु शुक्लपक्षे शुभे दिने ॥
संध्याकाले च रामस्य विवाहो भवति ध्रुवम् ॥ १ ॥

दोहा—सजिबरात जनवासतें, चले जनकके धाम ॥
चहूँ बंधु दूलह बनें, शोभित रूपललाम ॥ ४५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

बागो पीत फेटा पीत पटका पिछौरा पीत सोहै खौर पीत मन मोहै मौर पीत है ॥ अंगराग पीत वर भूषण अमाल पीत तून धनु बान औ कृपान म्यान पीत है ॥ सजित तुरंग पीत सँग निज सँगी पीत विपुल वराती पीत साज सब पीत है।रसिकविहारी चारु दूलह विलोकि चारौ श्याम श्वेत हरित सुरंग भयो पीत है ॥ ४६॥

दोहा—ताछिन छटा अनूप लखि, जनक नगर नर नारि॥
कहैं परस्पर वचन वर, परम प्रेम उरधारि ॥ ४७ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

कैधौं मणि मौर कैधौं रुचिर रसाल मौर कैधौं फूल जाल कैधौं सेहरो दराजहै॥कैधौं मुख मंजु कैधौं विकसो विशाल कंजकुन्तल किधौं है किधौं मधुपसमाजहै ॥ कैधौं है तुरंग कैधौं मारुत चलै है मन्द कैधौं कल गान कैधौं कोकिल अवाज है॥कैधौं रघुराज साज दूलह सुहावे आज रसिक विहारी किधौं आवैऋतुराजहै॥४८॥ निरखिबरातदुलसात बतरातवाम देखो रघुवंशीसबै सुखमानिधान है ॥ सोहत अदा तें नेक जोहतहीं मोहत हैं रसिकविहारीवीर धारे धनु बान हैं॥सकल सजीले औ छबीले उमगीले अंग सरस रसीले त्यौं रंगीले रूपमानहैं ॥ याते यौं जनातबातकौशलपुरीमें वीर चारों ओर गैल गैल छैलनकी खान हैं॥४९॥चारौ बन्धु सु-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खमानिधान सुखसिंधु हेली रसिकविहारी नेक नैन भर हेरिले॥ हियरो डराय हाय डीठना लगाय कहूँ यातेतू लजायना छबीलीटुक घेरिले॥हाहा खाय विनय सुनाय तुव पायपरौं धायचहूँवदनदुराय पट गेरिले ॥ वनराविशाल वरबानिकबनेहैंबीर वेगिढिगजाय लाय राई नोन फेरिले ॥५० ॥

दोहा–यौं प्रमुदित सब रूप लखि, कहैं परस्पर बैन ॥
सजि वरात चहुँ बन्धु सुठि, जात जनकके ऐन॥५१॥
नृत्य गान बहु वाद्यको, छयो शोर चहुँ ओर ॥
सुर नर नभ महि कहत सब, जैजै अवधकिशोर॥ ५२ ॥

चौ०–इहि विधि चारौकुँवरसुहाये❀सहित समाजराजहुलसाये॥
आये जनकद्वार भये ठाढे ❀ सबही मनप्रमोद बहु बाढे ॥ ५३॥
सियामातसबसखिगणसंगा❀ परिछन कीनो सहित उमंगा ॥
लखि शोभा हरषीं महरानी❀सकलनारिआनन्दअघानी॥५४॥
मोद भरीं मंजुल मृगनैनी ❀ करैं गान कल कोकिल बैनी ॥
राज कुँवर मण्डपतर आये ❀ लखि दुहुँ राज हिये हुलसाये५५
भई अमितलौकिककुलरीती❀ पूजन दान नेग युत प्रीती ॥
प्रोहित समय विलोकि बुलाई❀ सीतहिसाजिसखी लै आई।५६

घनाक्षरी कवित्त ।

कञ्चन समान गात सहज सुहात फेरि दीपति दिखात दूनी मंजन निपर पै ॥रसिकविहारी सजे सकल सिंगार चारु शोभा है अपार हेमबिंदुके विखर पै॥मंजुमणि मौरी लसै जनक किशोरी शीश लगत सुहाई आई उपमा तिपर पै। मानौ रसराज रघुराज मन जीति बांधो विजय पताक लै सुमेरुके शिखर पै ॥ ५७ ॥ घांघरो घनेरो लाल बंद कंचुकी हू लाल चूनरी पिछौरी लाल मौरी मंजुलाल हैं॥ भूषण अनूपलाल शोभित शृंगारलाल रसिक विहारी नरनारी बहु लालहैं ॥मंडफ विचित्र लाल महलविशाल लाल चांदनी चँदोवा लाल साज सब लाल हैं॥उलही उमंग हिय दुलही सुढंग देखिआवत भये जोलाल पीत पीत लाल हैं॥५८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—जनकलली रघुलाल निहारी ❀ भये अनंद सकल नर नारी
तब सब उचित विधान अपारा ❀ किये दुहूँ नृपरानिउदारा॥५९
ते पुनि पद सरोज नृपधोये ❀ जे नित निजमानस मधि गोये
पुनि विदेह गुरु आयसुपाई ❀ कन्यादान कियोहुलसाई॥६०

दोहा--जनकराज सिय कर हरषि, राम पाणिमँह दीन॥
छई छटा तब राजसुत, पाणिग्रहन जब कीन॥६१॥

घनाक्षरी—कवित्त।

जनक किशोरी अरु अवध किशोर दोऊ होत पाणिग्रहण अनंद रसभीने हैं॥राम कर मध्य मंजु शोभित भयो है कर शोभा सो अपारमें सुजान चित्त दीने हैं॥अति छबिवारी सिय आंगुरी अनूप हेरिबात निरधारी मति धारी जे प्रवीन हैं॥रसिकविहारीविश्वविजय विचारी आज यातें पंचबान पंचबान संग लीने हैं॥६२॥

चौ०--सीतापानिगहोरघुनाथा ❀ पुनिकरि सुविधिहोममुनिनाथा
सिया राम पट गांठ सुजोरी ❀ होनलगीभांवरसुठि जोरी॥६३

घनाक्षरी कवित्त।

साजे व्याह साज ज्यों अनूप अवधेश लाल कीनेहै सिंगार त्यों विदेहनृपकी लली॥दोऊ होत भांवरी अपा ता समैकी छबि रसिकबिहारी सो अभूत उरमें रली॥ग्रंथित सुरंग चूनरीसोपटपीत संग निरखि सुढंग यों उमंग उमगी भली॥वृन्द वृन्द जुरि कै अनंद भरि इन्द्र बधू कर गहि मानो दामिनीको घर लै चली॥६४॥
देखि बनरी की छबि रति सकुचाति हीय हेरिवनराको त्यों मनोज होत झावरो॥ सिय रघुचंदकी छटा निहारि व्याह समै रसिक विहारी सब लोग भयो बावरो॥ चूनरी ग्रथित पटपीत मणि मौर माथे लखि जन भाषै मिथिलेश पुण्य रावरो॥नवलकिशोरी गोरी दुलहिनि जैसी बनी तैसो नव दूलह किशोर वर सांवरो६५॥
जनक किशोरी गोरी राम अभिराम श्याम जोरी या करोरी रति काम सुषमा भली॥रसिकविहारी व्याह औसर अनूप रूप शोभित अपार शोभा हेरि हरषीं अली॥सिय छबि छाके पीय पीय छबि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छाकी सीय जीकी गति दोऊ निजहीकी हियमें रली ॥ कंज दृग देखे उत श्याम भृंग लोभे इत हेरि मुखचंद फूली बालन-लिनी कली ॥ ६६ ॥

चौ०-बजहिं बाजने बिदिध विधाना ❀ करहिं नारि मंगलकलगाना भांवर फेरि नेग बहु कीने ❀ धनमणि गणअगनित नृप दीने॥ ६७ ताछिन जनकनगरकी शोभा ❀ वरणिसकै अस कवि जग कोभा वरसै चहुँ अनंदकी धारा ❀ सुखी सकल नर नारि अपारा६८

घनाक्षरी कवित्त ।

जलद घिरे हैं जन उमडो विदेह मेह वरसै अनंद नीर धारन अनंतसें॥ दुंदुभी अवाजै घन गाजैं जोरशोर छाजैं दुति दरशावै तिय दामिनी दुरंतसें ॥ भूरि पूरि दान मान सरिता अपार बाढि पवन झकोर प्रीति पूरव दिगंतसें॥ रसिकविहारी सिय व्याहके उछाह माह भूलि कै भई हैं मनो पावस हिमंतसें ॥ ६९॥ बैठीं जे जठेरी निमिवंशकी घनेरीतिन नेगरीतिउचित निवेरीसबभूरीहै॥ फेरि फेरि दम्पतीविराजेमंजुशोभावहरसिकविहारी प्राणजीवनकी मूरी है॥ राम अभिराम श्याम करते सिंदूर जब दिनो सिय मांगसो अभूत छबिरूरी है॥ महत मतंग मत्त मुदित निशंक मानो शुंडमें गुलाल लै कलिंदी धार पूरी है ॥ ७० ॥

चौ०--पुनि मुनि सकल नेग निरवारे ❀ दंपति एक ठौर बैठारे॥ बहुरि वशिष्ठ रजायसुपाई ❀ सियभगिनी तिहुँ जनक बुलाई ७१

दोहा--सुताऔरसी जनककी, एक उर्मिला नाम ॥
द्वैकुशध्वजकी मांडवी, श्रुतिकीरति अभिराम ॥ ७२॥

चौ०--सुंदरि सुता मांडवी नामा ❀ सो भरतहि व्याही सुखधामा॥ पुनि कन्या उर्मिला अनूपा ❀ व्याहि दई लछमनहि सुभूपा७३॥ जोश्रुतिकीर्तिनाम वर कन्या ❀ सो व्याही रिपुहनकहँ धन्या व्याहे राम सरिस तिहुँ भाई ❀ मुदितजनक दशरथदुहुँराई॥७४

In Public Domain. Sarayu Foundation Trust, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो०—इहि विधि भयोविवाह, राम सहित तिहुँ बधुको ॥
बाढो परम उछाह, महासुखी चर अचर सब ॥ ७५ ॥
तब नृप जनक उदार, हृदय हुलास सकोच युत ॥
दायज दियो अपार, सकल अलौकिक वस्तुते ॥ ७६॥

घनाक्षरी कावित्त।

वच्छ युत धनु कामधेनु सम पंचलच्छ दंती श्याम श्वेत दश लच्छ मद भीने हैं॥हरित सुरंग रंग रंगके तुरंग कोटि स्यंदनसपाद कोटि हेमके नवीने हैं ॥ शिबिका अमोल रत्नजडित सुसप्त कोटि दासी दास अमित अनूप जे प्रवीने हैं ॥ बासन वसन भूरि भूषण अपार साज,रसिकविहारी ये विदेह नृपदीने हैं॥७७॥

सो०—जिते जनक नृप दीन, तिते सकल पुनि और बहु ॥
दासी दास विहीन, किये दान अवधेश बहु ॥ ७८ ॥
जितीकरी बकसीस, अवध नृपति हुलसायके ॥
ताहूते गुण बीस, साज सकल पूरति भयो ॥ ७९ ॥
याही बिधि दुहुँ राज, पागे परम प्रमोदमें ॥
अमितबार बहुँ साज, देत सकल पूरित तऊ ॥ ८०॥
दुहूँ भूप कर दान, देखि सकल सुर नर चकित ॥
भेद न कोऊ जान; सिय प्रभाव प्रगटो कहा ॥८१॥
छायौ अमित अनन्द, सीताराम विवाहको ॥
मुदित नारि नर वृन्द; जैजैजै सब करत हैं ॥ ८२ ॥
पुनि सुवासिनी नारि, दूलह दुलहिनि चारहू ॥
सुन्दर समय निहारि, कर गहि कुहवर लैगई ॥८३ ॥
लै रनिवासमँझार, कियो नेग लहकौरिको ॥
गावैंगीत सुढार,रीति सिखावैं दंपतिहि ॥ ८४ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

कलित कँठोरा स्वच्छ हीरक अमोल गोल तामें क्षीर ओदन सुधारो सुखहेतहै॥होतलहकौरि नेग आनन्द अपार छायोलगत सु-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हायो अति सकल निकेतहै॥रामसिय शोभा अविलोकितिहि औ-
सरकी भाषिवेको हरषि हिलोरहिय लेतहै ॥रसिकविहारी जनुचंदते
पियूष लैलै रतिसुख मैनरति मैन मुख देतहै ॥ ८५ ॥

सो०–इमि बहु सहित उमंग, व्याहरीति सबही भई ॥
जनक सदन रसरंग, छायो नेह अपारलखि ॥ ८६॥
पुनि चारहु वर बंधु, पितु ढिग आये सकुच युत ॥
दशरथ नृप सुखसिंधु, निरखि हीय प्रमुदित भये॥ ८७ ॥
बहुरि भई जिवनार, षटरस व्यंजन चतुर विधि ॥
वरणि लहैं को पार; सो सब अमित अनूप सुख ॥८८॥
गारी विविध प्रकार, गावैं तिय आनंद भरी ॥
हास विलास अपार, भये भई जिवनारवर ॥ ८९ ॥
करि भोजन सानंद, एक सरिस सब छोट बड़ ॥
संयुत सुत सुखकन्द, आये नृप जनवासमें ॥९०॥
नृत्य गान चहुँ ओर, होत कुतूहल विविध बहु ॥
मचो नगरम शोर, घर घर होत अनंद अति ॥९१ ॥
इहि विधि राम विवाह, भयो भये प्रमुदित सबै ॥
प्रतिदिन होत उछाह,दोऊ दिशि आनन्दमय ॥ ९२॥
भोजन दान विनोद; गीतवाद्य कौतुक विविध ॥
हास विलास प्रमोद,होत रहत नित रैनि दिन ॥९३॥

दोहा–कौसल पुरवासी सब, भूलिगये निजधाम ॥
मिथिला अवध लखातयक, मुदित रहै वसुयाम ॥ ९४ ॥
होत जनकादीशिते सदा नित नूतन सतकार ॥
राम विवाह अपार सुख, वरणिलहै को पार ॥ ९५ ॥

इति श्री० रा०र० वि०वि० विवाह वर्णनो नाम
अष्टमो विभागः ॥ ८ ॥

सो०–प्रातसमैसिय सियमात, बोलि पठावत बन्धु चहुँ ॥
सखन सहित नित जात, करत कलेऊ मुदित मन॥ १॥

In Public Domain. Sharda Archive. Digitized

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लक्ष्मीनिधि अभिराम, जनक राजके सुत विदित ॥
तिनकी तिय मति धाम, सिद्धा नाम ललाम अति ॥२॥
दोहा--सो चारहु नृपनंद को, सिद्धा सहित सनेह ॥
संग सखिन युत लैगई, कर गहिकै निजगेह ॥ ३ ॥
वर आसन सनमान करि, बैठारे नृपलाल ॥
हास विलास विनोद बहु, करन लगीं सब बाल ॥ ४॥

घनाक्षरी कवित्त।

बोली एक वाम श्यामनाम राव रोहै राम याको अर्थ सकल समर्थ इमिलायो है ॥ सबमें रमै जो वही रसिकविहारी राम सो सुनि हमारे हिय अति भ्रम छायो है ॥ सकुच न राखौ नेक सत्य बात भाषौ वेगि आपने सबै हैं इतै कोऊ ना परायो है ॥ सबमें रमौ त्यौं रमौ भगिनी सुमातनमें नाम गुण है के वंशहीमें होत आयो है ॥५॥ बोले रघुलाल निमि कुलकी निहारौ चाल जानैं हम हाल सब जैसे मिथिलाके हैं ॥ रसिकविहारी रीति भारी है तिहारी यह एक नामहीते काम राखत सदाके हैं ॥ अंबके जनक वेई जनक कुटुंबहूके जनकपुरीके वेई जनक सभाके हैं ॥ जातके जनक वेई भ्रातके जनक वेई तातके जनक वे जनकसुताके हैं ॥ ६ ॥ कहत बधूटी एक हम यौं सुनी है लाल सुनि प्रगटाये चार सुत अवधेशके ॥ दूजी हँसि बोली भानुवंशी बल हीन होत आली इनके तौ यही ढंग हैं हमेशके ॥ बोले सुनि श्याम तुम याही भ्रमते सुधाम देखो बल नृपति बुलाय देश देश के ॥ रसिकविहारी नारि मिथिलाप्रवीन सारी जैसी सुनी तसी भौन देखी मिथिलेशके ॥७॥ बोले हँसि भरत सुनौजूसिद्धिप्यारी नेक बात हम बूझैं सो बतावो बहरावोना ॥नारीको विवाह नारी संग या तिहारी रीति कौन सुख भारी वेगिभाषौ सो सकावोना लक्ष्मीनिधि सिद्धि तिय नामहैंप्रसिद्धयह यह सिद्धिकाज सिद्धि विधि हमते दुरावोना ॥ रसिकविहारी गुण मंत संत पुत्र वधू इत है इकंत तंत कहत लजावोना ॥ ८ ॥ सिद्धि पुनि बोली बैन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनिये कमल नैन सीखे रघुवंशी गुण सकल प्रवीन तें ॥ सबसें अनोखौ चोखी चातुरी चलावैं यह भगिनी सुता दै काम लेत हैं ऋषीन तें ॥ रसिकविहारी कही लखन न कोऊ काज साधक उदंड निमि वंशके बलीन तें ॥ बलते बनैना कल छलते बनैना तब हलते सलोनी सुता काढत जमीन तें ॥९॥ कोऊ सखी बोली अली सुंदर सबै हैं तऊ कौशला दुलारे क्यों सुरूप सरसाये हैं ॥ कही तब कौऊ कीन जानै महरानी भौन कीनो रतिनाथ गोन सोई छबि छाये हैं॥ रसिकविहारीबाल कोऊ हुलसाय भाषीमधुर सुबैन कैसे बोलत सुहाये हैं ॥ कोऊ हँसि बोली याते बोल अति मीठे भये इनकी सुमाय इनें खीर खाय जाये हैं ॥ १० ॥

सवैया—कवित्त ।

बोले तबै रिपुसूदन यों जिय भाये तुमें यह क्यों पहिचानै॥
संग चलो सबही जुरिकै हम सत्य सनेह तबै तुव जानै ॥
जो न चलौ तौ कछू घरहीं सतकार करौ अतिहीमन मानै॥
हैं अनव्याहे किशोर घने रसिकेश सखावे कहो इत आनै ११
वेगहि सिद्धि कही हँसिके निमिवंशीकहा गुण रावरे गावैं ॥
सो रसिकेशकरौ जिहिते मिथिला पुर वासी सबै समुझावैं॥
चारन नंद अनंद समेत दई हमतौ तिहिते हुलसावैं ॥
होंय तिहारी जिती भगिनी तिन देहु विवाहि इहाँसुखछावैं१२
राम कही सिधिसों मुसक्यायकै नारि घनी रघुवंशिहिचाहै ॥
हौं निमिवंशी महा तपसी तिय एकहीको वरियाँई निवाहैं ॥
याते न राखौ विचार कछू रसिकेश बुलावहु वेगि कहाँहैं ॥
होयँ जिती मिथिलेश सुता हम चारहुबंधु तिती सबव्याहैं१३
सिद्धि कही तब श्याम सुनोबहु तीव्र भये जिय चैन लहैना॥
याते जुहो रसिकेश भली इक तौ पुनिदूजिहि पाणि गहैना॥
नारि घनी जिहिके तिहिके मन और कछू वर चाह चहैना ॥
ताहू पै सोरस भंग महा सब माहिं समान सनेह रहैना॥१४॥
सो सुनिकै रघुराय कही है सही यह पै सब एकसेनाहै ॥

कोउ लखैं सुख स्वारथको अरु कोउ घनो शुचिप्रेमहिंथाहैं॥
सुंदरि सिद्धि सुबैन सुनौ कछु नीकोबुरो जिय रंच न चाहैं॥
ऐसो सुभाव परो है सदा हमतौ हिय सत्य सनेह निवाहैं १५॥
राजकुमारके बैन सनेह भरे सुनिकै सबही उमगानी॥
प्रेम प्रवाह बढो हियमें तब सिद्धि कही गहिकै मृदुपानी॥
लाल निहोरति हौं तुमको मम चूक क्षमौ अति नारि अयानी॥
मोहिंनभूलियो श्याम सुजान कबौंरसिकेशसदा निजजानी १६
तिय एक हिये उमगाय सुधायकै आय दुहूँ पदपंकजगहे॥
सकुचाय कछू अकुलाय सकाय सुनेह बढाय सुबैन कहे॥
हम रावरे संग चलैं अबतौ जु वियोग कलेश न जै है सहे॥
रसिकेशजुपै तजिजैहौ लला छिनमें सुनिहौ नहिं प्राणरहे १७॥
करजोर निहोर कही इक लाल विहाल करी सिगरी तियको
मृदुबैन सुनाय छटा दरशाय सनेह लगाय हरो हियको॥
रसिकेश कियो जिमि छोहघनो तिमिमोह सदारखियोजियको
न सुहाय विहाय तुमैं रघुराय धरावहि धीरकहौ वियको १८॥

दोहा--सुनि सिद्धा बोली विलखि, जिय सनेह सरसाय॥
हेली इनके हीयमें, निठुराई दरशाय॥ १९॥

कुण्डलिया छंद।

जाके नामहिं लेतहीं, मोह सकल मिटिजात॥
सुत वित गृह तिय मीतसे, फेरि न प्रीति रहात॥
फेरि न प्रीति रहात, दुखसुख सम दुहुँ सोवैं॥
लोक और परलोक, चाह आशा सब खोवैं॥
रसिकविहारी राम जपत, ममता नहिं ताके॥
नेह ताहि क्यों होय, नाममें यह गुण जाके॥ २०॥
लागै जाके हीयमें, प्रिय वियोगको तीर॥
आप सरिस सोई तबै, लखै पराई पीर॥
लखै पराई पीर हिये दाया कछु लावै॥
ये वे पीर सुवीर जिये, शंका कह आवै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रसिकविहारी सहज चाप भंजो अनुरागैं ॥
इनै विरहको भार कहो, भारी किमि लागै ॥ २१ ॥
दोहा–यों कहि सिधि पुनिश्याम दिशि,हेरि नीरभरिनैन॥
लै उसांस बहु नेह युत,बोली मंजुल बैन ॥ २२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सरससनेहसने मधुर सुधासे वैन मंद मुसक्याय फेरि कबधौं सुनावोगे॥रसिकविहारी बलिहारी या तिहारी छबि मंजुमनहारी फेरि कब दरशावोगे॥रूपकी उपासी हमैं दासीजानि खासी लाल यौंही फेरि कबधौं अनंद उर छावोगे॥ येहो श्याम सुन्दर सुजान प्राणप्यारे छैल सांचि कहो फेरि मिथिलामें कब आवोगे॥ २३॥
दोहा–ताछिन बोली एक तिय,सुनौ छबीले लाल ॥
यह अधार है प्राणकी, प्रिया जानकी बाल ॥ २४ ॥

सवैया कावित्त ।

है सबको अति नेह सिया महँ सो! रसिकेश विलंबनलैयो॥
बारहिं बार बुलावहिंगे इहिते मिथिलेश ललीही पठैयो॥
फेरि हिये हुलसाय लला मिथिला पुरबासिनकोसुखदैयो॥
राजकिशोर सदा तुमहीं इत सीतहि आप लिवावनऐयो॥२५॥
सत्य सनेह सने सुनि बैन कहै अनुराग भरी वर नारी ॥
देखि दशा तिनकी रघुनंद पगे दुहुँनैन भरे सुख वारी ॥
धीरज दै तिन श्याम कही रसिकेशरहौसबभाँति सुखारी ॥
ज्यों तुम मोहिं धरो उरमें तिमि हौं सबही अपनेहियधारी२६
आवहिंगे हम बार घनी मिथिला रसिकेश लहैं सुख भारी ॥
ऐसो सनेह को ठौर न और कहूँ जगमाहँ रुचै जहँगारी ॥
सत्य विचार करौ अपने अपने उर जानतिहौ गति सारी॥
होय कोऊ नरनारी सदातिहिलागतहैससुरारपियारी ॥२७॥
दोहा--इहि बिधि सुख सरसाय बहु, कहैं परस्पर बैन ॥
डीठ बचाय सखीन दिशि,सिद्धि करी दृगसैन ॥ २८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पाय सिद्धि रुख तीयगन, गहेबंधु चहुँधाय ॥
बहु विनोद भरि मोद सब, करन लगीं हुलसाय॥२९॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कोऊ नारि सहित उमंग रंग डारैं अंग कोऊभालबेंदीदै तियाके साज साजै हैं ॥ कोऊ गुलचायकै कपोल मुख चूमै धाय कोऊ आय औचक गुलाल मलि भाजैहै॥ कोऊ गाय गारी करतारीदे विलोकैं रूप कोऊ दूरहीतेंफूल घालैं फेरि लाजैहैं । रसिकविहारी कोउ दुलही बखानि भेट करहिं अनंद रघुनंद सुखकाजै हैं॥३०॥ सिद्धि हुलसाय आय वीरी मुखदीनी फेरि अतर लगायो अंग वसन सुरंगमैं। गजरा प्रसूननके चारूपहिराये लखि लाल हरषाये बोल आनँद उमंग मैं॥तुम अलबेली चारहूके जयमाल मेली काह यह कीनो छकिनेह रसरंगमें।रसिकविहारी सुकुमारी अब साँची कहौ चारौ बीचरैहौ कै रहोगी एकसंगमें ॥ ३१ ॥सुनि सकुचाय सिद्धि बोली हँसिये हो लाल जारौ नृप लाल बहु ख्यालनमें तीखेहौ।नीके श्यामगोरे हौन कोरे रस बोरे छैल कोऊ नाहिं थोरे भेष भोरे शुद्ध दीखे हौ ॥रसिकविहारी औध नारी है प्रवीन सारी तिन ढिगजाय जाय सब रस चीखे है।नैननके सैननके बैननके चैननके पूरे रघुचंद छलछंद बंद सीखे हो ३२॥ श्याम हँसि बोले हम सीखे वह सीखे जो न सीखे तिन सीखबेकी चाह उरलाये हैं॥रसिकविहारी गुणकीरति तिहारी सुनि सीखिबेको चारौ बंधु आज इत आये हैं ॥ जो पै कृपा करिकै सिखावो अधिकावो मोद जग यश छावो बहु दूरि ते सिधाये हैं। कहो हियराखैंकहौ भाषैंअभिलाषैंसब पूजैं रावरेसेगुण मंत संत पायेहैं३३

दोहा–इहि विधि हास विलासमें, मध्य दिवसभो आय ॥
समय निरखि पितु निकटको,हरषि उठे रघुराय॥३४॥
पुनि सिद्धा रुखपायके, सब धाईं सखि वृन्द ॥
द्वार आय वर सखनकों,गहि लीने सानंद ॥ ३५॥
भरि भरि रंग गुलाल सों,करि करि नारि सिंगार ॥
अतर पानदै मान युत,पहिराये उर हार ॥ ३६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अमित अली चहुँ बंधुकों,सखन सहित लै संग ॥
यथा रूप जनवासमें,लाई सहित उमंग ॥ ३७ ॥
अपर सखन को टेरि कै, सौंपे राजकुमार ॥
कही लेहु वर वीर ये,सकुचे सकल निहार ॥३८॥
इत सबही मंजन कियो,सजे अनूपम अंग ॥
सिद्धि निकट सब उत गई,आली भरी उमंग ॥ ३९ ॥
सब रघुवर गुण रूप मद,छकीं तीय हुलसाय ॥
कहति परस्पर रुचिसरिस,उर अभिलाष दृढाय ॥ ४० ॥
कोउ कहैं सखि होउँ जो अवध महलकी धूरि ॥
तौ परसों नित श्यामके,चरण सजीवन मूरि ॥ ४१ ॥
कोउ कहैं सखि होउँ जो, अवधनगर तरु पात ॥
तो परसौं तन लालको,कुंजन आवत जात ॥ ४२ ॥
कोउ कहैं सखि होउँ जौ,अवधनगर मधि मोर ॥
उडि महलन पै बैठितो,निरखौं नवल किशोर ॥४३
कोउ कहै सखि होंउँ जो,अवधबाग बिच फूल ॥
तौ सुमाल मिलि लाल हिय, लगौं मिटै सब शूल ॥४४॥
कोउ कहै अलि होउँ जो, अवध मध्य मृग रूप ॥
तौ खेलौं सँग लाडिले,शोभा लखौं अनूप॥४५॥
कोउ कहैं होऊँ अलि जो;श्रीसरयूमधि मीन ॥
तौ मज्जत परसों लखौं रघुवर अंग नवीन॥४६ ॥
सिद्धि कही तब सखि सुनौ,मैं यह चहौं सदाहि ॥
बसै श्याम मो हीय नित,छिनहु नहीं बिलगाहि॥४७॥
इक सखि बोली प्रेम भरि बडभागिनि है सीय ॥
जाहि अनूपम वर मिलो;रघुवर सों कमनीय ॥४८॥
येही विधि सब सिद्धि युत,छकीं नेहरसरंग ॥
निशिदिन रघुवर रूप गुण,ध्या वैं सहित उमंग॥४९॥
जनक भवन यौं रैनि दिन,नित प्रति होत उछाह॥
सब हरषे जबते भयो,सिया रामको व्याह ॥५० ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० हासविलासर्णनो-
नाम नवमोविभागः ॥ ९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोटक छंद ।

इहि भांति घने दिन बीत गये ॥ सबही जन प्रीति अधीन भये ॥
नहिं काहु कछू सुधि धामहुकी ॥ तनकी धनकी सुत वामहुकी॥ १ ॥
बहुबार कही अवधेश जऊ ॥ न विदेह बिदा तिन कीन तऊ ॥
तब कौशिक भूपहि आय कही ॥ अब राज बिदा दृढ लेन चही॥२॥
सुनिके मिथिलेश कहो वर है ॥ मिथिला अवधेशहिको घर है ॥
पुनि जो कछु राज रजाय करी॥सबही विधिसो हम शीशधरी ॥३॥
कहि यौं पुनि साज सजाय सबैं ॥ पठये चहुँ बंधु बुलाय तबै ॥
यह बात सुनी पुर लोग जहीं ॥ अकुलाय उठे अतिहीं सुतहीं ॥४॥
नर नारि सबै यह जीय चहैं ॥ रघुचंद इहां अब नित्य रहैं ॥
पुरवाम परस्पर बोलति हैं॥ अभिलाष हिये वह खोलति हैं ॥ ५॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कोऊ कहैं हेली नीज दोऊमें श्रवण कुंड वचन सुधाते हौं भरौंगी जोरि बूंद बूंद ॥कोऊ कहै हौं तौ सखी गुण गण साँवरेको उरबिचधारौं कंठ माल मधि गूंद गूंद ॥ कोऊ कहैं रसिकविहारी छबि नीलमणि धरि हौं हिये सो दृग तारनमें फूंद फूंद॥कोऊ कहै वे तौ अलि अवध सिधावैं याते हम गहिराखैं मन मंदिरमें मूंदमूंद॥६॥

तो० छंद ।

इहि भांति सबै तिय बैन कहैं ॥ रघुनंदनको न वियोग चहैं ॥
जुरिकै वनिता रनिवास चली ॥ लखिये छबि औरहु आज अली७
इहि भाँति चहूँ बहु शोरबिछ्यो॥अब आज बिदाकर साजभयो॥
सब नैनन नीर विमोचत हैं ॥ किहि भांति रहैं इमि सोचतहैं८॥
कह बालक वृद्ध कहा तरुणा ॥ मिथिला सब छाय गई करुना॥
पशु पक्षिहुते अतिहीं विलपैं ॥ मनही मन सो चभरे कलपैं॥९॥
सिय मातु इतै सिय गोद लई ॥ कारि हाय विलोकि उसास लई॥
बहु नैननते जलधार चली॥ तिहि औसर धीर अपार चली १०
तब रानिहि धीर धराय अली॥बहु बात कही समुझाय भली॥
सिय मात महा मनमोह मली॥उरलाय लई करि छोह लली ११

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि हीय लखी जगरीति यही ॥ इमि सोचि कछू जिय धीर रही ॥
जननी मुख चूमि कपोल गहे ॥ तिय धर्म सिखाय सुबैन कहे ॥ १२
तिहि औसर आय विदेह तहाँ ॥ लखि सीतहि कीन विलाप महाँ ॥
छिनही छिन अंक लगावत हैं ॥ बहु नैनन नीर बहावत हैं ॥ १३ ॥
नृपनीति सुरीति सिखावतहैं ॥ उमगावत हैं अकुलावत हैं ॥
सुविदेह विदेह विदेह चहै ॥ तब कौन विदेह विदेह कहै ॥ १४ ॥
तिहि औसर तीन हुँ बालतहाँ ॥ द्रुत आय मिलीं करि शोर महाँ ॥
रनिवास जुरी तिय वृन्द घनी ॥ दृग नीर ढरैं सब शोक सनी ॥ १५
चहुँ राजसुता सब नारिनके ॥ उर लागि रहैं सुकुमारिनके ॥
छिन धाय मिलैं गहि मातनको ॥ विलपाय मिलैं छिन भ्रातनको ॥
दुहुँ बंधु नरेश समाज सबै ॥ लखि सो गति होय अधीर तबै ॥
पुनि लाय हिये समुझाय घनी ॥ अपने अपने उर धीर ठनी ॥ १७ ॥

पद्धरी छंद ॥

तिहि समय चहूँ नृप सुत ललाम । आये अनंद युत जनक धाम ॥
मिथिलेशरानि सनमान कीन । भोजन कराय बहु साज दीन १८
बहु भाँति कीन विनती अपार । सौंपी सुतान करि अमित प्यार ॥
मिलि चहूंबंधु सबसों सप्रीति । परितोष यथोचित रीति नीति १९ ॥
आये उताल जनवास माह । भेजो दहेज पुनि जनकनाह ॥
बहु साज वित्तदासी सुदास । दीने अपार नृप युत हुलास ॥ २०
नरनारि नगरवासी अनेक । जिन उचित सरस इकतें इकेक ।
तिन अमित वस्तु सिय रामहेत । दीनी सप्रेम लीनी सहेत ॥ २१ ॥
आये समाज युत अवधनाथ ॥ मिथिलेश मिलै गुण वरणिगाथ ॥
बहु दान मान दुहुँ दिशि अपार । कीने नरेश दोऊ उदार २२ ॥
दासी सुदास धन अमित साज । दीने बहोरि मिथिलाधिराज ॥
शुभ समय जानि पुत्रिन बुलाय । दीनी चढाय रथ अंक लाय २३ ॥
इहि भाँति बिदा कीनी नरेश । वर वसन विभूषन शुचि सुदेश ॥
नृप सकल जान कहँ उचित दीन ॥ युत प्रीतिसबहिं परितोषकीन
इमि अवधनाथ गमने सुधाम । युत पुत्रवधू चहुँ सुत ललाम ॥
पहुँचाय फिरे मिथिलानरेश ॥ बहु कहत अवधपति गुण सुदेश ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करि राम सीय सुधि बार बार ॥ सब हीय नेह उमगै अपार ॥
पुनि जनक राज सुत दान मान॥तोषे समस्त याचक महान॥२६॥
पुनि बिदा किये सब लोग भूप॥वर उचित रीति संयुत अनूप ॥
चहुँ सुयश शोर भो देश देश।जैजैति जैति मिथिला नरेश॥२७॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० श्रीजनकनंदिनी--
बिदावर्णनो नाम दशमोविभागः ॥१०॥

चौ० अवधनाथ उत अवध पधारे ❀ कहत जनक गुण मुदित अपारे।
पहुँचे आय अयोध्या माहीं ❀ रचना भई अमित चहुँ पाहीं॥१॥
मंगल साज साजि वर वामा ❀ करत गान आईं नृप धामा ॥
बजत बाजने परम सुहाये ❀ सुत सुतवधुन सहित नृप आये॥२॥
मोद भरी सब मात सिधारीं ❀ परिछन करि चहुँ वधू उतारीं॥
डारि पावडे मंदिर लाई ❀ जुरीं नारि बहु हिय उमगाई॥ ३ ॥
देहिं अमोल नेग वर नारी ❀ मुख देखैं पट घूँघट टारी ॥
चारहु बधू निरखि सब रानी ❀ हिय अपार आनँद हुलसानी४॥
नेग देन हित हिय सकुचाहीं ❀ तिहूंलोक संपति कछु नाहीं ॥
हिय लजाय औसर अनुसारा ❀ भूषण दिये अमोल अपारा॥५॥

दोहा-पुनि रानी चहुँ सुत वधुन, प्रीति अनंद समेत ।
सुन्दर मुख दिखरावनी, दीने सुभगनिकेत ॥ ६ ॥
पुत्रवधू जहँ चारहू, प्रमुदित सहित उमंग ।
विलसे रहसि निकेत सो, निज निज प्रीतमसंग ॥ ७ ॥
कनक भवन वर कैकयी; सियहि दियो हुलसाय ।
दियो सुमित्रा मांडविहिं; मुकर भवन उमगाय ॥ ८ ॥
हरषि उर्मिलहि कौशला, फटिक भवन सुचिदीन ।
चंद्र भवन श्रुतिकीर्तिको, दियो मुदित सुख भीन ॥ ९ ॥

चौ०-पुनि करि निवछावर बहु वारा ❀ दई सासु बकसीस अपारा॥
लोक वेद कुलरीति अनेका ❀ कीनी सरस एकते एका ॥१०॥
निशि जागरन करैं सब नारी ❀ होत गान कौतूहल भारी ॥
पूजन दान मान जिवनारा ❀ करैं अनेक उचित व्यवहारा ॥११॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इहि विधि सब अनंद महँ फूले ❀ रैनि दिवस कब होय सुभूले ॥
राज भवन अरु नगर मँझारा ❀ चहुँ बहु होत मंगलाचारा १२
शुभ ग्रह योग वार दिन जानी ❀ तब कंकन छोरन विधिठानी ॥
सकल हास सन बंधिनि नारी ❀ कहैं वचन परिहास सुखारी १३॥

घनाक्षरी--कवित्त।

बोली एक नारी सुनौ अवधविहारी यह शंभु धनु है न जाहि वेगै गहि तोरौगे ॥ रसिकविहारी हौं तिहारी चतुराई तब जानोंगी सुकंकनकी गांठ जब छोरौंगे ॥ ताछिन छबीली एक दूजी हँसि बोली श्याम आज धीरताई वीरताई सब भोरौगे ॥ तुम पै न तौ लों कबौं छूटि है छबीलेछैल जौलोंनाहिं जनकसुताको कर जोरौगे ॥ १४ ॥ फेरि इक बोली हम जानी मिथिलामें जाय नीकी नौलनारिनके चित्त चोरि लायेहौ ॥ याते बारम्बार कर कंपत तिहारो लाल करत ढिठाई पैहियेमें भय छाये हौ ॥ कछु जनि मानौं नेक भीति जो भई सो भई हेरौटुकप्यारे क्यों लजाय शिर नायेहौ॥ मति मुखमोरौ वेगि कंकनको छोरो संक छोरौ सब कौशलपुरीमें अब आयेहौ ॥ १५॥ पुनि इक वाम यौं कहीहो अभिराम श्यामकौशिक कृपाते यश भारी बहु लूटो है॥ नृपति कुमार हौ सदा ते सुकुमार फेरि खायो तिय जूठो तब और बल खूटो है॥ हम अबला पै रावरे ते सबलाहैं तऊ जानो पुरुषारथ तिहारोसब झूठो है॥ रसिकविहारीशंभुचाप किमि टूटो कहौ तुम पै अबैलों नेक कंकन न छूटो है ॥ १६ ।

दोहा-इहि विधि हासविलास बहु, करैं मुदित मन वाम ॥
सुनि सकुचाय सुवेगहीं, कंकन छोरो राम ॥ १७ ॥
योंहीं प्रति दिन होत बहु, आनँद अमित उछाह ॥
भोजन दान विनोद नित, निशिदिन रहत उमाह ॥ १८॥
पुनि दशरथ महिपाल मणि, यथा उचित सानंद ॥
सकल अयाची करिदये, जिते सुयाचक वृन्द ॥ १९ ॥
अरु जे जन चहुँ देशके, आये राम विवाह ॥
बहु दिनते प्रिय पाहुने, हठि राखे नरनाह ॥ २० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि सब रुचि लखि अवधपति, संयुत प्रीति सुनीति ॥
किये बिदा सन्मान करि, बहु विधान नृप रीति ॥२१॥
कौशिक मुनिहि निहोरि पुनि, राखे राम नृपाल ॥
प्रीति प्रतीति अपार वश, रहे अवध कछु काल ॥२२॥
पुनि मुनि मुनिन समाज युत, नृप रामहि समुझाय ॥
भये बिदा सानंद अति, यथा उचित सतभाय ॥२३॥
नृपरानी सुत सुत वधू, सकल परे मुनि पाँय ॥
दई अशीश प्रमोद भरि, ऋषिन सहित ऋषि राय॥२४॥
पुनि वसिष्ठ आदिक सकल, मुनिहि मिले युत प्रेम ॥
अपर समाज प्रणाम करि, आशिष लहो सुक्षेम ॥ २५ ॥
पुनि वशिष्ठ सुत सचिव नृप, कछुक दूर मुनि संग ॥
गये फिरे पहुँचाय गृह, आये सहित उमंग ॥ २६ ॥
रहत सदा सानंद सब, पुर परिजन समुदाय ॥
सुत सुत वधू निहारि नित, नृप रानी हुलसाय ॥ २७ ॥
जे तिय मिथिला वासिनी, नृप सुतानके संग ॥
आईं ते सखि गणरहैं प्रमुदित भरी उमंग ॥ २८ ॥
जनक लली प्रगटी जबै, जनक नगरमें आय ॥
जनम लियो मिथिला तबै, सकल सखी समुदाय ॥२९॥
यथा योग निमिकुल सदन, लखि निजरुचि अनुसार ॥
सुरी किन्नरी आदि बहु, भईं नरी सुविचार ॥ ३० ॥
ते सिय संग विनोदिनी वय गुण रूप समान ॥
बाल सखीहैं आठ वर, प्यारी परम प्रधान ॥३१॥

दोवई छंद ।

चंद्रकला १ उर्वशी २ सहोद्रा३ कमला४ विमला ५ मानौ
चंद्रमुखी ६ मेनका ७ सुरंभा ८ आठ मुख्य ये जानौ ॥
प्यारी सखी विदेहसुताकी बाल संगिनी सोहैं ॥
इनहिं आदि सहचरी घनी जिहिदेखि शची रति मोहैं ३२

दोहा—सप्त सप्त यूथेश्वरी, इक इक सखि स्वाधीन ॥
हैं सहस्र यूथेश्वरी, प्रति अनुचरी प्रवीन ॥ ३३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सानुचरी यूथेश्वरी, संयुत सखी सुढंग ॥
दीनी जनक दहेजते, आईं सियके संग ॥ ३४ ॥
पुनि इत कौशल्या सियहि, दई सखी दश और ॥
ते मिलि अष्टादश भईं, सब सखीन शिर मौर ॥ ३५ ॥

दोवई छंद ॥

प्रथम-चारुसीला १ पुनि-राधा २ अरु-सुभगा ३ लषक्षेमा ४॥
मृगलोचना ५ मालिनी ६ हरिणी ७ कहि-सुलोचना ८ प्रेमा ९
सुधामुखी १० ये विशद सखी दश दई कौशला रानी ॥
सरिस रूप वय गुण सप्रीति सब जनकसुता सुखदानी॥ ३६॥
दोहा-दशहू प्रति यूथेश्वरी, आठ आठ हैं और ॥
तिन सबही प्रति किंकरी, द्वै द्वै सहस सुतौर ॥ ३७ ॥
सो०-सखी अष्टदश सोय, सहस यूथ यूथेश्वरी ॥
सबै मुदित मन होय, बढ़ी परस्पर प्रीति बहु ॥ ३८॥
मिथिला वासिनि जोय, अरु कौशल पुर वासिनी ॥
एक प्राण तनु दोय, यौं सम सबहि सनेह भो ॥ ३९ ॥
दोहा-सखी अष्टदश सीयकी, प्यारी परम सुजान ॥
पुनि षोडश ये औरहू, सिय पियकी सुखदान ॥ ४० ॥
ये षोडश वे अष्टदश, सकल सखी सुखदाम ॥
दम्पति सेवकिनी सदा, अंतरंगिनी जान ॥ ४१ ॥
कनक भवन वर विशद है, जा सम सदन न आन ॥
सीता राम विहार थल, परमानन्द प्रधान ॥ ४२ ॥
महल रहस्य रहस्य सखि, अंतरंगिनी जोय ॥
समय रहस्य रहस्यमें, रहैं तहां अलि सोय ४३ ॥
यदपि सकल दंपति सखी, तदपि विनोद प्रकार ॥
पिय षोडश सिय अष्टदश, करि राखी निरधार ॥ ४४ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

हेमा १ पद्मगंधा २ वरारोहा ३ चंद्रभागा ४ चारुचंद्रवती ५ हंसिनी ६ मनोरमा ७ उचारिये ॥ चंद्रावली ८ अलसा ९ सु-पद्मा १० मोहनी ११ विचित्र माधवी १२ सुभद्रा १३ गुणवल्लरी १४ निहारिये ॥ वीणाधरी १५ मोदवती १६ रसिकविहारी मंजु

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

षोडशअनूपअंतरंगिनीविचारिये॥दंपतिरहस्यअधिकारीसुखकारी
सदा कौशल किशोरकी सखी ये निरधारिये ॥ ४५ ॥
दोहा—पुनि षोडश षोडश लखौ, यूथेश्वरी प्रवीन ॥
एक एक सखिके निकट, रहैं सदा स्वाधीन ॥ ४६ ॥
सोहैं प्रति यूथेश्वरी, वर अनुचरी अनूप ॥
पंच पंच शत रहत हैं, परम प्रवीन सुरूप ॥ ४७ ॥
यूथेश्वरी सुकिंकरी, सहित सखी सुखदानि ॥
सेवैं दंपति रुचि निरखि, समै समै अनुमानि ॥ ४८ ॥
अपर तिहूँ भगिनीनकी, सखी अनेक प्रवीन ॥
आईं मिथिलाते बहुरि, इतहुँ रानि अलिदीन ॥ ४९ ॥
चौ०—भामा १रुक्मवती२शुभकारी❀सुमती३बहुरिचंद्रिका४नारी
ये चारों सुंदर गुणखानी❀सखी मांडवीकी प्रियजानी ॥ ५० ॥
चम्पावती १नंदिनी२वामा❀ मुदिता ३कुण्डली४सुगुण धामा॥
चारौं चारु अंग शुचिनारी❀सखी उर्मिलाकी अति प्यारी॥ ५१॥
सुभगसंयमी १उत्तम श्यामा२❀बहुरि मादिनी३छबिमयकामा४॥
चारहु प्रीय विशद गुणरूपा❀श्रुतिकीरतिकी सखी अनूपा५२॥
द्वै द्वै शत किंकरी सुनारी❀ प्रति सखीनकी सेवाकारी ॥
याविधिद्वादशसखीसदाई❀सिय तिहुँ भगिनी पास रहाईं॥५३॥
दोहा—ये सब जनक दहेजमें, दीनी पुत्रिन संग ॥
आईं अवध समाज युत, प्रमुदित भरी उमंग ॥ ५४ ॥
निज निज पुत्रबधून पुनि, दुहूँ सासु हुलसाय ॥
चार चार औरहु सखी, तिनहुँ दई सुखदाय ॥ ५५ ॥
सूर सुन्दरी १ सारिका, २ नेह मंजरी ३ जानि ॥
बाला ४ ये चारहु सखी, दई माडविहिमानि ॥ ५६ ॥
सखी गोकुला १ जोवना २, दीपावली ३ अनूप ॥
वृन्दा ४ दीनी उर्मिलहि, ये चारहू सुरूप ॥ ५७ ॥
साखा १ ज्वाला२ गर्विता ३, विशद कदंबा ४ देखि ॥
ये चारौ श्रुति कीर्तिको, दई सखी शुभ लेखि ॥ ५८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ये द्वादश सखियान प्रति, रुचिर अनुचरी और ॥
पंच पंच शत सकल हैं, विशद रूप गुण तौर ॥ ५९ ॥
अवधवासिनी और सब, मिथिला वासिनि तीय ॥
रहैं परस्पर प्रेमयुत, परम प्रमोदित हीय ॥ ६० ॥
चारहु नृपति सुतानकी, मुख्य सखी ये जान ॥
दासी दासी दासिका, ते न्यारी बहुमान ॥ ६१ ॥
आईं मिथिलाते तिया, ते सब सहित कुटुंब ॥
सो न्यारे पुनि इतर हैं, दासी दास कदंब ॥ ६२ ॥
निज निज स्वामिनिको सबै, सेवैं सहित सुरीति ॥
रहैं सकल सानंद नित, भीति प्रीति युत नीति ॥ ६३ ॥
चहूँवधू निज निज भवन, संयुत सखी समाज ॥
विलसैं परमानंद हिय, सुर दुर्लभ सुखसाज ॥ ६४ ॥
तिहुँ भगिनी निज सखिनयुत, सादर प्रीति बढाय ॥
रीतिनीति मय सीय की, सेवा करैं सदाय ॥ ६५ ॥
राखैं सिय भगिनीन पै, सादर सत्य सनेह ॥
रहै परस्पर प्रेम जनु, एक प्राण द्वैदेह ॥ ६६ ॥
वेद४बाण५अरु–चंद१रस६, भूमि१नैन अनुमान ॥
जनकसुता की सहचरी, येती मुख्य प्रमान ॥ ६७ ॥
वेद४बान५दृग२नाग८भुज२,गणपतिरदन १ विचार ॥
अंतरंग रघुचन्दकी, मुख्य सखी निरधार ॥ ६८ ॥
वसु८आकाश०अहि८ नैन२कहि,भाषी परम प्रमान ॥
तिहूँ सीय भगनीन प्रति, मुख्य अली ये जान ॥ ६९ ॥
नभ०शर५वसु८दृग२पंच५गुण३, ये सब सखी प्रधान ॥
अपरसुदासीवेद४रस६,मुनि७ग्रह९शशि१दृग२बान५ ।७०
पुनि जे सखि दासीनके,सकल कुटुंबी और ॥
तेऊ सेवक सिवकिनी,वर्णनको नहिं तौर ॥ ७१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीजानकीजीकी सखीनका निर्णय चक्र।

जुदीजुदी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी यूथेश्वरी	यूथेश्वरी नकी अनुचरी	सखीप्रति यूथेश्वरीनकी अनुचरी सब	सब सखी
१	चंद्रकला	७	१०००	७०००	१
२	उर्वशी	७	१०००	७०००	२
३	सहोद्रा	७	१०००	७०००	३
४	कमला	७	१०००	७०००	४
५	विमला	७	१०००	७०००	५
६	चंद्रमुखी	७	१०००	७०००	६
७	मेनका	७	१०००	७०००	७
८	रंभा	७	१०००	७०००	८

ये सब मिथिलासे आईं सो सखी हैं ५६०६४।

१	चारुशीला	८	२०००	१६०००	९
२	राधा	८	२०००	१६०००	१०
३	सुभगा	८	२०००	१६०००	११
४	क्षेमा	८	२०००	१६०००	१२
५	मृगलोचना	८	२०००	१६०००	१३
६	मालिनी	८	२०००	१६०००	१४
७	हरिणी	८	२०००	१६०००	१५
८	सुलोचना	८	२०००	१६०००	१६
९	प्रेमा	८	२०००	१६०००	१७
१०	सुधामुखी	८	२०००	१६०००	१८

ये सब अवधकी सखी हैं, जो सासुने दीनीहैं १६००९०॥

श्रीजानकीजीकी सब सखी मिथिला अवधकी २१६१५४॥ मिलायके इतनी हैं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीरघुनंदनजीकी सखीनका निर्णय चक्र ।

सखीनकी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी यूथेश्वरी	यूथेश्वरीनकी अनुचारी	सखी प्रतियूथेश्वरीनकी सब अनुचरी
१	हेमा	१६	५००	८०००
२	पद्मगंधा	१६	५००	८०००
३	वरारोहा	१६	५००	८०००
४	चंद्रभागा	१६	५००	८०००
५	चंद्रवती	१६	५००	८०००
६	हंसिनी	१६	५००	८०००
७	मनोरमा	१६	५००	८०००
८	चंद्रावली	१६	५००	८०००
९	अलसा	१६	५००	८०००
१०	पद्मा	१६	५००	८०००
११	मोहनी	१६	५००	८०००
१२	माधवी	१६	५००	८०००
१३	सुभद्रा	१६	५००	८०००
१४	गुणवल्लरी	१६	५००	८०००
१५	वीणाधरी	१६	५००	८०००
१६	मोदमती	१६	५००	८०००

श्रीरघुनाथजीकी सब सखी इतनीहैं १२८२५४ ॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीमांडवीजीकी सखीनका निर्णयचक्र।

जुदी जुदी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी अनुचरी	एकत्र गिनती सब
१	भामा	२००	१
२	रुक्मवती	२००	२
३	सुभती		३
४	चंद्रिका	२००	४
०	ये सब सखी मिथिला कीं हैं ८०४		०
१	सुरसुंदरी	५००	५
२	सारिका	५००	६
३	नेहमंजरी	५००	७
४	बाला	५००	८

ये सब अवधकी सखी हैं जो सासुने दीनी हैं २००४

श्रीमांडवजीकी सब सखी दोनों जगहकी इतनी हैं २८०८

श्रीउर्मिलाजीकी सखीनका निर्णयचक्र।

जुदी जुदी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी अनुचरी	एकत्र गिनती सब
१	चंपावती	२००	१
२	नंदिनी	२००	२
३	मुदिता	२००	३
४	कुंडली	२००	४
०	ये सब सखी मिथिलाकी हैं ८०४		०
१	गोकुला	५००	५
२	जोवना	५००	६
३	दीपावली	५००	७
४	वृन्दा	५००	८

ये सब अवधकी सखी हैं जो सासुने दीनी हैं २००४

श्रीउर्मिलाजीकी सब सखी दोनों जगहकी इतनी हैं २८०८

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीश्रुतकीर्तिजीकी सखीनका निर्णयचक्र ।

जुदी जुदी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी अमुचरी	एकत्र गिनती सब
१	संजमी	२००	१
२	श्यामा	२००	२
३	मादिनी	२००	३
४	कामा	२००	४
०	ये सब सखी मिथिलाकी हैं८०४		०
१		५००	५
२	ज्वाला	५००	६
३	गार्वेता		७
४	कदंबा		८

ये सब अवधकी सखी हैं जो सासुने दीनी हैं २००४

श्रीश्रुतिकीर्तिजीकी सब सखी दोनों जगहकी इतनी हैं २८०८

दोहा-इहि विधि चारहु नृप सुता, निज निज महलन माहिं ॥ सखिन सहित सादर सदा, परमानंद रहाहिं॥ ॥ ७२ ॥राजकुँवर वर चारहूँ, समय समय युत रीत ॥ सकल काज नित करत हैं, सहित प्रीत नृप नीत॥७३॥ बहु दिन बीते अवधमें, रहत अनंद समेत ॥ बहुरि भरत मातुल करी, नृपहि विनय लखि हेत ॥ ७४ ॥ तात बुलायो भरतको, जो दीजिये रजाय॥ तौ हम संग सिधावहीं, सहित शत्रुहनभाय ॥ ७५ ॥ सुनत युधाजितके वचन, दशरथ नृप हुलसाय ॥ भरत शत्रुहन बंधु दुहुँ, पठये साज सजाय ॥ ७६ ॥ दुहूँ बंधु मातुल सहित, पहुँचे केकय पास ॥ मिले रहे सादर तहां, सहित सुपास हुलास ॥ ७७ ॥ राम लषण इत अवधमें, रहत सदा हरषाय ॥ भरत शत्रुहनकी सुरति, नितहि करत दुहुँभाय॥७८॥रंगभवन रघुचंद ढिग, जुरत सखा हित बंधु ॥ करत विनोद विलास नित, उमगि उमगि हिय सिंधु ॥ ७९॥ राज काज मरयादमय, पितु अनुशासन पाय ॥ राम लषण दुहुँ करत हैं, यथा योग हुलसाय ॥ ८० ॥ राम रूप गुण धर्म बल, दान मान वर ज्ञान ॥ प्रीति रीति नृप नीतिको, बनत किये ही ध्यान८१

राम रीति अवलोकिके, मुदित सबै नर नारि ॥
सकल कहैं अवधेशके, चिरजीवो सुतचारि ॥ ८२ ॥
सुरपुर नरपुर नागपुर, नर नारिनके वृन्द ॥
राम सुयश सब गावहीं, नित प्रति परमानन्द ॥ ८३॥
राम दरश हित नित्य प्रति, आवत सुर नर नाग ॥
निरखि रूप गुण अतुल अति, कहैं धन्य नृपभाग ८४ ॥
मातु पिता तिय बंधु हित, पुर परिजन समुदाय ॥
रहैं सदा सानंद सब, छिन छिन सुख अधिकाय ॥ ८५॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० विवाहांतवर्णनो
नाम एकादशोविभागः ॥ ११ ॥

इति श्रीमद्रसिकविहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायनग्रंथे
विवाहचरित्रवर्णनो नाम तृतीयो विश्रामः ॥ ३ ॥

दोहा–कौशल पति दशरथ तनय, राम सकल गुणधाम ॥
जाको यश तिहुँलोकमें, छायरहो अभिराम ॥ १ ॥
करत राज मर्याद युत, रघुवर परम समर्थ ॥
समै समै साधत सबै, धर्म काम अरु अर्थ ॥ २ ॥
नीति रीति लखि रामकी, भूपति कियो विचार ॥
अब रघुवीरहि कीजिये, राजतिलक सुखसार ॥ ३ ॥
तब महीप गुरु सचिव हित, पुर परिजन बहु लोग ॥
जोरि सभा निज रुचि कही, कही सबै अति योग ॥ ४ ॥
मुदित नृपति आज्ञा दई, वेगि सजौ सब साज ॥
अविलोकौं निज नैन भरि, राम होय युवराज ॥ ५ ॥

चौ० भूप वचनसुनिसबहुलसाये ❀ वेगि सचिव शुभ साजसजाये
रचना भई विचित्र अपारा ❀ कौशलपुरनृप सदन मझारा ६
सुनि रघुवर कर तिलक प्रसंगा ❀ सकल मातु हिय बढी उमंगा॥
कौसल्या केकयी सुमित्रा ❀ करहिं दान मुद विविधविचित्रा ७
अपर मातु बहु वित्त लुटावैं ❀ राम तिलक लखिबे हुलसावैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुर नर नारिअमित हिमहरषे ❀ देव वृन्द मनहींमन करषे ॥ ८॥
रघुवीरहि नृप निकट बुलाई ❀ कहि रुचिराजनीति समुझाई ॥
पुनिगुरु कनकभवन मधिआये ❀ सिय रामहि संयम करवाये॥९॥
मुदित सकल साजें सबसाजा ❀ प्रात होय रघुवर युवराजा ॥
सीता लषण हीय सुख भारी ❀ परमानन्द सबै नरनारी॥ १०॥
कोउ न कछू देव गति जानी ❀ सब निज निज स्वारथ मतिठानी
है यक भरत मातकी दासी ❀ नाम मंथरातिहि मतिनासी ११॥
सो कैकेयीकी बुधि भोरी ❀ कपट कथा कहि करी ठगोरी ॥
दासी वचन मानिकै रानी ❀ कियोमानबहु कुमति सुठानी १२
लखि तियमानभूप अकुलाये ❀ भावी वश विचार नहिं लाये ॥
राम शपथ करिकहीनृपाला ❀ कहौ प्रियासो करौं उताला १३॥
राम शपथ संयुत नृप वानी ❀ सुनि कैकयी अधिकहरषानी ॥
जानी अब न तजैं प्रण राजा ❀ भयो समस्तसिद्ध निजकाजा १४
बोली मोअभिलाष जुकीजे ❀ द्वै वर देन कहे सो दीजे ॥
सुनि नृपकही वेगि किनभाषौ ❀ इती बात हितइमिमनमाषौ १५
तब तिय कही एक यह दीजे ❀ भरतहि राज तिलक वरकीजे॥
द्वितिय राम मुनिवेष बनाई ❀ चौदह वर्ष वसैं वनजाई ॥१६॥
रानी वचन सुनत महिपाला ❀ गिरे भूमिह्वै निपट विहाला ॥
लखि नृपदशा नारि झहरानी ❀ कही बहोरि विविधकटुवानी १७
सुनि महीप धीरज उर लाई ❀ तियहि अनेक भाँतिसमुझाई ॥
नहिं मानी तब नृप दृढ़जानी ❀ अबममम्रत्युआयनगिचानी १८
पुनि मूर्छित ह्वै दशरथ भूपा ❀ धरणी परे सु विह्वल रूपा॥
प्राण कंठगत कौशलराई ❀ विलपतही सबरैन बिताई १९॥
इत सबपुर परिजन नरनारी ❀ रामतिलक हितकरहितयारी ॥
सो न भेद कछुकाहुजनायो ❀ कहैं सकल अबऔसरआयो २०
ताछिनकीनो सचिव विचारा ❀ जगे न भूप भई बहु वारा ॥
तबै सुमंत द्वारपर जाई ❀ दासी टेरि विनयकरवाई ॥ २१॥
सुनि केकयी सुमंत बुलाई ❀ बोली इत-आनहु रघुराई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चकितसचिव नृपदशानिहारी ❀ भो अनर्थकछुहीयविचारी२२
पाय राय रुख वेगि सिधाये ❀ रथ चढ़ाय रामहि लै आये ॥
लखि पितुगति रघुवर अकुलाने ❀ धाय भूप चरणन लपटाने२३॥
नृपहि सकल तन मन सुधि भूली ❀ पुत्र वियोग शूलहियहूली॥
सो विलोकि मातहि अकुलाई ❀ पितुदुखहितबूझोरघुराई२४॥
निठुर हृदय कैकयी कराला ❀ कही कथासबअमितउताला॥
पुनि बोली नृप दई रजाई ❀ भयवश कहि न सकत रघुराई२५॥

सो०—मात वचन सुनि राम, हिय हरषे परषे सकल ॥
कहे बैन सुखधाम, पितु आज्ञा मैं शिरधरी ॥२६॥
यों कहि गहि पितु पाय, कहो तात दुखःत्यागिये ॥
भरतहि वेगि बुलाय, राजतिलक तिन कीजिये ॥ २७ ॥
तात इती लघुबात, हेत शोक इहि विधि कियो ॥
हौं अबहीं वन जात, आशिष दीजे मुदित मन ॥ २८ ॥
परी वचन धुनि कान, पहिचानी वाणी कछू ॥
नृपति चेत उर आन, निरखे नैन उघारि तब ॥ २९ ॥
उठि महीप युत प्यार, अंक लगाये रामको ॥
चली दृगन जलधार, मुखते कढ़े न बैन कछु ॥ ३० ॥

दोहा—राम निरखि पितु मोहवश, बहु विधि धीरज दीन ॥
मातहि मिलि आऊं अबै, यो कहि गमन सुकीन ॥३१॥
राम गमन लखि अवधपति, विलपत भये अचेत ॥
परे मौन महि छिनहि छिन, दीह उसास न लेत ॥३२॥
देखि सुमंत नृपाल गति, भरे नैन दुहुँ नीर ॥
कैकेयी प्रति जोरि कर, बोले बैन सुधीर ॥ ३३ ॥
महरानी हठ त्यागि अब, यतन कीजिये सोय ।
राम भरत नृप रावरो, जिहि विधि सब भल होय ॥३४॥
सुनि बोली दृढ कैकयी, हौं जु कही दुहुँ बात ॥
भली बुरी कछु होय पै, सोई मोहिं सुहात ॥३५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पद्धंगम-छंद ।

कैकेयी मति देखि सचिव चक्रित भयो ॥ रही न ऐसी रानि काह कीनो नयो॥ आई सुरति सुमंत हिये मुनि बातकी ॥ सुनी कछु मुनि कथित मंथरा घातकी ॥ ३६ ॥ तब सुमंत कर जोरि विलखि रानिहि कही ॥ जानि परै कछु आज मंथरा मतिगही॥ हैराउरिरिपु याहि चेरि जनि जानहू ॥ याकी गति सब कहहुँ सत्यकरि मानहू ॥ ३७ ॥ एक समै तव तात अहेर विनोदमें ॥ मृगमारोवर हेरि लियो निजगोदमें ॥ ताहि देखिमृग नारिविकल रोवन लगी ॥ पतिवियोग दुखपाय प्राण खोवन लगी॥ ३८ ॥ मृगीमात सुनि रुदन सुता ढिग धायकै ॥ आय सुनो तिहि मरन गिरी मुरझायकै॥पुनि उठि पुत्रिहि धीर दई समुझायकै ॥ कही अबहिं तुव कंत सुदेहुँ जिवायकै ॥ ३९॥ यौं कहि धाई वेगि गई नृप पाससो ॥ बोली वैन अधीन सुदीन हिराससो ॥ दाया करि नरनाथ मृगा मुहिं दीजिये ॥ मैं इहि करहुँ सजीव इतो यश लीजिये ॥४०॥ सुनि नरेशमुसक्याय कही तू ईशहै॥सत्य चारिभुज प्रकट शृंगपै शीश है ॥ बोली तबहि रिसाय भूपसैंयक्षिणी॥और मृगी सम नाहिं शक्ति मुहिं रक्षिणी ॥४१॥ है यह मृग जामात यक्ष मृगतनु धरो ॥ बिचरत विपिन निशंक तबै तुव कर मरो ॥ यौं सुनि केकय भूप बात अनुमानिकै ॥ औचक ताहि कृपाण हनी कर तानिकै ॥ ४२ ॥ मरत कही रे भूप जान मम बातको ॥ हौंहू लेहौं प्राण सुतुव जामातको ॥ यौं प्रण करि तनु त्यागि दास गृह जायकै ॥ जनमि मंथरा भई चेरि तुव आयकै ॥ ४३ ॥ सो अब औसर पाय करी यह बात है ॥ दीनो भेद बताय सत्य सबबात है॥याते तिहिकी सीख न उरबिच धारिये ॥ सकल शुभाशुभकाज सुहीय विचारिये ॥ ४४॥ सुनि सुमंतके बैन कैकेयी चुप रही ॥निरखि सचिवदृढ कीनसत्य भावी वही ॥हेरि भूप भरिनैन बैन बोलत भये ॥ भली चेरि सिख मानि प्राणपतिके लये ॥ ४५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पद्धरीछन्द।

यौं कहि सुमंत हियह्वै हिरास॥लीनी अधीर जिय दीह श्वास॥
तिहि समय भूप दुहुँ खोलि नैन ॥ हासीय राम बोलेसुबैन॥४६॥
जब लखो सचिव कछु नृपहिचेत ॥ तब कहे बैन सविनय सहेत॥
राजाधिराज वर ज्ञान मान॥ कीजे विचार सम समयमान॥४७॥
नृपनीति रीति युत होत धर्म ॥ सो धर्म काह जिहिहो अकर्म ॥
भूपालधर्म यह है सदाय ॥ राखै प्रजाहि आनँद बढाय॥४८॥इहि
भांति अमित सिख सचिवदीन॥ नृपधर्मपाल उत्तर नदीन॥लखि
प्रभु हि सोच वश बहु अधीर ॥ अतिही सुमंत हिय बढतपीर४९
पुनि पुनि सुमंत बहु मन्त्र देत॥नृप रटतराम छिन छिन अचेत॥
तब सचिव मौन गहि भूपपास॥बैठो उदास हिय ह्वै हिरास॥५०॥
चौ०-यह चरचा सब नगर मँझारी ❀ फैली चहुँ बिलपैं नर नारी
राजमहल कोलाहल भारी ❀ सकल देहिंकैकेयिहिगारी५१॥
उत रघुवीर मात ढिग जाई ❀ युग पद गहि वर बिनय सुनाई॥
कौशल्या सुत अंक लगाई ❀ बोलीबचनविकलबिलखाई५२
हा सुन्दर जीवन वर प्यारे ❀ कित ह्वै चले नैन ते न्यारे ॥
हा नृप सुवन मनोहर ललना ❀ तुमबिनपरैमोहिंछिनकलना५३
हा रंगालय बिहरणशीला ❀ मित्र हृदय रंजन कृतलीला ॥
हा मंदस्मित सुखमा सागर ❀ हाप्राणेशरूपगुण आगर५४ ॥
हा अभिराम श्याम रघुनन्दन ❀ हा सुमित्र हृदयागर चंदन ॥
हा रघुवंश सुवंश दिवाकर ❀ हा विरहातप शमन सुधाकर५५
हा मम सुवन हाय नृप वारे ❀ हा पुर परिजन प्राण अधारे ॥
हा सनेह रज बन्धन कर्ता ❀ हा प्रवीन सुन्दर सुख भर्ता५६
इमि कौशला रुदन करि भारी ❀ विकल भई सुत वदन निहारी॥
नृप तिय सुनि विलपतहैं सारी ❀ आई बहुकौशलपुर नारी५७॥
सो सुनि कनक भवन ते सीता ❀ अंतरपथ तहँ गई सभीता ॥
देखि दशा सिय हिय अकुलाई ❀ गिरीमात चरणनपर धाई॥५८॥
राम मात सिय अंक लगाई ❀ कहि मृदु बैन सुधीर धराई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि कौशला वधू गति जानी ❀ बोली सुतहि मनोहर बानी५९
तात तिहारे संग जानकी ❀ दृढधारी निज हीय जानकी ॥
जो अब उचित होय रघुलाला ❀ सोसिष देहुँ सियहिइहिकाला६०

सो०--सुनि बोले रघुचंद, कानन अमित कलेशहैं ॥
याते इत सानंद; तुव पद सेवैं जनकजा ॥६१॥

चौ०--सुनि सुत वचनवधुहिउरलाई ❀ भवनरहनहित बहु समुझाई
तबसिय हीयअधिक अकुलाई ❀ बोली विकल सकोच विहाई६२

दोहा--धर्मचारिनी तियनकी, गति है पति सुत ज्ञात ॥
तीन विहीन चतुर्थ नहिं, अवलंबन यह ख्यात॥ ६३ ॥
याते हौं प्रण सत्य करि, कहौं शपथ मय बैन ॥
नाथ मोहिं तजि जाहिं जो, तौ मम प्राण रहैं न॥६४॥
सत्य प्रेम गुणि सीयको, सकुचि कही रघुनाथ ॥
जननी कहौ विदेहजा, चलैं विपिन मम साथ ॥६५ ॥
सुनि पति आयसु जानकी, परमानँद अघाय ।
गहे चरण पति मातके, सो लीनी उर लाय ॥ ६६ ॥

चौ०-ताही छिनसुनि लछमनधाये ❀ अतिहियशोक रामढिगआये
नाय माथ बूझो वन कारन ❀ रघुवर कीनो सकल उचारन६७॥
सुनतहि भयो क्रोध अति भारी ❀ बोले लषण वीर धनुधारी ॥
नाथ सत्य जानी यह बाता ❀ करी अनीति दोउ पितु माता६८

घनाक्षरी—कवित्त ।

आजओं न ऐसी कोऊ कीनी जो नृपाल करैं रीति रघुवंशिन की सकल मिटावैं हैं ॥ बुद्धि सब नाशीअति जरठ भये हैं अब काम वश ह्वैके तिय सीख उरलावै हैं ॥ रसिकविहारी किमिसत्य व्रतधारी भूप राजदैन भाषो और वनहिं पठावैं हैं॥ याते रघुराज राजगादी गहि बैठौ फेरिदेखैं तात मात भ्रातकैसे तौ उठावैंहैं६९

सो०-सुनि सुबन्धुके बैन, कही धीर रघुवीर तब ॥
लषन धर्म यह है न, पितु आज्ञा किमित्यागिये॥ ७० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी कवित्त ।

गुरु पितु मात वृद्ध स्वामी नृपआयसु जो होय सो अनंद मानि माथे धरि लीजिये॥काम क्रोधलोभ मोह काहू वशभाषैं बैन तोऊ तिन दोषनमें चित्त नहिं दीजिये॥रसिकविहारी सुनौ सीख या हमारी बंधु निज दुख भारी देखि नेकहू न खीजिये ॥ परम सुधर्म सत कर्म व्रत सत्य येही आपतें बडेनकी न आज्ञा भंग कीजिये ॥ ७१ ॥

दोहा–राम वचन सुनिकै लषण, कही क्रोधवश बात ॥
ज्ञान रावरो या समै, मोहिं न रंच सुहात ॥ ७२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

बैठो राजगादी नाथ लीजे धनुबान हाथ दास हौं तिहारे साथ देखिये लरतको॥तात बांधि डारौंमातगहिकै निकारौं सैन सकल सँहारौं लखौं सामुहे अरतको॥रसिकबिहारी धनुधारी या विचारी काह ऐसो वीर भारी वनचारी यौं करतको॥आवें यमराजदेवराज तौ न पावैं राज हेरौं फेरि होवै कोसहायक भरतको॥ ७३॥ धरम यहीहै सत करम यहीहै ज्ञानपरम यही है मुखशत्रुनको मोडिये॥ तात मात भ्रात जात पात हित मीतकोऊ करहिअनीतलाज ताकी सब तोडिये॥रसिकबिहारी छल बलको न दोष कछू साधिये सुकाज औ कलेश अंग ओडिये ॥ बनिता वसुन्धराबडाई वित्त वीरताई वीर रघुवीर येते कैसहूँ न छोडिये॥ ७४ ॥ लैवो राज साजको दिढैवो न्याय काजको सुदैवो दान येही सदा आपनोकरम है ॥ वैरिनको घालिबो औ पालिबो सुदीननको युद्धमें निरुद्ध सत्य संतत परमहै॥रसिकबिहारी राजगादी हठि बैठैं वीर यामें रघुवीर कहा काहूंकी शरमहै॥त्यागि धनुबाणऔकृपाणतपस्वी ह्वै जाय डोलै वन ऐसो नाहिं क्षत्रीको धरमहै ॥ ७५॥ धनते सुधर्म होवैं धनते सुकर्म होवै धनते सुयश लोक धन ही को काज है॥ तात मात भ्रात हित पुत्र औ कलत्र लखौ रसिकबिहारीसबै धनको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समाज है॥ होवै रूपमान गुणमान कुलमान तोऊ धन विन कोऊ ताकी राखत न लाज है॥ कैसे हू निकाम धनमान सो प्रधान हेरौ धन है समस्त मूल धन मूल राज है ॥ ७६ ॥

दोहा-सो लघु राज न कोउ तजै, यह तौ कौशल राज॥
हौं नहिं त्यागन देउँगो, तुमैं राज रघुराज ॥ ७७ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

मारि मारि बाणनकृपाणन ते झारि झारि मान बलवाननके प्राणन नशावैंगे ॥ भूरि भानुवंशी चंद्रवंशी वर वीरनके झुंड झुंड भारी रुंड मुंड महि छावैंगे ॥ क्षत्री छत्रधारी क्षोणिपालनके शोणितसे कुण्डभरि सकल दिशान क्षिति छावैंगे ॥ रसिकविहारी रघुराज सब साधौ काज जियत हमारे राज भरत न पावैंगे ७८ ॥ बाणन विदारि सैन सकल संहारौं अबै गहिकै कृपाण तात मात दुहुँ मारौं मैं॥भरत समेत शत्रुशाल दलिडारौं वेगि केकय नरेशको सुदेशतें निकारौं मैं॥ सुर नर नाग करैं कोऊ शत्रु पक्ष तिनैंकरिकै विपक्ष तिहूँ लोक ते उजारौं मैं॥रसिकविहारी होय आयसुतिहारी नेक फेरि वर वीरनकी वीरता निहारौं मैं ॥ ७९ ॥

दोहा-पुनि बोले रघुवर लषण, उर आनौ अब तोष ॥
रोष विवश अनुचित किये,होत अयश अरु दोष८० ॥
कही लषण सुनि नाथ हौं, सत्य कहौं यह बात॥
राज लीजिये कैसहू, कछू न दोष लगात ॥ ८१ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

छलमें न दोष कलबलमें न दोष मंत्रतंत्रमेंनदोषविष यंत्रमेंनदोषहै॥ तातके न मारे दोष मातके न मारे दोष भ्रातके न मारे दोषदोषमेंन दोषहै॥मित्र पुत्र कुटुम कलत्रके न मारे दोषधर्मकर्म सकलनिवारे हू न दोष है ॥रसिकविहारी काज साधौ रघुराज राज राज लेवै हेत काहूमैं न दोष है ॥ ८२ ॥ एक नृप घालैं तौं अनेक नृप पालैं एक भ्रातहि नशावैं बहु भ्रातन बसावैंगे ॥ एक मात मारैं तौ अनेक मात ज्यावैं एक अयश उठावैं तो अनेक यश पावैंगे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रसिकविहारी नेक न्यायते विचारौ नाथरीति रावरेको हम काहस-मुझावैगे॥धरम जिते हैं तिते पातक न यामें जो न दोऊ तो समा-न पाप पुण्य होय जावैगे ॥ ८३ ॥

दोहा--यौं कहि बोले लषण पुनि,राम चरण शिरनाय ॥
नाथ दोष जनि कीजिये, दीजेमोहिं रजाय ॥ ८४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

धर्म नहिं जानौं औ अधर्म नहिं जानौ रंच सत्य नहिं जानौंऔ असत्य नहिं जानौं हौं॥तातको न जानौं मात भ्रातको न जानौं गु रु ज्ञातिको न जानौं जात पांतको न जानौं हौं॥देवको न जानौं औ अदेवको न जानौं लेव देवको न जानौं सेव भेवको न जानौं हौं ॥ रसिकविहारी करौं शपथ तिहारी नाथ हौं तौ एक रावरी रजाय दृढ जानौं हौं ॥ ८५ ॥

दोहा--यौंही अमित प्रकार बहु,कही लषण रिसठान ॥
वाल्मीकि आदिक विविध,ग्रंथन माहिं प्रमान॥८६॥

प्रमाण ॥ वाल्माकाये अयोध्याकांडे ॥ सर्ग ॥ २१ ॥

श्लोक ।

यावदेव न जानाति कश्चिदर्थमिमं नरः॥तावदेव मया सार्द्धमा-त्मस्थं कुरु शासनम्॥ १॥मया पार्श्वे सधनुषा तव गुप्तस्य राघव॥ कःसमर्थोऽधिकं कर्तुं कृतास्त्येव तिष्ठतः॥ २ ॥ निर्मनुष्यामिमां सर्वामयोध्यां मनुजर्षभ॥करिष्यामि शरैस्तीक्ष्णैर्यदि स्थास्यति विप्रिये॥ ३॥भरतस्याथ पक्ष्योवायो वास्य हितमिच्छति॥सर्वांस्तां-श्च वधिष्यामि मृदुर्हि परिभूयते ॥४॥प्रोत्साहितोयं कैकेय्या संतु-ष्टो यदि नः पिता ॥ अमित्रभूतो निःसंग वध्यतां वध्यतामपि ॥ ५॥गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः॥ उत्पथं प्रतिपन्नस्य कार्यं भवति शासनम्॥ ६ ॥ हनिष्ये पितरं वृद्धं कैकेय्यासक्त मानसम् ॥ कृपणं च स्थितं बाल्ये वृद्धभावेन गर्हितम् ॥ ७ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ सर्ग ॥ २३ ॥

धर्मदोषप्रसंगेन लोकस्यानतिशंकया ॥ कथं ह्येतदसंभ्रांतस्त्व-द्विधोवक्तुमर्हति ॥ ८ ॥ यथा ह्येवमशौंडीरं शौंडीरं क्षत्रियर्षभ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किं नाम कृपणं दैवमशक्तमभिशंससि ॥ ९ ॥ पापयोस्ते कथं नाम तयोः शंका न विद्यते॥ संति धर्मोपघासक्ता धर्मात्मन् किं न बुध्यसे ॥ १० ॥ कथं त्वं कर्मणाशक्तः कैकेयीवशवर्तिनः ॥ करिष्यति पितुर्वाक्यमधर्मिष्ठं विगर्हितम् ॥११॥द्रक्ष्यंति त्वद्य दैवस्य पौरुषं पुरुषस्य च॥दैवमानुषयोरद्य व्यक्ताव्यक्तिर्भविष्यति॥ ॥१२॥अद्य मे पौरुषहतं दैवं द्रक्ष्यंति वै जनाः॥यैर्दैवादाहतं तेद्य दृष्टं राज्याभिषेचनम्॥१३॥लोकपालाः समस्तास्ते नाद्य रामाभिषेचनम्॥न च कृष्णास्त्रयो लोका विहन्युःकिं पुनःपिता॥१४॥ मद्वलेन विरुद्धाय न स्याद्दैवबलं तथा॥प्रभविष्यति दुःखाय यथोग्रं पौरुषं मम॥१५॥न शोभार्थौविमौ बाहू न धनुर्भूषणाय मे॥न शिरा बंधनार्थाय न शराः स्तंभहेतवः॥ १६ ॥ अमित्रमथनार्थाय सर्वमेतच्चतुष्टयम्॥न चाहं कामयेत्यर्थं यः स्याच्छत्रुर्मतो मम ॥ ॥१७॥बहुभिश्चैकमत्यस्य नैकेन च बहून् जनान्॥विनियोक्ष्याम्यहं बाणान्नृवाजिगजमर्मसु ॥ १८ ॥ अद्य मेस्त्रप्रभावस्य प्रभावःप्रभविष्यति॥राज्ञश्चाप्रभुतां कर्तुं प्रभुत्वं च तव प्रभो॥१९॥ अद्य चंदनसारस्य केयूरामोक्षणस्य च॥वसूनां च विमोक्षस्य सुहृदां पालनस्य च॥ २० ॥ अनुरूपाविमौ बाहू राम कर्म करिष्यतः॥ आभिषेचनविघ्नस्य कर्तृणां ते निवारणे ॥ २१ ॥ इत्यादि ॥

दोहा--लषण वचन सुनिकै कही, धर्मधुरंधर राम ॥
पातक लागै बंधु जिहि, करिय नहीं सो काम ॥८७॥
निज कीनी कछु होत नहिं, दैव करी सब होय ॥
याते सोई सत्यहै, प्रबल दैव रुचिजोय ॥ ८८ ॥
सुनत राम वाणी भये, लषण नैन दुहुँ लाल ॥
भौंह बंक फरके अधर, बोले बैन उताल ॥ ८९ ॥
पातक दैव दुहूँनकी, बडी नाथको भीति ॥
बारबार सोई कहत, यह न वीरकी रीति ॥९०॥
को है पातक कित रहै, पुनि कैसो बलवान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुरि दैव को है कहाँ, कीजे वेगि बखान ॥ ९१ ॥
कै इत दुहुँन बुलाइये, कै बताइये धाम ॥
हौं तिनते धनुबाणलै, करौं जाय संग्राम ॥ ९२ ॥
बली दैव है अबल पै, करै रुचै तिहि सोय ॥
सबल सामुहे दैवको, जात सकल बल खोय॥ ९३ ॥
रामदासकी दासता, दैव दैवता जोय ॥
अधिक न्यून सम होय सो, आज लखै सबकोय ॥९४॥
हौ निज बलते नाथको, करौं राज अभिषेक ॥
फेरि लखौं बलवान ह्वै, आवैं दैव अनेक ॥ ९५ ॥
धनु शर शोभा बाहुबल, सफल करौं मैं आज ॥
दैव भरत नृपके अछत, नाथ होय युवराज ॥ ९६ ॥
तात भ्रात कह दैव कह, कहा धर्म कह पाप ॥
तृण समान जानो इनैं, इक रावरे प्रताप ॥ ९७ ॥
यौ कहि धनु शर माजिकै, माथ रामपद टेक ॥
कही हाथ गहि चलिय हौ, करो राज अभिषेक ॥९८ ॥
राम मात सिय हिय रुचे, लषण वचन तिहि काल ॥
धर्मधुरंधर राम तब, बोले अतिहि उताल ॥ ९९ ॥
लषण कही तुम प्रथम हम; जानैं नाथ रजाय ॥
तौ मम आयसु है यही, रोष तजौ सब भाय ॥ १०० ॥
लछमन राम रजाय सुनि, मौन रहे शिरनाय ॥
स्रवित वारि दुहुँ नैनते, पुनि बोले अकुलाय ॥ १०१ ॥
लाभ हानि सुख दुख समय, कीजे हृदय विचार ॥
बहुरि रजायसु दीजिये, लखि सब सारासार ॥ १०२ ॥

चौ०—बंधु विनय सुनिपुनिरघुनाथा ❀ वरणेविविधधर्मयशगाथा
कही लषण करगहि वरवानी॥ ❀ तजौ रोष ममआयसु मानी १०३
सुनि बोले लछमन करजोरी ❀ भलहि नाथ पुनि विनती मोरी॥
हौहूँ वन चलि हौं तुव साथा ❀ न तरु प्राण तजिहौंरघुनाथा १०४
तब रघुवरबहु विधि समुझाये ❀ लषणहृदय कछु वचन न आये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रामबंधु जियकी गति जानी ❀ कही चलौं धनुशर गहि पानी १०५
सुनि सौमित्रअधिकहुलसाये ❀ मोदभरे जननी ढिग आये ॥
माँगी बिदा चरण शिरनाई ❀ हरषि सुमित्रा दई रजाई ॥ १०६
अंक लगाय कही बलि ताता ❀ राम सीय तुव दुहुँ पितु माता ॥
जाहु संग सेवौ सतभाये ❀ सुनि शिर नायलषण उठिधाये १०७
देवरचित धनुशर असि धारे ❀ तूण त्रान वर विशद अपारे ॥
विपिन गमन हितहिय हुलसायो ❀ आयरामपदशीशनवायो १०८
ताछिन भयो कुलाहल भारी ❀ नृपतिय आय जुरी तहँ सारी ॥
तब रघुवीरमात पग लागी ❀ विपिनगमन हितआयसुमाँगी १०९
धर्म धुरीण सुतहि जिय जानी ❀ बोली बिकल कौशिलारानी ॥
जाहु तात मुहिं भूलि नजैयो ❀ वेगिआयफिरवदनादिखैयो ११०
यौं कहि मात गोद सुत लीने ❀ पढि रक्षा अभिमंत्रित कीने ॥
करि अघ्रानशीश अकुलाई ❀ आयसु दई सुअंक लगाई ॥ १११ ॥
येही विधि सिय लषणहिं रानी ❀ करि अभिमंत्रित रक्षाठानी ॥
उर लगाय बहु कियो विलापा ❀ दई रजाय सहितसंतापा ११२

दोहा--सिय सासुनके पग परी, दीनी सबहि अशीश ॥
सुखसुत वित अहिवातयुत, जीवो विपुल बरीश ॥ ११३ ॥

चौ० सकल सियहि निज अंक लगाई ❀ विलपींनैननीर अन्हवाई
सीतहि मिलीं सखी पुरनारी ❀ रोवैंसबतिय निपट दुखारी ११४

दोहा--इहि विधि सिय रघुवर लषण, सहित सकल रनिवास ॥
करुणा प्रेम वियोग वश, निज निज होय हिरास ॥ ११५
मातु सुमित्रा कौशला, विकल भई जिहि भांति ॥
ताछिन जो गति दुहुँनकी, सो कछु कही न जाति ॥ ११६
तब रघुवीर सुधीर धरि, लछमन सीय समेत ॥
सकल मातु पग नाय शिर, आये द्वार निकेत ॥ ११७ ॥
चहुँ दिशि कौशल नगरमें, मचो रुदनको शोर ॥
दुखी भये सिय सहित सुनि, दोऊ राज किशोर ॥ ११८ ॥
सखा वृन्द ताही समै, विपिन गमनको हाल ॥
सुनि विलपत धाये सबै, आये अतिहि उताल ॥ ११९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिनहिं निरखि दुहुँ बंधुवर,भरि आये जलनैन ॥
सो सबही लपटाय उर, कहे नेहमय बैन ॥१२०॥
भोजन वसन विनोद मुद, संग भये सब काज ॥
जात अकेले विपिनको,यह न उचित रघुराज ॥ १२१ ॥
चल संग सब रावरे,अवधरहैं किहि काम ॥
तुम विन प्राण न मानि हैं, याते तजौ न श्याम॥१२२ ॥
सुनि सखानके वैन वर,करि सनेह रघुवीर ॥
नीति रीति बहु भांति कहि,तिनहि देत बहु धीर ॥१२३॥
ते सब विरह विहाल ह्वै,कहन लगे रघुराय ॥
भये निठुर इमि मीत किमि,गमनतहाय विहाय ॥१२४॥

घनाक्षरी कवित्त ।

का करैं समाधि साधि का करैं विराग याग का करैं अनेकयोग भोगहूँ करै सुकाह॥का करैं समस्त वेद शास्त्र औ पुराणदेखकोटि जन्मलौं पढै मिले तऊ कछू न थाह॥राज्य लै कहा करैं सुरेश औ नरेश ह्वै न चाहिये कछू सुदुःख होत लोक लाज माह॥ सातद्वीप खंड नौ तिलोक संपदा अपार लै कहा सुकीजिये मिलौ जुआप सीयनाह ॥ १२५॥ हम सब तुव मुख लखि मुदित रहत निशि दिन छिन तजि नहिं पलक परत ॥बिन दरशन तन मन थिर न रहत छबि निरखत हठि दृग अरनि अरत ॥ कबहुँक जबललन तनक विलगत तब यक घरि बहु युग सरिस भरत ॥ नितहिलत मिलत धरि दुहुँ गल भुज तिहि सनमुख सब जग सुखनिदरत ॥ १२६ ॥ लागी उर विषम वियोगकी जु आगी अति जागीताहि नीर ते सँयोगके सिराइयो॥हीय ना धरैगो धीर बाढी है अपार पीर लाल रघुवीर नैक दाया चित लाइयो ॥रसिक विहारीदीन छीन रावरे विहीन सुरति करी जो श्याम बिसरि न जाइयो ॥ ये हो रघुनंदन सुजान प्राणप्यारे मीत वेगही हमारी जियजरनि बुझाइयो॥१२७॥ सौंह करि भाषैं कोउ प्राण नहि राखैं जोपै लाडिले सलोने यार तुम बिसरायहौ ॥ कोऊना लखाय या

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कलेशको हरैया लाल सकल सखान एक जीवन उपायहौ ॥
तनमन प्राणनकी ताप तब दूर ह्वैहै जब निज आनन
मयंक दरशाय हौ ॥ ये हो रघुनंदन पियारे मति सांची
कहौ कब या हमारी जियजरनि बुझायहौ ॥ १२८ ॥

दोहा—सखा वृन्द इहि विधि विकल, विलपत विरह विहाल ॥
कर जोरत पग परत कहि, तजा नहीं रघुलाल ॥ १२९ ॥
बालसखनकी प्रीतवश, विवश भये रघुवीर ॥
धाय धाय सब अंक गहि, मिलत चलत दृग नीर ॥ १३० ॥
लखि सखानकी विकलता, रघुवर भये अधीर ॥
पुनि कुसमय अनुमानिकै, उर धारी कछु धीर ॥ १३१ ॥
उर लगाय समुझाय बहु, सबही धीर धराय ॥
पुनि पितु ढिग सिय लषण युत, वेगि चले रघुराय १३२ ॥
पिता निकट सिय लषण युत, जात पयादे राम ॥
सो विलोकि बिलखात सब, कहैं आज विंधिवाम ॥ १३३ ॥
पुरवासी नर नारि सब, वृद्ध युवा अरु बाल ॥
रुदन करत धाये विकल, आये अतिहि विहाल ॥ १३४ ॥
भई भीर भारी तबै, राजसदन चहुँ ओर ॥
हाय राम सिय लषण यह, रुदन शोर अति घोर ॥ १३५ ॥
ताछिन सीता लषण युत, राम गये पितु पास ॥
करि प्रणाम पितु चरण गहि, बोले सहित हुलास ॥ १३६ ॥
तात मोहिं अब गमनकी, दीजे वेगि रजाय ॥
वन मनु वर्ष बितायकै लखौं चरण पुनि आय ॥ १३७ ॥
सुनत रामके वचन नृप, उठे अतिहि अकुलाय ॥
पुत्र वधू युत पुत्र दुहुँ, लिये गोद बैठाय ॥ १३८ ॥
लषण सीय पुर रहन हित, कहे भूप बहु बैन ॥
रुख लखि जानी राम बिन, ये दुहुँ भौन रहैंन ॥ १३९ ॥
सो गुणि दशरथ नेह वश, विकल गिरे मुरझाय ॥
हाय राम सिय लषण इमि, कहैं विपुल विलपाय ॥ १४० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोगति निरखि कृपालु की, भये सुमंत विहाल ॥
कैकेयी प्रति वचन पुनि, कहै क्रुधित दृग लाल॥ १४१ ॥

बरवा छंद।

केकयसुता विचारौ अबहूँ बात। न तरु छनकमह सबको सबै नशात ॥१४२ ॥ कछू न उत्तर दीनो सो सुनि रानि। सचिव कही तब भूपहि हित मय वानि॥ १४३ ॥ महाराज यह रानी अति मति हीन। तिहि भूले वर दीने नाथ प्रवीन ॥१४४ ॥यातें पुनि प्रभु कीजे हृदय विचार। दूजे वर इहि दीजे राज उदार ॥ ॥ १४५ ॥ साम दाम अरु भेद सुदण्ड उपाय। उचित नृपहि ये चारौ नीति कहाय ॥१४६ ॥

पद्धरी छंद।

यौं कहि सुमंत दुहुँ हाथ जोरि। बोले सहेत वाणी बहोरि ॥
तिहुँ लोक नीति ज्ञाता प्रधान। कोऊ नऔर है प्रभु समान १४७॥
तजिकै कलेश उर धारि धीर। कीजे सुयत्न जिहि मिटहि पीर॥
कीनी न रानि यह नवल बात। लक्षण परंपरानहिं मिटात १४८॥
लक्षण जुहोत हैं तात गात। सो प्रगट पुत्र तनु में जनात ॥
त्यों मात चिह्न पुत्रिहु मझार। होवैं सुठौर बहु किय बिचार १४९
उत रानिमात ज्यों कीन घात। त्योंही प्रत्यक्ष इत सबजनात ॥
वह कहौं सकल सुनिये सुदेश। जो भयो हाल केकय नरेश १५०
केकय महीप अति मतिप्रवीन। सुनि तिनै एक वरदान दीन॥
जेते सुजीव जग लघु विशाल। भाषा सबकी समझैं नृपाल १५१
इक समय भूप रानी समेत। निशिमध्य मुदित शोभित निकेत॥
तहँ द्वैपिपीलिका निरखि रात॥ कीनी प्रसन्नह्वै कछुकबात १५२॥
सो समुखि भूप ह्वै अति अनन्द ॥विहँसे कछूक बहु मंद मंद ॥
लखिनृपहिहँसत बोली सुरानि॥क्यों हँसे वेगिदीजेबखानि १५३
सुनि कहो भूप यह अकथ भेद ॥ जो कहौं होय तनु हानि खेद॥
बोली सुरानि तब कुपित होयहौं॥अबहिं देति निज प्राणखोय १५४
हारे महीप बहु विधि बुझाय ॥ मानै न नारि काहू उपाय ॥
पुनि कही भूप यामें न तंत ॥भाषत सुहोय मम प्राण अंत १५५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि बैन रानि बोली रिसाय ॥ तुव प्राण जायँ अथवा रहाय ॥
इहि समै मोहिं कछु नहीं सुहात॥दीजे बताय वेगै सुबात॥१५६॥
तब विवश भूप ह्वै अति अधीर ॥ बोले घरीकद्वै धरहु धीर॥
अबहीं सुद्वार लगजाय आय॥पुनि भेद देहुँ वह सब बताय १५७॥
यौं कहि नरेश द्रुत द्वार आय ॥ गवने तुरंग वेगहि सजाय ॥
मुनिपासजाय व्याकुलनृपाल॥पदवंदि कहो निजसकल हाल १५८
मुनि सुनि समस्त बोले सुबैन॥बिन दिये दंड तिय जिय तजैन॥
याते महीप गृह वेगि जाय ॥ ताडौ डराय आपहि चुपाय १५९॥
सुनि वचन मानिकै मनुजनाथ ॥ आये सुभौन लैकसहि हाथ ॥
बोले तियाहि सुनि लेहु भेद ॥ आई उताल तजिसकलखेद १६०॥
पुनि कसा हेरि करभीति मानि॥ बहु विनैकीन तियजोरिपानि॥
तब भूप मष्ट करि प्रातकाल॥दीनी पठाय पितु गृहउताल १६१॥
पुनि तिहिन भूप स्वीकार कीन ॥ केकयनरेश तिय त्यागि दीन॥
यौ कहि सुमंत रानिहि बहोरि॥बोलेसुसीखयह सुनहुमोरि १६२
हठ सकल छोडि वर और लेहु ॥ सब हीय अमित अनन्द देहु ॥
नातर कछूक जो करह आन ॥तौ सुगति होयजननीसमान १६३

दोहा–सुनि सुमंत के वचन बहु,मनही मन रिस छाय ॥
उत्तर दियो न रंच कछु,हेरी नैन चढाय ॥१६४॥
पुनि सुमंत महिपाल सों, बोले बैन गँभीर ॥
नाथ तिया जानैं नहीं, नेक पराई पीर॥ १६५ ॥
जिहि विधि केकय भूपसो, हठकीनी वह नारि ॥
भरत मात सोई करी,लीजे हीय विचारि ॥१६६ ॥
सुनि वर वचन सुमंतके, नृपहिय रुचे सुदेश ॥
हाय राम कहि चुपरहे, धर्मपाल अवधेश ॥ १६७ ॥
तब रघुवर कर जोरि पुनि, बोले हिय हुलसाय ॥
हौं उताल वन जाउँ अब, दीजे तात रजाय ॥१६८॥
राम वचन सुनि अवध पति, मौन रहे अकुलाय ॥
सिया सहित दुहुँ बन्धुको, लीने हृदय लगाय ॥ १६९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निरखि भूप गति कैकयी,उठी कुपित झहराय ॥
वेगि लाय मुनि साज सब, धरो राम ढिगआय ॥१७०॥

चौ०--तब रघुवीर साज मुनिसारे ❀ तूण कृपाण बाण धनुधारे ॥
गहि पितु मातु चरण रघुनाथा ❀ चले मुदित सिय लछमनसाथा
द्वार पधारि सुयज्ञ बुलाये ❀ दिये दान बहु द्विजन सुहाये
पुनि बोले करगहि रघुवीरा ❀ गुरु वशिष्ठ सुत तुम मतिधीरा
ये मम सखा प्राण ते प्यारे ❀ हौं इन किये अधीन तिहारे ॥
सुनि सुयज्ञ बोले दृढ़ जानौं ❀ मैं नित लषण सरिस सब मानौं
सुनि सुयज्ञ वाणी रघुराई ❀ लिये प्रेम भरि अंक लगाई॥
ताछिन भयो शोर चहुँ भारी ❀ राम चले सब कहैं पुकारी १७४
राम गमन लखि नृप अकुलाई ❀ सचिवहि कहे वचन विलपाई॥
स्यंदन साजि तिहूँ बैठारौ ❀ राम संग तुमवेगिसिधारौ १७५
सुनि नृप वचन सुमंत सिधाये ❀ रथ सजि वेगि राम ढिग लाये
तब तिहुँ गुरु द्विजपद शिर नाई ❀ स्यंदन चढे रजायसुपाई १७६
चलेराम संग पुर नर नारी ❀ आरत रुदन शोर चहुँ भारी॥
ताछिन अवध नगर कर शोका ❀ सोजनजानैजिनअवलोका १७७

घनाक्षरी कवित्त।

पाय पितु आयसु बनाय वेष तापसको बंधु सिय संग राम वन-हि सिधारे हैं॥ताछिन भो विरह विलापको कलाप महा जेते जड चेतन ते जातना निहारे हैं॥भये हैं विहाल सिय रामके वियोग स वै सरसिज वृन्द सूखे मानो हिममारे हैं॥रसिकविहारी नृप कौशला सुमित्रा आदि बोलत विकल हाय प्यारे हायप्यारे हैं ॥ १७८ ॥

दोहा--मात सुमित्रा कौशला,सहित सकल रनिवास ॥
विरह विकल विलपत विपुल,समुझि राम वनवास॥१७९॥
गद गद गर जलनैन भरि,कहति सुमित्रा बैन ॥
अति कठोर मेरो हियो,ऐसहु दुःख फटै न १८० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चित्र लिखे कपि देखिकै, जो सिय भौंन डराति ॥
पुत्र वधू प्यारी सु क्यों, वन वसिहैं दिन राति॥१८१॥
पलँग गोद तजि पालना, डगहू अनत न जात ॥
ते मेरे वारे सुक्यों, सहिहैं आतप वात ॥ १८२ ॥
कहति सुमित्रा नैन भरि, बिकल वचन ह्वै दीन ॥
हाय कुटिल मति कैकयी, अवध अनाथ जुकीन॥१८३॥
रे विधि लेत न प्राण क्यौं, कहा कहौं अब तोहिं ॥
राम लषण वन जात सखि, जियत रही धृग मोहिं॥१८४॥
खग मृग गो गज वाजि सब, विलपत राम विहीन ॥
जे जड चेतन ते भये, विरह विवश बहुछीन ॥ १८५॥
कनक पिंजरनमें कहैं, शुक सारिका विहाल ॥
करै राम सिय लषण बिन, कोहमरो प्रतिपाल ॥ १८६ ॥
सो०—इहि विधि इत सब मात, दासी दास अनेक युत॥
राम विरह बिलपात, अरु नृप दुख को कहि सकै॥१८७॥
उत रघुवर रथ साथ, चले जात नर नारि बहु ॥
भो अब अवध अनाथ, कहत रुदत इमि विकल सब १८८॥
तब पुरवासिन राम, समुझाये बहु धीर द ॥
काहु सुहाय न धाम, रहैं संग सब दृढ़ ठनी ॥ १८९ ॥
तमसातट विश्राम, प्रथम दिवस रघुवर कियो ॥
निरखि रैनि युग याम, गे रथ खोज दुराय तब॥१९०॥
प्रात उठे नर नारि, रथ न लखो विलपैं विकल ॥
आरत वचन पुकारि, आय सकल सशोक पुर ॥१९१॥
गंगातीर सुठाम, शृगवेर पुर विमल थल ॥
सचिव लषण सिय राम, द्वितिय वास कीनो तहां॥१९२॥
कुल निषाद गुहनाम, राम सखा आयो निरखि ॥
अंकलाय घनश्याम, मिले ताहि सादर मुदित॥ १९३ ॥
लषण सचिव सहुलास, उठि निषादपतिसों मिले ॥
सो सब कियो सुपास, सकल रहे सो रैनि तहँ ॥ १९४ ॥
प्रात कही रघुराय, तात जाहु रथलै अवध ॥
सुनि सुमंत विलपाय, बोल वचन विनीत अति ॥१९५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-मुहिंइमि नृप सिखदीनघनेरी ❀ वनदिखाय तिहुँ लावहुफेरी
सोपितुवचनमानिरघुनाथा ❀ अवधचलौसियलछमनसाथा १९६
सचिव वचन सुनिकै रघुराई ❀ धर्मरीति बहु नीति बुझाई ॥
तब सुमंत ह्वै निपट निरासा ❀ बोले बहुरि दीह लैं श्वासा १९७
भूपति यहू कही बहुबारी ❀ जौन राम आवैं प्रणधारी ॥
तौइत आनौ जनकदुलारी ❀ नतरु तजौं तनु निपटदुखारी १९८
सुनि सुमंत मुख तात रजाई ❀ राम जानकिहि बहु समुझाई॥
तब सिय कह मम दृढ़ प्रणयेही ❀ चलौंसाथकैतजौंसुदेही॥१९९॥
ताछिन लषण पितहि कटुवानी ❀ कहीअमितरिसपुनिउरआनी॥
बंधुहि वरजि सचिवसनबाता ❀ कहीरामकहियोजिनताता २००
फिरहिं नकोउ सचिव दृढजानी ❀ भयो विहाल कढै नहिंवानी॥
मिलि तिहुँ कहि मृदु वचन घनेरे ❀ धीरजदैसुमंत पुर फेरे २०१॥
तब निषाद रघुवर रुखपाई ❀ तिहुँ पद धोयनाव बैठाई ॥
अति अनंद युत पारउतारी ❀ पुनिगमनोनिजभवनसुखारी२०२

दोहा-इत रघुवर सिय लषणतिहुँ, सुरसरि मुदित अन्हाय ॥
नित्यकृत्य कीने सकल, समय सरिसविधि भाय॥२०३ ॥
तब गंगहि कर जोरिकै, करी विनै बहुसीय॥
कही कुशल युत दीजियो, वेगि दरशरमणीय ॥ २०४ ॥
गंग देवि हौं पूजिहौं, सविध विपिन ते आय ॥
मद आमिष पय अन्न फल, संयुत सुमन चढाय ॥२०५॥
यौंहीं सिय सुरसरि विनय, कीनी सहित उमंग ॥
गमन कियौ शिरनाय तिहुँ, राम लषण सियसंग२०६॥

प्र० वाल्मीकीय अयोध्याकांडे सर्ग ॥५५॥ श्लोक।

सुराघटसहस्रेण मांसभूतौदनेन च ॥
यक्ष्ये त्वां प्रीयतां देवि पुरीं पुनरुपागताम् ॥२२॥

दोहा-इहि प्रकार सिय लषण युत, रघुनंदन सुखभौन ॥
तापसवेष बनायकै, कानन कीनो गौन ॥ २०७ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० श्रीरामवनगमन-
वर्णनो नाम प्रथमोविभागः ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–रघुनंदन सिय बंधु युत, कीने तापसवेश ॥
चले मुदित गहि विपिन मग, रंच न ह्वदै कलेश ॥१॥
मगवासी रामहिं मिलैं, ते लखि होहिं अधीर ॥
कहैं कहांके कौन ये, श्याम गौर दुहुँ वीर ॥ २ ॥
सुनैं जबै वन गमन तब, अधिक हिये विलखाय ॥
कहैं चलैं हम रावरे, संग जु होय रजाय ॥ ३ ॥
कोऊ रघुवर संगही, होत प्रेमवश धाय ॥
फेरे फिरैं न कहत हैं, हम मग देहिं बताय ॥ ४ ॥
कोल भील सिय राम हित, लावत भेट अपार ॥
कंद मूल फल फूल अरु, खग मृग मीन सिकार ॥ ५ ॥
तिन सराहि सनमानहीं, कहि रघुवर वर बन ॥
सो सुनि सब सुखपावहीं, छबि निरखैं भरिनैन॥६॥
कछुक दूर सँग जात हैं, कानन पन्थ बताय ॥
फिरत नहीं रघुवंश मणि, तिन फेरत बरियाय ॥७॥
याही विधि रघुवश मणि, सीता लषण समेत ॥
प्रमुदित कानन जातहैं, मगवासिन सुख देत ॥८॥
राजकुँवर फिर फिर चितव, प्रिया बदनकी ओर॥
ह्वै अधीन मृदुवचन कहि, विनव सबहि निहोर ॥९॥

घनाक्षरी कवित्त ।

ये हो भूमि तजिकै कठोरता मृदुल होउ ये हो भानु सीत सबै तपन विहाय हो॥ डोलौ होत्रिविध पौन लघुता गहो हो मग कानन गिरीशजाहु बाटते पराय हो ॥ मोसँग सिधारी वन जनकदुलारी प्यारी रसिकविहारी हो सुखारी सो उपाय हो ॥ होवै ना दुखारी सुकुमारी ये विदेह वारी इन हितकारी तुम सकल सहायहो॥ १० ॥

दोहा–रघुनन्दन सिय लषणको, मुख निरखत फिर फेर ॥
सीय लषण इत श्यामके, रहैं वदन दिशि हेर ॥११॥
सेवत हैं सिय रामको, लषण सनेह समेत ॥
दम्पति प्राणनते अधिक, करत लषणपर हेत॥ १२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इहि विधि सिय रघुवर लषण,कियो विपिन विश्राम॥
प्रात होत पुनि उठि चले,दिवस चढो द्वैयाम॥१३॥

दोबई छन्द।

सिय तन चितै श्यामसुन्दर वर श्रमित जानि सुकुमारी॥
रघुनंदन मृदु वचन लषण सों कहे समय अनुसारी॥
तात लखौ तरुछांह मनोहर तहँ विश्राम करीजे॥
थकित भई अति जनककिशोरी अब न पंथ चित दीजे॥१४॥
लषणलाल इत उत निहारि कै इक वट विटप सुहायो॥
सीतल सघन छाँह सुन्दर शुचि ठाम अधिक मनभायो॥
तातर जाय मृदुल पत्रनकी रुचि साथरी बिछाई॥
कियो तहां विश्राम मुदित मन सिया सहित रघुराई॥ १५॥
कंद मूल फल आनि लषण पुनि शीतल जल भरि लाये॥
बंधु सिया संयुत रघुनंदन अतिरुचि भोग लगाये॥
तामगह्वै निकसी पुर वनिता श्याम गौर लखि जोरी॥
प्रमुदितभई चकितसी चितवैं कहो कहांके कोरी॥१६॥
सब जाय सहेलिनमें निज यह चरचा जु चलाई॥
पथिक दोय आये अति सुन्दर मैं अबहीं लखि आई॥
बैठे सखी सुभगवट छहिंया जबते मैं अविलोके॥
तब ते जिय अकुलात अलीरी नैन रुकत नहिं रोके॥१७॥
कोधौं सखी कहां ते आये तापस वेष बनाये॥
जाकी छबि अवलोकि सहेली कोटि अनंग लजाये॥
कानन सुनी न नैनन देखी रूप छटा अलि ऐसी॥
पुनि सजनी तिन संग मनोहर नवल नारि यक तैसी॥१८॥
तिनके बचन सुनत वनितनके उर अनंद अधिकायो॥
दरशलालसा लगी घनेरी तन मन सब द्रुलसायो॥
गुरुजन डीठ बचाय संगकी जुरि मिलिकै सब वामा॥
देखन चलीं श्यामसुन्दरकी छटा अनूप ललामा॥ १९॥
आई जहां रहे मनमोहन निरखि प्रीति अति बाढी॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चकित चित्त ह्वै रहीं नबेली मनो चित्र लिखि काढी ॥
इकटक रहीं निहारि ठगीसी भई निमिष नहिं देहीं ॥
लै उसाँस उर ससकि छबीली नैनन जल भरिलेहीं ॥२०॥
कोऊ रहीं चिबुक गहिं अँगुरिन भई थकीसी कोऊ ॥
कोऊ कर कपोल धरि ठाढीं रहीं जकीसी कोऊ ॥
कोउ दबाय दंतन ते रसना लखैं कनौखिन दैकै ॥
कोऊ शीश हाथ दे नवला सोचैं कुँवर चितैकै ॥ २१ ॥
काहूके जिय राजकुँवरकी चितवन पैठ गईहैं ॥
भूली सकल चातुरी सुधि बुधि विह्वल दशा भईहैं ॥
काहूके उर लगी लालके नैन बाणकी गाँसी ॥
काहूके गर परी कठिन यह श्याम प्रीतिकी फाँसी॥२२॥
काहूके वेणी बँद छूटे भूली सो न सुधारै ॥
काहूके सारी शिर सरकी सोऊ कछु न सम्हारै ॥
काहूकी आँखिनते अतिहीं आंसुन धार बही है ॥
काहूकी गति भई बावरी धीर न रंच रही है ॥ २३ ॥
कोऊ लाज त्यागि रघुवरको रूप निहारि रही है ॥
कोऊ कछु सकुचाय प्रगट पै हिय बिच जात दही है ॥
कोऊ सुरति सम्हारि हेरि छबि पुनि अधीर ह्वै जाहीं ॥
कहि न सकैं कछु डर सकोच ते मनहीं मन बिलखाहीं॥२४॥
कोऊ कहै सखी ये को हैं आये इत कहाँ ते
जैहैं कितै किधौं अबरै हैं ऐहैं फेरि यहां ते ॥
कोऊ कहैं चलौ ढिग चलिये भेद सबै मिलि जैहैं ॥
कोऊ कहैं अलीरी हम तौ नैननको फल लैहैं ॥
ताछिन राजकुँवर सिय ढिग ते सहजहिं उठे प्रवीने ॥२५॥
निकटहि कछुक दूरि चलि विरहन लगे विपिन चित दीने ॥
रहो कछूक दिवस चहुँधाई लागै समै सुहायो ॥
लषणलाल वर लै धनु शर कर बन अहेर जियलायो ॥२६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लखि अकेलि सकुचति ठुठकति तिय जुरि सब सिय ढिग जाई॥
परि परि पांय आय मिलि बैठीं बोलि न सकैं सकाई॥
दुहुँ करजोरि धीर धरि इक तिय कहत भई मृदुबानी॥
हे स्वामिनि कछु पूछन चाहैं हम हैं नारि अयानी॥ २७॥
बनवासिनी गमारि नारि हम नीति अनीति न जानैं॥
चूक क्षमा कीजो अजानको कोऊ बिलग न मानैं॥
मधुर वचन बोलीं सिय तिनसों तुम मम प्राणपियारी॥
बूझौ कहा कहति हौ नागरि का अभिलाष तिहारी॥ २८॥
बोलीं ग्रामबधू प्रमुदित ह्वै द्वै तापस यें को हैं॥
जिनकी छटा निहारि अनूपम कोटिकाम रतिमोहैं॥
जैहैं कहां कहांते आये येहैं कौन तिहारे॥
कहा नाम कहँ ग्राम धाम कहँ हैं किहिके दुहुँ बारे॥२९॥
कहा तिहारो नाम छबीली कौन हेत वन आई॥
हमहि अयानी जानि सयानी कहिये सकल बुझाई॥
ग्रामबधुनके वचन सुनतहीं जनकसुता मुसकानी॥
करि सकोच शिरनाय तियनते बोलीं मधुर सुबानी॥३०॥
नाम अयोध्यानगर तहांके दशरथ नृपति सुने हैं॥
श्याम गौर द्वै राजकुँवर वर सखि तिनके सुत येहैं॥
इनकी मातु कौशला रानी सो हैं सासु हमारी॥
अरु ये बंधु जु देवर गोरे लछमन नाम पियारी॥३१॥
सीता नाम हमारो सजनी पिता जनक नृप ख्याता॥
जिनकी पटरानी जु सुनैना सोईहैं मम माता॥
सकल कथा बरणी वैदेही ग्रामवधुन समुझाई॥
त्यागि सकल कुल राज काज बहु जिहि कारण बन आई३२॥
सुनि चरचा सब ग्राम बधुनके लोचन जल भरि आये॥
गदगद कंठ परस्पर लखिकै कहैं वचन बिलखाये॥
कही न जाय कछू सुन सजनी बिधि गति बाम घनेरी॥
अनुचित उचित रंच नहिं जानै करत जु मनै ठनेरी॥३३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि सजनी उन मात पिताको निपट कठोर हियो है ॥
जिन दोऊ सुकुमार सुबनको हठि बनवास दियो है ॥
राजकुमारि मनोहर ऐसी पुत्र वधू वर पाई ॥
कानन ताहि पठावत जियमें रंच दया नहिं आई ॥ ३४ ॥
एकै कहैं सखी नृप भोरे तिय चरित्र नहिं जाने ॥
बचन बद्ध ह्वै गये प्रथम कह होत बहुरि पछिताने ॥
एकै कहै कुटिल कैकेयी अति मतिमंद अभागी ॥
राम लषण सिय बनहि पठाये चेरि सिखापन लागी॥ ३५॥
एकै कहैं सुनौं री आली भाग आपने जागे ॥
ठई बुद्धि नृप रानिहि ऐसी हम सबके हित लागे ॥
कितै राम सिय कितै अयोध्या कित हम बिपिन निवासी
विधि संयोग पुण्य पूरवले भई चरणकी दासी ॥ ३६ ॥
एकै कहैं अवधवासी सखि एकौ जियत न ह्वै हैं ।
एकै कहैं अली जड चेतन सब इन बिन जियरुयैहैं ॥
एकै कहैं भटू जो इनको विधि काननै पठाये ।
तौ सजनी वे सहन मनोहर जगमें वृथा बनाये ॥ ३७ ॥
एकै कहै सखी री जो ये कंद मूल फल खाहीं ॥
तौ षटरस व्यंजन बहु आली जगमें रचे वृथाहीं ॥
एकै कहैं सहेली ये मगचलैं पयादे जोप ।
शिबिकादिक गज वाजि यान बहु बादि बनाये तोपै ॥३८॥
एकै कहैं सखी जो इनको विधि बन अटन दियोरी ।
मृदुल प्रसून बिछाय सकल मग कोमल कसन कियोरी॥
एकै कहैं उसासन लै कै जो आपनो बसाहीं ।
दुहुँ वर बंधु सिया संयुत तो राखिय आंखन माहीं॥ ३९ ॥
एकै कहैं सुनो सिय स्वामिनि बचन कहत हम डरहीं ॥
निरखिरावरी कृपाघनेरी तबहिं ढिठाई करहीं ॥
राजसुता यह ग्रामवधुनकी विनती सुनि चित दीजे ।
जानि गँवारि न विलग मानिये चूक क्षमा सब कीजे ॥४० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कानन कठिन कलेश छबीली तुमतौ अति सुकुमारी॥
सकल महादुख कैसे सहिहौ ह्वैहौ निपट दुखारी ॥
कोल भील गज सिंह रीछ कपि बिकट सदा बनचारी॥
डरिहौ तिनाहिं निहारि सुंदरी ते लागत भयकारी॥४१॥
ताते इतहिं रहौ वैदेही सबही विधि सुख पैहौ।
करिहैं सकल रावरी सेवा जो कछु आयुसु दैहौ ॥
हम निज करते नव पत्रन की रचिह कुटी सुहाई ।
सखी सदा तुम संयुत बसिहैं राम लषण दुहुँभाई ॥४२॥
अवधि बितायअवध पुनि चलियोहम सब संग सिधैहैं ॥
जौलौं इत रहिहो तौलौं नित लखि निजनैन सिरैहैं ॥
जबते सुनो श्रवण ते स्वामिनि हम वनगमन तिहारो।
तबहीते उर कल न परत है कसकत हृदय हमारो ॥ ४३ ॥
ग्रामवधुनके बचन सुनत सिय कही मनोहर बानी ॥
जानति हौ तिय धर्म सखीरी तुम सब परम सयानी ॥
राजकुँवर वर श्याम सलोने धर्म धुरंधर आली ॥
चौदह वर्ष प्रमाण राजतजि पितु आयसु जिन पाली ॥४४॥
तिनकी रुचि जो होय सखीरी सोई मोहि सुहाही ॥
पति सेवा मन बचन कर्म तिय धर्म परम यह आही ॥
सब दुखदानि सुखदउनकेसँगरञ्च भीति कछु नाहीं ॥
निरखि श्याम मुखचंद्र सहेली हम दिन रैनि अघाहीं ॥४५॥
इत बतरात रहीं तिय सियसों उत मन रघुवर पाहीं।
दरशत कबहुँ दुरत कबहूँ चलि बन तरु लति कन माहीं ॥
बिचरत फिरत विपिनमें लालन निरखि नवेली बामा ॥
सकुचति सी चितवैं तिहि ओरै जित डोलत घनश्यामा॥ ४६॥
मिसते उठि सिय ढिगते सब तिय राजकुँवर ढिग आईं ॥
निरखि लालकी छटा अनूपम नैनन जल भरिलाईं ॥
लतन ओट ठाढे रघुनंदन लखि बोलीं इक बामा।
हम रावरे दरशहित आईं हे सुंदर घनश्यामा ॥ ४७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम हौ राजकुमार छबीले हमहैं नारि गमारी ।
कहा करैं लखि रूप तिहारो लागी प्रीति हमारी ॥
निरखि रावरी छटा लाडिले हम कुलकानि बिसारी ॥
रुकत नहीं तन प्राण राखिये अब कहँ लौ मन मारी॥ ४८ ॥
हम सब तिय तुव पास छबीले विनय करन कछु आईं ॥
सो सुनि मानिलेउ हेप्यारे करियो जनि वरियाई ॥
सुनो लाल बन गमन तिहारो तबते अति विलपाती ।
तुमहिं विलोकि विपिन दुख सुमिरत फटत हमारीछाती॥ ४९ ॥
येती बिनय सुनौ हो प्यारे सब ह्वै दीन निहोरैं ॥
प्राण अधार मान लीजो यह शीशनाय कर जोरैं ॥
सिया बन्धु संयुत मनमोहन इतही अवधि बितावो ।
सबऋतु इहां सुखारी रैहौ कितहूँ अनत न जावो॥ ५० ॥
कै पुनि सँग लेहु हम सबहीं चलि हैं साथ तिहारे ।
तुमहिं बिहाय सुहाय और नहिंघर पुर सकल बिसारे ॥
करिहैं सदा रावरी सेवा विनादामकी दासी ।
और कछू न चहैं हे प्यारे हम सब रूप उपासी ॥ ५१ ॥
और न कोऊ सुहात सांवरे तुम कछु टोना कीनो ।
नेक छटा दरशाय छबीली तन मन सब हरिलीनो ॥
कै अब इतही रहौ लाडिले कै सबही सँग लेहू ।
अबला अबल जानि है प्रीतम जनि बिछुरन दुख देहू॥ ५२ ॥
सांची प्रीत हमारी प्यारे हम छलछंद न जानैं ।
तुमैं दियो तन प्राण आपनो करौ सु जो मन मानैं ॥
हैं सब ग्राम निवासिनि भोरी लखि तुव रूप लुभानी ।
तिन पर कृपा करौ हे रघुवर दीन हीन मति जानी ॥ ५३ ॥
तिनकी प्रीतिरीति सांची लखि रघुनंदन हरषाने ।
बोले बचन धीर दै सब सों नीति नेहरस साने ॥
यौं अधीर जनि होउ छबीली तुमहौ परम सयानी ।
लोकलाज कुल धर्म विचारौ कैसी भई अयानी ॥ ५४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पितु आयसु तजि राज साज हम ह्व तापस इत आये।
चौदह वर्ष न जाहिं ग्राम बन रहैं परण गृह छाये॥
एक जटिल दूजे परदेशी तुम हौ नारि ललामा।
हमरो तुमरो संग सयानी बनै नहीं अभिरामा॥५५॥
सबही बसौ सदा मेरे हिय सुधि राखियो हमारी।
फिरि हैं अवधि बिताय फेरि हम मिलिहैं वेगि पियारी॥
तुमरो धर्म यही है सुंदरि पति सुतमें चित दीजो॥
हृदय हमारो ध्यान राखियो नीतिकाज सब कीजो॥५६॥
राजकुँवरके बचन सुनत सब बाम बिकल बिललानी।
ह्वै अधीर मोहनसों बोलीं विरह प्रीति नय बानी॥
तुम हौ नृपति किशोर लाडिले नीति धर्म सब जानौ।
लोक लाज मर्याद वेदकी सकल रीति पहिचानौ॥५७॥
हम हैं नारि गँवारि साँवरे धर्म कम नहिं जानैं।
मन लग जाय छैल जाही सों ताहीके हित सानैं॥
राखैं साँची प्रीत लाडिले येही धर्म हमारे।
प्यार एक रस सदा निबाहैं सुन ले बचन पियारे॥५८॥
सुनौ बैन हे यार बटोही अबला अबल सदाहीं।
ताहू पै पुनि ग्राम निवासिनि कछू चातुरी नाहीं।
छलबलएकौ रंच न जानैं केवल प्रीत पियासी।
सांचोनेह लगै जाहीसो ताहीकी हम दासी॥५९॥
जबते रूप तिहारो हेरो तबते सकल लुभानी।
पति सुत धाम त्यागिकै प्यारे हम तुव हाथ बिकानी॥
जिय भावै सो करौ लाडिले मारौ चहौ जिवावो।
प यह विनय मान मनमोहन अब न रंच बिलगावो॥६०॥
परम प्रेममय बचन तियनके सुनि बोले रघुराई॥
तुम जु कही वाणी रससानी सब मेरे मन भाई॥
मानो सीख हमारी एती सकल बाम गृह जाहू॥
कबहुँ न कोऊ मोहिं बिसरियो मैं भूलौं नहिं काहू॥६१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगे श्यामके बैन बाणसे बोलीं सब बिलखाई ॥
हाय हमारीपीर साँवरे रंचहु तोहिं नआई ॥
प्याय सुधा फिर विषदै मारै ऐसे गुण नहिं जानें ॥
कारे कपटी होत सांचहू अब नीके पहिचानें ॥ ६२ ॥
कोऊ बोलिउठीं सुन सजनी और उपाय नकीजै ।
सब विरहिनी बाम जुरि मिलिके प्राण इनहिं ढिग दीजे ॥
कोऊ कहैंअरी आली यह जतन करौ सब कोऊ ।
अंगविभूति रमाय त्यागि घर सकल फकीरिन होऊ ॥६३॥
कोऊ कहै हाय हेछैला मैं तुमरी बलि जाऊँ ।
अब जनि मोहिं सताव पियारे पद गहि हा हा खाऊं ॥
कोऊ कहै साँवरे तुम तौ राजकुमारकहावौ ॥
ऐसी निठुराई नहिं चहिये हिये दया कछु लावौ ॥ ६४ ॥
कोऊ कहैहाय हे प्रीतम डार प्रीतकी फाँसी ।
करी मोहिं अधमरी छोडि जनि जाओ मीत विशासी ॥
कोऊ कहै श्याम यह तुमरीनेक चितौन तिरीछी ।
रोम रोमविधि गई हमारे छुवत चढी जनु बीछी ॥ ६५ ॥
कोऊ कहैंसखी रघुवंशी इनहिं दया नहिंआवै ॥
करत अहेर हेर मृगछौनन रंचहु कसक न लावै ।
कोऊ कहै सखी ये तापस प्रीत रीत कह जानैं ॥
कोऊ कहै भटू निरमोही मोह न रंचहु मानैं ॥ ६६ ॥
कोऊ कहैं सखी कहुँ इनको विरह पीर नहिं व्यापी ।
कोऊ कहैं भटूसब कारे लखियत पर संतापी ॥
कोऊ कहैं अलीरी इनको निपट कठोर हियो है ।
कोऊ कहैं ऐसही गुणतें पितु बनवास दियो है ॥ ६७॥ ॥
कोऊ कहैं श्याम निरमोही अब तू जनि दुख देरे ।
कै इतहीं रह प्राणपियारे कै सबहीं सँग लेरे ॥
कोऊ कहैं अरे निरदैया इतनी कृपा किये जा ।
निज करते सब तियन मारिकै प्राणन साथ लियेजा ॥६८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोऊ कहैं लाल तुम लाखनके जिय लीने ह्वै हौ ॥
कोऊ कहैं प्राण अबहीं कह कोटिनहूँके लै हौ।
कोऊ कहैं अली इनके हिय रूप गुमान घनेरो ॥
कोऊ कहैं लरकपन आली छुटो नहीं बहु तेरो ॥ ६९ ॥
कोऊ कहैं भटू मनमोहन पाई नारि सयानी।
याते हीय न रंचहु भावै हम सब निपट अयानी ॥
कोउ कहैं चरण गहि रहिये कैसे फेर तजैंगे।
कोउ कहैं निरदई छली ये नेक न लाज लजैंगे ॥ ७० ॥
कोउ कहैं बरजोरी राखैं हमतौ जान न दै हैं ॥
कोउ कहैं जित चहैं जांय तित अब तौ सँग सिधै हैं ॥
कोउ कहैं सबही चलि हूजे योगिनि इनके पाछे ॥
लाज कहा तस नाच नाचिये वीर काछ जस काछे ॥७१ ॥
कोऊ कहै सखीरी इन विन धृगजीवन सबहीको ॥
सुत पति हित धन धाम भोग सुख एकौ लगत न नीको ॥
कोऊ कहैं भली अति कीनी श्याम जु इत ह्वै आये ॥
कोऊ कहैं हमहिं मारनके कारन बनहिं सिधाये ॥ ७२ ॥
कोऊ कहैं लाल कहु सांची कितनी नवली मारी ॥
कीनी कहां धायलै केती किती तजीं अधमारी ॥
कोऊ कहैं सखीरी इनके जहां जहां पग परि हैं ॥
तहां तहां सबही वनितनकी ऐसीही गति करिहैं ॥ ७३ ॥
कोऊ कहैं जहां ये सजनी ह्वैहैं रहत सदाई।
ता पुर में क्यों बसत होइँगे हेलीलोग लुगाई ॥
कोऊ कहैं सुनो री सजनी राजकुमार नहीं हैं।
ये रति काम देह द्वै धरिकै आये बनै सही हैं ॥ ७४ ॥
कोऊ कहैं कहा अब कीजै अमित जतन करि हारी।
रंचहु कसक न आवत इनको अधिक कठोर हियारी ॥
कोउ कहैं हम ओर हाय बलि नेक निहार छबीले ॥
जीव दया कछु लाव लाडिले हो न निठुर गरवीले ॥ ७५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोऊ कहैं सुनो हो प्यारे जो हमको कलपैहो ॥
सब विरहिनिकी हाय परैगी तो कबहुँ न कल पैहो ॥
कोऊ कहैं पाय छबि नीकी प्यारे गरब न कीजे ।
धन जोबन नहिं रहत सदाही यश जगमें करि लीजे ॥७६॥
कोऊ कह अरे सांवलिया क्यौं इतरात घनेरो ।
कछू बोल तौ रहो मौन क्यों हर कलेश यह मेरो ॥
कोऊ कहैं सखी या ढिगते चलिय गेह मन मारी ।
देखि देखि याकी छबि औरौ पीर उठत उर भारी ॥ ७७ ॥
कोऊ कहैं भटू विधि इहिकी जो ऐसी छबि कीनी ।
तौ सजनी याके उर काहे नेक दया नहिं दीनी ॥
कोऊ कहैं सखी काहू को काहे दोष लगैये ।
जो कछु होनी होय होय सो कर्म लिखे फल पैये ॥ ७८॥
कोऊ धाय जाय रघुवर के चरण परीं अकुलाई ।
कोऊ हाय हाय करि रोवन लगीं सामुहे आई ॥
विरह नेह वश विकल सबै तिय तन मन कीन सम्हारा ।
विह्वल बचन कहैं नैननते चली जात जलधारा ॥ ७९ ॥
तिनकी प्रीति निरखि नृप लालन नैन नीर भरि आयो ।
गदगद कंठ हृदय उमँगानो सकल अंग पुलकायो ॥
उर धरि धीर कही सबहीसों रघुनंदन मृदुबानी ।
हे सुंदरी प्रीत सब तुमरी मेरे हीय समानी ॥ ८० ॥
तुम सब हौ मम प्राणपियारी मैं हों तुव आधीनो ।
सांचो नेह सदा मुहिं भावे रुचै न प्रीति विहीनो ॥
जाके जिय जैसी अभिलाषा तैसी ताहि पुजैहौं ।
भामिनी बिलग मति मानौ मनमानो सुख दहौं ॥ ८१ ॥
कहि कहि मधुर बचन रघुराई सब उर धीर धराई ।
संध्या समै जानि शिष दैकै निज निज गेह पठाई ॥
अपने अपने भौन गईं तिय जिय रघुनंदन माहीं ।
जकी थकी सी रहीं बैठिकै मनहीं मन बिलखाहीं ॥८२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उत रघुनंदनमें मन अटको इतै लाज गुरु जनकी ।
दशा दुराय रहीं सबही तिय राखि मनहि में मनकी ॥
होत प्रात कब चलिय लाल ढिग नींद न रंचहु आवै ।
छिन छिन लखैं चंद निशि तारे युग समान पलजावै॥८३ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० ग्राम वधू समागम
वणनो नाम द्वितीयोविभागः॥ २ ॥

इतै रैनि वसिकै रघुनंदन प्रातहि विपिन सिधारे ।
ग्रामवधुनकी प्रीति सराहत चले जात मग प्यारे ।
दोऊ सिय रघुचंद परस्पर तिनही की सुधि करहीं ।
सांचो नेह बखानि तियनको अतिआनँद उर भरहीं ॥ १॥
निशा विगत लखि उठीं सबै तिय करि गृहकाज उताली ।
गुरु लोगनकी डीठ दुरै के चलीं तहां मिलि आली ॥
आईं जहां रहे नृपलालन तहां न श्याम निहारे ॥
हिय धकधकी उठी सबहीके लखैं चहूँ कित प्यारे ॥ २ ॥
जाय निहारत भईं सुवट तर सूनि साथरी पाई ।
हेरतही सब वाम हाय करि गिरीं धरणि मुरझाई ॥
घोर शोर करि रोवन लागीं कहै गये कित प्यारे ।
आंसुनधार बही नैननते तन मन प्राण बिसारे ॥ ३॥
कोऊ भूमि परी रज लोटैं कोउ फिरैं बिललाती ।
कोऊ शीश धुनैं व्याकुल ह्वै कोऊ पीटति छाती ॥
कोऊ हाय श्याम ! कहि टेरैं कोऊ मौन रहीं हैं ।
कोऊ लेति उसांस आह भरि कोऊ विरह दही हैं ॥४॥
काहूकी सारी तनु ते गिरि लतिकनमें उरझानी ।
काहूकी कंचुकी फटी सब सुधि बुधि सकल नशानी ।
काहूके अंगन ते केते भूषण टूट परेहैं ।
काहूके आनन पै दुहुँदिशि कुंतल छूट परेहैं ॥ ५ ॥
काहूके तनुमें तरु वेलिनते जु खरौट परेहैं ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काहूके पायनमें कंटक लागे अमित खरेहैं ॥
काहूके अतिविरह ज्वालतें मुखसे फेन बहोहै ।
काहूके सब अंगन माहीं स्वेद जु छाय रहोहै ॥ ६ ॥
राजकुँवरके बिछुरत सबहीं भई बावरी बाला !
जो जिय आवै कहैं करैं सो बढी विरहकी ज्वाला ॥
कोऊ कर कर शोर रोयकै हँसत निशंक बहोरी ।
कोऊ हाय मार रहि जावैं पुनि बैठे मुख मोरी ॥७॥
कोऊ मनहीं ते बतरावैं अरु अनखाय रिसावैं ।
कोऊ बिरह कवित्त छंद कहि फिरि चुप ह्वै शिरनावैं ॥
कोऊ भानु भूमि नभ पक्षिन तरु गिरि निकट बुलावैं।
कोऊ कहैं लाल वे ठाढे चलौ चलौ री धावैं ॥ ८ ॥
कोऊ दौरि चढैं तरु गिरि पै इत उत चहुँ दिशि हेरैं ।
आव आव हो श्याम बटोही फिरौ फिरौ कहि टेरैं ॥
कोऊ धाय गहैं तरुपल्लव कहैं दौरियो आली ।
हम कर गहि राखे मनमोहन दुरे हुते इत ख्याली ॥ ९ ॥
कोऊ निज परछांहीं लखिकै ताहि गहनको धावै ।
कहैं वेगि आवोरी पकरौ लाल भगे ये जाव ॥
कोऊ लखि प्रतिबिंब वारि बिच बोले अति बिलखाई ।
धाव धावरी आव वेगही ये ठाढे रघुराई ॥ १० ॥
कोऊ झुकि झुकि भूमि पंथमें चरण चिह्न चहुँ हेरैं ।
कोऊ खग मृग तरु लतिकन को जाय जाय मिलि घेरैं॥
कोऊ कहैं सखी हम सबको आवत देखि दुराने ।
कोऊ कहैं अलीरी कालिहि वे निशि मांझ पराने ॥ ११ ॥
कोऊ कहैं सुनौरी सजनी हैं दुहुँ बंधु अहेरी ।
खेलनगये भटू काननमें आवत ह्वैहैं येरी ॥
कोऊ कहैं अली टुक टेरौ हैं किहि ओर चलीजे ।
कोऊ कहैं सखी चुप साधौ इतही आवन दीजे ॥ १२ ॥
कोऊ विरह अधीर विकल ह्वै टेरन लगीं सुवामा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हाय प्राणप्यारे अब आवौ कितै गये घनश्यामा ॥
कोऊ कहैं लेत कह प्रीतम हमारी प्रेम परीक्षा ।
हैं सब विकल वियोग तिहारे आय करौ कछु शिक्षा॥१३॥
हे लाडिले सुजान छबीले अब टुक मुख दरशाजा ।
विरह ज्वाल ते जरत सबै तन नेह सुधा बरसाजा ॥
तो बिन हे दिलदार पियारे निकसैं प्राण हमारे ।
हिये दया कछु लाय जिवाले हैं प्रीतम इत आरे ॥ १४ ॥
कहां दुरेहौ जाय बिपिनमें बोलौ मीत बटोही ।
कल्प समान पलक बीतत हैं श्याम मोहिं बिनतोही ॥
पहिले मारि नैन बाणन ते सब घायल करि डारी ।
प्रीत लगाय हाय अब प्यारे काहे सुरति विसारी ॥१५॥
राजकुमार सुजान जानि कै हम तुमसै हित कीनो ।
ऐसे निपट अजानकढे जू मोहिंअधिक दुख दीनो ।
या विधि बिकल बाम सब विरहिन विरह भरी बिललाहीं ।
धाय धाय इत उत जिततिनसों बूझत हैं सब पाहीं॥१६॥
तरु गिरि महि सरिता खग मृगको जड चेतन नहिं सूझैं ।
निज प्रीतमकी खबर दीन ह्वै धाय सबहिंसों बूझैं ॥
कहैं अधीन बचन करजोरेंअब जनि कोउ दुरावो ॥
प्यारे प्राण अधार सांवरे हैं कित मोहिं बतावो ॥१७॥

कलित छंद ।

हे अशोक तुम शोक हरौ सबहीके । क्यों न मिलावो मोहन जीवन जीके ॥ हे कदंब बलि अब विलंब जनि लावो । राजकुँवर रघुवरको हमहि बतावो ॥ १८ ॥ हे रसाल कहुलाल कहूँ इत हे रे । पहुँचावो जू वेगि हमैं उन नेरे ॥ हे पीपर तुमही पर दया जुलावो॥ सुंदरश्याम सजनको रूप दिखावो ॥ १९ ॥ हे पाकर अब इती कृपा कर देही । कहाँ बतादे मोकहँ श्याम सनेही ॥ हे तमाल रघुलाल कहूं तुम पाये । कहौ कितै मुहि तजिकै रहे दुराये ॥ २० ॥ हे वट तुम तजि कपट बचन टुक बोलौ । भये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अचल यों काहे रंच न डोलौं ॥ तुमहूसे कहि गये कछू मम प्यारे। रहे रैनि दिन तो ढिग मीत हमारे ॥ २१ ॥ हे अनार कचनार यार निरमोही । कहां बतादे छैल निहारौं तोही ॥ हे पलाश तुम आश पुजावो मोरी । कहां दिखावो लाल कहों कर जोरी ॥२२॥ हे चंदन रघुनंदन रूप दिखावो । विरह ताप मो उरकी सकल सिरावो ॥ हे कदली कस बदली बुद्धि तुमारी॥ कहां बतावो श्याम लेति बलिहारी ॥२३॥ हे अवनी दुख दवनी हौ सबही की।कहौ लाल कित हरौ व्यथा मोजीकी ॥ हे मग तुम पग चिह्न बतावो मोही । गये कहां ह्वै सुंदर छैल बटोही ॥ २४ ॥हे समीर बलिवीर पीर हरमेरी । कितैं गये रघुवीर धीर मुहिं देरी ॥ धाय लाल ढिग जाय मोहिं सुधि लादे । उन हूँ को या विरहिनि दशा सुनादे॥२५ हे सरिता तपहरिता तुमहु कहावो।जरतहृदययहमेरोक्योंनसिरावो। हे सरोज प्रीतमकी खोज बतावो।कहा दुरेमनमोहन वेगिदिखावो२६ अहो मीन जलहीन दशा तुव जैसी॥ श्याम सुघर बिन तलफतहैं हम तैसी ॥ हाय नकोउ सहाय आय हो जावै ॥ विरह अगिन मो हियकी विषम बुझावै ॥२७॥ अहो भौंर बहु ठौर सदा तुम डोलौ । लखे होय कहुँलाल वेगि तौ बोलो॥वेउ कपटी छैल तुम-हिसे कारे ।प्रीतलाय हरि लैगे प्राण हमारे ॥२८॥ हे खंजन मन रंजन नैन तिहारे । हम जानी कहुं निरखे हैं तुम प्यारे ॥ हे मैना वरबैना क्यों न सुनावो।गये पथिक किहि ओर जु मोहिं बतावो॥ ॥ २९ ॥ हे शुक तुम टुक बोलौ मधुरी बानी । कहूँ निहारे रघुवर रूप गुमानी ॥ अरे काग बलिभाग तोहिं बलिदैहौं । मोकहँ सगुन बताव श्याम कब पैहौं॥ ३० ॥हे हरिनी मन हरिनी आंख तिहारी । नृप लालनकी तुम कहुँ छटा निहारी॥हेदिशि किहिदिशिगये साँवरे प्यारे । कहौ लाल बिन तलफत प्राण हमारे ॥३१॥ हे गिरिहौ अति ऊंचे फिरि चहुँ हेरौ ।लखौ लाल कित जात वेगि किनटेरौ॥ अहो मोर अति ऊंचे शोर मचावो । विरहकलपना मेरी सकल सुनावो॥३२॥ अरे पपीहा तू प्रीतम ढिग जारे । दीन बचन कहि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पीउ पीउ रट लारे॥ हूक उठै सुनि कूक कोकिला तेरी। नेकमौन गहु हाय नेमुहि दुख देरी॥३३॥ अरेचंद मतिमंद अंग क्यों जारै। पंचबाण उरबाणहायक्यों मारै॥ अरीरैनिदुखदैनिसिरात न काहे।अरे विरह मो सकल अंग कसदाहे॥ ३४॥ अलबल बोलैं विकलविरहिनी वामा। तिनहि कछू न सुहाय विना घन-श्यामा॥सुधि बुधि भूलगईहैंसब तन मनकी। घर पुरकी नहिं सुरति भई बन बनकी॥३५॥कोऊ कहूँ विहाल बैठ पछताती। कोऊ करि करि हाय धुनैं शिर छाती॥भई बावरी कोऊ इत उत दौरैं।कोऊ विहबल गिरीं परी क्षिति छौरैं॥३६॥ कोऊतिया तियाको भुज गहि लेही।कहै चले कित तजिकै श्याम सनेही॥ बोलैं कोऊ गहि तमाल अकुलाई।आउ आउरी हम पाये रघुराई॥३७॥ काहूके शिरकेश खुले न सम्हारैं। काहू तनतेंवसन गिरेनहिं धारैं॥काहूकेपट फटे कंटकन माहीं।काहू परे छरौंट कछू सुधि नाहीं॥३८॥ हाय हाय कहि कोउ उसासन लेहीं।कोऊ काहुहि कछू न उत्तर देहीं॥ भई बावरी रघुवर विरह वधूटी। लोक लाज कुलरीति नीति सब छूटी॥३९॥ कोउ कहैं सखि हाय कहौ कित जैये। कोउ कहैं यह काको विरह सुनैये॥ कोऊ कहैं सखी उन विन धृग जीनो। कोऊ कहैं विधाता यह दुख दीनो॥४०॥कोऊ कहैं सखी सो निठुर महाहै। कोऊकहैं अली उहि दोष कहाहै॥ कोऊ कहैं मुहि हाय संग नहिं राखी। कोऊ कहैं कछु चलतहुं मीत नभाखी॥४१॥ कोऊ कहैं ह्वै योगिनि भस्म रमैये। सब मिलि श्यामहि हेरन जित तित जैये॥ कोऊ कहैं सखीरी हम तन दैहैं। मनमोहनके ढिगहीं प्राण पठैहैं॥४२॥ कोऊ कहैं अली हम अब लखि पावैं। तौ छिनहू भरि नैननते न दुरावैं॥ कोउकहैं सखि होनीहुती भईसो॥कोऊ कहैं करी जसि दई दई सो॥ ४३॥ कोऊ कहैं अलि कारो कठिन महाहै। कोऊ कहैं तापसकी प्रीत कहाहै॥ कोऊ कहैं कपटी जस मुहिं दुख दीनो। सोऊ तस फल पैहै अपनोकीनो॥४४॥कोऊ कहैं सखी साँवलिया भोरो॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताके संग महा छलिया है गोरो॥कोऊ कहैं अली सो नारि सयानी। हम सबको लखि लै निज पियहि परानी ॥ ४५ ॥ कहैं वचन सब जाके जिय जो आवैं । रघुनंदनके विरह विकल बिललावैं । ताही मग ह्वै एक पथिक तहँ आयो । तिहि विलोकि सब वनितन अति सुखपायो ॥ ४६ ॥ घेरि लयो तिहि धाय जाय सब नारी । चकित भयो सो तिनकी दशा निहारी ॥ कहै पथिक तुम को हौ कौन कहांकी । कछू न बोलैं वाम श्याम मद छाकी ॥४७॥ बैठि गयो इक तरु तर आय बटोही । घेरि रहीं चहुँ फेर वाम सब वोही । बूझतिहैं मिलि खबर मीतकी तासों । कहन चहैं कछु कछू कढै रसनासों ॥ ४८ ॥ कहौ पथिक तुम सांचे बैन सुखारे। कहूँ निहारे हमरे प्राण पियारे । श्याम गौर द्वै बंधु सुभग धनुधारी । है तिनके संग एक मनोहरनारी॥४९॥कीने तापस भेष तिहूँ वनचारी॥कहौ बटोही तुम कहुँ छटा निहारी॥ लछमन नाम सु गौर राम हैं श्यामा । सीता नाम ललाम वाम गुणधामा ॥ ५० ॥ अविलोके तुम होय कहूँ तौ बोलौ । रंच न राखौ हृदय गांठ बलि खोलौ ॥ पथिक तिहारे पायँ परैं करजोरी ॥ कहौ श्याम सुखि निरखि दीनता मोरी ॥५१ ॥ भई बावरी सिगरी विरहिनि बाला । कहैं पथिक कित मिले तुमैं रघुलाला ॥ कहो कछू हम सबसों श्याम सँदेशो । पाई खबर न मोजिय अधिक अँदेशो ॥ ५२ ॥ कहौ कहा कहि भेजो वह निरमोही । कैपाती लिखि दई बतावो मोही ॥ के हम सबको भेद लेन तुम आये । राजकुँवर छल करिके सिखैं पठाये ॥५३॥बारबार तुव पाय पथिक हम परहीं॥हाथ जोरि शिरनाय विनय बहु करहीं ॥ वा निरमोहीकी कछु खबर सुनावो ॥ तिहि बिन तलफत प्राण सुहाय बचावो ॥५४॥ येकै तिया बटोहीसों कर जोरैं । एकै तिहि निज शीश नवाय निहोरैं ॥ एकै कर झझकोरि कहैं कछुतेही । बूझैं इक गुलचाय कहौं कित नेही५५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकै बूझैं बात बलैया लैकै। एकै विनवैं ताहि चिबुक कर दैकै॥ एकै कहैं अली यह बौरो नर है। याको निज तन मनकी कछु न खबर है॥ ५६ ॥ एकै कहैं भटू इन श्याम निहारे॥ डोलत वन वन तन मन सुधि सकल बिसारे॥ जौ इन छबि न लखी होती लालनकी॥ सुर तिन जाती तौ याके तन मनकी॥५७॥ एकै कहैं अली यह उनढिग जैहैं। बिरह दशा या सबकी सकल सुनैहैं॥ एकै कहैं कछु तौ बोल कसाई। तोहि हमें कछु रंचहु दया न आई॥ ५८॥ एकै कहैं पथिक प्रीतम ढिग जैयो। हम दिशिते पग परि परि विनय सुनैयो॥ कहियो तुम बिन तलफत हैं सब वामा। तिनहि जाय सुखदेहु बेगि घनश्यामा॥ ५९॥ एक वेर फिरि आय वदन दर-शावे। कहियो फिरि जित भावै जिय तित जावैं॥ कहियो जब ते नैन बान तुम मारे। तबते निशिदिन तड़फत प्राण विचारे॥ ६०॥ कहियो लालन जो न वेगि तुम जैहौ। तो मरि हैं सब विरहिनि जियतन पैहौ॥ कहियो आय सु प्राणदान दै जावैं। नाहीं तौ निज करते जिय लै जावैं॥ ६१ ॥कहत वचन विरहिनी नेहमदछाकी। सही जात नहिं पीर वियोग व्यथाकी॥ अहो पथिक उन पास जाय फिरि आवो। कहा कहौं मनमोहन मोहि सुनावो॥ ६२॥ कोऊ लैकर कंकन पथिकहि देहीं। कोऊ निज मुद्रिका देति हैं तेहिं॥ कोऊ तिय भुजबंद देयँ अतिनीको। देनलगी हैं चंद्रहार विरहीको॥ ६३॥ कोऊ बेसर कोऊ कुंडल देहीं। शीशफूल मंजरि देय उठिकेहीं॥ करनफूल नथ झूमक कोऊ उतारैं। चंपकली वर माल कोऊकर धारैं॥६४॥पथिकनहिं कछु लेय देयँ बर जोरी। पांय परैं तिय विनय करैं कर जोरी॥ कहै पथिक तुमवेगि श्याम सुधि लावो।एक बेर रघुवर सो हमहि मिलावो॥६५॥ तिनकी प्रीति निहारि पथिक हरषानो। वंदि चरण निज जन्म सफल करिमानो॥ धन्य वाम ये जिनै प्रीति अतिसाँची। लाज त्यागि रघुराज रंगमें राची॥ ६६॥ तिनहिं धीरदै पथिक कही

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मृदुवानी । धीर धरौ निज हियमें परम सयानी ॥ यौं जनिहोहु अधीर विरहिनी वामा । तुमहिं मिलैंगे वेगि राम अभिरामा ॥ ६७ ॥ धर्म धुरंधर राम विषयरसरूखे । रहत भक्त आधीन प्रीतिके भूखे ॥ तुम उनते नहिं दूर नवे तुमसे हैं । दुहूँ निकट हौ दोऊ दुहूँ हिये हैं ॥ ६८ ॥ रैनि दिवस ज्यों तुम सब उनहिं रटौहौ । तिय सिगरी त्यों तिनकेहिये बसैहौ ॥ वैसबहीके जीकी जाननवारे । दूर करैंगे सकल कलेश तिहारे ॥ ६९ ॥ पथिक धीरदै सबही विधिसमुझाई । विरह अगिनि कछु कहि रस बैनसिराई ॥ कहैं वियोगिनि बाल बटोही प्यारे । और श्यामकी चरचा फेरि चलारे ॥ ७० ॥ फेरि विरहिनि विकल भई अकुलानी । हाय लाल कहि टेरन लगी सुवानी ॥ विरह विवश तिन सुधि बुधि पुनि बिसराई । उठोबटोही ताछिन औसर पाई ॥ ७१ ॥ तिन चरणनकी रज निजनैन लगाई । चलत भयो कछु मिसतै डीठ बचाई ॥ चलो जात मग पथिक नैन भरिलावै । करि करि तिनकी सुरति हिये हुलसावै ॥ ७२ ॥ इतै विरहिनी वाम अधिक अकुलानी । हाय बटोही गयो कहैं बिलखानी ॥ धाय धाय चहुँ ओर जाय तिहि हेरैं । कोऊ कहुँन दिखाय वैसहीं टेरैं ॥ ७३ ॥ कहैं पथिक कित गयो नेक इत आरे । मेरो कछु संदेशो तौ लेजारे ॥ इहि विधि करति विलाप विकल सब नारि । बढी पीर उत लागी विरहकटारी ॥ ७४ ॥ ताहीछिन चहुँ ओर घेर घन आये । बरसन लागो नीर अधिक क्षिति छाये ॥ झोका देत समीर दामिनी कोंधे । जाकी चमक निहारि नैन चकचौंधे ॥ ७५ ॥ नटत मोर बन पक्षिन शोर मचायो । सुनि विरहिनि हिय दूनो विरह बढायो ॥ नीर बुंद जो परैं तियनके तनमें । रंचक हूँ न लखाय सुछनकैं छिनमें ॥ ॥ ७६ ॥ देखतहीं घनश्याम विरहिनी बाला । रोय उठीं अति भई विरह बेहाला ॥ काहू कह्यो भटू जैसे घनकारे ॥ तैसेही मनमोहन अपने प्यारे ॥ ७७ ॥ कोऊ विरहिनि कहैं मेघ इत आरे । तो लखि सीतल होत सुनैन हमारे ॥ वेऊहैं घनश्याम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमौं घनश्यामा। दोउनको है एक रुप गुण नामा ॥ ७८ ॥ कोउ कहैं घन इतै नहीं तुम छावो। जितै होय मनमोहन तितै सिधावो॥ उनही के ढिग जाय घेरि झरि लैयो। यह दुख हमरो श्यामहि सकल सुनैयो ॥ ७९ ॥ नेह विरह वश ग्राम वधू कर जोरैं। शीश नाय ह्वै दीनजु सबहि निहोरैं ॥ कानन योग नहै सुकुमार पियारे। ते वन वन यौं डोलै पाँय उघारे ॥ ८० ॥ तुम सबहि मिलि प्रीतमको सुख दीजो। जड चेतन निज जन्म सफल कर लीजो ॥ अहो मेघ तहँ कीजो छाँह सदाही। सुंदर श्याम सलोने जहँ जहँ जाहीं ॥ ८१ ॥ अहो पवन नित त्रिविध लाल हित ढरियो। होन न पावै सकल स्वेद श्रम हरियो ॥ अहो चंद रघुचंद अनंद करीजो। अहो रैन प्रीतमहि चैन बहु दीजो ॥ ८२ ॥ अहो भूमि तुम तहाँ मृदुल अति होऊ। जहां जाहिं सिय सहित बंधु वर दोऊ ॥ अहो पंथ लघु सुगम स्वच्छ शुचि रहियो। राजकुँवरको मोद सहित निरवहियो ॥ ८३ ॥ रघुवरके हितहेतु अहो तरु बेली। फूलौ फलौ सबै ऋतु समय सकेली ॥ अहो भानु तुम उनके कुलपति होजू। राजकुँवर सुख हेतहि सीत गहोजू ८४॥ सब पसारि निज अंचल विधिहि मनावैं। जहाँ रहैं रसिकेश तहाँ सुखपावैं ॥ देव पुजैयो वेगहि आश हमारी। बहुरि बिलोकैं नयनन भरि धनुभारी ॥ ८५ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० ग्रामवधूविलापवर्णनो नाम तृतीयो विभागः॥ ३॥

दोवई छंद।

सब रघुबर छबि छकीं छबीली तन मनकी सुधि भूली।
राजकुँवर घनश्याम सुघर बिन बिरह शूल हिय हूली ॥
सकल दिवस निशि बन बिलपतहीं रहीं नवेली बाला।
घर पुरजन अकुलात सोच बश खोजतफिरत विहाला॥ १॥
दूजे दिवस बिपिनमें पाईं तिनकी दशा निहारी।
भये बिकल गुरूजन पुर परिजन बढो सोच उरभारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहौ कहा बूझैं यह तिनसों कछू न उत्तर देहीं ।
लै उसाँस उर ससकि सबैतिय नैनन जल भरि लेहीं॥२॥
काहू तन हेरैं नहिं काहुहि कछू सु भेद बतावैं ।
लैहिलकी तिय शीश नाय कहि हाय श्याम रहिजावैं ॥
तिन सब बनितनको निज निज गृह लाये करि बरियाई ।
सुनि चरचा जित तितते धाये देखन लोग लुगाई ॥ ३ ॥
तिनकी दशा विहाल विलोकत पूर परीजन अकुलाने ।
जाय जाय जिहिं तिहिं सब टेरैं फिरत बिकल बिललाने ॥
कोऊ गुणी मयूर पक्ष कुश लै पढि मंत्रन झारैं ।
कोऊ दोऊकर जोरि मनावत विधि यह व्याधि उबारैं ॥ ४ ॥
कोऊ कहैं इनैं कछू लागो कोऊ कहैं डरीहैं ।
कोऊ कहैं कोऊ इन ऊपर दृढ करतूत करीहैं ॥
कोऊ कहैं व्यथा है बाढी कोऊ कहैं रिसानी ।
कोऊ कहैं भई ये बौरी कहै सु जो मनमानी ॥ ५ ॥
यंत्र मंत्र अरु टोटका किये अनेक उतारे ।
काहूको कछु फुरो न एकहु अमित जतन करिहारे ॥
सबै थकित ह्वैरहे मौन गहि रंच उपाय लगीना ।
चकी जकीसी रहीं सकल तिय नेकौ पीर भगीना ॥ ६ ॥
यदपि रहैं गृह माहिं तदपि पै दिनहीं दिन मुरझाहीं ।
देह गेह मधि वसै इतै उत प्राण प्राण पति पाहीं ॥
सबहि शृंगार भोग सुख त्यागो रहति सदा मन मारी ।
श्याम नाम निशिदिनउर सुमिरैं अवधि आश उर धारी॥७॥

बरवा छंद ।

ग्राम वधू सब हिलि मिलि पनिघट जाहिं ॥ श्याम सुरति उर करिकरि अति विलखाहिं ॥ ८ ॥बोलति विकल वियोगिनिदीन अधीन ॥ वृथा जियब अब सजनी श्याम विहीन ॥ ९ ॥ हम न आज लग जानी बिछुरन पीर ॥ अब पहिचानी मोहन बिछुरे वीर ॥ १० ॥ कोऊ कहैं सखीरी कछुन बसाय ॥ मारिमारिमन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहिये करि करि हाय ॥ ११ ॥ वह मधुरि रस बोलनि कसकत हीय ॥ वा तिरछी रस हेरनि पैठी जीय ॥ १२ ॥ कबहूँ फिर अब ऐहैं इहि मग लाल ॥ हमहिं बहुरि दरशैहैंबदन विसाल ॥ १३ ॥ सो दिन धौं कब होइहि अति अभिराम ॥ जादिन प्रीतम हेरैं फिर सब बाम ॥ १४ ॥ दई देवता कित धौं गये पराय ॥ सबै मनाये कोउ न होत सहाय ॥ १५ ॥ श्याम मिलनकी धरि धरि जियमैं आस॥ करत सदा हम सजनी जप उपवास ॥ १६॥ हम उन लागि परनवां अरपन कीन ॥ सो अस निठुर पियरवा सुधिहु नलीन १७॥ लिखि न पठाई पतियौ एकौ मीत ॥ का राखिहि निरदैया साँची प्रीत॥ १८॥ सजनी नेह निबाहब सहज न होय ॥ प्रीत रहै बरु जियरा जावै खोय ॥ १९ ॥ सखी इकंगी नेहवा दुख बहु आय ॥ दिवला माहि पतँगवाकर जिय जाय ॥ २० ॥ करि करि श्याम सुरतिया हम दिन रैन ॥ रोय रोय मन मारैं छिनहुँ न चैन ॥ २१ ॥ कोऊ खबरि सुनाइहि असि फिरि हाय॥ आये मीत पियरवा देखहु जाय॥ २२॥ सजनी कससुधि होइहि उनहिहमारि॥ राज कुँवर वे हम हैंनारि गँवारि ॥ २३ ॥ कोऊ कहैं सखीरी मुहि दिन रैन ॥ झझक उठै हिय धरकत परै न चैन ॥ २४ ॥ रहे जहाँ मोहन तहँ जाय न जाय ॥ सजनी सो वट छहियाँ धरि धरि खाय ॥ २५ ॥ लगत मशान भवनवाँ परिजन भूत ॥ रिपु समान दरशावैं पितु पति पूत ॥ २६ ॥ जबसे श्याम सजनवाँ बिछुरे हाय॥ तबसे आपनि देहिया मुहि न सुहाय ॥ २७ ॥ बिछुरत प्रीतम छतिया फाटि न मोरि ॥ अब छिन छिनहिं करेजवा उठत मरोरि ॥ २८॥ बूड़ि मरैं वरु हेली समुद मँझार ॥ बिरह कलेश न डारैं कहुँ करतार ॥ २९ ॥ लाय भसम वरु देहिंया बसै पहार ॥ प्रीतम कै बिछुरनिया होय न पार ॥ ३० ॥ दुख चाहै सो बिधिना दे भरपूर ॥ पै अँखियन ते मितवहि करैं न दूर ॥ ३१ ॥ प्रीतम साथ सहेली वनहुँ सुहाय ॥ उन बिन सून सदनवां विपिन लखाय ॥ ३२ ॥ बोली एक सुनौरी सपना मोर ॥ लखे आज जनु आये राजकिशोर ॥ ३३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोली इक कुवना पर बैठो काग ॥ कहु साँची यह देहौं तुहि बलि-
भाग ॥ ३४ ॥ काग कनकके पिंजरा राखौं तोहि ॥ जुपै सगुन
यह साँचो तेरो होहि ॥ ३५ ॥ जस हमारहैं जियरा उन महँ लाग ॥
तस मित ऊकर ह्वैहै कहुरे काग ॥ ३६ ॥ कोऊ कहैं सखि बूझिय
गणक बुलाय ॥ किते दिवस महँ ऐहैं अब रघुराय ॥ ३७ ॥ वामनैन द्वै-
दिनसे फरकत मोर ॥ आय काग शुभ बोलिया बोलत भोर ॥ ३८ ॥
सखिरी नीक सगुनवाँ अब नित होहि ॥ जानि परै अस प्रीतम
मिलिहैं मोहि ॥ ३९ ॥ इहि बिधि निशि दिन सब तिय
सुमिरहिं श्याम ॥ अवधि आश मग निरखैं सिगरी बाम ॥ ४० ॥

प्र० ॥ तुलसीकृता रामायणे अयोध्याकांडे ।

चौ०—सीता लषण सहित रघुराई ❀ ग्रामनिकटजबनिसरहिंजाई ॥
सुनि सब बाल वृद्ध नरनारी ❀ चलहिं तुरत गृह काज विसारी ॥
नारी सनेह बिकल सब होहीं ❀ चकई सांझ समै जनु छोहीं ॥ १ ॥

इत्यादि ।

इति श्री० रा० र० वि० वि० ग्रामवधुस्नेहकथन-
वर्णनो नाम चतुर्थो विभागः ॥ ४ ॥

दोहा—उत इहि बिधि मगवासिनी, हिय सुमिरैं नित श्याम ॥
छिन छिन तिनकी प्रीति इत, सदा सराहत राम ॥ १ ॥
सिया लषण रघुबर मुदित, पहुँचे जाय प्रयाग ॥
मज्जन करि बहु मुनिनतें, मिले सहित अनुराग ॥ २ ॥
भरद्वाज ऋषि दरशलहि, भये परम आनंद ॥
तहँ तें चलि न्हाये तिहुँ, कालिंदी सुखकंद ॥ ३ ॥
दोऊ बंधु पुनीत मृग, लाये खेलि अहेर ॥
बिधि कृत्य युत अशन करि, चलै मुदित तिहुँफेर ॥ ४ ॥

प्र० वाल्मीकीय आयोध्याकांडे सर्ग ॥ ५९ ॥ श्लोक ।

क्रोशमात्रं ततो गत्वा भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥
बहून्मेध्यान्मृगान्हत्वा चेरतुर्यमुनावने ॥ १ ॥

दोहा—वाल्मीकि आश्रम निरखि, लहो परम आनंद ॥
आय शीश नायो मुनिहि, सिया लषण रघुचंद ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वाल्मीकि लखि मुदित ह्वै, तिहुँ शुभ आशिष दीन ॥
यथा उचित सत्कार बहु, प्रीत सहित मुनि कीन ॥ ६ ॥
पुनि कर जोरि निहारिके, मुनिसन बूझी राम ॥
नाथ रजायसु दीजिये, वास करों किहि ठाम ॥ ७ ॥
वाल्मीकि मुनि मुदित ह्वै, बोले मंजुल बैन ॥
राम तिहारे वासु हित, अमित अनूपम ऐन ॥ ८ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

मनमें मुनीनके कवीनके सुबैननमैं नेहिनके नैननमें प्रानमें पुरा रीके । अवधनिवासिनके मिथिला विलासिनके परम उपासिनके सत्यव्रत धारीके ॥ ज्ञानी गुणवंतनके सज्जन अनंतनके साँचे शु चिसंतनके परउपकारीके । राम अभिराम सीता लषन समेतसदा हृदय निवास करौ रसिकविहारीके ॥ ९ ॥ सकल सुपास पासवा स मुनिमंडलीको लायक बिलास थलदायक हुलासको । कंदमूल सरस अतुल फल फूल मृग सरिता विशाल गीरी बिपिन विका सको॥ रसिकविहारी सो निहारी छबि भारी ताहि भावैना अनूप रूप अमरनिवासको । चित्रकूट विशद बिचित्र है पवित्र तहां ठाम अभिराम राम रावरे निवासको ॥ १० ॥

चौ०-सुनि वरबैन मुनिहि शिरनाई ❀ चले बंधु सिय युत रघुराई॥
आये चित्रकूट छबि हेरी ❀ मुदित फिरे गिरि वरचहुं फेरी ११
पुनिद्वै परणकुटी वर भारी ❀ लषन लाल निज हाथ सवारी॥
सो लखि राम कहीहुलसाई ❀ शाल प्रतिष्ठा उचित सदाई १२
सो सुनिलषन कृष्णमृगलाई ❀ विधि युत पलसाकल्य बनाई॥
तब रघुवर जपि मंत्र प्रमाना ❀ कीनो हवन समेत बिधाना १३

प्र० । वा० । अ० कां० स० ९६ ॥ श्लो० ।

ऐणेयमांसमाहृत्य शालां यक्ष्यामहे वयम् । कर्तव्यं वास्तुश-मनं सौमित्रे चिरजीविभिः ॥ २॥ भ्रतुर्वचनमाज्ञाय लक्ष्मणः पर-वीरहा । चकार च यथोक्तं हि तं रामः पुनरब्रवीत् ॥ ३ ॥ अयंस-र्वसमस्तांगः श्रितः कृष्णमृगो मया । देवता देवसंकाश यजस्व कु-शलो ह्यसि ॥ ४ ॥ बभूव च मनोह्लादो रामस्यामिततेजसः । वै-श्वदेवबलिं कृत्वा रौद्रं वैष्णवमेव च ॥ ९ ॥ इत्यादि ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०इमि विधियुतकरिशालप्रतिष्ठा ❀ दशरथसुत रघुवर धरमिष्ठा॥
येक कुटी मधि सियरघुवीरा ❀ इकमहँरहे लषण रणधीरा १४॥
रामआगमन सुनिसब धाये ❀ मुनि मुनितिय लखिहिय हुलसाये॥
इहिविधिचित्रकूटमधिरामा ❀ कियोवासलखिथलअभिरामा १५
सेवा करैं लषण चित लाई ❀ सुखी परस्पर प्रीति सदाई॥
बसे राम लछमन बन जबते ❀ निर्भय भये देव मुनि तबते॥१६॥

दोहा–चित्रकूटवासी सकल, जेते जड चैतन्य ।
तिन सराहि सुर कहतहैं, धन्य धन्य ये धन्य ॥ १७ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० चित्रकूटनिवस-
वर्णनो नाम पंचमोविभागः ॥ ५ ॥

दो०–चित्रकूट उत राम सिय, लखि सब भये निहाल ।
इत कौशलपुर शोक वश, विलपत सकल विहाल ॥ १ ॥
अवधनिवासी नारि नर, निशिदिन करत विलाप ।
राम लषण सियके विरह, सबके उर संताप ॥ २ ॥
कहत परस्पर वैन सब, विरह विवश बहु दीन ।
हाय लषण सिय राम हम, काहे संग न लीन ॥ ३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सोचत हियेमें सबै रसिकबिहारी यहै काननमें येते दिन कैसेवे बिताय हैं । संग सुकुमारी तिय देखि मृगराजको अतिही सशंक ह्वै के जिय बिलखाय हैं॥ कंटक समेत बाट चलि हैं उघारे पाँय ताहूपै बिरस कंद मूल फल खायहैं । जो सुमन सेज पै रहत दिन रैनिहुते तेई सिय राम अब साथरी बिछायहैं ॥ ४ ॥

दोहा–इहि बिधि कोशल नगरमें, छायो चहुँ संताप ॥
जड चैतन सब करत अति, राम विहीन विलाप ॥ ५ ॥
अवधनगर चहुँ ओर महि, लगत भयावन घोर ॥
जित तित विलपत नारि नर, हाय रामकरि शोक ॥ ६ ॥
लाज शोक वश सचिव पुर, आये रैनि निहारि ।
धाये चहुँ दिशि ते विकल, रथ विलोकि नर नारि ॥ ७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लखि स्यंदन सूनो सबै, गिरैं धरणि करि हाय ॥
सचिव वेगि नृप सदनमें, जाय गहे प्रभु पाँय ॥ ८ ॥
दशरथ निरखि सुमंतको, अतिही उठे उताल ॥
बूझे गदगद कंठ कित, सिया लषण रघुलाल ॥ ९ ॥
सुनि सुमंत बहु विकल ह्वै, कहे बैन विलपाय ॥
लषण सीय संयुत वनहिं, गये राय रघुराय ॥ १० ॥
निज विनती उत्तर तिहूँ, गुह मिलि उतरन गंग ॥
सकल यथारथ समय सम, वरणो सचिव प्रसंग ॥ ११ ॥
राम लषण सिय वन गमन, जब दृढ सुनो नरेश ॥
गिरे भूमि मूर्छित विकल, बाढो विपुल कलेश ॥ १२ ॥

चौ०-हाय राम सिय लषनपुकारी ❀ रुदन करत नृप आरतभारी॥
सुनि कौशलाआदि बहु रानी ❀ धायआय पति पद लपटानी १३
ताछिन प्रेम विवश महिपाला ❀ कहे कौशलहि वचन विहाला॥
दीनी तापस अंध जु शापा ❀ सोफल मोहि सत्य अब व्यापा १४॥
हौं अहेरहित रैनि मझारी ❀ सरयू तीर हुतो पदचारी ॥
ताछिन इक तापस सुत आयो ❀ कुंभ नीर पूरण चित लायो १५॥
जलपूरत घट शब्द सुनो मैं ❀ करि केहरि ध्रुव हीय गुनोमैं ॥
शब्द वेध करिशरतिहि मारा ❀ गिरोधरणिसोविकल पुकारा १६
मानुष गिरा सुनत हौं धायो ❀ जाय निकट गहि वेगि उठायो॥
लखि तापस सुत वचन उचारा ❀ बिनअपराधमोहिंकिमिमारा १७
मो पितु मातु दुहूँ दृगहीना ❀ बसत सदा कानन तप लीना ॥
तिन हित नीर भरन मैं आयो ❀ वृथानृपति मो प्राण नशायो १८
तब हौं कहे वचन अति दीना ❀ विन जाने यह पातक कीना ॥
यौं कहितिहि तनुतेशर काढो ❀ तजो प्राण सो दुखलहिगाढो १९
हौं तिहि निरखिमहादुखछायो ❀ लै पूरितघट वेगि सिधायो ॥
जाय नीरधरि सबगतिवरनी ❀ सुनतहिंगिरे रुदितदुहुँधरनी २०

दोवई छंद ।

पुनि दुहूँ विलपत कही मोहिं द्रुत लैचल सुतके पासा ।
हौं तिन कंध राखि तहँ लायो अतिहीं दुखित हिराशा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुहुँ पितुमातु पुत्र कर परसो वरदै शुभ गति कीनी ।
पुनि रचि चिता बैठि तिहिऊपर घोर शाप मुहि दीनी॥२१॥
कही दुहूँ ज्यौं हम तनु त्यागैं पुत्र दुखित इहि काला ।
त्यौंहीं सुत वियोग वश तेरो मरन होय महिपाला ॥
दै इमि शाप दुहूँ तनु जारो देवलोक सो पायो ।
भई सिद्धि सो शाप राम बिन मृत्यसमैं अब आयो ॥ २२

प्र० ॥ वा० ॥ अ० का० ॥ स० ॥ ६४ ॥ श्लोक ।

पुत्रव्यसनजं दुःखं यदेतन्मम साम्प्रतम् ॥
एवं त्वं पुत्रशोकेन राजन्कालं करिष्यसि ॥ १ ॥ इत्यादि ॥

चौ०-यौं कहि भूपतिअति अकुलाई ❀ बोले दीन नेह उरछाई॥
राम मात ममउर कर धारो ❀ लखिनपरतमुहिवदननिहारो २३॥
अंतसमैं अब मो मुखदेखो ❀ हाय न मैं टुक तुव मुख पेखो ॥
रघुवर दरश हेतु सब रानी ❀ तनुरखियोममआयसुमानी॥२४॥
यौं कहिनृपतिविकलह्वैभारी ❀ हाय राम सिय लषण पुकारी ॥
रुदन करत आरत खघोरा ❀ आये धाय सकल सुनिशोरा२५॥
गुरुद्विजसचिवविविधपुरवासी ❀ सेवक सखा दास अरु दासी ॥
सब निजमति अनुसार बुझाई ❀ कहिसुगाथ बहुधीर धराई॥२६
अवध नाथ कछु उतर न देहीं ❀ हाय राम कहिहिलकिनलेहीं॥
लखि नरेशगति बिलपतिरानी ❀ यौंहीं निशि द्वैयामविहानी२७
ताछिन दशरथ नृप अकुलाई ❀ उठे विकल चितवत चहुँधाई ॥
नैननते ग्रंचहुकछु सूझै ❀ विह्वलविलपिविलपिबहुबूझै॥२८॥
कहा राम लछमन वैदेही ❀ हाय कहाँ सुत परम सनेही ॥
यौं कहि धरणी गिरे विहाला ❀ प्राण कंठगत भये नृपाला॥२९॥

दोहा-हाय प्राणप्यारे सुवन, हा मम प्राण अधार ॥
पुत्रवधू हा लाडिली, हाय लषण सुकुमार ॥ ३० ॥
कहाँ लषण सीता कहाँ, कहाँ राम रघुचंद ॥
यों कहि दशरथ तन तजो, लहो परम आनंद ॥ ३१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—भूपतिमरन देखिसब रानी ❀ घोरशोरकरिअतिबिलपानी॥
गारी सकल कैकयिहि देही ❀ कहैं लियो जिय पापिनि येही३२
सकलनारिनरकरतपुकारा ❀ रुदन छयो चहुँ नगर मँझारा ॥
यौंबिलपतसबरैनिसिरानी ❀ समुझायो बहु गुरु वरज्ञानी ॥३३
नृप तनुहेतजतनकरिभारी ❀ सो धरि राखो तेल मँझारी ॥
पुनि वसिष्ठ वर दूतबुलाये ❀ जाहु भरत ढिग वेगि सिखाये३४
जनि भरतहिकछुहालसुनैयो ❀ मम आज्ञा कहि वेगहि लैयो ॥
यौं सिख दै द्रुत दूत पठाये ❀ अति उताल सो चरबर धाये३५
उतै रैनिमधि होत सवारो ❀ स्वप्न अशुभ अति भरत निहारो॥
उठिनृपसुवनसोचबहुकीनो ❀ भूरि दान विधि संयुत दीनो३६॥
ताछिन दूत भरतढिगआये ❀ दै पत्री गुरु बचन सुनाये ॥
सुनिदुहुँबंधुअधिकअकुलाई ❀ चले वेगि मिलि बिदा कराई ३७
आये अवध लगोभयकारी ❀ निरखि बंधु दुहुँ भये दुखारी ॥
वेगि जाय जननीपगलागे ❀ बूझे राम पितहि अनुरागे ॥ ३८
कैकेयी सुत अंक लगाई ❀ निज करणी सब मुदित सुनाई ॥
सुनत भरत रिपुहनदुहुँभाई ❀ गिरे भूमिमूर्छित बिलपाई ॥३९॥

दोहा—हा कुमात हा मात वर, हाय भ्रात हा तात ॥
बहु विलाप करि बंधु दुहुँ, सोक विकल बिललात॥४०॥

चौ०—यौंबिलपतदुहुँराजकुमारा ❀ कहिकुमातकटुवचनअपारा ॥
ताही छिनसो परी दिखाई ❀ किये शृंगार चित्त हरषाई ॥४१॥

घनाक्षरी—कवित्त।

दासी कैकयी की मति नासी मंथरा जो ताहि शत्रुहन देखी भई रंचहू नदूबरी। धायवर जोरी केशधरि झकझोरी गहिरसना मरोरी कहि दीनी सीख खूबरी॥ फारेत्योंकपोल दंतझारेदलिडारे अंग भाषै रोष धारे मातु मंत्री तु अजूबरी। कूबर सुटूटो शीश फूटो पै न प्राण छूटो ऐसी मारिलातन लथेरी डारी कूबरी॥४२

दोहा—करता हाय बिललाय सो, प्राण कंठगत आय ॥
तिय अवध्य लखि भरत तिहि, दीनी वेगि छुडाय ॥ ४३

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तहँ ते बिलपत बंधु दुहुँ, राम मात ढिग जाय ॥
धाय गहे पद कौशला, निरखि लिये उर लाय ॥ ४४॥
जननी सुत दुँहु परस्पर, प्रेम शोक वश होय ॥
करत बिलाप विहाल बहु, धीरज धरे न कोय ॥ ४५ ॥
सकल मातु तब सुतनको, समुझाये हिय लाय ॥
कछुक धीर धरि कै भरत, कही सत्य सकुचाय ॥ ४६ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

गाय द्विजमारे तियबालक सँहारे गुरु स्वामी अपचारे झूठवचन उचारेते । मातासुताभगिनी कुदृष्टितेनिहारे मित्रद्रोह उर धारे शरणागत निकारेते ॥ सत्यत्राण टारेनिज धरम निवारेनिंदा पिशुन प्रचारेपरनारी धन हारेते । होवै पाप भारमोहिंलागैमातु सारेराम बनहि सिधारे जोपै संमत हमारे ते ॥ ४७ ॥

चौ०-सुनतशपथजननीहियलाये ❀ कहि मृदु वचनभरतसमुझाये
पुनिकरिसौंहकौशलाबोली ❀ मुहिप्रतीति तुवमतिनहिं डोली४८
भरत आगमन सुनि सब धाये ❀ गुरु मंत्री पुर परिजनआये ॥
दुहुँ बंधुन बहुविधि समुझाये ❀ भूप क्रियाहितसाजसजाये ४९
पुर पूरव सरयू तट जाई ❀ मृत्युक्रिया सब करी तहाँई ॥
सब कृत हित प्राचीनसुठामा ❀ जहँशिवधामबिल्वहरिनामा५०
उचितकर्मपुनिसहितविधाना ❀ कीनेभरत अमितविधि नाना॥
भये पुनीत वेद कुल माने ❀ तब ज्ञातीन सकल सनमानें५१

दोहा-लोक वेद कुल रीतिभय, जिमि गुरु आयसुदीन ॥
भरत उदार सप्रीति तिमि, तात कर्म सब कीन ॥ ५२ ॥

इति० रा० र० व० वि० राजादशरथदेहत्याग-
वर्णनो नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

दोहा-नृपति कर्म ते सुचित लखि, सब मिलि कियो विचार॥
राजतिलक अब भरतको, कीजे समय निहार ॥ १ ॥

चौ०गुणिगुरुसचिवसुजनबहुआये ❀ सभामाहिं दुहुँबंधुबुलाये ॥
कहिसबकथासकलअभिलाषी ❀ राजतिलक हितभरतहिभाषी२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि वर वचन भरत शिर नाई ❀ गुरुहि जोरि कर बिनय सुनाई॥
मो रुचि यह प्रभु सहित समाजा ❀ चलौं राम दरशनके काजा॥३॥
पद परि निज अपराध क्षमाई ❀ सिया सहित आनौं दुहुँ भाई॥
पुनि रघुवरहि तिलक प्रभु कीजे ❀ वेगिनाथ यह आयसु दीजे॥४॥
पुनि इक औरहु मो रुचि नाथा ❀ तिलक साज लीजे सब साथा॥
ह्वै अभिषेक उतहिं पुनि आवैं ❀ सहितराजश्रीबहुछविछावैं॥५॥
भरत वचन सुनि सब हुलसाने ❀ धन्य धन्यकरिअमितबखाने॥
प्रमुदित ह्वै गुरु आयसु दीनी ❀ तिलकसौजसारीसँगलीनी॥६॥

दोहा—देश कोश गृह धर्मको, उचित प्रबंध सुठान॥
बहुरि चित्रकूट हि भरत, कीनो वेगि पयान॥ ७॥
पुर परिजन सेवक सखा, गुरु मंत्री सब मात॥
भरत संग गवने सकल, चित्रकूट कह जात॥ ८॥

चौ०-नृपसुतसदलगंगतटआये ❀ सुनि गुहसैन साजि उठिधाये॥
जानो भरत राज मद छाये ❀ समर करन हित वेगि सिधाये ९
आय निषाद भरत गतिदेखी ❀ हृदय भयो आनन्द विशेखी॥
करि सतकार उतारे पारा ❀ चलो संगलै सुभट अपारा॥१०॥
पहुँचे भरत प्रयाग नहाये ❀ पुनि मुनि भरद्वाज ढिग आये॥
उचितप्रणामऋषिहिसबकीने ❀ मिले परस्पर आदर दीने॥११॥
पुनि मुनि करी सकलपहुनाई ❀ सो अनूप अति बरणि न जाई॥
एक भरत बिन सब नरनारी ❀ ऋषिसतकारलहो सुख भारी१२
प्रात होत मुनिपद शिरनाई ❀ चले भरत रिपुहन दुहुँ भाई॥
अवध विहाय उठे जब हीते ❀ नृप सुत राम रटततबहीते १३
मारग बिन पदत्रान सिधावै ❀ सोलखि गुरु जननी समुझावै॥
तिन रजाय बश बैठे स्यंदन ❀ चलिकछु पुनिउतरैं नृपनंदन १४
कबहूँ राम बिरह संतापा ❀ बैठि पंथ बहु करत बिलापा॥
कबहुँ भूमि परि करहि प्रणामा ❀ टेरत कबहुँ हाय सियरामा १५॥
कंद मूल फल करहिं अहारा ❀ भरत त्यागि दीनो सुखसारा॥
मलिन वसन तनु छीनदुखारी ❀ सोंलखिबिकलसकलनरनारी१६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भरत प्रीति निरखी सुरराई ❀ बोले गुरुहि हृदय अकुलाई ॥
जो रघुवर फिरि अवध सिधारे ❀ बनेकाज पुनि बिगरैं सारे॥ १७॥
सुनिगुरु कही सोच जनि करहू ❀ राम प्रतीत प्रीति उर धरहू ॥
जो रघुवर भरोस दृढ राखैं ❀ तिनकी सब पूजैं अभिलाषैं १८॥
सुनि गुरु बचन अमर हरषाने ❀ देवराज आनंद अघाने ॥
इत आतुरअति भरत सिधाये ❀ बेगहि चित्रकूट नियराये १९॥
ताही निशि सिय स्वप्ननिहारो ❀ आयो अवधनगर जनु सारो ॥
दुहुँ नृपतनय सकल महरानी ❀ देखी मलिन शोक दुखसानी२०
उठि अकुलाय कहो सब रामैं ❀ सुनिदुहुँ बंधु भये करुणामैं ॥
पुनि रघुवर उताल नितकर्मा ❀ कियसियबंधुसहितनिजधर्मा२१
ताछिन गगन धूरि बहु छाई ❀ लखि बंधुहिं बोले रघुराई ॥
तरु चढि लछमन वेगि निहारौ ❀ कहा हेतु सो समुझि उचारौ२२॥
देखी लषन शाल चढि जानी ❀ पहिचानी सब अवध निसानी ॥
धाये भरत लरन अनुमाने ❀ आय लषण दुतगहिधनुवाने२३
रामहि कही रोषहिय लाई ❀ आवत भरत साथ कटकाई ॥
सुनि रघुनाथ बंधु समुझाये ❀ भरत शील गुणसकलसुनाये२४
तौ लग बहु बनचर नर आये ❀ रामहि भरत चरित्र सुनाये ॥
बंधु आगमन सुनि रघुबीरा ❀ हर्ष शोकबश धरैं न धीरा २५॥
उत लखि चित्रकूट अभिरामा ❀ भरत भूमि परि कियो प्रणामा ॥
परण कुटी दूरहि ते देखी ❀ छाई हृदय गलानिबिशेखी२६॥
समय निहारि धीर उरधारी ❀ चले वेगि दुहुँ बंधु दुखारी ॥
आये परणकुटी ढिग धाये ❀ निरखिरामपदपारिबिलपाये२७
उठि रघुबीर बंधु दुहुँ भेटे ❀ कहि वर बचन सोच बहु मेटे ॥
पुनिनृपसुतकियसियहिप्रणामा ❀ मिले लषनधनु शरकर वामा२८
तौ लग सकल लोग तहँ आये ❀ निरखि राम लोचन जलछाये॥
दुहूँ बंधु गुरु सिय पद परसे ❀ सचिवसखा सेवक हित सरसे२९

दोहा–यथा उचित सन्मानि सब, राम लषन अरु सीय ॥
सकल महारानीनके, चरण गहे लगि हीय ॥ ३० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मातु सुमित्रा कौशला, विलपति करि करि प्यार ॥
राम लषन सियको हृदय, लाय लाय बहु बार ॥ ३१ ॥
यौं सिय रघुवर लषन मिलि, हरषो सकल समाज ॥
पिता कुशल बूझी गुरुहि, द्रुत सप्रेम रघुराज ॥ ३२ ॥
सुनि वसिष्ठ जल नैन भरि, बोले हिय विलपाय ॥
तुव वियोग तजि अवध नृप, बसे देवपुर जाय ॥ ३३ ॥
राम लषण सिय गुरु बचन, सुनत गिरे मुरझाय ॥
हाय तात हा नाथ कहि, रुदन करत अकुलाय ॥ ३४ ॥
सचिव सखा गुरु मात तिहुँ, समुझाये कहि बैन ॥
आये तट मंदाकिनी, न्हाय भरे जल नैन ॥ ३५ ॥

चौ०-अपरक्रिया बिधिवत सब कीनी ❀ मौनरहेरघुबरदिनतीनी॥
चौथे दिवस जुरे सब आई ❀ बोले गुरुहि राम सकुचाई ॥३६॥
कृपासिंधु बन सकल दुखारी ❀ जिते अवधवासी नर नारी ॥
याते भरत सहित लै साथा ❀ कौशलपुर पधारिये नाथा ॥३७॥
सुनिगुरु कही श्रमितसब लोगा ❀ पुनि व्याकुल तुवदुसहवियोगा
याते कछु दिन रहि रघुराई ❀ फिरि सुहोय जो दैव रजाई॥३८॥
इहि विधि चित्रकूट सबरहहीं ❀ रामहिलखि आनँद अतिलहहीं॥
सर सरिता गिरि बन चहुँ फेरैं ❀ रामचरण अंकित थल हेरैं ३९
चित्रकूट मिथिलाधिप आये ❀ मिले परस्पर बहु सुख छाये ॥
सियलखि हरषशोकअधिकाई ❀ पित जननीगहिहृदय लगाई४०
मिथिला अवध प्रजा नरनारी ❀ जुरेभई चहुँ भीर सुभारी ॥
चित्रकूट महँ बहु दिन बीते ❀ रहतसकल सानंद सप्रीते॥४१॥
सचिवसखा गुरुसकल समाजा ❀ पुरपरिजन मिथिलामहराजा॥
युतमर्याद दुहूँरनिवासा ❀ बैठी सभा विशद चहुँ पासा॥४२॥
तब वसिष्ठ बोले मृदुबानी ❀ नीति सुधर्म समै अनुमानी ॥
सुरनरतुवआज्ञा अभिलाषी ❀ रामचहिय सबकी रुचिराखी४३॥
तुमपितु बचनमानि वनआये ❀ अब नृपभरत लिवावन आये ॥
याते करहुसुकाज बिचारी ❀ जिहि सुरनर सबहोहिं सुखारी४४
सुनि वर बचन राम कर जोरे ❀ गुरु पद पंकज वंदि निहोरे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहै मोर जिमि धर्म दयाला ❀ सोई सबहि उचित इहिकाला ४५
दोहा–सुनि रघुवर बाणी कहि, भरत जोरि दुहुँ हाथ ॥
है अधर्म मम माथ सब, अवध सिधारिय नाथ ॥ ४६ ॥
पुनि कर जोरि निहोरिकै, कहौं विनै यह मोरि ॥
प्रभु दिशि ते बन जाउँ मैं, चलिये अवध बहोरि ॥४७॥
येही बिनती विविधविधि, करी भरत दुहुँ भाय ॥
सचिव सखा नृप मातु सब, अमित कही समुझाय॥४८॥
राम सकोची धर्म धर, सोच विवश तिहिकाल ॥
दियो न उत्तर काहु कछु, तब गुरु कही कृपाल ॥ ४९ ॥
सुनहु राम नृप भरत सब, रहे जाहि विधि धर्म ॥
निज हठ स्वारथ लाज तजि, याछिन उचित सुकर्म॥५०॥
सुनि कौशिककै बचन वर, बोले रघुकुलचंद ॥
कहौं शपथ करिकै बचन, सुनौं सकल सानंद ॥ ५१ ॥
धर्म नीति ज्ञाता इतै, मिथिला अवध समाज ॥
चित्रकूट शुचि पुण्यथल, जुरी सभासद आज ॥ ५२ ॥
गुरु द्विज मंत्री मातु नृप, भरत एक मत होय ॥
जो कछु भाषैं सकल मिलि, सत्य करौं म सोय ॥ ५३॥
राम शपथ सुनि देव सब, अकुलाने बहु हीय ॥
सबहि मनाये मनहिमन, प्रेरि शारदा जीय ॥ ५४ ॥
रहे मौन ह्वै सकल तब, करि हिय धर्म विचार ।
बोले भरत प्रबीन पुनि, वचन समै अनुसार ॥ ५५ ॥
अवध राज मुहि पित दियो, मैं निज दिशिते देत ॥
यामैं कछू अधर्म नहिं, सोऊ नाथ न लेत ॥ ५६ ॥
अब हौं किमि धीरज धरौं, तुव बियोग रघुराय ॥
होवै जिमि अवलंब मुहिं , सो प्रभु देहु रजाय ॥ ५७ ॥
तब प्रमुदित ह्वै राम निज, चरणपादुका दीन ॥
करि प्रणाम सो प्रीति युत, भरत शीश धरि लीन ॥५८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबहि उचित मिलि प्रेम युत, सिया लखण रघुवीर ॥
बिदा किये समुझाय पुनि, हिय धराय बहु धीर ॥५९॥
भरत कही जो अवधिते, एकहु दिन अधिकान ॥
प्रण करि भाषौं शपथ युत, तौ न राखि हौं प्रान ॥ ६० ॥
मधु सित दशमी पुष्य गुरु, दिन अभिजित मध्यान ॥
सिया लषण युत अवधते, कीनो नाथ पयान ॥६१ ॥

प्र० वा० अ० कां०स० ३ श्लोक।

चैत्रः श्रीमानयं मासः पुण्यः पुष्पितकाननः ॥
यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोपकल्प्यताम् ॥ १ ॥

तत्रैव पुनः स० ॥ ४ ॥

श्व एव पुष्यो भविता सोभिषेच्यस्तु मे सुतः ॥
रामो राजीवपत्राक्षो युवराज इति प्रभुः ॥ २ ॥

पुनः सुन्दररामायणे अयोध्याकांडे ।

मधुशुक्लदशम्यां च मध्याह्ने गुरुवासरे ॥
मेषांशौ द्वौ गते भानौ रामो गच्छति काननम् ॥३॥ इत्यादि

दोहा—तादिन बीते अंस जे, मेष भानुके जान ॥
हौं गनिलैहौं वर्ष मनु, ध्रुवसंक्राति प्रमान ॥६२ ॥
राम कहो तब जिहि दिवस, चौदह बर्ष करार ॥
पूजै तिहिदिन देखियो, ध्रुव मुहि अवध मझार ॥ ६३ ॥
भ्रात वचन दृढ सुनि भरत, चले अवध शिरनाय ॥
दुहुँ समाज संयुतसकल, पुर परिजन समुदाय ॥ ६४ ॥
चित्रकूट महिमा अमित, भरत सराहत जात ॥
रघुवर पद अंकित सुथल, ध्यावत हिय हुलसात ॥ ६५ ॥
हर्ष शोक बश नारि नर, छिन सुख छिन दुख पाय ॥
जनक भरत संयुत सकल, पहुँचे अवधहि आय ॥ ६६ ॥
कछुक दूरि पुर बाहिरे, नंदिग्राम अभिराम ॥
वरविचार करि भरत तहँ, रहे निरखि शुचिठाम ॥६७ ॥
रामपादुका शुभ समय, सिंहासन पधराय ॥
भरत कियो मुनि भेष निज,सब सुख साज विहाय॥६८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्वादश दिन तितही रहो, मिथिला अवध समाज ॥
पुनि बहु गुरुहि अभार दै, गये जनक महराज ॥ ६९ ॥
जौ लग रहे बिदेह नृप, रानी सहित प्रबीन ॥
तौ लग कमलानीर तजि, अशन पान नहिं कीन ॥ ७० ॥
पुर परि जन इत अधवमें, लियो सत्यव्रत ठान ॥
राम दरश बिन भोग सुख, सकल तजे दुखमान ॥ ७१ ॥
भरत महल रनिवास सब, भेजो रिपुहन संग ॥
गुरु सचिवहि सौंपे उचित, काज बखानि प्रसंग ॥ ७२ ॥
यथायोग इहिविधि भरत, कीनी सकल सम्हार ॥
राम पाँवरी निकट सब, राज साज अधिकार ॥ ७३ ॥
पूजत भरत सुपादुका, करत निवेदित काम ॥
फल अहार मुनिवेष नित, निशिदिन सुमिरत राम ॥ ७४ ॥
देश कोश सेवक प्रजा, न्याय धर्म सब काज ॥
सुनत गुनत निरखत सदा, भरत सुपालत राज ॥ ७५ ॥
महि मंडल चहुँ ओर सब, प्रमुदित प्रजा सुकाल ॥
नीत धर्म लखि कहत जन, जै जै अवध भुवाल ॥ ७६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

दूजो गुरु ज्ञाताना वसिष्ठ वामदेव ऐसो सचिव सुमंत सम स्वामि सुखदाताना ॥ दशरथ राज सो न ताता दृढ प्रीति वारो रामसो सुपुत्रहै जहान धर्म त्राताना ॥ कौशला सुमित्रासी न माता है विवेकी पुनि सीतासी सुतीय कहूँ पति अनुराताना ॥ रसिकविहारी नेहकारी नीतिधारी सत्य काहू ठौर भरत समान और भ्राताना ॥ ७७ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० रामभरतसंवाद-
वर्णनो नाम सप्तमोविभागः ॥ ७ ॥

दोहा—राम राम नित रटत उत, भरत वरणि गुणग्राम ॥
भरत भरत सुमिरत भरत, छिन छिन दृग इत राम ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—चित्रकूट सिय लषण समेता ❀ बसै राम मुद परण निकेता ॥
गिरि कानन सर सरित निहारी ❀ विहरत सिययुतअवधविहारी२
कबहूँ सुमन लाय रघुराई ❀ भूषण वसन बिचित्र बनाई ॥
निज करते प्यारि हिपहिरावैं ❀ छबिनिहारि आनंद बढावैं ॥ ३ ॥
कबहुं फटिक शिला पर राजैं ❀ अंगराग करि सियतन साजैं ॥
विविधरंगमृदुरज शुचिआनी ❀ सारै तिलक प्रियारुचि जानी ४॥
कबहूँ सिय पंकज मृदु लाई ❀ सेज रचैं वर बिशद सुहाई ॥
तापर प्राण पतिहि बैठारैं ❀ निज अंचलते पवन सुढारैं ॥५॥
कबहुँ क्रीट कुंडल धनुबाना ❀ विरचै सिय प्रसूनमय नाना ॥
निज करते प्रीतमहि सुधारीं ❀ करि करि प्यार लेहिं बलीहारी६॥
कबहुँ लषणकलिका मृदुलावैं ❀ नूपुर अनुपम रुचिर बनावैं ॥
सो स्वामिनि चरणन पहिरावैं ❀ निरखि राम आनंदअधावैं ॥७॥
कबहुँ सुमनदल लछमनलाला ❀ रचैं पादुका विमल बिशाला ॥
रघुवर पदसनेह युत धारैं ❀ कबहुँप्रसूनबिजनसजि ढारैं ॥८॥
लषणहि दंपति युत अहलादा ❀ देहिं सुभूषण वसन प्रसादा ॥
इहिविधितिहुँ अपारसुखलहहीं ❀ प्रीतिपरस्परप्रमुदितरहहीं ॥९॥
कबहुँ रामढिग मुनिगण आवैं ❀ कबहुँ सुतिनके निकट सिधावैं॥
कबहुँऋषितियजुरि सियपाहीं ❀ पतिरुचिलखिनिजसंगलैजाहीं॥
कबहुँक वनवासी नर नारी ❀ लै फल मधु मग सौंज सुधारी॥
आवैं राम सीय पग परहीं ❀ दैसुभेट विनती वर करहीं॥ ११॥
इहि विधि लषण सीय रघुचंदा ❀ चित्रकूट वसि करत अनंदा ॥
जिमि२ अवधिवेषचलिजाहीं ❀ तिमि२दैवअधिकअकुलाहीं १२॥
एक समै सुरपति सुत आयो ❀ नाम जयंत कागतनु लायो ॥
सिय उरहतिनिजतुंड परानो ❀ रघुवरकपटभेष पहिचानो ॥१३॥
सिय हिय रुधिरदेखिरघुवीरा ❀ तापर तजो कुपित तृणतीरा ॥
भगि तिहूँपुरसुगयोसबपासा ❀ कहुँनबचो तबहोयनिरासा॥ १४॥
राम चरण परिशरण पुकारो ❀ तब दयालु तिहि प्राण निबारो ॥
इकदृग विनकरिवायसत्यागो ❀ भागोपितुगृह विकलअभागो १५

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकसमै विधि इंद्र बिचारी ❀ रावण वध सुधि राम बिसारी ॥
याते चलि कछु युक्ति रचाई ❀ बेगहि चाहिय सुरति कराई १६
यों बिचारिदुहुँशिवढिगजाई ❀ निज उरकी अभिलाष सुनाई ॥
सुनि बोले शंकर वर ज्ञानी ❀ वृथादोउ भ्रमवशयहठानी ॥१७॥
राम वेगि दशमुख वध करिहैं ❀ भूमि भार सुर दुख सब हरिहैं ॥
कछु न शंक मानो मन माहीं ❀ छल करि जाउ न रघूवरपाहीं १८
सो सुरपतिविधिमननहिंभाई ❀ चले दुहूँ मुनि वेष बनाई ॥
वेगहि चित्रकूट ढिग आये ❀ तहँके चरित विलोकि सकाये १९
देखे अमित भालू कपि ढाढे ❀ गहे युद्ध हित गिरि तरु गाढे ॥
पुनि हेरे तहँ विपुल दशानन ❀ परे भूमि वेधे तनु पानन ॥ २० ॥
सो विलोकिदुहुँ लंकसिधारे ❀ देखो दशमुख बैठ अखारे ॥
तहँ ते चकित चित्त पुनि आये ❀ चित्रकूटसों चरितलखाये ॥२१॥
तब सशंक ह्वै गये सुधामा ❀ बहु विधि इन्द्र लखे तिहिठामा ॥
दोऊ भवन जान नहिं पाये ❀ पुनिह्वै विकल शंभू ढिग आये २२
कहीसकलगतिअतिअकुलाई ❀ सुनि पुरारितिन धीर धराई ॥
पुनितिहुँराघवनिकटसिधारे ❀ सोचरित्रनहिंकछू निहारे ॥ २३ ॥
आये देव देखि रघुनाथा ❀ उठे मिले प्रमुदित गहि हाथा ॥
बैठारे करि बहु सतकारा ❀ तबकीनीसुरविनयअपारा ॥२४॥
सुनि बोले रघुवर हरषाई ❀ जाहु भवन निर्भय हुलसाई ॥
वेगि करो अब निश्चर नासा ❀ राखो सत्य मोर विश्वासा ॥२५॥
राम वचन सुनि सुर हरषाये ❀ मिले उचित तिहूँसदनसिधाये ॥
विधि वासव लखिचरितअपारा ❀ पायोभेदनअमितविचारा २६
इहि विधि द्वादश वर्षबिताये ❀ चित्रकूट नित नव सुख छाये ॥
पुनि रघुवर वर इच्छाचारी ❀ तहँ ते गमन हेतु चितधारी २७॥

प्र० ॥ अग्निवेश्यरामायणे ॥ श्लोक ।

रामः पंचदशे वर्षे षड्वर्षामपिमैथिलीम्॥उपयेमे त्वयोध्यायां द्वादशाब्दानुवाससः ॥ १ ॥ सप्तविंशतिमे वर्षे वनवासमकल्पयत्॥ अष्टादश तु वर्षाणि सीतायास्तु तदाऽभवन् ॥ २ ॥ त्रिरात्रमुदका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरश्चतुर्थेह्नि फलाशनः ॥ पंचमे चित्रकूटे तु रामो वासमकारयत् ॥३॥ अथ त्रयोदशे वर्षे पंचवट्यां महामनाः। रामोविरूपयामास घोरां शूर्पणखां वने ॥ ४ ॥ इत्यादि ॥

चौ०-राम चलतसुनिमुनिगण आये ❀ मिले यथोचित प्रेमबढाये॥
ऋषिपत्नीसियनिकटसिधारीं ❀ सादर शीशनाय बैठारीं॥२८॥
मुनितिय कहीसियहिहुलसाई ❀ धन्य जानकी पिय सुखदाई ॥
धन्य पतिव्रत धर्म सदाहीं ❀ जिहिविधिहरिहरसकल डराहीं२९
अनसुइया पतिव्रतबलपाई ❀ कह त्रिदेव गति प्रगट दिखाई ॥
सिय बूझी सो बात लजाई ❀ ऋषि तिय कहीकछूमुसक्याई३०

दोवई छंद ।

एक समै मिलि उमा रमा अरु धात्री तीनहुँ नारी ।
लखि रहस्य सुर गंगतीर थल भूषण वसन उतारी ॥
मज्जन करत हुतीं तहँ प्रमुदित ताछिन नारद आये ।
तिनहिं बिलोकि लजाय अधिक तिहुँ तिय निजअंग छिपाये३१॥
सो बिलोकि मुनि रिस करि बोले क्यों तुम मोहि न जानी ॥
भई चहतिहौ जनु अनसुइया सम पतिव्रता जानी ॥
यौं कहि गमन कियो ऋषि तहँ ते पुनि यौं तिहुँ ठहराई ।
पतिव्रत भंग अत्रि तियको जिमि होय सु रचिय उपाई ॥३२॥
करि विचार निज निज गृह गवनीं तिहूँ मान बहु ठानो ।
विधि हरिहरहि रोष तियको लखि सकल अनंद भुलानो ॥
अमित वार बूझी तब बोलीं और कछू नहिं भाषैं ।
अनसुइयाको पतिव्रत खंडै तौ हम निज तनु राखैं ॥ ३३ ॥
तिहूँ नारि निज निज पति सों इमि वचन कहे विलखाई ।
रमा उमा ब्रह्मानी बहु विधि हरि हर विधि समुझाई ॥
नहिं मानी तब देव सोच वश इक इक पास सिधारे ।
काहू गति कोऊ नहिं जानै चले जतन निरधारे ॥ ३४ ॥
भई भेट तिहुँ बीच पंथमें तिहुँ सशोक तिहुँ देखे ।
चकित कछू कहि सके न काहू वदन परस्पर पेखे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि धरि धीर तिहूँ तिहुँ बूझी तिहूँ तिहूँ प्रति बरनी ॥
तिहूँ हीय भो दुखी और सुनि तिहूँ ठौर इक करनी ॥ ३५ ॥
तिहूँ देव ह्वै विवश मंत्र करि यही बात ठहराई ।
पतिव्रत भंग कीजिये तियको कछु छलछंद बनाई ॥
यौं विचारि निज निज गृह वेगै जाय सुधीर धराई ।
चले उताल बहुरि तिहि मारग मिले बीच पुनि आई ॥ ३६ ॥
तहां विष्णु विधि शंभु मनुजह्वै अतिथि भेष तिहुँ धारे ॥
सिकताकन लैलये कमंडलु गये अत्रिके द्वारे ॥
ताछिन मुनि नहिं रहे भवनमें अनसुइया लखि आई ॥
करि प्रणाम लैजाय सबन फल धरे सामुहें लाई ॥ ३७ ॥
सो लखि सकल अतिथि यों बोले और न अशन कराहीं ॥
ये हम सिक्ताकन लै आये पक्व होय तौ खाहीं ॥
पैजिहि विधि भाषैं ताही विधि करौ सुभोजन करिहैं ॥
नतरु क्षुधित तिहुँ अत्रि भवनतें निज निज मारग धरिहैं ॥३८॥
अत्रितिया सुनि वचन मुनिनके भई सोचवश भारी ॥
पक्व होय किहि विधि सिक्ताकन इन नहिं बात बिचारी ॥
अतिथि क्षुधित जो जाँय द्वारते तो गृहधर्म नशावै ॥
इहि विधि करहिं अनेक जल्पना हिय न कछू ठहरावै ॥ ३९ ॥
पुनि पतिव्रता नारि विचारी जुपै धर्म हौं साची ।
तौपै पक्व होइगी सिकता रंचरहैं नहिं काची ।
ह्वै प्रमुदित बोली अनसुइया अतिथि कहा कन दीजे ।
जिहि विधि कहौ पक्व करि आनो रुचिमय भोजन कीजे ॥४०॥
सुनि तिहुँ कही अनल जलबिन कन करमें पक्व बनावो ।
बहुरि नग्न ह्वै निलज हाथ निज भोजन हमैं करावो ॥
तब बोली सो अतिथि न भाषौ महा असंभवबानी ।
तव सुकर्म मम धर्म रहै जिमि देहु रजायसुज्ञानी ॥ ४१ ॥
पुनि सौं तजि तिन और न भाषी तब निज हीय बिचारी ।
अतिथि नहीं ये छली कोउ हैं यों गुनिकै मुनि नारी ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पति पद सुमिरि ध्यान शुचि कीनो सकल चरित दरशाये।
जानी बिधि हरि शंभु पतिव्रत भंगकरन मम आये ॥ ४२ ॥
तब सुधर्मचारी वर नारी सकल शीश कर फेरे।
भये अयान बालवपु तीनौ ल सुपालने गेरे ॥
पुनि ह्वै नग्न लिये कन अंजुलि अनसुइया यों बोली ॥
पक्व होय तो यह सिक्ता जौ हों पतिधर्म नडोली ॥ ४३ ॥
कहतहिं भये पक्व सिक्ताकन मृदु शुचि शुभ्र सुहाये ॥
सो निज करते तिहूँ शिशुन मुख दै भोजन करवाये ॥
पुनिपट धारि झुलावन लागी ताछिन मुनि गृह आये।
लखि बूझी बालक ये किहिके तिय सब चरित सुनाये ॥ ४४ ॥
मगन भये ऋषि देवचरित लखि मनहीं मन मुसक्याने ॥
योहीं शंभु विरंचि विष्णुको वासर सात सिराने।
उमा बिधात्री रमा उते तिहुँ सोच विवश अकुलानी।
पुनि नारद कैलास पधारे त्रिकालज्ञ वर ज्ञानी ॥ ४५ ॥
बोले हँसि मुनीश गिरिजासें लखौ देवतिहुँ जाई ॥
पतिव्रता अनसुइया निजगृह राखे बाल बनाई ॥
सुनि ह्वै बिकल शिवा उठिधाई धात्रिहि सुगति सुनाई ॥
दोऊ तिय अकुलाय कही सब सिंधुसुता ढिग आई ॥ ४६ ॥
सोच सकोच विवस तिहुँ बनिता ह्वै जिय निपट हिरासा ॥
भूर गहूर दूरधरि गमनी अत्रितियाके पासा ॥
आय लजाय धाय ऋषितियके पाँय परीं अकुलाई ॥
अनसुइया करि प्यार वधू सम गहि निज हृदय लगाई ॥ ४७ ॥
पुनि तिहुँ बालन शीश धरोकर लहे शुद्ध निजरूपा ॥
विदाकिये सबही तिय संयुत कहि वर वचन अनूपा ॥
निज निज धाम गये हरि हर बिधि कहैं परस्पर माहीं ॥
कोऊ अनसुइया सम तिहुँ पुर वर पतिव्रता नाहीं ॥ ४८ ॥

दोहा-इहिविधि अनसुइया कथा, ऋषितिय सियहि सुनाय।
मिलीं परस्पर प्रेमभरि, गईं गेह सुखपाय ॥ ४९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि अनसुइया दरश को, सियहि भई अति चाह ॥
प्रातपयान विचारी उर, छिन छिन होत उछाह ॥ ५० ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० चित्रकूट चरित्र-
वर्णनो नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

दोहा—प्रात होत सिय लषन युत, चित्रकूटते राम ॥
आये परमानंद चलि, अत्रिमुनीके धाम ॥ १ ॥
धाय गहे तिहुँ मुनि चरण, ऋषि उठि अंक लगाय ॥
यथा उचित सतकार युत, विनयकरी सतभाय ॥ २ ॥
बहुरि राम सिय लषणतिहुँ, धारि ऋषितिय पद माथ ॥
कही मात तुव दरश लहि, अब हम भये सनाथ ॥ ३ ॥
अनसुइया उठि तिहुन को, उर लगायुत प्रेम ॥
आशिष दीनी विशद शुभ, संततरहै सुक्षेम ॥ ४ ॥

चौ०—पुनि बहु प्रीति सहित ऋषिनारी ❀ लैजानकिहि गोदबैठारी
पट भूषण अमोल शुचि दीने ❀ निजकर सिय तनुभूषितकीने५
बहुरि प्यार करि नीति सिखाई ❀ पतिव्रत रीति सकल समुझाई॥
सोसिख सीय हृदै धारिलीनि ❀ ऋषितियमुदितसुआशिषदीनी६
पुनि तिहुँ अशन अनूप कराई ❀ त्रिदाकरी निज हृदय लगाई ॥
मुनि मुनि तियहि मुदित शिरनाई ❀ चले सीय संयुत रघुराई ७॥
अपर मुनिनके आश्रम आये ❀ सबलहि राम दरश सुखपाये
ऋषिगण अमितभांति सनमाने ❀ बिनतीकरिनिजनिजथलआने८
तहँ वसि बहुरि गमन तिहुँ कीनो ❀ मिलोविराध पंथ मदभीनो॥
सो खल धाय सियहि लै अंका ❀ चलो शोर करिघोरनिशंका९
तिहि लखि राम लषण अकुलाने ❀ धाय जाय धनु शर संधाने ॥
बाणन मारि बिकल कार डारो ❀ तब विराधकिय कोपअपारो१०
लैकर शूल राम पर धावा ❀ दुहूँ बंधु तिहि मारिगिरावा ॥
सोतनु त्यागि शुद्ध वपु पाई ❀ गयो देवपुर विनय सुनाई११
तब दुहुँ बंधु भूमिखनिभारी ❀ गर्ति राखि तिहिदेह सुधारी॥
पुनि ह्वैसजगलषणसियसाथा ❀ चलेविपिननिरखतरघुनाथा१२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुनि शरभंग ज्ञान गुण छाये ❀ रघुवर तिहिआश्रम नगिचाये ॥
दूरहिते नभपंथ मझारे ❀ स्यंदन हरित तुरंग निहारे १३॥
गुणी राम मुनि दरशनकाजा ❀ मुदित आज आये सुरराजा ॥
इमि विचारि कछु बिलमत रामा ❀ गये गये जब इन्द्रसुधामा १४
राम लषण अरु मुनि शरभंगा ❀ मिले परस्पर सहित उमंगा ॥
ऋषि तिहुँ उचित सबहिसनमाने ❀ कारि बहुविनयअनंदअघाने १५

दोहा--मुनि बोले सियनाथ मैं, जातहुतो सुरधाम ॥
तुव आगम सुनि पुनि रह्यो. अब पूजे सब काम ॥ १६ ॥
यौं कहि ऋषिवर विरचि सर, ताबिच बैठि विशोक॥
योगानल तनु दाह करि,गये विष्णुके लोक ॥१७॥

चौ०लखि मुनिअपर विनय बहुकीनी।रामभक्ति निजसबकहँदीनी
तहँते चले हरषि रघुनाथा ❀ ऋषिगण लगेमुदित मन साथा १८
कछुक दूरि चलि रघुवर हेरी ❀ लागी चहूँ अस्थिकी ढेरी ॥
करुणाकर बूझी तिन पाहीं ❀ किनके सकल अस्थि ये आहीं १९
सुनि मुनि सबहि नैन भरि नीरा ❀ बोले विह्वल बचन अधीरा ॥
ये सब अस्थि ऋषिनके नाथा ❀ दले निशाचर जानि अनाथा २०
सुनि रघुवर नैनन जल छायो ❀ करि प्रण सत्य मुनीन सुनायो॥
अभय होहुधरि मम विश्वासा ❀ करिहौं सकल खलनकर नाशा २१
राम सत्य प्रण सुनि मुनि हरषे ❀ ताछिन सुमन देवगण वरषे ॥
ऋषिगण निज निजआश्रमआये ❀ विपिनरामसिय लषण सिधाये
राम आगमन सुनत सुतीक्षण ❀ चले धाय आनंद मगनमन ॥
तनु पुलकत हुलकत हिय भूरी ❀ गावत हँसत नचत सुखपूरी २३
इहि विधि आय गहे पदधाई ❀ राम लिये तिन अंक लगाई ॥
पुनि बहु विनयसुतीक्षण ठानी ❀ तिहुँपूजे निज आश्रमआनी २४
राम अनन्य उपासक चीना ❀ भक्तितत्व निज मुनि कहँदीना॥
परमानंद सुतीक्षण पाई ❀ बहुरि विनय कर जोरि सुनाई २५
मम गुरु वरकुंभज मुनि नाथा ❀ हौं तिन दरश करौंचलि साथा॥
सुनि लै राम सुतीक्षण संगा ❀ चले चहूँ मन मुदित अभंगा २६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वेगि अगस्त्य आश्रमहिं आये ❀ चारहु मुनि पद शीश नवाये ॥
ऋषि विलोकि रघुवर उर लाये ❀ आसन दै सप्रेम बैठाये ॥२७॥
तिहुँआदर करिसहित विधाना ❀ पुनिबहु गुणगण कियेबखाना।
रामदरशहित बहुमुनि आये ❀ लखिनिजसकलसुकृतफलपाये२८
दोहा–पुनि अगस्त्य मुनिसे कही,रामदुहूँ कर जोरि ॥
नाथहि विदित समस्त सो, जो कछु रुचि हैं मोरि॥२९॥
नाथ रजायसुहोय जहँ, वास करौं तिहि ठाम ॥
जाते सुर मुनि सुखलहैं, सिद्धि होय सब काम ॥ ३० ॥
सुनि कुंभज मुनि विहँसि कै, बोले सहित विचार ॥
ऋषि शापित दंडकविपिन, ताकर करौ उधार ॥ ३१ ॥
विमल सरित गोदावरी, पंचवटी शुभठाम ॥
लषण सीय संयुत तहां, बास कीजिये राम ॥ ३२ ॥
यौं कहि मुनि रघुवीर को; दियो विशद सारंग ॥
खड्ग अनूपम द्वै रुचिर, पत्री सहित निखंग ॥ ३३ ॥
लहि रघुबर प्रमुदित भये, पुनि मुनि पद शिरनाय ॥
चले बंधु सिय सहित बन, मगमें मिले जटाय ॥ ३४ ॥
तिनहि पिता सम पूजि तिहुँ, गोदावरि तट जाय ॥
पंचवटी बिच परण गृह, बिरचिरहे रघुराय ॥ ३५ ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० मुनिसमागमवर्णनो नाम नवमोविभागः ॥९॥

दोहा–सुभग सरित गोदावरी, विमल नीर गंभीर ॥
परम सुहावन सुखद नित, अतिपावन दुहुँ तीर ॥ १ ॥
मंजु कंज विकसित विविध, गिरि कानन अभिराम ॥
प्रफुलित द्रुमवल्ली अमित, सुथल सदा सुखधाम ॥ २ ॥
तनु परसत हरसत हियो, सरसत त्रिबिध समीर ॥
सुख वरसत दरशत छटा, जहँ निवसत रघुबीर ॥ ३ ॥
मृग बिहंग बहु रंगके, कानन करत कलोल ॥
कोकिल कीर मयूर चहुँ, बोलत मधुरे बोल ॥ ४ ॥
कहुँ कदली कहुँ सुमन कहुँ, वृन्दा कहुँ तरु बेलि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाय रची वर वाटिका, सिय निज कर युत केलि ॥ ५ ॥
पंचवटी थल विमल वर, विहरत सीता राम ॥
परम प्रीति संयुत लषण, सेवत हैं वसुयाम ॥ ६ ॥
देव सदाशिव हेत नित, राम करत अभिषेक ॥
सविधि हवन प्रति दिन सदा, साधत सहित विवेक ॥ ७॥

प्र०—वाल्मीकीये आरण्यकांडे ॥ सर्ग ॥ १६ ॥ श्लोक ॥

कृताभिषेकः स रराज रामः सीताद्वितीयः सह लक्ष्मणेन ॥
कृत्वाभिषेकस्त्वगराजपुत्र्या रुद्रः सनंदिर्भगवानिवेशः। इत्यादि.

दोहा—लखि पुनीत मृग बंधु दुहुँ, प्रमुदित करत अहेर ॥
दै आमिष बलि पितर सुर, लेत प्रसाद सुफेर ॥ ८ ॥
कंद मूल फल सरस मधु, मधु मैरेयक शुद्ध ॥
अशन पान सिय लषण युत, रघुबर करत प्रबुद्ध ॥ ९ ॥
पचवटी कृत वास इमि, सिय सबंधु रघुनंद ॥
वन विहरत निर्भय सकल, संतत परमानंद ॥ १० ॥

दोवई छंद।

एक समय रावणकी भगिनी शूर्पणखा तहँ आई ॥
देखि राम घनश्याम रूपकी शोभा सो ललचाई ॥
रघुवर सों बूझी तुम को हो इहां कहां ते आये ॥
सुनि सियनाथ सरल चित अपने सबही चरित सुनाये ॥ ११ ॥
तब बोली यह तिया तिहारी क्या गौ निपट कुरूपा ॥
मो सँग करो विहार विपिन नित हौ तुम योग सुरूपा ॥
राम कही सुंदर वर गोरो है मम बंधु कुँवारो ॥
सो विन तीय दुखारी तिहि मिलि रहो सुजाय निहारो ॥ १२ ॥
तब आई लछमन छबि देखी ह्वै प्रमुदित यो भाखी ;
रमौ छैल भलि हम तुम जोरी प्रथमहि विधि रचिराखी ॥
लषण कही सुनि सुनौ कामिनी तुम उनहीं ढिग जावो ।
दास पास दासी इत बनिहौ रानी तहां कहावो ॥ १३ ॥
तहँते सो रघुबर ढिग गमनी तिन तित फेर पठाई ।
बहुरि लषण भेजी सोरिसकरि धरि कराल वपु आई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोली अधम तिहारी तियको अबहिं लेति हौं खाई ।
तिहि विलोकि डरि जीय सीय अति लगी पीयहियधाई॥ १४॥
तब रघुबीर क्रोध भरि अनुजहि नैन सैन कछु कीनी ।
लखि कृपाण लै लषण तासु दुहुँ श्रुति अरु नासा छीनी ॥
कटत नासिका श्रवण निश्चरी भभरि भगी बिललाती ।
गिरी आय खर निकट विकल बहु रोय धुनै शिरछाती ॥ १५॥

हीरक छंद ।

ताकी गति हेरि सकल निश्चर अकुलायकै ॥ बूझो सब कारणसो भाषौ विलपायकै ॥ बोलो खर यातुधानवेगै तहँ जावहु । दोउ नर नारी मम सन्निध गहि लावहु ॥ १६॥ धाये दश चारि सुभट शूर्पण-खासंगमें । आये रघुबीर निकटछाके रण रंगमें॥ देखे तिन अच्छनलैं तच्छन धनुबानको । ठाढे युतलच्छन सजिरच्छनतनुत्रानको॥ १७॥ दूरहिते निश्चरी दिखाये दुहुँबीरको। धाये करि कोपसकलत्यागितन पीरको॥ धारे बहु शस्त्रते प्रहारे इकबारही। राघवतिनमारेमहि डारे ततकारहीं ॥ १८॥ शूर्पणखा हेरि मरन निश्चर बलवानको । लागी भय भूरि भभरि भागी जनथानको॥ बोलीखर पासजायभेजे भटते मरे।लोटे सब पंचबटी हेरौ चलि भूपरे ॥ १९॥शूर्पणखा बैन सुनत क्रोधित खरयौ कही।साजौ सबसाजसमर देखौंचलिहोंसही॥ दूषण त्रिशिरादि सहस चौदह वर वीर ते । लीने कर शस्त्र अमित भारी रणधीरते ॥ २० ॥ शूर्पणखा अग्रहै अमंगल मुख सर्वते । पाछे खर दूषणादि धाये भट गर्वते ॥ पूरीनभधूरि भूरिहेरीरघुवीर सो ।बोले तब लषण लखौ आई खलभीरसो॥ २१ ॥सीतहि लैसाथ बंधु धनु शरकरसज्जहू।बैठौदुरि कंदराहियाछिन थलतज्जहु।।बोले सुनि लषण नाथ ऐसी जनिभाखिये॥ ह्वै है बहु युद्ध अबहिंमो कहँ ढिग राखिये॥ २२ ॥ बोले पुनि राम लषण शंका जनिमानहू ॥ मारौं द्वै दंड माहिं खलदल दृढ़ जानहू ॥ आज्ञावश अनुज लेके सिय संगमें ।बैठे दुरि कंदराहि छायोबल अंगमें ॥ २३॥ताहिछिन यातुधान आयेअतिजोरते । धाये दशहू दिशान छाये रवघोरते ।

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम रूप देखतही सैन चकित होगई। निश्चरमनमोहियुद्ध बुद्धिसकल खोगई ॥ २४ ॥ भेज खर दूत दोय आये ढिग रामके। बोले खल बैन सो सिखायेशठ वामके ॥ तापस तिय सौंपि खरहिवनते द्रुत भागहू। वीरनके हाथन ते काहे तनु त्यागहू ॥२५॥ भाषी सुनिबैन तबहिरघुवरमुसक्यायके। सेवेंखरशूर्पणखहिनीकीविधि भायके ॥ वृद्ध औ कुरूप फेरि हीनी श्रुति नासिका। भूलिहू न कोऊ तिहि राखैं गृहदासिका ॥ २६ ॥ राघवके बैन सकल दूतन जबहीं कहे। सो सुनि खर दूषणादि क्रोधानलते दहे ॥ बोलो खर वीर न अब दाया कछु धारहू। वेगहि भट जाय पकरि तापसहति डारहू ॥ २७ ॥ धाये सुनि सुभट शक्ति पट्टिश कर चंड लै। भिंडिपाल तोमर असि मुद्गर वर खंड लै ॥ शूल औ त्रिशूल परिघ धारे दृढ भल्ल हैं। दंडही उदंड ंड मंडित बहु मल्ल हैं ॥ २८ ॥

अर्द्धावली छंद।

यौं सकल निश्चरन संग खर धायके। शस्त्रवर्षा करी रामपर आयके ॥ देखि रघुवीर बहु वीर वर बंडको। कीन टंकोर रव घोर धनु चंडको ॥ २९ ॥ कान लग तान बहु बानि वर्षन लगे॥ विपुल बलवानके प्राण कर्षन लगे ॥ कटत भुज शीश भट अटत अकुलायके। पटत नहिं नटत पद हटत भय पायके॥३०॥ झुंड गजतुंड सह शुंड धरणी परै। रुंड खलमुंड बहु कुंड शोणित भरे ॥ सुदल बल विचल अविलोकि द्रुत धायके। शक्ति शर समर खर प्रखर किय आयके ॥ ३१ ॥ राम लखि सुभट वर चाप मंडित लियो। बान संधान खर त्रान खंडित कियो ॥ परत खर त्रान महि त्रिशिर शर जालते। शाल रघुलाल तिहि काल नख भालते ॥ ३२ ॥ निरखि रघुवीर वरवीर उर थीरते। कीन सुविदीर बहु त्रिशिर तनु तीरते ॥ हेरि दूषण त्रिशिर शक्ति कर चंडलै। युद्ध किय क्रुद्ध भट उद्ध पुनि खंडलै ॥ ३३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पद्धरी छंद ।

इमि यातुधान अतिकोप कीन । पुनि घेरि शोर करि घेरिलीन॥
गहि उपल वृक्ष डारत प्रचार । वर्षत अपारमल अस्थिछार ३४
वरिवंड चंड निश्चर अनेक । निरद्वंद बीर रघुनंद एक ॥
खलदल अखंडकरि खंड खंड । डारत सुभूमि हति चंड चंड३५
खर दूषणादि निश्चर समस्त । बाणन विदारि कीने परस्त ॥
भोकटकखिन्न बहुछिन्नछिन्न ।करचरणशीशतनुभिन्नभिन्न३६
बहु भिरतआयबहु गिरतझूमि । बहु घूमि प्राण तजि परत भूमि ॥
बहु क्रुद्ध युद्ध किय धायधाय । बहु खल परांयकरिहायहाय ३७
रघुवीर चंड कोदंड धारि बाणनबिदारि खल झारिमारि॥
खर दूषणादि त्रिशिरादि सर्व । भोयातुधानदलनिहतगर्व॥३८॥
निश्चर सहस्र षट दंड मध्य । रघुवीर एक कीने सुवध्य ॥
खर यातुधान संहार हेर । कोप्यौ अपारकिय समर फेर३९
निश्चर सहस्र वसु एक वार । वर अस्त्र शस्त्र कीने प्रहार ॥
तिन सकल खंडि रघुवीर वीर । हियभरो क्रोध बहु समरधीर ४०
कोदंड चंड शर मंड मंड । वर वंड वीर किय खंड खंड ॥
स्यंदन गयंद बेसर तुरंग । वाहन सुढंग सब कीन भंग ४१
पुनिविशिखबाणगहिगहिअपार । काटे समस्त निश्चर हथ्यार ॥
कर चरणशीश कटि कटिअनेक । द्रुत परत एक पर एक एक४२॥
पिक्करत वीर धावत रिसाय । चिक्करत हाय करि करिपराय॥
रघुनाथ हाथ लाघव अभूत । तनुतेजधीर भुजबल अकूत४३॥
कर लहत गहत अरु बहत बान । धनु सजत तजतकोऊ न जान॥
दिशिविदिशिदीनशरजालछाय ।नभभूमिकाहुकछुनहिंलखाय ४४
भरि नैन श्रौन मुखविशि तीर । निश्चर अधीर कीने सुवीर ॥
करि हाय हाय भट यातुधान । छोड़त सुप्राण लगि वज्रबान४५॥
बल झुंड रुंड अरु मुंड भूरि । छाये कराल चहुँ धरणि पूरि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहु श्वान गृध्र वायस शृगाल। तिनलखतभखतअतिजियनिहाल४६
कर चरण शशि लैलै परांय । मडराय धाय गहि जाँय खाँय ॥
पलभखी जिव आमिष अहार । लहि करैंपानशोणित अपार॥४७॥
बहु समर घोर करि यातुधान। लगि रामबाण सब तजत प्रान ॥
चौदह सहस्र निश्चर समस्त । शरग्रस्त त्रस्तभेध्वस्त अस्त॥४८॥
इहि भाँति प्रबल खलदल उदंड । खरदूषणादि त्रिशिरा प्रचंड ॥
वर वीर सकल दशशत षडष्ट । ते यातुधान भे समर नष्ट ॥४९॥
निश्चर विनाश लखि देववृंद । बोले सु जैति जैरामचंद ॥
चहुँ सुमनवृष्टि कीनी अपार। नभछई बिपुल दुन्दुभिधुकार॥५०॥
लखिविजयमुदित ह्वै लषणलाल । सियसहित धायआये उताल॥
करिनेह राम उरलाय लीन । कहि बिशद बैन आनंद दीन॥५१॥
सिय देखि राम तनु त्रान खंड । अकुलाय निर लोचन उमंग ॥
बिलपाय धाय रघुराय अंक। लीने लगाय जियअतिसशंक५२॥
तिन लखि अधीर रघुबर प्रबीन । तनु त्रान बेगि अति दूरकीन॥
सिय लषण राम नखसिखनिहार । पायोसुहीयआनँदअपार॥५३॥

दोहा—इमि रघुवीर सुधिर वर, बीर समेत हुलास ॥
जनस्थानवासी सकल, निश्चर किये बिनास ॥ ५४ ॥
खर दूषण त्रिशिरादिये, चौदह सहस सुधीर ॥
दशमुख आज्ञाते रहे, जनस्थान वरवीर ॥ ५५ ॥
सुनि दुखकारी सकल शठ, रहे भये सो नास ॥
ऋषिगण अति आनंद लहो, सब छूटि खल त्रास ॥५६॥
सुर मुनि सब रघुबीरकी, अस्तुति करत अपार ॥
दंडकवन पावन भयो, होत सु जैजैकार ॥ ५७ ॥
सिया लषण संयुत सदा, रहत सजग रघुबीर ॥
छिनहुँ न छोडत बंधु दुहुँ, धनु शर असि तूणीर ॥५८॥
पंचवटी इहि विधि रहैं, सिया लषण रघुचंद ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धीर वीर विरहत विपिन, प्रतिदिन परमानंद ॥ ५९ ॥
कियो राम सिय मंत्र कछु, लषण सुजानो नाहिं ॥
यथारूप गुणनेह युत, संतत तिहूँ रहाहिं ॥ ६० ॥
पंचवटी गोदावरी, सुभग तपोवन ठाम ॥
परम मनोहर सिद्धि थल, जहँ विहरत सिय राम ॥ ६१ ॥

इति श्री० रा० र० व०वि० पंचवटीवासवर्णनो
नाम दशमोऽविभागः ॥ ४ ॥

इति श्रीरासिकविहारीकृत श्रीरामरसायनग्रन्थे वनचरित्रवर्णनो
नाम चतुर्थोविधानः ॥ ४ ॥

लीला छन्द ।

इहि विधि सब यातुधान ॥ नाशे हति राम बान ॥
कानन चहुँ झुंड झुंड ॥ छाये बहु रुंड मुंड ॥ १ ॥
शूर्पणखा देखि हाल ॥ अतिही जिय ह्वै विहाल ॥
भागी तहँते सशंक ॥ धाई बहुवेग लंक ॥ २ ॥
आई दशशीशपास ॥ विलपी बहु ह्वै निरास ॥
ताको सब हेरिहाल ॥ बूझी अतिही उताल ॥ ३ ॥
क्रोधित करि अरुण नैन ॥ बोली बहु निदरि बैन ॥
बूझै कह निलज बात ॥ मोगति तुहिं नहिं लखात ॥ ४ ॥
डूबो मति अंधकूप ॥ तोसम कहुँ होत भूप ॥
देखै कछु देश कोश ॥ तोको नहिं रंच होस ॥ ५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

भावै मति बंक मद छावै है उतंक तिय अंकलै निशंक पर्यंक माहिं सोवैहैं ॥ अथवत भान कब होत है विहान सो न जान सुरापान माहिं रैनिदिन खोवैहैं ॥ रसिकविहारी राज काज औ समाज साज कैसोका अकाज काज रंचहू न जोवैहै ॥ तो सों जो नरेश सो कलेशबहु पावै देश जावैपछितावैऔविनाश वेगिहोवैहै६

दोहा-शूर्पणखा इमि रावणहिं, कहिं अनेक कटुबात ॥
बहुरि कथा सब वरणिकै, बार बार विलपात ॥ ७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो०—सुनि खरवध दशमाथ; विकल भयो बहु सोचवश।
पुनिरिस करि निज हाथ, मलत उसासन लेत बहु ॥८॥
निरखि शोक वश भ्रात, पुनि बोली कुलनाशिनी ॥
सुन दशमुख मम बात, जिहि कीने तुव होय भल ॥ ९ ॥
राम तिया छबिसिंधु, कैसहु सो हरिलावहू।
तौ तिहि दुख दुहुँ बंधु, करि विलाप निज तनु तजै ॥१०॥
शूपणखाके बैन, मन भाये दशमुख सुनें।
हिय आयो कछु चैन, चलो वेगि रथसाजि सो ॥ ११ ॥
आयो जहँ मारीच, कियो अमित सतकारसो ॥
बहुरि दशानन नीच, ताहि सुनाई सकल गति ॥ १२ ॥
चौ०—पुनिबोलोतुममृगबनिजावो ❀ छलकरिदुहुँबंधुन भरमावो
तबइकंतलखिमैं तहँआऊँ ❀ लैसीतहिनिजलंकसिधाऊं॥१३॥
तब मारीच ताहि समुझायो ❀ राम तेज बल अमित सुनायो ॥
सुनि बोलो दशवदनरिसाई ❀ मुहिंलखिपरै मृत्यु तुवआई १४॥
तब मारीच चलो गुणि साथा ❀ मरण भलो रघुबरके हाथा ॥
निशिचरपतितहँआय लुकायो ❀ सो अनूपमृगतनुधरिआयो१५॥
पंचबटी बिच इत उत जाई ❀ बार बार दुरि दई दिखाई ॥
औचक लखोसियतिहिरूपा ❀ अकथ अभूत कुरंगअनूपा १६॥

घनाक्षरी—कवित्त।

नील मणि नैनऔ प्रावलके विशाल शृंग जटित अनेक रत्न कंचनको अंगहै। दशन सुहीरनके रजतमई हैं खुररसिकविहारी रूप सुभग सुढंग है ॥ ताहि अविलोकतहीं सिय रघुनंदनको टेरे हुलसाय छाई अमित उमंग है। धावो वेगि धावोलाल आवो इत आवो श्याम देखौ याहि देखौ कैसो रुचिर कुरंग है ॥ १७ ॥

दोहा—लै धनु शर सिय वचन सुनि, दुहूँबंधु उठी धाय।
जनकसुता ढिग आयके, चहुँचितये अकुलाय ॥ १८ ॥
वेगि सिया पिय हाथ गहि, दरशायो मृग सोय।
लखि अनूपदुहुँ राजसुत, चकितरहे छबिजोय ॥ १९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जनकसुता पुनि श्याम सों, बोली सहित उमंग ।
करि अहेर बाजियत गहि, लीजे लाल कुरंग ॥ २० ॥
सुनत प्रियाके प्रिय वचन, धनुशर सजि रघुराय ।
चले बेगि मृगहेतु सो, बहु लषणहिं समुझाय ॥ २१ ॥
रामहि निरखि कुरंगसो, कहुँ दुरि कहुँदरशाय ।
यौं छलकरि बनअगम बिच, लैगो दूरि भुराय ॥ २२ ॥
चौ०-जबमृग छलरघुवीरविचारा ❀ तबतकि ताहि चंडशर मारा॥
गिरो कहत हा लछमन सीता ❀ सुनत भईरघुवरहियभीता२३॥
सोतजि कपट मरो कहि रामा ❀ दिव्यदेह धरि गो सुरधामा ॥
पुनि रघुनाथरुचिरत्वचलीना ❀ बेगिफिरेसियढिगचितदीना२४
जब मारीचशोरकरि भारी ❀ हाय लषणसिय गिराउचारी ॥
सोसुनि जनकसुता अकुलानी ❀ कहीवीरधावो धनुपानी २५॥
भो कलेश तुव भ्रातहि भारी ❀ तबइमिआरत गिराउचारी ॥
लषणकहोतजि तुमहिनजाहीं ❀ तिनहिंदेइदुखकोजगमाहीं २६
बचनसुनत सियरिसकरिभारी ❀ कही लषण दुरनीतिविचारी ॥
जातहौजिय भ्रातहि मारी ❀ हम लीजे मिथिलेश कुमारी२७
कैतुम भरत मंत्र दुहुँ कीनो ❀ स्वारथहेत संग बन दीनो ॥
सोरुचि नहीं पूजिहै तिहारी ❀ मोहिं नगुनौ और सम नारी२८
दोहा-जाछिन प्यारेको सुनौं, हौं दृढ अशुभ प्रसंग ।
ताही छिन विन अनलयह, भस्मकरों निज अंग ॥ २९॥
यौं कहि पुनि बोली सिया, लषण जातके नाहिं ।
जौन जाहु तौ अबहिंमैं, प्राण तजौं छिन माहिं ॥ ३० ॥
चौ०-अनुचितसुनत रोषउरधारे ❀ लछमनहू कटुवचन उचारे ॥
वेगि कृपाल धनुष तूणीरा ❀ सजिके चलत भयेवरवीरा ३१ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये आरण्यकांडे ॥ सर्ग ॥ ४५ ॥ श्लोक ॥

आर्तस्वरं तु तं भर्तुर्विज्ञाय सदृशं वने॥उवाच लक्ष्मणं सीता गच्छ जानीहि राघवम् ॥१॥ रक्षसांवशमापन्नं सिंहानामिव गोवृषम्॥ न जगाम तथोक्तस्तु भ्रातुराज्ञाय शासनम् ॥ २ ॥तमुवाच ततस्तत्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्षुभिता जनकात्मजा ॥ सौमित्रे मित्ररूपेण भ्रातुस्त्वमसि शत्रुवत् ॥ ३ ॥सुदुष्टस्त्वं वने राममेकमेकोऽनुगच्छसि॥मम हेतोः प्रतिच्छन्नः प्रयुक्तो भरतेन वा ॥ ४ ॥ अब्रवील्लक्ष्मणः सीतां प्रांजलिः सजितेन्द्रियः ॥ उत्तरं नोत्सहे वक्तुं दैवतं भवती मम ॥५॥स्त्रीत्वाद्दुष्टस्वभावेन गुरुवाक्येव्यवस्थितम्। गच्छामियत्रकाकुत्स्थः स्वस्तितेऽस्तु वरानने ॥ ६ ॥ इत्यादि ॥

चौ०—गमनत पर्णशालचहुँफेरा ❀ करि महि धनुषरेखकरघेरा॥
कही इती विनती चित दीजो ❀ रेखउलंघिकाजजनिकीजो३२
योंकहि लषण वेगि पगधारे ❀ रोष सोचवश विकल अपारे॥
सूनो थल दशमुख जब पायो ❀ तब सो तापसवेषबनायो ३३
रथदुराय शाला ढिग आई ❀ अतिथिभिक्षुसमगिरासुनाई॥
लखि सिय देनलगी फल जाई ❀ तब बोलेइमि निश्चरराई३४
हों न लेहुँ बंधनमय भिक्षा ❀ है इहिभांतिमोहिंगुरुशिक्षा ॥
याते रेख बाहिरे आई ❀ जो कछु देहु लेऊँहुलसाई३५
भावीवश सिय कछु न विचारी ❀ धनुरेखा उलंघि पग धारी ॥
देन लगी भिक्षा तिहिजाई ❀ तब दशमुख स्वदेहप्रगटाई३६
अंतर भक्ति सहित शिरनाई ❀ प्रगट निश्चरी मति दरशाई॥
गहिलीनी सीतहि वरियाई ❀ वेगि लै चलौ रथ बैठाई ३७
रावण गहत विदेहकुमारी ❀ ताहिअमितकटुवाणिउचारी॥
घोर शोर करि रोवन लागीं ❀ ताछिनदुसहशोकदुखपागीं३८
आरत दीन पुकारत सीता ❀ वचनउचारत विकल सभीता॥
हाय नाथ हा अवध बिहारी ❀ हायवीर यों विलपतभारी ३९

घनाक्षरी—कवित्त।

जनकसुताको हरिलीनी दशशीश जबै रथ पै चढाय लैचलो है निज भौनको। विकल अधीर विललाति कुररीकी भाँति दीन ह्वै पुकारति है भूमि नभ पौनको ॥ रसिकविहारीहायप्रीतमधनुषधारी आपनी दशायामैं सुनाऊँ सबै कौनको। अबतो परी है बालमृगी या वधिक हाथ वेगही छुड़ावो धावो दुष्टदलदौनको॥ ४० ॥हाय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रघुचंद हाय दशरथनंद प्यारे हाय रघुवीर धीर पीरके हरैया हाय॥ हाय प्राणवल्लभ दयालु रघुलाल हाय संकटहरैया उर आनंदभरैया हाय॥ हाय सुखकारीहाय रसिकविहारीधाय कीजियेसहाय आय धनुष धरैया आय। हाय प्राणप्रीतम सुजान बलवान ऐसी सुरति बिसरी क्यों हमारी रघुरैया हाय॥ ४१॥ हाय मति मान धीर लषण सुजान तव कीनो अपमान सो निदान भई घात है। हाय बलवान धाय वेगहीछुड़ावोआन निकसतप्राणछिन कलपविहात है॥ रसिकविहारीधनुधारी हौ तिहारी वीर मेरो दुखहारी और कोऊ नादिखाता है। हाय रघुनाथ मोहि निरखि अनाथदशमाथ गहि हाथ निज साथ लीने जात है॥४२॥ मेरी महि माय हाय सोऊ ना छुटावै मोहिं ठाढ़े कुज भ्रात भूरि तेऊ नगिचायना॥ तातके समान भानु देखै ना बचावै आन भगिनीलता ये लखैं तेऊ गहैं धाय ना। संगीनी कुरंगिनी सुहेरैं पैनटेरैंकाहू ऐसे समयहितू और कितहूँ जनायना रसिकविहारी दुःखहारी धनुधारीविन विपति परै पै कोऊ करत सहायना॥ ४३॥

दोहा०—इहि बिधि अमित विलाप युत, जनकसुता कर जोरि॥
जड़ चेतन वन वसहिं तिन, विनवैं अधिक निहोरि४४॥

वनाक्षरी कवित्त।

कदली कदंब अंब शिंशुपाअशोकवट निपटअधीनदीनदेखिदया कीजियो॥ सरित समीर दिशि काननसुपंथगिरि प्यारे ते बताय वेगि ये तो यश लीजियो॥ रसिकविहारी कीरसारिकचकोरमोर भृंग पिक कोकिल नमौनही रहीजियो॥ केहरी कुरंग व्याल आवैं रघुलाल तिनै मेरो हाल सकल उताल कहि दीजियो॥ ४५॥

चौ०—करतिविलाप अमितइमिसीता ❀ लियेजातदशवदनसभीता
सुनि सिय रुदन जटायू धावा ❀ गहिरथनभते भूमि गिरावा४६
रावणकर धनु शर रथ भंजा ❀ कियो युद्ध खल बलमदगंजा।
चोंचन नखन सुअंग बिदारी ❀ छीनलईहठिजनकदुलारी ४७
तब रावण कर गहिअसिधायो ❀ गृद्ध पंख दुहुँ काटि गिरयो॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

झटित जाय दूजो रथलायो ❀ सियजटायुसो भेद नपायो४८
पुनि सीतहि लै निश्चर राई ❀ नभमारग ह्वै चलो पराई ॥
बहुविधिकरतिविलापजानकी ❀ तजीआशातिहिसमैप्राणकी४९

दोहा–नभमारगह्वै सीयको, लिये जात दशशीश ॥
ताछिन देखे जनकजा, गिरिपर बैठे कीश ॥ ५० ॥
कछु निज भूषण अंगते, सिय दीने तहँ डारि ॥
आय परे बिच कपि सकल, चकृतरहे निहारि ॥ ५१ ॥
कोउ न जानो भेद कछु, किहिके भूषण आँय ॥
सहजहिं वनचर तिनहिं लै, धरे कंदरामाँय ॥ ५२ ॥
दशकंठहु जानो न सो, जो कछु कीनो सीय ॥
वेगि लैगयो लंकमधि, शोक हर्ष वश हीय ॥ ५३ ॥

चौ०–सियहिलंकपतिलंकहिलाई ❀ मधि अशोकवाटिकादुराई॥
विकट निश्चरी विविध बुलाईं ❀ ते सब शस्त्र लियेकर आईं५४
साम दाम भयेभेद सिखाई ❀ तिनहिं दशानन दई रजाई ॥
सजगरहौ निशि दिवस सदाई ❀ करहुसिया रखवारीजाई॥५५॥
लंकनाथ आज्ञा शिर धारी ❀ सीता निकट सुवेगि सिधारी॥
तिनहिंनिरखिमथिलीसकानी ❀ मौनरहींमुख कढीनवानी ५६
इहिविधिसियनिश्चरिन मँझारी ❀ निशिदिन विलपत रहैंदुखारी
ते सब बहु प्रकार समुझावैं ❀ सामदामभय प्रीतिजनावैं५७
सिय रावण गृह दृढ व्रतकीना ❀ निद्रा अशनपानतजिदीना॥
सो गति लखिसब देव दुखारी ❀ करिसुमंत्रदृढ़ युक्तिविचारी५८
पंचम निशि सुरपतिदुरिआये ❀ निद्रा घोर संग निज लाये ॥
पायस शुचि अनूप करधारे ❀ भक्तिसहितसियनिकटपधारे५९
सब निश्चरी नींद वश सोईं ❀ सो नभेद जानो कछु कोई ॥
सियहि बुझाय सुअशन कराई ❀ दै बहु धीर गये सुरराई ॥ ६०

दोहा–शुद्ध सिद्धि चरु देवकृत, गुणद पियूष समान ॥
कबहुँ न क्षुधा पिपासहो, पुनि न तेज बलहान ॥ ६१ ॥
यदपि देवपति अमित विधि, सियहि गये समुझाय ॥
तदपि निपट व्याकुल करैं, हाय हाय विलपाय ॥ ६२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-जबसियखबरविभीषणपाई ❀ तब ह्वैदुखितहियेअकुलाई॥
कला नाम निज सुता बुलाई ❀ भक्तियुक्तिशुभरीतिसिखाई६३
कहीसहजनितसिय ढिगजावो ❀ सखिनसहित तिनधीरधरावो॥
पैन भेद कोऊ यह जानै ❀ रावण न तरु क्रोधउरआनै६४
सो सुनि कलासंगसखि चारी ❀ लखि औसर सियपाससिधारी
जाय पाँय परि विनती कीनी ❀ पितुप्रणामकहिधीरजदीनी६५
इहिविधिकलानित्यसियपाहीं ❀ सखिनसहितलखि औसरजाहीं
पुनि जोसियढिगनिश्चरिरहहीं ❀ तिनमहँद्वैतियशुभ मति अहहीं
त्रिजटा अरु शरमाशुभसंगिनि ❀ ये दुहुँ गुप्त रहैं सिय अंगिनि॥
सप्तनारि ये जनकदुलारी ❀ बाढी प्रीति परसपरभारी ६७
इहि विधिसियालंकमधिरहहीं ❀ निशिदिनपियवियोगदुखदहहीं
राम नाममुख दृगपति ध्याना ❀ करि राखैं सीता निज प्राना६८

दोहा-इहि विधि दशमुख सीय लै, राखी लंक दुराय ॥
नगरद्वार चहुँ विपिन मग, परम प्रबंध दिढाय ॥ ६९ ॥
माघमास तिथि अष्टमी, शुक्लदिवस मध्यान ॥
दशकंधर सीता हरी, ग्रन्थन माहिं प्रमान ॥ ७० ॥

प्र० अग्निवेश्यरामायणे ।

ततो माघे सिताष्टम्यां मुहूर्ते वृंदसंज्ञके ॥
राघवाभ्यां विना सीता जहार दशकंधरः ॥ ७ ॥

पुनः हनुमन्नाटके ।

अर्द्धरात्रे दिनस्यार्द्धे अर्द्धचंद्रेर्द्धभास्करे ॥
रावणेन हृता सीता शुक्लपक्षे सिताष्टमी ॥ ८ ॥ इत्यादि

इति श्री० रा० र० वि० वि० सीताहरण-
वर्णनो नाम प्रथमो विभागः ॥ १ ॥

दोहा-इहि विधि भये जु मासदश, दुखित रहैं सियलंक ॥
निश्चरपति अरु निश्चरी, दरशावत बहु शंक ॥ १ ॥
सिया कलादिक सखि प्रतिन, प्रति दिन करहिंविलाप ॥
प्रिय वियोग दुखते सदा, बढत विरहतनु ताप ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी-कवित्त।

विरह विहाल शीशनाय सियसोचत हैं मोचत दृगनवारि ऊंची श्वास भरिकै ॥ रसिक विहारीको मिलावै धनुधारी अब भूमिहू न मेरे हेत फाटत दरीरकैं ॥ श्याम रघुराई कहा चूक बनि आई मोंते ताही सों दुराई चुप ह्वै रहे विसरिकै। हाय प्राणप्यारे को दरश मोहिं दुर्लभ भो विमुख मरौंगी याविओग ज्वाल जरि कै ॥ ३ ॥ निपट निलज्ज सदा सहत्त वियोग परि रटत हमेंस हाय रहत सतापीतू ॥ येरे मतिहीन दीन दुखित घनेंरो बृथा विलपत रैनिदिन भयो है विलापीतू ॥रसिकविहारी प्राणप्यारेढिग जारे अब विरह सुनारे कस होत मृखालापीतू ॥ ऐसहू कलेश धृग जीवन है तेरो हाय निकसत नाहीं क्यौं कठोर प्राण पापीतू ॥ ४ ॥ जाके हिय लागी लखै सोई या वियोग पीर निपट कराल है कृपाण कठिनाईते ॥ दोऊ तन दाहै हेली दुसह व्यथा है अति रंचहू न चाहै सुख सुजन मिताईते ॥ प्रानको पयान दुख एक को नशात सबै समुझ सयानी भटू निज निपुनाईते ॥ रसिकविहारी सुखकारी यौं विचारी वेगि मरन भलो है यह विरह कसाईते ॥ ५ ॥ सुनत सदाही में दयालु देव मानों किमि प्रगट जनात निठुराईको निकेतहै । रसिकविहारी दीन रक्षक बतावै ताहि मिथ्या सो अजान सुधि काहूकी न लेत है॥अमित उदार यों ही करत बखान वाको मेरी जान कृपन महान इहि हेतहै । हौं तो वह जाँचो कछु दाम को न काम जामें सोऊ नेक मीच मोहिं माँगेहून देतहैं ॥ ६ ॥ मोसीं मंद भागिनी न कोऊ है जहान हेलीते हैं बड भागिनी जु श्याम सुख पागैंगी । आनँद अभँग नवनेह की उमँग माहीं छाकि रस रंग संग सब निशि जागैंगी ॥ जन्म धिग मेरो हाय प्रीतम बियोग भयो धन्य सो तिया जो अति हीय अनुरागैंगी ॥ रसिकविहारी रघुचंद हैं निशंक अब अमित मयंकमुखी आय अंकलगैंगी ॥ ७ ॥

सवैया-कवित्त।

जानतिहौं रसिकेश सुभावरहैं दृढप्रीतिकी रीतिमें माचे। नेहिनके बश वेगहि होत अभंग सदा रसरंगमें राचे॥प्रेम लगाय लुभा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

य न लेय कोऊ हौं तजौं इहि सोचकी आंचे। और नहीं इमि है कितहूँ जिमि हैं सखि श्याम सनेहके साँचे ॥ ८ ॥

धनाक्षरी–कवित्त ।

इत उत जाय बार बार फिरि आय आय रसिकविहारी ढिग मेरेही अरत है । गोदावरी तीर धाय जौलों नीर लाऊँ वीर तौलों हेर हेर प्यारी प्यारी ही ररतहै ॥ शैनहू में नैन खोलि खोलि अविलोकत ते मोहिं बिन देखे छिन धीर न धरत है ॥ भूलै है न सोई सुख हूलै है हिय में हाय मेरे प्राण प्यारे वह प्यार जो करत है ॥ ९ ॥ चौदह सहस्र यातुधान बलवान भूरि जिनते संहारेते अमोघबान खोगये । दीन दुख टारतते दुष्टनको मारतते एकैबार अमित समस्त गुण गोगये ॥ निरखि पराई पीर नीर दृग ढारतते धारतते विविध सुकर्म धर्म धोगये । रसिक विहारी लाल परमदयालु सोई मेरे हेत निपट कठोर अब होगये ॥ १० ॥

सवैया–कवित्त ।

है जु पतिव्रत धर्म महा तिहि मै दृढ कै अपने उर ठानों ।
प्रीतम के पदपंकजते बढि और कछू तिहुँ लोक न मानों ॥
सोफल हीन कियो सिगरो अब काह कहौं पिय नेक न जानों ।
मोहियदा हत शोक यही उन सत्य सनेह नहीं पहिचानों ॥ ११ ॥

दोहा-जनकनन्दिनी बिकल नित,इहि विधि अति बिलपाय ॥
पति बियोग वश दुखित जिय,नेक न धीर धराय ॥ १२॥
तिया कला त्रिजटादिते , समुझावै सतभाय ॥
स्वामिनि धीरज धारिये, सुधिलै हैं रघुराय ॥ १३ ॥
सुनि तिनके बर बचन बहु, सिय धारैं छिन धीर ॥
पुनि बोलै अकुलाय उर, उठैं बिरहकी पीर ॥ १४ ॥

सवैया–कवित्त ।

कौन सुनै अरु कासों कहौं पुनि,सांचिये कोउ न मानतहै ।
जिहि ब्यापी नहीं या वियोग व्यथा सु कहा दुख कोपहिचानत है ॥
रसिकेस कहू विरही जौ मिलै विरही गति सो उर आनत है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नर नारि सयोगीवियोगी कहा मिलिकै बिछरोसोईजानतहै॥१५॥
कोउ कहै दुख त्यागौ सबै हिय धीर धरौ मिलि है रस भीनों॥
पै मन मेरो न मानत है विछुरे तन छोडिवोई प्रण लीनों॥
मोहि जुपै समुझावति हौ रसिकेश तुपै अतिही भल कीनों॥
हों करतारसें पूछौं इतो विरहीके ललाट कहूँ सुख दीनों॥ १६॥
चित चाहिय जाको सँयोग सदावह ताहिको वेगि वियोग करावे॥
देखि दशा विरहीनकी वाके हिये कछु रंच दया नहिं आवे॥
योंरसिकेश संदेसो अबैं करतारको कोऊ न जाय सुनावे॥
छीन सुधा सबके करते फिर नाहक क्यों जु हलाहल प्यावे॥१७॥

सो०—पुनि सिय बोली वीर, तन मन ते न बसाय कछु॥
बिन सुन्दर रघुवीर, नेक धीर कोउ न धरै॥ १८॥

सवैया कवित्त।

प्राण समीरते बौलत है पिय तू परसै किधौं हौं परसौं॥ रसना पपिहाते कहै रट पीउ की तू सरसै किधौं हौं सरसौं॥ तनकी अरु जीवकी होड लगी अति तू तरसै किधौं हौं तरसौं॥ रसिकेश बदी दृग मेघनसों घनोतू वरसै किधौं हौं वरसौं॥ १९॥

दोहा—यौं कहि सिय बोलीं बहुरि, अली धरौं किमि धीर॥
राजकुँवर बिन रैनि दिन, देत सकल ऋतु पीर॥ २०॥

घनाक्षरी—कवित्त।

शिशिर समीर तीर घालिवो न चूको नेक शीत भीत देवेमाहँ कसर लगाईना॥रैनहूँ अचैन अधिकैवेमें नराखो चैनपाला त्यौं कसाला मध्य कीनी लघुताईना॥ रसिक बिहारीफेर नीरहूनधारी धीर निरखि दुखारी मोहिं काहू दया आईना॥येते बलवानमिलि प्राण हठि लेते हाय जोपै एकहोतो विरहानल सहाईना॥२१॥फूलनकी शूलनते शूल शूल शालो हीय कोकिलाकी कूकन लैलूकसी लगाईरी॥त्रिविध समीर तीर ताकि तनुबेधो वीरविरह कृपाल तान विशिष चलाईरी॥रसिकविहारी धीरधारी वरियारीवीरहाययाविचारी तब कीनी मोसहाईरी॥ निठुर कसाई सो वसंत दुखदाईघात पाई प्राण लैवे माँह कसर न लाईरी॥२२॥ आतपअपारफेर विरह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कृशानु झार लगि तन होतो छार कैसहू न जीतीमैं॥ लूह की लपेट तातीं श्वासकी सपेट जैसीभई जिय जानौंकाबखानौंगतिबीतीमैं॥ रसिक विहारी धनुधारीकीकृपाते बचिजैहैप्राण ऐसीसत्यहीयधारि लीतीमैं॥ ग्रीषमवियोग दोऊदाहतें मरीती हाय जोपै श्याम नाम सुधाछिनहुँ न पीतीमैं॥ २३ ॥मेघन घिराय झरि लाय दामिनी दिपायघोर घहराय तमछाय डरपायोरी॥ पौनजोरतोरतरुचातक सुमोर शोर करकै करोर कला दुख दरशायोरी॥ अबला अधीन दुखीविरहिनि दीनदेखिरसिकबिहारी दया रंचहू न लायोरी॥ पावसप्रपंची निशि दिवस सताई मोहिं फेरिवहपापीके सुहाथकह आयोरी॥ २४॥

दोहा—हौं पाहननिज हीय करि, इती सहीसब शंक॥
निपटदुसह दुख देतहै, अब यह शरद मयंक॥ २५॥
यौंकहिसिय शशिओर लखि बोलीं बचन रिसाय॥
सुखी न रैहौ चंद तुम, मो अबलाहि सताय॥ २६॥

सवैया कवित्त ।

दुक जीय विचारौ अहो द्विजराजअजौं दुखदीनकोदेखिलचौ॥ रसिकेश सुशीतलता तजिकै मुहिं हेत वृथा जनि तापतचौ॥ यहबात भली जु नमानहु तौ पछितैहौ घने बहु नाच नचौ॥ प्रथमै हिय कारो भयो पैअबै मुखकारो भये बिन नाहिंबचौ॥२७॥

दोहा—येही विधि सिय तियनप्रति, करतिविलापअपार॥
दुखित हीय दुहुँ दृगनते,चली जात जलधार॥ २८॥
गदगद कंठ सनेह मय, बहुरि कहे सियबैन॥
सखी सुमिरि पिय हीय गति, हौं सोचौं दिन रैन॥ २९॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

दुसह कलेशनित विरहव्यथाको सहौं पै नप्राणप्यारेढिगप्राणहि पठाऊंमैं॥ रसिकबिहारी योकठोर हियमेरो तऊ करिकार हाय रैनि दिवस बिताऊं मैं॥ प्रीतमकोहीय अंगकोमल महाहै सखीकैसेदुख झेलैं याते ऐसी जियचाऊंमैं॥ जौंलौंहैं वियोगतौलों श्यामकोसनेह मोमें अधिक नहोवै यहीईशते मनाऊं मैं॥ ३०॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–दशरथ राज किशोर नित,सब विधि मुदित रहायँ ॥
तौ तिनके सुखतेसुखी, हौं अति सुखी सदायँ ॥ ३१ ॥
याते हौं शिरनायकै, विनय करौं कर जोरि ॥
गिरिजापति पूजैं सदा, यह अभिलाषा मोरि ॥ ३२ ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

दोऊ बंधु रूप गुणसिंधु दीनबंधु हेली परम सुधर्मसतकर्ममेंसने रहैं॥खल दल घालनको भक्तप्रतिपालनको सत्यप्रणयेई सदाहीयमें ठने रहैं॥ अंचल पसार बार बार वर मांगौ येहीतन मन प्राणप्यारे मुदित घनेरहैं॥ वसुधाबड़ाईवित्तवीरतासमेत जैसी रसिकबिहारी सुखी संतत बने रहैं ॥ ३३ ॥

दोहा–यौ कहि सिय पुनि नेहभरि,विलखि कहे मृदुबैन॥
हाय श्यामसुंदर बदन, कब देखौं भरिनैन ॥ ३४ ॥
सुनि कलादि नारी सबै, सियहि दई बहु धीर ॥
राजसुता अब वेगही, मिलन चहत रघुवीर ॥ ३५ ॥
सुनि वरवानि कलहि सिया, हिये लई लपटाय ॥
पुनि सबही आदर दियो, बहु विधि प्रीत बढ़ाय ॥ ३६ ॥
येही विधि नित जानकी, करि करि विविध विचार ॥
कहत रुचत सो विरह वश, नेक न रहत सम्हार ॥ ३७ ॥
सिय विलाप इमि अमितहैं, कहँ लग करौ बखान ।
वाल्मीकि नाटक विविध, ग्रन्थ न माहिं प्रमान ॥ ३८ ॥

वाल्मीकीये सुंदर कांडे । सर्ग २८ ॥ श्लोक ।

हा राम हा लक्ष्मण हा सुमित्रेहा राम मातः सह मे जनन्यः ॥
एषा विपद्याम्यहमल्पभागा महार्णवे नौरिव मूढ़वाता ॥ १ ॥
हा राम सत्यव्रत दीर्घबाहो हा पूर्णचन्द्रप्रतिमानवक्त्र ॥
हाजीवलोकस्यहितः प्रियश्च वध्यां नमांवेत्तिसहि राक्षसानाम् ॥२॥
अनन्यदेवत्वमियं क्षमा च भूमौ च शय्या नियमश्च धर्मे॥
पतिव्रतात्वं विफलं ममेदं कृतं कृतघ्नेष्विव मानुषाणाम् ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोघं हि धर्मश्चरितो ममायं तथैकपत्नीत्वमिदं निरर्थकम् ॥
या त्वां न पश्यामिकृशाविवर्णाहीनात्वया संगमने निराशा॥४॥
पितुर्निदेशं नियमेन कृत्वा वनान्निवृत्तश्चरितव्रतश्च ॥
स्त्रीभिस्तु मन्ये विपुलेक्षणाभिः संरंस्यसे वीतभयः कृतार्थः॥५॥

इति श्री०रा०र०वि०वि० जनकनंदिनीविलाप-
वर्णनो नाम द्वितीयो विभागः ॥ २ ॥

दोहा—सीता प्रेम वियोगको, कीनो कछू बखान ॥
नेह विरह रघुचंदको, वरणौं सहित प्रमान ॥ १ ॥
इत मारीचहिं मारिकै, वेगि फिरे रघुलाल ॥
धनु शर साजे लषण उत, आये अतिहि उताल ॥ २ ॥
निरखि बंधुको चकितह्वै, बोले अति अकुलाय ॥
कहौ कुशल हैं जानकी, किमि आये इत धाय ॥३॥
हाय लषण यह काकियो, सियहि अकेलि विहाय ।
इत आये बिन काजहीं, असि धनु बाण सजाय ॥ ४ ॥
जानत हौ निशिचरनते ,भई शत्रुता भूरि ॥
लखि सूनि हरि लेहिंगे,मेरी जीवनमूरि ॥ ५ ॥
पुनि कर गहि वर बंधुते, बूझी ह्वै अति दीन ॥
सत्य कहौ प्यारी कुशल, क्यों तुव वदन मलीन ॥ ६ ॥
मम आज्ञा करि भंग तुम, इत आये किहि हेत ॥
राम वचन सुनि लषणते, बनै न उत्तर देत ॥ ७ ॥
पुनि धरि धीरज जोरि कर, बोले दुखित निहोरि ॥
नाथ कही सो सत्यपै, मोरि कछू नहिं खोरि ॥ ८ ॥
कहि अनेक अनुचित वचन, हिये रोष बहु लाय ॥
बरियाई मुहिं जानकी, इत भेजो रघुराय ॥ ९ ॥
यौं कहि पुनि वृत्तांत सब, रामहिं लषण सुनाय ॥
बोले दुहुँ कर जोरिकै, कहा दोष मम आय ॥ १० ॥
सुनि बोले रघुवंशमणि, तुम लछमन मतिमान ॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिय वाणी मानी हिये, ऐसे भये अयान ॥ ११ ॥
मूढ मत्त शिशु तिय दुखी, पांचहु एक समान ॥
इनके वचन सरोष सुनि, रोष न करैं सुजान ॥ १२ ॥
सो०—यौं कहि पुनि रघुराय, लै उसास ह्वै सोचवश ॥
बोले अति अकुलाय, हाय लषण यह काकियौ ॥ १३ ॥
मुहि इमि परत जनाय, पंचवटी सीता नहीं ॥
लीनी निश्चर खाय, कै हरिकै हरि लै गयो ॥ १४ ॥
यौं करि अमित विलाप, सोचत जल मोचत दृगन ॥
हृदय बढत संताप, छिन छिन चले उताल अति ॥ १५ ॥
बंधुसहित रघुवीर, आये आश्रम दूरिते ॥
सूनी निरखि कुटीर, भये अधीर सुवीरद्वहु ॥ १६ ॥
तहँते आतुर धाय, आय परणशाला लखी ॥
विकल भये रघुराय, इत उत अविलोकत चहूँ ॥ १७ ॥
बोले निपट अधीर, हाय लषण प्यारी कहाँ ॥
कहूँ धनुष कहुँ तीर, गिरो गात कंपित भयो ॥ १८ ॥
पुनि अतिही अकुलाय, गिरे भूमि विलपन लगे ॥
हाय प्रिया रटलाय, टेरत अरु हेरत चहूँ ॥ १९ ॥
बहुरि उठे रघुराय, धाय धाय हेरत विकल ॥
टेरत हैं चहुँ जाय, आवो प्यारी कित गई ॥ २० ॥
लषण अमित दुखछाय, धाय धाय हेरैं चहूँ ॥
कितहुँ न परै लखाय, तब पुनि खोजैं टेरि कै ॥ २१ ॥
येही विधि दुहुँ भाय, सर सरिता गिरि विपिन चहुँ ॥
धाय धाय अकुलाय, हेरी सियहि न कहुँ लखी ॥ २२ ॥
तब आत भये अधीर, रघुवर तन मन सुधि गई ॥
बढ़ी विरह दुख पीर, धाय धाय बूझत सबहि ॥ २३ ॥
ताछिन कछु न जनाय, को हम किहिते का कहत ॥
जड़ चेतन इक भाय, सबहीते बूझत विकल ॥ २४ ॥
दोहा—पंकज सम कर पद मृदुल, पंकजसे दृग लाल ॥
हे पंकज ! कहु तुम लखी, पंकज बदनी बाल ॥ २५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हे कदंब ! प्रिय ताहिविन, भयो कलेश कदंब ॥
कहि कदंब सुख देहु जो, तुम कहुँ लखी कदंब ॥ २६ ॥
हौं सशोक प्यारी विना, मोको करहु विशोक ॥
लखी कहूँ मम वल्लभा, बोलो वेगि अशोक ॥ २७ ॥
कदली सम ऊरू युगल, कदली दलसी पीठ ॥
हे कदली मो भामिनी, कहूँ परी तुव डीठ ॥ २८ ॥
विन कुरंगनैनी प्रिया, मोतन भयो कुरंग ॥
तुम कहुँ हेरी होय तो, बोलो वेगि कुरंग ॥ २९ ॥
चक सारस शुक मोर पिक, हे खंजन अलिमाल ॥
लखी होय कहुँ मैथिली, तौ मुहिं कहो उताल ॥ ३० ॥
इहि विधि बूझत विकल अति, विनवत सबहि निहोरि ।
जोरि जोरि कर कहत हैं, कहो प्रिया कित मोरि ॥ ३१ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

सुवट तमाल ताल कदम रसाल साल देखो इहि काल मो विहाल मन ह्वै गयो। प्यारी संग छूटो पुण्य खोटो भाग फूटो मोहिं विरह जुलूटो यो अपार दुख छै गयो ॥ रसिकविहारी पढि डारी भुरकी धौं कोउ मोरी तिय भोरीको भुराय छलकै गयो।मौन क्योंरहौरे निठुराई नागहोरे कोऊ नेकतौकहौरेको प्रियाकोहरि लैगयो३२॥ केहरि कुरंग कपिकुंजर भुजंग भालु धाय ढिग आय नेक धीरज धरावोरे। निपट अधीन प्राणवल्लभाविहीन हौं तौ हीन छीनदीन देखि दाया उर लावोरे ॥ रसिकविहारी प्यारी रूप उजियारी वह कित बनचारी एकवारी तौ बतावोरे ॥ सबहि निहोरौं लाजछोरौं कर जोरौंहाय कोऊमोहिंमेरी मनमोहनी मिलावोरे॥३३॥मोविन सुजाके हियछिनहू न होतोकलसोक्योंनिठुराईकरि मनकोजितैगई। रूप गुणवारी हाय जनक दुलारी प्यारीनेक कृपाकरो मेरी ओरन चितैगई ॥ खगमृग रसिकविहारी हौं दुखारी मोको वाढिगपठावो प्रिया भामिनी तिते गई। दीन अविलोकि मोहिं कोऊ तौ बतावो आय हाय वह मेरी प्राणवल्लभा कितैगई ॥३४॥ येहो भूमि भूधर

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मतंगमृगराज मृग मोदिशि निहारौ तो वियोगी दीन वागोंहौं ॥ गोदावरि पंचवटी विटप विहंग बेलि मेरो दुख हरहु तिहारे पाँय लागौंहौं ॥ क्षत्री जाति यदपि न याचिवो उचित मोको रसिक बिहारी याविरह भीति भागौंहौं । हो तो रघुराज पै विहाय सब लाज आजदेहु मोहिं कोऊ मैं प्रियाकोदान माँगौं हौं ॥ ३५ ॥

चौ०—यौंबहुसबहि निहोरतधाई ❀ कतहुँन कछूप्रियासुधिपाई॥ बैठे इक तरुतल अकुलाई ❀ तब बोल लछमनहिं रिसाई ३६

घनाक्षरी कवित्त ।

विकल वियोगी दीन अबल विलोकि मोतें जेते जड चेतनते सबै मुख फेरो है ॥ रोयह्वै अधीनकर जोर मैं सुनाई विनय दया करियेकोनेक मोतननहेरोहै॥ छिनमें विदारौं इनपापीअभिमानिनकों जानत नरोष रघुवंशको करेरो है॥रसिकबिहारी प्राणप्यारी ना बतावै कोउ आन तो लषन धनुबान कित मेरो है ॥ ३७ ॥ लोक तिहुँ जारौं सातो सागर सुखाय डारौं गिरिन ढहाय डारौं भूमि उलटाऊमैं ॥ रंचमें विदारि डारों दशो दिगपालनको खगन समेत शशि सूरहि गिराऊँ मैं ॥ नभते पताल लैकै कितहूँ कहूँ जो नेक रसिकबिहारी प्राणप्यारी सुधि पाऊँ मैं ॥ जानकी न लाऊँ तौ पै क्षत्रीना कहाऊँ राम नाम पलटाऊँ धनुबाणना उठाऊँ मैं॥ ३८

सो०—रघुवर रोष निहारि,लषण कह्यौ कर जोरिकै ॥
मिलि हैं जनक कुमारि, नाथ धीर उर धारिये ॥ ३९ ॥
मिलिहैं यह सुनि श्याम, विकल उठे अकुलायकै ॥
कहँ भामिनी ललाम,इत उत फिरि खोजन लगे ॥ ४० ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

हेरत चहूँघा हाय सीते कहि टेरतहैं रसिक बिहारी प्यारी मिलि क्यौं दुरानी है ॥ विरह व्यथाते है विहाल रघुराय जैसे काहू भाँति तैसी गति जाय ना बखानी है ॥ उडि मग धूरि भूरि पूरि रही श्याम गात अधिक सुहात सो सुरीत दरशानी है ॥ हेरि निज नाथ तिय विरह दुखारी मनों भूमि अकुलाय धाय उर लपटानीहै ॥ ४१ ॥

दोहा—राजकुँवर इमि दुखित अति,खोजत सिय चहूँ ओर ॥
कहुँ बूझत हेरत कहूँ,कहुँ टेरत करि शोर ॥ ४२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धाय परणशाला लखत, धाय लखत बन जाय ॥
प्रिया विरह व्याकुल निपट, विलपतकरि करिहाय॥४३॥
कहुँ न मिली प्यारी तबै, परणशाल ढिग धाय ॥
आय गिरे मूर्छित विकल, कहत बचनविलपाय॥ ४४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

चलत अपार जल धारदुहुँ नैननतेनेक हूसम्हार सारहैन तन प्रानकी ॥ झांवरो भयोहै मुख वावरो भयोहै चित्त धावरो भयोहै जीय सुधि न अपानकी ॥ रसिकबिहारी धनुधारी सिय प्यारी बिन जैसे हैं दुखारी गति तैसी ना बखान की ॥ लाय लाय सुरति प्रियाके गुण गाय गाय बोले विलपाय हाय हाय हाय जानकी ॥ ४५ ॥ हाय मृगनैनी हाय प्यारी सुखदैनी हाय प्रिया वर वैनी विनतोहिं कित जाऊंमैं ॥ हाय हाय जानकी सुहाय प्राण प्राणकी जुहाय गति प्राण की या किहिको सुनाऊँमैं॥रसिकबिहारी हाय सुरति बिसारी प्यारी छिन छिनभारी कैसे दिवस बिताऊँमैं ॥ हाय प्राणवल्लभा किशोरी क्यों दुराय रही नेक मिल आय धाय अंकसो लगाऊं मैं ॥ ४६ ॥ लाय जा मु अंक नेक बचन सुनाय जारी नाय जा हिये में रस मरत बचायजा ॥ चाय जा दयातें प्रीति रीति मेंहिताय जारी ताय जा वियोग प्रिया प्रेमको निभायजा ॥ भायजा घनेरी मनमोद उमगाय जारी गाय जासुगीत की तनीतहि बिछायजा ॥ छाय जा छबीली सुख रसिक बिहारी प्यारी हाय फेर आय एक बार तौ मिलायजा ॥४७ ॥ जिय अकुलावै तब कौन जो धरावै धीर हाय टक लाय चाय काको रूप हेरौं मैं ॥ कोहै उमगाय धाय उर लगिजाय आय हिय हुलसाय काके गल भुज गेरौं मैं ॥ नेह सरसाय को मनाय गहिलेवै अंक कोहै इमि जातें इतराय मुख फेरौं मैं ॥ प्यार करि मोकौ अब प्यारे को पुकारै हाय रसिक विहारी काहि प्यारी कहि टेरौंमैं ॥ ४८ ॥

दोहा–विरह वीर बाढी अधिक, तन मनकी सुधि है न ॥
भयो चित्त भ्रम मत्त सम, बोलत अलबल बैन ॥ ४९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सवैया कवित्त।

दूरहिते मुहिं देखतहीं तहँ जाय दुरी छलतें रस भीनी ॥
आज प्रमोद मई रसिकेश विनोद की रीति नई चित दीनी ॥
बैठि रहीं पटघूँघट घाल सुमेरी विहाल दशा यह कीनी ॥
क्यों तरु ओट गही नवला अब आवो भला हौं कला लखिलीनी॥
फेरि भुजा गहि आपने आपहि बोलत नेह भरे रघुराई ॥
हाय छबीली रहीं अबलों कित क्यों यह आज लई निठुराई ॥
यौं कहि चौंकि चहूँ चितवैं कहँ प्यारी गई विलपैं अकुलाई ॥
टेरैं बहोरि प्रिया इत आवोजू आवो तुमैं रसिकेश दुहाई ॥ ५१॥
पुनि वेलिन धाय गहैं भरि अंक निशंक हिये हुलसावत हैं ॥
यह वाटिका प्यारी रची कहते कहि यौं अति नेह बढ़ावत हैं॥
इत प्राणप्रिया नित डोलत ती रजलै रसिकेश लगावत हैं ॥
हरषावत हैं उमँगावत हैं अकुलावत हैं विलपावत हैं ॥ ५२ ॥

दोहा—यौं विलपत दिन बीतिगो,अथवनलागो भान॥
साँझ समै लखि राजसुत, प्राण अधिक अकुलान ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

विरह विहाल रघुराईको लखाई परी औचक ललाई मंजु अथवत भानकी ।रसिकविहारी उमगाय उठिधाये वेगि बंधुहि बुलाय बोले भूली सुधि प्रानकी॥आवो वेगि धावो समुझावो औ मनावो गहि लावो तुम जावो आन मानैं हैं न आनकी॥ आयके परानी जात बहुरि हिरानी जात देखो देखो लषण दुरानी जात जानकी

दोहा—निरखि दशा रघुलालकी, विकल सुमित्रा लाल ॥
गदगद हिय दृग जल बहुत, बोलेवचन विशाल ॥५५ ॥
देखि रावरी विकलता, मोजिय अति अकुलात ॥
जनक सुता मिलि हैं बहुरि, धीर धरौ उर तात ॥ ५६ ॥
सुनि सुबंधुके वचन वर, राम कही विलपाय ।
पंचवटी प्यारी विना, मोपै लखी न जाय ॥ ५७ ॥
यौं कहि लै धनुबान असि, कटि कसि वेगि निषंग ।
चले राम व्याकुल अतिहि, गमने लछमन संग ॥ ५८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी कवित्त ।

खोजत पियारी चले विरह दुखारी राम रैनिउजियारी माहँबंधु बाँह गहि कै । सुधि बुधि भूली रघुराय अकुलाय बोले विलमौ घरीक तात तरु छाँह लहिकै ॥आतप सहो न जात लषण कही हो नाथ रसिकविहारी रहि चंद्रिका उलहि कै । सुनिकै मृगंक नाम झझकि उठे हैं राम हाय मृगनैनी हाय चंद्रमुखी कहिकै ॥९९॥

दोहा–पुनि शशि ओर निहारिकै, कही रोष उर धार ॥
अरे चंद मतिमंद तू, क्यौं न भयो जरि छार ॥ ६० ॥

सवैया कवित्त ।

मंदर ते दबि तू नगयो अरु राहु न लील लयो वरियाई ॥
मोहिं वियोगी विलोकि जरावत रे शशि तैं हूँ भयो दुखदाई॥
मैं रामकेश मयंक अबै तुहि कै शत खंड जु देहु गिराई ॥
प्राणप्रियामुखकी अनुहारि निहारि तजैं तुहिं चंद्रकसाई ६१॥

दोहा–पुनि बोले वर बंधुसों, सुनौं लषण दृढ बैन ॥
जनकनंदिनीके बिना, अब मो प्राण रहै न ॥ ६२ ॥

घनाक्षरी -कवित्त ।

कीने मैं अनेरे कोटि जनम घनेरे दोष ह्वैकै इकठाम आय करनी सुजागी है ॥ जाते प्रतिशोक शोक संतत अपार होवै हेरि जिहि बीरता सु वीरताहु भागी है॥तातको विछोह भ्रात मातको विछोह राजसाजको विछोह यौं विपत्ति संग लागीहै॥रसिकविहारी महि मंडल में मेरी जान मोसम न कोऊ कहूँ दूसरो अभागीहै ॥६३ ॥ राजकाज छूटो सखा सुजनसमाज छूटोसब सुखसाज छूटोकीनो ना विचार मैं ॥तापस कहाऊँ कन्द मूल फल खाँऊँ गिरि कानन रहाँऊँ सोउ लीनो मनमारमैं॥ येते बहु कठिन कलेश सहि राखो तनु रसिकविहारी करौं कहलों सम्हार मैं॥अबतौ निदान प्रानदैहौं प्रानप्यारी हेत सैंहौं ना वियोग दुख दुसह अपार मैं ॥ ६४॥ धिग गुन ज्ञान धिग आन बान सानकान धिग है कृपान धनु बान करलीवेकों ॥ धिग सब आज राज काज औ समाज साज धिग

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ममशर्म पर्म धर्म कर्म कीवेकों ॥ धिगसत बैन नैन शैन ऐन चैन धिग धिगहै अशन धिग नीर क्षीर पीवेकों॥रसिकबिहारी प्यारी जनकदुलारी बिन धिग तन प्रान धिग मेरे यह जीवेकों ॥६५॥ वसन दुराय धनुबानको बहाय तन भसम रमाय कन्द मूल फूल खाऊंगो॥ बैठौं दूरिजाय गिरि कंदर दुराय निज प्यारी गुनगाय वन जनम बिताऊंगो ॥रसिकबिहारी बंधु सदन सिधारो तुम हौं तौ अब येही प्रण सत्य ठहराऊंगो ॥ पाऊं गो प्रियातौ औध लाऊँगो दिखाऊं मुख नातर छबीली ढिग प्राण मैं पठाऊंगो।६६।

दोहा—सुनिलछमन अति विकल ह्वै, भ्रात चरण धारि माथ ॥
हाथ जोरि बोले दुखित, काह कहो इमि नाथ ॥ ६७ ॥
जो पै प्रभु सर्वज्ञ ह्वै, इहिविधि होत अधीर ॥
लहि कलेश पुनि इतर जन, धारैंगे किमि धीर ॥ ६८ ॥
पुनि मर्यादा सिंधु ह्वै, तिय हित त्यागत प्रान ॥
धीर वीर हिय सोचिये, नाथ परम मतिमान ॥ ६९ ॥
सुनि सुबंधु वाणी बहुरि, विलखि कही रघुराय ॥
लषण अबै जानौं न तुम, प्रीत विरह कह आय ॥ ७० ॥
सत्य सनेही होतजो, प्रिय बिछुरे निज प्रान ॥
तृण सम त्यागत तात गति, लखौ कहौं कह आन ॥७१

घनाक्षरी कवित्त ।

पूँछो उमगै क्यौं सिंधु पूरण मयंक देखि पूछौ तौ कमोदिनी विलोकि भानु क्यौं लजै । पूँछौ तौ पपीहै क्यौं न पीवै नीरस्वाती बिन पूँछौ तौ मलिंदै क्यौं न चाहै चंपकी रजै ॥ रसिकविहारी चित्त रीतिहै अलक्ष जब पूँछौ बहु ठौर तब शंका हीयते भजै । पूँछौ तौ पतंग क्यौं जरै है धाय दीपकमेंपूँछौ वारिके विहीनमीन जीव क्यौं तजै ॥ ७२ ॥ चारि षट् बहुरि अठारह विचार देखौ सात नव तीनमें निहारौ सब साजलों । सज्जन प्रवीन कवि कोविद धुरीन देव मानुषगुनीन पूँछौ सकल समाजलों । भूत औ भविष्य वर्तमान अनुमान लेहु हेरौ बुधिहीन भूप रंक शूर राजलों ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रसिकबिहारी चर अचर विलोकौ पै न प्रीत करि कोऊ सुखपायो काहूँ आज लों ॥ ७३ ॥

सवैया कवित्त।

होत नहीं चित रंचहु चैन करै कतलाम वियोग छुरी है ॥ छूटत है कुलकानि औ लाज फिरै मन ज्यौं चहुँ तेजतुरी है ॥ जाहर होत जहानमें सो नरहैं कहुँ एकहु भांति दुरी है ॥ हायहहा अब कीजे कहा रसिकेश या इश्क बलाय बुरी है॥७४॥

घनाक्षरी कवित्त।

छूटि जात खान पान भूषन वसन भौन छूटि जात वित्त देश प्रेमकी पगनमें ॥ तात मात दारा पतिपुत्र सखा बंधु छूटै तन मन प्रान छूटै नैनकी खगनमें ॥ रसिकबिहारी नेम धर्म परलोक लोक छूटि जात मोद बहु चित्तकी ठगनमें। येते सब छूटि जात रंचहु न लागै बार विरह न छूटै नेक नेहकी लगनमें ॥ ७५ ॥

दोहा—नेह सिंधु यह अगमहै, कोऊ लहै न अंत।
सत्य नेह तजि जगतमें, औरनहीं कछु तंत ॥ ७६ ॥
हौ तौ सांचे नेहके, रहत सदा आधीन ॥
नेह अपूरव वस्तु तिहि, अबलों लषण नचीन ॥ ७७ ॥
हाय लषण यह प्रीतकी, रीत प्रिया मम जान ॥
सो न निकट हौ नेहको, कासों करौं बखान ॥ ७८ ॥
लखौ लषण प्यारी बिना; हौं किमि भयो मलीन ॥
ऐसिहि ह्वैहै सीयकी, गतिमों संग विहीन ॥ ७९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

देह विन प्रान जैसे दिन विन भान जैसे चूना विन पान जैसे कूप विन वारी है॥रैनि विन चंद जैसे तालविनकंज जैसे कुल विन पुत्र जैसे फूल विन क्यारीहै ॥ भूपविन भूमि जैसे पत्र विन वृक्ष जैसे दीप विन भौन जैसे वीर विन रारी है ॥ रसिकबिहारी जैसे प्यार विन यार सूनोप्यारीविनलालतैसेलालविनप्यारीहै॥८०॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सवैया कवित्त।

बिरही समुझायहु धीर हिए न धरै न धरै न धरै न धरै॥
जगलो गहि सो रसिकेश कछू न डरै न डरै न डरै न डरै॥
निज प्रीतमके विन एक घरी न भरै न भरै न भरै न भरै॥
विधि काहुहि प्रीय विछोह कबौं न करै न करै न करै न करै॥८१॥
फलहै तिहि के शत कर्मनको जिहिके जिय माहिं सदा कल है॥
कल है नहिं जाहि कलेशनते न लगै कहुँ ताहि कछू भल है॥
भल है रसिकेश सदा अति सो हठिकै दृढ़ प्रेमहि जो न लहै॥
नल है निज मीत वियोग कबौं जगजीवनको सुयही फल है॥८२॥

दोहा—इहि विधि वर्णत लषणतें, प्रीत विरह दुख भीति॥
जनकसुतहि खोजत चहूँ; गई रैनिसबबीति॥ ८३॥
कहूँ न पाई प्रियहि पुनि, भये विकल रघुराय॥
बंधु कंध धरिकै भुजा, बोले अति विलपाय॥ ८४॥

घनाक्षरी कवित्त।

अंकद्युति चंपाअरुसंपा चपलाई लई कंज कोमलाई मंजुगजगति लीनी है।लोचन कुरंग दंत दाडिम अधरबिंब पल्लव सुपानिहरैंग्रीवा कंबु छीनीहै॥श्रीफलउरोज केशपन्नगकुमार लीनेरसिकविहारी यह प्यारी गति कीनी है। लंकहरिकानन कलंक औ मयंक मुख रंक सब लैकै एक शंक मोहिं दीनी है॥ ८५॥

दोहा—यों कहि करगहि लषणको, मग डगमग पग चाल॥
कहत सियाको रूप गुण, बूझत चले विहाल॥८६॥

घनाक्षरी कवित्त।

सुजन विहीन सुख हीन तनछीन दीन विकल अधीन सोकलीन दुख वोरीसी॥रसीकविहारी वरवेनी है विथोरी शीश विषमवियोगमें लथोरी वैसथोरीसी॥विरह विलोरी नेह सिंधुमें हिलोरी बाल निपट न जोरी औलजोरी अति भोरीसी।बूझो करजोरी प्रिया मोरि गई चोरी कोउ देखि कहूँ नवलकिशोरी एक गोरीसी॥८७
दूजी नाहिं नारी जग जाकी अनुहारी और तेजगुण भारी त्यों अनूप छवि न्यारी है॥पीतरंगसारी हेम भूषणविचित्र धारीचंपाद्युति

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हारी मंजुकेसरकी क्यारीहै॥रसिकविहारीसुखकारीसो अपारीनव अति सुकुमारी चारु आनन उज्यारीहै॥कोऊ वनचारीने निहारी तो बतावो वेगि ऐसी रूपवारी सो हमारी प्राणप्यारीहै॥८८॥अमल कपोलवारी मंजु मुख गोलवारीकोमलसुबोलवारीलोलदृगवारी है। पानिप अमोलवारी सुमति अडोलवारी कानन कलोलवारी हीयसुखकारीहै॥सुचितअलोलवारी सरससुडोलवारीरसिकविहारी त्यौं अतोल चाह धारीहै ॥ कोऊ वनचारीने निहारी तो बतावो वेगि ऐसी रूपवारी प्राणप्यारीसो हमारीहै ॥८९॥ दीपति अभंग वारी हृदय उमंगवारी छोटे अंग वारी रंग वारी ढंग वारीहै। झीने जीलवारी अति खीनेडीलवारी चारु वेनी लटवारी सुखदेनी सीलवारी है ॥ रसिकबिहारी सटकारे कारे केशवारी वेस भेस वारी मिथिलेश देशवारी है। कोऊ वनचारीने निहारी तो बतावो वेगि प्यारी सो हमारीहै जु ऐसी रूपवारीहै ॥९०॥भ्रुकुटी कमानवारीतीखे नैन बानवारी हँसनिकृपानवारीभारीसानवारीहै॥ वदन विशालवारी अधर प्रबाल वारीपानीपदलाल वारी मत्तचाल वारीहै ॥रसिकविहारी नेहवारी दिव्यदेहवारीसंततअछेहवारीसत्य नेहवारी है ॥ कोऊ वनचारीनेनिहारी तौ बतावो वेगि प्यारीसो हमारी है जु ऐसी रूपवारी है ॥ ९१ ॥

तोटक छंद ।

इमि दीन सुबैन जु बोलत हैं॥वनिता बिरही वन डोलत हैं ॥ जबहीं नव फूलनको निरखैं॥तबहीं करि हाय हिए करखैं ॥९२॥ अविलोकि रसाल न मौरनको ॥ पुनि हेरि लता तरु ओरनको॥ रघुलाल विहाल जु होय रहे॥अकुलाय मनोजहि बैन कहे॥९३॥

८ क्षरी कवित्त ।

येरे मैंन नृपति अनीति तून ऐसी कर तोहि निरमोही नेकदाया ना शरम है॥तानैं बाणमोपैकहा मैंतौ हौं वियोगी दीन जारो मम अंग विरहागिनी परम है ॥ रसिकविहारी टुक मो दिशि निहारी धीर धरि दे धनुष यह निंदितकरमहै॥वैसही मरोहौं प्राणप्यारीके विछोह हौं तौ मृतकहि मारवो न वीरको धरमहै ॥ ९४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—यौं कहि कै कछु दूरि चलि, पुनि बोले रघुनाथ ॥
अरे मदन शर पाँचहू, छोड़ि हिये यकसाथ ॥९५॥

घनाक्षरी—कवित्त।

येरे पंचबाण पांचौ बाण भलेमारे मोहिं वीर तुवरोष यहअति उपकारी भो ॥सब दुख छूटोविरहानलकी ज्वालनतेतो शर समेत मम अंग जर छारी भो॥अब विन तीरके न ह्वैहै बरियाई तो पै मैन तू निरायुध निपट दुखकारी भो॥कोऊ भीती मानिहै कहूँ ना रंच तेरी सदा रसिकबिहारी लोक सकल सुखारी भो ॥ ९६ ॥

सो०-या विधि विरह विहाल, बिलपत हेरत फिरत हैं ॥
तिय विछुरनकी ज्वाल, बढी न नेक सिरात है ॥ ९७ ॥
हेरत हेरत श्याम, बैठ गये मग बीचही ॥
निज मनहीं मन राम, सोचतहैं चित चकितह्वै ॥ ९८ ॥

घनाक्षरी--कवित्त।

आजलों सुनीना कहूँ ऐसी रघुवंश माहिं रसिकबिहारी भई जैसी यह बातहै ॥ ऐसो को जु हेरे रघुवंशिनकी वाम ओर गति भवितव्यते न काहूको बसातहै॥ इतै महि सासुके सँकोचसकुचात अति कुलपति भानु उतै तिनहिं लजातहैं ॥ नीचौ अरु ऊंचो मुख करत न राम याते सौहें दृग दीने बैठे मन अकुलातहैं ॥ ९९ ॥

सो०—येजू राजकुमार, लषण कहो अकुलायकै ॥
आतप तपनि अपार, इतते उठि तरुतर चलिय॥१००॥

भुजंगप्रयात छन्द।

सुनी बंधुकी वाणि राजीवनैना। तबै दीन ह्वै लाल बोले सुबैना ॥
जबै ते सिया प्राणप्यारी बिछोही। तबैतेसबैं देतहैंतापमोही १०१
शशी शीतहै सो घनो अंग जारै। त्रिधापौन सोऊ हियेवज्रमारै॥
घरीहू रहै द्यौसना धीर धारी। कटैहै न मोकोभई रैनिभारी१०२
लखौं नैनमें शूलसे फूल लागैं। करैं शोर पक्षी चहूँदाग दागैं ॥
कहूँ कैसहू रंचना चित्त पागै।छबीली विना प्राणहूँ भारलागैं१०३
कहाँ जाउँ कासो कहौंकाकरौंमैं।महा सोचको सिंधु कैसे तरौंमैं॥
न कोऊकहूं मोहिंएसोलखावै।धरावै हियेधीर प्यारीमिलावै१०४

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—सुनिअधीर राघवकीबानी ❀ समुझाये लछमनगहि पानी॥
तब कछु धीरधारि रघुराई ❀ बोले बहुगलानिउरछाई॥१०५॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कनक कुरंग कहुँ आज लों न देखो सुनो ताके हेत विनहिं विचार उठि धायो मैं । नारिमत आयो खलछलको न ज्ञान लायो निपट दुरायो चेत सकल भुलायो मैं ॥ मोसम न कोऊ बुद्धि-हीन है त्रिलोक माहिं रसिकाविहारी यहदृढ ठहरायो मैं ॥ ऐसी मति मेरो तो नशावतो समस्तकाज याते भई नीकी राज त्यागि वन आयो मैं ॥ १०६ ॥

दोहा—यों रघुवर वरबंधुसे, कहत अनेकन बात ॥
सोच विवश विलपत विकल, सिय खोजत चहुँ जात १०७
मैं इत रघुवर विरहको, कीनो कछू बखान ॥
रामायण नाटक अधिक, देखो सकल सुजान॥१०८॥

अ०। वाल्मीकीये ॥ आरण्यकांडे ॥ सर्ग ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ॥ श्लोक ॥

राक्षसं मृगरूपेण चरंतं कामरूपिणम्॥निहत्य रामो मारीचं तूर्णं पथि न्यवर्तत ॥१॥ त्वरमाणो जगामाथ सीतादर्शनलालसः ॥ शून्यमावसथं दृष्ट्वा बभूवोद्विग्नमानसः ॥२॥यत्नान्मृगयमाणस्तु नाससाद वने प्रियाम्॥शोकरक्तेक्षणः श्रीमानुन्मत्तइव लक्ष्यते॥३॥ वृक्षाद् वृक्षं प्रधावन्स गिरींश्चापि नदीं नदम्॥ बभ्राम विलपन्रामः शोकपंकार्णवप्लुतः॥४॥ककुभःकरभोरूंतांव्यक्तं जानातिमैथिलीम् ॥ लतापल्लवपुष्पाढ्यो भाति ह्येष वनस्पतिः ॥५॥यदि तालत्व-या दृष्टा पक्वतालोपमस्तनी॥कथयस्व वरारोहां कारुण्यं यदि ते मयि॥६॥ किं धावसि प्रिये नूनं दृष्टासि कमलेक्षणे ॥ वृक्षैरा-च्छाद्य चात्मानं किं मां न प्रतिभाषसे ॥७ ॥ पीतकौशेयकेनासि सूचिता वरवर्णिनि॥धावंत्यपि मयादृष्टा तिष्ठ यद्यस्ति सौहृदम्८ इत्येवं विलपन्रामः परिधावन्वनाद्वनम्॥क्वचिदुद्भ्रमते वेगात्क्वचि-द्विभ्रमते बलात् ॥९॥अदृष्ट्वा तत्र वैदेहीं संनिरीक्ष्य च सर्वशः ॥ उवाच रामःप्राकुश्य प्रगृह्य रुचिरौ भुजौ॥१०॥सीतया रहितोहं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वै न हि जीवामि लक्ष्मण॥वृतं शोकेन महता सीताहरणजेनमाम् ॥११॥तन्मामुत्सृज्य हि वने गच्छायोध्यापुरीं शुभाम्॥नत्वहं तां विना सीतां जीवेयं हि कथंचन ॥१२॥ ममद्विधो दुष्कृतकर्मकारी मन्ये द्वितीयोस्ति वसुधरायाम्॥शोकानुशोको हि परंपरायामेव भिन्दन् हृदयं मनश्च ॥१३॥ पूर्वं मया नूनमभीप्सितानि पापानि कर्माण्यसकृत्कृतानि॥तत्रायमद्यापतितो विपाको दुःखेन दुःखं यदहं वसामि ॥१४॥

पुनः॥ हनुमन्नाटके श्लोक।

आलिंगिताऽत्रसरसीरुहकोरकाक्षी पीताधरेति मधुरो विधुमंडलस्य॥रंगावतारमकरं विमर्दितानिपुष्पाण्यमूनि दयिते क्वगतेत्यरोदीत्॥॥१५॥ हा जानकि प्रचलितोत्पलपद्मनेत्रे हा मे मनःकमलकाननराजहंसि॥एष प्रिये तव वियोगजवह्निदग्धो दीनं प्रयामि भवतीं प्रविलोकयामि ॥१६॥ इत्यादि ॥

इति श्री० रा० र० व० वि० रघुनंदनविलाप-
वर्णनो नाम तृतीयो विभागः ॥ ३ ॥

दोहा—कहत परस्पर वचन बहु, सोच विवश अकुलात ॥
सिय खोजत दुहुँ बंधु चहुँ, विपिन चले मग जात ॥ १ ॥
कछुक दूर चलिकै लखे, कानन पंथ मझार ॥
रुधिर बिंदु जहँ तहँ परे, अरु विनशित द्रुमडार ॥ २
तिहि आगे भूतल परो, रथ खंडित धनुबान ॥
अरु निश्चर पद चिह्न महि, देखत हिय अकुलान ॥ ३ ॥
तिहि विलोकि विलपायकै, कही लषण सों राम ॥
ह्वै निश्चर सिय हेतु जनु, कियो इहां संग्राम ॥ ४ ॥
यौं सोचत कछु और चलि, लखो गृद्ध मग बीच ॥
तिहि विलोकि रघुवर कही, सिय लीनी यहि नीच॥ ५ ॥
है निश्चर यह सिय भखी, गृद्ध रूप धरिलीन ॥
क्रोध सोच वश बंधु दुहुँ, धनुष बान कर लीन ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-निकटजाय अविलोकोताही ❀ तब जानो जटायु यहआही॥
धाय राम तिहि अंक लगायो ❀ भये विकलकछुवचननआयो७॥
पुनि बूझी रघुवर तिहि बाता ❀ सो कछुकही विकल विलपाता॥
सकल कथा वर्णन नहिं पायो ❀ तौ लग प्राण कंठमधि आयो८॥
तिहि रघुवीर अंक गहि राखो ❀ सो खग राम राम इमि भाषो॥
हेरिवदन दिशि दृग भरि आँसू ❀ गृद्धराज त्याजो तनु आसू ९॥
गीधमरन लखि सानुज रामा ❀ कियो विलापअतिहितिहिठामा॥
पुनिनिजकरते समयसमाना ❀ रामकृत्य कियसहितविधाना१०
तहँते चले बहुरि दुहुँ भाई ❀ दृग भरि करत जटायु बड़ाई॥
खोजत फिरत सियहिचहुँ ओरा ❀ इकनिश्चरीमिलीवनघोरा ११॥
उदर दीह कुच जंघन छाये ❀ दंत कराल केशविखराये॥
कलुष अंग लीने मृगव्याला ❀ भक्षण करत निशंकनिहाला१२
सो निशाचरी लषणहि देखी ❀ भई हृदय आनंद विशेषी॥
धाय आय कर गहि लपटानी ❀ बोली मदनविवशह्वैवानी॥१३॥
है अजामुखी नाम अनूपा ❀ मोसम तिय न कहूँ सुठिरूपा॥
चलौ इते घनविपिनअपारा ❀ तहँ हम तुममिलिकरहिंविहारा १४
सुनत वचन लछमन तिहि डाटी ❀ दुहुँ कुचश्रवणनासिकाकाटी॥
सो कुरूप ह्वै अतिहि डरानी ❀ घोर शोर करिविकलपरानी १५
चले बंधु दुहुँ पुनि निरभीता ❀ विपिन चहूँ दिशि खोजतसीता॥
लखो फेरि इकनिश्चरभारी ❀ निपट कराल रूप भयकारी॥१६॥
शीश विहीन ग्रीव तनु कारो ❀ आनन उदर थूल वपुभारो॥
विशिख दंत शोणित लपटाना ❀ दुहुँभुजइक योजन परमाना १७
सो कबंध निज भुजा पसारी ❀ गहि लीने दोऊ धनुधारी॥
भये विवश परि निश्चर हाथा ❀ दुख बहुलहोलषण रघुनाथा१८
पुनि औसर लखि राजकुमारा ❀ वेगि कृपानतान खर धारा॥
दक्षिण भुजाराम तिहिकाटी ❀ वाम बाहु लछमन द्रुत छाटी१९॥
भयो विकल जब तब अकुलाई ❀ बूझी सुनि जाने रघुराई॥
पुनिनृपसुत पूछो तिहि हाला ❀ कहो कबंध समस्तउताला २०॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निश्चर हो मैं सुभग अनूपा ❀ मुनिन सताऊँ धारि कुरूपा ॥
तब अस्थूलशिराऋषि कोही ❀ दीनी घोर शाप यह मोही २१॥
खल तुव यह वपु रहै सदाई ❀ सुनि हों गिरौ चरण पर धाई ॥
तब मुनिकही राम वनऐहैं ❀ दुहुँ भुज काटि दाह तुहि दैहैं२२॥
शुद्ध रूप ताही छिन ह्वैहै ❀ रघुवर कृपा परम सुख पैहै ॥
सुनि सुनि वचन हीय हरषाना ❀ पुनि मैं विपिनमहातप ठाना२३
सो लखि विधि प्रसन्न अति भयऊ ❀ दीर्घआयुहोयह वरदयऊ
तब निशंक हौं सुरपति धामा ❀ कीनो जाय भूरि संग्रामा॥२४॥
कियो इंद्र तब वज्र प्रहारा ❀ गयो शीश मो उदर मझारा ॥
सो गति लखिहौं भये दुखारी ❀ बहु सुरेशप्रतिविनय उचारी२५॥

दोहा—नाथ मोहिं अब आजते, जिहि विधि मिलै अहार॥
कृपा लाय हिय देवपति, कीजे सो उपचार ॥ २६ ॥
तब सुरेश करिकै दया, दियो मोहिं वरदान ॥
लंबित हो तुव भुज दुहूँ, योजन येक प्रमाण ॥ २७ ॥
पुनि तुव दुहुँ भुज काटि हैं, राम लषण वन माहिं ॥
दिव्य देह धरि अमर पुर, प्रमुदित सुखीरहाहिं ॥ २८ ॥
भयो सिद्धिवर इंद्रको, तबते विपिन रहाउँ ॥
करि केहरि मृग मनुष हौं, नितप्रति धरिधरि खाउँ॥२९॥
सुनि कबंधवच बंधु दुहुँ, सिय सुधि पूछी ताहि ॥
सो भाषी मुहिं शाप वश, अबहिं ज्ञान कछु नाहिं ॥३०॥
सर रचि मो तनु दाहिये, तब सुदिव्य तनु पाय ॥
यथा शक्ति वर्णन करौं, सीता मिलन उपाय ॥ ३१ ॥
सुनत बंधु दुहुँ सर रचो, तामधि तिहि बैठार ॥
दाह कियो प्रगटो सु तब, सुभग शुद्ध वपु धार ॥ ३२ ॥
कही सु तब हे गजसुत, कपि सुकंठ ढिग जाय ॥
करौ मिताई सो तुमैं, देहै सीय मिलाय ॥ ३३ ॥
पुनि मतंग वन वसति इक, नारी शबरी नाम ॥
शुद्ध भक्त तुव वृद्ध तिहि, दरश दीजियो राम ॥ ३४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाम ठाम गिरि विपिन मग, रामहि सकल बताय ॥
गयो कबंध सुदेवपुर, दुहुँ बंधुन शिरनाय ॥ ३५ ॥

हारिगीतिका छंद।

इमि सुगतिकरि सुकबंधकी दुहुँ बंधु पुनि तहँते चले ॥
बूझत विलोकत सियहि खोजत कर सजे धनु शर भले ॥
इत राम शबरी मिलन आतुर जात हिय उमगात है ॥
अनुरागिनी रघुचंद दरशनहेत उत हरषात है ॥ ३६ ॥
जब ते सुनी सबरी कि रघुवर चित्रकूटहि छाय हैं ॥
तहँ वास करि सानंद पुनि युत बंधु इहि दिशि आय हैं ॥
तबते सदा उठि प्रातही बहु दूर लौं मग झारही ॥
पुनि धाय छिन छिन जाय उर उमगाय पंथनिहारही॥३७॥
कबहूं सुनिर्तत मगन मन सिय राम गुणगण गायकै ॥
कबहूं दुहूँ दृग मूँदि बैठत श्याम ध्यान लगायकै ॥
कबहूं अनेक विचार करि करि हीय होत हिरास है ॥
कबहूं मुदित मन हँसत शबरी लगी दरशन आश है ॥ ३८ ॥
कबहूँ विचारत राम मेरे भवन किहि विधि आय हैं ॥
जो आय हैं तो भीलनी गुणि मुहिं न पद परसाय हैं ॥
कबहूं कहत मनमाहिं यों रघुवीर परम दयाल हैं ॥
लखि दीन दै हैं दरश मो कहँ सत्य जन प्रणपाल हैं ॥३९॥
कबहूं विपिनबिच जाय बीनत बेर हिय हुलसायकै ॥
तिन चीखि मीठे जानि रघुवर हेत धरत सुखायकै ॥
कबहूं निहोरी सुनिन भाषत नाथ नहिं बिसराइयो ॥
तुवधाम आवैं राम तो मुहिं दूरतें दरशाइयो ॥ ४० ॥
इहि भांति शबरी रहति निशिदिन रामपद अनुरागिनी ॥
तिहि धन्य भक्ति अनन्य पूरन शुद्धतिय बडभागिनी ॥
जिय जानि प्रीति प्रतीति सांची रामहिय हुलसायकै ।
सौमित्र संयुत दरशदीनो ताहि बेगहि आयकै ॥ ४१ ॥
सो निरखि रामहि धाय उर उमगायकै चरणनपरी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आनंद जल भरिनैन गदगद वैन वर विनती करी ॥
सिय नाथ शबरी हाथ गहि वेगै उठाई धीरते ॥
सोगहे लछमन पाँय धोये नेह युत दृग नीरते ॥ ४२ ॥
पुनि लाय शुचितृणसाथरी सुबिछाय बहुसनमानिकै॥
हुलसाय वेगहि धाय जाय सुबेर दीने आनिकै ॥
रघुराय नेह बढाय लै सुख पाय सो फल खात हैं ॥
तिहि बार बार सराहि बहु विधि मुदित हिय बतरातहैं॥४३॥

घनाक्षरी कवित्त।

विविध विधानके अनेक पकावन जेत होतहैंजहानमेरीजानसब सीठेहैं॥रसिकविहारी फल सरस रसालआदि तेऊ यहस्वाद पाय सकल उवीठे हैं॥कंदमूलअधिक अतुल रुचिकारी सोऊ एकहू न इनकीसमान मोहिंदीठेहैं॥रंचहूनसीठे नाउवीठेयोंनदीठेकहूं लषण कहौतो सत्य कैसेबेर मीठेहैं॥४४॥ब्रह्मकेउपासी तपराशीवनवासी वर विपुल मुनीशनके आश्रम सिधायो मैं ॥ कीने सनमान तिन सहित विधान तऊ काहू ठौर कबहुँ न पेट भरि खायो मैं॥अमृत समान शबरीके इन बेरनमें रसिकविहारी मन भायो स्वाद पायो मैं॥अवध विहाय वन आयो जब ते हों बंधु तबते विचारौ सत्य आजही अघायो मैं ॥ ४५ ॥

दोहा—शबरी सुनि रघुवर वचन, हिय फूली न समाय ॥
धाय धायकै छिनहि छिन, देत मधुर फल लाय ॥४६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

बेर बेर बेरलैं सराहैंबेर बेर बहु रसिकविहारी देतबंधुकहँ फेर फेर॥चाखि चाखि भाषैं यह बाहुते महान मीठोलेहु तौलषणयौं बखानतहैंहेरहेर॥बेर बेर देवै बेर शबरीसु बेर बेर तोऊ रघुवीर बेर बेर तिहि टेर टेर॥बेरजनि लावो बेर बेर जनिलावो बेरबेरजनि लावो बेर लावो कहैं बेर बेर ॥ ४७ ॥

सो०—इहि विधि रघुकुलचंद,अशन कियो फल बन्धुयुत॥
शबरी प्रति सानंद,बोले सत्यसनेह भरि ॥ ४८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी कवित्त ।

सदन सिधाऊँ पाऊँ व्यंजन अनेक तऊ याकेसम एकहूपदारथ न तूलैगो॥करि करि प्यार मातु अशन करैहैं जब मेरेहीय तबहिं सनेह यह शूलैगो॥ आजको अपार सुख कहँलो बखानोसबछिन छिन नित प्रति चित्त अति फूलैगो॥शबरीतिहारे इनबेरनकोस्वाद मोहिं रसिकविहारी कहूं कबहूं न भूलैगो ॥ ४९ ॥

दोहा—यौंहीं परम प्रमोद भरि, वचन कहे बहु राम ॥
सुनि शबरी मन मुदित ह्वै, विनय करी अभिराम॥ ५० ॥

चौ०—ताही छिन सब मुनि सुधिपाई ❀ लषणसहितआयेरघुराई॥
शबरीके आश्रम पग धारे ❀ यह सुनि लजितभयेऋषि सारे॥
भक्तिअधीन राम कहँ जानी ❀ आये तहँ मुनिवर विज्ञानी ॥
मिले यथोचित लछमन रामा ❀ बैठे सबशबरीके धामा ॥५२॥
राम लषण अरु मुनि समुदाई ❀ करत परस्पर विनय बडाई ॥
पुनि ऋषिवर बोले धनुधारी ❀ हम इत जल बिन रहत दुखारी
ह्वै सर सुभग भरो गंभीरा ❀ पै नहिंग्रहण योगतिहि नीरा ॥
रुधिर वरन वन कीट अपारा ❀ बहुकुगंधनहिं जायनिहारा५४
सो रघुवर तुव पद परसावै ❀ तौ वह नीर शुद्ध ह्वै जावै ॥
सुनि बूझी सियनाथ प्रवीना ❀ किहि कारण जलभयोमलीना ॥
तब मुनि कही हेतु यह आई ❀ शबरी न्हातरही निशिजाई ॥
औचक एक समै लाखेलीनी ❀ ताहीदिवसबरजियहिदीनी५६॥
पै सुनीर इन बहु दिन परसो ❀ याते मलिन भयो सर सरसो ॥
अब तुव चरण लागिशुचिहोवै ❀ हमसबको अपारदुख खोवै ५७
सुनि रघुनाथ कही मृदुवानी ❀ हौंसमस्त मुनिवर विज्ञानी ॥
परम शुद्ध शबरी कहँ जानौ ❀ याते कछु दुरभावनमानौ५८॥
शबरी अबहिं संग तुव जावै ❀ सर नीरहि निजपद परसावै ॥
होय तड़ागशुद्ध इहिकाला ❀ सकल अमलजल लेहु उताला५९
यौं कहिं पुनिबोले रघुवीरा ❀ सुनहु सकल मुनिगणमतिधीरा॥
हौं रंचह छल छिद्र न राखौं ❀ जोमुहिं रुचै सत्यसो भाखौं ६०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–योग याग जप त्याग तप, नेम धर्म व्रत दान ॥
इन सबहीते अधिक मुहि, सत्यसनेह सुहान ॥ ६१ ॥
ऊँच नीच कोऊ करै, सत्य प्रीति मो माहिं ॥
होय अधमते अधमपै, तिहि वश रहौं सदाहिं !! ६२ ॥
सुख दुख संपति विपतिमें, जिहि दृढ ममविश्वास ॥
हौं ताकी दुहुँ लोक मधि, पूजौं सिगरी आस ॥ ६३ ॥
जो मेरो जनहोइके, करै और की आस ॥
ताको नामहु सुनतही, मोजिय होत उदास ॥ ६४ ॥
सोरठा–इमि अनेक वरबैन,रघुवरके सुनि सुनि सकल॥
भरे प्रेम जल नैन, भयो महा आनंद उर ॥६५॥
ऋषि, समस्त मतिमान, विविध भाँति अस्तुतिकरी ॥
जै जै कृपानिधान, अधम उधारण धर्म धर ॥ ६६ ॥
चौ०–पुनि मुनिरामरजायसुपाई ❀ शबरिहि सरतटगयेलिवाई॥
तहँ बोल समस्त ऋषि ज्ञानी ❀ परसावोपदसुनिसकुचानी६७
पुनि शबरी रामहि शिर नायो ❀ सरजल माहिं स्वपद परसायो॥
भयो शुद्ध पगलगत सुनीरा ❀ निरखत रहेचकितमुनिधीरा ६८
सब ऋषि धन्यवादतिहि दीना ❀ आये रघुवर निकट प्रवीना ॥
तिनहियथोचित मिलि दुहुँ भाई ❀ बिदाकिये आनंदबढ़ाई॥६९॥
पुनि शबरिहि बूझी रघुराई ❀ तुम कछु जनकसुता सुधि पाई॥
सुनि बोली सुकंठ ढिगजावो ❀ तिहिसहायतेसीतहि पावो७०
तब रघुनाथ कहीतिहि पाहैं ❀ तव गुरु थल हम देखनचाहैं ॥
सुनि शबरी दुहुँ नृप सुत संगा ❀ चलिदरशायोसहित उमंगा ७१
विपिन विचित्र लता द्रुमनाना ❀ परमरम्य नहिंजाय बखाना ॥
विमल प्रकाश रैनि दिन रहई ❀ त्रिविधसमीरसुखदनितबहई७२
सत्यसिंधु जलमय सरसोहै ❀ जिहि लखि मानसरोवर मोहै ॥
दल फलफूलसकल सब काला ❀ रहैं एकढिगकेहरिव्याला७३॥
लखि मतंगवन केर प्रभावा ❀ रामलषणहिय बहु सुख पावा॥
पुनि शबरिहि बोले रघुराई ❀ जाहु धामअबहियहुलसाई७४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब शबरी रघुवर पगलागी ❀ करि बहुविनय भक्ति दृढ़ मांगी ॥
शुद्ध प्रीतिलखि कृपानिधाना ❀ दियोयथारुचितिहिवरदाना७५
पुनि शबरी सर विरचि उताला ❀ दही देह योगानलज्वाला॥
दिव्यरूप लहि बैठि विमाना ❀ मुदितकियो सुरधामपयाना७६

दोहा–उत शबरी धरि दिव्य तन, मुदित गई सुरधाम ।
इत सुग्रीवहि मिलनहित,चले बंधु युत राम ॥ ७७ ॥
सीतहि खोजत बंधु दुहुँ, चहुँ गिरि विपिन मझार ॥
आये पंपासर निकट, हेरी छटा अपार ॥ ७८ ॥

इति श्री० रा० र० वि०वि०वनअटन वर्णनोनाम चतुर्थोविभागः ॥ ४ ॥

दोहा–पंपासर शोभित विशद,विमल नीर गंभीर ।
सुभग विपिन दरशत चहूँ,सरसत त्रिविध समीर ॥ १ ॥
द्रुम वल्ली दल फूल फल,विविध अनूपम रंग ।
छाय रहो ऋतुराज चहुँ,कूजत विपुल विहंग ॥ २ ॥
लखि वसंतऋतु राम अति, विलपत प्रिया विहीन ।
ह्वै अधीर गहि बंधु कर, कहत वचन अति दीन ॥ ३ ॥
जनकसुतहिखोजत लषण, बीति गये द्वमास ।
कछु न मिली सुधि अजहुलों,अबजिय होत निराश॥४॥
हाय प्राणप्यारी विना,अब किमि धारौं धीर ।
मिलि ऋतुपति रतिपति हिये,मारत तकि तकि तीर ॥५॥
अविलोकौ किहि भांति चहुँ, छाय रहो ऋतुराज ।
फिरैं मत्त मधुपान करि, प्रमुदित मधुप समाज ॥ ६ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

झूमैंहैंचहूंघा गजराजसेरसालभूमैंघूमैंहैं समीरतेजतरलतुरंगज्यौं॥ किंशुक गुलाब कचनार औ अनारनके प्यादे भांति भांति लसैं सहित उमंग त्यौं ॥छाई नव वल्ली छटा छहररही है घनीतेई रथ राजैं मोर भ्रमत अभंग क्यौं॥रसिकविहारी साज साज ऋतुराज आयो छायो वन बाग सेना लीने चतुरंग यौं ॥७॥कहूँ भौंर गुंजैं मद सरस सुहाये सुर कोकिला अलाप कहूँ मधुर उचारैहैं॥लह लहे पल्लव मृदुलछबि छावैं कहूं महकप्रसूननकीकहूंसुख सारैहैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहूं चटकाहट गुलाबनकी लोनी प्रात कहूं शर मैन नर नारिनको मारैं हैं। रसिकबिहारी साज नागरी सिंगारैं कहूँ अजब अनोखी ये वसंतकी बहारैं हैं ॥ ८ ॥ वेलिन वसंत ज्यौं नवेलिन वसंत वन बागन वसंत रंग रागन वसंत है ॥ कुंजन वसंत दिज पुंजन वसंत अलि गुंजन वसंत चहुँ ओरन वसंत है ॥ छैलन वसंत अरु फैलन वसंत संग सैलन वसंत बहु गैलन वसंत है ॥ रसिकबिहारी नैन सैननमें बैननमें जितै अविलोकौ तितै वरसै वसंत है ॥ ९ ॥ निर्तत मयूर महा मुदित मयूरी मिलि मत्त अलि डोलैं लिये अलिनीलसंत सो। रसिकविहारी कीर सारिका सुकोकिलादि करत कलोल केलि कूजत हसंतसो। निज निज नारी संग अपर विहारी चहूँ खेद जड चेतनको सकल न संत सो। संत सम सुखद वसंत सबहीको यह प्यारी बिन मोको भयो दुखद असंतसो १०॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये ॥ किष्किन्धाकांडे ॥ सर्ग ॥ १ ॥ श्लोक।

अयं वसंतः सौमित्रे नानाविहगनादितः ॥ सीतया विप्रहीनस्य शोकसंदीपनो मम ॥ १ ॥ संतापयति सौमित्रे क्रूरश्चैत्रवनानिलः॥ अमी मयूराः शोभंते प्रनृत्यंतस्ततस्ततः ॥ २ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—इहि बिधि बहु वर्णन करत, लखि बसंत चहुँ ओर ॥
प्राण प्रिया बिन बिकल अति, विलपत राजकिशोर॥ ११॥
इत उत हेरत लषण युत, ऋष्यमूक गिरि पास ॥
आये फिरत मतंग बन, सिय बिन निपट हिरास ॥१२॥
तहँ गिरिपर कपि पंचये, हनूमान सुग्रीव ॥
तार नील नल रहत नित, परम भीम बलसीव ॥ १३ ॥

चौ०—जब सुग्रीव लखे दुहुँ बीरा ❀ तब हनुमंतहि कही अधीरा ॥
भेद लेहु बेगै तुम जाई ❀ को किहि हेत फिरै इहि ठाई ॥ १४ ॥
तब हनुमान विप्र तनु धारी ❀ आय जैति बर गिरा उचारी ॥
पुनिकरजोरिविनययुतरीतीं ❀ बुझी कपिसबकथा सप्रीति॥ १५॥
सुनिलछमनगुणज्ञाननिधाना ❀ निज चरित्रसब कियो बखाना॥
तब हनुमंत स्वामी पहिचाने ❀ पुलकिसप्रेम चरणलपटाने ॥१६॥
पुनि लछमन बूझो कपि हाला ❀ कहो पवनसुत सकल उताला ॥
राम बंधुसुनि अति हरषाने ❀ बोले बहुरि सत्य हितमाने॥१७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी कवित्त।

जाकि इंद्र वरुण कुबेर कृपा चाहैं सदा जाके नारदादि ऋषि सेवत चरणहैं ॥ परम प्रचंड खल खंडिवे उदंड जाके दोऊ भुजदंड दिन दुखके हरणहैं ॥ चक्रवै नरेश अवधेशके किशोर वीर संतत त्रिलोकहूके पालन करणहैं ॥ धीर धनुधारी तिय विरह दुखारी राम रसिकबिहारी सो सुकंठके शरणहैं ॥ १८ ॥

प्र० ॥ किष्किन्धाकांडे ॥ सर्ग ४ ॥ श्लोक ॥

यस्य प्रसादे सततं प्रसीदेयुरिमाः प्रजाः ॥ स रामो वानरेंद्रस्य प्रसादमभिकांक्षते ॥ ३ ॥ सर्वलोकस्य धर्मात्मा शरण्यः शरणं पुरा ॥ गुरुर्मे राघवःसोयं सुग्रीवं शरणं गतः॥ ४ ॥ इत्यादि ॥

चौ०-सुनिअंजनिसुतविनतीकीनी ❀ कहिसुकंठगतिधीरजदीनी ॥
पुनिकपिरूपधारिहनुमाना ❀ लैनिजकंधदोउबलवाना ॥ १९ ॥
ऋष्यमूक गिरि पर द्रुत आये ❀ प्रमुदित हाल समस्त जनाये ॥
सुनि सुग्रीव धाय ढिग जाई ❀ परे चरण आनंद अघाई॥ २० ॥
तब रघुवर उठि अंक लगाये ❀ नीति प्रीतिमय बचन सुनाये ॥
सुनि सुग्रीव परमसुखमाना ❀ निजनिजगति दुहुँकीनबखाना २१

दोहा-पुनि रघुवर सुग्रीव दुहुँ, शिषि साखी बिच दीन ॥
प्रीति निरंतर परस्पर, शुद्ध सत्य दृढ कीन ॥२२॥
राम कही हति वालिहौं,तुमैं करौं कपिराय ॥
मुदित कही सुग्रीव मैं,दैहौं सियहि मिलाय ॥ २३ ॥
पुनि बैठे इक ठौर मिलि, गहे परस्पर हाथ ॥
वर्णत निज निज शोक गति, दुहु सुकंठ रघुनाथ ॥२४॥

चौ०-ताछिन सुग्रीवहिसुधिआई ❀ बोलेअति आतुर उमगाई ॥
शीत काल आतप सुखपाई ❀ हौं कपियुत बैठी रघुराई॥२५॥
ताही छिन नभते इहि ठाई ❀ भूषण गिरे अचानक आई ॥
को जानै किहिके सो आहीं ❀ लै धरि दये कंदरा माहीं ॥२६॥
वर भूषण अमोल सुठि रूपा ❀ कंचन मय मणि जटितअनूपा ॥
पै अब हौं सुसत्य अनुमानी ❀ हैं ध्रुव जनक सुताके जानी॥२७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि सुग्रीव वचन रघुराई ❀ बोले सपदि प्रेम उमगाई ॥
हायसखा कित वेगहि लावो ❀ सो प्रियभूषणमोहिंदिखावो २८
सुनि सुकंठ अति आतुर जाई ❀ रामहिं दिये सुभूषण लाई ॥
उठि रघुवीरहुलसि हियलीने ❀ हैं निज प्राणप्रियाके चीने॥२९

घनाक्षरी कवित्त।

भूषण सु लेतही पिछाने निज लाडिलीके हिय हुलसायो अति रसिकबिहारीको॥करि करि प्यार फेरिफेरितिहि हेरैं श्याम कलित केयूर मंजु रूप उजियारीको ॥ चूमि चूमि कुंडल निहारैंनेहऊमि ऊमि बार बार धारैं कर जानि सुकुमारीको ॥ भरि भरिनैन बैन बोलैं उर लाय लाय हाय यह नूपुर हमारी प्राणप्यारीको ॥३०॥

दोहा—यौं सिय भूषण हेरिकै, प्रेम विवश रघुवीर ॥
करत विलाप विहाल अति, तन मन भयो अधीर ॥३१॥
पुनि बोले वर बंधुसे, राघव अति विलपाय ॥
भूषण प्राण अधारके, लखौ लषण ये आय ॥ ३२ ॥
रामानुज कर लै निरखि,भरं नीर दुहुँ नैन ॥
गदगद कंठ सनेह मय,कहै सत्य वर बैन ॥ ३३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

अमल अमोल गोल कुंडल प्रकाशमान ऐसो दरशात कोऊ राजभामिनीको है ॥ तैसही अमंद भुजबंद चंद ते दुचंद दीपांति सु दिव्य दुतिहारी दामिनीको है ॥ परम पुनीत पद भूषण अनूप चारु पूजनीय संतत त्रिलोक नामिनीको है ॥ रसिकबिहारी और नाहिं पहिचानैं एक जानैं यह नूपुर हमारी स्वामिनीको है ॥ ३४ ॥

चौ०—सुनि सुबंधुवाणी रघुराई ❀ लै उसाँस बोले विलपाई ॥
हैं तिहुँ भूषण प्राणप्रियाके ❀ पाये आज अधार जियाके ॥३५॥
यौं कहि पुनि सुकंठ प्रति भाखे ❀ सो भूषण लगाय उर राखे ॥
कहौ सखाको हरी जानकी ❀ कितलैगयो अधार प्राणकी॥३६॥
सुनि सुग्रीव कही मृदुवानी ❀ को कहँको कितगो नहिं जानी ॥
पै हिय धीर धरौ रघुराई ❀ हौं लैहौं सिय खोजलगाई ॥ ३७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौं कहि पुनि बहु धीर धराई ❀ राम सुकंठ लये हिय लाई ॥
बोले वचन नेह दुख साने ❀ विरही हम तुम दोउमिलाने ३८
बहुरि कही रघुवर सो भाषो ❀ किहि कारण वाली इमिमाषो॥
सुनि सुकंठ बोले करजोरी ❀ राजकुँवर कछु मोरिन खोरी ३९

सो०-मायावी जिहि नाम, असुर जु आयो इक समै ॥
वालि कियो संग्राम, भ्रात संग हौंहू रहो ॥ ४० ॥
पुनि सो असुर पराय, जाय धसो महि विवर महँ ॥
वालि क्रोधवश धाय, तिहि पाछे प्रविशो तहाँ ॥ ४१ ॥
मोहिं राखि बिल द्वार, भ्रात कही यक पक्षलों ॥
नहिं आऊं तिहिमार, तौ लखियो हौं हत भयो ॥ ४२ ॥
मैं तिहि आयसुधार, तितहि रहों यक मास लग ॥
शोणित तबै अपार, बहो नदी सम विवरतें ॥ ४३ ॥
भ्रात वचन हौं पाय, जानो वाली हत भयो ॥
शिला विवर मुख लाय, आयो भय दुख शोकवश॥४४॥
तब पुर लखि पतिहीन, सब मंत्री हित बंधु मिलि ॥
राज तिलक मुहिं कीन, करन लगो नृपकाज सब॥४५॥
कछु दिन गये कपीश, ताहि मारि आयो सदन ॥
करी मोहिं लखि रीस, कहि कटु वच ताडन कियो॥४६॥
हरि लीनी ममनारि, एक बसन दै मोहिंसो ॥
गृहते दियो निकारि, प्राणघात लाई तऊ ॥ ४७ ॥
तिहि भयते चहुँ ओर, विकल फिरो बहु वर्षलों ॥
इहां शाप अति घोर, याते रहौं निशंक इत ॥ ४८ ॥
सुनि सुकंठके बैन, दुखित भये जल नैन भरि ॥
बोले करुणाऐन, वेगि वालि हौं मारिहौं ॥ ४९ ॥

चौ०-राम वचन सुनिकै सुग्रीवा ❀ कही नाथ वाली बलसीवा॥
अकथनीय ताको पुरुषारथ ❀ सुनो सकल मैं कहौं यथारथ ५०
रहै द्वैघडीयामिनि जबहीं ❀ गमन करै वाली नित तबहीं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिनकर उदै होन नहिं पावैं ❀ चहूं सिंधु संध्या करिआवैं ॥५१॥
कबहूँ कीश केलि जिय लावै ❀ तब गहि गिरि नभओरचलावै ॥
पुनिकंदुकसमसोकरझेलै ❀ इहिविधि अमित बारवनखेलै ॥५२॥

दोहा—अपर वालि बल सुनिय प्रभु, दैत्य दुंदुभीनाम ॥
जिहि सहस्रगजमत्त बल, गिरि समान वपु राम ॥ ५३ ॥
असुर मत्त सो युद्ध हित, गयो सिंधुके पास ॥
ताहि विलोकि नदीशके, उर छाई बहुत्रास ॥ ५४ ॥
तब पयोधि सविनय कही, हम तुव लायक नाहिं ॥
बली हिमंचल करहिंगे, युद्ध जाहु तिन पाहिं ॥ ५५ ॥
सुनिदुंदुभीहिमगिरिनिकट, आयो अतिहि उताल ॥
गौरि पिता तिहि देखिकै, भये निपट बेहाल ॥५६॥
तब कर जोरि अधीन ह्वै, बोले वचन गिरीश ॥
तुमते भिरै सु एकहै, वाली बली कपीश ॥ ५७ ॥
सुनत दुंदुभी महिष वपु, गिरि समान विकराल ॥
किष्किधामधि घोररव, कीनो आय उताल ॥ ५८ ॥
सो सुनि वाली क्रोध युत, धाय कीन बहु युद्ध ॥
अमित काल लग परस्पर, रहे दुहूँ रण रुद्ध ॥५९॥
पुनि कपीश तिहि वध कियो, गहि महि पटक पछार ॥
दुंदुभिमुख दृग श्रवणते, चली रुधिरकी धार ॥ ६० ॥
पुनि वाली कर तौलि तिहि, वपु फेको रिसठान ॥
सो मतंग आश्रम परो, योजन एक प्रमान ॥ ६१॥
रुधिर बिंदु बहु मुनि निकट, परे भयोअतिशोर ॥
धाये चौंकि मतंगवन, लखो महिष मृत घोर ॥ ६२ ॥
गिरि समान तनु गिरतहीं, भोबहुविपिनविनाश ।
कियो क्रोध सो देखिकै, मुनि मतंग तपराश ॥ ६३ ॥
त्रिकालज्ञ ऋषि ध्यान धरि, लखोवालिकृतहाल ॥
तब कपीशहित क्रोधवश, दीनो शाप कराल ॥ ६४ ॥
मम आश्रम वाली कबहुँ, आवै योजन माहिं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सहस खंड तिहि शीशके,तौ तत्क्षण ह्वै जाहिं ॥६५॥
तातै वालि न आवही,इत इक योजन माहिं ॥
याते हौं इहि ठौर अति;निर्भय रहो सदाहिं ॥ ६६ ॥
चौ०-यौं सुकंठ वाली बलगाथा ❀ कहतसुनतलछमनरघुनाथा ॥
सहजहिडोलतविपिनमँझारा ❀ पंचकीशदुहुँराजकुमारा ॥ ६७ ॥
सोदुंदुभी अस्थि अति भारी ❀ गिरिसमनिरखिलषणधनुधारी ॥
वामचरण ते सहज उठायो ❀ द्वैशत धनुष प्रमाण बहायो॥६८॥
पुनि सुग्रीव कही रघुवीरा ❀ कपिपति महाबली रणधीरा ॥
याते मुहिं अपनी कदराई ❀ तिहिं वध सहजनपरतजनाई ॥६९॥
दोहा-धनुष प्रमाण कहावही, अर्धअधिक त्रैहस्त ॥
सो द्वै शत धनु अस्थि यह,फेंको लषण समस्त ॥ ७० ॥
पैविलोकिये राजसुत,वाली बल है भूरि ॥
द्वै शतधनुते होत है,यक योजन बहु दूरि ॥ ७१ ॥
चौ०-सुनि सुग्रीव वचन रघुराई ❀ कहि बहु वीर रीतिसमुझाई ॥
बहुरिसुहियविचारठहराई ❀ तिनप्रतीतहितसहजसिधाई ॥ ७२॥
सो दुंदुभि वपु अतुलित भारी ❀ रघुवर पद अंगुष्ठ निज धारी ॥
सहजपँवारिदियोबलवाना ❀ परोसुदशयोजनपरमाना ॥ ७३ ॥
दोहा-सो लखि कही सुकंठ पुनि, बल न कछू विलगान ॥
तब वाली दुहुँ मध्यको,अधिक सु न्यूनसमान ॥ ७४ ॥
सहित रुधिर त्वच मांस गरु,वाली फेको ताहि ॥
शुष्कभयो बहु दिवस हरु,अब मेलो प्रभु याहि ॥ ७५ ॥
चौ०-सुनिरघुनाथकहीमुसक्याई ❀ तुवउरजिमिप्रतीतिठहराई ॥
वरणौबेगिसुहमदरशावैं ❀ जिहिलखिसबनिश्चयउरलावैं ॥७६॥
तब सुग्रीव कही रघुलाला ❀ शाल सात ये विटप विशाला ॥
गहि वाली झकझोरतजबहीं ❀ पत्र हीन होवैं तरु तबहीं ॥ ७७ ॥
सो प्रभु यकशरते तरुएका ❀ पत्र हीन कीजे धरि टेका ॥
तबतवबलवालीसमजानौं ❀ तिहिवधकीप्रतीतउरआनौं ॥ ७८ ॥
सुनि सुग्रीव वचन बलवाना ❀ सातहु तरु वेधे इक बाना ॥
पत्री पत्र हीन करि पत्री ❀ प्रविशो तूण प्रवेशि धरत्री ॥ ७९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो प्रभाव लखिकै सुग्रीवा ❀ जानी दृढ रघुवर बलसींवा ॥
गहि पद कीनी विनय सप्रीती ❀ नाथ मोहिं अब भै परतीती॥८०॥
दोहा—इहि विधि करि बहु चरित पुनि, आप कियो विश्राम ॥
सह सुकंठ रघुवर लखण, अपर कीश बलधाम ॥ ८१ ॥

इति श्री० रा० र० वि०वि० श्रीरामसुग्रीवमिलन-
वर्णनो नाम पंचमो विभागः ॥ ५ ॥

दोहा-पंपासरते सरस शुचि, लाये लषण प्रवीन ॥
कंद मूल फल फूल मधु, स्वादित खग मृग मीन ॥ १ ॥
करि कबंधवाणी सुरति, अशन कियो हरषाय ॥
खग मीनन को स्वाद बहु, वर्णत हैं रघुराय ॥ २ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये । आरण्यकांडे ॥ सर्ग ७२ ॥ श्लोक ।

घृतपिंडोपमान् स्थूलान्ताम्द्विजान् भक्षयिष्यथ॥रोहितांश्चक्र-तुंडांश्च नलमीनांश्च राघव ॥१॥ पंपायामिषुभिर्मत्स्यांस्तत्र राम वरान्हतान् ॥ निस्त्वक्पक्षानयस्तप्तानकृशाऽनेककंटकान् ॥ २ ॥ तव भक्त्या समायुक्तो लक्ष्मणः संप्रदास्यति ॥ भृशं तान्खादतो मत्स्यान्पंपायाःपुष्पसंचये ॥ ३ ॥इत्यादि ॥

दोवई छन्द ।

यौं प्रमुदित कछु दिवस रहे पुनि कही सबहि श्रीरामा ॥
करिहौं वेगि वालिवध गमनौ सजि किष्किधाग्रामा ॥
दै आज्ञा गहि बाण शरासन चले सबंधु उताला ॥
संग सुकंठ आदि कपि पाँचहूँ हर्षित बलीविशाला ॥
जाय नगरसन्निध सब बनमधि गहि तरु ओट विराजे ॥ ३॥
पाय जाय सुकंठ आय तुर पुरीद्वार बहु गाजे ॥
सुनि वाली क्रोधित ह्वै धायो भिरे सबल सुग्रीवा ॥
दोऊ भ्रात उद्धयुद्ध अति दुहूँ अमित बलसींवा ॥ ४ ॥
इत उत लखत सुकंठ सुयुद्धत तब करि क्रोध हरीशा ॥
हने अमित तलमुष्टि वज्रसम बंधुहि धरि भुज शीशा ॥
ह्वै विहाल सुग्रीव पराने ऋष्यमूक वनलीना ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वालि न गयो शापभय तहँते भवन गवन द्रुत कीना ॥५॥
जाय सुकंठ विकल रघुवर सो कही नाथभल कीना ॥
दै विश्वास पठाय भिरायो फेर फेर मुख लीना ॥
सुनि श्रीराम अंक भरि भाषी हौ दोऊ इकसारा ॥
हौं ताही भ्रम भीति विवश ह्वै बाण न कीयो प्रहारा ॥६॥
यौं कहिं राम सुकंठ कंठमधि गज पुष्पी पहिराई ॥
भाषी जाहु चिह्न अब लखिकै भ्रुव मारौं कपिराई ॥
प्रभुरजाय वश चले सुगल पुनि फिरि फिरि हेरत पाछे ॥
दृढ करि हीय आय पुर द्वारे गर्जत भये सु आछे ॥७॥
सुनि वाली पुनि उठो क्रोध वश तब तारा सब भाषी ॥
राम सुकंठ मित्रता प्रथमहि जो सुत सुखमुख सुनिराषी ॥
सो तिय शीश हरीश नमानी भिरो आय बलवाना ॥
दोऊ भ्रात विरुद्ध क्रुद्ध भरी उद्ध युद्ध बहु ठाना ॥ ८ ॥
भये थकित सुग्रीव विकल पुनि हेरत बारहिं बारा ॥
तब रघुवर तरु ओट दूरते बाण वालि उर मारा ॥
गिरो कपीश भूमि विह्वल ह्वै सजि शर राघव धाये ॥
दुहूँ बंधु चहुँ कपि संयुत द्रुत तासु निकट चलि आये ॥ ९ ॥
तिनहि निहारी वालि इमि भाषी यह न वीरको धर्म ॥
क्षत्री ह्वै भूपति दुरि मारा कीनो राम अकर्मा ॥
तब रघुवीर कही सुन हरिपति अनुज वधू तू लीनी ॥
याते तोहिं दंड वध दीनो नहिं अनीति कछु कीनी ॥ १० ॥
इहि विधि दुहुँ कटु मृदुल बैन बहु कहे वालि अरु रामा ॥
तजो प्राण कपि भयो शोर चहूँ सब धाये तजि धामा ॥
तारा अरु अंगद बहु विलपत आरतगिरा पुकारी ॥
कीश ऋच्छ किष्किधावासी रुदन करत नर नारी ॥ ११ ॥
तब रघुवीर धीर दै सबही सुग्रीवहि समुझाई ॥
मृतक क्रिया वर सविधि यथोचित सकल सपदि करवाई ॥
पुनि आज्ञा दै अनुजहि प्रमुदित द्रुत भेजो रघुनाथा ॥
जाय लखण पुर साजि सुकंठहि कियोतिलककपिनाथा ॥ १२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इहि विधि वालिहिमारिराम अरुकरि सुग्रीवहि राजा ॥
हनुमंतहि मंत्री दृढ थापो अंगदको युवराजा ॥
तारा भ्रात नारि निज नारी रुमासहित कपिनाथा ॥
रहत सदा सानंद राज लहि विलसत भये सनाथा ॥ १३ ॥
वरषा काल निरखि श्रीरघुवर सानुज गिरि पर छाये ॥
परमरम्य कंदरा शिलावर द्रुम फल फूल सुहाये ॥
पावसऋतु लखि राम विरह वश प्यारी बिन अकुलाहीं ॥
नैन नीर भरि दीन बैन बहु बोलत अति विलपाहीं ॥ १४ ॥
दोहा—वरषा हिय करषा करत, रंच दया हिय नाहिं ॥
विरहीको जिय लेन को, मदन पठायो माहिं ॥ १५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कीधौं विरहीके प्राण दाहे धूम धुंधर ये कीधौं ह्वै सपक्ष गिरि उडत उतंग हैं ॥ किधौं ऋतु पावसके विविध वितान तने कीधौं नभ मंडलमें तरल तुरंग हैं॥रसिकविहारी कीधौं बालक निशाके श्याम कीधौं वरषाके दूत डोलत मुढंग हैं ॥ कीधौं युगमासके विलासके अवास सोहैं छूटे किधौं मदन महीपके मतंग हैं ॥ १६ ॥

आवत चहूंघा घन घेरि नभ मंडलमें करत अँध्यारी भारी गरजत जोरसे ॥ दुरिदुरि दौरि विज्जु छटा छहरात ज्यौंही त्यौंही तरु तोरैं पौन प्रबल झकोरसे॥रसिकविहारी मोर मुदित पुकारतहैं जित तित झिल्लीझनकारत हैं जोरसे ॥ वरसत नीर धाराधरणीधैर न धीर होत हैं अधीर सब मदन मरोरसे ॥ १७ ॥

घुमडि घनेरे घहरात घनघेर घेर झूम झूम घूम घूम मंडित घमंड है ॥ रैनिअँधियारी कारी कारी भयकारी भारी जोरते झकोरै पौन प्रबल प्रचंडहै॥दादुर दिमाकदरशावैंदिशिचारौभलेझिल्लीझनकारैं सुरदीरघ अखंडहै॥रसिकबिहारी दुति दामिनी दमक्कै देखि अबला सशंकै यह पावस उदंड है ॥ १८ ॥

धावैहैं वलाक झुंड झुंड नभमंडलमें नीके कोकिलानके सरस सुर माचैं हैं ॥ गुंजत मधुप पुंज पुंजनमें कुंजनमें बोलत पपीहा पीउ पीउ रंग राचैंहैं ॥ रसिकविहारी उर आनँद अपार होत पावसके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साज सबै सांचै सुख सांचै हैं ॥ लरज उठैं हैं सुनि मेघकी गरज देखौ बागनमें मुदित मयूरगण नाचैं हैं ॥ १९ ॥

सवैया-कवित्त ।

झूमिरहीं द्रूमडारैं चहूँ दिशि भूमि हरीं लखि होत हरो हिय ॥
लोनी लता लपटीं तरु अंगन मानो नवेली रहीं मिलिकै पिय ॥
इन्द्र वधू छबि छावैं चहूँ रसिकेशविलोकतही हुलसे हिय ॥
श्याम मनाये न मानतीं जो सोई आपुहिते तजिमान मिलैं तिय २०
वरसै बहु नीर फुहारनतैं अविलोकि घनो विरहासरसै ॥
सरसै दुख देखत कुंजनको रसिकेश मनोज जहां दरसै ॥
दरसै चहुँ प्राविट रूप अनूप वियोगिनी हाय हिये तरसै ॥
तरसै घनश्याम बिना घनश्याम लखे छिन वीतत है वरसै ॥ २१ ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

घन गरजैहै किधौं दुंदुभीरसेशकी है छाये मेघ कीधौं तनेपावस वितान हैं ॥ संपाकी दमक कीधौं चमककृपाणनकी कीधौं नीरबुंदैं कीधौं मदनके बान हैं ॥ पवन प्रचंड कीधौं दूती या विरहकीहै रसिकबिहारी ऋतु कीधौं भूपसानहै ॥ उडत बलाक कीधौं आनँद वियोगिनके जरतजवासे किधौं विरहीके प्रान हैं ॥ २२ ॥ हीय मुददानी रतिरानीके प्रगट भयो पावस सपूतपूत सबसुखदाई है ॥ सुनि हरषायकै सिधाई चारु इन्द्रवधू मघवा अनंदह्वै अमीकी झरि लाई है ॥ निर्तत कलानि कल कोकिल करैहैं गान दलफल फूल सौंज दिशन सजाई है ॥ रसिकविहारी घन गरजमचीहै आज मदन नरेश द्वार बाजत बधाई है ॥ २३ ॥

दोहा-यौं बहु विधि वर्णत विलखि, लखि पावस भरि नैन ॥
विरह विवश अति दीन पुनि, रघुवर बोले बैन ॥ २४ ॥

सवैया कवित्त ।

अति शीतल मंद सुगन्ध समीर सदा तिहि को तनु जापरसौ ॥
कल कोकिल चातक मोर मलिंद उतै रव मंजु महा सरसौ ।
वर इन्द्र वधू बक दामिनि हो नवभामिनिके ढिग जा दरसौ ॥
रसिकेश जहां मम प्राणप्रिया घनघेरि घनै तहँ जा बरसौ ॥ २५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-इमि कहि पुनि वर बंधुसे, बोले निरखि अधीर ॥
सुनौ सुनौ हेरौ लषण, प्यारी गति मति धीर ॥२६॥

धनाक्षरी कवित्त।

धाय धाय बैठत कदंब जंबु अंबनके चाय टकलाय लाय मेरी ओर हेरैहै ॥ आय आय बोले बार बार छाय छाय शोर भाय भाय डोलै डार डार चहुँ फेरै है ॥ जाय जाय दुरत घरीक प्रीति पाय पाय रसिकविहारी रहै इत उत नेरैहै ॥ जीव तरसावै पीउ पीउ रटलावै हाय होयके पपीहा प्राण प्यारी मोहिं टेरै है ॥२७॥

दोहा-इमि पावस लखि राजसुत, विलपत होत अधीर ॥
अमित भाँति समुझायके लषण धरावौ धीर ॥ २८ ॥

प्र०॥वाल्मीकीये ॥ किष्किन्धाकांडे ॥ सर्ग ॥ २८ ॥श्लोक।

अयं स कालः संप्राप्तः समयोऽद्यजलागमः ॥ संपश्य त्वं नभो मेघैः संवृतं गिरिसन्निभैः ॥ ४ ॥ क्वचिद्वाष्पाभिसंरुद्धान्वर्षांगमसमुत्सुकान् ॥ कुटजान्पश्य सौमित्रे पुष्पितान्गिरिसानुषु ॥ मम शोकाभिभूतस्य कामसंदीपनान्स्थितान् ॥ ५ ॥ इत्यादि ॥

इति श्री०रा०र०वि०वि०वालिवधवर्णनो नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

सो०-इहि विधि राजकिशोर, पावस विलपि वितीत किय ॥
शरद निरखि चहुँ ओर, काजसमै गुणि मुदित भे ॥ १ ॥
उत प्रथमै हनुमान, सुरति दिवाय सुकंठको ॥
भेजे बहु बलवान, सुभट बुलावन हेतु चहुँ ॥ २ ॥

चौ०-इत रघुवीर लषण प्रति भाषी ❀ लखो सुकंठ सुरति नहिं राखी राज तीय लहि कै सुखसारो ❀ भये मत्त ममकाज बिसारो॥३॥
इहि विधि राम क्रोध कर भारी ❀ कही लषण जावो धनुधारी ॥ कहो वेगि बनचरहि बुझाई ❀ अब विलंब तुव नाहिं भलाई॥४॥
सुनि लछमन धनु शर कर धारी ❀ आये क्रोधित नगर मझारी ॥ राजद्वार मधि खबर जनाई ❀ अंतर गये रजाय मँगाई ॥ ५ ॥
गृह पैठत किय धनुष टँकोरा ❀ पूरित भयो शोर चहुँ ओरा ॥ लषण क्रोध लखि अंगद धाई ❀ कपिनाथहि गति सकल सुनाई६॥
लषण कोप सुनिकै हरिपाला ❀ भेजी तारहि सिखै उताला ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो सुंदरी आय शिरनाई ❀ करि बहु विनय सुधीर धराई ॥ ७ ॥
तारा अरु अंगद हनुमाना ❀ करि बहु विनय सहित सनमाना ॥
सादर लै सँग महल पधारे ❀ जाय लषण कपिपतिहि निहारे ॥ ८ ॥
सदन बिचित्र अनुपम साजे ❀ कंचनमय आसन वर भ्राजे ॥
रुमा रूप मय गल भुजधारी ❀ अपर अनेक लसैं नवनारी ॥ ९ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये । किष्किन्धाकाण्डे सर्ग ॥ ३२ ॥ श्लोक ।

दिव्याभरणमालाभिः प्रमदाभिः समंततः ॥ संरब्धतररक्ताक्षो बभूवांतकसन्निभः ॥ १ ॥ रुमां तु वीरः परिरभ्य गाढं वरासनस्थो वरहेमवर्णः ॥ ददर्श सौमित्रमदीनसत्त्वं विशालनेत्रः स विशालनेत्रम् ॥ २ ॥ इत्यादि ॥

चौ०-लषण हिदेखि उठे कपिपाला ❀ रामबंधु कह वचन कराला ॥
तब तारा पुनि बहु समुझाये ❀ कही सुभट हरिनाथ बुलाये ॥ १० ॥
सो सुनि लषण धीरउर धारी ❀ तब सुकंठ वर गिरा उचारी ॥
तन धन प्राण राज परिवारा ❀ हौं अर्पण किय प्रभुहितसारा ॥ ११ ॥
यौं कहि पुनि उताल शिषदीनी ❀ पवनपुत्र प्रति आयसु कीनी ॥
महिमंडल जेते कपि ऋच्छा ❀ आवैं वेगि सकल ममशिच्छा ॥ १२ ॥
सुनि कपि पुनि भेजे भटधाये ❀ नभ मग वेगि विपुल चहुँजाये ॥
मिलि सुकंठ लछमन दुहुँअंका ❀ बैठे मुदित एक परयंका ॥ १३ ॥
पुनि सुग्रीव तियन शिषदीना ❀ निजनिज ठामगमनसबकीना ॥
वेगहि शिबिका सुभगमँगाई ❀ बैठे लषण सहितकपिराई ॥ १४ ॥
छत्र चमर व्यजनादिक साजा ❀ लिये यथोचित कीश समाजा ॥
सुभट शस्त्रधारीबहु संगा ❀ आये प्रभु ढिग सहित उमंगा ॥ १५ ॥
दूरहि उतरि यानते कीशा ❀ लज्जित प्रभुपद नायो शीशा ॥
राम सखहि उठि अंक लगावा ❀ सादर गहि समीपबैठावा ॥ १६ ॥
तब सुकंठ बहु विनती कीनी ❀ रामनीति मय वर शिषदीनी ॥
ताही छिन कपि ऋच्छअपारा ❀ आये विविध वीरवरियारा १७ ॥

दोहा-महि मंडल जेते सकल, हैं कपि ऋच्छ विशाल ॥
ते हरीश आज्ञा सुनत, आये मुदित उताल ॥ १८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीशपतिहि रामहि सबै, सादर नायो शीश ॥
भये मुदित प्रभु हेरिकै, अगणित ऋच्छ शुकीश ॥ १९ ॥
तब सुग्रीव बुलाय ढिग, मुख्य मुख्य कपि ऋच्छ ॥
करी सबहि भय प्रीत युत, सिया शोध हित शिच्छ॥२०॥
कही वेगि तिहुँ लोकमें, हेरो सीतहि जाय ॥
दिवस पंचदश मध्यद्युत, आवो शोध लगाय ॥ २१ ॥
बिनत नाम कपियूथपति, तिनहिं सुकंठ बुलाय ॥
कही सुभट तुम सीयको, शोधहु पूरब जाय ॥२२ ॥
हनुमत ऋच्छप वालिसुत, नीलादिकन नृपाल ॥
भाषी दक्षिण दिशि सबै, सीतहि लखौ उताल ॥ २३ ॥
पश्चिम दिशा सुषेणको, सादर कह कपिराय ॥
पुनि शतबलीसुकीशको, उत्तर दई रजाय ॥ २४ ॥
इमि चहुँ दिशि अरु विदिशि पुनि, सातहु स्वर्ग पताल ॥
बहु भूगोल खगोल युत, सब भाषे हरि पाल ॥ २५ ॥

सो०-सुनि बूझी रघुवीर, सखा सकल ये किमि लखे ॥
कही सुकंठ सुधीर, भ्रात भीति भागे तबै ॥ २६ ॥
तब रघुवर मुसक्याय, बोले गई सुभीति अब ॥
सुनि सुकंठ शिरनाय , कही सु मम पौरुष कहा ॥ २७॥
प्रभु तव कृपा प्रभाय, कन अनु होय सुमेरु सम ॥
नेकरोष ह्वै जाय, सुरगिरि हो लघुरजहुते ॥ २८॥

दोहा-यों कहि पुनि हनुमानको, भाषी निकट बुलाय ॥
राम काज सिधि होय जिमि, सो कीजो मनलाय॥ २९॥

चौ०-तब लखि राम हिये हुलसाई ❀ पवनपुत्र कह ढिग बैठाई ॥
दई मुद्रिकाअतिअभिरामा ❀ जामधिवरअंकितनिजनामा॥३०॥
दै मुद्रिका कही पुनि रामा ❀ हो कपि बीर बुद्धि गुण धामा॥
नीति प्रीति जस बल गुणलीजो ❀ होवैसिद्धिकाजवह कीजो॥३१॥
सुनि हनुमंत आदि सब वीरा ❀ नाय सीश कहि जै रघुवीरा॥
गमन कियो तिमिलै भटसाथा ❀ जिमि रजायदीनोकपिनाथा ३२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चलत समय भाषी कपिराई ❀ जो ऐहैं सिय शोध लगाई ॥
सो अति ही आनंद अघै है ❀ नाम धाम धन ग्राम सुपैहै॥ ३३॥
सुनि गमने सब हिय हुलसाई ❀ खोजत फिरत सियहि चहुँघाई॥
तिहुँ लोक कपि ऋच्छ सिधावैं ❀ कितहुँ कहूँसोध नहिं पावैं॥ ३४॥
इमि पश्चिम उत्तर अरु प्राची ❀ खोजी सब दिशि रंच न वाची ॥
नभ पाताल हेरि चहुँ आये ❀ विवश वचन कपिपतिहि सुनाये३५
दक्षिण हनुमंतादिक वीरा ❀ खोजत सीतहि भये अधीरा ॥
निर्जल निर्जन वन गिरि भूरी ❀ हेरे नगर देश बहु दूरी ॥ ३६ ॥
इमि खोजत इक दिवस सुवीरा ❀ भयेतृषातुर निपट अधीरा ॥
तिहि थल मध्य नीर कहुँ नाहीं ❀ धाय धाय हेरे चहुँघाहीं ॥३७॥
तहाँ भूमि इक विवर लखाना ❀ ताढिग आये सब बलवाना ॥
आदर पक्ष हेरि खगनाना ❀ है इत जल यह दृढ अनुमाना॥३८॥
तब सबही यह कीन विचारा ❀ अविलोकिय चलि विवर मझारा
निरखो बिल द्वारा चहुँ ओरा ❀ अगम पंथ छायो तम घोरा॥३९
भयवश जाय सकत नहिं कोई ❀ तब हनुमंत अग्र हठि होई ॥
एक एक कर गहि सब गौने ❀ पैठे विवर सभै धरि मौने॥४०॥
गये सुयोजन एक प्रमाणा ❀ तब तहँ अति प्रकाश दरशाना॥
भवन बाग सर परम अनूपा ❀ लसै एक तिय वृद्ध स्वरूपा॥४१॥
तिहिविलोकिसब कीन प्रणामा ❀ पुनि बूझी किहिको यह धामा ॥
कही सु मयदानव कर ठामा ❀ है कपि स्वयंप्रभा मम नामा४२
सुनि रजाय लै फल दल खाये ❀ करि जलपान अनंद अघाये॥
तासु निकट पुनि सब मिलि आये ❀ सो बूझी कोतुमकहँआये४३॥
तब कपि कही सकल तिहि बाता ❀ सुनि बोली सो तिय हे ताता॥
पैहौ सीतहि संशय नाहीं ❀ वीर धीर धारौ मन माहीं॥४४॥
पुनि कपि कही ताहिकर जोरी ❀ करु सहायमाताअबमोरी ॥
महाअंध मग सूझत नाहीं ❀ किमि हम विवर द्वार फिरि जाहीं४५॥
तब तिहि कही कृपालु सुहोई ❀ ह्यांते निसरिसकै नहिं कोई ॥
पै तुम रामदास हौ याते ❀ मूँदहु नैन जाहु इहि ठाँते ॥ ४६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि सब निज निजकर दृगढांके ❀ मूंदे पलक रंच नहिं झांके ॥
स्वयंप्रभा तपबल तिन काढे ❀ लखे वीरतासागरतट ठाढे॥४७॥
दोहा–सबही चित चकृतलखैं, कहत बचेअब प्राण॥
गये हुतेकिहि हेतु तहँ, भयो आनको आन ॥ ४८ ॥
सिंधुतीर गिरिपै सकल, बैठ सोच कराहिं ॥
किमि जैये कपिराज ढिग, काज भयो कछुनाहिं ॥ ४९ ॥
भाषी अवधिहरीश सो, बीति गये दिन और ॥
गये हतै नृप याहिते, मरण भलो इहि ठौर ॥ ५० ॥
रामकाज हित तनु लगै, दोऊ लोक बनाय ॥
लखौ जटायू गीध किमि, सुखी भयो गति पाय ॥ ५१ ॥
चौ०-इमिलिय जबजटायु करनामा।तासु भ्रातसो सुनितिहिठामा॥
प्रगटो मंद मंद वपु भारी ❀ पंख विहीन भूरिभयकारी५२
ताहि देखि सब भीत जु मानी ❀ सो भाषी सुधीर मृदुवानी ॥
कहौ अभयप्रथमहिं कह वरनी ❀ हैकितकिमिजटायुकोकरनी५३
तब अंगद सब कथा कहाई ❀ सुनि सुगीध भाषी विलपाई॥
मोहिं लै चलहू सागर तीरा ❀ देहुँ जटायु बंधु कहँनीरा ॥५४॥
तब सब ताहि सिंधु तट आनो ❀ सो बंधुहि जल दै दुखसानो ॥
बोलत भयो कपिन समुझाई ❀ रहौ जटायु मोर लघुभाई॥ ५५॥
एक समय हमदुहुँ अभिमानी ❀ उड़िरवि निकट चलेहठठानी ॥
जबहीं गये प्रकाश मँझारी ❀ तब नहिंसहीगईतपभारी ॥५६॥
दोऊ प्राण कंठ मधि आयो ❀ पंख झांपि हौं बंधु बचायो ॥
ताछिन भानु तेज मम पक्षा ❀ जरे गिरोमैं ह्वै निरपक्षा॥ ५७ ॥
परो आय इत निपट विहाला ❀ इहांनिशाकर मुनी दयाला ॥
करत रहे तप सो मुहि हेरी ❀ कियोसचेत शीश कर फेरी ॥५८॥
पुनि मुनि कही अयोध्याधामा ❀ दशरथ सुत ह्वै है श्रीरामा॥
तासु तीय निश्चर हरि लै है ❀ तिहिविशोध कपिनाथलगैहै५९
चहूँ ओर बहु सुभट सिधावैं ❀ खोजत कीश भालु इत आवै ॥
सिया शोध तुम तिनहि बतैहो ❀ ताहीसमयपक्ष पुनिपैहौ॥६०॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–यौं कहि भाषी गीध पुनि, संपाती मम नाम ॥
सब वृद्धनको भूप हौं,पै अब भयो निकाम ॥ ६१ ॥
जरठ पक्ष बिन हीनबल, बने इतो अब काम ॥
पुनि गिरि पै लै चलो, कहौ सिया जिहि ठाम ॥ ६२ ॥
सुनि प्रसन्न ह्वै सपदि सब, संपातिहि कर धारि ॥
लाय उच्च गिरि शिखर पै, सादर दिय बैठारि ॥ ६३ ॥
संपाती तब देखिके, दक्षिण शीश उठाय ॥
कही इहां ते मोहिं सब, सम्मुख परत लखाय ॥ ६४ ॥
निरखत कोश सहस्रलों, गीध दृष्टि इमि होय ॥
दूर विलोकन हेत कहुँ, समता करै न कोय ॥ ६५ ॥
सो लखि सत्य बखानहू, करौ प्रतीति निशंक ॥
शत योजन इहि ठामते, सिंधुपार पुरलंक ॥ ६६ ॥
तहां निशाचर अमितहैं, भूपति रावण नाम ॥
सो सीतहि हरि लै गयो, बैठी दुखी सुठाम ॥ ६७ ॥
यौं वर्णत संपातिके, प्रगट भये वर पक्ष ॥
सब आयो विश्वास दृढ, निरख प्रभाव प्रतक्ष ॥ ६८ ॥

चौ०संपाती लहि पंख अनूपा ❀ प्रमुदित भयो विशदवररूपा ॥
सबहि धीर दै सियहि बताई ❀ गमनो खग नभ पंथ उडाई६९
सुनि कपि भालु परम सुखपागे ❀ किलकि कूदिबहुनाचनलागे ॥
ऊर्द्ध रोम ह्वै पुच्छ उठाई ❀ सिंहनाद कीने हरषाई ॥७०॥
सो निशिसुख महँ जात न जानी ❀ प्रातसिंधुलखिमतिअकुलानी॥
बैठि करत सबविविध बिचारा ❀ किमिकोलंघेजलधिअपारा७१

दोवइ छंद ।

ताछिन गज गवाक्ष दोऊ अरु शरभ ऋषभ वरबीरा ॥
कीश गंधमादन मयंद मिलि द्विविद सुषेण सुधीरा ॥
जाम्बवंत ये क्रमते दश दश योजन कहे बढाई ॥
निज निज गमनशक्ति इमिसबही सत्य बखानि सुनाई ७२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब अंगद भाषी हम इतते कूदि उतै ध्रुवजावैं ॥
फिर उतते इत आगमके हित निश्चय नाहिं कहावैं ॥
सुनि ऋच्छेश कही तुम नृपसुत दुहुँ दिशि गमन समर्था ॥
पैहौ अधिप वनै किमि पठवत प्रभुबिनु होत अनर्था ॥ ७३ ॥
यौं कहि ऋच्छराज हनुमानहिं लखि बोले हे वीरा ॥
पवनपुत्र बैठे सुमौन क्यौं धरी कहा इमि धीरा ॥
गुणि समर्थ प्रभु दई मुद्रिका निजबल रूप बिचारौ ॥
गोपद सरिस सिंधु यह तुमको ह्वै द्रुत सजग सिधारौ ॥ ७४ ॥
जाम्बवंतके वचन सुनतहीं कपितन बल उमँगायो ॥
ऊरधरोम प्रफुल्ल पुच्छ वपु तेज तरणि सम छायो ॥
यौं हनुमंत वीर उद्धत ह्वै कियो मेघ सम नादा ॥
पुनि अंगद अरु ऋच्छराज प्रति बोले युत अहलादा ॥ ७५ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

मेरो ना प्रभाव सीताराम की कृपा ते यह रसिकविहारी सत्य प्रण ठहराऊँ मैं ॥ उछलि उतंक तिहुँ लोकहि उलंक आऊँ सिंधुबापुरेकी काह गिनती गनाऊँ मैं ॥ जोपै रघुराज कपिराज युवराजऔर ऋच्छराज काहू की रजाय नेक पाऊँ मैं ॥ एकही फलंकामें निशंका उत जाऊँ फेरि हंका दै सुलंकाको उखार इत लाऊँ मैं ॥ ७६ ॥

दोहा-सुनि सुबैन हनुमानके, ऋच्छराज युवराज ॥
बोले कपिहि सराहिकै, सादर सहित समाज ॥ ७७ ॥
हौ समर्थ पुनि या समै, उचित इतोही काम ॥
जनक सुतहि अविलोकिकै, द्रुत आवो इहि ठाम ॥ ७८ ॥
पुनि सब चलि निजनाथको, प्रमुदित सकल सुनाय ॥
करि है सोई काज जो, देहैं ईश रजाय ॥ ७९ ॥
सुनि शिष शीश नवायकै, सबही धीर धराय ॥
द्रुत महेंद्र गिरि शिखर पै, उछलि गये हुलसाय ॥ ८० ॥
जाम्बवंत अंगद अपर, कीश भालु भट वृन्द ॥
रसिकविहारी काज सब, सिद्धि जानि आनंद ॥ ८१ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० जनकनंदिनी शोध-
वर्णनो नाम सप्तमो विभागः ॥ ७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-अंजनि सुत हनुमंत कपि, रामचरण हिय ध्याय ॥
तिह सुवेल गिरि शिखर पै, बैठे गात बढाय ॥ १ ॥
टेकि कुधरपर दोउ कर, पीठ पुच्छ करि गुच्छ ॥
श्रवण चपरि रोमांच युत, बढो तेज तनुसुच्छ ॥ २ ॥
दक्षिण दिशि लखिकै कियो, प्रलय मेघ सम गाज ॥
भाषी सबहि सुनाय हौं, जाहुँ रामके काज ॥ ३ ॥
रामबाण सम वेगते, जाय निहारौं लंक ॥
जौ न मिली तहँ तौ लखौं, सुरपुर धाय निशंक ॥ ४ ॥
तितै न पाई सियहि तौ, गहिलैहौं लंकेश ॥
अथवा लंक उपाटिकै, धरौं आय इहि देश ॥ ५ ॥
यौं कहि उछले वीर वर, तहँ तै सबल उताल ॥
चपि भूधर धरणी धसो, महा वेग भो हाल ॥ ६ ॥
पितु सम वेग प्रचंड अति, बहु तरु भये उपाट ॥
हनुमत सिंधु उलंघि वें, उछलि चले नभ वाट ॥ ७ ॥
आयत योजन तीस अरु, दशयोजन विस्तार ॥
तनु छाया हनुमान की, ताछिन परम सुढार ॥ ८ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये सुंदरकांडे सर्ग ॥ १ ॥ श्लोक ॥

दशयोजनविस्तीर्णा त्रिंशद्योजनमायता ॥
छाया वानरसिंहस्य जवे चारुतराभवत् ॥ १ ॥

दोहा-गर्जत उर आनंद भरि, जात व्योम पथबीर ॥
ताछिनको बल तेज वपु, वरणिसकै को धीर ॥ ९ ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

देव दहलाने औ अदेव हहलाने सिंधु जीव खहलाने जल उछल नदीशको॥भानुतेजमंद पथ बंद व्योम गामिन को आसन सुछंद डगो शंभु सुरईशको ॥ रसिकविहारी राम दूत हनुमन्त वीर कीनो गौन मर्दन प्रताप भुजबीसको॥जैजैकार करत अपार तिहुँलोक झार विक्रम पराक्रम निहार वर कीश को ॥ १० ॥ हेमगिरि कैधौंह्वैसपक्ष नभ कीनौ गौन कैधौंरथत्यागि प्रातसूरज

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिधायो है ॥ रसिकविहारी परमेश्वर प्रत्यक्षकैधौं व्योममें विराट रूप प्रकटि दिखायो है ॥ कैधौं खगराज हरिकाज हेत चालो आज कैधौं रामचंद्र बाण विशिख चलायो है ॥ कैधौं हनुमान वीर परमउदड चंड सागर उलंघि वेष मंडलते धायो है ॥ ११ ॥

चौ०-यौंहनुमंत अकाशमझारा ❀ जातनिरखिकियसिंधुविचारा॥
हौं कपिहित कछुकरौं सहाई ❀ सो श्रम खोय बहुरि द्रुत जाई १२॥
तब गुणि कह मैनाकहि सागर ❀ हौ गिरि तुम सपक्ष गुण आगर॥
वपुबढाय इतते नभजावो ❀ निज दिशि करि आदर विलमावो १३
सुनि भूधर मैनाक उताला ❀ हेम शिखर युत बाढि बिशाला ॥
मिष्ट वारि तरु सफल समेता ❀ गगन उच्चगो हनुमतहेता ॥१४॥
नभ मारग रुद्धित कपिदेखा ❀ कछू विघ्न प्रगटो दृढ़ लेखा ॥
तिहि उरते खंडित किय वीरा ❀ चलत भये सुमिरत रघुवीरा १५॥
तबै शैल मानुष तनुधारी ❀ प्रगटि शिखर वर गिरा उचारी ॥
धन्य पवनसुत विनय सुनीजै ❀ बहुरि तातहोरुचि सो कीजै १६॥
वृद्ध राम कुल जात नदीशा ❀ तव सहाय भेजो मुहिं कीशा॥
पुनिमो सँगबहु पवनमिताई ❀ रहौं अभय जिहि कृपा सदाई १७॥
सो तुम कपि मो पुत्र समाना ❀ ताही प्रीति करौं सनमाना ॥
है मैनाक सुनाम हमारा ❀ वसें सदा अब सिंधु मझारा ॥१८॥
प्रथम सकल गिरि रहे पक्षधर ❀ निज इच्छित उडि परें भूमिपर ॥
तिनते नगर ग्राम बहु नासैं ❀ कुधर सदा सबही इमि त्रासैं १९॥
सोलखि ह्वै क्रोधितसुरनाथा ❀ उग्र वज्र गहिकै निज हाथा ॥
पक्ष गिरिनके काटि नशाये ❀ मोदिशि देवराज जब धाये॥२०॥
तब तव पिता पवन हितकीना ❀ मुहिं उडाय निज वेगहि दीना॥
मैं इत जलनिधि परो दुराई ❀ तबते जलमधि रहौं सदाई ॥२१॥
सतयुग मध्य भई यह बाता ❀ सो तुव पितु हित मानहुँ ताता॥
याते मगश्रम बिलमिनिवारौ ❀ पुनि प्रभु कारज हेत सिधारौ २२॥
करौ अशन स्वादित फल वीरा ❀ पीजे विमल मिष्टवर नीरा ॥
सो सुनि सादर कह हनुमाना ❀ तव सतकार सकल मैंमाना २३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विलमौं बीच न यह प्रण धारा ❀ बेगि जात हौं सागरपारा ॥
यौंकहि गिरिहि परसि कर वीरा ❀ चलत भयोकरिनादगँभीरा२४
हनुमत कर आदर गिरिठाना ❀ सोलखि इंद्र परम सुखमाना॥
मैनाकहि प्रमुदित सुरपाला ❀ दीन अभै वरदान कृपाला २५ ॥
पुनि कौतुकी सकल सुरत्राता ❀ कही नाग मातहि यह बाता ॥
लखो चहैंहम कपिबल सबही ❀ करै सुकहतुव सनमुखअबही२६
सो सुरसा करिकृपा सिधावो ❀ हनुमंतहि बहु भीतिदिखावो॥
कै भय मानि पारनहिं जावै ❀ कै सुठानि बल बुद्धि सिधावै २७
तब सो आय भई मग ठाढी ❀ बिरचि कराल रूप बहु बाढी॥
कही कपिहि करि घोर पुकारा ❀ आवकीशममसुखहिमझारा२८
यों कहिकै कराल मुख फारा ❀ तब बोले तिहि पवनकुमारा॥
सिय लखि प्रभु सुनाय संदेशा ❀ करौं आय पुनिमुखहि प्रवेशा२९
सुरसा नहिं मानी तब वीरा ❀ कह विस्तृत मम सकल शरीरा॥
किमि तुव मुख प्रवेश बपुहोई ❀ तब सो विहँसिकीशदिशिजोई३०

दोहा–दशयोजन विस्तार मुख, कियो सुलखि हनुमान ॥
भये बीस योजन तुरत, निरखि तीस सो ठान ॥ ३१ ॥
तब कपि योजन तीस भो, तिय मुख किय चालीस ॥
इमि दश दश दुहुँ बढ़त गे, नाग मात अरुकीस ॥ ३२ ॥
जब कपि सुरसा मुखलखौ, शतयोजन परमान ॥
तब अंगुष्ट समान वपु, किय प्रवीन हनुमान ॥ ३३ ॥
प्रविशि तासु मुख निकसि पुनि, कही व्योममधि जाय ॥
गो आनन तू नहिं भखो, मम कछुदोष न आय॥ ३४ ॥
लखिसुरसा कपि बुद्धिबल, करि बहु भांति बखान ॥
गई देवपुर उत इतै, हरष लहो बलवान ॥ ३५ ॥
सकल देव सो चरित लखि, चकित रहे सकुचाय ॥
कहत तिहूँपुर वीर सम, और समर्थ न आय ॥ ३६ ॥
पूरवसम विस्तार वपु, करि गमने हनुमान ॥
जात गगन ह्वै छांह तनु, परै सिंधु जल आन ॥३७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो०-सो छाया जल बीच, अवलोकी खल निश्चरी॥
नाम सिंहिका नीच, गहि लीनी वरदान गुण ॥ ३८॥
गहतछाहँ हनुमंत, तनु कंपो गति रुद्धह्वै ॥
अकुलाने बलवंत, दशहू दिशि हेरे चकित ॥३९॥
चौ०-तब देखी कपि सिंधु मझारा ❀ ठाढी एक नारि विकरारा॥
तीक्षण दशन विकट मुखफारे ❀ छाया गहि ऐंचै बलधारे ॥४०॥
हनूमान तब गात बढ़ाई ❀ किय बहु गिरि सम तनुगरुआई॥
आयपरे तिहिमुखहिमझारा ❀ तासुअंगनखदशनविदारा ॥४१॥
मृतक भईसिंहिका कराला ❀ पुनि कपिउछलिगये नभहाला॥
सो विलोकि खेचर सबहरषे ❀ जै जै भाषि सुमन सुर वरषे ४२॥
तब हनुमत कि पूरवरूपा ❀ उद्यत द्रुत बल धारि अनूपा ॥
ताछिन वेग अपार बढ़ाई ❀ चले सिंहिकाहति हुलसाई॥४३॥

घनाक्षरी कवित्त।

परम प्रकाशमान प्रभुता प्रधान स्वच्छ खल दल शाल जनपाल सुखदान है ॥ रसिकविहारी उर अधिक अनंदकारी विपतिविदारी दिव्य दीपति महान है ॥ शुद्ध पक्षधारी भीतिहारी नभचारी वर सुवन विहारी वेग भारी बलवान है ॥ काज आज कैधौं खगराजा द्विज राज धायो कैधौं रामबाण कैधौं वीर हनुमानहै ॥ ४४ ॥
चौ०-इमि उतालकेशरी किशोरा ❀ पहूँचे जाय वीर बरजोरा ॥
निरखि सुभूधर सागर तीरा ❀ परेपारह्वैतहँकपिधीरा ॥४५॥
चंपो कुधर सुधरणि समाना ❀ पुनि लघु वपुकीनोहनुमाना॥
तहँते लखो लंकपुर कीसा ❀ चहूँओरकंचनमयदीसा॥४६॥
दोहा-परिखासिंधु गँभीर चहुँ, योजन एक प्रमान ॥
उच्च हेम प्राकारपुर, चारिद्वार दृढठान ॥ ४७ ॥
निरखि लंक कपि हीयमें, सोचत करत विचार ॥
कहा करैं कपिऋच्छ इत, दुहुँ अरु राजकुमार ॥ ४८ ॥
जय पावै इत युद्धमें, काहू की न समर्थ ॥
सामादिक चहुँ जतन बल, सकल होय ह्यां व्यर्थ ॥४९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौं गुणि परम प्रबंध चहुँ, निरखि चकित हनुमान ॥
रैनि समै पुर पैठिबो, उचित कियो अनुमान ॥ ५० ॥
निफल न हो मम आगमन; सोई बात महान ॥
उक्ति युक्ति सोचत गुनत, यौंहीं अथयो भान ॥ ५१ ॥
निशि लखि कपि कति रूपही, करि मंजार प्रमान ॥
राम सुमिरि लंका निकट, दुरि आयो बलवान ॥ ५२ ॥

प्र०–वाल्मीकीये सुंदरकांडे ॥ सर्ग ॥ २॥ श्लोक ॥

सूर्ये चास्तं गते रात्रौ देहं संक्षिप्य मारुतिः ॥
वृषदंशकमात्रोथ बभूवाद्भुतदर्शनः ॥ २ ॥

दोहा–तहँ लंका निज रूपते, रक्षहि पुरी सदाय ॥
नाम लंकिनी जाहि दुरि, कोऊ जान न पाय ॥ ५३ ॥

सोरठा–कपिहि देखि सो धाय, कही सक्रोप करालवपु॥
अरे कीश कहँ जाय, दुरिमोत ह्व चोर सम ॥ ५४ ॥
ताहि निरखि हनुमंत, बूझी दुष्टा कौन तू ॥
सो भाषी बलवंत, हौं लंका रक्षौ सदा ॥ ५५ ॥
तब बोले कपिताहि, हौं पुर अवलोकन चहौं ॥
कहि सुद्रुत फिरि जाहि, न तर हरौं तुव प्राण अब॥५६॥
सुनि कपि ह्वै विकराल, तिय लखि तलताड़ो सहज॥
गिरी भूमि बेहाल, महानाद करि निश्चरी ॥ ५७॥
पुनि लंका लहिं चेत, उठि बोली कर जोरिकै ॥
कपि आये जिहि हेत, करौ काज सो सिद्धि तुव ॥५८॥
मोहिं कही विधिबात, तोहि करै कपि त्रास जब ॥
तब निश्चर कुल घात, लखिये भई सुसत्य अब ॥५९॥
सुनि कपि लघु वपुधार, पुर प्राकार उलंघिकै ॥
पैठे लंक मझार, प्रथमवामपद अग्रकरि ॥ ६० ॥

प्र० ॥ वाल्मकीये सुंदरकांडे सर्ग ४ ॥श्लोक ।

प्रविश्य नगरीं लंकां कपिराजो हितंकरः॥
चक्रेथ पादं सव्यं च शत्रूणां स तु मूर्धनि ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनः ॥ अन्यत्रापि ।

प्रयाणकाले स्वगृहप्रवेशे विवाहकालेऽपि च दक्षिणांघ्रिम् ॥
कृत्वाग्रतः शत्रुपुरप्रवेशे वामंनिदध्याच्चरणं नृपालये ॥४॥ इत्यादि।

दोवईछंद ।

देखो लंकनगर वर शोभित कंचनमय सब धामा ॥
विविधवेष निश्चर निशाचरी सकलसाज अभिरामा ॥
बाल युवा अरु जरठ पुरुष तिय विपुल सुरूप कुरूपा ॥
धर्म अधर्म सुकर्म कुकर्महि निरत अनेक अनूपा ॥ ६१ ॥
शस्त्र शैल तरुधरे खरे भट ठौर ठौर रखवारे ॥
कहुँ सहस्रदश कहूँ लक्ष कहुँ कोटिन कहूँ अपारे ॥
हाट वाट गृह नगर मध्य चहुँ अध ऊरध सबठावा ॥
बाहर अरु अंतर लंकापति परम प्रबंध दृढावा ॥ ६२ ॥
बाग वाटिका कुंज पुंज वरवीथी पंथ बजारा ॥
वापी कूप तड़ाग सरित गृह वन गृह गुहा अपारा ॥
जाय जाय सब ठौर वीर कपि दुरिहेरै चहुँ घाई ॥
रामभामिनी जनकनंदिनी कतहुँ न परी लखाई ॥ ६३॥
दशमुख भवन माहिं तब पैठ तहँ सब ठौर निहारा ॥
अशन पान स्नान हवन थल अविलोको कपिसारा ॥
शयन भवन मधिगयो वीरवर निरखि चकितभो कीशा ॥
जा समसुभग साज शोभा सुखअपर त्रिलोक न दीसा ॥६४॥
सुर किन्नर गंधर्व यक्ष नर नाग नारि अभिरामा ॥
सजे सुभग शृंगार मनोहर वरनिश्चरी ललामा ॥
सकल वारुणी पान मदन मदमत्त अंगसुधि नाहीं ॥
जहँ तहँ निद्रावश अचेत ह्वै सोयरहीं चहुँ घाहीं ॥ ६५ ॥
काहू शिर पर पद काहूको काहूपग किहुँ माथा ॥
काहु उदर उर भुजा शीश कटि काहू किहु मुख हाथा ॥
कोऊ शस्त्र वस्त्र भूषण युत इमि अचेत सब सोइ ॥
सुभग सुंदरी स्वरमधिराची प्राण लुकाय विगोई ॥ ६६॥
कोऊ वसन विहीन वामवर कोऊ सुभग शृंगारी ॥
कोऊ विलुलित साज सकल तनु कोऊ अर्ध सँवारी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोऊ सुरतिहीन रति संयुत कोउ बिलग कोउ संगा ॥
कोऊ अशन पान भाजन लै शैन किये इहिढंगा ॥ ६७ ॥
तिनके मध्य रूपवर रावण सोवत मुदित निशंका ॥
मंदोदरी गौर सुठि नारी आलिंगित निज अंका ॥
लखि मयसुता रूप शोभा दृढ हीय कीश अनुमाना ॥
येही जनकनंदिनीइमि छबितिन बिन तिया नआना ॥६८॥

प्र० ॥ वा० ॥ सुं० कां० ॥ स० ॥ १० ॥ श्लो० ॥

गौरीं कनकवर्णाभामिष्टामन्तःपुरेश्वरीम् ॥
कपिर्मंदोदरीं तत्र शयानां चारुरूपिणीम् ॥ ९ ॥
स तां दृष्ट्वा महाबाहुर्भूषितां मारुतात्मजः ॥
तर्कयामास सीतेति रूपयौवनसंपदा ॥
हर्षेण महता युक्तो ननंद हरियूथपः ॥ ६ ॥ इत्यादि ॥

दोवइ छंद ॥

हेरि हिये हनुमंत हर्ष भरि रोम प्रफुल्लित कीना ॥
लै ऊरध लंगूर चुंबिकै कीश केलिचित दीना ॥
आयो बहुर विचार वीर उर मो कस बुद्धि नशानी ॥
शैन किये दशमाथ जो तिया तिहि सीता मैं जानी ॥६९॥
रामभामिनी दृढ पतिव्रता सत्यधर्म धुरधारी ॥
परपति संग ताहि अनुमानी कियो जु पातक भारी ॥
पुनि कपि सोच पाप यह दूजो एक और हौं कीना ॥
पर नारी नरशैन संग ही नग्न अंग लखि लीना ॥ ७० ॥
यौं गुणिकै पुनि हृदै धीरदै दृढ विचार यह थापा ॥
मोमन निर्विकार तौ निरखे भयो नहीं कछु पापा ॥
इहि विधि सोचि वीर तहँते चलि फिरि चहुँ हेरन लागे ॥
जब कहुँ लखी नहीं सीता तब महा शोकमें पागे ॥ ७१ ॥
कर विचार कपि सिया न जीवै कै रावण तिन मारी ॥
कै लावतहि व्योम मंडल तें गिरी पयोधि मझारी ॥
हाय कहाँ अब मिलैं जानकी विन पाये नहिं जाऊं ॥
है यह भली प्राण निज त्यागौं काहु न मुख दरशाऊं ॥७२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरिगीतिका छंद।

इमि गुणत कपि बहु सोच वस पुनि किय विचार सुहीयमैं ॥
उत जो लखाय अशोक वन हेरो न वह रमणीय मैं ॥
देखौं तहांचलि सीय जो दरशाय तौ भलिबातहै ॥
दृढ मिलहि स्वामिनि तितहिं या छिन जीय मम उमगातहै ७३॥
यौं ठान दृढ हनुमानकीन पयान अतिहि उताल जो ॥
दरशान इक स्थान शोभायमान परम विशालसो ॥
जिहि धाम द्वार ललाम अंकित राम नाम सुवर्णते ॥
वृंदा सुमन वर वृंद वृंद विराज तरु बहु वर्णते ॥ ७४ ॥
लखि हीय गुण हनुमंत कोऊ संतको यह धामहै ॥
अति आचरज इत लंकमें हरि भक्त को अभिराम है ॥
तौ लग सु निद्रागत विभीषण नाम लीनो रामको॥
सुनि कीशद्विजतनु धारि कीनो गान प्रभु गुण ग्रामको ॥७५॥
सो सुनि विभीषण द्वार आये दोउ दुहुँदिशि हेरिकै ॥
बूझी दुहूँ दुहुँ कही निज गति मिले गल भुज गेरिकै ॥
नृपबंधु तब हनुमंत सों भाषी सबै समुझायकै ॥
वर वाटिकामधि मैथिली कह लखहु जाय दुरायकै ॥७६॥

चौ०-सुनि सियकथाहीय हरषाना ❀ चलेवेगितिनमिलिहनुमाना।
वर अशोकवाटिका निहारी ❀ परमरम्य शोभा मनहारी॥ ७७ ॥
कंचन महि मणि जटित अनूपा ❀ वापी कूप तडाग सुरूपा ॥
वेलि विटप लघु दीरघनाना ❀ फलप्रसूनवरविविधविधाना ॥७८॥
खग मृग विपुल जीव बहु जाती ❀ मरजत तरु अगणित भाती ॥
चहुँ मुक्ता प्रवाल मय सिक्ता ❀ महि दरशायनतिहिअतिरिक्ता७९॥
धवल धाम वर उच्च अनेका ❀ सुंदर सुखद एकते एका ॥
रक्षत विविध भूरि भट भारे ❀ निज निजकाज शस्त्र सब धारे८०॥
इमि अशोकवाटिका सुहाहीं ❀ जिहि पटतर अमरावति नाहीं ॥
तहँ कंचन मय सुभग निराला ❀ एक शिंशपा वृक्ष विशाला॥८१॥
तिहि तरुतर वेदिका मनोहर ❀ हाटक रचितखचित मणिगणवर॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तहँ सशोक श्रीजनकदुलारी ❀ बैठी राम ध्यान उर धारी॥८२॥
चहू ओर निश्चरी कराला ❀ रक्षहिं लीने शस्त्र विशाला ॥
सियहि दूरते लखि हनुमाना ❀ मम स्वामिनि ये दृढ़अनुमाना८३॥
करि प्रणाम दूरहिते सादर ❀ हर्षशोक दोऊ सुहीय भर ॥
सिया रामकी दशा विचारी ❀ हनूमान कह मनहि मझारी॥८४॥

सवैया का

उत का कहिहौं सियकी गति हौं वरणौं इत काह कथा पियकी॥
नहिं भाषे बनै निरखेही बनै अति दुःख सनेह दशा वियकी ॥
इहिते रसिकेस भली है यही गहि मौन धरौं हिय में हियकी ॥
ममस्वामिनि स्वामि परस्पर दोऊ सुजानतहैंदुहुँकेजियकी॥८५॥
चौ०-पुनि कपिगुणी भयोदुख दूरी ❀ सियाराममिलिहैंसुखपूरी॥
प्रभु सँदेश सुनिकै हरषाहीं ❀ पै मुहिं प्रगटमिलब भल नाहीं८६
यौं गुणि कीशरैनिलखिथोरी ❀ द्रुमचढ़िदुरो निरखि चहुँ ओरी॥
ताछिन तहँदशवदन सिधारा ❀ संगनारिबहुकिये शृंगारा॥८७॥
आय सियहिसो बहु समुझाई ❀ कटु वचकह सीता विलपाई ॥
तब दशमुखलै कठिन कृपाना ❀ जनकसुतादिशिहेरिरिसाना८८
तब गहि मंदोदरी सुनीता ❀ समुझायो कहि वचन विनीता ॥
पुनि रावण निश्चरि न सिखाई ❀ करौ नारिममसियहिबुझाई८९॥

दोहा-यों कहि भाषी सीय दिशि, और तजो द्वै मास॥
इहि ऊपर तुव मरन के, हठिराखौं रनिवास॥९०॥

प्र० ॥ वा० ॥ सु० ॥कां० ॥ स० ॥ २२ ॥ श्लो० ॥

द्वौ मासौ रक्षितव्यौ मे योऽवधिस्ते मयाकृतः॥ततःशयनमारोह मम त्वं वरवर्णिनि ॥७॥ द्वाभ्यामूर्ध्वं तु मासाभ्यां भर्त्तारंमामनिच्छतीम्॥ममत्वांप्रातराशार्थं सूदाश्छेत्स्यंतिखंडशः॥८"इत्यादि॥
चौ०-ताछिन धान्य मालिनीनामा ❀ वर निशाचरीपरमललामा॥
दै गल भुज दशमुखहि सप्रेमा ❀ शैन सदन लैगईसुक्षेमा॥९१॥
इतनिश्चरी कुरूप कराला ❀ लैकर मुशल शूल असि भाला ॥
बहु बिधि सीतहि त्रासदिखावैं ❀ साम दामभयभेददिढावैं॥९२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोवई छंद।

इकनैनी कोऊ इक कर्णी कोऊ बहु दृगवारी ॥
कोऊ गजकर्णी खरकर्णी कोऊ नाग दँतारी ॥
कोऊ व्याल मुखी लम्बोदरि लंबकुची कुचहीना ॥
कोऊ हस्त चरण इक एकै कोऊ अगणित कीन्हा ॥ ९३ ॥
कोऊ शीश विहीन बहुत शिर कोऊ अगणित नासा
कोऊ अर्ध कोऊ अनासिका कोऊ बहुमुख भाषा ॥
कोऊ शूकर श्वान सिंह मुख कोऊ गिरि वपुधारा ॥
कोऊ अति लघु इमि निशाचरी विविधकरालअपारा ॥९४॥
कोऊ बांधि मुष्टिका धावैं सियहिं प्रहारण काजा ॥
कोऊ दशन काढि मुख फारैं भक्षणहित करि गाजा ॥
कोऊ लै कृपाण कर दौरैं कोऊ शूल भमावैं ॥
योंही विकट निश्चरी सीतहिं बहु विधि त्रास दिखावैं ॥ ९५॥
कहैं सकल हे जनकनंदिनी जो निज जीवन चावो ॥
तौ सिखमानि वेगही हठतजि दशमुख महल सिधावो ॥
सुनि सिय बोलीं भले सबहि मिलि मुहिं भक्षण करि लेहू ॥
निज पतिबिन नहिं लखौं आन दिशि मोर सत्यप्रणयेहू ९६॥
यौंकहि सिया हाय श्वासा भरि करति अपार विलापा ॥
सो गति लखि हनुमंत हीय बहु बढो क्रोध संतापा ॥
कुसमय जानि मौन दुरि हेरै कपि निश्चरी कठोरा ॥
जनकनंदिनिहि भीति दिखावैं बोलि वचन अतिघोरा॥९७॥
दोहा—ताछिन त्रिजटा निश्चरी, बोली सबहि रिसाय॥
सियहि न खावोआप तनु, आपहि लेवो खाय॥९८॥
स्वप्न लखो हौं अवशिहो, तिहि फल यह विश्वास ॥
राम विजय पावैं सपदि, अरु निश्चर कुलनास॥९९॥
सुनि सशंक सब निश्चरी, त्रिजटहि कह अकुलाय ॥
कहा लखो भाषो सबै सो बोलीं समझाय ॥१००॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ह० गी० छंद ।

गजदंत शिबिका सहस हरि युत अंतरिच्छ सुहावहीं ।
तिहि मध्य रामसबंधु राजे शुभ्र साज सु आवहीं ॥
पुनि लखी श्वेत शृङ्गार धारे सिंधुहै आवृत किये ।
सीता विराजी धवलगिरिपै पीय पद निज दृग दिये॥ १०१॥
हेरो सुदंती चारदंत शृँगार युत भूधर चढो।
तिहि पै लसे सिय बंधु संयुत राम अति आनँद मढो॥
पुनि लखी सीता चंद्र भानुहि छिनहिं छिन कर परसही।
रथ श्वेत वृषभ सुयुक्तता मधि तिहूँ बहु छबि सरसही॥ १०२॥
दोहा–पुनि हेरे सीता सहित, राम लषण दुहुँ भ्रात ॥
शोभित पुष्पविमान मधि, उत्तर दिशि नभ जात ॥ १०३॥

दोवईछंद ।

पुनि देखो दशमाथहि मुंडित लालवसन तनु धारे ॥
कंठ माल करवीर पानमद अरुण साजहैं सारे ॥
सो पुष्पकविमानते गिरिकै परो महीतल आई ॥
श्याम शृङ्गार श्यामतिय मुंडित तिहि खैंचै गहि धाई॥ १०४॥
खर युत रथ बैठो पुनि हेरो हँसै नचै अरु गावै ॥
करै तैलको पान सुव्याकुल दक्षिण दिशा सिधावै ॥
बहुरि लखो गर्दभमय रावण बिन शिर गिरो जु भूमै॥
फिर उठि मत्त नग्न ह्वै विलपत दुर्वच बोलत घूमै॥ १०५॥
पंक घोर मलकुंड प्रविशिके दशमुख दक्षिण जाही ॥
रतवासिनी श्याम तिया गल बाँधि सुखैंच ताही ॥
यौंही कुंभकरणको देखो अरु रावण सुत सिगरे ॥
मुंडित तैल लिप्त अविलोके त्यौं निश्चर सब बिगरे ॥ १०६॥
शूकर श्वान ऊंट खर जल कपि चढे नग्न ह्वै कोऊ ॥
कोऊ महिष मनुष निश्चर पै गमने दक्षिण सोऊ ॥
एक विभीषण लखो शुद्ध वरश्वेत छत्र शुभकारी ॥
अविलोके अति अशुभ रीतिसें अपर सकल नर नारी॥ १०७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खंडित सदन सकल अविलोके भस्म निहारी लंका॥
सब निश्चरी रुदन करभारी विह्वल भई सशंका॥
पुरचर अचर सिंधु मधि डूबे अरु जे वीर बडेरे॥
ते समस्त गोमय ह्रद प्रविशे इमि कुस्वप्न मैं हेरे॥१०८॥
दोहा—सुनि त्रिजटा मुख स्वप्न गति, भई सकल अति दीन॥
परी निश्चरी सीय पग, विनय जोरि कर कीन॥ १०९॥
इमि यामिनि द्वै दंड ही, रही निरखि सब वाम॥
कछू सचेत अचेत ह्वै सोई इत उत ठाम॥ ११०॥
ताछिन राघवभामिनी, कीनो महा विलाप॥
सो विलोकि हनुमंत हिय, भयो अधिक संताप॥१११॥
ताही समय सुऔचके, शकुन भये सिय अंग॥
वामबाहु उर नैन भ्रुव फरकन लगे सुढंग॥ ११२॥
तब कपि सुरवाणी विषे, प्रभु गुण कीन बखान॥
सुनि चितई सिय चकित चहुँ,सोच हर्ष अधिकान॥११३॥
ह्वै माया कछू आसुरी, यौं करि सीय विचार॥
ह्वै सशंक शिरनायकै रही मौन दुखधार॥ ११४॥
हनूमान तब आयकै निकट नवायो शीश॥
कही दुहूँ कर जोरिकै ,राम दूत हौं कीश॥११५॥
तऊ न सिय सन्मुख लखी, बोली महि दिशि जोय॥
नाथ दूतहै सत्य कपि, मुहिं प्रतीति किमि होय॥ ११६॥
तब कपि रघुवर अंगके, नखशिख चिह्न समस्त॥
कहे यथारथ सीय प्रति, बधु समेत प्रशस्त॥११७॥
अपर कथा वरणी बहुरि, औसर जानि उताल॥
मुखते काढि सुमुद्रिका, दीनी अंजनिलाल॥११८॥
लई सिया आतुर हुलसि,पिय मुँदरी पहिचानि॥
ताछिन उमडो नेह सुख, सो किमि जाय बखानि॥ ११९॥

घनाक्षरी कवित्त।

दृगन छुवावैं गहि शीश पै चढावैं ताहि हृदय लगावैं बारम्बार-
दुलरावैंहैं॥फेरि फेरि हेरैंहेरिहेरि कै कपोल भरैं भेरि कंठफेरैं फेरि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हेरि हुलसावैं हैं ॥ पीय गति बूझैं बूझि बूझिके अरूझैं कर जोरि जोरि कोरि कोरि विनय सुनावैं हैं ॥ रसिकविहारी पति मुद्रिका निहारी सीय छिन सुधि लावैं छिन प्रेम में भुलावैं हैं ॥ १२० ॥

दोहा–जब पाई पिय मुद्रिका, तब सिय करी प्रतीत ॥
गदगद हिय दृग नीर भरि, बूझी सकल सप्रीत ॥ १२१ ॥
तब हनुमत दुहुँ बंधुकी, कही कुशल युत प्रीत ॥
तिन दिशि ते बूझी बहुरि, बोले वचन सुनीत ॥ १२२ ॥
हे स्वामिनि श्रीराजसुत, जिमि तब विरह रहात ॥
सो गति मोहियकी हिय, कैसहु कही न जात ॥ १२३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

जबते वियोग भयो रावरो तबै ते राम काहू तिय ओरहू न हेरैं नेह भरिकै ॥ नव फल फूल नारि देखैं जलनैन ढारि श्वास लै अधीर होत हाय प्यारी करिकै ॥ पौढैं वासु बैठे भूमि साथरी अजिनशिला रसिकविहारी अर्घ आसन उतरिकै ॥ खान पान होवै कछु आप तिहि लेत पाछे प्रेम युत प्रथम तिहारो भाग धरिकै ॥ १२४ ॥ मद मधु कंद मूल पल फल फूल तजे रैंन वन तंदुलसो अशन करात हैं॥वृश्चिक न दंश अहि मशक निवारैं अंग संतत विदेहि ढंग विपुल रहात हैं ॥ सब निशिजागैं बारबार अनुराग राम ध्यान तुव पागैं छिन२अकुलात हैं ॥ रसिकविहारी कबौं पलक झपात तबै झझकि उठात हाय सीते विलपात हैं ॥ ॥ १२५ ॥ गावैं रावरैं ही गुण ध्यावैं रावरो ही रूप बंधुसे सुरावरीही चरचाचलावैं हैं॥रसिकविहारी रघुवीर ढिगआवैं कोऊ तासों हठि रावरीही चरचा चलावै हैं ॥ करैं कछु काम लेत रावरो प्रथम नाम रावरी कथामें वसु याम विलमावैं हैं ॥ परम विचित्र चित्र रावरो सुपत्रनपै लिखि लिखि वार वार हृदय लगावैं हैं १२६

प्र० वा० सुं० कांडे स० ॥ ३७ ॥ श्लोक ।

न मांसं राघवो भुंक्ते न चैव मधु सेवते ॥ वन्यं सुविहितं नित्यं भक्तमश्राति पंचमम् ॥ ९॥ नैव दंशान्न मशकान्न कीटान्नसरीसृपान्॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राघवोऽपनयेद्वात्वद्वृतेनान्तरात्मना ॥१०नित्यं ध्यानपरो रामो नित्यं शोकपरायणः॥नान्यं चिंतयते कंचित्सतुकामवशंगतः ११॥ अनिद्रःसततं रामःसुप्तोपि च नरोत्तमः ॥ सीतेति मधुरां वाणीं व्याहरन्प्रतिबुध्यते॥१२॥दृष्ट्वाफलंवापुष्पंवायच्चान्यत्स्त्रीमनोहरम् बहुशो हा प्रियेत्येवं श्वसंस्त्वामभिभाषते॥१३॥ इत्यादि॥

दोहा–यौंकहि पुनि कर जोरिकै, बोले हनुमतवीर ॥
जननी अब धीरज धरिय, वेगि लखिय रघुवीर ॥१२७॥
हौं अबहीं निज पीठ धरि, लजाऊं प्रभुपास ॥
कहा करौं रघुवीर मुहि, आज्ञादई न खास ॥ १२८ ॥
सुनि बोलीं सिय कीश इत, यातुधान बलवान ॥
कह पुरुषारथ करि सकैं, लघु कपि भालु निदान ॥१२९॥
तब हनुमत निज युद्धवपु, प्रगटो भीम कराल ॥
महामेरु सम उच्च गरु, परम प्रचंड विशाल ॥ १३० ॥
सो लखि करि प्रतीति सिय, तब कपि लघुतनुकीन ॥
जनकसुतहि हनुमंत पुनि, बहु विधि धीरज दीन ॥१३१॥

चौ०–दै धीरज भाषी पुनि कीशा ❀ ज्यौं मुद्रिकादईमुहिईशा॥
त्यौं कछु चिह्नआपतेपाऊं ❀ तौअबहौंअतिवेगिसिधाऊ १३२॥
चूडामणि दीनी तब सीता ❀ कहि बहु पियहि संदेश विनीता॥
पुनिबोली बिछुरे दश मासा ❀ भये और द्वै राखोंआसा॥१३३॥
पूरण वर्ष भये तनु त्यागौं ❀ हौं कपि तोहिं सत्य प्रण वागौं ॥
रावण दई अवधि मुहिं सोई ❀ तामधि प्रभु आये भल होई १३४॥

प्र० वाल्मीकीये सुंदरकांडे सर्ग ॥ ३७ ॥ श्लोक ।

स वाच्यःसंत्वरस्वेति यावदेव न पूर्यते ॥ अयं संवत्सरःकाल स्तावद्धि मम जीवितम् ॥१४॥ वर्तते दशमो मासो द्वौ तु शेषौ प्लवंगम ॥रावणेन नृशंसेन समयो यःकृतो मम ॥१५॥इत्यादि ॥

चौ०–सुनि हनुमंत कहि हे अम्बा ❀ अब न होइहैंनेकविलम्बा॥
यौं बहुधीरज दै शिरनाई ❀ चलन हेत द्रुतविनयसुनाई १३५
दई सिया बहु भांति अशीशा ❀ सुनि अनंद पायो अतिकीशा॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि हनुमान कही कर जोरी ❀ खाउँसरसफलहैरुचिमोरी १३६
सुनि बोली सिय हे हनुमंता ❀ इत रक्षैं वर सुभट अनंता ॥
यह अशोकवाटिका विशाला ❀ गुणैप्राणप्रिय निश्चरपाला १३७
याते जाय दुराय उताला ❀ खाय सरसफल गमनौ हाला॥
पुनि हौ तेज बुद्धि बल धामा ❀ औसरलखिकीजोसबकामा १३८
यौं कहि दीनो बहुरि अशीशा ❀ शीशनाय गमनो मुदकीशा॥
सियदिशि बार बार सो हेरैं ❀ सीता कपिहिलखैंफिरफेरैं १३९
इमि जानकिहिनिरखि हनुमाना ❀ चले हृदय आनँद अधिकाना॥
अंग प्रफुल्ल रोम बलवंता ❀ उमगो गुण बल तेज अनंता १४०

इति श्री० रा० र० वि० वि० जनकनंदिनीदर्शन-
वर्णनो नाम अष्टमोविभागः ॥ ८ ॥

दोहा–श्रीहनुमत वरवीर कपि, सिय ढिगते चलि आय ॥
कियो विचार सुहीय अब, गमनों बल दरशाय ॥१॥
यौं दृढ ठानि सुवीर वपु, कीनो मेरु समान ॥
प्रगटो वेग प्रचंड अति, पवनतनय बलवान ॥२॥
पुनि अशोकवन मध्य चहुँ, धाय धाय फलखात ॥
भंजत द्रुमवल्ली सदन, करत महा उतपात ॥ ३ ॥
भयो शोर चहुँ ओर अति, खग मृग भगे विहाल॥
उठीं भभरि सब निश्चरी, बूझीं सीय उताल ॥४॥
कोहै कपि तुमते कहा, कही निकट यह आय ॥
सुनि दीनो उत्तर सिया, हौंहू भेद न पाय ॥ ५ ॥
चौ०–सबहि निश्चरी जाय उताला ❀ रावणप्रतिवरणोकपिहाला ॥
तब दशवदनक्रोध किय भारी ❀ सुनि अशोकवाटिकाउजारी६॥
प्रात समै सेवा हित ठाढे ❀ असीसहस किंकर बलगाढे ॥
सबहि दई आज्ञा दशभाला ❀ मारौ कीशहिजायउताला॥७॥
त सबही सकोप द्रुत धाये ❀ विपुलशस्त्र कपि पर वरसाये ॥
तब हनुमत लै परिघ विशाला ❀ करि पुनि रूपभीम विकराला॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धाय धाय किंकर सब मारे ❀ परे मृतक ते धरणि मझारे ॥
पुनि कपि गर्जिकियो रवंभारी ❀ बैठ जाय गृह शिखरमझारी९॥
जैति राम लछमन वरवीरा ❀ जै कपीश सुग्रीव सुधीरा ॥
राम-दास हौं हनुमतकीशा ❀ मर्दौं बहु सहस्र दशशीशा॥१०॥
यों पुकारि पुनि धाम सुभंजा ❀ सकलसाज खंडित करिगंजा ॥
सो विलोकि शतरक्षक धाये ❀ लै लै शस्त्र क्रोध भरि आये११॥
खम्भ उपाटि वीर गहि धावा ❀ ताहि भमाय अपार तपावा ॥
सब कीशहि बहु शस्त्र प्रहारे ❀ हनुमत ते समस्त हतिडारे १२॥

पद्धरीछन्द ।

हनुमान वीर रक्षकन मारि। पुनिअति प्रचण्ड हिय रोषधारि॥
द्रुम लता धाम सर ह्रद सुकूप । मर्दैं अनेकध्रुव लखि अनूप १३
दशमाथ जम्बुमालीहिटेरि । दीनी रजाय तिहिं ओर हेरि॥
सो भट प्रहस्त सुत धनुषधार।धायो उतालगर्जत अपार॥१४॥
लखि ताहि वीर किय अट्टहास। लंगूर लंब चुम्बो हुलास ॥
सो आय विशिखबाणन प्रहार। मुख शीशबाहुकपितनुविदार
तबकोपिवीर हनुमत उताल।गरु शिला धारितिहिशीशघाल॥
भट यातुधान बाणन विदारि।करिखंडताहि दियभूमिडारि १६
तब भीम शाल तरु गहि उपाट।कपि हनो सोउ सोशरनकाट॥
पुनि पंच बाहु उर मध्यएकादश वक्ष घाल अरु तनुअनेक १७
इमि बाण जंबुमाली उताल । हनुमंत अंग मधि दीन शाल॥
तब कीश धायसो परिघधारि ।डारो जुभूमिनिश्चरहिमारि १८॥
पुनि गर्जि वीर चढि उच्च धाम।बठो निशंक कह जैति राम ॥
वध जम्बुमालि सुनि लंकराय।द्रुत सचिव सुतनदीनीरजाय १९
ते सप्त वीर लै सुभट संग । धाये उताल सजि शस्त्र अंग ॥
चहुँओर घेरिकैसकलकोपि।बाणन प्रहारिदियकपिहितोपि२०
हनुमान वीर तबक्रोध लाय । निजगात चंड गिरि समबढ़ाय॥
जैजैति राम कहि सोरछाय। कूदे उताल दलमध्य आय॥२१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोवई छंद ।

काहू शीश मुष्ट हनि फोरा काहू दंतन काटा ॥
काहू जानु चापि हत काहू चरण भुजा उत पाटा ॥
काहू पुच्छ लपेटि पछारा काहू नखन विदारा ॥
काहू घालि चपेट प्राण लिय भयो सु हाहाकारा ॥ २२॥
यौं हनुमंत सातहू मंत्री सुतन मारि महिडारे ॥
सो विलोकिकै भभरि पराने अपर निशाचर सारे ॥
वीर धीर सानंद धाय पुनि गर्जत निपट निशंका ॥
करि विध्वंस बहोरि धाम बन बैठो शिखर उतंका ॥ २३ ॥
सुनि मंत्री सुत निधन दशानन चकित दुखित यौं वरनी ॥
है कोऊ बलवंत सुरासुर यह न कीशकी करनी ॥
इमि कहि लंकनाथ क्रोधित ह्वै आज्ञा दई उताला ॥
सेना अग्र गमन अधिकारी जाय गहो कपि हाला ॥ २४ ॥
विरूपाक्ष यूपाक्ष प्रघस अरु भास करण वर वीरा ॥
रश्मिमालि ये पंच निशाचर दल नायक रणधीरा ॥
संग सन चतुरंग अंग सजि घोर शोर कर धाये ।
कपि उदंड भुजदंड चंड दुहुँ ठोकि हियेहुलसाये ॥ २५ ॥
यातुधान हनुमान अंगपर अगणित शस्त्र प्रहारे ॥
रश्मिमालि तकि पंचबाण वर विशिख वीर तनु मारे ॥
तब केसरी किशोर गात निज करि भूधर सम भारा ॥
गिरेउछलि तिहिशीश निश्चरहि रथ हरि युत दलिडारा ॥ २६॥
विरूपाक्ष यूपाक्ष वीर दुहुँ तासु निधन लखि धाये ॥
कीश बाहु उर कोपि निशाचर मुद्गर अमित चलाये ॥
तब हनुमंत शाल द्रुम लैकै दोऊ भट हति डारे ॥
भासकर्ण अरु प्रघसहेरि सो क्रोधित आय प्रचारे ॥ २७ ॥
पट्टिश प्रघस घाल हनुमंतहि भासकरण हन शूला ॥
अपर अनेक शस्त्रधर निश्चर निकर कीशवपु हूला ॥
तबहि प्रभंजनपुत्र प्रबल भट गहि गिरि शृंग विशाला ॥
घालो यातुधान सो दोऊ मृतक भये ततकाला ॥ २८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि रथ रथनि तुरंग तुरंगनि दंती दंतिन मारे ॥
वीरन वीर विपुल गिरि वृक्षन दंतन नखन विदारे ॥
यौं संहारि सैन पुनिहनुमत जै कपीश कहि धाई ॥
बैठे धाय उताल शिखरपर रोमावली फुलाई ॥ २९ ॥
दोहा—पंचसैन नायक मरन, सुनि दशवदन रिसाय ॥
निज सुत अच्छकुमारका, दीनी वेगि रजाय ॥ ३० ॥
सो०—रावण सुत बलवन्त, अच्छसाज वर स्वच्छ सजि ॥
लै भट भीर तुरंत, धायो रत आरूढ़ ह्वै ॥ ३१ ॥

हरिगीतिका छंद ।

लखि अच्छ वपु छबितेज हनुमत वीर चित चकृत भये ॥
सो सपदि चापहि तान बान संधान त्रैकपि शिरहए ॥
जौलग प्लवंगम उठन चाहो तौ लगे शर जालते ॥
दिय झंपि अंगउताल दीनो शाल नख लग भालते ॥ ३२ ॥
कपि तकत इत उत जकत पुनि अवकाश रंच न पावही ॥
इमि अच्छ वीर निहार बान अपार विशिख चलावही ॥
हनुमान किय अनुमान निश्चर बाल पै बल भूरहै ॥
कह कीजिये इहि काल मोतनु शालनख शिख पूर है ॥ ३३ ॥
यौंकरि विचार सुवीर उछले व्योमदिशि सोऊ तहाँ ॥
चलि बाण वेधे लच्छ करि करि अच्छ कपि व्याकुल महाँ ॥
हनुमंत तब अतिरोष करि निज गात विपुल बढायके ॥
तल मारि स्यंदन वाजि युत तिहि दीन भूमि गिरायके ॥ ३४ ॥
पुनि उछलि निश्चर अंतरिच्छहि भिरो दुहुँ दोउन हनें ॥
तितहू प्रहारे शस्त्र अंग नितवीर भे व्याकुल घने ॥
तब क्रोध भरि हनुमंत अच्छहि वेगि पद गहि धायके ॥
आकाशतें धरि धरणि मारो सबल भूरि भमायके ॥ ३५ ॥
दशकंठसुत शिर कंठ भुज कटि जंघ पद खंडित परो ॥
दुहुँ अच्छ वच्छ सु ह्वै विदीरन अच्छ भट तच्छन मरो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लखि तासु वध निश्चर पराने कीश आय उतालही ॥
तिहि उच्च शिखर विराजकी नगराज दै भुज तालही ॥ ३६॥
दोहा–सुनौ दशानन अच्छ वध, भयो शोक दुख भूरि ॥
तब भाषी घननादसों, महाक्रोध उर पूरि ॥ ३७ ॥
जाहु पुत्र वर वीर तुम, गहि लावौ ईतकीश ॥
को आयो कपि ह्वै लखौ, कै यम कै सुरईश ॥ ३८ ॥
सुनत इंद्रजित साज सजि, आयो अतिहि उताल ॥
लखि हनुमत घननादको, किय घननाद कराले ॥ ३९ ॥
करो युद्ध बहु वीर दुहुँ, कांहुहि कोउ न जीत ॥
उत नृपसुत इत पवनसुत, दोऊ सबल अभीत ॥ ४० ॥
इंद्रजीत हिय हारिकै, किय ब्रह्मास्त्र प्रहार ॥
निज इच्छातें कपि गिरो, तासु प्रभाव विचार ॥ ४१ ॥
भूमि परतही वीरको, यातुधान बहु धाय ॥
सन द्रुम बल्कल रज्जुते, बंधन कीन दिढाय ॥ ४२ ॥
रज्जु निबंध न होतहीं, अस्त्र बंधभो मोच ॥
सोगुणिकै घननादके, हृदय भयो अतिशोच ॥ ४३ ॥
अस्त्र बंध जो होय तिहि, बंधन अपर न योग ॥
दूजो बंधन होतही, रहै न मंत्रनियोग ॥ ४४ ॥
इंद्रजीत इमि मनहि मन, सोचत करत विचार ॥
ताडत खैंचत कपिहि भट, लाये सभामझार ॥ ४५ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये सुदरकांडे सर्ग ॥ ४८ ॥ श्लोक ॥

ततः स्वायंभुवैर्मंत्रैर्ब्रह्मास्त्रं चाभिमंत्रितम् ॥
हनूमांश्चिन्तयामास वरदानं पितामहात् ॥ १ ॥
न मेस्य बधस्य च शक्तिरस्ति विमोक्षणे लोकगुरोः प्रभावात्
इत्येवमेवं विहितोस्त्रबंधो मयात्मयोनेरनुवर्तितव्यः ॥ २ ॥
सवीर्यमस्त्रस्य कपिर्विचार्य पितामहानुग्रहमात्मनश्च ॥
विमोक्षशक्तिं परिचिंतयित्वा पितामहाज्ञामवनुर्ततेस्म॥३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अस्त्रेणापि हि बद्धस्य भयं मम न जायते ॥
पितामहमहेंद्राभ्यां रक्षितस्यानिलेन च ॥ ४ ॥
ग्रहणे चापि रक्षोभिर्मह्यमे गुणदर्शनम् ॥
राक्षसेन्द्रेण संवादस्तस्माद्धन्तु मां परे ॥ ५ ॥
स निश्चितार्थःपरवीरहंता समीक्ष्यकारी विनिवृत्तचेष्टः॥
परैःप्रसह्याभिगतैर्निगृह्य ननाद तैस्तैःपरिभर्त्स्यमानः ॥६॥
ततस्ते राक्षसा दृष्ट्वा विनिश्चेष्टमरिंदमम् ॥
बबंधुःशणवल्कैश्च द्रुमचीरैश्च संहतैः ॥ ७ ॥
स बद्धस्तेन वल्केन विमुक्तोस्त्रेण वीर्यवान् ॥
अस्त्रबंधःस चान्यं हि न बंधमनुवर्तते ॥ ८ ॥
अथेंद्रजित्तं द्रुमचीरबद्धं विचार्य वीरःकपिसत्तमं तम् ॥
विमुक्तमस्त्रेण जगाम चिंतामन्येन बद्धोप्यनुवर्ततेस्त्रम्॥ ९॥
अहो महाकर्म कृतं निरर्थं न राक्षसैर्मंत्रगतिर्विमृष्टा ॥
पुनश्च नास्त्रे विहितेस्त्रमन्यत्प्रवर्तते संशयिताःस्मसर्वे॥ १०॥
अस्त्रेण हनुमान्मुक्तो नात्मानमवबुध्यते ॥
कृष्यमाणस्तु रक्षोभिस्तैश्च बंधैर्निपीडितः ॥ ११ ॥
हन्यमानस्ततःक्रूरै राक्षसैःकालमुष्टिभिः ॥
समीपं राक्षसद्रस्य प्राकृष्यत स वानरः ॥ १२ ॥
अथेंद्रजित्तं प्रसमीक्ष्य मुक्तमस्त्रेण बद्धं द्रुमचीरसूत्रैः॥
न्यदर्शयत्तत्रमहाबलंतं हरिंप्रवीरंसगणायराज्ञे १३॥इत्यादि

दोहा—रावणसभा विलोकिकै, चकित चित्त हनुमंत ॥
करजोरे ठाढे उचित, सुर अरु असुर अनंत ॥ ४६ ॥

प्र०॥ हनुमन्नाटके ॥ श्लोक।

ब्रह्मन्नध्ययनस्य नैष समयस्तूष्णीं बहिः स्थीयतां स्वल्पंजल्प बृहस्पते जडमते नैषा सभा वज्रिणः॥वीणां वारय नारद श्रुति-कथालापैरलं तुम्बुरो सीतारल्लकभल्लभग्नहृदयः स्वस्थो न लंकेश्वरः ॥ १४॥इंद्रं माल्यकरं सहस्रकिरणं द्वारप्रतीहारकं चंद्रं छत्रधरंसमीर वरुणौ संमर्जयंतौ गृहान् ॥ पाचक्ये परिनिष्ठितं हुतवहं किं नाम-नेहेक्षसेरक्षोभक्ष्यमनुष्यमात्रवपुषंरेराघवंस्तौषिकिम्॥ १५॥इत्यादि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–दशमुख साज समाज वर, तेज प्रताप सरूप ॥
निरखि सराहत मनहिं कपि, गुणत समस्त अनूप ॥४७॥
लंकनाथ हनुमानको, बल वपु तेज निहारि ॥
सोचत विधि हरि शंभुको, आयो कपितनु धारि ॥ ४८॥
यौं गुणि रावण छिनहि छिन, हेरत करि दृगबंक ॥
त्यौं उतंक तिहि लखत कपि, लोचन लाल निशंक॥४९॥
तब प्रहस्त प्रति दशवदन, कही सुबूझौ याहि ॥
वन भंजन किहि काज किय, क्यों आयोकोआहि॥५०॥
चौ०-सुनि प्रहस्तबूझीसबकीसै ❀ कह हनुमंत सुमिरि निजईशै॥
कपि हौं पवनपुत्र हनुमाना ❀ रामदासलघुकरतबखाना ५१॥
राज दरश हित विपिन उजारा ❀ निज तनु रक्षाहित दलमारा॥
जनकसुताहि लखनहित आयो ❀ पुनिकपीशशिखदेनपठायो ५२
यों प्रहस्त प्रति कहिकपि वंका ❀ पुनि बोलेरावणहिनिशंका ॥
निश्चरनाथ परमहित मानी ❀ अंगीकारकरियममवानी५३॥

सवैया कवित्त ।

लुकि कांजत है कहुँ नेकी बदी वह देखत है सबही गतिसाफै ॥
यह भूलि न जानियो जीमें कबौं जुकरैं हम काम सु कोउ न भाफै॥
रसिकेश इहाँ कछु जैसी करी तिहिमें तिलहू न घटै न इजाफै ॥
उत वैसिहि हेत तिहारे तयारहै ह्वां हरिके घर होत निसाफै ॥५४॥

दोहा–हौ निश्चरपति वेद विद, सकल ज्ञान गुणधाम ॥
तव हौं अति हितमानिकै, कहौं भजौ श्रीराम ॥५५॥
चौ०–शिबिका मध्य सियहि बैठारी ❀ दासी भावसकलतुवनारी
पुत्र बंधु युत निश्चरनाथा ❀ रामशरणगमनौ ममसाथा ५६॥
याहीमें सब भाँति भलाई ❀ नतरु वृथा तुव सकल नशाई॥
सुनि हनुमंत वचन दशशीशा ❀ कहीसम्हारिबोलतनहिंकीशा५७
राम लषण द्वै मनुज दुखारे ❀ त्यौं दुर्बलकपिभालुबिचारे ॥
जिनहिं सदा मम निश्चर खाहीं ❀ तिनके शरण वीर ह्वै जाहीं५८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब हनुमंत कही करि क्रोधा ❀ तू वेदज्ञ रंच नहिं बोधा ॥
हौं जानौं आयो तुव काला ❀ सुनि रिसाय बोलो दशभाला ५९
दोहा- है कटुवादी कीश अति; वेगि करौ वध याहि ॥
सुनि आज्ञा निश्चर उठे, लै लै शस्त्र उछाहि ॥ ६० ॥
तबहि विभीषण जोरि वर, भ्रातहि कही बुझाय ॥
नाथ नीति जानै सकल, दूत अवध्य सदाय ॥ ६१ ॥
वध कारागृह द्वै न अरु,इते दूत हित दंड ॥
अंग विरूप सताइना, मुण्डनादि सब चंड ॥ ६२ ॥
प्र० ॥ वा ०॥ सुं० का० स० ५२ ॥ श्लोक ।
वैरूप्यमंगेषु कशाभिघातो मौंडचं तथा लक्षणसन्निपातः ॥
एतान्हि दूते प्रवदंति दंडान्वधस्तु दूतस्य न नः श्रुतोस्ति ॥ १६॥
चौ० सुनि रावण तब नीतिप्रमाना ❀ कही बोलि निश्चर बलवाना
कीशहि पुच्छ परम प्रिय होई ❀ याते भस्म करौद्रुतसोई६३॥
सुनत अनेक निशाचर धाये ❀ जीरन वसन तैल बहु लाये ॥
कपि विचार युत पुच्छ बढाई ❀ यातुधान सो लखि रिसलाई
पुच्छ लपेटे वसन घनेरे ❀ सिंचि तैल बहु घट चहुँ फेरे६४॥
तामधि पावक दई लगाई ❀ चलेकपिहिलैढोलबजाई६५॥
नगर माहिं फेरो चहुँ ओरा ❀ कौतुकलखैंसकलकरिशोरा ॥
ताछिन इक तिय सिय ढिग धाई ❀ हनुमत दशा समस्त सुनाई६६
सो सुनि सीता भई दुखारी ❀ अतिउतालउठिलै करवारी॥
अनल दिपाय प्रदक्षिण दीना ❀ कहिवरवैनसत्यप्रणकीना६७
दोहा-मेरो मन वच कर्मते, सत्य पतिव्रत जोय ॥
तौ हनुमंतहि वेगही, अनल तोय सम होय ॥ ६८ ॥
यौं कहि मुख कपि ओर करि, सींचो अनल सुवारि ॥
शीत पुच्छ तच्छन लगो, वीर सुलयो विचारि ॥ ६९ ॥
चौ०-तब हनुमंत हीय ठहराई ❀ इमि औसर कब फेरि मिलाई॥
सो गुणि लघुतनु करि बलवंता ❀ बंधनते कढिनिमुकि तुरंता७०
प्रबल मेघ सम गर्जि कराला ❀ भये पर्वताकार विशाला ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बंध मोच लखि निश्चर भागे ❀ हनूमान अतिआनंद पागे७१
उछलि उताल उच्च गृह जाई ❀ प्रबल अनल चहुँ ओरलगाई॥
तहँ तेधाय अपर थल जारा ❀ कूदिसुधामऔरपुनिवारा७२॥
एक विभीषण सदन बचाई ❀ लंका अपर समस्त जराई॥
ताछिनु प्रबल पवन कियजोरा ❀ माचो नगर शोरअतिघोरा७३
धाय धाय चहुँ पवन कुमारा ❀ पैठि पंथ गढ सदन बजारा॥
लाई अनल उठी बहु ज्वाला ❀ छायो हाहाकार करारा ७४॥

दोहा—अमित निशाचर निश्चरी,जान साज आगार॥
अग्नि उतंक सुलंक चहुँ,लगी होत जरिछार॥ ७५॥
रावण अति व्याकुल भयो, जन धावत चहुँ ओर॥
जरत मरत भागत परत, करत सुआरत शोर॥७६॥
एक विभीषण भौन अरु, सिया रहैं जिहि ठोर॥
बचे दुहूँथल राम बल, लंक जरी सब ओर॥ ७७॥
इमि हनुमंत सुवीर वर, लंक नगर सब जार॥
अनल सिराई पुच्छकी,कूदि पयोधिमझार॥ ७८॥
मंजन किय तनु स्वेदजो, परो सिंधु महँ भूरि॥
सो सफरी भषिकै जनो, मकरध्वज बल पूरि॥ ७९॥
करत सुमंजन कीश उर, बाढो सोच अपार॥
भो अनर्थ जारो सकल, राखो कछु न विचार॥ ८०॥
नगर वाटिका बाग वन, गढ़ गृह पुर प्राकार॥
सब जारो हौं क्रोधवश, कियो सकल क्षैकार॥ ८१॥
सुरति न राखी सीयकी, हाय कहा मैं कीन॥
भयो अयश पातक मरन, अरु त्रिलोकपति हीन॥ ८२॥

दोवई छंद।

सीय मरन सुनि राम न जीवैं तिन बिन लषण न रैहैं॥
सोलखिकै सुकंठ तनु त्याग तब सब कपि जियदै हैं॥
सुनि उत भरत सबंधु मातगण युत समाज मृत होवैं॥
कीशवंश रघुवंश दुहूँ ये मो करणी वश खोवैं॥८३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो०—धिग मम जीवन जन्मबुधि, धिग धिग बलधिग क्रोध॥
धिग विद्या गुण रूप धिग, जो नहिं राखो बोध ॥ ८४ ॥
मोहि उचित सब भाति अब, प्राण त्याग इहि काल ॥
यौं सोचत विलपत अतिहि, व्याकुल अंजनिलाल ॥८५॥
तौ लग सुने सुबैन कपि, इत उत होत पुकार ॥
जरी वाटिका सिय बची, यह आचरज अपार ॥ ८६ ॥
उत सीता सब विधि कुशल, इतै विभीषण भौन ॥
बचे सु ह्वै थल अरु सकल, जरो सु कारण कौन ॥८७॥
सो०—सुनी गिरा हनुमंत, यौं तब कछु उर धीर धरि ॥
आये धाय तुरंत, निरखि सियहि प्रफुलित भये ॥ ८८॥
स्वामिनि पदधरि शीश, करी विनय बहु धीरदै ॥
तब सिय सहित अशीश, कहे वचन अति प्रीति युत॥८९॥
सुनि हनुमत शिरनाय, पाय रजाय अनंद युत ॥
रामचरण हिय ध्याय, चलि आये पुनि सिंधुतट ॥ ९०॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० लंकादहन-
वर्णनो नाम नवमो विभागः ॥ ९ ॥

दोहा—सागर तट हनुमंत कपि, गिरि अरूढ़ह्वै वीर ॥
पार गमन हित हर्ष युत, कीनो भीम शरीर ॥ १ ॥
अंग फुल्ल रोमांच भो, पुच्छ गुच्छ शिरधार ॥
कुधर चापि उछले सबल; गमने व्योम मझार ॥ २ ॥
सिंहनाद करि वीर कपि, नभ मंडल ह्वै जात ॥
सिद्धि भयो प्रभुकाज गुनि, छिन छिन हिय हरषात ॥३॥
सुर किन्नर गंधर्व मुनि, खड़े व्योम चहुँ ओर ॥
ताछिन कपिहि सुनाय कै, विनय करत कर जोर ॥ ४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

ऐसो ओज सुयश विराजै महि मंडलमें परम प्रचण्ड तनु तेज भूरि भानको ॥ जाकी कुलकीरति बखानैं राम आप मुख शेष हून गायसकैं ताके गुण गानको ॥रसिकविहारी सुखदायक सदाहीवीर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूजो जनपाल दानी करुणा निधानको ॥ दीननको त्राता मोद मंगल विधाता बहू ऋद्धि सिद्धि दातावंदों नाम हनुमानको॥५॥ संकट हरन दुष्ट दानव दरन छल छिद्रके छरन शोक सिंधुके तरन हैं ॥ अंबुज बरन बहु वित्तके भरन वेगि औढर ढरन दीन पालन करन हैं ॥ अशरन शरन सुभक्त उद्धरन जोम जंगके लरन पूरी पैजके परन हैं ॥ रसिकबिहारी हेतु सुफल फरन सदा ऐसे कपि केशरीकिशोरके चरन हैं ॥ ६ ॥ दाताहैं अतुल जन त्राता वरवंड बहु दुष्टनके घाता हैं प्रचंड सो घनेरे हैं ॥ रसिकबिहारी-के कलेशके निपाता सदा भक्त भय हाता चहुँ येही निरवेरे हैं ॥ केशरी किशोर रणरोर वर जोर वीर पकर पछारैं विघ्न जेते सब नेरे हैं ॥ वैरीबल भंजा उद्धखल दल गंजा धीर दीन मन रंजा ऐसे पंजा युग तेरे हैं ॥ ७ ॥ गिरि सो गंभीर प्राण हरत सुबीरनके बैरिन विदीरनको वज्र सों करेरोहै ॥ पव्वै सो परै है खल झुंडनके मुंडनपै परम प्रचंडित उदंड सो घनेरो है ॥ उद्धत अपार जाके बलको न वारापार रसिकबिहारी दीन रक्षक निवेरोहै ॥ केशरी कुमार निज वीरता विचार बीर दुष्ट हर जुष्ट रुष्ट पुष्ट मुष्ट तेरो है ॥ ८ ॥ भंजत अरिष्ट कोटि अति उतकृष्ट रहै दुष्टन तलिष्टनपै कुद्धित करेरी है ॥ दीनके अभिष्टनको पूरत वरिष्ठ वेगि अमित गरिष्ट इष्टवान हितहेरी है ॥ दृष्टको अदृष्ट औ अदृष्टहूको दृष्ट करै उतपति पालक सँहार सृष्टिकेरीहै॥ अधिक कुदृष्ट सदा रहत मलिष्टनपै रसिकबिहारी पै सुदृष्ट दृष्ट तेरी है ॥ ९ ॥ तूतो वीर सुखद सदाही दीन दासनको रसिकबिहारी हेत संपतिकीसैकरै ॥ मुष्टनसे मारकै बिदारत अतुष्टनको जोमजुष्ट रुष्ट पुष्ट दुष्टनकी क्षै करै ॥ चव चव डारत अखव गव गर्विनको विघ्नके कृतघ्नन-को मारि विघ्नतै करै ॥ येरे हनुमान बलमान गुणके निधान बेगि हो सहाय मेरी तूही नित्य जैकरैं॥ १०॥बंध जीभनिंदक प्रमादी औ चवाइनकी बंधढीठ मूठ भूत प्रेत रोग बंध बंध ॥ बंध दोष परकृत यंत्र मंत्र तंत्र बंध भानु भौम मन्द आदि कुग्रह सुबन्ध बंध॥बंध २ बुद्धि दुष्टनकी वाक्य बंध गति बंध दल खल झुंडनके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर पद बंध बंध ॥ बंध विष डाढ नख शृंग शस्त्र अस्त्र सबै वेगि वजरंग कुरु चराचर बंध बध ॥११॥ बन्ध बन्ध अनल अकाश जल थल बंध योगिनी मशान यक्ष गन्धरव बंध बंध ॥ बंध बंध शाकिनी औ डाकिनी पिशाचिनीको बंध वीरदानवसु ब्रह्मदेव बंध बंध ॥ बंध बंध काल औ कराल बैरी बंध बंध दीह दुख दारिद जु दुर्दिनको बध बंध ॥ बंध बंध सकल समर्थ खल झुंडनकी वेगि हनुमंत कुरु दुष्ट बल बंध बंध ॥ १२ ॥

माणिप्रवालरीति ।

देहि वरदानं वीर सम्प्रति यथेच्छितं हि कुरु चानुकंपां तव चरणौ भजाम्यहम् ॥ दुर्जनान् भंजय विभंजय सुदुर्दिनानि शृणु चांजनेय दीनवचसा वदाम्यहम् ॥ झटिति गृहाण हेऽनिलात्मज तवाशनाय कलुष दरिद्रारातियूथंप्रददाम्यहमपूरय सुवित्तं रसिकेशस्यानुमोदं दातुं पवनात्मजो मां पातु शिरसा नमाम्यहम्॥ १३॥ माकुरु विलंबं वीर संकटादुद्धारयाशु दासोहं तवास्मीत्यभियाचमानो दीनोहम् ॥ दिक्षु वितनोतु कीर्तिं विपुलां तनोतु लक्ष्मीं देहि रसिकेशस्याभिलाषं त्वदधीनोहम् ॥ निर्भयो हि भूमौ विचरामि भवदाश्रयेण सकलसुकर्ममनोवचनान्मलिनोहम् ॥ करुणाकटाक्षेणावलोकयाशु मां भो कपे नान्यं ॥ भावयामि पवनात्मजविहोनोहम् ॥ १४ ॥

दोहा–इमि अपार अस्तुति विविध, होत व्योम चहुँ ओर ।
सिय सुधि लै आनंद युत, जात वीर वर जोर ॥ १५ ॥
प्रबल पवन सम वेग बहु, मेघ सरिस कर नाद ।
सिद्धि काज भो राजको, यौं टेरत अहलाद ॥ १६ ॥

चौ०–जाम्बवंत अंगद बहुवीरा ❀ जे सब सागर उत्तर तीरा ॥
ते लखि वेग गर्जना भारी ❀ उठि उठि दक्षिणदिशा निहारी १७
कीनो सकलसत्य अनुमाना ❀ नहिं घन पौन सुहै हनुमाना ॥
काजसिद्धिकरिकैकपिआयो ❀ यह आनन्द शोर सरसायो १८॥
इमि भाषत तौ लग हनुमंता ❀ आये व्योम निकट बलवंता ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूरहिते कह कीश पुकारी ❀ हौं देखी श्रीजनकदुलारी ॥१९॥
यौं भाषत नभते गुणमाना ❀ गिरि पर कूदि परे हनुमाना ॥
हेरि अंगदादिक सब धाये ❀ यथायोग मिलि हियहुलसाये२०
हनूमान तब लघु वपु कीना ❀ कहि समस्त सबही सुख दीना॥
वीर पराक्रम सुनि हरषाहीं ❀ पुनि२ मिलन पवनसुतकाहीं२१
सिद्धिकाजगुणिकपिगणनाना ❀ किलकैं नवैं करैं बहु गाना ॥
धाय धाय सुंदर फल लावैं ❀ हनुमंतहि करि प्रेम खवावैं॥२२
छिन छिन सब हनुमतहिं सराहैं ❀ हेरि हेरि मुख हीय उमाहैं ॥
जाम्बवंत प्रमुदित यौं भाषे ❀ सकल प्राण तुमहीं कपि राखे२३

दोहा—कीश भालु गावत नचत, कहत सुनत वर वैन ॥
यौं हीं अति आनंदमें, तहँ बीती सब रैन ॥ २४ ॥
प्रात होत सब भालु कपि, जुरि बैठे इक ठाम ॥
करन लगे वर मंत्र तब, कह अंगद बलधाम ॥ २५ ॥
जिते भालु कपि हैं इते, ते सबही बलवंत ॥
पै रावण वध हेत बहु , कै हम कै हनुमन्त ॥२६ ॥
सो हम लंकहि जाय द्रुत सदल रावणहि मारि ॥
जनक सुतहि लै आवहीं, इते पृष्ठ निज धारि ॥ २७ ॥
पुनि चलि सब सानंद अति,रामहिं सौंपैं सीय ।
कपिपति रघुपतिकाज लखि, सिद्धि मुदित हो हीय॥२८॥

चौ०—ऋच्छराज सुनि अंगद बानी ❀ कही सुरीत नीत हितसानी
कीशपालरघुलाल सुदोऊ ❀ दीनी यह रजाय नहिंकोऊ ॥२९
सियदरशन आज्ञा जो दीनी ❀ सो प्रतिपाल पवनसुत कीनी ॥
याते मम संमत यह आई ❀ चलिदीजे सब प्रभुहि सुनाई॥३०
पुनि जिमि ईशरजायसु होई ❀ शिर धरि मुदित करैं सब कोई ॥
जाम्बवंतमत सकल सराहा ❀ उठे बीर भरिहृदय उछाहा॥३१॥
द्रुत महेन्द्र गिरितेसब वीरा ❀ उछले व्योम पंथ रणधीरा ॥
किष्किधा ढिग वेगहिआये ❀ सकल भालुकपिआनँद छाये३२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो मधुवन कपिपति प्रियकारी ❀ जिहिदधिमुखवानरबलभारी॥
कीशपाल मातुल सो धीरा ❀ रक्षैसदासहितभटभीरा॥३३॥

दोहा—आये मधुवन मध्य सब, लखे सरसफल भूर।
विविध पत्र मधु वेलि तरु, विमल नीर सुखपूर॥ ३४॥
हनुमानादिक वीर सब, लै युवराज रजाय।
पठ मधुवन मध्य द्रुत, कहि जैजै कपिराय॥३५॥

दोवईछंद।

धाय धाय चहुँ ओर सुवानर जाति महा उतपाती।
अशन करैं अरु तोरि बहावैं शाख फूल फल पाती॥
भंजै तरु गंजैं बर वेलिन मधु पीवैं किलकारैं।
भरैं द्रोण कर धरैं मत्तह्वै ढोरि महीतल डारैं॥ ३६॥
कोऊ चढि द्रुम धरि झकझोरैं कोउ शाखगहि झूमैं।
कोऊ इक तरुत दूजेपर उछलि बैठि तिहि दूमैं॥
कोऊ पुच्छ उठाय सुनावै कोऊ मुखहि बजावैं।
कोऊ छंद प्रबंध उचारैं कोऊ हँसैं जुगावैं॥ ३७॥
कोऊ मल्लयुद्ध हठि ठानैं बैठैं कोउ चुपाई।
कोऊ रुदनकरैं शिरकर धर सोवैं कोऊ जाई॥
गर्जैं कोउ शोरत कोऊ पौढैं मृतक समाना॥
इहिविधि कपि उनमत्त मोद युत विरचैं कौतुक नाना॥३८॥
घोर शोर मधुवन महि छायो सो सुनि दधिमुख धाये॥
लखि विध्वंस दंडगहि क्रोधित कीशनमारि भगाये॥
पुनि अंगद रुखपाय प्लवंगम हनुमदादि बलवाना॥
सन्मुख ह्वै सुकंठ मातुलके भये युद्ध अगवाना॥३९॥
रहे जिते वनपाल कीश तिन हनुमदादि वरवीरा॥
दंतन नखन तलन पद मुष्टन हनि हनि किये अधीरा
कहे विविध दुर्वचन सकल पुनि देव मार्ग दरशाये॥
अति अपमान जान सो दधिमुख रक्षक सकल बुलाये॥४०॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाषी क्रोध सहित हम जानी यह अंगद रुख दीना ॥
चलौ कहिय सुग्रीवहिं तब सब फल पावैं निजकीना ॥
यौं दधिमुख वनपाल सकल लैआये निपट उदासा ॥
ताछिन कीशनाथ जन संयुत रहे रामके पासा ॥४१ ॥
तहाँ आय मातुल कपि पतिके चरन गहे बिलपाई ॥
निज वाणी मधि कही सकल गति सुनि बोले हरिराई॥
वीर धीर हौ वृद्ध सयाने करौ न हिय कछु रोषा ॥
फल मधु अशन पान तिन कीने सो मम हिय अतितोषा ॥४२॥

दोहा–ताछिन लषण सुकंठसों, बूझो कह यह बात ॥
क्यों अधीर ह्वै वृद्धकपि, विनय करत बिलपात ॥ ४३ ॥
राम अनुज प्रति कीशपति, बोले हिय हुलसाय ।
मम मातुल ये मधुवनहि, दक्षैं सदल सदाय ॥ ४४ ॥
सो मधुवन फल फूल मधु, अंगदादि सब आय ॥
अशन पान किय मत्त ह्वै, कानन दियो नशाय ॥४५॥
बहुरि निवारत रक्षकन, ताड़कियो अपमान ॥
दरशाये निज देवमग, हैं वनपाल प्रधान ॥४६॥
सुनि हँसि बूझी लषण पुनि, यह तव कपि कुलमाहिं॥
कहा रीति सुनि कीशपति, वचन कहे तिनपाहिं ॥ ४७ ॥
देवमार्ग निज कीशको, कीश दिखावै जोर ॥
तौ दरशावै जाहि तिहि, भूरि निरादर होय ॥४८॥
याते दधिमुख वृद्ध कपि, मम मातुल वनपाल ॥
वीर प्रधानहि दुख भयो, कीश न करी कुचाल॥ ४९॥
पै या छिन उनमत्तकपि, कियो भूरि मधुपान ॥
पुनि मो मत सिय शोध दृढ, करि आये हनुमान ॥५०॥
सिय न लखी होती तु पै, करते इतो न द्वंद ॥
करि आये ध्रुव काज तब, छाके परम अनंद ॥५१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ० सुनि सुकंठ मुखते वरबैना ❀ मुदित भये दुहुँ राजिव नैना ॥
बोले रामसखा तव बानी ❀ हैं सत हमहुँ परत यह जानी५२
तब कपीश मातुलहि बुझाई ❀ कही वेगि मधुवन मधि जाई ॥
मम ढिग पठवो सबहिं उताला ❀ सुनिशिरनायगयेवनपाला५३

प्र० वा० सुं० कां० सर्ग ६१ ॥ श्लोक ।

प्रीतिमंतस्ततः सर्वेवायुपुत्रपुरःसराः ॥ महेंद्राग्रात्समुत्पत्यपुप्लुवुः प्लवगर्षभाः ॥१॥ प्लवमानाः खमाप्लुत्य ततस्ते काननौकसः ॥नंदनोपममासेदुर्वनं द्रुमशतायुतम्॥ २ यत्तन्मधुवनं नाम सुग्रीवस्याभिरक्षितम्॥अधृष्यं सर्वभूतानां सर्वभूतमनोहरम्॥ ३॥यद्रक्षतिमहावीरः सदा दधिमुखः कपिः ॥मातुलःकपिमुख्यस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ॥४॥ ततः कुमारस्तान्वृद्धान् जांबवत्प्रमुखान्कपीन् ॥अनुमान्य ददौ तेषां निसर्गं मधुभक्षणे॥५॥भक्षयंतःसुगंधीनिमूलानि च फलानि च ॥ जग्मुःप्रहर्षं ते सर्वे बभूवुश्च मदोत्कटाः ॥६॥ गायंतिकेचित्प्रहसंति केचिन्नृत्यंति केचित्प्रणमंति केचित् ॥ पठंति केचित्प्रचरंतिकेचित्प्लवंति केचित्प्रलपंति केचित् ॥ ७॥ ततोवन तत्परिभक्ष्यमाणं द्रुमांश्चविध्वंसितपत्रपुष्पान् ॥ समीक्ष्यकोपाद्धिवक्रनामा निवारयामास कपिः कपींस्तान् ॥ ८ ॥

पुनः ॥ तत्रैव सर्गः ॥ ६२ ॥

तेपि तैर्वानरैर्भीमैः प्रतिसिद्धा दिशो गताः ॥
जानुभिश्च प्रघृष्टाश्च देवमार्गं च दर्शिताः ॥१॥ इत्यादि॥

चौ० दधिमुख वेगहि मधुवनजाई ❀ कपिपति आज्ञासबहिसुनाई॥
ताछिन वनचरअतिअकुलाने ❀ निजअपराधविचारिडराने ५४
पुनि धरि धीरजसपदिसिधारे ❀ अंगद अग्रगण्य करि सारे ॥
उछले नभमारग ह्वै धाये ❀ अति उतालगर्जत कपिआये५५
गिरिवर पर युत सकलसमाजा ❀ राजत राम लषण कपिराजा ॥
ताछिन अंगदादि सब कीशा ❀ सादर आयनवायोशीशा५६
जाम्बवंत अंगद हुलसाई ❀ अति उताल वर गिरासुनाई॥
सिद्धि काज हनुमत करि लाये ❀ राघव कृपा कुशलसबआये५७

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि सुग्रीव सहानुज रामा ❀ मुदित भये गुणिपूरण कामा ॥
गदगद कंठ अंग पुलकाने ❀ प्रिया प्रीति रघुवर उमगाने५८
रही न धीर वीर दिशिहेरी ❀ निज समीप अतिआतुर टेरी ॥
सादर अंकलाय बैठारे ❀ राजकुँवर मृदु वचन उचारे५९

दोहा—कहां प्राण प्यारी सिया, भाषौ पवनकुमार ॥
हौं धाऊं अति वेगि तहँ, जहँ जीवन आधार॥ ६० ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

मेरी प्राणप्यारी तुम निज दृग देखी सत्य भाषौ वेगिनकहून शंक हिय राखौ वीर॥कितहैं कहाँहैं किहि देशकिहिभेष माहिं ग्राम नाम ठामधामवरणिधरावो धीर॥रसिकविहारीकहीजनकदुलारी काह जीवे किमि बाला कैसे सहत वियोग पीर ॥मेरोदिनरात विरहानल ज़रावै गात सपदि सिरावो वरसायकैसुबैन नीर॥६१॥

दोहा—तब हनुमान सुवीर वर, बोले दुहुँ कर जोर ॥
सिंधुपार लंका नगर, अनुपम दक्षिणओर ॥ ६२ ॥
तहां अमित निश्चर प्रबल, भूपति रावण नाम ॥
लै राखी सो जानकिहि, वन अशोकवर धाम ॥ ६३॥
परम प्रबंध अपार चहुँ, दशमुख राखत आप ॥
बिकट निश्चरिनमध्य सिय, बैठी करहिंविलाप॥६४॥
सत्य पतिव्रत धर्म युत, प्रभुपद सुमिरहिं सीय ॥
दरश आश करि छिनहि छिन, वरवस राखहिंजीय ॥६५
मोहिं रावरो दास दृढ, जानि महा सुखपाय ॥
मम स्वामिनि प्रभु हेत यह, विनय करी शिरनाय ॥६६
हौं दासी प्रभु चरणकी, दीन आपनी जानि ॥
मोहिं दरश दीजे सपदि, हौ सुभक्त सुखदानि ॥ ६७ ॥
भयो होय भारी जुपै, मोते कछु अपराध ॥
तौ सबही कीजे क्षमा, प्रभु उर दया अगाध ॥ ६८॥
मेरे मन वच कर्म नित, प्रभुबिन और न कोय ॥
पराधीन अबला दुखी, देखि कृपा द्रुत होय ॥ ६९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दरश आश द्वै मास लग, औरहु राखौं प्राण ॥
अवधि गये तनु त्यागिहौं, दुसह कलेश निदान ॥७०॥
यौं कहिकै हनुमंत पुनि, बोले दृग जल ढार ॥
जनकसुता दुख कहत प्रभु, मो हिय होत दरार ॥७१॥
सो सुनि रघुवर श्वास लै, हिलकि उसासि अकुलाय ॥
कही हाय ममवल्लभा, अब किहि भाँति मिलाय ॥७२॥
यौं कहिकै कपिओर लखि, दृग भरि ह्वै मुख दीन ॥
विरह प्रेम दुख सुख उमँगि, बोले निपट अधीन ॥७३॥
मम हित निज भूषण वसन, प्रिया न दीनो वीर ॥
विन पाये तिहि चिह्न कछु, मो उर धरै न धीर ॥ ७४ ॥
तब हनुमंत उताल अति, सिय भूषण सो दीन ॥
हेरतही उमँगाय कै, राजकुँवर कर लीन ॥ ७५ ॥
निज प्यारीके शीशको, भूषण दृढ पहिचान ॥
लीनो हृदय लगाय तिहि, अति अनंद उमगान ॥ ७६ ॥
ह्वै प्रसन्न बहु कपिहि पुनि, लायो अंक मझार ॥
बहु बखान हनुमानको, कीनो राजकुमार ॥ ७७ ॥

चौ०—पुनि रघुवीर धीर उर धारी ❀ जीवत सिय दृढ हृदयविचारी
तब बूझी कीशहि रघुवीरा ❀ लंक कथा वरणो सब वीरा॥७८॥
सुनि हनुमंत प्रभुहि शिरनाई ❀ सकल कथा विस्तृतनिज गाई॥
सुनि बोले कर जोरि सुकीशा ❀ यहतव कृपासकल जगदीशा७९
सुनि हनुमंत कर्म रघुवीरा ❀ अपर भालु कपि सब वरवीरा ॥
बुद्धि नीति बल भूरि सराहे ❀ सिद्धि काजगुणि हृदयउछाहे॥८०॥
इति श्री० रा० र० वि०वि० सीतासंदेशप्राप्तिवर्णनो नाम दशमोविभागः ॥ १० ॥

दोवईछंद ।

सुनि हनुमत मुखलंक कथा सब रघुनंदन धनुधारी ॥
सिया ध्यान करिकै सुकंठ सों मंजुल गिरा उचारी ॥
हे कपिराज आज अगहनकी असित अष्टमीनीकी ॥
पुनि नक्षत्र उत्तरा फालगुनि आश पुजावैं जीकी ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तदुपरि हस्त समस्त योगवर है: प्रशस्त शुभदाई ॥
पुनि मुहूर्त अभिजित यहि औसर अरु बहु सगुन जनाई ॥
ऐसे समय पयान अनी युत होय विजय चलिकीजे ॥
याते सखा वेगि कपि ऋच्छन गमन रजायसु दीजे ॥ २ ॥

प्र० ॥ वाल्मी० ॥ युद्धकांडे ॥ सर्ग ४ ॥ श्लोक ।

अस्मिन्मुहूर्ते सुग्रीवः प्रयाणमभिरोचते ॥युक्तो मुहूर्ते विजये प्राप्तो मध्यं दिवाकरः॥१॥ उत्तराफाल्गुनी ह्यद्य श्वस्तु हस्तेन योक्ष्यते ॥ अभिप्रायाम सुग्रीवः सर्वानीकैः समावृतः ॥ २ ॥ उपरिष्टाद्धि नयनं स्फुरमाणमिमं मम ॥ विजयं समनुप्राप्तं शंसतीव मनोरथम् ॥ ३ ॥ इत्यादि ॥

दोवईछंद ।

सुनि सुग्रीव बुलाय वेगि भट यथा योग समुझाई ॥
दई रजाय चले प्रमुदित सब कीश भालु समुदाई ॥
पवनसुवनके कंध राम लछमन अंगदके कांधे ॥
शोभित भये भ्रात दुहुँ गमने वरणि खंग कटिबांधे ॥ ३ ॥
पंथ सुधारत जात नील कपि भालु लक्षलै आगे ॥
कुमुद सदन शोधत मग चहुँ दिशि चलैं सजग सँग लागे ॥
तिन पाछे गज गवय गवाक्षहु गवनै अनी समेता ॥
ऋषभ वाहिनी सहित दाहिनी ओर सिधार सचेता ॥ ४ ॥
गंध हस्ति दुर्धर्षतरस्वी गंधमादनहि आदी ॥
चलैं वामदिशि बहु वीरन युत गर्जैं कोश प्रमादी ॥
बली सुषेण बेगदरशी अरु जाम्बवंत भट आछे ॥
विकट भालु कपि विपुल सहित वे गमन करत हैं पाछे ॥५॥
लै शतबली कोटिदश वानर अनी चहूँ दिशि चालै ॥
कपि शतकोटि पनस केसरि ल ते तिनहूँ प्रतिपालै ॥
इहि विधि विकट कटकचहुँ गमनै यथा उचित सह चेता ।
मध्य सबंधु राम तहँ कपिपति कीश अपार समेता ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीशभालुदल अमित भूमि नभ मारग मुदित सिधावैं ॥
नगर ग्राम आराम कृषी बहु गमनत सकल बचावैं ॥
होत शकुन शुभ निरखि राम युत हर्ष सबै मनमाहीं।
गर्जहिं कपि तरु गिरि गहि धावैं करि कलोल किलकाहीं॥७॥
कंद मूल फल फूल पत्र मधु अशन करैं हरषाई।
सब तरु वेलि सफल छाये चहुँ निज निज समय विहाई ॥
इहि विधि अमित भालु कपि संयुत राम सप्तदिनमाहीं।
पहुँचे आय उताल सिंधु ढिग दल छायो चहुँ घाई ॥ ८ ॥
चढि महेंद्र गिरिपर रघुनंदन लखि सबंधु वारीशा ॥
सादर दुहुँ कर जोर विनय युत ताहि नवायो शीशा ॥
पुनि तहँते वेगहि तट आये सब कह दई रजाई ॥
कियो वास कपि भालु त्रिमंडल उचित सु आयसुपाई ॥ ९ ॥
द्विविद मयंद नील नल आदिक लै कपि भालु अपारा ।
लखत फिरत महि व्योम सजग बहु चहूंसुभटरखवारा ॥
अपर अनेक प्रबंध यथोचित दृढ कीने सुग्रीवा ॥
नीति रीति भय प्रीति सहित सब रहे वीर बलसीवा ॥ १० ॥
योंथपि सैन त्रिदिन सागर तट रघुबर कियो निवासा ॥
बैठे लषण सुकंठ पवनसुत आदि रामके पासा ॥
ताछिन राजकुँवर दक्षिण दिशि निरखि नैन भरि नीरा ॥
लै उसांस कहि हाय लाडिली बोले निपट अधीरा ॥ ११ ॥
दोहा–अहो बंधु याही दिशा, हैं सिय प्राण अधार ॥
मिलन होय किमि बीच यह, परो नदीश अपार ॥ १२ ॥
हाय धरौं किमि धीर उर, काह करौं कित जाउँ ।
हौं किहि सौं विनलाडिली, यह निज दुख बतराउँ ॥ १३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

नैनजलगेरनि वा हेरनि अधीन ताकी बोलनि सुदीन ताकी नेक नहिं भूलै है ॥ प्यारे कहि टेरनि सनेहभुज भेरनि सो सकल छबीलीकी भुराई हियहूलै है ॥ रहि रहि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बार बार छिन छिन धाय धाय आय आय बिरहा सुरतिशूलशूले है ॥ रसिकविहारी सुखकारी प्राणप्यारी सदा रैनि दिन मेरे दृग दोउनमें झूलै है ॥ १४ ॥

दो०-पुनि मोहिय नित रैनि दिन, यह कलेश अधिकाय ॥
प्यारी वैस विलासकी, किमि वियोग सहिजाय ॥ १५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

नवल छबीली बाल गुण सरसीली मंजुमोदउमगीलीऔरगीली रूप वारी है ॥ रसिकविहारी तरुणाई अंग अंग छाई वैस वरआई चारुशोभा मनहारी है ॥ प्यारीको विधाता सुखऔसरदियोहैदुख किहि विधि रैहै प्राण अति सुकुमारी है ॥यदपि अनेकसोचसोचों पै सदाही एक सबतें कलेश यह मेरे उर भारीहै ॥ १६ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० का० क० ॥ स० पू० श्लो० ॥

न मे दुःखं प्रिया दूरे न मे दुःखं हृतेति च ॥
एतदेवानुशोचामि वयोस्या ह्यतिवर्तते ॥ ४ ॥

दोहा-यौं कहि निरखि सुकंठ दिशि, बोले जलभरिनैन ॥
प्यारीबिन मोको सबै, भये रहत दुखदैन ॥ १७ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

विरहभभूकैं तनुलूकैसी लगी हैंअतिमनसिजहूकैंअंगअंगनछई रहैं॥नीर औसमीर छाहँ चन्द्रनिशि चंद्रिकादिशीतलसकलवस्तु तपनि तईरहैं॥रसिकबिहारी कितजाऊँ हाय कासोंकहौंदशौदिशि देखौंतितै अनलमईरहैं॥यावसशरदहिम शिशिरवसंतमोहि प्यारी बिन सबै ऋतु ग्रीषम भई रहैं ॥१८॥उरकी उमाह सबजानतहि मेरीप्रिया नीकी भाँति जानौं हौं जु प्यारीके जिये रही ॥ रसिक बिहारी उरधारी जो विचारीबालसोऊरुचिकारीबातचित्तमेंदिये रही॥ हाय का उपाय कीजे अब न वसाय कछू भयोयहकाहअ-भिलाष का कियेरही॥ करी करतार ऐसीकहिंनकुचालजातेनिज

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निजचाह दोउ हियकी हिये रही॥१९॥लाज मरयाद पितु मातके सकोच वश जौलों रहों सदन न तौलौंचित्त दीनोंमैं॥बहुरि सिधारो वन तबते दुखारी अति सहित सुबंधु वेष तापसको लीनोंमैं ॥ रसिकविहारी सुख समय निरायो जब तब प्रथमैं ते भयो लाडिली विहीनोंमैं॥शूलैगी सदाही यह शूल उर मेरे हाय प्यारीको न प्यार कबौं जिय भरि किनोंमैं ॥ २० ॥

दो०—इमि विलखतहीं औचके, लखौ द्वितीया चन्द ॥
तिहि वन्दन करि उमँगि उर, पुनि बोले रघुनन्द ॥ २१॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

निपट निशंक आज द्वितिया मयंक बंक उदित उतंक सुखहेत नर नारिके ॥ संध्यासमै शोभित सुछंद जगवंदनीय रहत अमंद यौंहीं भाल त्रिपुरारिके ॥ निरखति ह्वैहैं उतै जनककिशोरी इतै हौंहूँ अबै दरश करोंहौं नभचारिके ॥ रसिकबिहारी इहि औसर भयेहैं आय दोऊ इकठोर दृग मेरे अरु प्यारीके ॥ २२ ॥

दोहा—यौं रघुवर अति सीयकी, विरह कलपना कीन ॥
सो लखि लषण सुकंठ दुहुँ, बहुविधि धीरजदीन ॥ २३ ॥
परम विवेकी बुद्धि निधि; राघव हृदय विचारि ॥
युद्ध समै लखि शोक तजि, रहे धीर उर धारि ॥ २४ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० लंकाप्रयाण-
वणनो नाम एकादशोविभागः ॥ ११ ॥

इति श्रीरसिकबिहारीकृत श्रीरामरसायनग्रंथे वियोग-
चरित्रवर्णनो नाम पंचमो विधानः ॥५ ॥

सो०—इत इहि विधि रघुवीर, सदल प्रबल वारीशतट ॥
कियो निवास सुधीर, सहसुकंठ हनुमत लषण ॥ १ ॥
उत दशमुख बलवंत, सहित सुभट निश्चर विविध ॥
करैं सुमंत्र अनंत, सुमिरि सुमिरि हनुमंत बल ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०–सभा मध्य बैठो दशभाला ❀ युत सुत सेवक बंधु विशाला ॥
ताछिन धाय चारि चर आई ❀ शीशनाय बोले अकुलाई ॥३॥
नाथ राम वारिधि तट आये ❀ संग भालु कपि दल युत छाये॥
सुनि हँसि कही मूढ़ अभिमानी ❀ कहा करैं तापस धनुपानी॥४॥
यौं कहि बहुरि निशाचर राजा ❀ बोलो करहु मंत्र दृढ़ आजा॥
सुनि वच यातुधान बहु यूथा ❀ भाषि उठेभट मुख्य वरूथा॥५॥
महाराज तव अमित प्रतापा ❀ तिहूँ लोक भुजबल यश व्यापा॥
देव नाग कोउ सकै न हेरी ❀ कहा भीति नर वानर केरी॥६॥
सुनि प्रहस्त दुर्मुख बलवाना ❀ कुंभ निकुंभ आदि भट नाना॥
लै कर शस्त्र अनेक कराला ❀ उठि बोले रावणहिं उताला॥७॥
अबहिं जाय हम आवहिं मारी ❀ सह नृप सुवन भालु कपि झारी॥
सुनि तिन दिशिलखिभौंह चढ़ाई ❀ कहे विभीषण वचनरिसाई८॥
बैठहु मूढ़ जाहु कित धाये ❀ बिन निज ईश रजायसुपाये ॥
यौं कहि पुनि भ्रातहि कर जोरी ❀ बोले वचन विनीतनिहोरी॥९॥

दोहा–नाथ सकल ये मंदमति, हैं अयान वश पान ॥
इनके वचन न मानिये, प्रभु बल बुद्धि निधान ॥ १० ॥
मो संमत उर आनिये, जिहि ते बहु हित होय ॥
रहै राज तनु कुटुम यश, नीक कहै सब कोय ॥ ११ ॥
सो गुनि गुण गनि दीजिये, सिय रामहि हरषाय ।
समर किये कह जानिये, धौंकिहिविजय मिलाय ॥ १२॥
बंधु वचन सुनि दशवदन, कछू न उत्तर दीन ।
सबहि सीष दै आप उठि, भवन गवन द्रुत कीन ॥ १३ ॥
तहां सदन एकांत मधि, बहुरि विभीषण जाय ॥
समझायो भ्रातहि विविध, प्रीत भीत दरशाय ॥ १४ ॥
कही जोरि कर तात इत, जबते आनी सीय ॥
तबते अशकुन होत बहु, सकल विचारिय जीय ॥ १५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हवन अग्नि नहिं दिपति पुनि, उठत धूम बहु श्याम ॥
झरैं अनल कन अरु शिखा, आहुति मंत्र निकाम ॥ १६ ॥
हवन पठन पूजन थलहि, दरशत व्याल कराल ॥
अशन पान साकल्य चहुँ, हो पिपीलिका लाल ॥ १७ ॥
सुरभी पयमद गजन को, सूखि गयो सब ठौर ॥
पुनि वसुदीन पुकारहीं, अश्वादिक बहु तौर ॥ १८ ॥
खच्चर ऊंट तुरंग नित, ऊरध रोम रहात ॥
पुनि रोवत दिन रैनिये, अतिहि विकल दरशात ॥ १९ ॥
बोलत काक उलूक बहु, रैनि दिवस खघोर ॥ ॥
गृद्ध देत मंडल सदा, पुर ऊपर चहुँ ओर ॥ २० ॥
पुनि दुहुँ संध्या समय नित, बोलत अशुभ शृगाल ॥
नगर द्वार सो क्रूर स्वर, करत आप मृग माल ॥ २१ ॥
ये लक्षण सूचक अशुभ, होत लंकके माहिं ॥
याते सीतहि दीजिये, राम सदल फिरि जाहिं ॥ २२ ॥
सुनि सुरारि क्रोधित कही, रामहि देउँ न सीय ॥
कहा करैं नर कीश मिलि: कछु न भीति मम हीय ॥ २३ ॥
यौं कह बहुरि विभीषणै, बिदा कियो दशभाल ॥
प्रात होत आयो सभा, चढि रथ अतिहि उताल ॥ २४ ॥
बंधु सचिव सेवक सखा, सुत हित अपर अपार ॥
दशमुख आज्ञा पाय सब, आये सभा मझार ॥ २५ ॥
बैठे सब सादर उचित, तब रावण वरिवंड ॥
सभहि सुनाय प्रहस्तप्रति; भाषे वचन उदंड ॥ २६ ॥
सीता दिये बिहीन जिमि, वेगि विजय निज होय ॥
इमि मतिवंत विचारि दृढ़, मंत्र करौ सब कोय ॥ २७ ॥
सुनि निश्चरपतिके वचन, कुंभकरण रिस लाय ॥
बोलत भयो उताल अति, दुहुँ दृग भौंह चढाय ॥ २८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोमर छंद ।

जब हरी सीय स्वतंत्र । किहिते कियो तब मंत्र ॥
अब काल शीश चढाय ॥ बूझौ उपाय बुलाय ॥ २९ ॥
सुन भ्रात हो कछु कार । जो करत विनहि विचार ॥
सो अंत अति पछितात ॥ दुहुँ लोक तासु नशात ॥ ३० ॥
पै जो भई अब बात । सो भई क्यों अकुलात ॥
हिय धीर धारहु नाथ । हौं मारिहौं रघुनाथ ॥ ३१ ॥
तब महापार्श्व उदंड । बोलो वचन खल चण्ड ॥
हे नाथ निश्चर राज । क्यों करिय दुख विनकाज ॥ ३२ ॥
प्रभु जाय कै निश्शंक । वरवस सियहि गहि अंक ॥
सजि राखिये रनिवास । रहिये मुदित सविलास ॥ ३३ ॥
तब कही दशमुखताहि । मुहि घोर शाप जुआहि ॥
परतिय रमौं बलठान । हो नाश द्रुत तनु प्राण ॥ ३४ ॥
सुनि अपर निश्चर भूर । बोले यथारुचि क्रूर ॥
ताछिन समैं लखि ऐन । भाषे विभीषण बैन ॥ ३५ ॥
विनवौं दुहूँ कर जोरि । हित बात मानिय मोरि ॥
प्रभु वेगि सीतहि देउ । निज हाथ भीच न लेउ ॥ ३६ ॥
सो सुनि प्रहस्त उमाहि । भाषी विभीषण पाहि ॥
नर भालु कपि कह बात । हम सुरन नाहि डरात ॥ ३७ ॥
तब रोष करि हिय माहि । भाषी विभीषण ताहि ॥
क्यों करहु सब मिलि नास । नहिं शुभ चहौ रहि पास ॥३८॥

घनाक्षरी कवित्त ।

तब कछु वीरता न कहू ते बनैगी नेक जब कपि भालु बीर धाय आय जूटैंगे ॥ ताछिन बचैना कोउ भागेहूँ त्रिलोक माहि जाही छिन राम बाण पन्नगसे छूटैंगे॥राघव विरोधी यातुधानके रहैं ना प्राण सहित समाज राजसाज सब खूटैंगे ॥ रसि कबिहारी सियदीनेही भली है बात नत बहु मुण्ड दधि कुंड सम फूटैंगे॥३९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोमर छंद।

यौंकहि दशानन बंधु ॥ भाषी बहुरि मतिसिंधु ॥
मंत्री जु तवसम होय ॥ तौ रहै भूप न कोय ॥ ४० ॥
दोहा–अज्ञानी लोभी निठुर, निकट न राखै कोय ॥
जो नृप सेवक होय इमि, तौ जावै सब खोय ॥ ४१ ॥

सवैया कवित्त।

भिक्षुक मान चहै तौ वृथा औ वृथा गति उत्तम चाहै जुकामी ॥
जो यश लोभी चहै तौ वृथा सुख चाहै वृथाहि कुमारगगामी ॥
यौं रसिकेश विचारौ हिये है वृथा जु पै मुक्ति चहै नरवामी ॥
त्यौं तिहिके सब काज वृथा जिहिके ढिग सेवक होय हरामी॥ ४२॥

दोहा–सेवक होवै दुष्ट पुनि, भूप मिलै मतिहीन ॥
तहाँ लाभ सुखराजकी, आशा तजैं प्रवीन ॥ ४३ ॥
पैं ऐसेही कुमति बहु, क्रूर मंडली माहिं ॥
बुद्धिमंत ज्ञानी गुणी, बडे सुवीर कहाहिं ॥ ४४ ॥
प्रथम बखानत फूलि जे, बडी बडी बहु बात ॥
ऐसे ते औसर परे, दरशत हैं कदरात ॥ ४५ ॥
इमि प्रहस्त प्रति वचन बहु, भाषे सबहि सुनाय ॥
बहुरि विभीषण बंक लखि, बोले रोष बढाय ॥ ४६ ॥
राम दूत कपि एकही, आयो हो हनुमान ॥
वीर मारि पुर जारिकै, गयो सबै बलभान ॥ ४७ ॥
कछु न बनी तब काहुते, अब बोलत बहु फूल ॥
राम कोपकी अग्निमें, वृथा होत क्यों तूल ॥ ४८ ॥
एक बेर जो कैसहू, जाते लहैं कलेश ॥
फेरि काज सो शंक युत, करैं विचारि हमेश ॥ ४९ ॥

सवैया कवित्त।

फेरि नहीं वह काम करै जिहिंते इक बेर कलेश लहे ॥
भीति हिये अति पैठि गई पुनि भूलि न लागहिंकाहूकहे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होरसिकेश सुदेश घनो तऊ चौंके रहैं चित चेत गहे ॥
छांछहु फूंकिकै पीवहिं ज्यों डरिके बहु जे जन दूध दहे॥५०॥
दोहा–पै सबही सिख सुमतिको, दीजे तौ भल होय ॥
क्रूर व्यर्थ मानी हठी, तापर वश नहिं कोय ॥ ५१ ॥
यौं कहि रावण बंधु पुनि, बोले सबहिं सुनाय ॥
हौं जानौ सब शीश पै, कालचक्र मडराय ॥ ५२ ॥
मम भाषित कटु बैनये, अतर हैं अति मिष्ट ॥
सबहि व्याधि मद ग्रसित हैं, याते लगैं अनिष्ट ॥ ५३ ॥
पै भाषौं मैं हाँकदै, सभा बीच प्रणठान ॥
राम विजय निश्चर अजै, ह्वै है यह ध्रुव जान ॥ ५४ ॥
याते अजहूँ है भली, सकल मंत्र करि आज ॥
चलि रामहिं सिय दीजिये, रहै प्राण कुल राज ॥ ५५ ॥
इहि विधि बहु कटुबैन वर, अंतर प्रीति समेत ॥
कहे विभीषण सचिव प्रति, भ्रात बुझावन हेत ॥ ५६ ॥
चौ०सुनतविभीषणवचन कठोरा ❀ चितवत दशमुखदृगकरिघोरा
तबहिं इन्द्रजित क्रोधित भाषी ❀ तातभ्रातलघुलघुमतिराखी५७
कही विभीषण तब करि क्रोधा ❀ मूढ अयान तोहि कह बोधा॥
जो तुहि मंत्र मध्य इत लायो ❀ सो खलवध लायकठहरायो५८
दोहा–मत्त बाल तिय मंदमति,हठी पिशुनखलवाम ॥
येते सभा अयोग पुनि, मंत्र मध्य कह काम ॥ ५९ ॥
तू खल पितु युत कालवश, हित अनहित नहिं जान ॥
यातुधान ये मदमति, करैं अन्यथा मान ॥ ६० ॥

चारिछंद ।

सुनिकै विभीषण बैन निश्चरपतिहि छायो कोप ॥
भाषीअरे मतिमंद तू कुलधर्म कीनो लोप ॥
पुनि शत्रुपक्ष बढाय निंदहि मोहिं तोहिं न शंक ॥
लखि बंधु क्षमहुँ अनीति नत वध योगहै खलरंक ॥ ६१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दश कंठ कहि कटु बैन बहु किय बंधुको अपमान ॥
तबहीं बिभीषण उठे निश्चर चार सँग बलवान ॥
लीने गदा कर उछलि बोले कुपित नभ पथ जाय ॥
हित वचन मानत अहित घेरो काल निश्चर राय ॥ ६२ ॥
कछु दिवस बीते होय गति सो देखिहौ दशमाथ ॥
तजिकै सकल खल दलहि हौं अब जात ढिग रघुनाथ ॥
यौं कहि विभीषण चहूँ निश्चर सहित कीन पयान ॥
सिय राम पद पंकजहि ध्याये हीय सुख उमगान ॥ ६३ ॥
दोहा—इत रावण दरबार ते, उठो गयो निज धाम ॥
उतै विभीषण राम ढिग, चले सुमिरि गुणग्राम ॥ ६४ ॥

इति श्रीरसिकविहारीकृत रामरसायन ग्रंथ युद्धविधाने
रावणसभामंत्रवर्णनो नाम प्रथमोविभागः॥ १॥

दोहा—रामचरण उर ध्यायकै, ठानि सुदृढ विश्वास ॥
चले विभीषण प्रभु शरण, छिन छिन होत हुलास ॥ १ ॥
मन प्रसन्न तनु पुलक अति, प्रीति न हृदय समात ॥
नैन नीर पग डगमगत, करत मनोरथ जात ॥ २ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

सुंदर ललाम सुखधाम अभिराम अति सेय वसुयाम उर आनंद बगारि हौं ॥ ऊरध कमल वज्र अंकुशादि चिह्नसबै परसि प्रमोदपा य शोक श्रमटारिहौं ॥ रसिकबिहारी रजनैनन लगाय नितलोचन सिराय निज जनम सुधारिहौं॥नाथहैं अनाथनके ऐसे रघुनाथ जू के दृग भरि आज पदपंकज निहारिहौं ॥ ३ ॥ मेटत सकल दुखद्वंद भ्रमफंद घने रहत अमंद सुखकंद छबि पेखिहौं ॥ जाहि लखि कोटि चंद होतहैं दुचंद मद ताहिमैं बिलोकौं धन्य सुकृति विशेषि हौं॥ दरशत भूलैं छलछन्दके प्रबंद सबै रसिकबिहारी युग पल सम लेखिहौं ॥ दशरथ नंदहैं अनंदके अनंददानि आज रघुचंदजूको मुखचंद देखिहौं ॥ ४ ॥ आयहैं लषण कपिरायहैं सुभाह भले पायकै रजाय धाय वेगही बुलायहैं ॥ देखि रघुराय

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुसकायकै बढाय प्रीति सुख सरसाय मीठे बचन सुनाय हैं ॥रसिकविहारी कृपा लायहैं दिवाय अभै मोद उमगायतनुतपनसिरायहैं॥ मुखदरशायक२कंजपरसाय शीश कौशलकिशोरआजमोहिंअपनाय हैं॥५॥पाऊँगो हमेश अंग वसन उतारेसबै दीन जानि अधिक कृपालु मन भाऊँगो॥भाऊँगो अहेर संग धाऊँगो बताऊँ पंथदुर्लभ पुनीत नित्य जूंठनको खाऊँगो॥खाऊँगो प्रसाद दासरामकोकहाँ ऊँ भलो रसिकविहारी तजि अनत न जाऊँगो॥जाऊँगोअवध निज जनम गमाऊँ तहाँ गाऊँगो सु कीरति परमपद पाऊँगो॥ ६॥धरम न जानौं सतकरम न जानौंकछू मरम नजानौं क्यों सुढार मोपैढारिहैं॥ रावणको भैयाहौं कुपंथकोचलैया पुनि लंकको बसैयाचित्तऔगुण जुधरि हैं ॥ जातिहौं निशाचर अरातिनकी पाँतिकोहौंरसिकबिहारी कौन भाँति मोद भरिहैं॥ लोक विधि वेद विधि एकहून जानौ राम किहि विधि मोको विधि अंगीकार करिहैं ॥७॥ जनम गमायो राम नामको न गायो कछू कीनो ना उपाय भवसिंधुके तरनको॥ शरनमैं जैहौं कौन वदन दिखैहौं हाय औगुण भरोहौं गुण एकौना शरनको॥ रसिकबिहारी है न आपनो भरोसो रंचकोसहाय शोक नद पारके करनको॥परौ मझधारबीच हौंतौ निराधार अबएकही अधार रघुरायके चरनको ॥ ८ ॥ एकही भरोसो दृढ आवत खरोसो यह उपल निषाद गीध अधम विचारे हैं । शबरी औ शाखामृग रीछ कौन वेदपाठी जाते इन ओर कृपा कोरतें निहारे हैं ॥ दीन हैं पियारे दीनबंधुको सुभाव मृदु रसिकविहारी सोई रक्षक हमारे हैं ॥ काहूते न घाट पातकी हौं क्यों तजैंगे मोहिं वेगि अपनैहैं जो पै इतने उधारे हैं ॥ ९ ॥

सो०—इहि विधि करत विचार, तनु पुलकत हुलसत हियो ।
बाढी प्रीति अपार, सियपति पदपंकज सुमिरि ॥ १० ॥
पहुँचे आतुर आय, दूतनसे मृदु यों कहो ।
अरज सुनावो जाय, कौशलराज किशोरको ॥ ११ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुरतहिं चरवर जाय, रामानुज कपिराज ढिग।
सादर शीशनवाय, विनय सुनाई तिनहिं सब ॥ १२॥
सुनत लषण कपिराज, चकित चित्त सोचत हिये ॥
कहा विभीषण काज, आयो है छल बल कछू ॥१३॥
समाधान करि हीय, जात भये रघुराज ढिग।
करि प्रणाम कमनीय, रुख विलोकि बोले वचन ॥१४॥
नाथ दशानन बंधु, नाम विभीषण ताहिको।
आयो करुणासिंधु, शरणागत सो रावरे ॥ १५ ॥
विहँसि कही रघुवीर, यह विचार कीजे कहा।
तुमहौ निपुण गँभीर, कहो उचित मत होय जो ॥ १६ ॥
बोले दुहुँ कर जोरि, प्रभु सन्मुख कहिबो न भल।
पुनि मम मति अतिथोरि, तदपि कहत बुधि बल यथा १७
एक निशाचर रूप, दूजे रिपुको बंधु है।
सुनिये कौशल भूप, मायामय सब काज है ॥ १८ ॥
तिहि राखिवो न योग, बहुरि रजायसु रावरी।
कहत सयाने लोग, रिपु प्रतीति नहिं कीजिये ॥१९॥
हँसि बोले श्रीराम, नीति उचित सो तुम कही।
दीनबंधु मम नाम, कहत घटित सो होय क्यों॥२०॥

सवैया कवित्त।

एकहु बेर पुकारत आरत दीनगिरा जनकी सुन पाऊं ॥
तौ तिहि ऊंच न नीच लखौं गहिकै भुज कंठहि वेगि लगाऊं॥
देउं अभैपद लोक तिहूं बिच ताहि कबौं छिन हूं न भुलाऊं ॥
सो रसिकेश सुकंठ कहौ शरणागतको किहि भाँति भगाऊं२१॥
गो द्विज घातक होय जुपै तजिकै छल जो शरणागत आवै॥
छोडि सबै जग प्रीति प्रतीति सु एकही मेरो भरोस दिढावै ॥
ज्यों धन रंकहि भावत है तिहिते अधिको मुहि सो हिय भावै॥
जो गति याचतहैं मुनिवृंद प्रयास बिना रसिकेश सुपावै॥२२॥
वेद पुराणनमें सबही शरणागतकी खट रीति बखानैं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नेम सदा अनुकूलहि को अरु वर्जन त्यों प्रतिकूलको ठानैं॥
राखै प्रतीत जु रक्षणकी अरु भाषै सुगुप्तकथाहि विधानै ॥
त्यौं रसिकेश जुअर्पहि प्राण सुदीन घनोरसहै यहजानै ॥२३॥
जो इतनी शरणागतमें विधि एकहु होय सुहै मुहि प्यारो ॥
सो बिछुरै छिनहूं न कबौंतिहिते पलहूभरि मैं नहिं न्यारो ॥
है षटरीति विभीषणमें अब सादर वेगि बुलाउ सवारो ॥
आवतही रसिकेश अभै करिलंकपती कहिताहि पुकारो॥२४॥
हे कपिराय सुनो मन लाय सुवाणि सदाकी कहौंनिज हीकी॥
जीव चराचर होय कोऊ दृढ़ प्रीति घनी मुहि लागत नीकी॥
रावरोहौं इक बेर कहै तिहिकी न मलीनता देखहुं जीकी ॥
नीति अनीति न मानौंकछू रसिकेश करौंसमनाकपतीकी२५॥
जो विचरैं छलछंदनमें नर भूलिहु सो मम भक्ति न पावै ॥
जो कुटिलाई विभीषणमैं शरणागत क्यों तजिकै सबआवै॥
यद्यपि हैं रिपु बंधु सही रसिकेश घनो मुहि सो हियभावै ॥
कौगुण औगुणको निरखै हितजानिहिये जिहि जो अपनावै२६
त्याग करै शरणागतको तिहिकी सम पातक और नहींहै ॥
रौरवनर्क परै भरि जन्म चहूँ युग चारहु वेद कही है ॥
आपनी होय कछू हितहानि घनो प्रतिपालन ताको सहीहै ॥
आवै विभीषणवेगि मिलौंप्रणमेरो सुएकहिआँकयहीहै ॥२७॥
दीन पुकारहिगो जबही सुनि कानन क्यों हिय धीर धरौंगो ॥
देखि दुखी शरणागतको तब आतुर धायके बाँहगहौंगो॥
मेटौं कलेश सबै तिहिको निरसंक ह्वै आपनी हानिसहौंगो ॥
मेरोहि एक भरोसोजिनैतिनकेवश मैं फिर काह कहौंगो ॥२८॥
योगी जपी द्विजदानीतपी नर नारी चराचरहोय जुकोऊ ॥
साँची सुप्रीति प्रतीतिविना मुहिं रंचहु हीय न भाषत सोऊ ॥
पावत है जग दुःख घने भ्रम भूल परे सुख नेक नहोऊ ॥
जो रसिकेश अनन्य भजैमुहिं सो शरणागतहैंप्रियदोऊ॥२९॥
एकहि वेर कहौं सुकहौं कहिकै पुनि औरको और न भाषौं ॥
कीनी कृपा जिहि पै तिहिपै अपराध निहार न रंचहुमाखौं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाहि लियो गहिकै अपनाय तिनै रसिकेश न भूलिहुनाथौं ॥
लावो कपीश विभीषणकोकरि देउँ अभैशरणागत राखौं॥३०॥
कोतिहिते अधिको प्रिय है तजिकै सबजो शरणागत आयो ॥
राजकुटुंब घने हित बंधु तिन तृणकी सम देखि भुलायो ॥
मेरोहि एक लयो अवलंब कहो किहि भाँति सो जात भुलायो॥
लंकको राज सु आजहि द्यौं रसिकेशजुहों अवधेशको जायो३१
दोहा–दीनबंधुके वचन सुनि, मंजुल मृदुल अनूप ॥
चले विभीषण पासको, रामानुज कपि भूप ॥ ३२ ॥
रामानुज कपिराज सों, बोले वचन रताल ॥
कहो कहा करिये अबै, भई रजायसु हाल ॥ ३३ ॥

नगस्वरूपिणी छन्द ।

सुकंठ शुद्ध यौं कही । सही जुनाथ ह्वै कही ॥
विचार काह कीजिये । बुलाय ताहि लीजिये ॥ ३४ ॥
कही सुराम बन्धुयों । विभीषणै बुलाउँ क्यों ॥
अराति भ्रात आयहै । कछू भली न लायहै ॥ ३५ ॥
कठोर घोरहै महा । नजानिये हिये कहा ॥
करै अकाज काजसो । डरै न रंच लाजसो ॥ ३६ ॥
कछू न फन्द लावतो । इते न भूलि आवतो ॥
सुबन्धु बीसबाहुको । हितू न जान काहुको ॥ ३७ ॥

तोटक छन्द ।

हँसिकै कपिराय सुबात । प्रभुसौं अपनो कछु जोरनहीं ॥
शरणागतको न तजैं कबहूँ । अपराध अनेक करै जबहूँ ॥ ३८ ॥
पुनि या सु उपायभली करिये । सुनिये गुनिताहि हिये धरिये॥
अब एक विभीषण आवतहैं । रघुराज तिनैं अपनावतहैं॥ ३९ ॥
अब नेक बिलंब नहीं करन । हम औ तुम दोऊ चलैं शरनैं ॥
गहिकै पदपंकज मोद भरैं।कहिकै प्रभु पाहि प्रणाम करैं ॥४०॥
शरणागत राखहिंगे जबहीं । करजोरि करैं विनती तबहीं ॥
यह मंत्र हिये दृढ़ठान भले । बहुरे रघुनायक पास चले ॥ ४१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रघुराज प्रसन्न विराजतहैं। लखि कोटि दिवाकर लाजतहैं॥
चहुँ पन्थ विभीषणको परषैं। लखि प्रीति प्रतीति हिये हरषैं४२॥

तोमर छन्द।

तहँ जाय लषण कपीश। कहि पाहि प्रभु जगदीश॥
आये शरण हम नाथ। अपनाइये गहि हाथ॥ ४३॥
सुनि वचन रघुकुलचंद। हँसि कही प्रभु सुखकंद।
आवो शरण निरशंक॥ लाय सुकर गहि अंक॥ ४४॥
कपिराज लषण बहोरि। बोले दुहूँ कर जोरि।
महराज सब गुणसिंधु। जनपाल आरत बंधु॥ ४५॥
आवत विभीषण एक। तिहि नाथ राखत टेक॥
आये सु द्वै हम शर्ण॥ अवलंबलै प्रभुचर्ण॥ ४६॥
अब एकको कहकाज। सुनि हँसि कहो रघुराज॥
वह शरण प्रथमहि आय। सोकहो क्यों तजिजाय॥ ४७॥
तुम औ विभीषण दोउ। मेरे सरिस प्रिय होउ॥
लावो बुलाय तुरंत। इमि कही श्रीसियकंत॥ ४८॥
तब चले लषण कपीश। कहि जति कौशलधीश॥
आये विभीषण पास। मिलि भेटि हृदय हुलास॥ ४९॥
गहि लषणके पदकंजु। अति सुखद कोमलमंजु॥
दुहुँ कर विभीषण जोरि। कीनो प्रणाम बहोरि॥ ५०॥
दीनो जु सुभगअशीश। हियहर्ष लषण कपीश॥
रिपुबंधुको अनुराग। लखि कहत दुहुँ बडभाग॥ ५१॥
सादर सुलै तिनसंग। बहुप्रीति उमँगत अंग॥
आतुर चले कुलदीप। कौशल किशोर समीप॥ ५२॥
पहुँचे तहां सुखकंद। राजत जहां रघुचंद॥
आनंद विभीषण धारि॥ कीनो प्रणाम पुकारि॥ ५३॥

घनाक्षरी-कवित्त।

राजनके राजा महाराजा कौशिलाकिशोररावरोप्रतापहैसदाहीं
दिन पंद्रमा॥हौं तौहौं अभागीभो शरण आय बडभागी नजरनकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिये कृपालु मम रंद्रमा ॥ रसिकविहारी अवलंब पद पंकजको लोक परलोककी न चाह जिय अंद्रमा ॥ कीजिये सनाथ हौं अनाथ रघुनाथ मोहिं पाहि पाहि पाहि रघुवंश वंश चंद्रमा॥५४॥ अधम अभागी अनुरागी हौं कुसंगतको जाति हौं निशाचरकुबंधु दशशीशको ॥नाम है बिभीषणविहायसुत दारागेहआयोहौंशरण अवलंब एक ईशको ॥ रसिकविहारी दीनबंधु अपनायमोहिं कीजे खास दास अब लषण कपीशको ॥ नाथ गुण गैहौं निज लोचन सिरैहौं भेद दैहौं सब मरम बतैहौं भुजवीशको॥५५॥श्रवण सुनीहै गिरा दीन यौं बिभीषणकी भरे जल नैन अंग पुलक जनायोहै॥ धीरज रहीना अति आतुर उठे कृपालु कृपा करि शीश करकंज परसायो है॥रसिकविहारी मृदुवचनसुनाय भले जरतविभीषणको हृदय सिरायो है॥ ताप अघ कीने दूरि आनँद दियो है भूरि राम घनश्याम गहि अंकसे लगायो है ॥ ५६ ॥

दोहा– यों लगाय सादर हिये, बैठारे निज पास ॥
बूझो सब वृत्तांत सो, वरणो सहित हुलास ॥ ५७ ॥
सुनि ताही छिन सिंधुजल, अति उताल मँगवाय ॥
करि अभिषेक विभीषणै, थपो लंकको राय ॥ ५८ ॥
सोलखि भूमि अकाश चहुँ, छायो जैजैकार ॥
कहत सबै को राम सों, वीर दयालु उदार ॥ ५९ ॥

चौ०-ताछिनअतिप्रमुदितकर जोरी ❀ बूझीकपिपतिप्रभुहिनिहोरी लंकप किये विभीषण नाथा ❀ आवै जुपैशरण दशमाथा६०॥ तौ प्रभु काहि लंकमधि राखैं ❀ अरुलंकापति किहिको भाषैं ॥ सुनि बोले रघुवीर कृपाला ❀ सत्य उदार धर्मप्रणपाला ६१॥ निश्चरपति विभीषणै कीना ❀ सकल राज्य लंका करदीना ॥ अब जो शरण दशानन आवै ❀ दीजे अवध राज सो पावै६२॥ तब हरीश बोले पुनि नाथा ❀ हैं नृप भरत कहा प्रभु हाथा ॥ सुनि रघुवीर कही सतबाता ❀ पै सुधर्म रत हैं ममभ्राता॥६३॥ भरत प्रतीत मोहिं दृढ़ जोई ❀ भाषौं बंधु करै दृढ सोई ॥ सुनि प्रभु वचन सबहि सुखमाना ❀ कहजैजैजैकृपानिधाना॥६४॥

इति श्री०रा०र०वि०यु०विभीषण शरणागत वर्णनो नाम द्वि०वि०॥२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चारीछंद ।

इमि करि विभीषणको तुरत अभिषेक श्रीरघुवीर ॥
पुनि कही उतरिय सिंधु किमि सो करहु मंत्र सुधीर ॥
तब ठनो सत्य विचार कीजे विनय सागर पाहिं ॥
सोई विचार बतावहीं जिमि सहज सब उतराहिं ॥ १ ॥
दृढ ठानि यह सरिनाथ तट रघुवीर दर्भ डसाय ॥
शिरनाय विनय सुनाय प्रण ठहराय बैठे आय ॥
सो लषण हिय न सुहाय पै कछु कहत भय वश नाहिं ॥
जिय चहत प्रभु रुचिपाय सोखों सिंधु छिन इक माहिं ॥२॥

चौ०-इमि सर्वज्ञ रामबलवाना ❀ सिंधु नीर बैठे प्रण ठाना ॥
ताछिन यातुधानपति दूता ❀ शारदूललखिचमूअकूता॥३॥
जाय विकल रावणहि सुनायो ❀ प्रभुकपिकटकसिंधुतटछायो॥
दशयोजन प्रमाण चहुँ फेरा ❀ परोरामदलकरिबहुघेरा ॥४॥
साम दान भेदादि उपाई ❀ करियवेगि वर दूत पठाई ॥
नतरु समर होइहि दृढ भारी ❀ प्रथमजतनयातेसुखकारी॥५॥
सुनि रावण शुक दूत बुलायो ❀ सिखै सुकंठ पास पठवायो ॥
कीशपाल मम बंधु समाना ❀ सोकिमिवृथासमरप्रणठाना ६॥
हम हरि लई राजसुत दारा ❀ पै कछु नाहिं तुमारबिगारा॥
याते जिय विचारि कपिनाथा ❀ जाहुभवनलैनिजदल साथा ७
सोनभ मग कपिपतिढिग गयऊ ❀ अंतरिक्ष रहि बोलत भयऊ॥
हे कपीश हौं तुव ढिग आयो ❀ लंकनाथमोकहँपठवायो ॥८॥
तब सुग्रीव कही कह बाता ❀ काह कहो दशमुखदुखदाता ॥
सुनि शुक सकलसँदेश सुनायो ❀ जोरावणतिहिसिखैपठायो॥९॥
सुनि तिहि वचन अपर कपि धाये ❀ उछल पकरि नभतेमहिलाये॥
ताडन करन लगे रिस धारी ❀ हनितलमुष्टिसुपंखउखारी॥१०॥
तब शुकदीनी राम दुहाई ❀ सुनि कृपालु तिहि दयो छुड़ाई ॥
सभय वेगि पुनि नभ पथ जाई ❀ बूझी कहौप्रभुहिकहजाई॥११॥
तब सुकंठ तिहि उत्तर दीना ❀ कहो जाय खल बुद्धि मलीना॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राम विरोध कुशल तव नाहीं ❀ लंकनशाय फेर हम जाहीं॥ १२॥
ताछिन वालितनय तिहिहेरी ❀ बोले बेगि गहो खल फेरी॥
यह सँदेश मिषते इत आयो ❀ भेद लेन दशकंठ पठायो॥ १३॥
सुनतहि कीश कूदि गहिलाये ❀ पुनि तिहि ताडि पंखविनशाये॥
तब शुकआरत विकल पुकारो।सुनि मुखमूँदि बहुरितिहि मारो १४
पुनि जिमितिमि चर वचनउचारा। प्रभुहि सुनाय सुकीन पुकारा॥
हैं निश्चर अघऔगुण खानी ❀ सदा अनीति रीति बहु ठानी १५
जनम मरन मधि पापजुमेरे ❀ भये होंय ते सकल घनेरे॥
मोकृत रामआप द्रुत पावो ❀ जुपैबेगिनहिं मोहिंबचावो॥ १६॥
सुनि प्रभु वेगि कपिनको वरजो ❀ दूत अवध्य होत जनि तरजो॥
पाय रजाय न ताडन कीना ❀ पै तिहिलंकजाननहिं दीना॥ १७॥

हरिगीतिका छन्द।

इहि भांति श्रीरघुवीर सागर तीर दृढ़ प्रणधारिकै॥
त्रैदिन बिताये अशन पान विहीन धर्म विचारिकै॥
जड सिंधुकछु नहिं दीन उत्तर राम तब क्रोधित भये॥
सोखौं समुद्रहि अबहिं यौंकहि वेगि कर धनुशर लये॥ १८॥
सजिबाण चापहि तान करि संधान जब घालन चयो॥
भय पाय मणिगण लाय जलनिधि आय तब चरणन नयो॥
कीनी बिनय सुनि राम बोले कहौ इषु कित डारहूँ॥
तव हेत धारो है अमोघ सुअब न याहि उतारहूँ॥ १९॥
सुनि सिंधु भाषी नाथ मोजल अमितहै मरु देशमें॥
तहँके निवासी पातकी मुहिं छुवत लहत कलेशमें॥
याते अतुल यह बाणते वह नीर शोषन कीजिये॥
प्रभुको रहै यश मोर दूरित नशाय सो चित दीजिये॥ २०॥
तब तीर सो रघुवीर तजि मरु नीर सागर शोषिकै॥
तिहि देश हित करुणानिधान जु दयो वर परितोषिकै॥
पशु अल्परोग विशाल होवै शीर रस बहु छावही॥
फल कंद मूल अतूल औषधि गंध अति उपजावही॥ २१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्र० ॥ वा० ॥ यु० ॥ का० ॥ स० २२ ॥ श्लोक० ॥

उग्रदर्शनकर्माणो बहवस्तस्य दस्यवः ॥ आभीरप्रमुखाः पापाः पिबंति सलिलं मम ॥ १॥ तैर्नतत्स्पर्शनं पापं सहेयं पापकर्मभिः॥ अमोघः क्रियतां राम अयं तत्र शरोत्तमः ॥ २ ॥ इत्यादि ॥

हरिगीतिका छन्द।

तब सिंधु प्रभुतापेषि बोलो नाथ करहुँ सहायहौं ॥
नल कीश विरचहिं सेतु ईश प्रताप उपल तरायहौं ॥
इमि भाषि सविनयजलधि गमनो राम अति आनँद लहो॥
अब वेगवारिधि बाँधिचलहु बुलाय नल नीलहि कहो ॥२२॥
सुनि ईश आयसु वेगिहीं कपि भालु चहुँदिशि धायकै ॥
बहु उपल तरु गिरि जाय भारी देन लागे लायकै ॥
सो लेहिं नल कर वाम डारत नीर दक्षिणते सजैं ॥
सुत बुद्धिबल अरु चातुरी लखि विश्वकर्मा हियलजैं ॥ २३॥
दिन प्रथम योजन चार दश पुनि द्वितिय बीस सुधारिकै ॥
साजो त्रितिय इकवीस चौथे दोय विंश सँवारिकै ॥
पंचम रचो त्रयविंश सो दश वितत आयत सतवनो ॥
लखि सेतु अनुपम शोर भो तिहुँ लोक जैजैजै घनो ॥ २४॥

चौ०-सेतबंधु पूरणको शोरा ❀ जैजैकार मचो चहुँ ओरा ॥
सुनिकपि ऋच्छजुतरु गिरिधारे ❀ जहाँ तहाँ अधबीचहि डारे २५
त्यौं इक गिरि हनुमंतहु डारा ❀ मधु दानवके देश मँझारा ॥
तिहि तजि चलन लगे बलवाना ❀ तबसों शैलनिपट दुखमाना२६
कपिहि कही भूधर कर जोरी ❀ सब गिरि ते करणी लघुमोरी॥
श्री रघुवर पद रजनहिं परशौं ❀ ऐसे समै फेर छब दरशौं॥२७॥
यातैं बीर कृपा उर लाई ❀ मोहिं देहु प्रभु निकट पठाई ॥
तबहनुमंत धीर तिहि दीनी ❀ बेगिआयगतिबिदित सुकीनी२८
सुनि रघुवर गिरि विनय सप्रेमा ❀ बोले होय तासु सब क्षेमा ॥
तितहीरहै धीर उर धारे ❀ कुधर मनोरथ पूजहिं सारे ॥ २९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-द्वापर युग यदुवंश मधि,हो अष्टम अवतार ॥
सब अभिलाषा पूजिहै,तब सो गिरि करधार ॥ ३० ॥
सुनि प्रभु आज्ञा पवनसुत, वेगि शैल ढिग जाय॥
कही लहो सुख सौ बहुरि,कपि आये हुलसाय ॥ ३१ ॥
भयो शोर चहुँ ओर अति,सागर बाँधो राम ॥
सुनि अबिलोकन सुर असुर,धाये तजि तजि धाम ॥ ३२ ॥

हरिगीतिका छंद।

सुनि उदधि बंधन कीशकृत दशशीश चित चकृत भयो ॥
तबहूँ न खल कछु भीति लायो रंचहू नहिं शिरनयो ॥
लखि सेतु रघुकुल केतु आनँद पाय वर वाणी कही ॥
इक रचहुसदन विशालइतहौं सविधिशिव थापौं सही॥ ३३ ॥
सुनि राम आयसु कपिन वेगि विशाल शिवआलय करो ॥
पूजन प्रतिष्ठा हित यथोचित साज सजि सबही धरो ॥
पुनि ज्ञान गुणनिधि मुनिन राघव बोलि यौं सविनय कही ॥
को वेद वर ज्ञाता प्रतिष्ठा सविधि सो ठानै सही ॥ ३४ ॥

पद्धरी छंद।

सुनि कही ऋषिन हे जक्तईश ॥ हैं अखिल निगम ज्ञाता मुनीश ॥
पैं तिहूँलोक रावण समान। वर बुद्धि वेदविद है न आन॥ ३५ ॥
तब कही राम निर्भय उताल। दशबदन पास चर जाय हाल ॥
सो ह्वै निशंक इत मुदित आय। वरसविधि शंभु थापन कराय ३६॥
सुनि राम बैन कह कपि प्रधान।नहिं उचित तासु आगम सुजान॥
माया निधान खल यातुधान।पुनि भूप वीर अरु रिपुमहान ३७॥
जो करहि आय मिलि नीचघात।तौ फेरि नाहिं कछु बनहि बात ॥
पुनि एक और कीजे विचार। सो मूढ मत्त मानी अपार॥३८॥
प्रभु दूत गये आवै न जोय।तौ वृथहि मान निज हानि होय॥
याते प्रवीन ये ऋषय वृंद ॥शिवथपहिं सविधि प्रभुयुत अनंद३९॥
सुनि विहँसि कहे रघुवीर बैन। सब कही नीति पै शंक है न ॥
हो कोउ सत्य वेदज्ञ जौन।बिश्वासघात सो करकबौन ॥ ४०॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौंकहि बुलाय वर कीश चार । भेजे सिखाय लंका मँझार ॥
सो जाय दशानन ढिग उताल । युतनीतिरीति भाषो सुहाल४१॥
सुनि यातुधानपति अति निशंक ॥ भाषी अनंद वाणी उतंक ॥
तुम चलहु दूत मैं अबहिं आय ।वरस बिधि देहुँ थापनकराय४२॥
तब यातुधान बोले विचार । नहिं उचित गमन रिपु दल मझार ॥
जो अवशि चलिय तौ सैन साजि॥भट शस्त्र संग गजमत्त वाजि ४३
सुनि कही लंकपति कछु न भीति । नीतिज्ञ राम न करैं अनीति ॥
यौं भाषि वेगि द्विज रूप धारि । गवनो अकेल निर्भय सुरारि॥४४॥
आयो विलोकि प्रभु द्विज सुजान।युतनीति रीति तिहि कीन मान ॥
भाषी सुवेगि जै शंभु हेरि ॥द्रुत हिय डसाय कुश कपिहि टेरि४५॥
करि विविध रीति संयुत प्रमान । दशकंठ कही पुनि समय जान ॥
हेराजपुत्र हो सुरुचि जौन ॥ सो कहिय करैंसंकल्प तौन ॥ ४६ ॥
सुनि सत्यसिंधु भाषी सुछिप्र ॥ हम विजय हेतु शिव थपहिं विप्र॥
दश मौलि सोई संकल्प ठानि ॥ थापे सुवेद विधि शूलपानि॥४७॥
रामेश्वर नाम सअर्थ जान ॥ दशकंठ धरो मुनि मत प्रमान ॥
पुनि राम हाथ पूजन कराय ॥ कीनों सुगौन गृह लंकराय॥४८॥
दशवदन बुद्धि विद्या निहारि । भे चकित सर्व कपि भालु झारि ॥
तिहि समयहरषि भार्षामुनीन।इनसकल वेद पर तिलककीन४९॥
पुनि राम लषण हनुमत कपीश॥लंकेश भालु कपि युत मुनीश ॥
पूजन समस्त विधि सहित कीन॥वर दरश पाय आनंदलीन५०॥
तब कहा वीर रघुवीर धीर ॥ जो हरखि चढ़ाइहि गंगनीर ॥
अथवा रामेश्वर दरश आय ॥ करिहैं सुमुक्त पैहैं सदाय ॥ ५१ ॥
सुनि सत्यसिंधुके सत्य बैन ॥ बोले समस्त जय कमलनैन ॥
पुनि राम मुनिन करि उचितमान।दीनीरजाय गे सकल थान५२
इति श्रीरामर० र० वि० यु० सेतुबंधनवर्णनो नाम तृतीयोविभागः ॥ ३ ॥

दोहा–इहि विधि सागर सेतु रचि,रामनाथ पधराय ॥
चले लंककपि भालु दल,रघुवर दई रजाय ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि प्रभु आयसु मुदितह्वै, गवनो कटक अपार ॥
दिवस तीनम सकल दल, भयो सिंधुके पार ॥ २ ॥
छाये चहुँ दिशि भालु कपि, गहि तरु कुधर सचेत ।
रहे व्यूह रचि राम मधि, बंधु सुकंठ समेत ॥ ३ ॥
कहि तब रघुपति कपिपतिहि, दीनो शुकहिछुटाय ॥
अति उताल सो रावणहि, वरणी सब गति जाय ॥ ४ ॥
पुनि शुकभाषी जोरिकर, समर किये भल नाहिं ॥
सियहि दीजिये बंधु दुहुँ, सकल धाम फिरि जाहिं ॥ ५ ॥
सुनि शुकबच दशमुख कुपित, कह तुहि कपिदुख दीन ॥
तिहि भय तव मति विकल अति, रिपु बल बहु गनिलीन॥
ताहिं निदरि इमि दशबदन, पुनि शुक सारन और ॥
तिनहिं बोलि आज्ञा दई, जाहु बेगि तिहि ठौर ॥७ ॥
बल विचार आचरन बुधि, अपर प्रबंध अनंत ॥
सकल भेद रिपुसैनदुरि, आवो निरखि तुरंत ॥८ ॥

चौ०सुनि शिरनाय चले शुकसारन ❀ दोऊ किये कीशवपुधारन॥
आयरामदल मधिमिलि डोलैं ❀ लखैं सकल मिलि काहुनबोलैं ९
तिनहिं विभीषण लखि पहिचाने ❀ गहि रघुवीर पास दुहुँआने ॥
सो सशंक नमि बचन सुनाये ❀ लंकनाथ प्रेरित हम आये॥ १०॥
किमिदलबलकिहिविधिकोकीशा ❀ लखहु रजाय दई दशशीशा॥
सुनि रघुवर लंकेशहि भाषी ❀ लावोसबदिखाय सँगराखी ११॥
तब दुहुँ साथ विभीषण जाई ❀ लाये दल समस्त दरशाई॥
पुनि तिनके करलषण प्रवीना ❀ रावण हेत पत्रालिखि दीना॥ १२॥
छोडिदये चर सभय सिधारे ❀ आय वेगि रावणहिं जुहारे ॥
कहि निज गति पत्री द्रुत दीनी ❀ वाम हाथ लंकापतिलीनी १३॥
सो पत्री मंत्री कर दीनी ❀ वेगि सुनावो आयसु कीनी ॥
सचिव प्रवीन रजायसुपाई ❀ बांचन लागो प्रभुहि सुनाई ॥१४॥

घनाक्षरी कावित्त ।

स्वस्ति श्रीचतुर दशबदन मुरारि योग पहुँचे लषण लेख जैश्री कौशलेशकी ॥ इत है कुशल उत मंगल चहौ तौ आय पाँय परि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाय देहु सुता मिथिलेशकी ॥ रसिकविहारी अपराध सब ह्वै हैं क्षमा दीन देखि दीनी सीख पत्री या सुदेशकी॥ नतरु कदंबसाज सहित कुटुंब राजनाश तुव होत बात जात है हमेशकी ॥ १५ ॥

दोहा–सो सुनि रावण हँसि तुरत, लेखक निपुण बुलाय ॥
पत्र लिखावत लषण हित, उत्तर सुमति दिढाय ॥ १६ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

स्वस्ति तूरज श्रीयुक्त तापस लषण योग लिपिकृत लंकनाथ जै श्रीत्रिपुरारीकी ॥ मंगल सदा है इत कुशल उतै है यहीसदनसिधारो निज आशा त्यागि नारीकी ॥ ताडका सुबाहु शंभुचापऔ जयंत तरु वाली है न जानियो समान सिंधु वारीकी ॥ रसिकविहारी साम दानको न काम कछू हिम्मतजुहो तो लखौ शूरता सुरारीकी १७

दोहा–लिखि उत्तर चरकर दयो, दयो सुलषणहि जाय ॥
पुनि आयो दशवदन ढिग, गमनो शीश नवाय ॥ १८ ॥
पुनि शुकसारन जोरिकर, कही नाथ कपिभूरि ॥
महाबली छिन एकमें, लंक मिलावैं धूरि ॥ १९
याते प्रभु दीजे सियहि, राम सदल गृह जाहिं ॥
यातुधान कुल रहनकी, और उपाय जु नाहिं ॥ २० ॥
सुनि रिसाय दशमुख तिनै, कहे विविध कटु बैन ॥
पुनि दुहुँलै प्रासाद मधि, गयो उच्च अति ऐन ॥ २१ ॥
तहँ ते लखि कपि भालु दल, शुकसारनहि बहोरि ॥
कही बतावो वेगि अब, सत्य शंक सब छोरि ॥ २२ ॥
तब उठाय सारन भुजा, करि अंगुलि निरदेश ॥
सकल बताये रावणहिं, कहि बुधि बल दल वेश ॥ २३ ॥
ताही विधि कपि भालुको, कुल थल बल गुण रूप ॥
कहो यथारथ शुक सकल, सुनो निशाचर भूप ॥ २४ ॥
पुनि शुक भाषी नाथहौं, कहँ लग करौं बखान ॥
अमित राम दल मुख्य पै, कछु संख्या इमि जान ॥२५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शत सहस्रके शतकको, कोटि कहे सबकोय ॥
कोटि सहसके शतकको, शंकुनाम है सोय ॥ २६ ॥
सहस शंकुके शतकको, महाशंकु है जान ॥
महाशंकुके सहसको, शतक वृंद पहिचान ॥२७॥
वृंद सहसके शतकको, महावृंद कहिजात ॥
महावृंदके सहसको, शतक पद्म ठहरात ॥२८॥
पद्मसहसके शतकको, महापद्म कह ज्ञात ॥
महापद्मके सहसको, शतक खर्व है ख्यात ॥२९॥
सहस खर्वके शतकको, कह समुद्र मतिधाम ॥
शतक समुद्र सहस्रजो, है महोघ तिहि नाम ॥३०॥
इमि संख्या मय भालु कपि, रहैं यूथपन पाहिं ॥
ते यूथप दल मध्य वर, पद्मअष्टदश आहिं ॥३१॥
ते सब बली समर्थ इमि, एकहि जीतै लंक ॥
इनते अपर अपार सो, समर उतंक निशंक ॥३२॥
चौ० सुनत क्रोधकरि दशमुख भाषी । दुहुँखलनेकशंकनहिं राखी॥
मो सन्मुख किय शत्रुबडाई ❀ हो हगओटवदनमसिलाई३३॥
सुनत दुहूं गवने शिरनाई ❀ भाषीं बहुरि निशाचर राई ॥
वेगि महोदर भेजहुदूता ❀ रिपुदलबलकरिआवहिं कूता३४
असन सैनकिमि कबै करांहीं ❀ राम निकटको सुभट रहांहीं ॥
हैं दलमधि किहिके सुतनाती ❀ पुनिकहहोतमंत्रदिनराती॥३५॥
सुनत महोदर दूत बुलाये ❀ शारदूल आदिक द्रुत आये ॥
पठये तिन दशवदन बुझाई ❀ चले वेगि सो रूपदुराई ॥ ३६॥
दलमधि आय भेद सब लीना ❀ ताछिन तिनहिं विभीषणचीना ॥
गहिताडे सो बहु बिलपाये ❀ सुनिरघुनायकवेगिछुडाये ॥३७
ते चर द्रुत रावण ढिग आई ❀ गति समस्त निज सभय सुनाई॥
शारदूल पुनि कह कर जोरी ❀ नाथरामसेनानहिंथोरी॥३८॥
गरुडव्यूह रचि भट समुदाई ❀ रहे सुबेलकुधर ढिग छाई ॥
यौं कहिशारदूल मति माना ❀ पूरब कथितसमस्तबखाना३९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनिदशमुखहिदूत नभिभाषी ❀ सियदै लीजिय लंकहिराखी ॥
रावण सुनत क्रोध बहुकीना ❀ शारदूल लखि मारगलीना॥४०॥
तबदशमुख कछुकरिदुचिताई ❀ कियो मंत्र मंत्रीन बुलाई ॥
ठनिविचारपुनिभवनसिधायो ❀ .विज्जुजीभनिश्चरतहँआयो ४१

दोहा—ताहि कही दशमुख झटित, सीतहि भीति दिखाव ॥
मायामय रघुनाथको, शिर धनु शर रचिलाव ॥ ४२ ॥
वेगि यथारथ विरचि सो, लायो लखि दशशीश ॥
भयो मुदित भूषण विशद, ताहि दियो बकसीस ॥ ४३ ॥
बहुरि दशानन जायके, मृषा सियहि भय दीन ॥
कही प्रहस्त सुराम को, रैनसैन वध कीन ॥ ४४ ॥
यौं दशमुख कहि वेगही, विद्युजीभ बुलवाय ॥
धनु शर शिर माया रचित, सियढिगदियोधराय॥४५॥
सो लखि सीता विकल ह्वै, भूमि गिरी मुरझाय ॥
रुदन करन लागी महा, लै शिर करि करि हाय ॥ ४६ ॥
तब बोलो दशमाथ अब, वृथा करो जनि सोच ॥
होहु नारि मम जानकी, मुदित रहो दुख मोच ॥ ४७॥
यौं सीतहि दिखराय भय, भवन गयो भुजवीस ॥
भयो गुप्त ताही समै, सो धनु शर अरु शीश ॥ ४८॥
चकित भई सिय सुगति लखि, हिय नहिं धीर धरात ॥
सरमा कही बुझाय बहु, यह खल माया बात ॥ ४९ ॥
यौं कहि सरमा गुप्त ह्वै, लंकहि जाय उताल ॥
लखि आई पुनि सीय प्रति, मुदित कही सब हाल ॥५०॥
सुनि हिय हरषीं मैथिली, सखिहि मिलीं भरि अंक ॥
सदल कुशल दुहुँ राजसुत, जानि भई निश्शंक ॥ ५१ ॥

इति श्री० रा० र० वि० यु०रावणदूत-
प्रेषणो नाम चतुर्थोंविभागः॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—सीतहि भय दिखराय जब, दशमुख आयो धाम ॥
सुनो शोर चहुँ ओर तब, कहत कीश जै राम ॥ १ ॥
गुणि रिपु दल बल प्रबलता, सबही वेगि बुलाय ॥
सभासदन जोरी सभा, कही कहौ ठहराय ॥ २ ॥

काव्य छन्द।

माल्यवान वर वैन तबै रावणहिं सुनाये।
अशकुन तबते होत नाथ जबते सिय लाये ॥
खर बोलत बहु क्रूर मेघ शोणित वरसावै।
वाहन दृग जल ढरत व्योम मंडल रज छावै ॥ ३ ॥
मांस अहारी जीव मृत्यु दुखकारि घनेरे।
जुरि घर पुर वन बाग घोर बोलैं चहुँ फेरे ॥
श्याम रूप तिय हँसहिं स्वप्न मधि करहिं अहारा।
पुनि दरशावैं भीति कहै कटु वचन अपारा ॥ ४ ॥
परसत नहिं बलिभाग कागतिहि श्वान भखावैं।
मृग पक्षी नित रोय अशुभ रव घोर मचावैं ॥
भवनन माहिं कपोत लवा सारिखा जुधावैं ॥
पुनि ये बहु तृण लाय तहाँ निज सदन बनावैं ॥ ५ ॥
तेइ परस्पर ग्रथित होय महि गिरैं सुयुद्धत।
दिन उलूक निशि काग विषम बोल रव उद्धत ॥
रुदन करैं मंजार श्वान दिन रैनि सदाहीं ॥
स्वप्नमाहिं नर नारि हँसैं अरु नृत्य कराहीं ॥ ६ ॥
मैथुन कर खर धेनु नकुल सँग मूषक ठानै।
श्वान साथ मंजार श्वान शूकर रति आनै ॥
किन्नर निश्वर संग फेरि नर नरन विहारैं ॥
नर नारि न इमि जीव विषम संभोगहि कारैं ॥ ७ ॥
सदन सदन प्रति साँझ समै इक पुरुष कराला ॥
मुंडित श्याम कुरूप लखै सबही नित हाला ॥
इते अपर बहु अशुभ चिह्न लंकामधि भासैं ॥
याते सीतहि देहु नतरु निश्चर सब नासैं ॥ ८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि रावण करि क्रोध निदारि तिहि कछु कटु भाषी ॥
तब मंत्री कहि जैति गयो निज गृह मन माषी ॥
सभहि बिदादै वेगि मुख्य सचिवन लै राजा ॥
दीनी रहसि रजाय जाय चहुँ सुभट समाजा ॥ ९ ॥
दोहा—करि विचार तब लंकपति, सचिवहि कही बुझाय ॥
यथा योग इमि द्वार मधि, चमू युद्ध हित जाय ॥ १० ॥
महापार्श्व बहु सैन लै, सहित महोदरबीर ॥
गहैं सुदक्षिण द्वार दृढ़, युद्ध करैं रणधीर ॥ ११ ॥
पश्चिम द्वार अनीकलै, मेघनाद बलवान ॥
होय समर अवरुद्ध सो, साजि शस्त्र तनुत्रान ॥ १२ ॥
सेनापती प्रहस्तवर, पूरव द्वारहि जाय ॥
युत अभंग चतुरंग दल, करै युद्ध हरषाय ॥ १३ ॥
शुक सारन बलवंत वर, संयुत सुभट अपार ॥
ठानैं दृढ़ संग्राम द्रुत, जाय सु उत्तर द्वार ॥ १४ ॥
वहीं द्वार उत्तर गहैं, अपर सुभट समुदाय ॥
होंतितहीं रघुवीर सों, संयुग करिहों जाय ॥ १५ ॥
विरूपाक्ष बहु बीर युत; मध्यरहै मति श्रेय ॥
द्वार द्वार प्रति सुरति लै, सबहि सहाय सुदेय ॥ १६ ॥
इहि विधि लंकापति उतै, थपे वीर चहुँ द्वार ।
इतै विभीषण राम सों, बोले वचन विचार ॥ १७ ॥
नाथ आज मम सचिव बहु, लाये लंक हवाल ॥
चहूँ द्वार मधि सुभट दल, थपो विकट दशभाल ॥ १८ ॥
सुनि रघुवीर सुमंत्र करि, दई रजाय सुहाल ॥
यथा योग कपि ऋच्छ चहुँ, घेरौ लंक उताल ॥ १९ ॥
रहैं चमूपति नील नल, सदल सु पूरब द्वार ॥
दक्षिण द्वार अनीक युत, रुद्धैं वालिकुमार ॥ २० ॥
हनूमान कपि सैन लै, घेरैं पच्छिम द्वार ॥
ऋच्छराज बहु सुभट युत, रहैं मध्य रखवार ॥ २१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हम सबंधु सुग्रीव अरु, लंकापति बलधाम ॥
उत्तर द्वार अनीकलै, करि हैं दृढ संग्राम॥ २२॥
इहि विधि दोऊ दल रुपे, यथा कथित चहुँओर ॥
जै रावण जैराम रव, छाय रहो बहु शोर ॥ २३ ॥
सुनि दशमुख निश्शंक अति, उच्च धाम चढिजाय ॥
लखो राम दल अमित पै, कछू न तिहिके भाय ॥ २४ ॥
तहँ बैठो दरबार करि, नृत्यगान बहु होय ॥
रावण युत मंदोदरी, मुदित पानवश जोय ॥ २५ ॥
इत सुवेल गिरि राम चढि, लखो लंक अभिराम ॥
चहूँ दिवाकरसे दिपत, कंचन मय बहु धाम ॥ २६ ॥
पुनि बिलोकि दक्षिण दिशा, घन दामिनि अभिराम ॥
चकित विभीषण प्रति कहे, मधुर वचन श्रीराम ॥ २७ ॥
इत हेरो लंकेश किमि, दामिनि दमकत आज ॥
उठे अनूपम जलद अरु, गरजत मधुर गराज ॥ २८ ॥
सुनत विभीषण जोरि कर, बोले वचन विशाल ॥
मेघ न चपला नाथ वह, तिय युत है दशभाल ॥ २९ ॥
छत्र मेघ सम लखि परै, दामिनि तिय ताटंक ॥
गरजै मृदंग अवाज सो, रावण सभा उतंक ॥ ३० ॥
सुनि रघुवीर सँधानि शर, छाँडो सहज सुभाय ॥
भूषण छत्र किरीट सो, इषुडारे महि जाय ॥ ३१ ॥
भूषणादिके भंगको, भेद न जानो कोइ ॥
सकल सभा रावण सतिय, चकित रहे चहुँ जोइ ॥ ३२ ॥
सोचत सब अशकुन भयो, ताहि निदरि दशमाथ ॥
गयो सैन मंदिर विहँसि, लै मंदोदरिसाथ ॥ ३३ ॥
रहसिपाय मंदोदरी, समुझायो बहु भाँति ॥
कही सपदि सिय देहु पिय, नातर लंक नशाति ॥ ३४ ॥
सुनि दशमुख वर नारिको, निजबल तेजसुनाय ॥
कही प्रिया जनि भीति करु, नर वानर कह आय ॥ ३५ ॥
इमि बुझाय बहु मुदित मन, रहो सकल निशि धाम ॥
अशन पान सुख सैन करि, लहो सतियविश्राम ॥ ३६ ॥

इति श्री० रा० र० वि० यु० दलथापनवर्णनो नाम पंचमोविभागः ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–पुनि प्रभात नितकृत्य करि,दशमुख बैठोजाय ॥
विशद उच्च प्रासाद वर, जुरे सभासद आय ॥ १ ॥
इत सुवेलगिरिते लखो,कपिपति निश्चरराय ॥
ह्वै सकोप तहँते उछलि,परे सभाबिच आय ॥ २ ॥
गिरि समान सुग्रीव वपु,औचक लखि सब कोय ॥
यातुधान रावण झझकि,उठे चकितचित होय ॥ ३ ॥
पुनि विलोकि कपि जानिकै,बैठे सबै सशंक ॥
ह्वै सकोप दशवदन तब,बोले निपट निशंक ॥ ४ ॥

तोमर छंद ।

रेकीश तू कहु कौन । कीनो इहाँ किमि गौन ॥
ठाढो कहा चुप होय । कहु विनय वेगि जुहोय ॥ ५ ॥
सुनिकै सकोप सुकंठ । भाषी सपदि सुनशंठ ॥
तूअजहुँ मोहिं न जान । कस जानि होत अजान ॥ ६ ॥
लीनो सखा प्रभु मान । हौंदास निज दिशि जान ॥
सुग्रीव नाम कपीश । तुवकालमैं भुजवीस ॥ ७ ॥
श्रीराम त्रिभुवन ईश । तिन सामुहे दशशीश ॥
बैठो सिंहासन आनि । राखी न तू कछुकानि ॥ ८ ॥
यौं कहि सुकंठ उताल । करि कीशकेलिसुहाल ॥
दशवदन मुकुट उतारि । दीने महीतल डारि ॥ ९ ॥
पुनि उछलि वेगि कपीश । गहि दशहु दशमुख शीश ॥
कर केश धरि झकझोरि । द्रुतकूदि खडे बहोरि ॥ १० ॥
दश वदन लखि रिसलाय । कपिपतिहि पकरिभ्रमाय ॥
पटको महीतलमाहिं । तिनभयो कछु श्रम नाहिं ॥ ११ ॥
भूपरतही बलवान । कपि उछलि कंदुक मान ॥
भरि वेगि दशमुख अंग । महिडारि दीन निशंक ॥ १२ ॥
पुनि उठि भिरो दशशीश । भरि क्रोध निश्चर कीश ॥
भे मल्लयुद्ध निरुद्ध । दोऊ सरिसबल उद्ध ॥ १३ ॥
दुहुँ करत दाँव अनेक । जीतन चहत इक एक ॥
कोऊ न मानत हार । बहु लरत भिरत प्रचार ॥ १४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुहुँ भिरहिं भुज भुज मेलि । दुहुँलेत दुहुँन सकेलि ॥
दुहुँ दपटि रपटत धाय । दुहुँ छपटि पुनि छुटकाय ॥ १५ ॥
दुहुँ देत झपक सुझांकि । खाली करत दुहुँताकि ॥
दुहुँ बगलह्वै कढ़िजात । दुहुँ भिरत पुनि विलगात ॥ १६ ॥
दुहुँ कढत दक्षिण बाउँ । पुनि करत निज निज दाउँ ॥
तल चरण मुष्टि प्रहार । दुहुँ करत दुहुँन प्रचार १७ ॥
दुहुँ जानु बीच दबाय । मर्दत भुजान रिसाय ॥
महि लगत काहु न पीठ । दुहुँ मल्ल शिक्षित ढीठ ॥ १८ ॥
दुहुँ गिरत उठत बहोरि । गहि भिरत अंगन मोरि ॥
दुहुँ चलत वक्र सुचाल । पुनि देत झपटउताल ॥ १९ ॥
दुहुँ भरत मंडल मंडि । इक एक पदगति बंडि ॥
धरि चक्र सरिस भ्रमात । रंचहु न कोउ श्रमात ॥ २० ॥
गहि एक एकहि रेलि । शिर शिरहि भेरत पेलि ॥
कटि गहत धरत सुकंद । भुजकंठ करत निबंध ॥ २१ ॥
दुहुँचरण दुहुँ उरझाय । चाहत सुदेहुँ गिराय ॥
पुनि बचत काटत दाव । लखिघात देत भुलाव ॥ २२ ॥
इक एक डारत भूमि । चढि पीठ मर्दहिंहूमि ॥
पुनि उछलि बलकरि झूमि । दै चक्र ठेलत घूमि ॥ २३ ॥
नभ ओर उछलत कीश । गहि पद पटक दशशीश ॥
लंगूर माहि लपेटि । कपि तिहि पछार समेटि ॥ २४ ॥
जे मल्ल युद्ध बखान । बत्तीस दाँव प्रमान ॥
गत प्रत्यगत वह सर्व । दुहुँ वीर करत सगर्व ॥ २५ ॥
दुहुँ अंग स्वेद प्रवाह । तनु धूसरित रज माह ॥
दुहुँ गात रुधिर बहात । नहिं श्वास उदर समात ॥ २६ ॥
पै थकत जकत न कोय । सब चकित दुहुँ बल जोय ॥
कपिराज निश्चरराज । दुहुँ तेज गुण सम साज ॥ २७ ॥
दुहुँ भिरे जात अकाश । महि परत पुनि दुहुँ आस ॥
दुहुँ गिरत परिखहि माहि । तितहूँ सकोप लराहि ॥ २८ ॥
पुनि दोउ उछलत आय । गोपुर सुयुद्ध कराय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इमि दंड द्वै दुहुँ वीर । किय मल्ल युद्ध सुधीर ॥ २९ ॥
कीने अनेकन दाव । जे चारि करन कहाव ॥
पै कोउ नाहिं हरात । छिन छिन दुहूँ अधिकात ॥ ३० ॥

प्र० ॥ वा ०॥ यु० ॥ कां० ॥स० ॥४०॥ श्लोक ।

मंडलानि विचित्राणि स्थानानि विविधानि च ॥ गोमूत्रिकाणि चित्राणि गतप्रत्यागतानि च॥ १ ॥ तिरश्चीनगतान्येव तथा वक्रगतानिच ॥ परिमोक्षं प्रहाराणां वर्जनं परिधावनम् ॥२॥अभिद्रवणमप्लावमवस्थानं सविग्रहम्॥परावृत्तमपावृत्तमपद्रुतमवप्लुतम् ॥ ३॥ उपन्यस्तमपन्यस्तं युद्धमार्गविशारदौ ॥ तौ प्रचेरतुरन्योन्यं वानरेन्द्रश्च रावणः ॥ ४ ॥

पुनः ॥ अन्यत्रापि ॥ भरतोक्तानि ॥

एकपादप्रचारेण चारिसंज्ञं तु मण्डलम् ॥ द्विपादक्रमणं यत्र करणाख्यं तु मंडलम् ॥ ५ ॥ करणानां समायोगात्खंडमण्डलमीरितम् ॥ खंडैस्त्रिभिश्चतुर्भिर्वा महामंडलमीरितम् ॥ ६ ॥ वैष्णवंसमपादं च वैशाखं मंडलं तथा ॥ प्रत्यालीढमनालीढं स्थानान्येतानि षण् नृणाम् ॥ ७ ॥ इत्यादि ॥

तोमर छन्द ।

दश वदन तब हिय ठान । माया करन अनुमान ॥
जानी सुगनि सुग्रीव । गो उछलि नभ बलसीव ॥ ३१ ॥
रघुवीर ढिग द्रुत आय । भेटे अनंद अघाय ॥
वरणो समस्त सुहाल । सुनि चकितभे कपि भाल ॥ ३२ ॥
दोहा–हिये लगाय सुकंठसो, कही नेहयुत राम ॥
यौं अकेल कोऊ सखा, जात शत्रुके धाम ॥ ३३ ॥
सुनि सुकंठ बोले कृपा, तुव जिहि पै दृढ होय ॥
ताको तीनहुँ लोकमें, करि न सकै कछु कोय ॥ ३४ ॥
सुनि सबही जै जै कही, छायो परमानन्द ॥
उत दशमुख सुग्रीव बल, वर्णत मुदितसुछन्द ॥ ३५ ॥

इति श्री० रा० र० वि० यु० रावण सुग्रीव-
मल्लयुद्धवर्णनो नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो०-लखि कपीश बल भूरि, सकल सराहत अमित विधि॥
सब हिय आनँद पूरि, राम विजय सूचित भई॥ १॥
चौ०-ताछिन कही लषण प्रतिरामा ❀ होइहि बंधु बिकट संग्रामा॥
विग्रह लक्षण बहु दरशावै ❀ इनके फल अति शीघ्र जनावैं २॥
घोर पवन चलि रज चहुँ छावैं ❀ सहजहिं नग तरु महि थहरावैं॥
गिरि घहरात लखियदिन तारा ❀ बिनघनगर्जन होत अपारा॥३॥
धूसर मेघ घोष कर भारी ❀ चंद्र चंद्रिका बहु तपकारी ॥
सांझ प्रभात अधिक अरुणाई ❀ नभ संध्या दारुण दरशाई॥ ४॥
रविते अनल झरै दुहुँ वेरा ❀ श्याम रक्त शशि मंडल घेरा ॥
उदै होत नित केतु अनेका ❀ कूर विशाल एक ते एका ॥५॥
चहूँ याम दिन दुर्दिन होई ❀ निशि मलीन शशि उड़गण सोई
रविपरिवेष लखिय लघुलाला ❀ पुनितिहिमंडलश्यामकराला॥६॥
तप्त नीर वरषा कछु होई ❀ शोणितबुंद सहित पुनि सोई ॥
भरे अयोग प्रसव बहु ठामा ❀ अपर अकर्म अमितवसुयामा॥७॥
वज्रपात वर्षा बिन होई ❀ काक गृद्ध युद्धत महि दोई ॥
इते अपर बहु अशुभ जनावैं ❀ रुंड मुंड धरणी चहुँ छावैं ॥८॥
दोहा-यौंकहि उतरि सुवेल ते, दल युत रघुकुलदीप॥
गिरि गहि उत्तर द्वारको, छाये लंक समीप ॥९॥
यूथप छत्तिस कोटि युत, दूरव कथित प्रमाण॥
घेरी लंक सुभालु कपि, अपर अमित बलवान॥१०॥
काहू तनु दशनाग बल, काहू शत गज मान॥
काहू सहस्र मतंग सम, काहू लक्ष प्रमाण॥ ११॥
हनुमत कपिपति वालिसुत, नीलादिक रिछराय॥
अपर मुख्य बहु भालु कपि, तिनबल अतुलसदाय॥ १२॥
यथा बली कपि भालुतिमि, यातुधान बलवान॥
अगणित भट दुहुँ कटक मधि, कोकरिसकै बखान॥१३॥
दुहूँ ओर भट दल रुपे, घोर शोर चहुँ होय॥
निज निज प्रभु आज्ञा चहत, धीर वीर सब कोय॥ १४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब रघुवर दृढ मंत्र करि, अंगदको समुझाय ॥
पठयो रावण पास द्रुत, राजनीति ठहराय ॥ १५॥
अंगद प्रभुपद नाय शिर, आये लंक मझार ॥
प्रविशतही भेटो तिनै, इक दशवदन कुमार॥ १६ ॥
दुहुँ बूझी दुहुँ बंक दुहुँ, बोले दुहूँ उतंक ॥
तिहि अंगद पद गहि पटकि, वध कीनो निश्शंक ॥ १७ ॥
वालितनय रावण निकट, पहुँचे जाय उताल ॥
निर्भय निपट विलोकि हँसि, बूझत भो दशभाल ॥ १८ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कोहै कपि दूत काको रामको सुराम कौन सोई तब भगिनीकी नासिका जु काटी है ॥ आयो कहाँ तेरेपास काहे शिषदेन काह होस कर क्यों तू दुरबुद्धि उदघाटीहै ॥ कीनोका सियाको हरि होका नाश कोकरै जु चौदहसहस्र चमू छिंद छिंद छाटीहै ॥ रसिकविहारी यौं निशंक बैनअंगदके सुनि यातुधान मति सकल उचाटी है ॥ १९॥ सभासद बोले सुनि बोलैंनाविचारि कपिआयो किहि काज ह्यां फिरैया मंदरनको ॥ तू है पशुकीश कहा जानैनृप नीति रीति तापै वनवासी औ निवासी कंदरनको ॥ रसिकविहारी यश जाहर त्रिलोक जाको जाकीभीति भागैं देव भौंन अंदरन को॥ निश्चराधिराज महाराजको समाज देख यह दरबार है न ऋच्छ बंदरनको ॥ २० ॥ सुनिकै उतंक बैन अंगद निशंक बोले सब मति बंक रंक मोहिं दरशावै है॥लोलुप लबार चोरनिपट कठोर घोर कायर कलंकी सदा कुयशी कहावै है ॥ बीसबीस पाये श्रौन नैन पैबधिरअंधऐसोमहापातकीजोप्रगटलखावै है ॥रसिकविहारी ताहि भाषौ महाराज वृथा सकल निलज्ज काहू लाज नहिंआवैहै २१ धिग वह बीरता बड़ाई चतुराई धिग धिग प्रभुताई जहँ लेश है न लाजको ॥ रसिकविहारी जो न भाषै सत्य ताको धिग होत है अनीति तहां धिग सब काजको ॥धिग बल रूप कुल विभव सुविद्याधिग सुयशदराजधिगराजधिगसाजको॥परतिय चोरीसदा कर हि ठगोरी जोरी धिगहै समाज धिग ऐसे महाराजको ॥ २२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-सुनि अंगदके वचन तब, दशमुख बहु रिस आन ॥
कही प्लवंगम मूढ़ तू, मो प्रताप नहिं जान ॥ २३ ॥
मो सन्मुख रवि तेजहू, होत सदा अतिमंद ॥
चंद्रहास असि भीति वश, स्रवत सुधा नित चंद ॥ २४ ॥
लोकपाल दिगपाल अरु, देवपाल नरपाल ॥
नाम सुनत दशभालको, सबही होतविहाल ॥ २५ ॥
यातुधान पतिके वचन, भरे भूरि अभिमान ॥
सुनि बोले तिहिनिदारिकै, वालितनय बलवान ॥ २६ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

जौलौं दशशीश भुजवीश ना नशाँय तौलौं चार दिन औरहूँ अनंद उर धरिले ॥ यरे मतिमंद निज वीरता बढ़ाय झूठी सकल वृथाहीं अभिमान हीय धरिले ॥ रसिकविहारी तोहिं जानत जहान जैसो होवै जो लबारी तिनैं फेरिहू उचरिले ॥ और तौ नकोऊतोकों नेकहू सराहै याते आपनीबड़ाई तूघनेरीआपकरिले ॥ २७ ॥ बोले पुनि अंगद अरे मलीन मंदमति भयो मतवारो तोहिरंचहूनचेतहै॥ कायर कलंकी निशिचारी अनाचरी चोर देव दुखकारी दुष्ट पातक निकेत है ॥ सीख या हमारीतू सुरारी शुभकारीमानरसिकविहारी होय भारी तुव हेतहै॥ त्यागि अभिमान सिय लैकै अगवान गहु रामपदग्रान क्यों वृथाही प्राण देत है ॥ २८ ॥

सो०-सुनि अंगदके बैन, कही दशानन क्रोध युत ॥
रे खल मौन रहै न, मोहिं सिखावत मंदमति ॥ २९ ॥
राज काज बहु युद्ध, किये करौं पुनि करहुँगो ॥
बुधि विद्या बल उद्ध, मोसमान को और कहु ॥ ३० ॥
तब युवराज प्रवीन, हँसि भाषी निश्शंक तिहि ॥
रे निश्चर मतिहीन, तोते हो शुभकाज कह ॥ ३१ ॥

सवैया कवित्त।

टीका कियो सब वेद पै तू हौं सुनी जु सबै वहबातअलीका ॥
लीका नहीं बुधिमंतनमें तुव द्रोही भयो तिहुँ लोकपतीका ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीकारहै मद पी नित लोलुप है यह धर्म न वीर गुनीका ॥
नीका करै कह काम निलज्ज तू भ्रात कहावत है नकटीका॥३२॥

तोटकछंद।

सुनिकै दशकंठ रिसाय कही। शठ हौं बहुती कटु बातसही ॥
खल तो शिर पै ध्रुव बीच नचै। भगुकीश न तौ अबप्राणबचै३३॥
इत बैठ घनी बकवादकरी। रजनीचर कोउ न हीय धरी ॥
यहतो रसना जुउतंक चलै। गहिभंजहिआयनिशंकमलै॥ ३४ ॥
सुनिकै तब अंगद रोषदहे। भ्रुकुटी करि बंक निशंककहे ॥
चुपहो बहु बांत बकैखलयों। तनहो प्रगटैसुनहींबलक्यों॥ ३५॥
जुभिरै मुहिते प्रण सत्य धरौं। द्रुतही दशकंठ विकंठ करौं ॥
तब पुत्र कलत्र जु भ्रातसबै। सहसैन लखात सँहात अबै ॥ ३६ ॥
इमि वालितनय कहि रावनसों। वरणी पुनिबातसिखावनसों ॥
सुन निश्चरनाथकहौं हितसों। ध्रुवमानहियेगुनिकैचितसों॥३७॥

घनाक्षरी—कवित्त।

बुद्धि ते विचार निरधार दोऊ सारासार स्वबल निहारकै सम्हार फेर रार करु ॥ येरे दशशीश बेगि जोरकर वीश लै सियाको संग शीशनाय ईशहीके पाय परु ॥ रसिकविहारी प्रभुदूत हौं सिखाऊँ तोहिं एकौ तू न जानै राम बाणको प्रभाव गरु ॥ चौदहसहस्रभाल भेद ताल छेदेहाल सोई तीर सिंधु शोखि नीरबिनकीनोमरु ॥३८ द्रोही क्यों भयो है मतिमंद रामचंदजूको येरे भुजवीशशीशनाहक लयो हैअघु ॥ अजहूँ भली है सियसौंप हठ छोड़ वेग राम रोष ज्वाल में न सहित कुटुंब दघु ॥ इन्द्र विधिवरुण कुबेर यम सूरचंद जाके डर डरत त्रिलोक तू कहाहै लघु ॥ रसिकविहारी वंश प्रभुता प्रसिद्ध जाने ह्वै गये प्रतापी कैसे चक्रवै नरेश रघु ॥ ३९ ॥ नूर ना रहैरे यो गरूर ना रहैरे लंक धूर ना रहैरे खल जोपै तुव ऐसीचालु॥ धीर ना रहैरे एको वीर ना रहैरे तीर ह्वै है पलमाहिं तोहि देखत सुयेही हालु ॥ येरे दशकन्ध वीस लोचन तऊ भोअंधहठतेवृथाही जनि सकल कुटुंब घालु ॥ रसिकविहारी हितकारी धनुधारीआज आये संग सबल अभंग दल कीश भालु ॥ ४० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोटकछंद ।

सुनिकै दशकंधर क्रोध कियो । कपि बैन सिखी करि दग्ध हियो ॥
द्रुत अंगद सों झहराय कही । शठ तू निज प्राण चहै कि नहीं ॥४१
कहु कीश कहा तुव नामकहै । किहिको सुत तू किहि ठौर रहै ॥
बतरात निशंक उतंक यहाँ ॥ खल रंक भयो मतिबंक महाँ ॥४२॥
तब वालितनयहँसि बैन कहे ॥ तुव वीसहु लोचन जातरहे ॥
तुहि रंचकहू नहिं सूझहिरे ॥ तिहि ते सुन मोहिं जु बूझहिरे ॥४३॥

घनाक्षरी कवित्त ।

अंगद है नाम मेरो धाम किषकिंधामाहीं नीकी भांति जानै यातुधान तू कपीशको ॥ वाली बलसीम भीम ताहीको सुवन जान आयो हौं मथन तेरे बल भुजवीसको ॥ तोहिं बिनशैया तुव सैनको नशैया इहि लंक उजरैया उखरैया दशशीशको ॥ देव दुखहारी दुष्ट दलके सँहारी वीर रसिकविहारी हौं सुदास जगदीशको ॥४४॥

सो०—सुनि भाषी दशशीश, रे कपि तुहि जानो अबै ॥
तू अजान शिशु कीश, मुहि जानत हो तव पिता ॥ ४५ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

देव औ अदेव शीश मेरीही रजाय एक देखि भुजवीश यमराजहू जकत है । वापुरो सुकंठ कपि रीछलै लरन आयो देखौ कालि बन्दर सो कंदर तकत है ॥ येरे कीश कोहै और मोविन त्रिलोक ईश जाको तेज निरखि सुरेशहू सकत है ॥ रसिकविहारी कहा मानुष विचारे दीन मौनहो लबार बार बार क्यों बकत है ॥ ४६ ॥

सो०—इमि कहि पुनि दशशीश, कह कपीश सुत तोहिं धिग ॥
अब न बोल कछुकीश, गति जानौं तुव ईशयुत ॥ ४७ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

येरे कपि मूढ क्यों बखानत बडाई बहु जाहिर जहान माँहिं जे तो हाल सारो है ॥ रसिकविहारी तू वही है जो पिताको नेक बदलो न लीनो औ सुकंठ साथ धारो है ॥ है सुकंठ सो जो बालि डरते भगो है बालि सोई जाहि रामएक बाणहीं ते मारो है ॥ सोई राम जाको देखि निपट निकाम बंधु वामके समेत बाप धामते निकारो ॥४८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-स्वामिनिंद सुनि क्रोधकरि, वालितनय बलरास ॥
चार मुकुट दशवदनके, गहि फेंके प्रभु पास ॥ ४९ ॥
तब निश्चर लखि अंगदहि, ताडन धाये कोपि ॥
कपि निशंक रघुवर सुमिरि, ठाढ भये पदरोपि ॥ ५० ॥
वीर निशाचर भूरि बहु, बलकरि बैठे हारि ॥
रामदूतको चरणते, कोऊ सकै न टारि ॥ ५१ ॥
तब सकोप कपि कूदि गहि, शिखर धाम प्रासाद ॥
वेगि विभंजिबहाय चहुँ, कियो सिंहसम नाद ॥ ५२ ॥
पुनि अंगद जैराम कहि, तहँत उछलि अकाश ॥
रिपुबल मंथन करि तुरत, आये प्रभुके पास ॥ ५३ ॥
शीशनाय कहि सकल गति, पुनि बोले युवराज ॥
दशमुख हठ त्यागै न प्रभु, तिहि शिरकाल विराज ॥ ५४ ॥

इति श्री० रा० र० वि० यु० अंगदरावण-
वर्णनो नाम सप्तमोविभागः ॥ ७ ॥

चौपैयाछंद ।

अंगदकी वानी सुनि धनुपानी बोलि कपीशहि भाषी ।
जो किय दशशीशा सो वह रीसा हौं बहु दिन हिय राखी ॥
अब देहु रजाई बहु भट धाई करैं समर निश्शंका ॥
कपि भालु उतंका हितिखलरंका वेगि नशावै लंका ॥ १॥
तबहीं सुग्रीवा बहु बलसीवाँ आयसु करी उताला ॥
सुनतहि भटभारी तरु गिरिधारी धाये कुपित कराला ॥
जैजै जगदीशा जैति कपीशा कहि कपि भालु अपारा ॥
चहुँ दिशिते जाई करि बरियाई कीनो पंथ सुढारा ॥२॥
तरु गिरिते भूरी परिखा पूरी पुर प्राकार ढहायो ॥
सो सुनि दशभाला करिदृग लाला मारो कपि न कहायो ॥
तब निश्चर यूथा विविध वरूथा चहुँ हथ्यार लै धाये ॥
दुहुँ दिशि वरयोधा भिरे सक्रोधा रण उमंग उर छाये ॥ ३ ॥
उतपट्टिसबाना परिघ कृपाना शक्ति शूल कोदंडा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नख दशन विशाला इत विकराला गहि गिरि तरु गिरिखंडा॥
निश्चर कपि ऋच्छन करि करि शिक्षन हनत भूमि हति पारैं ॥
तेखल दल झुण्डन रुंड सु मुंडन मर्दि गर्द करि डारैं ॥ ४ ॥
काटैं कपि दाँतन हनि तल लातन मुंड मुष्टिकन फोरैं ॥
बहु उपल चलावैं प्राण नशावैं पकरि गात झकझोरैं ॥
रजनीचर लक्षन करैं सु भक्षन शस्त्रन मारि गिरावैं ॥
इहिभांति परस्पर दुहुँ दल बल भर लरत न मनहिं फिरावैं॥५॥

चारीछंद ।

इमि यातुधान सुभालु कपिको होत समर मझार ॥
ताही समै पुनि औरहू धाई निशाचर धार ॥
तिन भिरतहींभो आय औचक द्वंद्व युद्ध अपार ॥
दुहूँ ओर सम बल वीर एकहि एक लरत प्रचार ॥ ६ ॥
घननाद अंगद जम्बुमाली पवनसुत बलसींव ॥
पुनि वज्रमुष्टि मयंद युद्धत प्रघस अरु सुग्रीव ॥
भट विज्जुमाली सँग सुखेन प्रजंघते संपाति ॥
प्रतपनहि नलसनि प्रभहि द्विविद निकुंभ नील भिरात॥ ७ ॥
वरवीर लछमन संग युद्धत विरूपाक्ष प्रचंड ॥
रघुनाथ साथहि अग्निकेतु सु रश्मिकेतु उदण्ड ॥
अरु यज्ञकोप कराल पुनि मित्रघ्न ये भट चारि ॥
इक एक ह्वै बहु समर कीनो हते तिनहि खरारि ॥ ८॥
अरु तपन गजसों भिरि विभीषण शत्रुहन बलवान ॥
इमि अपर निश्चर भालु कपि मिलि द्वंद्व युद्धहि ठान ॥
घननाद कर गहि गदा अंगद अंगकीन प्रहार ॥
सो छीन लै कपि सारथी रथ वाजि दीन विदार ॥ ९ ॥
हनुमंत उरमधि जंबुमाली हनी शक्ति प्रचंड ॥
तब कोपि कपि तिहि तल प्रहारो कीन शिर शतखंड ॥
भट वज्रमुष्टिहि मुष्टिकाते हनो वेगि मयंद ॥
महि सारथी रथ वाजि संयुत गिरो खल मतिमंद ॥ १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाणन विदारो गात कपिपति को प्रबस कारि खीस ॥
पत्री उखार विशाल सो तिहि हनो वेगि हरीश ॥
तजिबान विद्युनमालि वीर सुखेन विहवल कीन ॥
गिरिशृंग लै कपि तिहि प्रहारो भो विकल रथहीन ॥ ११ ॥
संपाति अंग प्रजंघ हनि शर तीन कीन विहाल ॥
तरुलै प्लुवंगम यातुधानहि दलो अतिहि कराल ॥
प्रतपन कियो बल धाय नलपहँ त्यौं सुकपि बल ऐन ।
हनि मुष्टि लातन बेगि नखन विदारि डारे नैन ॥ १२ ॥
पत्रीनते तनुछिंदि द्विविदहि विकल सनिप्रभकीन ।
तिहि कीश तरु हनि सारथी रथ वाजि युत हति दीन ॥
नीलहि विदारो शरनते जु निकुम्भ तब कपिधाय ।
रथचक्र तिहिलै सारथी तिहि शीश दीन नशाय ॥ १३ ॥
करि कोप निश्चर जबहि धायो लषण पै धनुतान ।
तबहीं विरूपाक्षहि हतो तिन वेगि एकहिबान ॥
तल गजहि ताडो तपन कपि तिहि नखन डारो फारि ॥
लंकेश लेकर खड्ग रिपुहन अंग दीन विदारि ॥ १४ ॥
इमि द्वंद्वयुद्ध अपार एकहि एक करत प्रहार ।
कपि भालु निश्चर हनतते तिन दलत विविध प्रकार ॥
बहु समर होतहि दिवस बीतो जबहिं अथयोभान ।
तब पाय निशि खल धाय भालु कपीन लागे खान ॥ १५ ॥
तमछाय कछु न जनाय निज पर नेक परहि न दीस ।
कपि बूझहीं तू रैनिचर बूझैं सु तू है कीस ॥
कपि कपिन निश्चर निश्चरन अरु ऋच्छ ऋच्छन मार ।
हत यातुधानन भाल कपिते तिनहि करहिं प्रहार ॥ १६ ॥
इत भालु कपि उत रैनिचरके रुंड मुंड अपार ।
छाये महीतल वाजि गज रथ शस्त्र समर मझार ॥
कटकटहिं मर्कट ऋच्छ गर्जहिं यातुधान कराल ।
दुहुँ ओर छायो शोर जै रघुलाल जै दशभाल ॥ १७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहु शंख झांझ मृदंग दुंदुभि तूर ढोल जुझाव ।
बाजत चहूँ वर बाजने सुनि बढ़त वीरन चाव ॥
भट लरत आछे पगन पाछे धरत भरत उमंग ।
महि गिरत पुनि उठि भिरत दुहुँ दल समर होत अभंग ॥ १८ ॥
चहुँ ओर शोणित धार धरणी धीर नाहिं धरात ।
वरवीर निश्चर भालु कपि तजि प्राण आश लरात ॥
भट इंद्रजीत उदंड लै सँग यातुधान अपार ।
शर शक्ति शूल कृपाणते कर भालु कपि संहार ॥ १९ ॥
शुक और सारन वज्रदंष्ट्र जु यज्ञशत्रु सुधीर ।
उद्धत महोदर महापार्श्व प्रचंड ये षटवीर ॥
रघुवीर सन्मुख युद्धहीं भरि क्रुद्ध हिय भरि मान ।
तिन सबहिं शरण विदारि नृप सुत कंठगत कियप्राण ॥ २० ॥
पुनि अपर निश्चर वीर बहु मारे समर रघुवीर ।
रणधीर लछमन यातुधानन हते सजि धनु तीर ॥
तिहि समय खल दल प्रबल रण थल विचल खलभल हेरि ।
कपि भालु भिरे प्रचारि प्रमुदित एक एकन टेरि ॥ २१ ॥
घननाद लखि निज सैन गति नभ मध्य जाय दुगय ।
छाँडन लगो शर विशिखते ह्वै व्याल लपटहिं आय ॥
रघुवीर लषण समेत नखशिख नाग फाँस मझार ।
द्रुतबाँधिडारे भूमि तल पुनि तजे तीर अपार ॥ २२ ॥
नल नील द्विविद मयदको शर तीन तीन चलाय ॥
रिछराज अरु हनुमंत प्रति दश दश हने रिसलाय ॥
पुनि शरभ और गवाक्ष आदि कपीन द्वैद्वै बान ॥
सुग्रीव अंगद अंग अगणित शरहने बलवान ॥ २३ ॥
अरु अपर बहु कपि भालु भट तिन यथा योग निहार ॥
वरबान मारे इंद्रजीत सुगिरे भूमि मझार ॥
इमि नाग फाँस प्रचंड सबहि निबंध करि हरषाय ॥
निज सैन संयुत जाय कहि गति गहे पितुके पाय ॥ २४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि मुदित दशमुख विजय निज लखि सुतहि लियहियलाय॥
चहुँ शोर छायो लंकमें जेंजेंति निश्चरराय॥
आनंद युत लंकेश वेगहिं प्रात सियढिग जाय॥
भाषो सदल सह बंधु मारे इंद्रजित रघुराय॥ २५॥

चौ०यौं कहि पुनि निश्चरिन बुझाई ❀ पुष्पकयानमध्यबैठाई॥
नभ मग ह्वै सीतहि लैजाई ❀ लावोद्भुतदिखाइदुहुँभाई॥२६॥
यौंकहि गयौ भवन दशभाला ❀ त्रिजटा लायविमानउताला॥
तामधि सियहि वेगि बैठाई ❀ दरशाये रामहि नभजाई॥२७॥
पतिगति देख रुदन करसीता ❀ त्रिजटहि बोलीवचन विनीता॥
हाय सखी अब मैं का करहूँ ❀ मरों गिरौं कैपावकजरहूं २८॥
अलि विधिना मोही पर रूठे ❀ भये शास्त्र द्विज वचनहु झूठे॥
तिय वैधव्य चिह्न जे आहीं ❀ ते ममअंगएकहू नाहीं॥ २९॥
केश न भूरे कुटिल कठोरा ❀ मुख न रोमवाणी नहिं घोरा॥
जुरी भौंह नहिं विरल न दंता ❀ अशुभ चिह्नयेतियपतिहंता३०
जंघन रोम नैन लघु नाहीं ❀ कर पद गुल्फ न विषमलखाहीं
नखनदीह सितश्याम जनावैं ❀ कुचनहिंविरलनशुष्कदिखावैं३१
पदतलसंधि न परत दिखाई ❀ कर पद अंगुलि विषमनआई॥
सब सौभाग्यचिह्न मम गाता ❀ तेनिष्फलकिमिकियविधाता३२
यौंकहिजनकसुता विलपानी ❀ तब त्रिजटा बोली मृदुवानी॥
राजकुमारि सोच जनि करहू ❀ भुवपति जियतधीरउरधरहू३३
मुख न मलीन तेज नहिं हीना ❀ पुनि कपिभालुनदेखिय्यदीना॥
याते धीर धरौ वैदेही ❀ जियत बंधुयुत तवपतिनेही ३४॥
यौंकहि पुष्पकभूमिउतारी ❀ लै सिय पूरव थल बैठारी॥
सोचविवससीता अकुलाहीं ❀ छिनछिनतिनहिंकल्पसमजाहीं३५

दोहा-इत सिय सोचति विकलअति, करि दुहुँनृपसुतशोच॥
उत दशकंठ समेत सब, मुदित निशाचरपोच॥ ३६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छायो लक अनद अति, दुखित भालु कपि वृंद ॥
इंद्रजीत शरबंध परि, विकल भये रघुचंद ॥ ३७ ॥
अपर भालु कपि विवशबहु, ता छिन चहुँ दिशि धाय ॥
कियो विभीषण वेग ही, उचित प्रबंध दिढाय ॥ ३८ ॥
पुनि लंकेश कपीश ढिग, आय लखो बेहाल ।
ले जल मंत्रित करि तुरत, सींचे नैन उताल ॥ ३९ ॥
परसत नीर सुकंठके, नैन खुले भो चेत ।
लिय लंकेशहि लाय उर, कहे वचन वर हेत ॥ ४० ॥
पुनि रामहि सुग्रीव लखि, कियो विलाप अपार ।
धीर दई लंकेश तिन, कहिकरि विविध विचार ॥ ४१ ॥
यों कहि पुनि लंकेश चहुँ, जाय सबहि दै धीर ॥
थापे सैन प्रबंध हित, कीश भालु बहुवीर ॥ ४२ ॥
तौ लग दिनकर उदय भो, मिटो सकल तम घोर ।
लखि निजदल गति भालुकपि, विलपिकियोबहुशोर ४३ ॥
ताछिन कछु मुरछा मिटी, रघुवर खोले नैन ।
करि विलाप लखि बंधुगति, कहे सुकंठहि बन ॥ ४४ ॥
हाय सखा हौं बंधु बिन, नहिं राखौं निज प्राण ।
भयो न है नहिं होइ गो, भ्राता लषण समान ॥ ४५ ॥
यौं कहि भाषी राम मुहिं, सोच आपनो हैन ।
सोच विभीषणको जुहौ, कहो राज्य वर दैन ॥ ४६ ॥
पै कह कीजे हे सखा, भावीते न वसाय ।
जाहु सदन अब संगलै, कीश भालु समुदाय ॥ ४७ ॥
यौं कहि विलपत विकल ह्वै, रघुवर दृग जल ढार ।
ताछिन आये लंकपति, करि चहुँ सैन सम्हार ॥ ४८ ॥
निरखि रामको विकल अति, ऋच्छ कीश विलपात ।
धरो धीर कपि पति कही, युद्धसमै अकुलात ॥ ४९ ॥
ताछिन बोले वालिसुत, मोहिं न कछू लखाय ।
दृग न लगे शर तात कहँ, लषण सहित रघुराय ॥ ५० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि सुकंठ कह वीर सुत, धरौ धीर हिय माहिं ॥
लखि लंकापति राम दिशि, बोले कपि पति पाहिं॥ ५१ ॥
हाय कहा अब कीजिये, दुहुँ नृप सुवन विहाल ॥
हम सब भये अनाथ अरु, प्रमुदित भो दशभाल ॥ ५२ ॥
अंक लगाय विभीषणै, तब बोले कपिराज ।
धीर धरौ हिय लंकपति, हौं करि हौं सब काज ॥ ५३ ॥
हति दशकंठहि कुलसदल, तव अभिषेक कराय ।
सियहि अवधलै जाहुँगो, राम लषण दुहुँ भाय ॥ ५४ ॥
तौ लग कछु मुरछा जगी, लहो सुचेत सुखेन ॥॥
लखि कपीश तब ससुर प्रति, कहे वचन भरि नैन ॥५५॥
व्यथित भालु कपि ते सबै, अरु दुहुँ राजकुमार ॥
किष्किंधा लै जाहु तहँ, कीजो सकल सम्हार ॥ ५६ ॥
हौं इत रावण सदल हति, दै विभीषणै राज ॥
जनक सुतहि लै वेगहीं, ऐहौं सहित समाज ॥ ५७ ॥
सुनि सुखेन कह बात भल, पै औषधि इक जोय ॥
आवै तौ दुहुँ बंधु युत, विरुज सकल दल होय ॥ ५८ ॥
क्षीरसिंधु तट द्रोणगिरि, तामधि औषधि आय ॥
मथन भयो सागर तबै, प्रगटी अमित प्रभाय ॥ ५९ ॥
स्वर्ण करी संजीवनी, अरु विशल्य कर जान ॥
ते औषधि द्रुत लावहीं, पवन तनय बलवान ॥ ६० ॥
इमि सुखेन जामात प्रति, कही सुतौलग भूर ॥
पवन वेग छायो चहूँ, उडी धूर नभ पूर ॥ ६१ ॥
ताछिन चितये चौंकि सब, आय गये खगराज ।
परसत पौन सुपंखकी, दुरे व्याल सब भाज ॥ ६२ ॥
आय गरुड दुहुँ बंधु तन, परसो भये अनंद ।
लखि सब दल रुजहीन कह, जै जै जै रघुचंद ॥ ६३ ॥
मिलि सप्रेम दुहुँ बंधुको, कहि बहु बैन सुदेश ।
सबहि विरुज करि वेगही, जात भये विहँगेश ॥ ६४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रसिकविहारी विरुज ह्वै, राम लषण सब वीर।
ल धनु शर तरु गिरि समर, उद्धत भये सुधीर ॥ ६५ ॥
रसिकविहारी मुदित ह्वै, वानर भालु अपार।
किलकैं कूदि कलोल करि, कह जैराम पुकार ॥ ६६ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० नागफाँसवधमोचन
वर्णनो नाम अष्टमोविभागः ॥ ८ ॥

भीम छन्द।

दशवदन सुनि कपि भालु कृत बहु शोर। भेजे तमीचर भेद हित चहुँ ओर ॥ तिन कही तिहि अकुलाय वेगहि आय। अहि फाँसते छूटे सदल दुहुँ भाय ॥ १ ॥ चित चकित भो युत इंद्रजित दशभाल। बाढो सुनिश्चर निश्चरी उरशाल। सरमा उताल सिधाय वरणो हाल। सुनि मिली सीय सखीहि भई निहाल ॥ २ ॥ लंकेश वीर सुधीर धरि करि हंक ॥ धूम्राक्ष प्रति भाषे सुवैन निशंक ॥ द्रुतजाहु लै बहु सुभट सुभट प्रवीन। नृप सुतन मारौ सहित भालु कपीन ॥ ३ ॥ धूम्राक्ष लै भट विपुल साज सजाय। रथ बैठि गमने भये अशकुन आय ॥ सो वीर कपि दल मध्य जाय तुरंत। मर्दन लगो बहु भालु कीश अनंत ॥ ४ ॥ तिहि देखि लै गिरि शृंग पवनकुमार। घालो सुतजि रथ आय भूमि मँझोर ॥ गहिगदा निश्चर कपिहि कीन प्रहार। पुनि वीर बहु गिरि तरुन धरि धरि मार ॥ ५ ॥ अरु अपर निश्चर कीश ऋच्छ अपार। भिरि लरत मारत मरत करत पुकार ॥ हनुमंत तब करि क्रोध गहि गिरि खंड। बलयुत हनो तिहि शीश भो शत खंड ॥ ६ ॥ पुनि वीर तिहि हति ताल तरु गहि धाय। मारे निशाचर गये लंक पराय ॥ तिन कहो सुनि धूम्राक्ष वध दशमाथ। करि क्रोध लेत उसीस मींजत हाथ ॥ ७ ॥ तब वज्रदंतहि बोलि कह दश शीश। भटसैनलै द्रुत जाय मारहु कीश ॥ सोपाय आयसुवेगि कटक सजाय। रथबैठि संयुग करनलागो आय ॥८॥ कपि वृन्द युद्धत धाय गहि गिरि वृच्छ। तिमि यातुधानन दलत करि बल ऋच्छ ॥ गहिभिन्दिपाल कृपाण अमित हथ्यार॥ निश्चर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करैं भरिकोप कपिन सँहार ॥९॥बाणन विदारत वज्रदंत कपीन । लखिधाय अंगद शाल तरु इकलीन ॥ सोवीर भूरभमाय मारो ताहि । भो विकल निश्चर भीजि शोणित माहि ॥ १० ॥ पुनि वज्रदंत सुवीर सुरति सम्हार । हनि शरन विहवल कीन वालिकुमार ॥ अंगदहनो तिहिधाय तरु गहि चंड ॥ लाघव सुकीनो इषुनते बहु खंड ॥ ११ ॥ पुनि वालिसुत लै कुधर भारी भूर ॥ मारो सुरथ युत सारथी भो चूर ॥ पुनि और गहि गिरि खंड कीन प्रहार ॥ लगिबही निश्चर शीश शोणित धार ॥ १२ ॥ तब लै गदा करचंड कपि उर मार ॥ पुनि भिरे दुहुँ दुहुँ मुष्टिकीन प्रहार ॥ तब कोपि लै करवाल वलिकुमार ॥ करि शीश खंडित दीन भूतलडार ॥ १३ ॥ लखि तासुवध भागे निशाचर झार ॥ किय वज्रदंतहिघात वालिकुमार ॥ यौं विकल दशमुख पाहिं भाषी जाय ॥ सुनि क्रोध शोक कलेश करि अकुलाय ॥ १४ ॥ बोलो अकंपन पाहिं रावण वैन ॥ नृप सुतन मारहु वेगि संयुत सैना ॥ सोसाजि दल रथ बैठि आतुर जाय ॥ कपि भालु मर्दन लाग चहुँ दिशि धाय ॥ १५ ॥ शाखामृगहु बहु कुधर तरु पाषान ॥ गहि हनत लागत ताहि सुमन समान ॥ सो शक्ति शूल कृपाण बाणन मार ॥ करि कोप भालु कपीन करत सँहार ॥१६॥ पुनि अपर निश्चर वीर युद्धत भूरि ॥ छाये धरामधि रुंड मुण्ड सपूरि ॥ दल घात निरखि मयंद गहि तरुधाय ॥ हनि यातुधानन दीन भूमि गिराय ॥ १७ ॥ सोलखि अकंपन वेगि बाणन मारि ॥ कीने विहाल मयंद सह कपि धारि ॥ अविलोकि निज दल विचल हनुमत धाय ॥ मारो खलहिइक करहि कुधर भमाय ॥१८॥ सोगिरि अकंपन बाणते दिय काटि ॥ लखि कीश पुनि गहि वृक्ष धायो डाटि ॥ किय यातुधानहि विकल कटकसँहारि ॥ भागे निशाचर यूथ हाय पुकारि ॥ १९ ॥ त्यौंही अकंपन घालि धनु शर चार ॥ कीनो विदीरण अंग पवनकुमार ॥ तब क्रोध भरि हनुमंत गहि तरु धाय ॥ तिहि शीश हनि हति दीन भूमि गिराय ॥ २० ॥ पुनि अपर खल दल सकल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीश सँहार ॥ निश्चरपराने विकल लंक मझार॥ भाषो अकंपन घात सुनि दशशीश॥कछु दीन मुख भो कीन फिरि बहु रीस२१॥ करि हीय विविधि विचार दृढ ठहराय ॥ वर सेनपति प्रति कही निश्चरराय॥भटभूरिभारीयातुधानप्रवीन॥तेकपिनमारे काहुविजय न कीन ॥ २२ ॥हौ कुंभकरण बलिष्ट तुम घननाद॥अथवा नि- कुंभसुवीर कर अहलाद॥याते अबै सजि साहनी लैजाय ॥मारौ सदल दुहुँ भाय विजय बढाय ॥२३॥सुनिकै प्रहस्त उताल निज गृह जाय ॥करि हवन दीने दान विप्र बुलाय ॥ पुनि साजि तन रथ बैठि कीन पयान॥भेअमित अशकुन पै न निश्चरमान॥२४॥

प्र० ॥ व० ॥ यु० का० ॥ स० ९७ ॥ श्लोक ।

लंका राक्षसवीरैस्तैर्गजैरिव समाकुला ॥ हुताशनं तर्पयतां ब्राह्मणांश्चनमस्यताम् ॥ १ ॥ आज्यगंधप्रतिवहःसुरभिर्मारुतो ववौ॥ स्रजश्च विविधाकारा जगृहुस्त्वभिमंत्रिताः ॥ २ ॥

भीमछंद ।

वर मुख्य तीन प्रहस्त संग प्रधान ॥ उद्धत नरांतककुंभ हनु बलवान ॥ पुनि महानाद प्रचंड अपर अपार ॥ भट यातुधान उदंड समर मँझार ॥ २५ ॥ बहु भीर भारी विकट भट बलवान ॥ तिहि मध्य सेनापति प्रहस्त प्रधान ॥ किय घोर शोर सकोप निश्चर वीर ॥ मुद्गर मुशल असि चक्र गहि धनु तीर॥ २६ ॥ लखि रैनिचर विकराल वनचर यूह ॥धाये उपल तरु कुधर लै करहूह॥दुहुँओरते भट भिरे भरि भरि रोष ॥ जै राम जै रावण छयो बहु घोष॥ २७॥ करि क्रोध निश्चर कपिन धरि धरि खात ॥ कपि यातुधानन करत मर्दि निपात ॥ इमि ऋच्छ कीश अपार निश्चर झुण्ड ॥ छाये चहूँ रण भूमि रुण्डहि मुंड ॥ २८ ॥ सह भट प्रहस्त प्रचंडकोप बढाय ॥ हति शरण दीनो राम दल बिचलाय ॥ निज सैन विहवल देखि द्विविद उताल ॥ मारो नरांतक शीश कुधर कराल ॥ २९ ॥ भोविकल पै बल भरि उठो करि खीस ॥ त्यौं बहुरि पत्री हनिहतो तिहि कीश॥ऋच्छेष गहि गिरि खंड भारी भूर॥उर महानादहिमा रिकीनो चूर ॥ ३० ॥ इकशाल वृक्ष विशालगहि कपि तार॥ द्रुत

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुंभ हनुहि प्रहारि डारो मार॥इहिअपरभटविक्य यातुधा ननाश॥ भो विकल निश्चर कटक छाई त्रास ॥ ३१ ॥ सो लखिप्रहस्त स-कोप बाणन मार ॥ कपि भालु हति हति दीन सयुग डार ॥ तब ऋच्छ कपि अकुलाय कीन पुकार ॥सुनि नील दलपतिधायआय प्रचार ॥ ३२ ॥ नीलहि विलोकि प्रहस्त लाघव कीन ॥ बाणन विदारि गिराय भूतल दीन॥पुनि कीश उठि गहिविटपताडोताहि॥ सो बहुरि वेधे तीर कपितनु माहि ॥ ३३ ॥ तब धाय तिहि धनु छीनभंजो कीश॥कर मुशलधारि प्रहस्त मारोशीश॥पुनि क्रोध दुहुँ दुहुँ सैन पाल उदंड ॥ मुठभेर ह्वै इक एक हनत प्रचंड ॥ ३४ ॥ लहि घात कपि शिरहनो मुशल प्रहस्त॥भो विकलदलपति रुधिर भरि तनु त्रस्त ॥पुनि वीर उठि तरु ताडितिहि उरमाहि॥निश्चर बहोरि प्रहार कीनो ताहि ॥३५॥ तब नील गहिगिरिखंडचंडवि-शाल॥मारो प्रहस्तहि शीशताकि उताल॥तिहि लगत निश्चरचूरभो ततकाल ॥ पुनि कीश क्रोधित अपर सैनहि घाल॥३६॥सोलखि प्रहस्त निपात पुनि निजघात॥कोउलरतकोउमहिपरतकोउ परात॥ तिन मर्दि मारे ऋच्छ कपि भटबंक॥कोउप्राणलै निजभभारिभागे लंक॥३७॥ इहि भांति निश्चर निकर भट विनशाय॥कपि भालु हर्षित भये विजय बढाय ॥ किलकैं सु कूदैं जीतिकै संग्राम ॥सब कहहिं जै जै राम जै जै राम ॥ ३८ ॥

इति श्री० रा० र० वि० यु० धूम्राक्षप्रहस्तादियुद्धवध वर्णनो नाम नवमोविभागः॥ ९ ॥

भीमछंद ।

निश्चर पराने लखि प्रहस्त निपात॥कारे हाय हाय विहाल ह्वै विलपात॥तजि शस्त्र वाहन वसनभूषणभूरि॥लैंप्राणगमने लंकम-धि भय पूरि॥ १॥ तिन जायभाषो विकलसंयुगहाल॥सुनि सैनपति वध दुखित भो दशभाल॥पुनि दीन आयसु वेगि ह्वै बहु कुद्ध ॥ भट चलहु हौं अब करहुँगो सजि युद्ध ॥ २ ॥ सुनिकै रजायसु

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिकट वीर अपार ॥ दृढ़ कवच धारे अंग विविध हथ्यार ॥ गज
वाजि रथ पैदर चमू चतुरंग ॥ साजी सबै लंकाधिराज अभंग ॥ ३॥

त्रिभंगी छंद ।

नखशिखतनु साजे निश्चर भ्राजे बाजन बाजे छबि छाजे ॥
दीने चहुँ डंका शोर उतंका करि करि हंका भट गाजे ॥
फहरात निशाना रंग सुनाना दल अगवाना बहु चालैं ॥
घहरैं घर नालैं अरु करनालैं पुनि हथनालैं जंजालैं ॥ ४ ॥
तोपै गरुमंती रिपुदल हन्ती चल वरदन्ती शत लागे ॥
जिन अतुलित गोला साज अतोला हो भुवडोला तिन दागे॥
तैसे अति रूरे सब विधि पूरे भूरि जमूरे बहु भाँती ॥
इमि अपर अपारा प्रबल हथ्यारा समरजुझारा मिलि पाँती॥५॥
पनि पट्टिश बाना अरु धनुबाना शक्तिकृपाना खरसाना ॥
दृढ़ मुद्गर शूला खड्ग त्रिशूला फरस अतूला गहि नाना ॥
लै परिघ प्रचंडा चक्र उदंडा गदा अखंडा वरभारे ॥
लंबित बहु भाला सुलघु विशाला शस्त्र करालाकरधारे ॥६॥
इमि निश्चर यूथा विविध वरूथा निज निज गूँथा लख भूपा॥
कोऊ विकरारा कोउ कुढारा कोउ सुढारा वररूपा ॥
शूकर मुख कोऊ गजमुख कोऊ खरमुख कोऊ मुखश्वाना ॥
केहरिमुख कोऊ मृगमुखकोऊ बिनमुख कोऊ मुखनाना॥७॥
यौं अगणितभाँती देव अराती निज निज पाँती मिलि साजे॥
बैठे सुठि वाहन ऐंठि सुवाहन भरे उछाहन बहु गाजे ॥
तबहीं दशभाला उठो उताला वर मखशाला गमन कियो ॥
लखिकै चहुँ घाहींकह मनमाहीं मोसमनाहीं कोउ वियो॥८॥
दोहा—जाय देवगृह सविधि शुचि, हवन कियो दशभाल ॥
द्विजन शीश नमि दान दै, कीने तुष्ट निहाल ॥९॥
यंत्र मंत्र करि विविध वर, अभिमंत्रित फल फूल ॥
अपर वस्तु बहु सिद्धि लिय, पत्र औषधी मूल ॥१०॥
पुनि तनु कवच हथ्यारसजि, निज इष्टहि शिरनाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्यंदन सहस तुरंग युत, बैठो हिय हुलसाय ॥ ११ ॥
कियो पयान अनीक युत, जै दशमुख चहुँशोर ॥
चलत भये अशकुन घने, गने न कछु वरजोर ॥ १२ ॥
बहु सिखदै चहुँ नगरको, कीनो परम प्रबंध ॥
पुनि कढि उत्तर द्वारते, चलत भयो दशकंठ ॥ १३ ॥
श्वेत छत्र चामर व्यजन, अपर सकल नृप साज ॥
यथा उचित भ्राजत चहूँ, मध्य लंक अधिराज ॥ १४ ॥
लखि अपार दल साज बहु, वानर भालु तुरंत ॥
द्रुत आयुध नग उपलगहि, उद्धत भये अनंत ॥ १५ ॥
तब बूझी लंकेश प्रति, दूरहिते लखि राम ॥
सबै विभीषण चिह्न युत, दरशाये कहि नाम ॥ १६ ॥
रूप तेज दशवदन को, लखि बोले श्रीराम ॥
सत्य विभीषण भ्रात तव, बहु प्रताप बलधाम ॥ १७ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

लंक अवनीश सोहै निपट निशंक वंक दशमुख पूरण मयंकसे प्रकाशमान ॥ वीसभुज रुंड लसैं परम उदंड चंड मंडित अखंड वरिवंड जे कृपान बान॥ रसिकविहारीतेजधारी उद्ध युद्धकारी धीर वीर भारी है न जासम त्रिलोक आन ॥ जगत डरावन परावन सुदेवनको रावन मही को महारावन प्रतापवान ॥ १८ ॥ ख्याता तिहुँ लोकनमें ज्ञाताबहु वेदनको उद्धत अनन्य ध्रुव ध्याता त्रिपुरारीको परम अनूप दिव्य रूप यातुधान भूप जाहि अवलोकि तेज दुरत तमारीको॥ देव नर नाग यक्ष असुर अपार चहूं पैनकहूंकोऊ दशकंठ अनुहारीको ॥ रसिकविहारी रघुवीर धनुधारी इमि बार बार निरख सराहत मुरारीको॥ १९ ॥

दोहा-यौं कहि पुनिरघुवंश मणि, करि सिय हरन विचार ॥
कवच निखंग सबंधुसज, वर धनु शर कर धार ॥ २० ॥
ताछिन दोऊ दल भिरे, भयो चहूँ दिशि शोर ॥
निश्चर वानर भालु बिच, समर होत अति घोर ॥ २१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्रिभंगी छंद।

दृढ़ आयुध धारी बहु बलकारी निश्चर झारी वर योधा ॥
कपि ऋच्छन खंडैं भूमि न छंडैं घन रन मंडैं कर क्रोधा ॥
गहि भल्लन हूलैं शूलन शूलैं पकर धँधूलैं धरि खावैं ॥
इक एक प्रचारैं हनि महि डारैं भटन सँहारैं चहुँ धावैं ॥२२॥
त्यौं तरु गिरि धारे ऋच्छ अपारे कपि भट भारे रोष भरे ॥
निश्चरन ढहावैं मारि गिरावैं दल विनशावैं युद्ध अरे ॥
धरि धाय दपेटैं पुच्छ लपेटैं हनत चपेटैं प्राण हरैं ॥
खल झुंडन झोरैं रुंड मरोरैं मुण्डन फोरैं फेर अरैं ॥२३॥
हनि लात अचुक्कन मारत मुक्कन तेउ मलुक्कन हतिडारैं ॥
सो बहुरि सलाई जानु दबाई प्राण नशाई महिपारैं ॥
धरि दशनन काटैं कर पद छाटैं शीश उपाटैं झक झोरैं ॥
रसनाहिं मरोरैं दंतन तोरैं नैनन फोरैं मुख मोरैं ॥ २४ ॥
इमि कपिन अपारे निश्चर मारे विकल पुकारे ते सारे ॥
तबहीं दशभाला अतिहि उताला बाण कराला करधारे ॥
हनि हनि खर तीरन अंगविदीरन करि बहु वीरन हति डारे॥
कपि ऋच्छन त्रासे सुभटन नाशे पुनि इषु खासे सजि मारे२५॥
सुग्रीवहि घाले सब तन शाले भय विहाले हरि वीरा ॥
सो धरणिमँझारा गिरे पछारा कंप अपारा तजि धीरा ॥
नल आदिक योधा लखि भरि क्रोधा आय निरोधा कीन घने ।
बहु बल युत वाहन द्रुमगिरि पाहनगहि गहि लाहन धाय हने२६
तिन खंडि दशानन हनि हनि बानन कपि बलवानन महिपारे ॥
पुनि अपर अपारे शस्त्र प्रहारे बहु भट भारे हतिडारे ॥
ते वानर ऋच्छा तजि रणइच्छा करि पगपिच्छा चहुँ भाजे ।
रघुवर ढिग जाई अति विलपाई रामदुहाई कहिलाजे ॥ २७ ॥

तोमर छन्द।

सुनि भालु कीश पुकार । करि क्रोध राजकुमार ॥
सजि धनुष बाण विशाल ॥ आतुर उठे रिपु शाल ॥ २८ ॥
तब कही लछमन नाथ । हौं करौं रण तिहि साथ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाषी तिनै रघुवीर। है लंकपति अतिवीर ॥ २९ ॥
तिहि संग ठानहु युद्ध। कीजो सुबुधि बल बुद्ध ॥
सुनि लषण कह कर जोर। तव कृपा प्रभु वर जोर ॥ ३० ॥
इमि भाषि पुनि शिरनाय। द्रुत चले हिय हुलसाय ॥
बहु भालु कपि भट साथ। लीने कुधर तरु हाथ ॥ ३१ ॥
सजि लषण धनु शर भाथ। आवतलखे दशमाथ ॥
तव सहित भट समरत्थ। सन्मुख चलाय सुरत्थ ॥ ३२ ॥
बहु रीस भरि दशशीश। धायो सँहारत कीश ॥
सो देखि दौरि उताल। ढिग आय अंजनि लाल ॥ ३३ ॥
बोले अरे दशमाथ। मम देख दक्षिण हाथ ॥
है बाहु खल बल शाल। हो याहि ते तव काल ॥ ३४ ॥
सुनि क्रोध करि दशशीश। भाषी अरे लघुकीश ॥
क्यों करत मिथ्यहि मान। तू अजहुँ मोहि न जान ॥ ३५ ॥
पै तोहिं निज मद भूरि। करु घात बहु बल पूरि ॥
पुनि हौं हतौं इक मुष्ट। हो प्राण तनु तुव तुष्ट ॥ ३६ ॥
जो अबहिं देहुँ नजाय। तौ उमँग तुव रहि जाय ॥
याते प्रथम कपि मोहिं। हन लेह तौ पुनि तोहिं ॥ ३७ ॥
सुनि कही रघुवर दूत। मारो जुहौं तव पूत ॥
सो सुमिरि तू हन मोहिं। फिरिहौं हतौ खल तोहिं ॥ ३८ ॥
तब लंकपति रिस ठान। करि कूदि बल तल तान ॥
कपि उर हनो बलवान। तिहि लगत तनु थहरान ॥ ३९ ॥
उठि सम्हरि हनुमत हाल। दशकंठ हियतल घाल ॥
भो विकल होत प्रहार। तनु कंप चल जलधार ॥ ४० ॥
पुनि सम्हरि निश्चरनाह। बहु भाँति कपिहि सराह ॥
कह कीश धिगबल मोर। नहिं जिय कढो खल तोर ॥ ४१ ॥
पै बहुरि अब इक बार। करु वेग मोहि प्रहार ॥
तब तोहिं हौं हनि मुष्ट। लै प्राण होंउ सतुष्ट ॥ ४२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि एक मुष्टि तुरंत। कपि उर हनी बलवंत ॥
सो होत अतुल प्रहार। भो विकल पवनकुमार॥४३॥
तिन विकल लखि दशभाल। तहँते सिधारि उताल ॥
ढिग आय चापहि तान। नीलहि हने बहु बान ॥ ४४ ॥
तब कीश गहि तुर धाय। घालो जु शैल उठाय ॥
तिहि सप्तशरन विदारि। दशमुख दियो महिडारि ॥ ४५ ॥
ताछिन हनुमत वीर। गद मूरछा उठि धीर॥
देखो चमूपति साथ। वर युद्ध कर दशमाथ ॥ ४६ ॥
तब वीर वर हनुमान। दृढ कीन उर अनुमान ॥
सह और युद्ध कराय। अब हनौ उचित न आय ॥ ४७ ॥
इहि भांति हीय विचारि। पुनि शैल तरु कर धारि ॥
जे अपर निश्चर भूर। तिन मर्दहीं कर चूर ॥ ४८ ॥
उत नील निश्चर राय। दुहुँ क्रुद्ध युद्ध कराय ॥
द्रुमशैल जो कपि मार। सो छिंदि भूतलडार ॥ ४९ ॥
तब कीश लघु वपु धार। चढि तासु ध्वजहि विदार ॥
तहँ ते उछलि पुनि आय। दिय दशहु क्रीट गिराय ॥ ५० ॥
पुनि धनुष गहि झकझोर। भजि कूदि शिरनन छोर ॥
इमि बार बार उताल। तिहि दरत भरत उछाल ॥ ५१ ॥
छिन दशहु शीशन आय। गहि सबल देत हलाय ॥
छिन एक ते इक पाहिं। सब शिरन मध्य फिराहिं ॥ ५२ ॥
छिन श्रवण दंतन काट। नासा नखन छिन छाट ॥
छिन वाजि सारथि शीश। गहि दलत लघु वपु कीश ॥५३॥
बहु घात कर दश माथ। पै लगत कपि नहिं हाथ ॥
सो निरखि रघुकुल केत। हँस सकल सैन समेत ॥ ५४ ॥
दक्षमौलि तब रिस लाय। वर अग्नि अस्त्र चलाय ॥
नीलहि दयो महिडार। लखि पुत्र अनल न जार ॥ ५५ ॥
जब बाण लग दलपाल। भो प्राण निपट विहाल ॥
तब अपर वीरनघाल। हनि शक्ति शर दशभाल ॥ ५६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो निरखि लछमन वीर । बोले वचन सजि तीर ॥
हे हे निशाचर ईश । मारत कहा लघु कीश ॥ ५७ ॥
मुहि देख हौं तुव काल । इत आव धाय उताल ॥
सुनि लंकपति रथ लाय । ढिग आय कह रिस छाय ॥ ५८ ॥
रिपु बंधु है मति वंक । किमि कथित बैन निशंक ॥
हौं अबहिं वानर मारि । द्रुत देत भूतलडारि ॥ ५९ ॥
तब कहे लषण सुबैन । जे वीर ते गरजैन ॥
बल अस्त्र शस्त्र जुहोय । दरशाव अब सब सोय ॥ ६० ॥
सुनि वचन निश्चरपाल । शर सप्त घाल उताल ॥
द्रुत राम बंधु सुवीर । खंडित किये सब तीर ॥ ६१ ॥
पुनि क्रोध करि बलवान । छाँडे विशिख बहु बान ।
तेऊ लषण सब खंड । फिरि तजे निज शरचंड ॥ ६२ ॥
ते बाण बाणन भिंद । रावण किये सब छिंद ॥
पुनि विशिख शर दशभाल । देखे सुलषणहि भाल ॥ ६३ ॥
ते लगत शर विकराल । कछु विकल भे नृपलाल ॥
पुनि घालि बाण प्रचंड । कीनो सु रिपुधनु खंड ॥ ६४ ॥
अरु तीन शर विकराल । मारे निशाचर भाल ॥
इहि घात वंश दशकंठ । गुठित भयो कछु कंठ ॥ ६५ ॥
पुनि सजग ह्वै बहु तीर । छोडे निशाचर वीर ॥
वर लषणहु धनुतान । घाले अनेकन बान ॥ ६६ ॥
दुहुँ गात सायक छिंद । तनुत्रान भे दुहुँ भिंद ॥
दुहुअंग शोणित धार । नख शीश चलत अपार ॥ ६७ ॥
तब क्रोध करि दशभाल । विधिदत्त शक्ति कराल ॥
सो लषणके बलवान । मारी जु उर मधि तान ॥ ६८ ॥
तिहि लगत भूमि मझार । द्रुत गिरे राजकुमार ॥
तिन धाय निश्चरनाह । भुज भरि उठावन चाह ॥ ६९ ॥
तिहि कोटिमेरु समान । भारी लगो तनु जान ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहु बल कियो भुजवीश। नहिं चले रंच फनीश ॥ ७० ॥
सो शक्ति उरहि विभेदि। पुनि धसी भूतल छेदि ॥
गरु भूरि भार अनंत। बल करि थको बलवंत ॥ ७१ ॥
लखि धाय पवनकुमार। उर मुष्टि कीन प्रहार ॥
तिहि लगत निश्चरपाल। भो विकल निपट विहाल ॥७२॥
दुइँ जानु टेकि सुकंपि। आतुर गिरो महि झंपि ॥
मुख श्रवण नैन मझार। बहि चली शोणित धार ॥७३॥
तब वायुसुत बलवंत। लषणहि उठाय तुरंत ॥
रघुवीर ढिग तिन धार। लीनी सु शक्ति निकार ॥ ७४ ॥
पुनि धाय पवनकुमार। आये जु समर मँझार।
लागे करन बहु युद्ध। हनि निश्चरन करि क्रुद्ध ॥ ७५ ॥
लखि बंधुको रघुवीर। लाये हिये धरि धीर ॥
प्रभु अंग परसतवीर। मे तुरत वीरुज शरीर ॥ ७६ ॥
उत चेत आय सुरारि। रथ बैठि धनु शर धारि ॥
बहु दलत ऋच्छ कपीन। हति सैन विह्वल कीन ॥७७॥
लखि सैन विचल विहाल। उठि राम अतिहि उताल ॥
धाये सुधनुशर धार। सँग कीश भालु अपार ॥ ७८ ॥
आये सुसमर मझार। अवलोकि पवनकुमार ॥
लीने सुकंध चढाय। दशवदन सन्मुख जाय ॥७९॥
बोले सपदि रघुनाथ। हे लंकपति दशमाथ ॥
कह करत कीश प्रहार। इत आव मोहिं निहार ॥ ८० ॥
सुनि राम वचन सुरारि। धायो महारिस धारि ॥
धनु तान अगणित बान। छांडे प्रचंड सँधान ॥८१॥
नाराच रघुवीर अंग। वेधे कवच करि भंग ॥
तब राम अतिहि उताल। शर हने विषम कराल ॥८२॥
हति सारथी अरु पत्र। वर कीट सहध्वज छत्र ॥
युत कवच भूषण वस्त्र। बहु साजमय सब वस्त्र ॥ ८३ ॥
दशवदनको यह साज। खंडित कियो रघुराज ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि वीसहू भुज मूल । दीने शरनतें शूल ॥ ८४ ॥
लगिराम बाण अखंड । भो विकल निश्चर चंड ॥
शिख नख शिथिल सब गात । नहिं नैन पलहु चलात ॥८५॥
यौं निरखि निपट अधीर । बोले विहँसि रघुवीर ॥
हे वीर निश्चरराज । तब वध करौं नहिं आज ॥ ८६ ॥
रण मध्य हो असमर्थ । तिहि वधत नाहिं समर्थ ॥
इहि हेतु ह्वै निरसंक ॥ अब वेगि गमनहु लंक ॥ ८७ ॥
सुनि राम बैन उताल । कीनो गमन दशभाल ॥
युत सैन लंकहि जाय । बैठो सुधाम लजाय ॥ ८८ ॥
रावण महा बरिवंड । सो सुमिरि ते शर चंड ॥
बहु सोच हीय मझार । गुणि करत भूरि विचार ॥ ८९ ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

भारी भूधरेशतें दिनेशहूते तापकारी शेषतें बिषारी वेग पौनते महानहैं । रसिकविहारी तेजधारी जे हुताशनते प्राणतनहारी मृत्यु फाँसते निदानहैं ॥ चंड जम दंड ते उदंड ब्रह्मदंडहूते बज्रते कठोर घोर जोर बे प्रमान हैं । अमित हथ्यार नव खंडमें अखंड पै न ऐसे कहुँ जैसे वरिबंड राम बान हैं ॥ ९० ॥

दोहा-सुमिर सुमिर यौं राम शर, चौंकि चितव चहुँ ओर ।
हिय पछिताय सुलंकपति, करत विचार बहोर ॥ ९१ ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

विधि वर थाप जानौं बहु निज शाप जानौं रघुको प्रताप जानौं सो न चित दीनो मैं । वेदके विधान जानौं शास्त्र औ पुरान जानौं ज्ञान ध्यान जानौं सो विचार नहिं लीनों मैं ॥ रसिकविहारी भली भाँति सियराम जानौं जानके समस्त फेर भयो मतिहीनो मैं ॥ रंचहूँ न लायो बोध निपट अबोध रहो क्रोधते निरोध ह्वै विरोध हठि कीनो मैं ॥ ९२ ॥

दोहा-यों विचारि पछिताय पुनि, दशमुख गुनी सुहीय ।
होनी हुती जु सो भई, अब नहिं त्यागौं सीय ॥ ९३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी कवित्त ।

कैतौ ना लगावै नेह कोऊ नर नारी साथ जोपै प्रीति जोरै तौ कछूहो फेरि तोरैना। रसिकविहारी काहू वचन न हारै कबौं जोपै वैन देवै तौ बहोरि दृग चोरै ना ॥ कै तौ प्रन कैसहू न ठानै रंच बात-हूको जोपै धारि लेवै वानि पुनि हठ छोरैना। सोई है त्रिशुद्ध औ प्रबुद्ध रण रुद्ध उद्ध रिपुतें बिरुद्ध क्रुद्ध युद्ध मुख मोरैना ॥ ९४ ॥

दोहा—यातुधानपति यौं अमित, गुणत विचारत बात ।
जात भयो रनिवास मधि, यौं बीती सबरात ॥ ९५ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० रावणयुद्ध
वर्णनो नाम दशमोविभागः ॥ १० ॥

दोवई छंद ।

रावण कीन विचार हीय दृढ कुंभकरण बलभारी ।
भक्षण करै भालु कपि सिगरे सो सह लषण खरारी ।
यौं गुनि बहुरि सभा मधि आये आयसु दई उताला ॥
काहू विधि मम बंधुहि निश्चर जाय जगावैं हाला ॥ १ ॥
सुनि राक्षस बहु साजि सिधारे आये वेगि तहांई ।
कुंभकरण जहँ मास अनेकन सोवत रहत सदाई ॥
सदन विशाल शैलकंदर मधि इक योजन चहुँ ओरा ।
निपट अचेत शैन कीने सो चलत श्वास अतिघोरा ॥ २ ॥

प्र०वा०॥भ०कां०स०६०॥श्लो०॥

नवसप्तदशाष्टौ च मासान्स्वपिति राक्षसः। मंत्रं कृत्वा प्रसुप्तो योमृतस्तु नवमेहनि॥ १॥तां प्रविश्य महाद्वारां सर्वतोयोजनायताम्। कुंभकर्णगुहां रम्यां पुष्पगंधप्रवाहिनीम् ॥ २ ॥इत्यादि॥

दोवई छंद ।

प्रविशि न सकत श्वासलगि निश्चर तब कर गहि वरियारा ॥
बहुबल कारि मिलि धाय एक सँग बैठे सदन मँझारा ॥
जाय प्रथम तिहि पास चहूँ दिशि अशन पान बहुधारा ॥
आमिष अन्न राशि भूधर सम शोणित कलश हजारा ॥ ३ ॥
अरु सहस्र घट सुरा अमित फल पुनि सजीव पशु भूरी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विविध सुगंध वसन भूषण वर अपर वस्तु प्रति रूरी ॥
यौं सज पंचसहस्र निशाचर गरजे मेघ समाना ॥
पुनि सब शंख मृदंग आदि बहु वाद्य शोर किय नाना ॥४॥
नहिं जागो तब मुद्गर मूशल गदा उपल तरु धारे ॥
उर शिर बाहु चरण कटि जंघन वीरन अमित प्रहारे ॥
तऊ न ताहि बोध तब निश्चर दशसहस्र मिलि गाजे ॥
कियो घोर रव तूरदुंदुभी आदि बजैं बहु बाजे ॥ ५ ॥
जगो न तब तिहि तनपर गज रथ ऊंट तुरंग चढाये ॥
ते बहु दलत मलत धावत वपु कछू न तिहि के भाये ॥
पुनि निश्चर सकोप श्रुति नासा केशलुंच मिलि कीने ॥
अरु शत कुंभ नीर ते दोऊ श्रवण तासु भरिदीने ॥ ६ ॥
कैसहु नहिं जागौ तब द्वैशत तोप जंजीरन बाँधो ॥
भरि छोडी बहु बार जगो वह जब सुयतन यह साधो ॥
जुंभित ह्वै तनु इत उत फेरो गिरे सकल चहुँ ओरा ॥
नैन उघारि लखो सबही दिशि कुंभकरण अति घोरा ॥७ ॥
सैनहि अशन पान सहजै सब करि बूझी तिन पाहीं ॥
कहौ मोहिं किहि काज जगायो भ्रात कुशल कै नाहीं ॥
नृप मंत्री यूपाक्ष जोरि कर कहो सकल तब हाला ॥
सो सुनि कुंभकरण बहु रिस भरि बोलो वचन उताला ॥ ८॥
तजैंभीति सब यातुधानपति हौं अबहीं द्रुत जाई ॥
सदल राम लछमणहि नाश करि भ्रातहि मिलौं सु आई ॥
तब कर जोरि महोदर भाषी नाथ प्रथम मिलि लीजे ॥
पुनि दृढ मंत्र ठानि दल संयुत संयुग विजय करीजे ॥९॥
तासु वचन सुनिकै उठि बैठो तब वह निश्चर धाई ॥
आय कही शिरनाय भूपसे नाथ जगो तव भाई ॥
गुणि नृप दई रजाय प्रथम तिहि मज्जन अशन करावो ॥
होय तृप्त पुनि वसन विभूषण साजि सभा मधि लावो ॥१०॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो सुनि सकल सौंज लै निश्चर कुंभकरण ढिग जाई ॥
मज्जन अशन पान करवायो प्रमुदित भयो अघाई ॥
सजितन उठो भ्रात दरशन हित ताछिन पुनि मनमाना ॥
द्वै सहस्र घट सुरापान करि सहजहि कियो पयाना॥ ११ ॥
षदशत धनुष उच्चतनु जाको है शत धनु विस्तारा ॥
दृग मंडल दुहुँशकट चक्र सम अंगशैल इव भारा ॥
कूप सरिस नासापुट दोऊ मुख गिरि कंदर माना ॥
बहु विशाल विकराल काल सो कुंभकरण बलवाना॥ १२ ॥

प्र० ॥ बा० ॥ यु०॥कां० ॥ स० ॥ ६९श्लो०

धनुःशतपरीणाहःसषट् शतसमुच्छ्रितः ॥
रौद्रः शकटचक्राक्षो महापर्वतसन्निभः ॥

दोवई छंद ।

बली भीम वपु परम प्रतापी कुंभकरण मतिवाना ॥
जा सम यातुधान लंकामधि प्रबल कोउ नहिं आना ॥
चलत भयो रावण ढिग तब वह दूरहि परो दिखाई ।
तिहि विलोकि ह्वै विकल भगे चहुँ भालु कीश समुदाई॥१३॥
कोऊ चढे द्रुमन भजि कोऊ गिरि कंदरन छिपाने ॥
कोऊ रघुवर निकट पुराने कोउ फिरैं बिललाने ॥
सोगति हेरि राम धन शर सजि ठाढे भये उताला ।
सबहि धीर दै लखि लंकेशहि कही कौन विकराला ॥ १४ ॥
तब करजोर विभीषण भाषी कुंभकर्ण यह नाथा ॥
आज दशानन ताहि जगायो युद्ध करन तब साथा ॥
सुनि रघुवीर नील प्रति बोले सब ही धीर धराई ॥
भालु कीशमय व्यूह रचौ वरमिलि बहु भट समुदाई ॥१५॥
तब सेनापति जाय वेगही राम कथित सब कीने ॥
सजग भये हनुमंत आदि भट द्रुम गिरि आयुध लीने ॥
कुंभकर्ण उत आय भ्रात ढिग सादर शीश नवायो ॥
उठि दशवदन अंक भरि बंधुहि वर आसन बैठायो ॥ १६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुंभकर्ण बूझी तब भ्रातहि क्यों मुहि वेगि जगायो ॥
सुनि भाषी दशकंठ कुपित ह्वै अजहुँ न परत जनायो ॥
सदा बंधु नव सप्त सु दशवसु षट मासन लौं सोवै ॥
कबहुँ वर्ष बहु सैन करै यौं तौहू नींद न खोवै ॥ १७ ॥
याहू छिन निद्रा दृग छाई परत न कछु दरशाई ॥
यातुधान नाशो बहु संयुग नर वानर दल आई ॥
कुंभकर्ण सुनि कही क्रोध भरि निज करणी फल पाये ॥
कहा जानि जगमातु सियाको जाय लंक हरि लाये ॥१८॥
साम दान अरु दंड भेद ये चार चहिय नृप माहीं ॥
अर्थ धर्म पुनि काम मोक्ष कृत समय समय भल आहीं ।
बल गुण रूप प्रताप भाग्य धन कुल निज पर लखि लीजे॥
देश काल निरवेर शुभाशुभ प्रीति वैर तब कीजे ॥ १९ ॥
सुनि दशवदन क्रोध करि भाषी गुरु सम मोहि सिखावै ॥
होनी हुती भई सो अब तौ चहिय सुजिहि जय आवै ।
कुंभकर्ण तब कही जोरि कर रोष करिय जनि ताता ॥
जाम्बवंत सुग्रीव सदलहति हौं मारौं दुहुँ भ्राता ॥ २० ॥
दृढ़ प्रतीत मुहिं निज बलकी पै चिह्न अशुभ दरशावैं ॥
याते जानि परै इमि मोकों निश्चर सकल नशावैं ॥
यौंकहि कही फेरि हे भूपति नर वानर कह भीता ॥
जाय एक हौं करौं विजय निज तव वश ह्वै है सीता॥२१॥
कुंभकर्णके वचन सुनतही वेगि महोदर भाषी ॥
भो नृप बंधु प्रौढ ह्वै अजहूं रंचहु बुद्धि न राखी ॥
जो रघुवीर सहस चौदह भट आय एक हति डारे ।
तिन सन्मुख रणहेत अकेले गमनत विनहि विचारे ॥ २२ ॥
घटकरनहिं यौं भाषि महोदर कह पुनि रावण पाहीं ॥
हमद्विजीभ आदिक सुपंच भट नाथ बंधु मिलि जाहीं ॥
सदल सबंधु अबहिं रघुनाथै मारि लंक मधि आवैं ॥
तब अनाथ सीता दुख भीता प्रभु तव वश ह्वै जावैं ॥ २३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि कह कुंभकर्ण मुहि रोची यह जु महोदर वरनी ॥
करौं विनाश आज तव रिपुको लखौं नाथ मम करनी ॥
तब रावण तिहि विशद विभूषण साजि रजायसु दीनी ॥
चलो मत्तगज सरिस शूललै संग सैन मदभीनी ॥ २४ ॥
पुर प्राकार उलंघि कढ़ा तिहि निरखि भालु कपि भागे ॥
तब नल नील तिनै धीरज दै धाये सँग ले आगे ॥
दूरहि ते लखि ताहि विभीषण गहे भ्रात पद जाई ॥
कही मोहिं दशवदन तजो हौं राम शरण भो आई ॥ २५ ॥
कुंभकर्ण बहु बंधु सराहो सो पुनि दल मधि आये ॥
चले निशंक निशाचर लखिके कीश भालु चहुँधाये ॥
बहु गरु शैल शस्त्र द्रुम अगणित हने वीर बलवाना ॥
खंडित भये सकल ते तिहि तन लगे न सुमन समाना ॥ २६ ॥
कुंभकर्ण करि क्रोध शूल गहि धायो कपिदल माहीं ॥
अमित ऋच्छ वनचरन विदारे भागे नाहिं बचाहीं ॥
लाखन चूर भये दबि लातन लाखन धरि धरि खाये ॥
लाखन हने चपेटन मुष्टन लाखन काटि बहाये ॥ २७ ॥
लाखन कीश भालु गहि फेंके लाखन धक्कन मारे ॥
लाखन भीति विवशभजि डूबे आपहि सिंधु मझारे ॥
कुंभकर्ण गहि जे कपि ऋच्छन भच्छन करे अपारा ॥
तिन महँ बहु सजीव कढ़ि भागे श्रवण नासिका द्वारा ॥२८॥
तिहि भय भगे ऋच्छ कपि पुनि तिन अंगद हांकि प्रचारे
तब सब प्राण आश तजि धाये तरु गिरि विविध प्रहारे ॥
कुंभकर्ण लैगदा बिभंजै बहु वनचरन विदारे ॥
द्विविदकीशगहि शैल निश्चरन बाहन युत दलि डारे ॥ २९ ॥
यातुधान गण हने ऋच्छ कपि ते तिन अगणित नासे ॥
मारत मरत मुरत नहिं कोऊ दोऊ दिशि भट खासे ॥
हनूमान नभपथ ह्वै बहु गिरि कुंभकर्ण पर बरसे ॥
ते सब वीर शूलते काटे एकहु नहिं तनु परसे ॥ ३० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब केसरी किशोर जोर करि घोर शैल तिहि मारो ॥
विकल भयो शोणितसे भीजो कुंभकर्ण तनु सारो ॥
पुनि गहि शूल तमीचर कपि के उर अंतर हनिहूलो ॥
कियो शोर हनुमंत व्यथित ह्वै घरि एकलों रण भूलो ॥ ३१ ॥
गति लखि सैनपाल गहिभूधर तिहि प्रहार द्रुत कीनो ॥
कुंभकर्ण सो शैल मुष्टितें हति चूरण करि दीनो ॥
सो अविलोकि पंच मिलि तासों भिरे आय भरि क्रोधा ॥
नील गंधमादन गवाक्ष अरु शरभऋषभ वर योधा ॥ ३२ ॥
कुंभकर्ण तब नीलहि जंघन दाबि व्यथित बहु कीनो ॥
बहुरि गवाक्षहि तल प्रहार तें प्राण कंठ करि दीनो ॥
शरभहि हनि मुष्टिका गिरायो ऋषभहि भुजा दबाये ॥
सकल वीर ते परे धरणिमें नख शिख रुधिर अन्हाये ॥ ३३ ॥
तिन प्रहारि यौं पुनि कपि ऋच्छन राक्षस भंजन लागा ॥
बहु बिलपाय हाय करि व्याकुल बहुरि सकल दल भागा ॥
ताछिन वालिपुत्र तिहि ऊपर पर्वत धाय पवारा ॥
निश्चर शूल प्रहारो अंगद सो करि दाब निवारा ॥ ३४ ॥
पुनि युवराज तासु उर वेगै तलताड़न किय घोरा ॥
कुंभकर्ण कछु पीडित ह्वैके सजग भयो बरजोरा ॥
बल करि मुष्टि हनी सो कपि हिय गिरो अचेत सुकीशा ॥
तब निश्चर तिन त्यागि शूललै मारो जाय हरीशा ॥ ३५ ॥
ह्वै कछु विकल सुकंठ सम्हर पुनि गिरि तिहि कीन प्रहारा ॥
निश्चर कियो नाद तनु कंपो फिरि भरि क्रोध अपारा ॥
भार सहस्र शूल कपिपति पै वध हित वेगि चलायो ॥
लखि हनुमान धाय कै बीचहि सो गहि तोरि बहायो ॥ ३६ ॥
कुंभकर्ण निज शूल व्यर्थ लखि पुनि गहि गिरि तकि घाला ॥
सो शिर परत विकल ह्वै घुर्मित गिरे भूमि हरिपाला ॥
निरखि अचेत धाय गहि निश्चर तिन लै कांख दबाई ॥
चलो लंक मर्दत कपि ऋच्छन अतिआनंद अघाई ॥ ३७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुंभकरण करगत सुग्रीवहि लखि कपि करत विलापा ॥
हनूमान बलगुणि सुकंठको दै धीरज दलथापा ॥
उत नृप बंधु लिये हरि राजहि प्रविशो लंक मँझारी ॥
चंदन सुमन वारि तिहि ऊपर वरषैं मुद नर नारी ॥ ३८ ॥
सो शीतलता लहि सुकंठकी भई मूरछा दूरी ॥
निरखि लंक पथ आप विवश गुणि कियो दाँव बलपूरी ॥
पगन कुक्षि कर नखन श्रौन दंतन नासिका विदारी ॥
चौंकि रोष करि कुंभकर्ण तिन डारो अवनि पछारी ॥ ३९ ॥
भूतल परत गेंद सम हरिपति उछलि गगन पथजाई ॥
आये राम निकट तिन लखिकै सकल सैन हुलसाई ॥
नासा श्रवणहीन ह्वै अतिही कुंभकर्ण सकुचायो ॥
फिरो बहोरि क्रोध भरि धायो सबतनु शोणित छायो ॥४०॥
आय गदागहि भालु कीश पुनि अमितहने अरु खाये ॥
भयो विकल दल लखि रामानुज तासु अंग शर छाये ॥
कुंभकर्ण बाणन ते व्याकुल पै न गिनै तनु पीरा ॥
रामहिं देखि क्रोध करि धायो लिये सु आयुध वीरा ॥ ४१ ॥
तब रघुवीर तीर निश्चर उर रौद्र अस्त्र मयमारे ॥
गिरो गदा भो विकल बानते बेधि गये तनुसारे ॥
यातुधान पुनि शैल शृंग लै हनो राम तिहि काटो ॥
कुंभकर्ण मुद्गर कर गहि कै बहुरि राघवहि डाटो ॥ ४२ ॥
हौ न विराध कबंध त्रिशिर खर कपि मारीच न रामा ॥
सुर नर नाग विदित तिहुँ पुरबिच कुंभकर्ण मम नामा ॥
करौं प्रहार काहमैं प्रथमैं तुम निज बल दरशावो ॥
पुनि यह मुद्गर हनौं शीश तव तनु तजि यमपुरजावो ॥ ४३ ॥
सुनि रघुनाथ क्रोध करि तिहि तनु ते शर अगणित मारे ॥
जे विराध खर ताल वालिपै परम प्रचंड प्रहारे ॥
कुंभकर्ण तिन कछु मुद्गरते भंजे कछु वपु लागे ॥
सो नहिं गिने वीर वर आयुध युत धायो प्रभु आगे ॥ ४४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब उताल वायव्य अस्त्रयुत राम बाणतिहि मारा ॥
दक्षिण बाहु सहित मुद्गर सो खंडि महीतल डारा ॥
वाम हाथसे तरु उपाटिकै कुंभकर्ण पुनि धायो ॥
ऐंद्र अस्त्र शरते द्रुमसह भुज सोऊ काटि गिरायो ॥ ४५ ॥
कटत बाहु बहु रिसकरि धायो भक्षण हित मुख फारे ॥
अर्धचंद्र शरते रघुवर तब पग खंडित करि डारे ॥
पुनि बाणन आनन भरि दीनो भयो विकल वरजोरा ॥
रहो रुंड युत मुंड क्रोध वश कियो शोर अतिघोरा ॥ ४६ ॥
तब रघुवीर उदंड चंड शर सजि कोदण्ड प्रहारा ॥
खंडित भयो शीश सो मरतहु मारौं राम पुकारा ॥
कुम्भकर्णको रुण्ड मुंड महि गिरो मेरु सम भारा ॥
पुर प्राकार द्वार कपि निश्चर चूरन भये अपारा ॥ ४७ ॥
तासु मरन लखि मुदित भये सुर आय सुमन बरसाये ॥
किलकैं कूदि भालु कपि चहुँ दिशि जै जै शोर मचाये ॥
यातुधान बलवान अपर ते लैलै प्राण पराने ॥
रसिकविहारी रामचंद्रकी विजय देव सुखसाने ॥ ४८ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० कुम्भकर्ण युद्ध वध
वर्णनो नाम एकादशोविभागः ॥ ११ ॥

दोहा—आतुर जाय सुलंक मधि, यातुधान विलपाय ॥
रावण प्रति वरणो सबै, बंधु मरन अकुलाय ॥ १ ॥
कुंभकर्णको निधन सुनि, बिकल भयो दशमाथ ॥
रुदन करत गुणवरणिकै, दलत भूमितल हाथ ॥ २ ॥
अपर निशाचर निश्चरी, करमलि शीशधुनात ॥
कुंभकर्ण बल गुणत पुनि, रोय विकल बिलपात ॥ ३ ॥
दशमुख भाषी बंधु बिन, धिग जीवन सुखराज ॥
कुंभकर्ण ढिग जाहुँगो, हौंहू तजि सब काज ॥ ४ ॥
ताछिन रावण पुत्र वर, बोले धीर धराय ॥
नाथ सकल हम जायकै, करैं विजय हरषाय ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौं भाषी त्रिशिरा सुभट, अरु देवांतक वीर ॥
प्रबल नरांतक रजनिचर, वर अतिकाय सुधीर ॥ ६ ॥
सो सुनि रावण धीर धरि, तिन बहु साज सजाय ॥
संग सैन चतुरंग करि, दीनी युद्ध रजाय ॥ ७ ॥
बहुरि महोदर वीर अरु, महापार्श्व सजि अंग ॥
निश्चरपति निज भ्रात ये, किय पुत्रनके संग ॥ ८ ॥
रण दुर्मद षट सुभट ये, निश्चर अपर अपार ॥
चले यथोचित साज सजि, वाहन कवच हथ्यार ॥ ९ ॥
जै रावण कहि वेगही, भिरे सुनिश्चर आय ॥
जै रघुवर कपि भालु करि, गहि गिरि पादप धाय ॥ १० ॥
हनै तमीचर ऋच्छ कपि, ते तिनकर संहार ॥
कटत अटत नहिं भट हटत, एकहि एक प्रचार ॥ ११ ॥
दांतन लातन मुष्टिकन, तलन नखन बहु बीर ॥
अस्त्रन शस्त्रन गिरि तरुन, हनत गनत नहिं पीर ॥ १२ ॥
तेज तुरंग फिराय चहुँ, पास शक्ति कर धार ॥
हने नरांतक सप्तशत, कपि छिन एक मझार ॥ १३ ॥
यौंहीं हते अपार भट, दिय कपि दल विचलाय ॥
धाये अंगद वेगहीं, पाय सुकंठ रजाय ॥ १४ ॥
देखि नरांतक कीश उर, कीनो पाश प्रहार ॥
चूर चूर ह्वै शस्त्र सो, विखरो भूमि मझार ॥ १५ ॥
वालि पुत्र तब क्रोध कहि, तलहनि हत्यौ तुरंग ॥
यातुधान सो कीश शिर, मारो मुष्ट अभंग ॥ १६ ॥
पुनि सकोप अंगद सँभरि, मुष्ट हनो तिहि भाल ॥
विकल नरांतक महि परो, निकसो प्राण उताल ॥ १७ ॥

चौ० देखि नरांतक वध निशिचारी ❀ धाये कुपित शस्त्र करधारी ॥
आय बेगि देवांतक योधा ❀ परिघ हनोअंगदहिसक्रोधा १८
तब कपि गहि पादपतेहि मारा ❀ सो त्रिशिरा खंडितकरिडारा ॥
पुनि बहु तरु गिरि कीशचलाये ❀ तेसब निश्चर भंजि गिराये १९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि त्रिशिरा अंगद तनुसारा ❀ वेधो शरण अमित खर धारा ॥
वालितनय तरु कुधर प्रहारे ❀ तिनहि महोदर परिघ विदारे२०॥
तब कपि धाय उपलएकमारा ❀ करिभाग्योकरि घोरचिकारा ॥
निजगज व्यथित महोदरदेखा ❀ तिहिताडोभरिक्रोधविशेषा २१
देवांतक पुनि आय उताला ❀ हनोकीश शिर परिघ कराला ॥
तब अंगद तलकीन प्रहारा ❀ मत्तमहोदर गज हति डारा २२॥
पुनितिहि दन्त उखारिसुकीशा ❀ कियप्रहार देवांतक शीशा ॥
भयोविकलफिरिसम्हरिउताला ❀ अंगदशिरहिपरिघ सोघाला२३
तिहिप्रहारवशकछुअकुलायो ❀ जानुटेकिकपिनहिलगआयो ॥
पुनिउतालउठितनुसुधिलायो ❀ तौलग त्रिशिराबाणचलायो २४॥
तीनतीरत्रिशिरा वरयोधा ❀ कपि ललाट मारे करिक्रोधा ॥
सोलखिनीलपवनसुत धाये ❀ बहुगिरिपादपउपलचलाये ॥२५॥
पुनिगिरिखंडनीलगहिभारा ❀ वेगित्रिशिरशिरपरसो मारा ॥
लखिबीचहिनिश्चरबलपूरा ❀ बाणनकाटिउपलकियचूरा २६ ॥
नीलबहुरिइक शैलचलायो ❀ सोलागतत्रिशराजमुहायो ॥
देवांतक लै परिघ कराला ❀ धायपवनसुतकै शिरघाला॥२७॥
तब करि कोप वीरहनुमंता ❀ मुष्ट वज्र सम हनो तुरंता ॥
देवांतक शिर चूरन भयऊ ❀ ह्वै खलमृतक भूमिगिरिगयऊ २८
लखिनिश्चर देवांतक हाला ❀ कियो सकल बहु कोप कराला ॥
अपर मत्तगज ह्वै असवारा ❀ धाय महोदरकपिहि प्रचारा २९॥
त्रिशिर महोदर दुहुँ इकसाथा ❀ भिरे बहुरिकपि दलपतिसाथा ॥
अमितबाणनीलहितिन मारे ❀ सोऊबहुतरुकुधर प्रहारे ॥ ३०॥
तब करिकोप महोदर वीरा ❀ कपिहि कियोविह्वलहनितीरा ॥
ह्वै मूर्छित पुनि कीश सम्हारा ❀ सहतरुशैलसुवेगिउखारा ३१ ॥
तौलि ताकिसोगिरि वरियारा ❀ सपदिमहोदरशीशप्रहारा ॥
तिहिलागतगजसहितनिशाचर ❀ गिरोमृतकह्वैवेगिभूमिपर ३२ ॥
तिहिवधलखित्रिशिराभारक्रोधा ❀ हनेबाणहनुमानहियोधा ॥
घालोशैलशिखर कपि तासू ❀ शरन चूर कियानश्चरआसू ३३

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि हनुमत बहु द्रुम वरसाये ❀ सोहनिशरन त्रिशिरविनशाये ॥
वीर धाय तब तासु तुरंगा ❀ नखन विदारि कीन तनु भंगा ३४
लखि निश्चर वर शक्ति प्रहारी ❀ सो गहिकीश भजिमहि डारी॥
तब त्रिशिरा लै खड्ग विशाला ❀ बल भरिहनूमानउरघाला३५
तासु हृदय पुनि कपि तल मारा ❀ सो फिरिकीशहिमुष्टप्रहारा॥
गहि कृपाण हनुमान सु डाटे ❀ त्रिशिर शीशआतुरतिहुँकाटे३६

पद्धरीछन्द।

लखि त्रिशिर घात निश्चर समस्त। भे अतिविहाल बहुशोकग्रस्त॥
कपि भालु पाय अनंद सर्व। चहुँ ओर वीर गर्जे सगर्व ॥३७॥
तब यातुधान करि कोप चंड। धाये हथ्यार गहि गहि उदंड ॥
शर शक्ति शूल भल्लन सुचाल। चहुँ भालुकीशबहु कियविहाल ३८
भट महापार्श्व वर शस्त्रधार। बारनारोह बहु कपिनमार ॥
लखि ऋषभकीश धाये उताल। कह आय हेरु खलतोरकाल३९
तब गदा कीन निश्चर प्रहार। कपि हृदय स्रवित बहुरुधिरधार ॥
पुनि ऋषभक्रोधकरमुष्ट तान। मारोसुकुक्षिभोविकलप्रान ॥४०॥
मूर्छित सुरारि धरणीमझार। गिरि गदाधार पुनि उठि सम्हार ॥
कियघात कीशके शीश चंड। तिहि हनो फेरि बानर उदंड॥४१॥
पुनि यातुधान बहुघात कीन। तबगदाऋषभतिहि छीनलीन ॥
सो तासु शीशहनि वीर धाय। करिप्रान हीन दीनो गिराय ४२॥
भटमहापार्श्ववर समरधीर। तिहि निधन कीन द्रुत ऋषभवीर ॥
लखि मरन तासु अतिकाय धाय।स्यंदन अरूढकियसमरआय४३
अतिकाय काय लखि कहत कीश। है कुंभकर्ण दूजो सुदीस ॥
बाजी सहस्र जिहि रथ मझार। साजे अनेक उद्धत हथ्यार॥४४॥
दुहुँ ओर लंक द्वै खड्ग चंड। जिन मुष्टि मुष्टि अनुपम उदंड ॥
विस्तार जासु है हस्तचार॥ दशहस्त लंब दृढ भूरि भार ॥४५॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० ॥ का० ॥ स० ७१॥ श्लोक।

द्वौ च खड्गौ च पार्श्वस्थौ प्रदीप्तौ पार्श्वशोभितौ ॥
चतुर्हस्तत्सरुचितौ व्यक्तहस्तदशायतौ ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पद्धरी छंद ।

तिहि हेरि राम लंकेश पाहि । बूझी सु वेगि यह कौन आहि ॥
तब यातुधानपति अति उताल ।कीनो बखान सब तासुहाल४६॥
सो कालरूप निश्चर प्रचंड । ऋच्छन कपीन कर खंड खंड ॥
डारत अपार भूतल मझार । ते लरत करत आरत पुकार ॥४७॥
दल विकल देखि रघुवर सुजान । बोले सुधारि कर चाप बान ॥
है समर धीर बर बीर उद्ध । हौं करौं जाय इहि संग युद्ध ॥४८॥
तब लषण वीर शर चाप धार । हौं करौं कही संयुग अपार ॥
यौं भाषि वेगि तिहि निकटआय । टंकोरकीन धनुशोरछाय४९॥
सुनि शोर घोर लखि लषण ओर । अतिकायधायआयोसजोर॥
सजिबाण वीर बोलो उताल । हौ राम बंधु अबहीं सुबाल ॥ ५०॥
फिर जाहु वृथा क्यों तजहु प्राण । आवैं सुभ्रात तव बल निधान॥
सो होहिं आज मम बाण ग्रस्त । कैकरहिं मोहिंरघुवीरत्रस्त॥५१॥
सौमित्र बिहँसि भाषी सुवीर । हौ राजपुत्र भट समरधीर ॥
पै कथनमात्रको काम नाहिं । बल करहु होय जो अंगमाहिं ५२॥
हो तरुण वृद्ध अथवा सुबाल । पै व्याल दंश करिदे विहाल ॥
लीनो विचारि तब सकल गर्व । निज अस्त्र शस्त्रबल करहुसर्व ५३
सुनि लषण बैन अतिकाय चंड । घाले सकोप शर अति उदंड ॥
सजि अर्धचंद्र नृपसुवन वीर । किय आसु छिद वर तासु तीर५४॥
पुनि पंच बाण निश्चर उताल । छोड़े सुखंड किय लषणलाल ॥
तब कोप छायप्रभु बंधु वीर । वेधेललाट तिहि विशिखतीर५५॥
अतिकाय वीर शर वज्रघात । भो रुधिर सिक्त अतिकंप गात ॥
पुनि सजग होय निश्चर प्रधान । कीनो बखानतबधन्यबान ५६॥
यौंबहु सराहि लषणै सुवीर । छाँडे अनेक वर विषम तीर ॥
ते सर्व राजसुतभिन्नभिन्न । बाणनविदारि कियछिन्न छिन्न ॥५७॥
लखि भये व्यर्थ निज सकल बाण । तबधारि चंडशरयातुधान॥
सो लषण वक्षसालो उताल। भे रुधिर सिक्त नृपसुत विहाल५८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि राम अनुज क्रोधित उताल । वर अग्नि अस्त्र घालो कराल ॥
सो रौद्र अस्त्र छांडो प्रचंड । भिरि गिरे दोउ शर होय खंड ॥५९॥
खलकोपि अस्त्र ऐषीकमार । तिहिं ऐंद्र अस्त्रते लषण डार ॥
पुनि याम्य अस्त्र निश्चर प्रहार । लक्ष्मण सुकीन वायव्यछार ६० ॥
पुनि अमित अस्त्रमय बाण चंड । कीने प्रहार लच्छन उदंड ॥
अतिकाय अंग एकौ न भेद । सो करहि युद्ध निर्भय अखेद ६१ ॥
तब पवन देव लच्छनहि आय । भाषी विरंचि वर याहि आय ॥
याको अवध्य तनुत्रान अंग । बिन ब्रह्मअस्त्र होवै न भंग ॥६२॥
दश सुनिवायुबैन लछमन उताल । शर ब्रह्मअस्त्र योजित विशाल॥
बलवान भूरि बलधनुष तान । संधान ठान मारो सुबान ॥ ६३ ॥
सायक प्रहार होतहि उदंड । अतिकाय शीश भो तुरत खंड ॥
विन मुण्डरुंड सो भूरि भार । महि गिरो चापि कै दल अपार ६४॥
तिहि निधन हेरिकपि ऋच्छ वीर । किय मुदित शोर जै लषणवीर॥
सौमित्र आय आनँद पाय । शिर नायगहे रघुराय पाय ॥ ६५॥
उठि राम बंधु उरलाय लीन । बहुविधि बखान सनमान कीन ॥
सुग्रीव ऋच्छपति आदि वीर । आनंद अघाय धारी सुधीर॥६६
अतिकाय अंत लखि यातुधान । दल सकल विकल ह्वैकै परान॥
उतकरत रजनिचर रुदन घोर । इतहोत जैति जै जैति शोर ॥६७॥

इतिश्री रा०र०वि०यु०नरांतक अतिकाया-
दियुद्धवधवर्णनो नाम द्वादशोविभागः ॥ १२ ॥

सो०-निश्चर जाय विहाल, अतिउताल दशभालसों ॥
विलपि कहो रण हाल, पुत्र बंधु दल सकल वध ॥ १ ॥
सुनि रावण षट घात, भयो विकल बहु सोचवश ।
करमीजत पछितात, चकित चित्त तनु थकित भो ॥ २ ॥
दशमुख निपट अधीर, लै उसाँस बोलो विलखि ॥
इमि कोऊ नहिं वीर, हतै सदल रघुवीर जो ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–पितहि महादुख देखिकै, इंद्रजीत कर जोर ।
कही तात धीरज धरिय, लखिय पराक्रम मोर ॥ ४ ॥
जाम्बवन्त हनुमंत अरु, सह तव अनुज सुकंठ ॥
अपर सदल दुहुँ बंधु को, वेगे करौं विकंठ ॥ ५ ॥
यौं बहु धीर धरायकै, मेघनाद वर जोर ॥
जाय सुभट थापे तुरत, किय प्रबंध चहुँ ओर ॥ ६ ॥
पुनि पुनीत ह्वै वेगही, धारि वसन शुचिलाल ॥
जाय यज्ञशाला सविधि, ठानो यज्ञ उताल ॥ ७ ॥
समिध विभीतक कुण्डरचि, पावक प्रबल बढ़ाय ।
यथा योग बर मंत्र पढि, हवन कियो हुलसाय ॥ ८ ॥
श्याम अजा सहजीवलै, करि अभिमंत्रित ताहि ॥
सविधि समर्पण कीन हुनि, अग्नि कुण्डके माहि ॥ ९ ॥
ताही छिन मख कुण्डते, स्यंदन कढो विशाल ॥
तामधि कवच हथ्यार वर, धरे अनेक कराल ॥ १० ॥
सो लखि निश्चर मुदित ह्वै, करि प्रणाम सब लीन ॥
साजि अंग रथ बैठि कै, गमन युद्ध हित कीन ॥ ११ ॥
संग सैन चतुरंग वर, धीर सुवीर विशाल ॥
नाद करैं घननाद सम, सह घननाद कराल ॥ १२ ॥
अंतरिक्ष ह्वै इंद्रजित, आयो कपिदल माहिं ॥
अपर निशाचर भूमि मग, धाय भिरे चहुँ घाहिं ॥ १३ ॥
कीश भालु तरु उपल गिरि; गहिधाये बलवान ॥
घोर शोर चहुँओर ह्वै, रणछायो घमसान ॥ १४ ॥
रैनि अँध्यारी तम छयो, निज पर सूझत नाहिं ॥
कपि कपि निश्चर निश्चरन, ऋच्छनऋच्छ हनाहिं ॥ १५ ॥
ऋच्छ कपिन ऋच्छन कर्पा, निश्चर ऋच्छ कपीन ॥
ऋच्छ कपी हन निश्चरन, कोऊ काहु न चीन ॥ १६ ॥
मेघनाद वर अस्त्रमय, बाण प्रहार अपार ॥
कीश भालु संहार करि; डारै अवनि मँझार ॥ १७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रवण नैन मुख नासिका, हृदय चरण कर शीश ॥
बाण न बेधे इंद्रजित, भागे बचे न कीश ॥ १८ ॥
वालिसुतहि शर अष्टदश, नौ किय नलहि प्रहार ॥
सात मयंदहि पंच गज, ऋच्छपतिहि दशमार ॥ १९ ॥
नीलहि तीस गवाक्ष षट, गंधमादनहिं चार
अपर अमित कपि रीछ तिन, बाणन दिये विदार ॥२०॥
राम लषण सुग्रीव अरु, लंकापति हनुमान ॥
इनहिं जु मारे विशिख शर, तिनको कछु न प्रमान ॥२१
भयो सकल कपिदल विकल, आरत करत पुकार ॥
प्राण कंठगत ह्वै परे, बहुरण भूमि मझार ॥ २२॥
रघुनदन तब लषण प्रति, बोले निपट अधीर ॥
नागफांस बंधनकियो, जनु आयो सो वीर ॥ २३ ॥
इमि रघुवर लक्ष्मण अपर, कीश भालु समुदाय ॥
विकल व्यथित शर घातते, बोलत अतिअकुलाय २४॥
कीश ऋच्छ दल को कियो, मेघनाद संहार ॥
रुंड मुंड छायेचहूँ, शोणित बहत अपार ॥२५ ॥
सप्तसठकोटि सुवीर वर, वानर भालु उदंड ॥
षट घटिका मधि इंद्रजित, बाणन हते प्रचंड ॥ २६ ॥

प्र० बा० ॥ यु० कां ॥ स० ७४ ॥

सप्तषष्टिर्हताः कोट्यो वानराणां तरस्विनाम् ॥
अह्नः पंचमशेषेण वल्लभेन स्वयंभुवः ॥ १ ॥

दोहा—अपर व्यथितकीने अमित, ते बहु मृतक समान ॥
परे भूमि तल विकल अति, भये कंठगत प्रान ॥ २७ ॥
यौं विदारि बाणन सबहि, इंद्रजीत बलवान ॥
निरखि विजय निज मुदितह्वै, कीनो लंक पयान ॥२८॥
वेगि आय पितुचरण गहि, कहो सकल रणहाल ॥
जयकारी पुत्रहि मुदित, उर लायो दशभाल ॥ २९ ॥
सकल निशाचर निश्चरी, प्रमुदित कहत निशंक ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इंद्रजीत कीनी विजय, अचल भई अब लंक ॥ ३० ॥
उत लंका मधि मोद अति, इत कपि सैन मझार ॥
घायल वीर विहाल बहु, आरत करत पुकार ॥ ३१ ॥
ताही छिन कछु सजग ह्वै, लंकापति वर जोर ॥
जाय सम्हारो सकल दल, धाय धाय चहुँ ओर ॥ ३२ ॥
तौंलग पवनकुमारहू, लहो चेत कछु वीर ।
बहुरि विभीषण आयकै, दई कपिहि बहु धीर ॥ ३३ ॥
तब हनुमत लंकेश प्रति, बोले अतिहि उताल ॥
चलो सबहि अवलोकिये, को किहि भांति विहाल ॥ ३४॥
यौं कहि दोऊ सजग ह्वै, लैकर लूक उजेर ॥
लंकापति हनुमत लखो, दल समस्त चहुँ फेर ॥ ३५ ॥
रुंड मुंड कोटिन परे, कोटिन कहरत वीर ।
कोटिन प्राण सुकंठ गत, कोटिन मृतक शरीर ॥ ३६ ॥
यौंही हेरत जात दुहुँ, हनुमत निश्चर राय ॥
जे सजीव तिन देत हैं, धीर सुबैन सुनाय ॥ ३७ ॥
चलि हेरे दुहुँ ऋच्छपति, धरणी परे अचेत ।
नख शिख वेधित शरनते, विकल उसाँस न लेत ॥३८॥
कही विभीषण जाय ढिग, तात जियत कै नाहिं ।
सुनि सुबैन रिछराजके, चेत भयो हिय माहिं ॥ ३९ ॥
जाम्बवंत तब मंद स्वर, बोले अति अकुलाय ।
वाणी जानी लंकपति, पै दृगते न लखाय ॥ ४० ॥
कहो विभीषण बेगही, हैं सजीव हनुमान ॥
तुम निरखे निज नैनते, किमि है कित बलवान ॥ ४१ ॥
सुनि बोले लंकेश द्रुत, कहा बात यह तात ॥
नहिं प्रभुकी हनुमंतकी, तुम बूझी कुशलात ॥ ४२ ॥
जाम्बवान भाषो तबै, जौ न जियैं हनुमान ।
तो जीवत जेते बचे, ते सबमृतक समान ॥ ४३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अरु जीवैं हनुमंत तो, बल प्रभाव बलवान ॥
मृतक भये कपि ऋच्छते, ज्यावैं सबहि सुजान ॥ ४४ ॥
सुनि सुबैन गहि वेगही, जाम्बवन्तके पाय ॥
कही पवनसुत कुशल हौं, प्रभु तव कृपा प्रभाय ॥ ४५ ॥
कपिहि लाय हिय ऋच्छपति, बोले वचन उताल ॥
तिहूँलोक तुम सम बली, और न अंजनिलाल ॥ ४६ ॥
याते वीर सुवीरता, कीजै अतिहि उताल ॥
जाय औषधी लाय कै, विरुज करौ कपि भाल ॥४७॥
हिम गिरि अरु कैलासके, मध्य ऋषभ गिरि नाम ॥
तापर है वर औषधी, सो लावो बलधाम ॥४८॥
सुनि सुबैन हनुमंत द्रुत, करि निज रूप विशाल ॥
उछलि चले नभ पंथ ह्वै, धाये अतिहि उताल ॥ ४९ ॥
उपल रजत अरु हेममय, लखे शैल अभिराम ॥
अवलोके हनुमंत पुनि, अपर अमित सुर ठाम ॥ ५० ॥
इहि विधि जाय उताल अति, पहुँचे पवनकुमार ॥
ऋषभ कूट हेरो चहूँ, शत योजन विस्तार ॥ ५१ ॥
कपिहि निरखि सो औषधी, गुप्त भई चहुँ ओर ॥
हनूमान तब क्रोध युत, गिरिहि कही करि शोर ॥५२ ॥
रे खल रघुवरकाजहित, ओषधि लई दुराय ॥
लखु भूधर मम बाहुबल, धरौं तोहिं युत जाय ॥ ५३ ॥
यौं कहि तिहि गहि धारि कर, उछलि व्योम पथ जाय॥
आय धरो कपि सैन मधि, युत औषधि गिरि लाय ५४
लावतहीं गिरि पवन लगि, भे सब विरुज शरीर ॥
अपर जिय कपि भालु ते, भये मृतक जे वीर ॥५५ ॥
होत मृतक निश्चर जिते, ते सब सागर माहिं ॥
दशमुख आज्ञाते परत, याते जिये सुनाहिं ॥ ५६ ॥

प्र० वा० यु० कां० ॥ स० ७३ ॥ श्लोक।

यदाप्रभृति लंकायां युद्धचत हरिराक्षसाः ॥
तदाप्रभृति मानाथमाज्ञया रावणस्य च ॥१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ये हन्यंते रणे तत्र राक्षसाः कपिकुंजरैः ॥
हता हतास्तु क्षिप्यन्ते सर्वएव तु सागरे ॥ २ ॥

दोहा–रैनि समैं बहु भालु कपि, मृतक भये कपि जोय ॥
ह्वै सजीव ते दिवस मधि, उठे उठे जनु सोय ॥ ५७ ॥
भये विरुज दुहुँ बंधु युत, वानर भालु अपार ॥
अति आनँद उमँगाय सब, जैरघुवीर पुकार ॥ ५८ ॥
हनूमान पुनि शैल सो, रहो जहाँ तहँ धार ॥
नभ मारग ह्वै वेगि पुनि, आये सैन मझार ॥ ५९ ॥
राम लषण सुग्रीव अरु, अपर अमित बलवान ॥
बार बार हनुमानको, बल यश करत बखान ॥ ६० ॥

इति श्रीरामरसा० र० वि० यु० इंद्रजितअंतरिक्षयुद्ध वर्णनो नाम त्रयोदशोविभागः ॥ १३ ॥

पद्धरी छंद ।

यों विरुज भई कपि भालु सैन । तब कहे सपदि सुग्रीव वैन ॥
बीतो समस्त दिन भो न युद्ध । हनुमत करौ बल वेगि युद्ध ॥ १
तब हनूमान बहु भट बुलाय । कर लिये लूक पावक दिपाय ॥
धाये अपार सँग भालु कीश । कहि जैति राम जै जै हरीश ॥ २ ॥
दिन अस्त होत लखि समय सांझ । कूदे सवीर चहुँ लंक मांझ ॥
दीनोलगायपावककउताल । निश्चरनधामवर लघु विशाल ॥ ३ ॥

प्र० ॥ वा० यु० कांडे । सर्ग ७४ ॥ श्लोक ।

अदहत्पावकस्तत्र जज्वाल च पुनःपुनः ॥
सारवंति महार्हाणि गंभीरगुणवंति च ॥ १ ॥

पद्धरी छंद ।

तिहि समैं कीन बहु पवन जोर । बाढ़ी उदंड ज्वाला सुघोर ॥
धनधाम वाजि गज रथ अपार । शिशु तरुण वृद्धवरि होत छार ४ ॥
चहुँ हाय हाय सब करि पुकार । भे विकल काउ काहु न सम्हार ॥
बहु यातुधान करि कोप चंड । धाये हथ्यार लै लै उदंड ॥ ५ ॥
कपि भालु वीर गहि गहि सुलूक । भिरि जाय दीन निश्चरन फूक ॥
ते यातुधानपुनिपुनिप्रहार । भट ऋच्छ कीश फिर तिनहिं मार ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पावक प्रचंड चहुँ लाय दीन । पुनि भालु कीश विध्वंस कीन ॥
मर्दत सु भौन अरु लरत जात । बहु धाय धाय दल दरत जात॥७
पैठे सु जाय दशकंठ धाम । कीनो विहाल कहि जैति राम ॥
चहुँ जरत लंक अरु होत युद्ध । कर बहुविनाश कपि भालु उद्ध८

घनाक्षरी—कवित्त ।

थंभडारि देहरी उखारि औ कपाट फारि सदन उजारि जारि डारैं रंचहू न भै ॥ केसरी किशोर वीर बंकादै उतंका हंका लंकामें फलंका घालि कूदत चहूँ अभै ॥ रसिकविहारी जै कपीश ईश गाजैं कीश सुनि दशशीश कर वीस रीस ह्वै चभै ॥ चंगुल चपेटि औ लंगूरमें लपेटि मर्दि मर्दत खखेटि रजनीचर भगे सभै ॥ ९ ॥ ठेलैं ठेलि पेलैं पेलि रेलैं रेलि झेलैं फेरि झेलिकै ढकेलैं यौंहीं भौन डारैं मीथि मीथि ॥ भारी तेजधारी जे प्रवृद्ध युद्धकारी तेउ वीरन निहारी मानहारी भगैं वीथि वीथि॥ रसिकविहारी विजै-कारी कपि रीछ झारी डारी औ विडारी शत्रु सैन मारी झीथि झीथि ॥गुंठित हथ्यार कीने लुंठित करेहैं कर कुंठित कियेहैं दशकठ कंठ चीथि चीथि ॥ १० ॥

पद्धरी छन्द ।

उत करहिं यौं सुविध्वंसलंक । इत राम साजि धनु शर उतंक ॥
छोडे अपार सायक उदंड । तिन किये आय गृह खंड खंड॥११॥
इमि भालु कीश करि लंक नाश । लै लूकरुद्ध पुर आस पास ॥
देखैं पर न काऊ जु ताहि । देवैं बहाय गहि अनल माहि ॥ १२ ॥
दशमौलि देखि गति ह्वै विहाल । दीनी रजाय अतिही उताल ॥
वर कुंभकर्ण सुत दोउ वीर । उद्धत निकुंभ अरु कुंभ धीर ॥ १३॥
वर शोणिताक्ष यूपाक्ष चंड । कंपन प्रजंघ षट भट उदंड ॥
पुनि अपररैनिचर शस्त्रधार । तिनसंग कुपित धाये अपार ॥ १४॥
भट भालु कीश अरु यातुधान । भिरि परे दोउ दल क्रुद्ध ठान ॥
द्रुम शैलशक्ति शर खड्ग चंड । लगिगिरे वीर ह्वै खंड खंड ॥१५॥
गहि गदा धाय कपन उताल । अंगदहि घाल भो कपि विहाल ॥
पुनि सँभरि कीश कियगिरि प्रहार । सोगिरोभूतक ह्वै रणमझार १६
लखिशोणिताक्ष धायो उताल । कियकपिहि मारि बाणन विहाल॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब वालि पुत्र धनु तून छीन। करि खंड खंड महि डारिदीन १७
पुनि शोणिताक्ष असि चर्मधार। धायो सुछीन लिय कपिकुमार॥
सो हनी ताहिकरबाल तासु। आये प्रजंघ यूपाक्ष आसु॥ १८॥
त्रै यातुधान अंगद अकेल। लखि द्विविद मैंद धाये सकेल॥
इत भये प्लवंगम तीन चंड। तिहुँ उतहु वीर निश्चर उदंड॥ १९॥
तिहुँ कीश कीन बहुतरु प्रहार। ते सब प्रजंघ असिते विदार॥
पुनिअपर शैल द्रुमघाल चंड यूपाक्ष डारतिन शरनखंड॥२०॥
निश्चर प्रजंघ गहि खड्गतान। अंगदहि घात किय क्रुद्ध ठान॥
तब कीशरोष भरिमुष्टमारि। तिहि शीश भंजि महि दीन डारि२१
लखिकै प्रजंघ वधरोष आन। यूपाक्ष वीरवर लै कृपान॥
सो द्विविदहीय घालीउताल। तब गहोकीश निश्चरहि हाल॥२२
लखिशोणिताक्षकियकपिहिघात।गहि गदाकीश तिहि शिरनिपात
ताछिन मयंद द्रुत धाय आय। यूपाक्ष वीर कोदिय गिराय॥२३॥
भुजन मर्दि लिय प्राण तासु। त्यौं शोणिताक्षको द्विविद आसु॥
गहि दशन कोटि तनु नखन फारि।डारो सु भूमि लै प्राण मारि२४
इमि दुहूँ कीश दुहुँ भट सँहारि। धाये सुकुम्भप्रति कुधर धारि॥
सो यातुधानहन अमित तीर। कीनेविहाल कपि द्विविदवीर२५॥
लखि व्यथितभ्रात धाये मयंद। गरु शिला वाल कुम्भहि सुछंद॥
निश्चर सुपंच शरखण्ड कीन।पुनिकपिहि सायकन भेदिदीन२६
पीडित विलोकि मातुलन वीर। द्रुत वालिपुत्र धाये सुधीर॥
तिन कुम्भ कीनबहुशर प्रहार।कपि अमिततहि द्रुम शैलमार२७॥
पुनि कुम्भवीर शरसप्त मारि।करिबिकल कपिहि दियभूमिडारि॥
अंगद विहालगति कीश धाय। भाषीउताल रघुवरहि जाय २८॥
सुनि जाम्बवन्त आदिकन राम।दीनी रजाय करि दृग ललाम॥
धाये सु ऋच्छपतिअरु सुखेन। कपि वेगदर्शि तिहुँसुबल ऐन२९॥
अंगदहु चेतलहि चहुँ सुवीर। तरु उपल धारि धाये सुधीर॥
तिन सबहिकुम्भ शरविपुलशाल।वेधेसमस्त वपु किय विहाल३०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धाये सुकंठ सो गति निहार । बहु कुधर कीन कुम्भहि प्रहार ॥
ते सकल शैलभटयातुधान।बाणनविदारिकिय रज प्रमान॥३१॥
पुनि शरन बेधि डारो सुअंग ।तब किय कपीश तिहिचापभंग॥
धनु भंजि कीशपति कर बखान । तुव तेजरूप बलपितुसमान३२
सुनि कुम्भ कुपित भरि लीन वाथ । तबकीन भूरिबलकीशनाथ॥
दुहुँ वीर धीर वर समर उद्ध । अवरुद्ध कुद्ध कर मल्लयुद्ध ॥३३॥
कुम्भहि सुकंठ बहु कोपधार । फेंको उठाय सागर मँझार ॥
सो बहुरिआय तुरबांधिपुष्ट । घालोकपीश उरवज्र मुष्ट ॥ ३४ ॥
पीड़ित हरीश पुनि ह्वै प्रचंड । तिहि वज्र मुष्ट मारो उदंड ॥
सो लगत वच्छतच्छनहिंफाट । गिरे गयोभूमिनिश्चरडलाट३५॥
भो मृतक मुष्ट लगि कुम्भ वीर।लखि यातुधान तजि दीन धीर॥
निरखो निकुंभ निजभ्रातहाल । धायोसकोपअतिहीउताल॥३६॥
सन्मुख सु आय हनुमंत वीर । कीनो निरुद्ध तिहि समर धीर ॥
सो कपिहि परिघ मारो प्रचंड। लगिहृदय शस्त्रभोखंडखंड॥३७॥
तब कीश कोपि तिहि उर मझार । द्रुत पुष्ट मुष्ट कीनो प्रहार ॥
विहवल निकुम्भ ह्वैसजगहाल । गहि लयोधायकपिकोउताल३८
पुनि पवनपुत्र हनि मुष्ट ताहि । भो विलग वीर इकछिनकमाहि॥
फिरि तासु परिघलैकपिउदंड।तिहिदलोधायकरिकोपचंड॥३९॥
हनुमंत फेरि तिहि महि पछार । द्रुत लीन वीरगहि शिर उपार॥
तब भो निकुम्भतनु प्राणहीन । लखिभालुकीशजैशोग्कीन॥४०॥

दोहा–सकल निशाचर जायकै, भाजि लंकपति पास ॥
कही नाथ षट भट सदल, रण मधि भये विनास॥ ४१ ॥
कुम्भ निकुम्भादिक मरन, सुनि दशमुख विलपाय ॥
पुनि भाषी मकराक्षसों हिय बहु रोष बढाय ॥ ४२ ॥
जाहु पुत्र द्रुत सैन लै, हतौ सदल रघुवीर ॥
अस्त्र शस्त्र वर युद्धमें, हौ तुम निपुण सुधीर॥४३॥
तुव पितुको रघुवर हतो, दंडकवन रण माहिं ॥
सो खर बदलो लेहु अब, समय विलंब सुनाहिं ॥ ४४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—सुनि खर सुत मकराक्ष सुभट्टा ❀ लिये संग वीरनके ठट्टा॥
शस्त्र कराल कवच तनुसज्जे ❀ यातुधान दुर्मद बहु गज्जे ॥४५॥
धीर वीर मकराक्ष प्रधाना ❀ स्यंदन बैठि सुकीन पयाना ॥
चलत भूरि अपशकुन जनाये ❀ तिनहिंनिदरिनिश्चरसबधाये ४६॥
भयो शोर चहुँ ओर अपारा ❀ सुनत राम धनु बान सँभारा ॥
कीश भालु तरुगिरि गहि दौरे ❀ निश्चर भिरेपानवशबौरे ॥४७॥
शक्ति परिघ असि शरन प्रहारी ❀ यातुधान कपि सैन विदारी ॥
तरु गिरि उपल कीश बहु वरषैं ❀ धीरवीरसोनेकनकरषैं ॥४८॥
भट मकराक्ष बाहु बल पाई ❀ सबल प्रबल निश्चरसमुदाई॥
खरसुत अमित चंड शर मारे ❀ यातुधानबहुशस्त्रप्रहारे॥४९॥
करहिं भालुकपि रण वरियारा ❀ भये सकल तनुव्यथितअपारा॥
सो लखि राम भूरि शरचंडा ❀ मारिकीननिश्चरदलखंडा॥५०॥
खरसुत निज दल विचल निहारा ❀ धायआयरघुवरहिप्रचारा॥
कहा ठाढ हो मम पितुघाती ❀ आजनिपातिसिराऊँछाती॥५१॥
अस्त्र शस्त्र तनु बल जिहि नाहीं ❀ अतिअभ्यासहोयतुमकाहीं॥
द्वंद्व युद्ध मो संग सु करहू ❀ बहुरि वेगि ममशरलगिमरहू ५२॥
सुनि रघुबीरसुउत्तरदीना ❀ हौं तुहि मूढ़ भली विधि चीना ॥
जनिमिथ्याबकवादबढ़ावे ❀ निज पुरुषारथकरिदरशावे ॥५३॥
सुनि मकराक्ष सकोप उताला ❀ छाय दीन रामहिशरजाला ॥
प्रभु ते सकल खंडि महि डारे ❀ अरुप्रचंडनिजशर बहुमारे५४॥
ते निश्चर भंजे सब तीरा ❀ इहि विधि हने दुहूँ दुहुँ वीरा ॥
नृपसुत शर निश्चर बहु छाटे ❀ तासुबाणप्रभु अगणितकाटे ५५॥
तब रघुवीर कोप उर धारा ❀ तासु चाप खंडित करि डारा ॥
बहुरि अष्ट शरते रघुनंदन ❀ कियविनाश सारथि हरिस्यंदन ५६
विरथ होय मकराक्ष सुयोधा ❀ महि धायो गहि शूल सक्रोधा ॥
सबल भ्रमायसुशस्त्रउताला ❀ ताकितौलिरघुवर पर घाला ५७॥
सो प्रचंड शूलहि रघुवीरा ❀ भंजो वेगि चार हनि तीरा ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लखि मकराक्ष शूल निजखंडा ❀ धायोमुष्टिक बाँधि उदंडा९८॥
तब रघुनाथ अनल शर मारा ❀ गिरा भूमि करि घोर चिकारा॥
भो मकराक्ष मृतक बर वीरा ❀ भागेनिश्चरनिरखिअधीरा९९॥
सो०—भो मकराक्ष निपात, निरखि भालु कपि मुदितह्वै॥
बहु कूदत किलकात, कहैं रामजै रामजै॥ ६०॥

इति श्री रा० र० वि० यु० लंकादहन मकराक्षादि
युद्धवधवर्णनो नाम चतुर्दशोविभागः॥ १४॥

चामरछंद।

उतालयातुधान हाल रावणै सबै कहो॥नृपालह्वै विहालत्यों कराल कोप ते दहो॥ तबै विचार ठानिकै सुइंद्रजीत सों कही॥ सुवीर तो समान वीर आन लंकमें नहीं॥१॥ कहा विचारि पुत्र तून आजलों विजै करी॥मनुष्य भालु कीश कूर आय लंक क्षै करी॥ भई भई सु पै अबैविलंब है नकामको॥उतालहालजायकै सँहार डार रामको॥ २॥ तबै सुमेघनाद यौं धराय धीरतातको॥ कही न सोच कीजिये कछूक शत्रु घातको॥सबंधु रामभालुकीश आज हौं नशाय हौं॥ परायहूं कहूं बचैं न व्योमते खसायहौं॥३॥ बखानि इंद्रजीत यौं सुयज्ञ कीन जायकै॥ भयो प्रसन्नसोसमस्त सिद्ध साज पायकै॥ उताल अंतरिक्ष ह्वै अलक्ष गो अकेलही॥ कियो विचार आज हौं विजै करौं सकेलही॥ ४॥विशाल चाप तान कै सँधान बान घालही॥उताल कीश भालु शीश भाल गात शालही॥ लखै न कोउ ताहि सो समस्तसैन हेरही॥प्रहारि तीर मारि वीर भूमि मध्य गेरही॥ ५॥उखार शैल वृक्ष धारकीशऋच्छ धावहीं॥ लखाय ना कहूं सुव्योम ओरको चलावहीं॥ सुरारि पुत्र गुप्त ह्वै अपार बाण मारिकै। दई गिराय भालु कीश सैनको विदारिकै॥ ६॥ परे विहाल ह्वै अधीर वीर तीर पीर ते॥ करैं सुहाय हाय शोर न्हाय नैन नीरते॥ सम्हार सार काहुकी नकाहुको कछू रही॥ अपार धार रक्तकी समस्त अंगते बही॥ ७॥ सबंधु रामअंग मध्य रोम रोम छेदिगे॥सुवीर इंद्रजीतके प्रहारतीर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भेदिगे ॥।भये विहाल दोउ राजपुत्र बाणपात ते॥चली अपार रक्त-धार बेसुमार गात ते ॥८ ॥ तबै अनंत कोपिकै कहीउतालभ्रात सों ॥कहा कलेश होयगोबहोरि प्राण घातसों ॥सुहौं अबै प्रचण्ड ब्रह्म अस्त्र बाणमारहूं ॥ जिते त्रिलोकयातुधानतेसबैसँहारहूं॥९॥ सकोप देखि बंधुको कृपालु राम यों कही ॥ अराति घात हेततात बात योगहै यही ॥परंतु ह्वै नरेश पुत्र ना अनीति धारिये॥सुएक दुष्टलागि क्यों अनेक प्राण मारिये ॥ १० ॥

दोहा –भगो दुरो लीने शरण,नहिं आयो रण मध्य ॥
करजोरे उनमत्त हो, ये षट सदा अवध्य ॥ ११ ॥
याते उर धीरज धरो, हौं मारौं अब याहि ॥
मायामय बरिवंड खल, जोपै भागि न जाहि ॥१२॥
यौं तिहि दृढ वध ठानिकै, नभ दिशि लखे निशंक ॥
रघुवीर हियकी गति समुझि, गयो इंद्रजित लंक ॥ १३॥
पुनि घननाद विचार किय, माया रचौं अपार ॥
ठानि हिये बहुरो तुरत, लै सँग सुभट जुझार ॥१४ ॥
आयो पश्चिम द्वारसो, मायामय सिय रूप ॥
रचि बैठारे सग निज, रथ बिच परम अनूप ॥ १५ ॥
यातुधान दल देखिकै, वानर भालु अपार ॥
क्रोधभये चहु ओरते, धाये तरु गिरिधार ॥१६॥
आवतही कपि वृंदको, दशमुख सुत दरशाय ॥
माया सियको बध कियो, गहि कच खड्ग चलाय॥१७॥
सो लखि हनुमत आदि सब, हाय हाय किय शोर ॥
आरत विकल पुकारहीं, करो कर्म खल घोर ॥१८॥
रुदन करत घननाद पर, धाये पवनकुमार ॥
कहत क्रोधमय दुवचन, मूढ तोहिं धिक्कार १९॥
है अवध्य अबला सदा, पुनि अति दुखी अधीर ॥
बहुरि विवश तिहि वध कियो, दुष्ट कहावत वीर ॥ २०॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौं भाषत धाये सदल, किय तरु कुधर प्रहार ॥
तिनहि छिंदि मारत कपिन, इंद्रजीत बरियार ॥ २१ ॥
समर करत हनुमान प्रति, कहे इंद्रजित बैन ॥
रे कपि मुहि तिय घातको, रंचहु पातक है न ॥ २२ ॥
नर नारी कोऊ कहूँ, पीडाकारक जोय ॥
ताहि वधेते कैसहू, काहू पाप न होय ॥२३ ॥
सुनि हनुमत कपि भालु युत, धाये करि बहु क्रुद्ध ॥
तरु गिरि पाहन भूमि हनि, करनलगे रणयुद्ध ॥ २४॥
क्रोधित काल करालसम, भये वीर विकराल ॥
पौनपुत्र गहि गरु शिला, घाली अतिहि उताल ॥२५ ॥
ताछिन रथ लै सारथी, भागो निरखि शिलाहि ॥
गिरी आय सो ठौर तिहि, धसी धरणिके माहि ॥ २६ ॥
बहुरि हनूमत सदल अरु, युत अनीक घननाद ॥
करत युद्ध रव उद्ध भो, मनौ प्रबल घननाद ॥२७ ॥
हनूमान सोचत हिये, सियहि हती खलवाम ॥
प्रभु रजाय पाये बिना, है अब युद्ध निकाम ॥ २८ ॥
यह विचार दृढ ठानिके, युक्तिहि युक्ति सुधीर ॥
भिरत फिरत निकटत दुरत, गये समर तजि वीर ॥ २९ ॥
इंद्रजीत अवकाश लहि; गयो सदल द्रुत लंक ॥
हनुमत बल दर्पित सकल; निश्चर निपट सशंक ॥ ३० ॥
लंक सिद्धि देवी सु जिहि, है निकुंभिला नाम ॥
करन लगो मख इंद्रजित, करि प्रबंध तिहि ठाम ॥ ३१ ॥
पवनसुवन इत विकल अति, विलपत जाय उताल ॥
कहो सिया वध सुनतही, भूमि गिरे रघुलाल ॥ ३२ ॥
करत विलाप अधीर अति, तन मनकी न सँभार ॥
बहो फेन मुख स्वेद तनु, चली दृगन जल धार ॥ ३३॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

हाय हाय करि रघुराय विलपाय धाये बोले हाय प्यारी
कहाँ वेगहिं बतायदेाजनकदुलारी किनमारीकितडारी हाय आय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हनुमंत फेरि सकल सुनायदे।हौंहूँ प्राण त्यागौं तहां चलिकै छबीली जहां संगलै उताल तिहिं ठौरपहुँचायदे। होनी ही भई सो आज लाज को न काज हाय कैसहू प्रियाको मोहिं वदन दिखायदे ॥३४॥

दोहा–इमि अधीर रघुवीर को, लषण गहे उठि धाय ॥
बैठारे कहि मृदु वचन, समै सरिस समुझाय ॥ ३५ ॥
धीर धरत नहिं रंचहू, बढी विरहकी पार।
बहु विलपत अकुलायकै, कहत वचन रघुवीर ॥३६॥

घनाक्षरी–कवित्त।

रसिकविहारी किमि लगनहुतो सो कूर जा छिन छबीलीको उछाहि व्याहि लायोंमैं ॥ कौन कुघरीही वह जाघरी प्रियाको संग लैकै त्यागि देशको विदेशहि सिधायोंमैं ॥ कैसो दिन अशुभ कराल सो कलेशकारी जादिन समस्त दल साजि इत आयोमैं ॥ जब ते बिछोही तबही ते हाय लाडिलीको सकबेर फेर मुख देखन न पायोंमैं॥३७॥ प्यारी सुरधामको सिधारी सो सुखारीभई हौंतौ तिहि विरहदुखारी करौं हाय हाय।सुरति बिसारी ना निहारी नेक मेरी ओर रसिकविहारी गई न्यारी चित चाय चाय। होवै हितकारी जो सहाय सो हमारी करै लागी अंग अंग रुपवारी विन लाय लाय ॥ ऐसे समै कोऊ आय हनहि कृपान तान त्यागौं प्रान मुदित प्रियाके गुण गाय गाय ॥ ३८ ॥

दोहा–यौं बहु विलपतही विकल, पुनि बोले रघुराय ॥
हनुमत लषण सुकंठ नल,आदिक सबहि सुनाय ॥३९॥

घनाक्षरी कवित्त।

सेवक सुबंधुसखा तन मन वित्त चित्त रसिकविहारी सदानंदमें रहीजियो। हौं तौ अब करत पयान प्राणप्यारी ढिग सकल सुजान सीख येती सुनि लीजियो। लायकै सुदारु भार भूरि बिरचाय शर एकैठौर धारकै दुहूँको दाह दीजियो। मेरो दृढ नेह औ पतिव्रत प्रियाको सत्य ताको निरवाह मेरो अंतलग कीजियो ॥ ४० ॥

दोहा–सुनि लछमन रघुचंदको, गहि निज अंक [illegible]।
कही तात धीरज धरिय, कीजे समय वि[illegible] ४१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौं कहि पुनि रघुवीर सो, बोले कछु झहराय ।
राज तजो प्रभु धर्म हित, ताको फल यह आय ॥ ४२ ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

धरमधुरीण नाथ पायो सो कलेश ऐसो यातुधान रावणसुमोद मध्य तूठे हैं ॥ परम सुकर्मी प्रभु वन वन डोलैं दुखी रावण अधर्मी ताहि राज साज पूठे हैं ॥ रसिकविहारी हौं विचारी निरधारी सत्य सकल शुभाशुभ त्रिलोकही ते ऊठे हैं ॥ धनको प्रभावएक सत्य है सदाहीं और धर्म कर्म ज्ञान पाप पुण्य सब झूठे हैं ॥ ४३ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० ॥ का० ॥ स० ८३ ॥ श्लोक० ॥

समरे युद्ध्यमानानामस्माकं प्रेक्षतां च सः ॥ जघान रुदतीं सीतामिंद्रजिद्रावणात्मजः ॥ १ ॥ तस्यतद्वचनंश्रुत्वाराघवःशोकमूर्च्छितः । निपपात तदा भूमौ छिन्नमूल इव द्रुमः ॥ २ ॥ तं लक्ष्मणोऽथ बाहुभ्यां परिष्वज्य सुदुःखितः ॥ उवाच राममस्वस्थं वाक्यं हेत्वर्थसंयुतम् ३ शुभे वर्त्मनि तिष्ठंतं त्वामार्य विजितेंद्रियम् ॥ अनर्थेभ्यो न शक्नोति त्रातुं धर्मो निरर्थकः ॥ ४ ॥ भूतानां स्थावराणां च जंगमानां च दर्शनम् ॥ यथास्ति न तथा धर्मस्तेन नास्तीति मेमतिः ॥ ५ ॥ यद्यधर्म्मो भवेद्भूतो रावणो नरकं व्रजेत् । भवांश्चधर्मसंयुक्तो नैव व्यसनमाप्नुयात् ॥ ६ ॥ तस्यचव्यसनाभावाद्व्यसनंचागतंत्वयि धर्मो भवत्यधर्मश्च परस्परविरोधिनौ ॥ ७ ॥ यस्मादर्था विवर्धंते येष्वधर्मः प्रतिष्ठितः ॥ क्लिश्यन्ते धर्मशीलाश्च तस्मादेतौ निरर्थकौ ॥ ८ ॥ मम चेदं मतं तात धर्मोयमिति राघव ॥ धर्ममूलं त्वया छिन्नं राज्यमुत्सृजता तदा ॥ ९ ॥ हर्षः कामश्च दर्पश्च धर्मःक्रोधः शमो दमः ॥ अर्थादेतानि सर्वाणि प्रवर्तंतेनराधिप ॥ १० ॥ इत्यादि

दोहा-यौंहीं लखन अनेक विधि, कहे वचन समुझाय ॥
सुनि सुनि समय स्वरूप कछु, धीरधरी रघुराय ॥ ४४ ॥

चौ०-ताही छिन सब सैन सँभारी ❀ आय विभीषण दशानिहारी
विलपत सकल भालु कपिवीरा ❀ लेत उसाँसविकलरघुवीरा ४५

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बूझी लखि लंकेश उताला ❀ विलखि कहो लछमन सबहाला ॥
सुनि भाषी तब सो झेहराई ❀ नृप सुत बैठौक्योंनचुपाई ॥४६॥
पुनि हनुमतहि लंकपतिबोले ❀ ह्वै बुधिमंत बिचारि न बोले ॥
सो मायावी दुष्ट मलीना ❀ मायामय सीतावध कीना ४७ ॥
यों कहि बहुरि निशाचरराई ❀ रघुवीरहिं बहु धीर धराई ॥
राम विभीषण वचन प्रमाना ❀ मायामय सीता वध जाना४८ ॥
पुनि बोले लंकेश उताला ❀ करै इंद्रजित यज्ञ कराला ॥
याछिन लछमन सदलसिधारैं ❀ मखविध्वंस होयतिहिमारैं ४९॥
सुनि रघुनाथरजायसुदीनी ❀ सुभट सैनलछमन बहुलीनी ॥
कवच अंग बहु शस्त्र सुधारे ❀ जैति जैति जैरामउचारे॥ ५० ॥
हनुमानादि सुवीर प्रधाना ❀ जाम्बवंतआदिक भट नाना ॥
धनुशर गदा विभीषणसाजे ❀ यातुधानचहुँविकटसुराजे ॥५१ ॥
रामहि लषण प्रदक्षिणदीना ❀ पदशिर धरि प्रणामधनिकीना ॥
बहुरि कही प्रणठानिअनंता ❀ एहौं हनि निश्चरबलवंता ॥५२॥
यौंकहिलछमनसदलसिधाये ❀ द्रुत निकुंभिला धामहिआये ॥
तब बोले लंकेश उताला ❀ लखौ बीर यह वृक्षविशाला ५३ ॥
इहि वट तर सु इंद्रजितआई ❀ होत अलक्ष व्योममधिजाई ॥
याते करि प्रबंध तरु घेरे ❀ निश्चर खडे विकट चहुँफेरे ॥ ५४ ॥
सो प्रथमहि बल करितरु लीजे ❀ बहुरि निशंकसमर दृढ़ कीजे॥
सो सुनि लक्ष्मण दई रजाई ❀ धाये कीश भालु समुदाई ॥५५॥
तरु ढिग रहे निशाचर जेते ❀ कपिन हने बल कर सब तेते ॥
मारत मरत लरत बरियाई ❀ गहो सु वट रिपुपलहि नशाई ५६
तिहि तरु तर ह्वै सजग सुधीरा ❀ खड़े लषण युत कोटिन बीरा॥
भिरे अपरनिश्चर अरुकीशा ❀ होत समरदुहुँदिशि करिखीशा५७
भयो चहूँ कोलाहल भारी ❀ उठो न मखते नबहु सुरारी ॥
लखि कपि भालुधसे वरियाई ❀ यज्ञसाजसब दीननशाई ॥५८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दंतन नखन इंद्रजित गाता ❀ फारि केश गहि मारहिं लाता॥
भो विध्वंस यज्ञ करि क्रोधा ❀ उठो शूल लै निश्चर यौधा ॥६९॥
सो बहु वीरन मारि गिराये ❀ अपर भाजि लछमन ढिग आये ॥
यज्ञ भंग सुनि सब हरषाने ❀ भयो अबै खलबध दृढ जाने॥६०॥
मेघनाद करि क्रोध कराला ❀ धायो स्यंदन साजि उताला ॥
देखो पवनपुत्रकी ओरा ❀ हनत निश्चरन कपि वरजोरा६१॥

तोमर छंद।

लखि मेघनाद सुहाल। कपि निकट आय उताल ॥
किय अमित शस्त्र प्रहार। गहि कीशते दलि डार ॥ ६२ ॥
लखि पौनसुतहि लरात। धायो दशानन भ्रात ॥
ढिग जाय करि दृग बंक। कह इंद्रजितहि निशंक ॥६३ ॥
रे दुष्ट तू अति उद्ध। करु आज मोसम युद्ध ॥
सुनि मेघनाद रिसाय। बोलो सुभौंह चढाय ॥ ६४ ॥
भो तात बंध कनिष्ठ। हो मौन कुमति अनिष्ठ ॥
महराज बंधु कहाय। भो भिक्षु सेवक जाय ॥ ६५ ॥
दोहा–जो निज सुजन विहायके, करै पराई आश ॥
ताको इत उत दोउ दिशि, हो सब काज विनाश ॥६६॥
इंद्रजीतके वचन सुनि, कहे विभीषण वैन ॥
तू खल पितु युत काल वश, अरु सब निश्चर सैन॥६७॥
क्रूर कुशील कुकर्म रत, कटु वादी मतिहीन ॥
लुब्ध अधर्मी कुटुम जो, ताको तजै प्रवीन ॥ ६८ ॥
यौं कहि कह लंकेश पुनि, रे खल कुमति कराल ॥
वटतर जान न पायहैं, आज होत तव काल ॥ ६९ ॥
सजग दुहू इमि परस्पर, कहत हुते कटु बैन ॥
ताछिन हनुमत कंध चढ़ि, धाय लषण युत सैन ॥ ७०॥
कही आय घननाद सों, रे कायर खल चोर ॥
दुरन न पैहै आज तू, देख पराक्रम मोर ॥ ७१ ॥
सुनि भाषी घननाद तब, भूलि गई वह पीर॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नागफाँस कपिसैन युत, महि डारे दुहुँ वीर ॥ ७२ ॥
कही लषण तब हे कुटिल, करी दुराय सु घात ॥
आज प्रगट दरशाव बल, जितो होय तुव गात ॥ ७३ ॥

तोमरछंद।

सुनि इद्रजित रिस धारि। निज अस्त्र शस्त्र सँभारि ॥
बोलो बहोरि सुछंद। हो सजग दशरथ नंद ॥ ७४ ॥
यौं भाषि अतिहि उताल। सायक तजे विकराल ॥
सो लागि लक्ष्मण गात। बहु रुधिर धार बहात ॥ ७५ ॥
तब लषण बाणन मारि। तिहि कवच दीन विदारि ॥
सोऊ महारिस ठान। भंजन कियो तनु त्रान ॥ ७६ ॥
पुनि राम अनुज उदंड। द्रुत पंच शर वर चंड ॥
घाले सबल धनु तान। तिहि उर विधे बिच आन ॥ ७७ ॥
घननाद युद्ध प्रवीन। लै विषम सायक तीन ॥
मारें सपदि करि लच्छ। वेधे सुलच्छनवच्छ ॥ ७८ ॥
यों विविध उद्धत बान। दुहुँ हनत दुहुँ बलवान ॥
पुनि अपर शस्त्र अपार। दुहुँ करत दोऊ प्रहार ॥ ७९ ॥
इक एक करत अधीर। पुनि सँभरि युद्धत वीर ॥
दुहुँ शस्त्र भंजत दोउ। इमि भिरत फिरत न कोउ ॥ ८० ॥
दुहुँ शस्त्र तकि तकि घाल। दुहुँ अंग विधत कराल ॥
इमि लषण अरु घननाद। कर समर युत अह्लाद ॥ ८१ ॥
बहु यातुधान कराल। कपि ऋच्छ वीर विशाल ॥
वर शस्त्र तरु गिरि धार। कर धाय धाय प्रहार ॥ ८२ ॥
कपि भालु निश्चर झार। भो दोउ दलहि सँहार ॥
महि बही शोणित धार। भे रुंड मुंड पहार ॥ ८३ ॥
कपि भालु निश्चर सैन। इमि करत युद्ध हटैन ॥
त्यों लषण अरु घननाद। किय समर हिय न विषाद ॥ ८४ ॥
तब राम बंधु उदंड। उर गुनो भट वरिबंड ॥
यौं करि विचार उताल। पुनि हने बाण कराल ॥ ८५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो लगत भो मुख दीन। लखि लंकनाथ प्रवीन॥
बोले लषण प्रति ठान। अब मरिहि खल दृढ़ जान ॥ ८६ ॥
तब इंद्रजीत रिसान। लछमनहिं सत्त सुबान॥
मारे बहुरि दशतीर। हनुमतहि वेध सुवीर॥ ८७॥
तब कोपि लक्ष्मण चण्ड। छोडे सुअस्त्र उदंड॥
तिमि इंद्रजीत अपार। किये विविध अस्त्र प्रहार॥ ८८॥
इमि अस्त्र शस्त्र अनेक। घाले जु एकहि एक॥
भे दोउ विह्वल वीर। पै तजत नहिं रणधीर॥ ८९॥
लंकेश लषणहि हेरि। धाये धनुष सजि फेरि॥
द्रुत इंद्रजीतहि आय। शर हनेकोप बढाय॥ ९०॥
पुनि अपर निश्चर भूर। दिय तिनहिं बाणन पूर॥
सँग यातुधान जु चार। ते करहिं समर प्रचार॥ ९१॥
लंकेश समर मझार। कह भालु कपिन प्रचार॥
यहि खलहि मारहु बंक। फिर और वीर न लंक॥ ९२॥
सो सुनि भय भट क्रुद्ध। किय प्रबल औरहु युद्ध॥
लषणहिं लिये निज पीठ। कर समर हनुमत ढीठ॥ ९३॥
लैं भालु दलहि रिछेश। करशत्रु यूथ निशेश॥
भो घोर शोर अपार। दुहुँ ओर भट वरियार॥ ९४॥
तब इंद्रजीत सुधाय। रथते उतरि महि आय॥
रिछपतिहि शक्तिप्रहार। लगि बही शोणित धार॥ ९५॥
तब जाम्बवन्तहु धाय। पद पकरि भूरि भ्रमाय॥
फेंको रिसाय निशंक। गो इंद्रजित गिरिलंक॥ ९६॥
लज्जित सु ह्वै घननाद। पुनि आय करि घननाद॥
रथ बैठि कीन सुयुद्ध। रव घोर दुहुँ दल उद्ध॥ ९७॥
सुनि शोर पुनि दुहुँ वीर। धाये भिरे रणधीर॥
घननाद लछमन उद्ध। ठानो समर भरि क्रुद्ध॥ ९८॥
तब लषण हनि शर चार। रथ बाजि तासु विदार॥
पुनि सूतहू हति दीन। सारथ्य सो निज कीन॥ ९९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब धाय कपि वरियार । डारो तुरँग चहुँ मार ॥
सो धाय लै रथ आन । आयो जु कोउ न जान ॥ १०० ॥
तिहि लाघवी लखि सोय । भे चकित चित सब कोय ॥
पुनि इन्द्रजितधनुधार । किय कपिन बाणप्रहार ॥ १०१ ॥
भागे प्लवंगम धीर । कहि पाहि लक्ष्मण वीर ॥
तब रामबंधु प्रचंड । किय इन्द्रजित धनुखंड ॥ १०२ ॥
निश्चर शरासन आन । लै हने अगणित बान ॥
लखि राम अनुज सुवीर । भंजे सकल तिहि तीर ॥ १०३ ॥
घननाद तब सहरोष । द्रुत धाय करि बहु घोष ॥
पितु बन्धु हीय मझार । शर तीन कीन प्रहार ॥ १०४ ॥
तबहीं विभीषण धाय । गहि गदा चंड भ्रमाय ॥
सह सारथी रथ वाजि । विध्वंस कीन सु गाजि ॥ १०५ ॥
ह्वै इन्द्रजित रथहीन । गरुचंड शक्ति शुलीन ॥
घाली तिनहिंबहु डाटि । द्रुत दीन लषण सु काटि ॥ १०६ ॥
पुनि मेघनाद रिसाय । दियलषण कवच गिराय ॥
तब राम अनुज उदंड । तनु त्रान तिहि किय खंड ॥ १०७ ॥
पुनि दोउ वीर प्रवीन । बहु शस्त्र संयुग कीन ॥
फिरि अस्त्र करत प्रहार । दुहुँ दलत दुहुँ वरियार ॥ १०८ ॥
तब ऐंद्र अस्त्र उदंड । संयुत लषण शरचंड ॥
संधानि तानि सु चाप । भाषी बढाय प्रताप ॥ १०९ ॥
जो राम दशरथ नंद । सत धर्म सत्य सुछंद ॥
हैं तौ लगत यह बान । हो इन्द्रजित बिन प्रान ॥ ११० ॥
यौं सुमिरि दृढ़ प्रण ठान । सो अस्त्र संयुत बान ॥
किय इन्द्रजितहि प्रहार । अति उठी पावकझार ॥ १११ ॥
सो जायके शरचंड । किय तासु शिर भुज खंड ॥
हाराम कहि घननाद । तनु तजो करि घननाद ॥ ११२ ॥
तिहि रुंड भो महि पात । निश्चर भगे बिललात ॥
ह्वै कीश भालु अनन्द । कह जैति दशरथनन्द ॥ ११३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब देववृन्द उताल। नभ आय युत सुरपाल ॥
वरषे प्रसून अनंद। कहि जैति रघुकुल चंद ॥ ११४ ॥
बहु भांति विनय सुनाय। सुरगये निज निज ठाय ॥
प्रमुदित कही सुरराज। निर्भय भये हम आज ॥ ११५ ॥
दोहा—मेघनाद वध करि लषण, लहो अनंद अपार ॥
चले सदल रण भूमिते, कहि जैराम उदार ॥ ११६ ॥
हनूमान लंकेशके, कन्ध लषण धरि हाथ ॥
सिथिल गात शोणित सनो, चले सुमिरि रघुनाथ ११७
राम बन्ध विजयी मुदित, इंद्रजीत कहँ जीति ॥
सकल सैन युत आयके, प्रभुपद गहे सप्रीति ॥११८ ॥
उठि रघुवर हिय लायके, बैठारे निज गोद ॥
बहु सराहि सनमानिके, कहे बन भरि मोद ॥ ११९ ॥
महावीर हो इन्द्रजित, युद्ध प्रवीन निशंक ॥
ताको वध कीनो अनुज, जीति लई अब लंक ॥ १२० ॥
तीन रैन दिनलों लषण, ठानो समर अभंग ॥
दुष्कर कृत कीनो अनुज, भयो सकस दुख भंग ॥१२१॥
यौं रघुवर आनंद भरि, लिये बन्धुको अंक ॥
लषण वीरता सबहि प्रति, वर्णन करत निशंक ॥ १२२॥
ताही छिन श्रीराम ढ़िग, मेघनादको शीश ॥
लाये भट अवलोकिके, मुदित ऋच्छ अरु कीश॥१२३॥
सो विशाल शिर तेजमय, निरखतहीं रघुनाथ ॥
कही धरौ मर्याद युत, है सुवीरको माथ ॥ १२४ ॥
यौं कहि पुनि लखि अनुजको, शोणित व्यथित शरीर ॥
श्रीरघुवर कोमल हृदय, भरि आये दृग नीर ॥ १२५ ॥
ताही छिन वर औषधी, वेगहि लाय सुखेन ॥
किये विरुज लषणहि सदल, तुरत लहोसब चैन ॥१२६॥
अनुज सैन युत विरुज लखि, राघव भये अनंद ॥
कीश भालु किय शोरचहुँ, जै जै जै रघुचंद ॥ १२७ ॥

इतिश्रीरा० र० वि० यु० मेघनादयुद्धवध
वर्णनो नाम पंचदशोविभागः ॥ १५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–सुनत दशानन पुत्र वध, धरणि गिरो मुरझाय ॥
हाय इन्द्रजित वीर बर, कहि रोवत अकुलाय ॥ १ ॥
सकल निशाचर निश्चरी, करत विलाप अपार ॥
छयो शोर चहुँ लंकमें, आरत होत पुकार ॥ २ ॥
पुत्र मरन दुख दुसह लहि, छायो क्रोध अखण्ड ॥
लै कृपाण धायो सपदि, सिय वध हितखल चण्ड ॥ ३ ॥
बरजत धाये सचिव सँग, पहुँचो सियढिग जाय ॥
तिहि विलोकिकै मैथिली, भई सभय बिलपाय ॥ ४ ॥
बहु मंत्री गण रावणहि, सविनय नीति बुझाय ॥
लाये सदन बहोरिकै, बैठारो समुझाय ॥ ५ ॥
इत दशमुख दुखरोष भरि, मंत्रिन मिलि विलपात ॥
उत सबतिय रोवैं विकल, बहु उर शीश धुनात ॥ ६ ॥
इत रण मध्य सु इन्द्रजित, जबहि भयो महिपात ॥
तासु तीय तब महल उत, लखी अनोखी बात ॥ ७ ॥

दोवई छन्द ।

नागसुता तिय इन्द्रजीत की है सुलोचना नामा ॥
परमरम्य सो दृढ़ पतिव्रता बैठी हुती सुधामा ॥
औचकही ता छिन शर छिदित मेघनाद भुज भारी ॥
नभ मग आय परी तिहि सन्मुख विशद विभूषण धारी ॥८॥
उझकि उठी अकुलाय हेरि तिय धाय वेगि ढिग आई ॥
निज पति भुज अनुमानि हाय करि गिरी धरणि मुरझाई ॥
घोर शोर करि रोवन लागी सखिन ताहि समुझाई ॥
तब स्वामी बल गुणि सुलोचना हिय कछु धीरज लाई ॥ ९॥
छिन भुज पेखि विकलहो छिन पति गुणहि सुमिर रहि जावै ॥
कियो विचार नारि दृढ़ जाते सब संदेह मिटावै ॥
दुहुँ कर जोरि ध्यान धरि पतिपद वचन विनय युत बोली ॥
नाह बाहु तौ लिखौ भूमि जो हौं निज धर्म न डोली ॥ १०॥
तब भुज निजगति लिखीसकल महिलखि पियवधदृढजानी॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करि बिलाप बहु निरखि कु औसरपुनिधीरज उरआनी॥
सत्य प्रेम पतिधर्मधारिनी उठि धन वित्तलुटाई ॥
सहित बाहु तनु सजि शिबिकाचढि सखिनसमेतसिधाई ॥ ११॥
दशमुख पास जाय बहु विलपत भाषे वचन कठोरा ॥
कहि बल पुत्रबधुहि समुझाई रावण सहित निहोरा॥
ताहि निदरि सो जाय सासु ढिग पगपरिकियोविलापा ॥
मंदोदरी गोदलै रोवै बढो हृदय संतापा ॥ १२ ॥
पुनि मयसुता वधू जियकी गति नेह धर्म लखिलीनी ॥
जाय लेहु रघुवरते पति शिर यौं कहि शुभ सिख दीनी ॥
सासु रजाय पाय सो सखि गण संगहि वेगि सिधारी॥
आय राम ढिग माथ नायकै मंजुल गिरा उचारी ॥ १३ ॥
प्रभु समर्थ उर अंतर्यामी मो रुचि पूरण कीजै ॥
हौं निज सत्य धर्म निरवाहौं याहिते पति शिर दीजै ॥
नेह धर्म दृढ़ लखि रघुनायक तिहि सो शीश दिवायो ॥
उठि लै पियमस्त सुलोचना हृदै सप्रेम लगायो ॥ १४ ॥
ताछिन हँसि कपीश यौं बोले निश्चर माया भारी ॥
छिदित मृतकबाहु लिखि देवै यह मिथ्यागति सारी ॥
जो पै सत्य भुजा लिपि कीनी तोपै अब यह शीशा ॥
याछिन हँसै बात तब मानै नत प्रपंच सब दीशा ॥ १५ ॥
सुनि बोले रघुवर सुकण्ठ सों सखा न मिथ्या मानौ ॥
लिखी भुजा सों सत्य बात अरु शिरहु हँसै दृढ जानो ॥
मो हिय ध्रुव प्रतीत याते यह है पतिव्रता नारी ॥
पतिव्रत धर्म प्रभाव अमित सो इती बात कह भारी ॥ १६ ॥
सुनि हिय अमरष सोच सकुच युत धरि सन्मुख पति माथा॥
हँसो नाथ लज्जा मम राखो कही जोरि युग हाथा ॥
विनय करतही हँसो वेगि सो लखि सब अचरज आयो ॥
दशमुख पुत्र वधू हरषीलजि कपिपति शीश नवायो ॥ १७ ॥
पुनि सु राम लछमन लंकेशहि सविनय शीश नवाई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लैशिर धरि शिबिका अरूढ ह्वै वेगि लंक मधि आई ॥
सुथल उताल रचाय सविधि सर लै भुज शीश सुवामा ॥
ह्वै निशंक तनु दहो सपति सो गमन कियो सुरधामा ॥१८॥
दोहा–मेघनाद बल वीरता, अरु सुलोचना धर्म ।
देव अदेव सराहहीं, निरखि दुहूँ दृढ कर्म ॥ १९॥
लंकापति निश्चर सकल, विकल अधिक अकुलाय ॥
हाय हाय करि रोवहीं, इंद्रजीतगुण गाय ॥ २० ॥
कहत निशाचर निश्चरी, विलपि विलपि पछिताय ।
हाय दशानन का कियो, डारी लंक नशाय ॥२१ ॥
इहि विधि लंका मध्य सब, सोचैं निश्चर वृंद ॥
इत रघुवर दल माहिं चहुँ, छायो परमानद ॥२२ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० सुलोचना सत्य वर्णनो नाम षोडशोविभागः॥ १६ ॥

तोटक छंद ।

दशकंठ सुमौन उसास भरै। घननाद बिना बहु सोचकरै ॥
धरि धीर बहोरि विचार कियो ।इत मोबिन है नहिं औरवियो१॥
वर वीर जिते बहु लंक रहे । सब राम शरानल ज्वाल दहे ॥
अब है महिरावण आवहि सो ।छलते बलते जय पावहिसो ॥२॥
इमि ठानि शिवालय माहिंगयो । जपिमंत्र महाबलिदानदियो ॥
तिहि सिद्धि प्रभाव उतालहिते । महिरावणआयपतालहिते ॥३॥
दशमाथहि वेगि मिलो सु तबै । तिहि ते वरणो तिन हाल सबै ॥
सुनिकै महिरावण रावणको । बहु धीर दई जै पावनको ॥ ४ ॥
पुनि यौं अहिरावण बात कही । हरिलै हतिहौं दुहुँ भ्रातसही॥
जब राम सबंधु रहैं न यहां ।तबही कपि भालु बचैं सु कहां ॥५॥
इक याम सु ओग्हु धीरधरौ ।पुनि धाय विजय निरसंककरौ ।
हरि दोउ पताल सिधावहुँगो।बलि देविहि जाय चढ़ावहुँगो॥६॥
जब भूरि प्रकाश दशौदिशिमें। दिनको सम देखि परै निशिमें॥
तब जानि लियो ध्रुव काज भयो ।अहिरावणलैदुहुँबंधुगयो ॥७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इहि भांति बुझाय चलो खल सो। दशमाथ सहर्ष गयो थल सो॥
महिरावण आय उताल तहां। निरखी कपि सैन प्रबंध महा ॥८॥
हनुमंत सुपुच्छ बढाय घनी। चहुँ कोट कियोबिच मुख्य अनी॥
सुचमू मधि राम सुबंधु लसे। पुनि संनिध वीर सचेत गसे॥९॥
कपि ऋच्छ सुयूथप सैन लिये। सहचेत फिरैं चहुँ चक्र दिये ॥
गति कीट पतंगहुकी न तहां। प्रभुके ढिग जाय सु और कहां १०
हनुमंत लँगूर सुकोट चहूँ। नहिं काहु दिशामधि पंथकहूँ ॥
इक पौन तनै ढिग ते मग है। तितहूँ कपि रोपि रहो पग है॥११॥
महिरावण ठाम अगम्य लखो। तब रूप विभीषणको सुरखो ॥
द्रुत पौन तनै ढिग जाय कही। कपि राघव जागत है कि नहीं १२
दुरि भेद लगावन लंक गयो। तिहिते मुहिं आज विलंब भयो ॥
प्रभु पास जु वेगहि जावहुँ मैं। सब हाल इकंत सुनावहुँ मैं॥१३॥
इमि भाषि चलो सु अनंद लहो। निज जानि कछू नहिं कीश कहो॥
हनुमंत भुलायगये छलमें। निरशंक सुजात भयो दलमें ॥ १४॥

दोहा--जाय लखे सब दूरिते, राम लषण कपिराज ॥
गज गवाक्ष लंकेश अरु, अपर समस्त समाज ॥ १५॥
सहित प्रबंध सचेत बहु, शोभित सब सरदार ॥
अपर पाहरू भालु कपि, निज निज ठौर हुस्यार ॥ १६॥
सो लखि महिरावण तबैं, काज समैं अनुमान ॥
कीनो कामा देविको, मंत्र पठन युत ध्यान ॥ १७॥
सो निश्चरमाया विवश, सबही भये अचेत ॥
छाई निद्रा घोर बहु, काहू कछू न चेत ॥ १८॥
तब महिरावण राम ढिग, गयो निशंक उताल ॥
जाय लखो दुहुँ बंधुको, तनुमुख तेज विशाल ॥ १९॥
गुनि कीनो दोउनको, तंभन बगलामंत्र ॥
प्रभुमर्यादापाल सो; सब विधि भयो निजंत्र ॥ २०॥
माया करि इहिभाँतिसो, अहिरावण हरषाय ॥
राम लषण हरिलै गयो, नभ मग वेगि दुराय ॥२१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताछिन भयो प्रकाश बहु, दिन समान चहुँओर ।।
सो विलोकि सब चकित भे, मिटो रैनतम घोर । २२ ।
सो प्रकाश ह्वै तुरत पुनि, मिटो भयो अँधियार ॥
उझकि उठे जित तित चहूँ, वानर भालु अपार २३ ॥
उत रावण हरषो लखो, महिरावण किय काज ॥
इत कपिदल खरभरपरी, नहिं सबंधु रघुराज । २४ ।

मोतीदामछंद ।

सुकंठ विभीषण आदि अपार । लखैं चहुँ एकहि एक पुकार ॥
भयो कपि सैन कुलाहल शोर । कहैं कितगे दुहुँ राजकिशोर ॥ २५॥
बिहाल फिरैं सबही दुख ग्रस्त । भये कपि भालु हिये बहु त्रस्त ॥
सुकंठ विभीषण औ रिछराय । सुबूझत भे हनुमंतहि धाय ॥ २६ ॥
कही तब कीश विभीषण पाहि । गये अबहीं तुम और सुनाहि ॥
जु लंकपती सुनि चक्रित होय । कही हम जानि लयो छल जोय२७
धरै मम रूप न और लखाहि । पताल रहै महिरावण आहि ॥
वही हरि लीन दुहूँ नृपनंद । सुजानत है अतिहीछलछन्द ॥२८॥
विभीषणके सुनि बैन कपीश । रिच्छेश हनूमत आदिक कीश ॥
सबै अकुलाय जु कीन विचार।मिले किमि दोउ सु राजकुमार२९
कहेतब बैन सुकंठ उताल । समर्थ सबैं विधि अंजनि लाल ॥
सु आतुर धावहु वीर पताल । लखौ सह बंधु कहा रघुलाल ॥३०
तबै हनुमंत सुरूप दुराय । उठे सबही बहु धीर धराय ॥
कही अबहीं महिरावण मार । सुआवहुँ लै दुहुँ राजकुमार ३१॥
सु यौं कहि कूदि अकाशहि जाय । चले पितु वेगहि रोष बढाय ॥
लखो तरु एक जु मारग माहिं । तहां खग गिद्धनि गिद्ध रहाहिं ३२॥
सगर्भिनि गिद्धनि गिद्धहि टेरि । कही नर आमिष लावहु हेरि॥
तबै वरणी वह धीर धराय ॥ घनो तुहिदेहुँ सुप्रातहि लाय ॥ ३३।
पताल रहै अहिरावण वीर । सबंधु हरे सु अबै रघुवीर ॥
प्रभात करै तिनको बलिदान । विशुद्ध धरौं वह आमिष आन ३४
सुने इमि बैन प्रभंजन पूत । पताल गये द्रुतहीं अवधूत ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुखोजिलियो महिरावण धाम ।प्रबंध महा निरखो तिहिठाम३५॥
लखो तहँ द्वार महा वरिबंड । खडो इक वानर बाल प्रचंड ॥
सुपौनतनैं कहँ जान न दीन । भिरेदुहुँ युद्ध परस्पर कीन ॥३६॥
समीरतनै तिहि पुच्छहि माहि । निबंध कियोपुनि गे गृहमांहि ॥
सुनो न गुनो न लखोकछु कोय । लगे निज काजअनंदितहोय३७
तहाँ द्रुतजाय समीरकुमार । अलक्ष भये सब लीन निहार ॥
सजो बहुसाज समाज अपार । महामख होत उठैंसिखिझार ५३८॥
लसै वरमंडप मध्य सु देवि । यथोचित हैं सबही जन सेवि ॥
धरी चहुँ पूजन सौंज अपार । जुरे नर नारि निशाचर झार ॥३९॥
समीरतनै लखि ठानि विचार । महा लघुकीट सुरूपहिधार ॥
प्रसूनन माहिं दुरे द्रुतजाय । सु भेद परो नहिं काहूलखाय॥४०॥
सुफूल भये महिरावण हस्त । जु देविहि दीन चढाय समस्त ॥
चढ़ावतही द्रुत अंजनिलाल । तहाँप्रगटो तियरूपकराल ॥४१॥
दई पगते तिहिदेविहिचापि । गई वह तो धरणी धसि काँपि ॥
खडो तहँ वीर बडो मुख फारि । प्रसन्न सबै सुचरित्र निहारि ४२॥
परस्पर बोल समस्त समाज ।प्रसन्न भई वरदायनि आज ॥
सहर्ष तबै महिरावण धाय । कियो बहु पूजन प्रीति बढाय॥४३॥
घने पकवान फलादिकभोग । सुरापल शोणित लाय सुयोग ॥
हजार हजार भरे घट थार । धरे कपि सो सब कीन अहार॥४४॥
तबै आहरावण वेगहि धाय । सुठाम जु राम सबंधुहि लाय ॥
कही सुमिरो दुहुँ जोतुवहोय । हतौंअबहींबलिदेवि हि होय ४५॥
सुने निहिके दुहुँ बंधु जु बैन । परस्पर हेरि भरे जलनैन ॥
तबै समिरो हनुमानहि राम । गुनो मनमें कपि है बलधाम ॥४६॥
तिही छिन काढ़ि कृपाण कराल । चहो महिरावण घाल उताल ॥
तबै कपि वेगि सुरूप विहाय । प्रसिद्ध भये निज देह दिखाय४७॥
सरोष ततक्षण सर्व समाज । सँहारि कियो कपि घोर गराज ॥
तबै अहिरावण चंड कृपान । हनी हनुमंत हिये कर तान ॥४८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समीर तनै द्रुत सो असि छीन । कियो महिरावणको शिर छीन ॥
बहोरि बचे तहँ जे नर नारि । सुते बलवंत समस्त संहारि ॥ ४९ ॥
लिये दुहुँ बंधु सुकंध चढाय । चले हनुमंत अनंद बढ़ाय ॥
प्रमोद भरे अवधेशकुमार । सराहत कीशहि बारहिबार ॥ ५० ॥
लखो पुनि द्वार प्रभंजन लाल । बँधो निज पुच्छहि सो कपिबाल ॥
दियो तब छोरिदयाहियलाय । कही इत राजकरौतुमजाय ५१ ॥
सुनी मकरध्वज तात रजाय । सहर्ष सुराज कियो तहँ जाय ॥
उतै दुहुँ बंधुहि कंध सुधार । गयोकपि वेगहिसेन मझार ॥ ५२ ॥
सुजै रघुवीर कही करि शोर । सुनो कपि भालु उठे चहुँ ओर ॥
लखे हनुमंतहि राम समेत । सचेत भये सब हे जु अचेत ॥ ५३ ॥
सहर्ष मिले हनुमानहि धाय । गहे दुहुँ बंधुनके सब पाय ॥
भयो अतिआनँदसैनमझार । छयो चहुँजयजयशोर अपार ॥ ५४ ॥
सुनो दशकंधर हाल समस्त । कियो बहु शोक भयो दुखग्रस्त ॥
कही पुनि तीयघनीविधिताहि । सियाकहँदेहुसुमानत नाहि ५५ ॥

इति श्रीरामरसायन र० वि० यु० महिरावण वध-
वर्णनो नाम सप्तदशोविभागः ॥ १७ ॥

दोहा-महिरावण वध सुनि अतिहि, सोच विवश दशभाल ॥
खेद रोष युत प्रातही, आयो सभा उताल ॥ १ ॥
व्यग्रचित्त इत उत लखत, बैठो मौन उदास ॥
कर कपोल छिन शीश धरि, दृग भरि लेतउसास ॥ २ ॥
सो विलोकि बहु वीर वर, उठि बोले कर जोर ॥
होय रजाय सुजाय हम, समर करैं अति घोर ॥ ३ ॥
राम लषण प्रभु अनुज युत, सह सुकंठ हनुमान ॥
सबकर करि संहार पुनि, वेगि लखैं पदआन ॥ ४ ॥
सो सुनि हिय कछु धीर धरि, दशमुख आज्ञा दीन ॥
मुख्य वीर लै भूरि दल, साजि गमन द्रुत कीन ॥ ५ ॥
तिनहि निरखि कपि भालु भट, धाये तरु गिरि धार ॥
भयो समर अति घोरचहुँ, हाहा होत पुकार ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्राणआश तजि रैनचर, परे अनी बिच धाय ॥
मारि विडारे भालु कपि, लिये घने गहि खाय ॥ ७॥
विकल भयो कपि ऋच्छ दल, भभरि भगे तजि धीर ॥
जाय पुकारे राम ढिग, पाहि पाहि रघुवीर ॥ ८॥
तब रघुवीर धनु साजि द्रुत, धाय हने बहु बान ॥
राम नगचनते व्यथित, निश्चर दल बिचलान ॥९॥
पुनि धरि धीर सु रजनिचर, धाये एकहि बार ॥
तिनहिं राम ते रामपर, किय बहु शस्त्र प्रहार ॥ १० ॥
राम गंधरव अस्त्र शर, छाँडो परम प्रचंड ॥
जाते कोटिन रजनिचर, होने लगे शतखंड ॥ ११ ॥
पुनि रघुवीर कौतुक कियो, प्रगटे रूप अपार ॥
इक राक्षस प्रति राम इक, बाणन करत प्रहार ॥ १२ ॥

प्र० बा० यु० का० ॥ स० ९४ ॥ श्लो० ॥

ते तु रामसहस्राणि रणे पश्यन्ति राक्षसाः ॥
पुनः पश्यन्ति काकुत्स्थमेकमेव महाहवे ॥ १ ॥

दोहा-यातुधान सो चरित लखि, चकित विकल अकुलाय॥
बहुरि छिनक मधि देखहीं, लरत एक रघुराय ॥ १३॥
यहि विधि श्रीरघुवीर वर, निश्चर भट जुँझार ॥
युग घटिका पदहीन मधि, किये सकल संहार ॥१४॥
द्वै लख पदचर अयुत रथ, वसु दश सहस मतंग ॥
सहस चतुर्दश वाजि वर, इक इक यूथपसंग ॥ १५॥
इमि यूथप अति मुख्यवर, सहस कोटि बलधाम ॥
तिनहिं सदल पूरव कथित, वध कीने श्रीराम ॥ १६ ॥
निरखि विजय जय शोर भो, लखि प्रभुबाण प्रभाव॥
चकित चित्त हनुमंत सों, बूझी निश्चरराव ॥ १७ ॥
कहौ वीर रघुवीर शर, कढ़त तूनते एक ॥
कहा हेत सो जायकै, निश्चर, हनत अनेक ॥ १८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तबै विभीषण प्रति कही, हनुमत बुद्धिनिधान ॥
प्रभुकर परशत शर बढ़त, ज्यौं सुपात्रको दान ॥ १९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

तूनमधि एकै दशहोत कर धारतही करतसंधानशतरूपप्रगटा वैहै ॥ साजत शरासन पै रचत सहस्र गात गमन समै में ह्वै सुलक्ष वपुजावै है ॥ लागत करोरि त्यौं बहोरिअर्व खर्वहोवैअमित उदंड खलझुंडन नशावैहै॥ रसिकबिहारी राम सायक प्रताप भारी दुष्टदल मारी सो निषंग फिरि आवै है ॥ २० ॥

दोहा—सुनत विभीषण कपि वचन, कही राम शरधन्य ॥
धन्य नाथ धनि ते सुजन, जे प्रभु भक्त अनन्य॥ २१ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० मुलदल युद्धवधवर्णनो
नाम अष्टादशोविभागः ॥ १८ ॥

दोहा—इत प्रमुदित सब राम दल, कह जै सीतानाथ ॥
उत वीरनको निधन सुनि, दुखित भयो दशमाथ ॥ १ ॥
कहत दशानन हौं नहीं, सुनो विभीषण सीख ॥
भाषी जिती सुबंधु सो, मोहिं परी सब दीख ॥ २ ॥
पै अब तौ प्रण है यही, होय विजय लौ नाम ॥
जो तनु त्यागौं युद्धमें, बसौं जाय सुरधाम ॥ ३ ॥
यौं कहि बहु विधि वचन पुनि, दशमुख रोष बढ़ाय ॥
हौं चलिहौं सब सजहु यौं, मंत्रिन दई रजाय ॥ ४ ॥
सुनत महोदर वीरवर, महापार्श्व वरिवंड ॥
विरूपाक्ष आदिक सकल, समर उदंड प्रचंड ॥ ५ ॥
सजो लंकपति संगहित, दल चतुरंग अभंग ॥
यातुधान बलवान बहु, गाजैं युद्ध उमंग ॥ ६ ॥

चापया छंद ।

करि विविध प्रकारा युक्ति अपारा भूषण बसन हथ्यारा॥
सजिकै दशभाला सुरथ विशालाबैठ बजाय नगारा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निज सैन निहारी मुदित मुरारी कहत राम कह बाता ॥
दोऊ धनुधारी सह कपि झारी करिहौं आज निपाता ॥ ७ ॥
स्यंदन शत लक्षा गज दश लक्षा पदचर अगणित घोरा ॥
खर ऊंट तुरंगा सजे सुढंगा तीसहि तीस करोरा ॥
इमि सैन मझारा रथ असवारा दशमुख कीन पयाना ॥
ताछिन चहुँघाई परे लखाई अशकुन बये जुननाना ॥ ८ ॥
दोहा-इत रावण आगमन सुनि, कीश भालु वरि बंड ।
चले सजग ह्वै समरहित, लैतरु कुधर प्रचंड ॥९॥
उत रावण इत राम दल, प्रबल अभंग अपार ॥
चले दुहूँ दिशिते दुहूँ, सहि न सकैं महिभार ॥ १० ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

स्यंदन सवार ह्वै अपार उत यातुधान कवच मढे हैं अंग नख शिख झांफि झांफि॥रसिकविहारी इत भालु कपि भारीभीर चलत चमूके धूरि पूरि भानु छांफि छांफि ॥ दोऊ दल भार भूमि डगमग होत चहूँ दिग्गज सु दब्बै पग्ग शुंडनते चांफि चांफि॥जोरते सहस्र शीश जोरतफनीश तऊ बोझनते बार बारजात फनलंफिलंफि॥ ११॥

चौपैया छन्द ।

आवत दशशीशा लखि भट कीशा धाये करि अतिरीसा ।
सो कोपि बिदारा कपि दल सारा गहि धनु शर भुजवीसा ॥
पुनि निश्चर नाना बहु बलवाना ऋच्छ प्लवंगम खाये ।
निज प्रभुबल पाई चहुँ दिशि धाई शस्त्रन मारि गिराये ॥१२॥
सो लखि कपिराजा बल करि गाजा गहि तरु कुधर अपारा ॥
निश्चरन प्रहारैं हति महि डारैं मर्दत रिपुदल सारा ॥
करि क्रोध तमीचर कीशपतीपर वर्षहिं शस्त्र घनेरे ॥
ते सबधरि भंजै पुनि खल गंजैं वालिबंधु चहुँ फेरे ॥ १३॥
सो०-निरखत निज दल शाल, विरूपाक्ष योधा प्रबल ॥
करि बहु कोप कराल, तजिरथ गज आरूढ भो ॥ १४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौपैया छन्द।

सो अतिहि उताला बाण कराला बहु सुग्रीवहि मारे ॥
संग्रथन निहारी ले तरु भारी हनि कपि अंग विदारे ॥
पुनि वनचरपाला धरि शुंडाला खैंचो धनुष प्रमाना ॥
तिहि पकरि पछारो दंत उखारो हतिडारो बलवाना ॥ १५ ॥
दोहा-विरूपाक्ष गजघात लखि, धायो लै करबाल ॥
तापर कपिपति वेगही, घाली शिला बिशाल ॥ १६ ॥
विरूपाक्ष तिहि खड्गते, खंडित कीन उताल ॥
हनी कृपान बहोरि, लगि, कपिपति भयो विहाल ॥ १७ ॥

चौपैया छन्द।

पुनि सँभरि कपीशा करि बलरीसा मुष्टि तासु उर घाली ॥
निश्चर अकुलाई पुनि तुर धाई असि सुकंठ तनुशाली ॥
तब कीश उताला शिला विशाला हनि तिहि भूमि गिरायो ॥
सो वीर कराला भयो विहाला वेगि प्राण बिनशायो ॥ १८ ॥
दोहा-विरूपाक्ष को मरन लखि, कुपित महोदर वीर ॥
धाय हने सुग्रीवके, अंग अमित खर तीर ॥ १९ ॥

चौपैया छंद।

लगि बाण विहाला भे कपिपाला तबहि महोदर धाई ॥
हनि शस्त्र प्रचण्डन करि करि खण्डन दिय कपि भालु नशाई ।
पुनि सँभरि कपिंदा तिहि तनु भिंदा बहु तरु कुधर प्रहारे ॥
ते कछु तनु लागे कछु लगि भागे कछु विभंजि महिडारे ॥२०॥
तबहीं कपिपाला परिघकराला लियो उठाय उताला ॥
सो हनि हरि स्यंदन कीन निकंदन पुनि निश्चर शिरघाला ॥
सो भूतल आई गदा भमाई किय कपिहीय प्रहारा ।
बहुरो कपिराई परिघ फिराई तासु हृदय मधिमारा ॥ २१ ॥
सो परिघ प्रचण्डा गदा उदंडा दुहूँ शस्त्र दुहुँ खण्डे ॥
तहँ विविध हथ्यारा भूमि मझारा परे सु लैरण मण्डे ॥
फिरि कीश उतंका निश्चर बंका दोऊ भिरे सु योधा ।
तल मुक्कन लत्तन नख्खन दन्तन नाशत वपु करि क्रोधा ॥ २२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब निश्चर हाला खड्ग कराला हनो कीशके अंगा॥
सो लै करबाला वनचरपाला कियो तासु शिर भंगा॥
करि घोर पुकारा अवनिमझारा गिरो महोदर वीरा॥
तिहि निधन निहारी निश्चर धारी कियो विलाप अधीरा॥२३॥
सो०-निरखि महोदर अंत, महापार्श्व बहु क्रोध भरि॥
सायक शालि अनंत, कीन कपीशहि व्यथित अति॥२४॥
पुनि अंगदहु सुधाय, सहित भालु कपि सैन बहु॥
बाणनमारि थकाय, करन लगो सब दल विचल॥ २५॥

चौपैया छंद।

तब अंगद धाई परिघ उठाई कीनो वेगि प्रहारा॥
सारथी समेता होय अचेता गिरो सु भूमि मझारा॥
ताछिन ऋच्छनाथा निज दल साथा गहितरु भूधर धाये॥
तिहि स्यंदन तोरा शिला कठोरा हनि वर वाजि नशाये॥२६॥
दोहा-ताछिन सँभरि उताल उठि, महापार्श्व वर वीर॥
सदल ऋच्छपति अंगदहि, विकल किये हनि तीर॥२७॥

चौपैया छंद।

कपि ऋच्छ विहाला निरखि उताला अंगद परिघ प्रहारा॥
तिहि लागत निश्चर करते धनु शर गिरिगो धरणि मझारा॥
सो कोपि प्रचंडा फरस अखंडा वालितनय पर घाला॥
करि दाँव बचाई पुनि तिहि धाई वज्रमुष्ट उरशाला॥ २८॥
सो०-लागत मुष्ट प्रचंड, महापार्श्व वरिबंड भट॥
हृदय भयो शतखंड, गिरो मृतक ह्वै समर महि॥ २९॥
ताहि निधन करि वीर, धाय हनत बहु निश्चरन॥
भये सु निपट अधीर, आरत करत पुकार अति॥ ३०॥

चक्रछंद।

यातुधान ईश हेरि यातुधान नाशही॥ कोपि सारथीही यौंकही सुलै उसासही॥देख देख भालु कीश मारि मारि भज्जहीं॥मोसमस्त सैन को सँहारि घोर गज्जहीं॥ ३१॥ वेगि कीश ऋच्छभीर मध्यवाह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्यंदनै ॥ मारहूँ समेत सेन आज राजनंदनै ॥ यौं चलाय रथ्थ वीस हथ्थ चाप बानलै ॥ घाल घालतीर वीरवीरडारप्रानलै॥३२॥ देखि लंक ईश रीस कीश युद्ध तज्जिकै ॥ त्राहि त्राहिबोलहींसुराम पास भज्जिकै ॥ जानिकै सुरारिचंड दोउबंधुक्रुद्धह्वै ॥ चापबाणसाजिकै सुरारि भे निरुद्धह्वै ॥ ३३॥ वेगतेप्रचंडबाणदोउवीरछंडहीं ॥ यातुधान ईशके समस्त शस्त्र खंडहीं॥वीसबाहु बाहुलाघवी चली न नेकहू ॥ कीन जे प्रहार ते बचे न तीर एकहू ॥ ३४ ॥ फेरि लंकपाल पै तजे प्रचंडबानजे ॥ सोउ खंडि खंडि कीन रेणुकी समानते॥यातुधान वीरके सुअंगतीर छेदिगे॥दोउभ्रातगातमें प्रचंडमंडभेदिगे॥३५॥कौशलाधिराजनिश्चराधिराजक्रुद्धमें॥ दोउभेनि रुद्ध उद्ध बुद्ध अस्त्र युद्धमें ॥ लंकनाथ राम अस्त्र शस्त्र भंजि डारहीं ॥ राजपुत्र तासु अस्त्र शस्त्रते सँहारहीं ॥ ३६ ॥ सर्वअस्त्र शस्त्रमें प्रवीन दोउ वीर हैं ॥ युद्धमें प्रबुद्धमेंसुदोउवीरधीरहैं॥काहु के न अस्त्र काहु काहु पै प्रचंड भे ॥ ह्वै रहे समान जो अखंडखंडमंड भे ॥ ३७ ॥ हेरिकै अनंत ह्वै सरोष बाण छंडिकै ॥ सूतकेतु चापतासुडारि दीनखंडिकै ॥ तासमैविभीषणौ गदा प्रहार धायकै ॥रथ्थ वाजिमारिदीनभूमिमें गिरायकै॥ ॥ ३८ ॥ देखि सोसुरारिशक्तिबंधु पैप्रहारकीन॥ताहिभंजिबाणते जु राम बंधु डारदी ॥ कोपि लंकनाथ यों अनंतसोंतबैकही॥क्यों बचै विभीषणै सु मृत्यु आपनीचही ॥ ३९॥भाषियों सुरारिब्रह्मदत्त शक्ति धारिकै ॥ कीन सों प्रहार राम बंधु पैप्रचारिकै॥तासुभंग हेतु लै अनेक बाण तज्जही ॥ पै अभंग है उदंड शस्त्र नाहिं भज्जही ॥ ४० ॥ शक्ति सो प्रचंड राम बंधु हीयछेदिगी॥पातभे विहाल ह्वै सुभूमि मध्य भेदिगी ॥ देखि भ्रात घातरामशोकसिंधु डूबिकै ॥ धीर धार औसरै विचार प्राण ऊबिकै ॥४१॥ वेगही उखारि शक्ति भंजिकै बहायदी॥भूरिभारचंडदेवदत्तसोंनशायदी॥ जो लगे सुराम शक्ति भंगकी नतौ लगे ॥ शालि दीन लंकनाथ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाण अंगसों लगे ॥ ४२ ॥ फेरि राम बंधुको सुखेनबोलि सौंपिकै॥ रावणै प्रहारकीन भूरि बाण कोपिकै ॥ लंकपाल वीर तीर शक्ति शूल घालही ॥ होत है विहाल ह्वै सचेत शस्त्र शालही ॥ ४३ ॥ तासमै प्रचंडघोर शोर भो अपारही ॥ कीश भालु यातुधान मर्दिकै विदारही ॥ औघनाथ लंकनाथ दोउ क्रुद्ध छै गये ॥ कै अराम कै अरावणै यही दृढै लये ॥ ४४ ॥ राम कोपि कोपिकै प्रचंडबान जे हने ॥ ते समस्त लंकनाथ गातमें विधे घने॥ तासमै निशाचरेश हीयमें विचारही ॥ हौं करौं जु युद्ध कोउ तीर ये निसारही ॥४५॥ ता समै जु रामचंद्र बंधुनेह लायकै ॥ कीन यों विचार भ्रात देखि आउँ धायकै ॥ फेर हौं सुरारिको सुरारि ठान मारहूँ॥ वेगि भंजि याहि भूमिभारको उतारहूँ॥ ४६ ॥यों विचार ठानि रामबंधु पास धायगे ॥ देखिकै विहालक्रुद्ध बुद्धिसोंभुलायगे॥तासमै सुलंकनाथ औसरै निहारिकै ॥ ह्वै अलक्ष गो उताल धामकोसिधारिकै॥४७॥

दोहा—जाय लंकपति लंकमधि, बैठो रहसि निकेत ॥
रामसायकन व्यथित सो, दीह उसाँस न लेत ॥४८॥
ताछिन तिहि मंदोदरी, समुझायो पुनि भूर ॥
कही कंत अजहूं भली, करौ सकल हठ दूर ॥ ४९ ॥
सियहि साथ लै नाथ द्रुत, मिलहु जाय रघुनाथ ॥
जाते हौं आनंदमय, प्रभुयुत रहौं सनाथ ॥ ५० ॥
सुनि दशमुख मंदोदरिहि, गहि लाई निज अंक ॥
बहु विधि धीर धरायकै, कहे बैन निश्शंक ॥ ५१ ॥
हौं जानौ सब भामिनी, पै हैं अकथ सुभेद ॥
युद्धकियेही मोर भल, ह्वैहै करो न खेद ॥ ५२ ॥
तब बोली तिय लखहु पिय, अब कह जयकी आश ॥
कुंभकर्ण घननादसे, समरथ भये विनाश ॥ ५३ ॥
बंधु पुत्रको नाम सुनि, दशमुख भरि जलनैन ॥
पुनि बहु कोप बढायकै, भाषे उद्धत बैन ॥ ५४॥
हौं अबहीं द्रुत जायकै, करि मख रैनिमझार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कालि मध्य दिन साजिदल, संयुग ठनौं अपार ॥ ५५ ॥
इष्ट कृपा ते जीतिहौं, रामहि सदल उताल ॥
यौं कहि गमनो साज सजि, यज्ञशाल दशभाल ॥ ५६ ॥
इत लछमनहि विलोकि कै, राघव करत विलाप ॥
बोले अति विह्वल हृदय, बढो महासंताप ॥५७॥
हाय लषण हा बंधु प्रिय, नेक लखौ मम ओर ॥
कहौ वचन कछु क्यौं कियो, ऐसो हियो कठोर ॥५८॥
मोहिं अकेले त्यागि इत, जनि जावो सुरधाम ॥
हौं तुव संग सिधारिहौं, अब मोजियन निकाम ॥ ५९ ॥
जाति मित्र धन धाम तिय, पाइय देश विदेश ॥
गयो सहोदर बंधु फिरि, मिलै न काहू देश ॥ ६० ॥
यौं विलपत बहु रामसों, कह सुखेन वर बैन ॥
धीरज धारौ नाथ उर, सोच समै यह हैन ॥ ६१॥
पुनि हेरौ तनु लषणको, नहीं श्याम नहिं सीत ॥
मुख प्रफुल्ल कर पद अरुण, तजौ नाथ सब भीत ॥ ६२ ॥
सुनि बोले रघुवीर अब, बंधु लहै किमि चैन ॥
जाम्बवंत ताछिन कहे, समय सरिस वरवैन ॥ ६३ ॥
लंकामधि सद वैद्य वर, है सुषेन जिहि नाम ॥
तिहि आये सब भाँति ते, सिद्धि होय निजकाम ॥ ६४ ॥
पवनसुतहि जो भेजिये, बहुरि सु औषधि हेत ॥
तौन बनै अब छिनहि छिन, लछमन होत अचेत ॥६५॥
तब रघुवर हनुमंत सों, बोले निपट अधीर ॥
जाहु लंकते वैदसो, कैसहु लावो वीर ॥ ६६ ॥
तब हनुमंत तुरंतही, लंकहि जाय उताल ॥
सदन समेत सुषेणको, लाय धरो ततकाल ॥ ६७ ॥
तब सुवैद्य लखि लखणको, कहे विचारि सुबैन ॥
वर विशल्यकर सद्यबिन, आन सु भेषज हैन ॥ ६८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो विशल्य कर औषधी, द्रोणाचल महिभूर ॥
पवनपुत्र द्रुत लावहीं, हैं कपि बहु बल पूर ॥ ६९ ॥
सो सुनि वीर तुरंतही, धरि वर रूप विशाल ॥
उछलि चले नभपंथ ह्वै, गर्जत अंजनिलाल ॥ ७० ॥
ताछिन सुनि कपि गर्जना, रावण दूत बुलाय ॥
वेगि पठायो भाषि यौं, लखौ शोर कहँ आय ॥ ७१ ॥
सो चर कपि वपु धारिकै, लियो भेद सब आय ॥
रैनि समैं कोउ न लखो, बहुरि गये तहँ धाय ॥ ७२ ॥
वीर गमन वरणो सुनत, दशमुख उठि अकुलाय ॥
कालनेमि निश्चर सदन, आयो अति अतुराय ॥ ७३ ॥
कही वेगि तुम जाय द्रुत, करि कछु युक्ति विचार ॥
मग बिच माया ठानिकै, रोको पवनकुमार ॥ ७४ ॥
होय विलंब न आवही, जो औषधि निशि माहिं ॥
प्रात होय तब कैसहू, फेरि न लषण बचाय ॥ ७५ ॥
कालनेमि सुनि तब कही, हनुमत शिव अवतार ॥
को समर्थ तिन रोक सक, कीजे हिये विचार ॥ ७६ ॥
सुनत दशानन कुपित भो, कालनेमि तब सोच ॥
क्यों न मरौं हरिदाश कर, खल कर वध अति पोच ॥ ७७ ॥
चौ०-यौं सुनि कालनेमि द्रुत जाई ❀ मगबिचनिजमायाप्रगटाई ॥
सर आराम सदन वर साजा ❀ बनि बैठो निश्चर मुनिराजा ७८ ॥
तहँ केसरी सुवन जब गयऊ ❀ ऋषिहि देखि अतिप्रमुदितभयऊ ॥
जाना राम भक्तवर आहीं ❀ विन इहि मिलेजाब भल नाहीं ७९
दोहा-राम भक्त द्विज देव गुरु, पितृ स्वामि लखि कोय ॥
जो न नमत गमनत विमुख, तिहि भलकबहुँ न होय ८० ॥
चौ०-यौं विचारि कपिमुनि ढिग जाई ❀ जैसियराम कही शिरनाई
सो करि जै स्वागत बैठारा ❀ कीन यथोचित बहु सतकारा ८१ ॥
कपट रूप ऋषि कही बहोरी ❀ हे कपि दिव्य दृष्टिहै मोरी ॥
महि सबदेखि परै इहि ठाई ❀ लंक होय जिहि भाँति लराई ८२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि तुम जात काज सो जानौं ❀ सुनौ सत्य भवितव्य बखानौ॥
मरै लंकपति प्रभु जै पैहैं ❀ निश्चर नाथ विभीषण ह्वै हैं॥८३॥
सो सुनिकपि आनंद अघाना ❀ पुनिमुनि प्रति भाषी हनुमाना॥
तृषा विवशमो चित्त अधीरा ❀ आयसु होय पियौं शरनीरा ॥८४
सो सुनि कहीकरौं जलपाना ❀ आवो वेगि कहौं कछु आना ॥
गति भविष्य युतविशद चरित्रा ❀ कपि सुनि लैयौ कथा विचित्रा
सुनि सानन्द वेगिसर आई ❀ बैठि पियो जल सरस अघाई ॥
ताछिनतहँ मकरी इक धाई ❀ गहि लीनो कपिपद वरियाई ८६॥
कपि अकुलाय दाबि तिहिं दीनी ❀ भई मृतकसो परम मलीनी॥
पुनि वह दिव्य नारिवपुधारी ❀ गईगगनवर गिरा उचारी॥८७॥
है कप यह निश्चर मुनि नाहीं ❀ बैठो छलन हेतु तुम काहीं ॥
सो सुनि हनूमान रिसलाई ❀ ह्वै करालवपु पुच्छ बढाई॥८८॥
ताहि लंगूर लपेटि उठाई ❀ करि बल पटको भूमि भमाई ॥
कालनेमि भो मृतक तुरंता ❀ कियो गमन वेगैहनुमन्ता॥८९॥
जाय देखि गिरिकीन विचारा ❀ हेरत औषधि लागै बारा ॥
यौं गुनि कुधर वामकर धारा ❀ धाये नभपथवेग अपारा ॥९०॥
मारग व्योम अवध ढिगअये ❀ प्रलै पौन सम वेग जु छाये ॥
सो सुनिभरत उठे अकुलाई ❀ रैनि समय लखि नभ चहुँघाई९१
हेरो कछु न व्योम अँधियारा ❀ तब तकि शब्दवेध शरमारा ॥
बिन फल सायक लगत तुरंता ❀ गिरे भूमि नगयुत हनुमन्ता ९२
गिरत कीश कह हा सिय रामा ❀ सुनि धाये भूपति बलधामा॥
कपिहि भरतबूझो लखि हाला ❀ सोसूक्षम सब कहो उताला९३
सुनि कैकेयीसुवन पछिताने ❀ सुमिरि लषण सिय प्रभु दुखसाने
कुसमय जानि धीर उर धारी ❀ गदगद कण्ठ सुगिरा उचारी ९४

दोहा--व्यथितभये इहि हेतुते, गिरि युत अंजनिलाल ॥
उठि बैठो ममबाण पर, भेजौं अतिहि उताल ॥ ९५॥
सो सुनिकै कपि चकित ह्वै, मनमहँ कीनविचार ॥
लेउ परीक्षा किमि चलै, शर गिरि युत ममभार ॥ ९६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौं गुनि गिरि युत पवनसुत, बैठबाणपर आय ॥
तबहिं भरत शर धनुष धर, चाहो देहुँ चलाय ॥ ९७ ॥
लखि अपार बल भरतसों, कही वेगि हनुमान ॥
प्रभु न परिश्रम कीजिये, जैहौं बाण समान ॥ ९८ ॥
कपि हिय रुचि लखि भूपतब, दीनी वेगि रजाय ॥
ल गिरि कर कूदे गगन, भरत चरण शिरनाय ॥ ९९ ॥
उत रघुवर लखि लषणको, विलपत करत विचार ॥
रैनि चली आयो न कपि, कहा लगाई बार ॥ १०० ॥
नन्दग्रामते तासमै, गिरियुत पवन कुमार ॥
नभमग घटिका अर्ध मधि, आये सैन मझार ॥ १०१॥
लखि हनुमन्तहि गिरि सहित, मुदित भये रघुचन्द ॥
अपर भालु कपि सैन सब, लहो परम आनन्द ॥ १०२ ॥
तब सुवैद्य लै औषधी, लषणहि सविधि सुँघाय ॥
करतहि सो अघ्रानके, उठे वीर हर्षाय ॥ १०३ ॥
मिटे सकल व्रण तुरतही, दूर भई सब पीर ॥
विरुज हेरि वर बन्धु बहु, सुखपायो रघुवीर ॥ १०४॥
प्रेम सहित वर अनुजको, लीनो अंक लगाय ॥
पुनि बोले हनुमंत सों, ह्वै अधीन रघुराय ॥ १०५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

प्रथम सुकण्ठ ते मिलायो सिंधु नांघो सीय शोधी दल ज्यायो निज नैनन निहारो मैं ॥ रसिकविहारी महिरावण ते लायो इमि भूरि सबही ते यह अधिक विचारो मैं ॥ तुव उपकारहैं अनेक प्राण पंच एक प्रति उपकार हेत सो तौ वारि डारो मैं ॥ येहो हनुमान बलवानहौंबखानौंसत्यआज ते रहौं गोसदा ऋणिया तिहारोमैं १०६

प्र० ॥हनुमन्नाटके ॥ श्लोक ॥

एकैकस्योपकाराणां प्राणान्दास्यामि ते कपे ॥
प्रत्यक्ष क्रियमाणो वै शेषस्य ऋणिनो वयम् ॥ १ ॥

दोहा—सुनि प्रभु बैन समीरसुत, गहे राम पद धाय ॥
करी विनय बहु राज सुत, कपिहि लियो उर लाय॥१०७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि रघुवीर सुखेन को, कीनो मान बखान ॥
बहुरि हिये रुचि जानि कै, दियो अभै वरदान ॥ १०८ ॥
पुनि प्रभु रुख लखि पवनसुत, गिरि अरु सगृह सुषेन ॥
निज निज थल दुहुँ धरि तुरत, आयगये मधि सैन १०९
अपर भालु कपि जे रहे, पीड़ित मृतक शरीर ॥
शैल पवनके परशते, विरुज उठे सब वीर ॥ ११० ॥
उठि बोले सब राम जै, जैति लषण वरजोर ॥
ज कपीश हनुमन्त यौं, करै भालु कपिशोर ॥ १११ ॥
रसिकविहारी मुदित अति, रहे सकल सुख पूर ॥
राम कृपा ते ह्वै गये तन मनके दुख दूर ॥ ११२ ॥
इति श्रीरा० र० वि० यु० रावणयुद्धकालनमि वध
वर्णनो नाम एकोनविंशोविभागः ॥ १९ ॥

दोहा—रैनिसमै उत दशवदन, कालनेमि पठवाय ॥
करनलगो मख सविधि वर, वेगि यज्ञ थल जाय ॥ १ ॥
यज्ञ करतही कपिनको, सुनो सु जै जै शोर ॥
जानि गयो लै औषधी; आयो कपि वरजोर ॥ २ ॥
ताही छिन चर आय कै, वर्णन कियो समस्त ॥
सुनि रजाय दीनी तबै, वर दल सजै प्रशस्त ॥ ३ ॥
मध्य दिवस अभिजित समै, संयुत सकल सुसाज ॥
मख पूरण करि वेगही· चलि हति हौं रघुराज ॥ ४ ॥
यौं रजायदैके सविधि, करन लगो मख फेर ॥
मद आमिष अज कृष्ण युत, मंत्रन आहुति गेर ॥ ५ ॥
उत निश्चर साजन लगे, वाहन कवच हथ्यार ॥
भयो शोर चहुँ ओर अति, लंका नगर मझार ॥ ६ ॥
निज निज दल सजि यूथ पति, जुरन लगे सब आन ॥
रंग रंग फहरात ध्वज, गर्जत घुमरि निशान ॥ ७ ॥
ताछिन भेद मँगाय कै, वेगि विभीषण जाय ॥
कही रामसों मख करै, याछिन निश्चरराय ॥ ८ ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो प्रभु वेगि पठाइये, हनुमानादिक वीर ॥
करैं जाय विध्वंस मख, छूटै दशमुख धीर ॥ ९ ॥
मध्य दिवस मधि धायहै, समर हेत मम भ्रात ॥
याते मख विध्वंस भल, अबहीं समय प्रभात ॥ १० ॥
सुनि रघुवीर सुकंठ सों, कही वेगि भट जाय ॥
करै लंकपति यज्ञ सो, डारैं सकल नशाय ॥ ११ ॥
सो०—ताही छिन कपिराज, ऋच्छराजके संग करि ॥
भट कपि भालु समाज, भेजे समर सुधीर बहु ॥ १२ ॥
चले सुभट कपि ऋच्छ, हनुमानादि प्रवीन अति ॥
सकल युद्ध गति शिच्छ, अस्त्र शस्त्र निर्भय निपुण॥ १३॥
समर वाजने घोर, बजत शोर चहुँ नगरमें ॥
भालु कीश वरजोर, ह्वै सकोप धाये सपदि ॥ १४ ॥

घनाक्षरी—कवित्त

डंकाकी धुकार सुनि लंकामें सुहंका करि कूदे कपिभालु दै फलंकाभिरे जूटि जूटि ॥ निरखि निशंका रजनीचर सशंका भये बंका वीर हाथते हथ्यार गिरे छूटि छूटि ॥ रसिकविहारी कहै राम जै उतंका सबै ढंका दै ढहाये भौन भंका परे टूटि टूटि ॥ शोणित की पंका पाय छंका काककंका धाय धाय खाय रंका औ मलंका धरैं लूटि लूटि ॥ १५ ॥

तोमरछंद।

इमि भालु कीश प्रचंड। करि प्रबल रिपु दल खंड ॥
गे यज्ञशालहि धाय। देखो सुनिश्वरराय ॥ १६ ॥
चहुँ बहु प्रबंध समेत। मख करत बैठ निकेत ॥
लखि भालु वानर धाय। भट भिरे निश्चर आय ॥ १७ ॥
शर शक्ति परिघ कृपान। द्रुम उपल सब अरु जान ॥
दुहुँ ओर होत प्रहार। भट गिरत भूमि मझार ॥ १८ ॥

अमृतध्वनिछंद।

उद्धत मरकट विकट भट झपट तर पट उछल ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिय हरषत धरषत खल न दरखत वरषत मल्ल ॥
मल्लन गंजत भल्लन भंजन हल्लन करि करिं ॥
लथ्थन रद्दत मथ्थन मद्दत हथ्थन धरि धरि ॥
कट्टत दंतन फट्टत अंतन दट्टत रुद्धत ॥
भज्जत रिपु बल छज्जत कपि दल गज्जत उद्धत ॥ १९ ॥

तोमरछंद ।

इमि सकल दल बिनशाय । कपि भालु पुनि रिस लाय ॥
मखशाल दीनढहाय । नहिं उठो निश्चरराय ॥ २० ॥
पढि मंत्र आहुति देत । सो अनत चित्त न देत ॥
तब पौननंदन कूदि । गहि लियो तिहि मुख मूंदि ॥ २१ ॥
दलि चरणते सब साज । कीनो सुघोर गराज ॥
सुनि अपर ऋच्छ सुकीश । धाये चहूँ करि खीस ॥ २२ ॥
दिय अनल कुंडहि फोरि । साकल्य सकल बियोरि ॥
मल मूत्र करि करि भूर ! सो यज्ञ थल चहुँ पूर ॥ २३ ॥
पुनि वीर वर हनुमान । तिहि हनो इकतल तान ॥
द्रुत धाय कुपित रिछेश । गहि लीन दशमुख केश ॥ २४ ॥
रावण तब अकुलान । गहि लीन दुहुँ बलवान ॥
पद पकरि पटकन चाह । तब तिन मरोर सुबाँह ॥ २५ ॥
भुज मुरत तिन दिय छोरि । ते दंत नखत न छोरि ॥
तहँते उछलि प्रभुपास । आये सदल सहुलास ॥ २६ ॥
दशकंठ किय अनुमान । अब नहिं बचै मम प्रान ॥
पुनि धीर धरि बलवंत । लै विशिख शस्त्र अनंत ॥ २७ ॥
तनु वसन भूषण धार । स्यंदन भयो असवार ॥
चतुरंग सैन अपार । लै चलो उत्तर द्वार ॥ २८ ॥
तिहि समय मधि चहुँ ओर । बहु होत अशकुन घोर ॥
है कालवश दशभाल । तिन निदरि जात उताल ॥ २९ ॥

दोहा- गिरो गिद्ध ध्वज यान पर, अरु इक श्वेतकबंध ॥
रुधिर सिक्त महि पतन भो, लखो निकट दशकंध ॥ ३० ॥
शोणित वरषो व्योम ते, भयो भूर भू कंप ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घोर पवन रजते तबैं, गई दशौ दिश झंप ॥ ३१ ॥
विज्जुपात भो मेघ बिन; प्रगटी पावक ज्वाल ॥
मृग लोवा अरु श्वान खर, रोदन करत शृगाल ॥ ३२ ॥
पंथ चलत महि अरुझिकै, गिरैं यान भट भार ॥
बहुरि आपही ते सहज, करते खसे हत्यार ॥ ३३ ॥
चलैं न वाहन रुकत सब, पुनि भट मुख रति हीन ॥
दीन चित्त गदगद गिरा, भये अंग बल छीन ॥ ३४ ॥
बिन घन झंपो भानु नभ, फरक वाम भुजनैन ॥
पुनि पुनि बोलहिं लूक अरु, शिवा सृगाल डरै न ॥३५
पल आहारी द्विज फिरैं, ऊपर मंडल वाम ॥
पुनि दक्षिण मुख केतु पर, बैठो गिद्ध निकाम ॥ ३६
घोर गर्जना मेघ कर, पशुरथ त्यागि परात ॥
कसा सारथी हाथते, बाहतभो महिपात ॥ ३७ ॥
गिरो ध्वजा रथ शिखर महि, वाहत दृग जल जात ॥
गर्दभ दरशो क्रूर स्वर, सन्मुख शोर करात ॥ ३८ ॥
सन्मुख आयो रिक्त घट ;शुष्क काष्ठको भार ॥
तिय विधवा अरु नग्न गज, रुदन करत शिशु चार ॥ ३९
विप्र लखो इक नैन को, तेलकार घटकार ॥
तीन मिले ब्राह्मन बहुरि, रोवत तिया अपार ॥ ४० ॥
बहु पक्षीगण पल भषी, शीशन पै मडरात ॥
चुंच हनत बैठत भजत, वाहनभभरि परात ॥ ४१ ॥
इनहि आदि अशकुन विविध, लखे मुरारि प्रबुद्ध ॥
सो न गिनै कछु मृत्युवश भो अबुद्ध भरि क्रुद्ध ॥ ४२ ॥

तोमर छंद ।

इमि यातुधान प्रचंड । करि कढे शोर उदंड ॥
सब कहत जै दशमाथ । जै जैति निश्चरनाथ ॥ ४३ ॥
लखि दूरिते रिपु सैन । कह राम राजिव नैन ॥
इहि लंक नगर मझार । हैवीर को नहिं पार ॥ ४४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि भूरि अचरज और । देखो परै इहि ठौर ॥
जैसे नशे रण माहिं । तैसे बहुरि दरशाहिं ॥ ४५ ॥
सुनि राम बैन उताल । भाषो बिभीषण हाल ॥
कह लंकपति पुनि ईश । है एक इक दशशीश ॥ ४६ ॥
अरु भूरि निश्चर आन । बहु रूप नाम समान ॥
हैं एक सरिस अनेक । जिन माहिं भेद न नेक ॥ ४७ ॥
इमि लंकपति रघुराज । कह निरखि लंक समाज ॥
ताछिन भयो अतिशोर । धाये निशाचर घोर ॥ ४८ ॥
सो सुनि उठे रघुनाथ । सजि वेगि धनु शर भाथ ॥
लछमनहु चाप निषंग । धारण लगे निज अंग ॥ ४९ ॥
सो लखि कही रघुराज । तुम युद्ध करहु न आज ॥
सुनि बंधु कहकरजोर । यह नाथ धर्म न मोर ॥ ५० ॥
बोले बहुरि रघुवीर । हौ बंधु अति रणधीर ॥
पै हौं करौं प्रण आज । ध्रुव हतौं निश्चरराज ॥ ५१ ॥
याते सु जाय अकेल । हों करों युद्ध सकेल ॥
हैं भालु कपि बहुवीर । हनुमंत आदिक धीर ॥ ५२ ॥
उत सदल इक दशमाथ । इत सदल इक रघुनाथ ॥
जो लरिय मिलि दुहुँ भाय । तो आज उचित न आय ॥ ५३
इमि राम दृढ प्रण ठान । किय गमन सजि धनुबाण ॥
भट कीशभालु अपार । धाये कुधर तरुधार ॥ ५४ ॥
रामहि निरखि दशभाल । करि वीस लोचन लाल ॥
सन्मुख सु आय उताल । बोलो सकोप कराल ॥ ५५ ॥
हे राजसुत रणधीर । हौ भानुवंश सुवीर ॥
पुनि अस्त्र शस्त्र प्रवीन । सब भाँति हौं लखि लीन ॥ ५६ ॥
पै मोर रावण नाम ॥ जानो भली विधि राम ॥
हौं तुमहिं अब यमलोक । पठवाय होत विशोक ॥ ५७ ॥
याते प्रथम तुम भूर । करि लेहु निज बलपूर ॥
अभिलाष तुव न रहाय । तब लखो मम बल आय ॥ ५८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो सुनि कही रघुवीर । हे लंकपति छल वीर ॥
क्यों करहु मिथ्यहि गर्व । है विदित तव बल सर्व ॥ ५९ ॥
जब हरी सीतहि चोर । तब गयो बल किहि खोर ॥
अब करत बात बढाय । निज सुयश निज मुख गाय ॥ ६० ॥
हौं आज दृढ प्रण ठान । नहिं बचहि अब तव प्राण ॥
हो सकल छलबल जौन । दरशाव वेगहि तौन ॥ ६१ ॥
दोहा—राम वचन सुनिकै तबै, हँसि भासी दशमाथ ॥
हौं याही हित ठानिकै, युद्ध करों तुव साथ ॥ ६२ ॥
हों साँचो रावण जु पै, हो साँचे तुव राम ॥
दुहुँ प्रभाव साँचो अबै, लखो परै इहि ठाम ॥ ६३ ॥
कै हौं तुमहिं सँहारिकै, अबहीं होत विशोक ॥
कै रणमें तनु त्यागिकै, बसों जाय सुरलोक ॥ ६४ ॥
सो०—तब सुनिकै रघुनाथ, भाषी मृदु मुसक्यायकै ॥
तुव छल निश्चरनाथ, हौं जानो सब हीयको ॥ ६५ ॥
याते तुव रुचि जोय, समर मरनकी है सु अब ॥
वेगहि पूरित होय, जो न जाहु रणभूमि तजि ॥ ६६ ॥

तोमर छंद ।

सुनि राम बैन मुरारि । करि क्रोध बंक निहारि ॥
करि वेगि धनु शर धारि । धायो प्रचंड प्रचारि ॥ ६७ ॥
किय अमित बाण प्रहार । भंजे सु राजकुमार ॥
तिन खांडि अतिहि उताल । सायक तजे रघुलाल ॥ ६८ ॥
लाघव दशानन वीर । खंडित किये सब तीर ॥
इमि दोउ दुहुँ बलवान । हठि हनत अगणित बान ॥ ६९ ॥
तिहि समय युद्ध निहार । चहुँ होत जैति पुकार ॥
सुरपाल यह चित दीन । है राजसुत रथहीन ॥ ७० ॥
तब मातलीहि बुलाय । दीनी उताल रजाय ॥
तुम वेगि मम रथ साज । लै जाहु ढिग रघुराज ॥ ७१ ॥
सुनि सूत सहित उमंग । सजि रथहि हरित तुरंग ॥
बहु शस्त्र विशद विशाल । भेजे प्रभुहि सुरपाल ॥ ७२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो सहित स्यंदन लाय । रघुवीरही शिरनाय ॥
करि विविध अस्तुति गूढ । कह होउ प्रभु आरूढ ॥७३॥
सुनिकै प्रदक्षिण लाय । पुनि रथहि शीश नवाय ॥
बैठे सु दशरथ लाल । युत कवच शस्त्र विशाल ॥ ७४ ॥
तिहि समय व्योम मझार । सुर लखत समर अपार ॥
रामहि रथी अविलोक । भे सकल भक्त विशोक ॥ ७५ ॥
दशवदन हेरि रिसान । शर छाय दशहु दिशान ॥
दिय राम स्यंदन झंप । तिहि समय भो महि कंप ॥७६॥
तब अग्नि शर रघुवीर । तजि किये भस्म सु तीर ॥
कपि भालु चहुँ दिशि धाय । दियअपर दलबिचलाय॥७७॥
पुनि यातुधान प्रचंड । गहि विविध शस्त्र उदंड ॥
कीशन सु ऋच्छन मार । तरु कुधर तेउ प्रहार ॥ ७८ ॥
भिरि राम रावण वीर । वर्षहिं अपार सु तीर ॥
तिहि समय दुहुँ दल युद्ध । अति होत अनुपम उद्ध॥७९॥

घनाक्षरा—कवित्त ।

ठोंकि भुज दंड वीर प्रबलप्रचंडभिरे उद्धतविरुद्धरुद्धकुद्ध दल दंडि दंडि । अट्टत सुभट्ट औ दपट्टत उचट्ट चट्ट भट्टनकेठट्ट कट्ट कट्टत हैं खंडि खंडि । हथ्थ लथ्थ हथ्थनते मथ्थ गथ्थ मथ्थनते मथ्थत समथ्थ पथ्थलेत रथ छंडि छंडि । रसिकविहारी राम जैति जै उदंड शोर छावै नवखंड नभमंडलमें मंडि मंडि ॥८०॥ टिकत न वीरनके प्राण रण भूमि मध्य क्रुद्ध बुद्ध रुद्ध उद्ध युद्धते गये अघा ॥ इष्ट बल पाय फेरी प्रबल वारिष्ठभिरे झुंडझुंडरुंडमुंड गिरत दुहूँ जघा ॥ यातुधान कपिनकपिंदगहि यातुधानभंजतभ्रमाय फारि फेकत अनी नघा॥चारहू दिशानबानवरषतआनआन रसिकविहारी झरि लाई हैं मनो मघा ॥ ८१ ॥

दंडक ।

दोउ दल उद्ध यौं क्रुद्ध अवरुद्ध ह्वै करहिंबहुयुद्धनहिंशुद्धतन प्रानकी ॥ दंत कट कटत भट भालु मर्कटविकटकटतफिरिअटत

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जरटत बलवानकी ॥ गजन गज मर्दकै रथन रथ गर्दकै वाजि वाजीन हनि शस्त्र शस्त्रन दलैं ॥ रुंड रुंडन झटकि मुंड मुंडन पटकि झुंड झुंडन झटकि चापि कर पद मलैं ॥ ८२ ॥ रैनिचर चंड शर शक्ति कर खंडते कीश ऋच्छन सु उद्दंड खंडित करैं । उच्छलत पुच्छ गुच्छाहि धरि धरणिमें पटकि तिन पट्ट शिर कट्ट प्राणन हरैं ॥ होत यों समर थर हरत धरधरधारुधिर धारा तबहिं धरणि नहिं मावहीं। शीश कर चरणके ढेर चहुँ फेरते बहुलरनभूमिमेंमेरुसे छावहीं ॥८३॥ खग्गगण मुदित नभ मग्ग ह्वै धायकै मुंडकर पग्गलै सग्ग उडि भग्गहीं॥ योगिनी वृंदसानंद नच्चैंसुभरि खप्परन रुधिर करि पान अनुरग्गहीं ॥ शोर चहुँ घोर छाईकबंधन धरा छिनहि छिन उठत फिरि गिरत लरि गज्जिकै ॥ प्रबल निश्चरन दल दलत कपि ऋच्छ भट सबल अरु अबल भज्जत समर तज्जिकै ॥ ८४॥ यातुधानेश लखि सबल दल विचल निज भालुकपि छलनहित प्रबल माया ठनी ॥ अमित हनुमंत सुग्रीव अंगद लषण प्रगटते आपनी आप घालैंअनी ॥ ऋच्छवानर भये चकित तब रैनिचर निधन किय तिनहिं अवकाश लहि ता घरी ॥ वीर रघुवीर सो हेरि अति वेगही एकही तीर ते सकल माया हरी ॥ ८५ ॥ फेरि बहु कोपि कै धाय रथ लाय ढिग राम निज चंड कोदंड मंडित लियो ॥ सायकन घाल बलशाल दशभालको सहित धनुबाण तनत्राण खंडित कियो ॥ क्रोध भरि चाप लै आनतिहि तान कै लंकपति अमित शर आतुरी तेहने ॥ सर्व रघुवीर ते तीर निज तीर ते भंजि पुनि तासु तनु तीर वेधे घने ॥ ८६ ॥

हरिगीतिका छंद ।

तब क्रोध भरि दशभाल ठानो अस्त्र युद्ध अपार सो ॥
रघुवीर ते सब भंजि डारे कीन अमित प्रहार जो ॥
पुनि लंकपति शतबाण मारे भो विकल सुर सारथी ॥
कर धार तिहि वेगे उठायो रामचंद्र महारथी ८७ ॥
जोलग उठायो राम सूतहि दशवदन तौलग घने ॥
शर घालि रथको केतु काटो वेगि चहुँ वाजी हने ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लखिकै तुरंगहु राजपुत्र सँभारि स्यन्दनमें सजे ॥
ताही समै भुजवीस राघव गात पै बहु शर तजे ॥ ८८ ॥
रघुवीर कछु दुख पाय पुनि ह्वै सजग बाणन खँडिकै ॥
रथ सारथी ध्वज वाजि तासु नशाय डारे खंडिकै ॥
द्रुत आन स्यन्दनबैठि घालो घोर शूल प्रचारिकै ॥
रघुवीर सुरपति शक्ति छोडी भस्म दुहुँ दुहुँ जारिकै ॥ ८९ ॥
पुनि क्रोध कर शर तीस वेधे वीस भुज दश शीशमें॥
तब भये अन्तरधान निश्चर ईस भरि बहु रीसमें ॥
रहि गुप्त घाले बाणवर बहु व्योमतें आवन लगे ॥
ते विविध रूप कराल भालु कपीन चहुँ खावन लगे ॥ ९० ॥
ह्वै बाण शूकर सिंह श्वान शृगाल अहि गज धावहीं ॥
मारत पछारत भखत मर्दत सकल सैन नशावहीं ॥
पुनि वृष्टि कीन अपार सिक्ता उष्ण सब व्याकुल भये ॥
फिर लागि बरषै आगि सब भट भागि प्रभु शरणै गये ॥९१॥
द्रुत वरुण अस्त्र चलाय राघव सकल छल किय दूरसो ॥
पुनि वीर विद्या आसुरी प्रगटी दशानन भूर जो ॥
बहु भूत प्रेत पिशाच योगिनि खड्ग खप्पर धारिकै ॥
चहुँ ऋच्छ कीशन भक्षिबे हित धावहीं मुख फारिकै ॥ ९२ ॥
तिन देखि वानर ऋच्छ इतर विहाल डरि डरि भाजहीं ॥
हनुमंत आदिक वीर ते बहु मार्दि मार्दि सु गाजहीं ॥
पुनि अपर माया कीन दशमुख पवनसुत प्रगटे घने ॥
ते धारि तरु गिरि उपल रामहिं धाय चहुँ दिशि ते हने ॥९३॥
रणधीर श्रीरघुवीर पावक तीर सपदि चलायकै ॥
माया हरी सब निरखि दौरे सुभट हिय हरषायकै ॥
तरु शैल हनि हनि निश्चरन पुनि भालु कपि गंजन लगे ॥
दंतन नखन तल मुष्टि लातन कोपकरि भंजन लगे ॥ ९४ ॥
भट विकट मर्कट ऋच्छ युद्धत क्रुद्धह्वै उद्धत महा ॥
अब करहु निश्चर हीन लंक निशंक यों सबही कहा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिय पुरुष बालक तरुण वृद्ध सु यातुधान न छंडिये ॥
जे नगर अरु रण मध्य होवैं वेगि ते सब खंडिये ॥ ९५ ॥
ताछिन दशानन आय प्रगटो रूप कोटिन धारिकै ॥
चहुँधाय लच्छन कीश ऋच्छन करत भच्छन मारिकै ॥
इक एक वानर भालुपै इक एक रावण धावही ॥
धर मार फार पछार यौं बहु घोर शोर मचावही ॥ ९६ ॥
तिहि समय राम सुकंठ हनुमत अंगदादिक वीरजे ॥
करि कोप बहु दशमुखनको भंजैं निशंक सुधीरते ॥
सुरवृन्द निरखि अनेक रावण विकल ह्वै वागन लगे ॥
लै लै विमानन हाय करि करि व्योमते भागन लगे ॥ ९७ ॥
तब सुरन व्याकुल जानि राघव प्रबल अस्त्र प्रहारिकै ॥
इक बाणते दशकण्ठके सब रूप लोपे जारिकै ॥
सो हेरि बहुरे देव प्रमुदित छाय नभ जै जै करी ॥
अवलोकि धायो व्योम दिशि बहु कहतबाणी रिसभरी ॥ ९८ ॥
रे खलहु तुम कहँ एकही मैं कोटि सम आयो अबै ॥
पुनि करत हाहाकार नभते देवगण भागे सबै ॥
तब कूदिकै कपि वीर अंगद ताहि पदगहि जोरते ॥
झकझोरि वेगहि भुमिडारो खैंचिकै नभ ओरते ॥ ९९ ॥
पुनि उछलि अंगद वेगि रघुवर पास पहुँचे जायकै ॥
दशकण्ठ उठि रथ बैठि धायो कुपित चाप चढायकै ॥
हनिबाण अगणित रामको तनु त्रान खंडित कीन सो ॥
तब वीर रघुवर शरनते किय तासु दशशिर छीनसो ॥ १०० ॥
शिर गिरत दशहू और नूतन फेरि प्रगटे तैसही ॥
सोऊ विभंजे राम सबही बहुरि उपजे वैसही ॥
इमि रामशर शतवार खण्डे माथ दश दशमाथके ॥
ते कटत होतनवीन लखि हिय आचरज रघुनाथके ॥ १०१ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० ॥ का० ॥ स० १०९ ॥ श्लोक।

रावणस्य शिरोच्छिदच्छ्रीमज्ज्वलितकुंडलम् ॥ तच्छिरः पतितं भूमौ दृष्टं लोकैस्त्रिभिस्तदा ॥ १ ॥ तस्यैव सदृशं चान्यद्रावण-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्योत्थितं शिरः ॥ तत्क्षिप्रं क्षिप्रहस्तेन रामेण क्षिप्रकारिणा ॥२॥
द्वितीयं रावणशिरश्छिन्नं संयति सायकैः ॥ छिन्नमात्रं च तच्छीर्षं
पुनरेव प्रदृश्यते ॥ ३ ॥ तदप्यशनिसंकाशैश्छिन्नं रामस्य सायकै
एवमेवं शतं छिन्नं शिरसां तुल्यवर्चसाम् ॥ ४ ॥ इत्यादि ॥

पद्धरीछन्द ।

शिर कटत फेरिप्रगटातऔर । भोमुदित लंकपति निरखि डौर॥
हौं अमरसत्य दृढठान लीन । यौं गुणिनिशंक पुनि युद्धकीन १०२
सुर कीश भालु लखि सकलत्रस्त । सुनि भई जानकी शोकग्रस्त॥
निश्चर समस्त आनन्द छाय । रण रुपे बोलिजै लंकराय ॥१०३
रावण सकोप शर तान तान । रामहिं प्रहार कर आन आन ॥
रघुवीर सर्व करिखंड खण्ड। घालत अपार इषु चंड चंड॥१०४॥
प्रभु निकट विभीषण शस्त्र धार ॥ रथ संग धाय निश्चरन मार ॥
लखि कुपितहोय दशमुख उताल। गरु भूरशक्ति घाली कराल१०५
लखि वेगि राम ह्वै अग्र आप । झेलीस्वहीय सो शक्ति दाप॥
निजगुणि विभीषणै अभयकीन!दृढ शरणपाल प्रणराखिलीन १०६
सो शक्ति हीय बेधी कराल । मुर्छित कछूक भे नृपति लाल ॥
लै गदा विभीषण कोप धार । तुरधाय भ्रात उर किय प्रहार॥१०७
दशकंठव्यथितगिरिधरणि माहिंपुनि उठिपछारितिहि पकरिवाहिं
सो सँभरि फेरि भिरि कीन युद्ध। दुहुँ क्रुद्ध वृद्ध अवरुद्ध उद्ध १०८
भे कछुक विभीषण श्रमित अंग । हनुमन्त वीर हेरो सु ढंग ॥
घालो प्रचण्ड गिरिधाय गाजि। डारैनशाय रथ सूत वाजि॥१०९
दशमुखहि कीन पुनि पद प्रहार । सो त्यागिबन्धु कहँ रोषधार॥
धायो सुकीश पर जंग जोम।हनुमान वेगिकूदे सु व्योम॥११०॥
उच्छलत लंकपतिपकरि पुच्छ । भाषी सु खैंचिकहँ जाहि तुच्छ
वरवीरकीश भुजवीश युक्त । गो गगन सो न लंगूर मुक्त १११॥
दुहुँ भिरे वीरनभ अन्तरिक्ष । हैं सबल सर्व रण रीति शिक्ष ॥
करि कोप एकएकहि प्रहार।नहिं गिरत कोउतन बल अपार११२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब सुमिरि राम कपि कीनघात। भो विकल भूमि दशवदन पात॥
तहँ आय कीशपुनिकियप्रहार। सो सँभरिफेरिहनुमतहिमार ११३
बजरंग कोपि तिहि मुष्टघाल। भो लगत लंकपति कछुविहाल॥
तिहि समयकूदिकपि कुधरधार। चहुँधायधाय निश्चरनमार ११४
दशमौलि सजग ह्वै आनरथ्थ। द्रुत ह्वै अरूढ़ धनुबाण हथ्थ॥
धायो कपीन भंजतउताल। तिहि समयक्रोधभरिऋच्छपाल ११५
तिहि लात घातकीनो प्रचंड। मुरझाय गिरो भो चापखंड॥
दशमुखहिसारथीबिकलहेरि। गहिभुजबिठायरथमध्यफेरि ११६
घटिका सु एकमधि चेत लाय। ह्वै सजग फेर लंकाधिराय॥
करिघोरशोरभरिक्रोध वीर। छाँडे प्रचंड बहुविशिखतीर ११७॥
रघुराज पत्र पत्रीन छांय। ध्वज वाजि रंचहू नहिं लखाय॥
दशमथ्थ रथ्थहू बाणजाल। चहुँ झंपि दीनदशरथ्थ लाल ११८॥
इमि द्वंद्व युद्ध पुनि होतभूरि। दशहूँ दिशान गे बाण पूरि
तब रामचंद्र दश शरकराल। वेधे उताल दशभाल भाल ११९॥
तिन लगत भयो विह्वल अपार। सारथि प्रवीन सो गतिनिहार॥
रथ वाहिवेगि लै गो सु दूरि। रावण अचेत जलनैन पूरि १२०॥
द्वै दंड मध्य आयो जु होस। लखि सारथीहि भाषो सरोस॥
रणविमुखकीनरेमूढ़ मोहिं। सेवक विचारिनहिं वधहुँ तोहिं १२१॥
रथवाह वेगि पुनि राम पास। हौं करौं आज रिपुकर विनाश॥
तब कहीसारथी जोरिहाथ। अपराध क्षमिय प्रभु लंकनाथ १२२
है सूत कर्म यह धर्म तात। महि समय लखै जय अजय घात॥
लखिप्रभुहिविकलबहुसमरमाहिं। लायोउतालस्यंदनहिवाहिं १२३
सुनि सूत बैन दशमुख सराहि। दीनो जु हस्त भूषण उमाहि॥
धारणसुकीन लै नाय मथ्थ। पुनि वाहिवेगिलायो सु रथ्थ १२४॥
दशकंध बेगि वर धनुषधार। रघुवरहि कीन बहु शर प्रहार॥
ते सकल राम तिहि दीन काटि। वेधेअनेक निजबाणडाटि १२५॥
पुनि शक्ति शूल शर खड्ग चंड। गहि गदा चक्र तोमर उदंड॥
इमि अपर शस्त्र अरु अस्त्र भूरि। दशमौलि रामपर दीनपूरि १२६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ते सकल रामभंजन करात। पुनि विशिष बाण तिहि हनतजात॥
त्यों हीं बहोरिलंकेश वीर। तिन खंडि फेरि वेधतसुतीर १२७॥
तिहि समय राम रावण सु वीर। छिन हो अधीरछिन धरतधीर॥
कीनोअभूत दुहुँ समर घोर। छायोअपार तिहिं लोकशोर १२८॥

ह० गी० छंद।

इमि राम रावण युद्ध देव विलोकिकै सब चकित भे॥
कपि भालु निश्चर निकर दुहुँ बल हेरिकै अति चकित भे॥
सुर कहत अबलग याहि राम समान नहिं भेटो वियो॥
दशमुख बहत्तर चौयुगी भरि राज बहु संयुग कियो॥१२९॥

प्र० ॥ सुंदर रामायण लंकाकांडे ॥ सर्ग ९१ ॥ श्लोक ॥

राज्यं चकार लंकेशो द्विसप्ततिचतुर्युगम्॥
त्रिषुलोकेषु न प्राप्तस्तंरामसदृशो बली॥ ९॥

ह० गी० छंद।

तिहिं समय वेगि अगस्त्यऋषि श्रीराम संनिधि आयकै॥
आदित्य हृदय अनूप किय उपदेश अतिहि दुरायकै॥
दै सविधि उत्तम कवच मंत्र उताल मुनि पुनि जातभे॥
रघुवीर लहि जय अस्त्र अतुल अमोघ अति हरषात भे॥ १३०
ताछिन विभीषण राजसुत सो विलखि यौं वाणी कही॥
दशकंठ नाभी मध्य एक पियूष कुंड विराजही॥
जौलों न प्रभु तिहि सोषि हो तौलों न यह खल नाशि है॥
वरिवंड चंड मुरारि छिनछिन भालु कीशन त्रासि है १३१॥
सुनिकै विभीषण बैन शर इकतीस श्रीरघुवीर लै॥
आदित्यहृदय उचारि विधि युत लंकपतिहि सु धीर दै॥
ते कालदंड समान बाण प्रचंड धनुपर तानिकै॥
कीने सपदि संधान प्रभु बलवान दृढ प्रण ठानकै॥ १३२॥
तिहि समय झंपी सकल दिशि कंपी अपार वसुंधरा॥
चहुँ उठी पावक दाह रावण गात हू बहु थर हरा॥
श्रीराम छोडे चंड सायक चलत अमित प्रकाश भो॥
अति घोर शोर उदंड महि पाताल मध्य अकाशभो॥ १३३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ते प्रबल शर इकतीस चलि दशशीश के दशशीशमें ॥
इक नाभि शर शोषोअपर लागे सपदि भुज वीसमें ॥
शिर बाहु लै नाराच गवने रुंड रावण कपिकै ॥
द्रुत गिरत भो रणभूमि मध्य सु भूरि दुहुँ दल चंपिकै १३४
बिन मुंड रुंड बहोरि उठि बहु गर्जि धायो मंडिकै ॥
रघुवीर तिहि युग खंड करि महि डारि दीनो खंडिकै ॥
भुव गिरतही अति शोर किय हा राम हाहा जानकी ॥
यों कहत निकसो जीव पूजी आश सब बलवानकी ॥ १३५
तिहि समय पावकझार रावण अंग ते अनुपम कढी॥
बहु तेज विशद प्रकाश अद्भुत तासु द्रुत ज्वाला बढी ॥
सो आय अतिहि उताल कीन प्रवेश मुख श्रीरामके ॥
सब निरखि चकृत कहत भेद अलक्ष प्रभु गुण ग्रामके ।१३६
तिहि समय रावणवध विलोकि समस्त सुर आनँद लहे ॥
जै राम जै रणधीर जै रघुवीर जै जै सब कहे ॥
बहु भाँति अस्तुति करहिं प्रभुपर सुमन वर वरसावहीं ॥
दुंदुभि बजाय बजाय श्रीरघुनाथको यश गावहीं ॥ १३७ ॥
कपि भालु कूदे जैति जै करि शोर चहुँ विलकारहीं ॥
पुनि धाय धाय अनंद भरि भरि राम वदन निहारहीं ॥
तिहि समय लछमन दौरि भ्रातहि अंकभरि हुलसायकै ।
नखशिख विलोकैं प्रेमयुत वर विजय मोद अघायकै ॥ १३८
सुग्रीव अंगद ऋच्छपाति लंकेश हनुमतनील जे ॥
इन आदि अपर अपार वानर भालु हैं बलशील ते॥
सबको महाआनंद कविपै कौन विधि कहिजाय जो ।
ज्यों होत प्रमुदित भाषि सकहि न मूक मिष्टहि खाय सो१३९

घनाक्षरी कवित्त ।

सरसिज सुभट समूह वर फूल चारु पूरण प्रतापसो प्रकाश अति ही जयो ॥ निशिचर सैन रैन तम दशमाथ भारी विनशि समस्तशोकलोक तिहुँतेगयो॥रसिकविहारी देवलोक वृन्द भेअनंद

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दशहू दिगंतमेंअनंत जैति जैछयो॥कौशलाधिराजरघुराज उदया-
चलतें तेज पुंज विजय दिवाकर उदै भयो ॥ १४० ॥

हरिगी० छंद।

इत मोद इमि उत लंक निश्चर निश्चरी अकुलावहीं।
दशमाथके गुण गाथ कहि धुनि माथ बहु विलपावहीं ॥
मंदोदरी आदिक अनेक सुतीय विह्वल धायकै।
बेहाल आय उताल रोवत गिरीं पतिपद धायकै ॥ १४१

दोहा-- निरखि विभीषण भ्रात गति, कियो विलाप अपार॥
तिनहि धीर दीनी विविध, दशरथ राजकुमार ॥ १४२ ॥
पुनि भाषी लंकेश प्रति, रघुवर दीनदयाल ॥
मृतककर्म दशकंठको, सविधि करौ ततकाल ॥ १४३ ॥
तबहि विभीषण जोरि कर, कही छुवौं नहिं याहि ॥
तव निंदक पुनि शत्रु मम, अरु अधर्म रत आहि १४४॥
सुनि बोले रघुवंश मणि, यह मम निंदक नाहिं ॥
अरु अधर्मरतहू न है, हौं जानो मनमाहिं ॥ १४५ ॥
वैर जियतलों राखिये, मरण भये नहिं मान ॥
अंत समै रिपु मित्र सम, जानै वही सुजान ॥ १४६ ॥
याते सविधि निशंक सब करौ भ्रात कृत जाय ॥
जाते तव रावण सहित, दोनों लोक बनाय ॥ १४७ ॥
राम रजायसु शीश धारि, सकल तियन समुझाय ॥
मृतक कर्म दशकंठके, किये विभीषण जाय ॥ १४८ ॥
सविधि कृत्य करि तियनको, लंका मध्य पठाय ॥
वेगि विभीषण राम ढिग, आय खरे सचुपाय ॥ १४९ ॥
तब रघुवर शर तून धनु, कवच कृपाण उतार ॥
रथते आये भूमि पर, सप्तम दिवस मझार ॥ १५० ॥
चले देव निज निज भवन, राम रजायसु पाय ॥
शीश नाय स्यंदन सहित, गयो सूत हरषाय ॥ १५१ ॥
हरषि राम सुग्रीवसे, कहे बैन भर अंक ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तव सहाय बलते सखा, पाई बिजय उतंक ॥ १५२ ॥
यों कहि पुनि अवधेश सुत, सकल भालु कपि मान ॥
यथाउचित सादर निरखि, किय बहु विशद बखान॥ १५३॥
निरखि विभीषण ओर पुनि, लषणहि कही बुझाय ॥
लंकापति अभिषेक द्रुत, करो सदल तुम जाय ॥ १५४ ॥
तब सुकंठ हनुमंत अरु, अपर भूरि बलवंत ॥
सहित विभीषण लंकमें, आये लषण तुरंत ॥ १५५ ॥
बोलि सचिव द्विज ज्ञाति सब, सविधि साज सजवाय ॥
किय अभिषेक विभीषणै, लंक निसान बजाय ॥ १५६॥
श्वेत छत्र चामर विजन, साज समाज समेत ॥
चले विभीषण लषण संग, रामदरशके हेत ॥ १५७ ॥
आय वेगि प्रभुपद गहे, उठि रघुवर उर लाय ॥
प्रीति रीति नृप नीति युत, दीन मान द्रुलसाय ॥ १५८॥
दास भावकर जोरिकै, ठाढे निश्चरनाह ॥
निरखि राम उठि फेरि तिन, बैठारे गहि बाँह ॥ १५९ ॥
रीति प्रीति नृप नीति मय, कहे राम बहु बैन ॥
सो सुनि निश्चर भालु कपि, सब हिय छायो चैन॥ १६०॥
पुनि तहँते उठि सेन युत, आनंदित श्रीराम ॥
चलि सुवेल गिरिपै सुथल, आय कियो विश्राम॥ १६१॥
रसिकविहारी आजते, भयो परम आनंद ॥
सब सुर मुनि भाषैं मुदित, जैजै दशरथ नंद ॥ १६२ ॥

इति श्रीरामरसायने र० वि० यु० रावण युद्धवध-
वर्णनो नाम विंशोविभागः ॥ ॥ २०

दोहा—राम लषण लंकेशअरु, अपर समाज अपार ॥
शोभित शैल सुवेल पर, विजै मोद उर धार ॥ १ ॥
तब हनुमत दिशि हेरिकै, बोले रघुकुल चंद ॥
हे कपि रिपु दल जीति अब, भये सकल सानंद ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महाराज लकेशकी, लै रजाय तुम जाय ॥
सियहि सुनावो जै कुशल, कहो तासु पुनि आय ॥ ३ ॥

म० वा० ॥ यु० कां ० ॥ स ० ११४ ॥ श्लो० ।

ततः शैलोपमं वीरं प्रांजलिं प्रणतं स्थितम् । उवाचेंद वचो रामो हनुमंतं प्लवंगमम् ॥ १॥ अनुज्ञाप्य महाराजमिम सौम्य विभीषणम् ॥ प्रविश्य नगरीं लंकां कौशलं ब्रहि मैथिलीम् ॥ २ ॥

दोहा—सुनि हनुमत लंकेश प्रति, बूझि गये द्रुत धाय ॥
शीश नाय सीतहि कही, विजय कुशल हुलसाय ॥ ४ ॥
जनकसुताके हिय भयो ताछिन इमि अहलाद ॥
मुदित मयूरी होत जिमि, सुनि पावस घननाद ॥ ५ ॥
कही सीय संदेश सम, कछु न तिहूँ पुर माहिं ॥
कहा देउँ कपि तोहि अब, कबहुँ उऋण मैं नाहिं ॥ ६ ॥
कही कीश कर जोर तव, हौं पायो सब मात ॥
महाराज विजयी भये, आप लखी कुशलात ॥ ७ ॥
पै, जननी इक मोहिं ये, रुचि सो कीजै पूरि ॥
हो रजाय तौ निश्चरिन, हनौं कुटिल ये भूरि ॥ ८ ॥
सुनि सिय कोमल हिय कही, करौ पुत्र जनि रोष ॥
पराधीन सिगरी कहा, इन दीननको दोष ॥ ९ ॥
भये मौन हनुमन्त पै, तिनै विलोकत वंक ॥
सिय पाछे बैठीं सबै, मिलि इक ठौर सशंक १० ॥
कही तबै कर जोरि कपि, करिय मातु उपदेश ॥
वेगि जाय भाषौं सकल, प्रभुसों तव संदेश ॥ ११
सुनि सिय बोली पवनसुत, अंतर्यामीनाथ ॥
सब जानत हैं हीयकी, कहा कहौं बहुगाथ ॥ १२॥
मो दिशिते पद परसिकै, बिनय करीं जो तात ॥
दरश बिना इक एक छिन, कोटि कल्प सम जात ॥१३॥
सुनि कपि गमनो नाय शिर, आयो रघुवर पास ॥
सिय दिशि ते प्रभुचरण गहि, कहो सकल सहुलास ॥१४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनिकै प्रिया सँदेश प्रिय, हिलकि हृदय भरि लाल॥
दीह श्वास दृग जल उमड़ि, ह्वै सनेह बेहाल ॥ १५ ॥
महि विलोकि लंकेश सों, कहे सु मंजुल बैन ॥
सिय अन्हवाय शृंगारिकै, द्रुत आनौ मति ऐन॥ १६ ॥
पाय रजाय सु रामकी, लंकापति मतिधाम ॥
जाय सीय ढिग मातु गुनि, किय कर जोरि प्रणाम॥ १७॥
पुनि रघुवर आज्ञा सकल, वरणी शीश नवाय ॥
सुन लंकेशहि सिय कही, अतिअनंद उमगाय ॥१८॥
सुनि मो डर अभिलाष यह, प्रभुपद प्रथम विलोक ॥
पुनि मंजन शृंगार हौं, करौं जु होय विशोक ॥१९॥
सुनत बिभीषण पुनि कही, जननी हौ सर्वज्ञ ॥
तव सन्मुख मैं कह कहौं, अति अयान अल्पज्ञ ॥ २० ॥
पै कछु विनवौं दीन ह्वै, क्षमियो मम अपराध ॥
जानतहौं हे स्वामिनी, है हिय कृपा अगाध ॥ २१ ॥
नेम धर्म जप योग तप, ज्ञान ध्यान अरु दान ॥
पति आज्ञा पालन सरिस, सुखद सुकृत नहिंआन॥२२॥
याते मो विनती यही, जो प्रभु कही पठाय ॥
सोई करिबो उचितहै, पुनि जिमि होय रजाय ॥२३॥
इमि कहि रुचि लखि निश्चरिन, दी लंकेश रजाय ॥
विशद विभूषण वसनते, लाईं साज सजाय ॥ २४ ॥
तब सिय पिय रुचि गुणि कियो मंजन सकल शृँगार ॥
पुनि बैठी शिबिका सुभग, पतिपदहियबिचधर॥२५॥
विशद निश्चरी यूथ बहु, सहित साज भट भीर ॥
राम दरश हित सिय चलीं, संग विभीषण धीर ॥ २६ ॥
सिय आगम सुनि दरश हित, वानर भालु अपार॥
अपर निशाचर निश्चरी, धाये जैति उचार ॥२७॥
वेतपाणि रक्षक तिनै, वारन करत दुराय ॥
शिबिका सह आवरण वर, प्रभु ढिग चले लिवाय॥२८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताछिन भो बहुशोर चहुँ, दूरहि ते लखि राम ॥
कह लंकेशहि बोलि द्रुत, करि दृग दोउ ललाम ॥ २९ ॥
कीश भालु मेरे सकल, प्राणहु ते प्रिय भूर ॥
पुनि हैं मम सुत बन्धु सम, तिनहिं निवारत दूर ॥ ३० ॥
कहा हेत आवर्णको, कह शिबिकाको काज ॥
मम समीप आगमनमें, काह मैथिलिहि लाज ॥ ३१ ॥
यों कहि पुनि लंकेश प्रति, भाषी राम सप्रीत॥
समय पाय सोहै सबै, भीति रीति नृप नीत ॥ ३२ ॥
बहुरि होत याते कहो, जो नहिं निर्मल जीय ॥
शुभ अरु अशुभ समस्त कृत, निभत आपने हीय॥ ३३॥

सवैया-कवित्त ।

हो न कछू बहुवस्त्र न शस्त्रसे धाम न कोटकी ओट लियेते ॥
भाषनते कटु भाषनते जन लाषनते न कपाट दियेते ॥
हैं रसिकेश घने नृप साज सु और अनेक प्रबंध कियेते॥
नाहिं रहै तियकी परदा जु नराखहिसोनिजआपहियेते॥३४॥

दोहा-सो विचार यह हीयको, पै जगरीति जु होय ॥
यदपि उचित सब भांति है, तदपि समय लखिसोय॥३५॥

सवैया-कवित्त ।

भूरि विपत्ति परै जबहीं अरु पीड़ित होय महारुज माहीं॥
औ मख व्याह स्वयंवर युद्ध गुरू नृप मातु पितापतिपाहीं॥
ऐसे समय शुभ रीति समेत लखै तिय काहुकि कोउ कहाहीं ॥
नारि विलोकनको रसिकेश कहौं दृढ रंचहु दूषणनाहीं ॥३६॥

दोहा-सो सीता या छिन दुखी, तिनहिं लखे कह रोष ॥
पुनि मोढिग कोऊ कबौं, दरश लहै निरदोष ॥ ३७ ॥

प्र० वा० ॥ यु० कां० ॥ स० श्लोक ११६॥

न गृहाणि न वस्त्राणि न प्राकारास्तिरस्क्रियाः॥ नेदृशाराजसत्कारा वृत्तमावरणं स्त्रियः॥ ३ ॥ व्यसनेषु न कृच्छ्रेषु न युद्धे न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वयंबरे ॥ न क्रतौ न विवाहेषु दर्शनं दूष्यते स्त्रियः ॥ ४ ॥ सेष-विपद्गता चैव कृच्छ्रेण च समन्विता॥दर्शनेनास्तिदोषोऽस्या मत्स मीपे विशेषतः ॥ ५ ॥

दोहा—याते अबहीं सीयको, शिबिकाते उतराय ॥
वेगि पियादे लावहू, लखैं सबै शुचि भाय ॥ ३८ ॥
सुनि लंकापति मौन ह्वै, सकुचि प्रभुहिं शिरनाय ॥
तिमि लाये सीतहि यथा, रघुवर दई रजाय ॥ ३९ ॥
आय सियापति चरण गहि, लज्जित वसन समेटि ॥
बैठीं हेरि सुवाम दिशि, आनंदित भुज भेटि ॥ ४० ॥
झीने पट ह्वै लखति सिय, पियको वदन मयंक ॥
राजकिशोर विलोकहीं, सकुचि विलोकन बंक ॥ ४१ ॥
ह्वै प्रमुदित लखि सीय सों, वचन कहे रघुराज ॥
राजसुता मम सफल भो, सकल परिश्रम आज ॥ ४२ ॥
यों कहि राम सुनीतिवर, अन्तर नेह अपार ॥
प्रगट वचन कटु जानकिहि, कहे लोक अनुसार ॥ ४३ ॥
सुनहु मैथिली तुमहि लखि, मों हिय उपज कलेश ॥
कछु न काज मम निकट अब, जाहु रुचै जिहि देश ॥ ४४ ॥
दशमुख सबल महीप पुनि, युत ऐश्वर्य अकर्म ॥
युवा सुन्दरी तिहि सदन, रहो न ह्वैहै धर्म ॥ ४५ ॥
याते तुव दे वर तिहूँ, पुनि सुकंठ लंकेश ॥
अथवा और जु रोचही, तिहि मिलि रहो हमेश ॥ ४६ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० कांडे। सर्ग ११७ ॥ श्लोक।

तां तु पार्श्वस्थितां प्रह्वा रामः सम्प्रेक्ष्य मैथिलीम् ॥हृदयान्तर्गतं भावं व्याहर्तुमुपचक्रमे ॥६॥प्राप्तचारित्रसंदेहा मम प्रतिमुखे स्थिता दीपो नेत्रातुरस्येव प्रतिकूलासि मे दृढा ॥ ७॥ तद्गच्छत्वनुजानद्य यथेच्छंजनकात्मजे॥एता दशेदिशो भद्रंकार्यमस्ति न मे त्वया॥८॥ तदद्य व्याहृतं भद्रे मयैतत्कृतबुद्धिना ॥ लक्ष्मणं वाथ भरते कुरु बुद्धिं यथासुखम्॥९॥शत्रुघ्नेवाथ सुग्रीवेराक्षसेवा विभीषणे॥ निवेशयमनः

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सीते यथा वा सुखमात्मनः ॥ १० ॥ न हि त्वां रावणो दृष्ट्वा दिव्यरूपां मनोरमाम् ॥ मर्षयत्यचिरं सीते स्वगृहे पर्यवस्थिताम् ॥ ११ ॥ इत्यादि

दोहा-सुनि सीतापति वचन कटु, लागी करन विलाप ॥
लज्जित बोली मंद स्वर, बढ़ो हृदय संताप ॥ ४७ ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

ये हो प्रभु इतर तियान सम जान मोहिं दोष अनुमान कटु बैन इमि बागौना ॥ रसिकविहारी तुव नारी पति धर्मचारी काहूके सिखाये धनुधारीनेक लागौना ॥ विवश परी हौं घरी युगसी भरी है लाल हृदय जुडानो आज फेरी दु दागौना ॥ हाय श्यामसुंदर सुजान सरवज्ञनाथ करुणा अगाध अपराध बिन त्यागौना ॥ ४८ ॥

चौ० यौंकहिसियपियरुखअनुमानी ❀ बोलीविलखिलषणसोंबानी
राजपुत्र द्रुत सर रचि देहू ❀ अब नहिं मैं राखों यह देहू ॥ ४९ ॥
लछमन रामहि लखि रुखजानी ❀ विरचो सर वेगै निज पानी ॥
पावक ज्वलित देखिके सीता ❀ उठिपियपदगहिकहीअभीता ५०

दोहा-जो अनन्य मन बच करम, हौं सेये श्रीराम ॥
तौ रक्षौ मुहिं अनल तुम, व्यापक हो सब ठाम ॥ ५१ ॥

चौ० यौंकहिसरप्रवेशसियकीना ❀ निजपतिचरण चित्त दृढ़दीना ॥
ताछिन भयो शोर बहु घोरा ❀ हाहाकार करत चहुँ ओरा ॥ ५२ ॥
सकल सुरासुर करत पुकारा ❀ है अदोष सीतावर दारा ॥
ताछिन शिव ब्रह्मादिक आई ❀ रामहिबहुविधिबिनयसुनाई ॥ ५३ ॥
तब पावक सुदिव्य तनु कीने ❀ सीतहि मुदित अंक निजलीने ॥
सरते प्रगटि राम ढिग आई ❀ कही उच्च स्वर सबहि सुनाई ॥ ५४ ॥
परम शुद्ध यह सीता देवी ❀ सदा राम पतिपद दृढ सेवी ॥
यौं कहि राघव ढिग बैठारी ❀ सब हर्षें जै जैति उचारी ॥ ५५ ॥

दोहा-सीताराम चरित्र यह, भयो काहको जान ॥
दंडकवन उत लंक इत, गुप्त प्रगट गतिमान ॥ ५६ ॥

चौ० ताछिन भूपति बैठि विमाना ❀ आये देखि हृदय हुलसाना ॥
पितहि विलोकि वेगि उठि रामा ❀ सिया बंधु युत कीनप्रणामा ५७

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महाराज तिहुँ अंक लगाई ❀ विषम विरहकी ताप सिराई॥
बहुरि परस्पर राम अघाई ❀ गये धाम वर दशरथ राई॥५८॥
ताछिन देवराज हुलसाई ❀ कही राम कह होत रजाई॥
तब बोले रघुवर हुलसाई ❀ मृतक जियैं मम भट समुदाई५९
अरु जहँ बसैं ऋच्छ कपि भूरी ❀ रहै अशन जल तहँ नित पूरी
ये द्वै वर सुरनायक दीजे ❀ सकल मनोरथ पूरण कीजे६०
सुनि कह एवमस्तु सुरराजा ❀ जिये सकल कपि भालु समाजा॥
जल फल फूल पत्र तरुछाये ❀ निरखि राम आनंद अघाये६१

दोहा–बहुरि जोरि कर बिनय युत, सुरन बिदा किय राम॥
ते सबही शिर नायकै, गमने निज निज धाम॥ ६२॥
जनककिशोरी राजसुत, दोऊ दुहूँ निहार॥
प्रगट सकुच जन मध्य पै, अतर प्रेम अपार॥ ६३॥
लषण कीशपति लंकपति, हनुमानादिकवीर॥
रसिकबिहारी मुदित सब, निरखि सिया रघुवीर॥६४॥
कहत सबै जे राम सिय, जैति लषण कपिराज॥
जै हनुमंत सुवीर वर, जै जै जै सुरराज॥ ६५॥

इति श्रीरा० र० यु० विधाने श्रीसीताराम मिलन
वर्णनो नाम एकविंशोविभागः॥ २१॥
इति श्रीरसिकविहारीकृत श्रीरामरसायनग्रंथे युद्धचरित्र
वर्णनो नाम षष्ठोविधानः॥ ६॥

दोहा–श्रीसीता रघुवर लषण, अपर समाज अपार॥
शोभित शल सुवेल पर, विजय मोद उरधार॥१॥
इहि विधि बीते द्वै दिवस, रावणवध उपरंत॥
राम लषण सीता निरखि, सबहि अनंद अनंत॥ २॥
तब लंकापति रामसों, कहे बैन कर जोरि॥
तजिय सहानुज मुनि वसन, है प्रभु यह रुचि मोरि॥ ३
अरु धन भूषण वसन गृह, देश ग्राम वर नाम॥
कपि ऋच्छनको दीजिये, पूरित लंक ललाम॥ ४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि बोले प्रभु हे सखा, तुमते बिलग न नेक ॥
भरत सहित तनु साजहूँ, सो राखो मम टेक ॥ ५ ॥
अरु ये प्यारे प्राण सम, हैं कपि ऋच्छ अपार ॥
सबहीको सब भाँति ते, करौ उचित सत्कार ॥ ६ ॥
बहुरि चाहिये जतन वह, द्रुत हम करहिं पयान ॥
नतरु अवधि बीते भरत, नहिं राखैं निज प्रान ॥ ७ ॥
सुनि भाषी लंकेश तब, पुष्पकयान विशाल ॥
तामधि प्रभु पधराय हौं, चलिहौं अवध उताल ॥ ८ ॥
यों कहिकै लंकेश द्रुत, जाय सु लंक मझार ॥
धारे पुष्पकयान मधि, भूषण वसन अपार ॥ ९ ॥

दोवई छन्द ।

लै पुष्पक वर नभ मंडल ह्वै वेगि विभीषण आये ॥
अंतरिच्छ ते अमित अनूपम भूषण वसन लुटाये ॥
कीश ऋच्छ सब राम रजायसु पाय मनुज तनु धारे
सजि सजि अंग उमंग रंगते प्रभुहि जुहारत सारे ॥ १० ॥
पुनि पुष्पकविमान लंकापति वेगि राम ढिग लाये ॥
तामधि लषण सीय युत रघुवर बैठे लखि हुलसाये ॥
तब सबही सनमानि यथोचित बोले वच अभिरामा ॥
सकल भालु कपि प्राणपियारे जाहु सु निज निज ठामा ॥ ११
ऋच्छराज कपिराज लंकपति तिहूँ सखा मम प्यारे ॥
वसिहौ रैनि दिवस हिय अंतर ह्वैहो छिनहु न न्यारे ॥
अब सब निज निज धाम सिधारो करौ राज निरशंका ॥
आवत जात अवध मधि रहियो सहित वीर वर बंका ॥ १२ ॥
सुनि प्रभु बैन ऋच्छ कपि सिगरे तिहुँ नृप युत हनुमंता ॥
गदगद कंठ अवध दरशनहित कीनी विनय अनंता ॥
तब रघुवीर धीर दै वनचर विपुल बिदा करि दीने ॥
यूथपमुख्य शोधि तिहुँ भूपति सह सेवक सँग लीने ॥ १३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुष्पकयान प्रभाव अनूपम जेते होयँ सवारा ॥
यथायोग सबहेत सुखद वर तितो रहै विस्तारा ॥
ता मधि कोटिन कीश भालु युत सिया लषण रघुलाला ॥
लंक ऋच्छ कपिपति केसरि सुत बैठो सदल उताला ॥ १४ ॥
ताछिन पुष्पक इच्छा चारी उत्तर दिशहि सिधायो ॥
सियहि राम सब ठाम दिखाये सागर दरश करायो ॥
तब लखि सेतु लषण इमि भाषी जो यह सदा रहाई ॥
तो पयोधि अरु लंक दुहूँ की ह्वै है अति लघुताई ॥ १५ ॥
सुनि रघुवीर रजायसु दीनी अनुज वेगि सजि तीरा ॥
कीनो भंग सेतु तहँ जलमें परी भौंर गंभीरा ॥
भो खण्डित बहु ठोर जहां जहँ तहँ तहँ भँवर महाना ॥
इक इक भँवर सिंधु जलमाहीं योजन योजन माना ॥ १६ ॥
तिन ऊपर नभ पंचकोशलग पक्षिहु नाहिं उडाई
महावेगते भँवर सिंधुमधि अगम पंथ चहुँघाई ॥
इमि प्रबंध करिके पुनि तहँ ते पुष्पक वेगि चलायो ॥
सेतु भंग मग अगम लंक गुणि लंकपाल सुख पायो ॥ १७ ॥
दोहा—सेतु शिवालय सीयको, दरशायो रघुनन्द ॥
तिनकी महिमा अमितविधि, भाषी अति सानन्द ॥१८॥
प्र० ॥ वा० यु० कांडे। सर्ग १२५ ॥ श्लोक ।
अत्र पूर्व महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः ॥
एतत्तु दृश्यते तीर्थं सागरस्य महात्मनः ॥ १ ॥
सेतुबंध इति ख्यातं त्रैलोक्येन च पूजितम् ॥
एतत्पवित्रं परमं महापातकनाशनम् ॥ २॥
दोवई छंद।
सिंधुतीर रामेश्वर दरशन पूजन सबही कीना।
बहुरि उताल चले श्रीरघुवर भरत नेम चित दीना ॥
अतिहि सपदि किष्किन्धा आये नभ मग ह्वै दरशायो ॥
जनकसुता रुचि पाय राजसुत तहँ विमान बिलमायो ॥१९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब सिय कही राम सों प्रभु मो हीय एक रुचि भारी ॥
तारा रुमा चलैं मो सँग अरु अपर ऋच्छ कपिनारी ॥
सुनि रघुचन्द सुकंठहि भाषी वेगि सकल ते आवैं ॥
जनकनन्दिनी प्रीति मानिकै अवधहि साथ सिधावैं ॥ २० ॥
सुनि सुग्रीव ऋच्छ कपि संयुत जाय वेगि सब आनी ॥
नारि रूपते सकल वानरी तिमि अनूप दुहुँ रानी ॥
यथायोग सियमिलि बैठारी पुष्पकयान मँझारी ॥
बहु आनंदसहित पुनि अवधहि किय पयान धनुधारी ॥ २१ ॥
भरद्वाज आश्रम मधि आये तिथि पंचमी प्रमाना ॥
ताही दिन मनुवर्ष सु पूजे भानु अंशते जाना ॥
सहित समाज मुनिहि शिरनाई बूझी गृह कुशलाई ॥
अवध कथा तब सकल सुमंगल ऋषि रघुवरहि सुनाई ॥ २२ ॥
सुनि सब कुशल मुदित मुनितें पुनि वर माँगो रघुराई ॥
नाथ भालु कपिगण हित बहु तरु फूलैं फल सदाई ॥
एवमस्तु कहि ऋषिवर तादिन प्रभुहि सु आश्रम राखे ॥
तब हनुमंतहि अवध गमनके अर्थ राम द्रुत भाषे ॥ २३ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० कां० स० १२६ ॥ श्लोक ॥

पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पंचम्यां भरताग्रजः ॥
भरद्वाजाश्रमं प्राप्य ववंदे नियतो मुनिम् ॥ ३ ॥

दोवई छंद ।

तब अंजनि सुत मुदित सिधाये धरि द्विज रूप अनूपा ।
प्रभु आगम कहि मिलि निषादसों जाय लखे तुरभूपा ॥
शीश नाय भरतहि इमिभाषी सिय सबंधु प्रभु आये ॥
सुनि उठि सपदि कपिहि सो भेंटे अति आनंद अघाये ॥ २४ ॥
कथा बूझि सब कपिहि भरत अति वेगहि सचिव बुलाये ।
चहूँ ओर पुर सरित बाग मग अनुपम साज सजाये ॥
राम लषण सिय आगम सुनिकै महामोद भो भारी ।
अकथ अपार अनंद मातु उर भे चर अचर सुखारी ॥ २५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुर परिजन नर नारि साज सजि सकल दरश हित धाये ॥
राम पादुका भरत शीश धरि वेगि चले हुलसाये ।
उत हनुमंत जाय सब भाषी सुनि मुनि पद शिरनाई ।
गमने राम निषाद लखे मग आये अवध तुराई ॥ २६ ॥
दोहा—लखि सुरसरिहि प्रणाम करि, मज्जन अरु जलपान ॥
सिया सविधि पूजी सरित, पूरव कथित प्रमान ॥ २७ ॥

दोवई छंद ।

चले वेग लखि अवध लषण सिय युत समाज श्रीरामा ॥
उठि करजोरि नवाय शीश सब कीनो पुरिहि प्रणामा ॥
सरयू अवध महातम रघुवर वर्णत विविध अपारा ।
आये नंदिग्राम सन्निध तहँ पुष्पकयान उतारा ॥ २८ ॥
दोहा—लषण सिया प्रभु निरखिकै, धाये सब नर नारि ॥
राम भरत दृग जुरत दुहूँ, उमगे दुहूँ निहारि ॥ २९ ॥
भरत धाय प्रभु पद परे, राम लिये उरलाय ॥
मिले परस्पर प्रेम युत, यथा उचित चहुँ भाय ॥ ३० ॥
भरत हरषि सो पादुका, रामचरण पधराय ॥
पुनि सबंधु सियके गहे, पद पंकज हुलसाय ॥ ३१ ॥
राम लषण सीता सहित, गुरु द्विज पद धरिशीश ॥
विनय करी करजोरि बहु, पाई सुखद अशीश ॥ ३२ ॥
राम लषण हुलसायकै, जाय जाय उमगाय ॥
गहेमातु गणके चरण, सबहि लये उरलाय ॥ ३३ ॥
मात सुमित्रा कौशला, ताछिन जो आनंद ॥
कहि न सकैं सो कल्प शत, शेष शारदा वृन्द ॥ ३४ ॥
सखा यूथ प्रमुदित मिले, अपर अमित नर नारि ॥
यथायोग सिय लषण प्रभु, भेंटे सबहि निहारि ॥ ३५ ॥
ताछिन चरित अनूप भो, जे जन सकल अपार ॥
इक इक प्रति छिनमें उचित, भेंटे गजकुमार ॥ ३६ ॥
भये मुदित चर अचर सब, अमित नारि नर वृंद ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो न भेद कोऊ लखौ, कह जै जै नृप नंद ॥ ३७ ॥
सुग्रीवादि नृपाल तिहुँ, हनुमानादिक वीर ॥
भरतादिक सब सबहि सों, मिले यथोचित धीर ॥ ३८ ॥
सिय सासुनके पग परीं, सब लीनी उर लाय ॥
भगिनी पुरवासिनि सखी, मिलीं हीय हुलसाय ॥ ३९ ॥
तारादिक सब तीय वर, उचित रीत युत नीत ॥
मिलीं परस्पर नारि बहु, यथायोग सह प्रीत ॥ ४० ॥
मिले परस्पर सबहि सब, यथा उचित हरषाय ॥
राम कही तब भरत सों, प्रमुदित सबहि सुनाय ॥ ४१ ॥
सखा ऋच्छपति लंक पति, दृढ अंजनिसुत दास ॥
प्राणहुते प्रिय अपर सब, कीश भालु बलरास ॥ ४२ ॥
हम तुम लछमन शत्रुहन, तिमि सुकंठ कपिराज ॥
मिले पंच भ्राता अबै, सुखद समै शुभ आज ॥ ४३ ॥
इहि विधि अतिहि अनंद दै, पुष्पक सबहि बिठार ॥
आये श्रीरघुवंश मणि, नंदिग्राम मँझार ॥ ४४ ॥
तहां आय उतरे तबै, कही पुष्पकहि राम ॥
जब सुमिरैं तब आइयो, जाहु सु पूरव धाम ॥ ४५ ॥
राम रजायसु शीश धरि, गो कुबेर ढिग यान ॥
निरखि धनेश अनंद ह्वै, कियो तासु बहु मान ॥ ४६ ॥

चौ०—इमिसबमिलेपरस्परलोगा ❀ मिटेसकलदुखजनितवियोगा
नंदिग्रामबहुजुरोसमाजा ❀ बैठेजनयुतअगणितसाजा ॥ ४७ ॥
तब उठि भरत रामपहँ बोले ❀ धर्म सत्य मय वचनअमोले ॥
मातु पिता आज्ञाजोदीना ❀ सो प्रभु अहमैं शिरधरिकीना ४८ ॥
अब मम विनय मानिये ताता ❀ राज दीन मो कह पितु माता ॥
निजदिशितेहौंदेहु सु लीजे ❀ येतीकृपादीनलखिकीजे ॥ ४९ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० का० ॥ स० १३० ॥ श्लोक ।

अब्रवीच्च तदा रामं भरतः स कृतांजलिः ॥
एतत्ते सकलं राज्यं न्यासं निर्यातितं मया ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अमित विनय सुनि दीन दयाला ❀ भरतहि बोले बैन रसाला ॥
नेह धर्म तव अति वरियारा ❀ याते करौं सु अंगीकारा ॥५०॥
राम वचन सुनि सब नर नारी ❀ कह जै जै अति भये सुखारी ॥
भरत हुलसि प्रभुपद शिरनायो ❀ रघुवर बंधुहि अंक लगायो५१॥
पुनि तिहुँ बंधु जटा रघुनाथा ❀ किये सप्रीतिविलग निजहाथा॥
प्रेम सहित सबही अन्हवाये ❀ विशद विभूषण वसन सजाये५२॥
पुनि तिहुँबंधुसविधिसजिसाजा ❀ मिलिबहुसेवकसखासमाजा॥
राम जटा निरवारि सुधारे ❀ वर मंजन कराय तनु सारे॥ ५३॥
भूषण वसन अमोल अनूपा ❀ नख शिख सज शृङ्गार सुरूपा ॥
तन छिन चहुँ इमि लगत सुहाये ❀ चहूँ वेदजनुतनुधरिआये ॥५४॥

दोहा–पुनि रिपुहन द्रुत साजलै, सेवक सखा प्रवीन॥
तिहुँ नृप कपिपति आदिको, सकल शृँगार सु कीन॥ ५५॥
रामसखा सेवक अपर, यथायोग चहुँ जाय ॥
कीश ऋच्छ निश्चरनको, सजे अमल अन्हवाय ॥ ५६ ॥
उत कौशल्यादिक सकल, सियहि मुदित अन्हवाय ॥
नख शिख भूषण वसन सुठि, साजे प्रीति बढाय ॥५७॥
तारादिक जे सकल तिन, पुत्र बधू सम जान ॥
राम मातु सखि गण उचित, सजी सहित सनमान ॥५८॥
सियभगिनी अरु आलिगण, पुनि सबही नर नारि ॥
साजे वर शृङ्गार निज, उचित सु साज सवाँरि ॥ ५९ ॥

चौ०–इमि सबही शृंगार सुधारे ❀ भोजन पान कीन शुचि सारे॥
पुनि किय अवध चलन तैयारी ❀ अति आनंद सकल नरनारी६०
मंगलमय सब साज सुधारे ❀ रथ तुरंग गज विविध सँवारे ॥
तिन पर यथायोग असवारा ❀ भये भयो चहुँ जैजैकारा ॥६१॥
नव सहस्र वर कुंजर साजे ❀ तिनपर भूरि भालु कपिराजे ॥
वाहन अपर अनेक अपारा ❀ यथायोग जन भये सवारा॥६२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिबिका सुभग अनेक अनूपा ❀ बहु सिय युत तिय बैठि सुरूपा॥
हरि सहस्र भय स्यंदन साजा ❀ तिहि सोहे सबंधु रघुराजा ॥६३॥
बजे बाजने अमित अनूपा ❀ नृत्यगान ठानो वर रूपा ॥
बंदीजन बहु विरुद बखाने ❀ ध्वज फहरत घहरात निसाने ६४॥
तडपहिं तोप घोर बहु छायो ❀ दीपावली प्रकाश सुहायो ॥
छत्र चमर व्यजनादि नवीने ❀ बंधु सखा सेवक चहुँ लीने॥६५॥
इहि विधि पुर प्रवेश किय रामा ❀ बैठी अटन अमित वरवामा॥
रोचन लाज सुमन बरसावैं ❀ मंगल गीत मनोहर गावैं ॥ ६६ ॥
दरश देत सबहीको रामा ❀ आये सन्ध्या समय सुधामा ॥
धन भूषण वारे मन माहीं ❀ परे कोउ तिन बूझत नाहीं॥६७॥
माता करि आरती उतारे ❀ सहित समाज भवन पगधारे ॥
पूजन दान मंगलाचारा ❀ नृप गृह नगर सु भये अपारा॥६८॥

दोहा–तब सुरनायक भरतसों, कही समस्त बुझाय ॥
सबहि निवास सुपास युत, वेगि करावहु जाय ॥ ६९ ॥

चौ०–राम बंधु तब आतुर जाई ❀ संग सचिव सेवक समुदाई ॥
सबहि यथोचित दीन निवासा ❀ सदन साज करिसकलसुपासा७०
वर अशोक वाटिका विशाला ❀ तहँ राखे सुकंठ हरिपाला ॥
रंग भवन लंकेश रहाये ❀ वन प्रमोद ऋच्छेश टिकाये॥७१॥
अंगदराज बागके माहीं ❀ विशद कोट अंजनिसुत काहीं ॥
अपर धाम आराममझारा ❀ यथायोग कपि ऋच्छ अपारा॥७२॥
अवधि विचारि अवध मधि आये ❀ देश देश के भूप सु छाये ॥
सरयू तट निषाद कियवासा ❀ बहु प्रकार करि सकलसुपासा७३
विविध ऋच्छ कपिनारिअपारा ❀ तिन सबही रनिवास मँझारा ॥
यथायोग वरदीन निवासा ❀ बहु प्रकार करिसकलसुपासा॥७४॥

दोहा=इहि विधि सबहि निवास भो, सादर सहित सुपास ॥
उमगो अति आनँद अवध, घर घर होत विलास ॥७५॥
तिहुँ नृप कपिपति आदि अरु, वानर भालु जु भूरि ॥
सबहीको यश अमल बहु, रहो अवधमें पूरि ॥ ७६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लंक विजय करि ते सबै, वानर भालु अपार ॥
धरे मनुजतनु सुभगवर, आये अवध मझार ॥ ७७ ॥
त्योंहीं बहु निश्चरन युत, लंकापति नर रूप ॥
तिलक भाल गलमाल वर, शोभित सुभग अनूप ॥७८॥
तिमि तारादि रुमादि सब,सुभग मानुषी रूप ॥
कीश ऋच्छ तिय सुन्दरी, सजे शृँगार अनूप ॥ ७९ ॥
तिनके गुण गण सुनत सब, पुरवासी नर नारि ॥
धाय लखत निज गति सरिस, चकृत होत निहारि ॥८०॥
प्रात राम अभिषेक सुनि, सब हिय भरी उमंग ॥
होत जागरन सदन प्रति, नृत्यगान सुखरंग ॥ ८१ ॥
रसिकबिहारी प्रातही, होय राज अभिषेक ॥
ताहित निज निज साज सब, साजत सुभग अनेक ॥८२॥

इति श्रीरा ० र ० वि ० अ० श्रीरामचन्द्र अवध आगमन वणनो नाम प्रथमोविधानः ॥ १ ॥

दोहा—आये श्रीरघुवर अवध, भयो परम आनंद ॥
घर घर होत वधावने, मुदित नारि नर वृन्द ॥ १ ॥
ताही निशि गुरु सचिव अरु सेवक सखा अनंत ॥
सकल साज अभिषेकके, लीने साज तुरंत ॥ २ ॥

हरिगीतिका छंद ।

गुरु भरत मंत्री अपर जन बहु प्रात साज समेतसो ॥
कीने सविधि सतकर्म जो अभिषेकके हित हेतसो ॥
दिन मध्य औसर जानि आये देव सकल हुलासमें ॥
श्रीराम राज उछाह वर अवलोकिवेकी आशमें ॥ ३ ॥
शुभ समय जानि वसिष्ठ द्विज वर सविधि सीतारामको ॥
अभिषेक कीनो विप्रगण युत मंत्र पढि पढि सामको ॥
शृङ्गारि पुनि दोऊ विराजे रत्न सिंहासन जबै ॥
वर ब्रह्म निर्मित कीट रघुवर शीश गुरु धारो तबै ॥ ४ ॥
पुनि गंध अक्षत तिलक कीन वसिष्ठ गुरु रघुरायके ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुर विप्रवृन्द महीप दीनो भाल जग सुखदायके ॥
तिहिसमय जै जै शोर भो नभदुंदुभी देवन हनी ॥
गुण गान करि उर प्रेम भरि वर सुमन झरि लाई घनी ॥ ५ ॥
अतिमुदित निर्तहिं अप्सरा वरबाजने बहु बाजहीं ॥
सुर नाग नर गंधर्व निज निज कलाकरि छबि छाजहीं ॥
सुखकौशला सिय हीयको कहि शेष पार न पावहीं ॥
सब मातु पुर परिजन अनंदित अमित वित्त लुटावहीं ॥ ६ ॥
कंचनमई शत कंजमाला विशद वर अनुपम नई ॥
सो पवनदेव प्रसन्न ह्वै पहिराय श्रीरामहि दई ॥
बहु रत्न युक्त विशाल मुक्ताजाल संयुत हारसो ॥
सुरपाल गल रघुलालके धारो सुकांति अपार जो ॥ ७ ॥
तिहिसमय चारहु वेद निज निज रूप विशद सुधारिकै ॥
आये नवायो शीश रघुवर छटा अमित निहारिकै ॥
ब्रह्मादि सुर मुनि नारदादिक एक ठौर समग्र ह्वै ॥
स्तुति करत हैं राम-सियकी चहूँ निगमन अग्रकै ॥ ८ ॥

माणिप्रवाल राति ॥ कुमारदण्डकछंद ।

जयति जय सज्जनानंद कर धर्म धुरचण्डकोदंड धारी खरारी प्रभो पाहि दूर्णावतारी कृपाले॥ जैति लंकाधिपति शमन सीतारमण सर्व देवाधि राजेश वअधेश सुत भक्त अनुरक्त जैजक्तपाले ॥ जयति गर्वापकर्षण प्रहर्षण प्रणत कारुणीकात्म सौंदर्य रूपावधी स्वेच्छया नंत लीला विहारी ॥ जैति दुष्पार पाथोधबंधान कृत क्रुद्ध युद्धावरुद्धोद्ध भट भीम वपु दुष्ट दल दलन दृढ विजयकारी ॥ ९ ॥ जैतिसद्बुद्धि विद्या विचक्षण विपुल अस्त्र शस्त्रादिसंहार वारण निपुणस्वक्ष सर्वात्म विज्ञान सिंधो ॥ उद्भव स्थिति प्रलय कर्म कर्ता प्रबल धैर्य सौर्य्याधिपाधीश सिद्धीश वर कौशलाधीश दीनार्तबंधो ॥ काम क्रोधोद्भवा पारक्लशापहर जन्म जन्माजिता नेक पापघ्न ध्रुव भुक्ति मुक्त्यादि स्वेच्छार्थ दाता ॥ चंड कालानल ज्वाल दग्धा कुलित तप्त त्रैताप तापार्त पाहीतिक श्रीपते तासु भक्ता सुत्राता ॥ १० ॥ सकल संगीत गीतज्ञ गौरव

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महा सर्व शृंगार सारावधीच्छा जनित कोटिकंदर्प दर्पापहर्ता॥राम श्यामांगनीलोत्पलो फुल्ल द्युति दिव्य पीतांबरा भरण शर चापधृत राज राजेन्द्र त्रैलोक भर्ता॥सदय जन हृदय सर हंस नृप मौलि मणि भानु वंशावतंसाति क्रांतीशवर सत्य व्रत शुद्धप्रेमानुगामी॥ अखिल ब्रह्मांड व्यापक चराचर प्रभो जानकीनाथ सद्गाथ रक्षक प्रणत दीन दासोस्मि मांपातु स्वामी॥ ११॥जयति जनकात्मजा जक्तजननी प्रबल असुरसंहारकारणिउधारणिधरा राम राजेन्द्रपद पद्मसेवी॥ नाग नर यक्ष गंधर्व किन्नर अमर कन्यकाभिस्त्वमपि वंदनीया सदा त्वच्चरणसर्व पूज्यादिदेवी॥स्वक्षसद्गीतज्ञेयासिध्येया सित्वं रूप लावण्य स्वेच्छावपुषधारिणी धर्मधरप्रीतिमाज्ञानुवर्ती रामरामाभिरामारमाधीश्वरी शुभ्र सिंहासनारूढसौभाग्यनीराघवे वामभागानुवर्ती॥ १२ ॥

दोहा–कुरु कुशलं प्रणमोस्तुते, देहि भक्ति निष्काम ॥
बंधुभिश्च सहसीतया, वस हृदये श्रीराम॥ १३ ॥

सो०–इमि सुर निगम अपार, करी विनय सिय राम प्रति ॥
होत सु जैजैकार, भयो राज अभिषेक लखि ॥ १४ ॥

हरिगीतिका छंद।

तिहि समय रघुवर लक्ष धेनु सवत्स विधियुत साजिकै ॥
दीनी सु विप्रन विनय पूरक राज गादी राजिकै ॥
पुनि तीसकोटि सुहेममुद्रा दान कीनो रीतिसे ॥
गज वाजि स्यंदन वसन भूषण अमित दिये बहु प्रीतिसे॥१५॥
पुनि पवनदत्त सु माल दीनी हर्षिकै कपिराजको ॥
भुजबंद चन्दसमान दीनों वालिसुत युवराजको ॥
वरहार जो वासव समर्पित हुलसि सो सीतहि दयो ॥
जिहिको उजास प्रकाश बहु आवासमें चहुँ दिशि छयो ॥१६॥
कछु बार धार उतार पुनि सोहार सियकर धारिकै ॥
छिन लखहिं हनुमत ओर छिन रहि जाहिं पियहि निहारिकै ॥
सो समुझि हियकी श्याम बोले देहु जिहि जिय भावही ॥
लखि लीन हम तब अंतरीगति जाहि उर उमगावही॥ १७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब सिय सकुचि हनुमंतको वह माल दीनी प्रेमते ॥
उठि कीश लै धरि शीश धारी कंठ निज दृढ नेमते ॥
पुनि तासु मणि मुक्ता अमोल सु एक एक निहारही ॥
तिन दाबि दंतन फेर हेर निवेरकै कर धारही ॥ १८ ॥
सो देखि सिय हिय कहतिहै कपिरत्नगुण कह जानही ॥
अनमोल मणि मुक्ता अनूपम तिनहि दंतन भानही ॥
यौं गुणि जु सीता मधुरबूझी वीर काह निहारहू ॥
क्यों विमलमाल विशाल दशननशाल सकल विदारहू॥ १९॥
हनुमान तब कर जोर भाषी मात और न पेखहूँ ॥
या में खचितकै नाहिं है श्रीराम नाम सु देखहूँ ॥
सुनि सिय मृदु मुसक्याय बूझी कहो कपि तव गातमें ॥
कह नाम लिपि है सो लखौं उर माथमें कै हाथमें ॥ २० ॥
हनुमंत तब निज नखनते उर बाहु चर्म विदारिकै ॥
कर जोरिकै सीतहि दिखायो चकित अंग निहारिकै ॥
हेरो सिया कपिगात अंतर राम नामहि लिपि चहूँ ॥
तिल मानहू भुज हीयतिहि विन वपुष नहिं सूनो कहूँ ॥२१॥
हनुमंत भक्ति अनन्य सत्य विलोकि सिय हर्षित भई ॥
चिरुजियहु ईश प्रसीदहीं सुत सपदि वर आशिष दई ॥
सो लखि समस्त समाज सुर नर कपिहि धन्य बखानहीं ॥
ते धन्य जन जे पवनसुतको ध्यान निज उर आनहीं॥२२॥
सो०-इहि विधि सकलसमाज,लखि कपिभक्ति अनन्य दृढ़॥
कहत भक्त शिरताज, हैं हनुमान सुजान वर ॥ २३ ॥
होय राम जय शोर, तिहूँ लोक अति सुख छयो ॥
दान मान चहुँ ओर, नीति प्रीति शुभ रीति मय ॥२४ ॥
पुनि प्रमुदित श्रीराम, वसन विभूषण विशद बहु ॥
भूमि ग्राम धन धाम, कपि ऋच्छन दीने उचित ॥ २५ ॥
लंकापतीहि अनूप, सहित निशाचर वृंद बहु ॥
दीनों रघुकुल भूप, यथा उचित नृप साज सजि ॥ २६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाम्बवन्तको राम, मणिन जटित भूषण विविध ॥
वसन अनूप ललाम, दीनें संयुत प्रीत बहु ॥ २७ ॥
पुनि बहु याचक वृन्द, किये अयाची सकल विधि ॥
इमि श्रीदशरथनंद, दान मान तोषै सबै ॥ २८ ॥

चौ०-पुनि रघुवीर हिये हुलसाई ❀ लषणहि कही सनेह बढाई॥
करों बंधु तुम कहँ युवराजा ❀ या छिन मध्य समस्त समाजा२९
सुनि लछमन बोले कर जोरी ❀ नाथ एक विनती मोरी ॥
हौं लघु भरत जेठ मम भ्राता ❀ तिनहि उचित पदवी यह ताता३०
तब प्रमुदित भरतहि रघुराजा ❀ युत अभिषेक कीन युवराजा॥
लषण अधीन सकलदलराखा ❀ न्यायकाजरिपुमदनहि भाखा३१
वृद्ध सुजन प्राचीन प्रवीने ❀ ते तिहुँ बंधु निकट करि दीने ॥
अपर अपार समस्त प्रधाना ❀ यथायोग राखे युत माना ॥ ३२
जे जन दशरथ नृप ढिग केरे ❀ तिनै राम राखे निज नेरे ॥
दान मान प्रथमहुते भूरी ❀ सबको सब अभिलाष सु पूरी॥३३
बाल सखा सेवक बहुतेरे ❀ उचित मान कीने सब केरे ॥
इमि सुर नर अनंद मधि फूले ❀ जि निज धाम काम सुख भूले३४

दोहा-सप्त दिवसको एक दिन, भयो न अथये भान ॥
रामराज आनंदमें, कछू न कोऊ जान ॥ ३५ ॥
पुनि नट नर्तक कौतुकी, अपर अनेक समाज ॥
नर नारी तिन भूरि धन, दीनो कौशलराज ॥ ३६ ॥
ताछिन द्वै गंधव जे, चित्रसेन इक नाम ॥
दूजो विश्वावसुगुणी, दोऊ वर मति धाम ॥ ३७ ॥
ते रामहि कर जोरिकै, उठि बोले हुलसाय ॥
महाराज रघुवंश मणि, मम विनती यह आय ॥ ३८ ॥
पंचवर्ष वय नाथकी, रही तबै हम आन ॥
महाराज अवधेश ढिग, कियो दुहूँ बहु गान ॥ ३९ ॥
ताछिन प्रभु तिहु बंधु युत, पितु ढिग रहे विराज ॥
सुर गुरु मंत्री नृप सखा, सेवक सकल समाज ॥ ४० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इंद्रसभा औसर निरखि, हम किय गमन विचार ॥
तब प्रभु अति बिमने भये, भरि आये दृगवार ॥ ४१ ॥
महाराज अवधेश लखि, हमहिं जान नहिं दीन ॥
करो गान पुनि मुदित मन, वेगि रजायसु कीन ॥ ४२ ॥
यौं कहि लिखि इक पत्रिका, सपदि बाँधि शर माहि ॥
ताही छिन धनु धारि सो, भेजो सुरपति पाहि ॥ ४३ ॥
अति उताल सो बाण पुनि, आयो भूपति पास ॥
उत्तर लायो इंद्रको, लिपिकृत पत्र सुखास ॥ ४४ ॥
तामधि हम दोऊनको, सुरपति लिखी रजाय ॥
रहैं गंधरव अवधमें, सेवैं नृपहि सदाय ॥ ४५ ॥
अरु गंधर्व जु अप्सरा, है मम विशद अपार ॥
यूथ यूथते नित्य प्रति, जायँ भूप दरबार ॥ ४६ ॥
हम दुहुँ तब ते नाथके; सेवैं चरण सदाय ॥
अपर अप्सरा गंधरव, नित सेवा करि जायँ ॥ ४७ ॥
सो प्रभु शिशुताते करी, इहि विधि कृपा अपार ॥
आज समै लखि याचहीं, दीजै सोइ उदार ॥ ४८ ॥
नाथ कृपाते सकल है, दुहूँ लोक आनंद ॥
निज अनन्य दृढ भक्ति वर, दीजे रघुकुलचंद ॥ ४९ ॥
सुनि प्रसन्न ह्वै राम तिन, दीनी भक्ति अनन्य ॥
सुर नर मुनि जैजै करी, कही धन्य दुहुँ धन्य ॥ ५० ॥
इहि विधि सबहि अनंद दै, उठे समय लखि राम ॥
सिया सहित गुरु विप्रपद, पूजे कियो प्रणाम ॥ ५१ ॥
पुनि तहँते आये महल, सखा बन्धु सिय संग ॥
सब मातनके पग परे, प्रमुदित सहित उमंग ॥ ५२ ॥
जननी देहिं अशीश बहु, प्रमुदित अंक लगाय ॥
करैं निछावर आरती, वित्त अपार लुटाय ॥ ५३ ॥
कीश नाथ ऋच्छेश अरु, लंकापति हनुमान ॥
अपर नील नल आदिजे, सुहृद सु वीर प्रधान ॥ ५४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ते सब सब जननीनके, गहे पाँय हुलसाय ॥
दई अशीश सुमात तिन, पुत्र सग्गि सतभाय ॥ ५५ ॥
सन्माने सब प्रीति युत, हिय अनंद उमगात ॥
अपर नारि नर उचित बहु, परितोषे वरमात ॥ ५६ ॥
इहि विधि परम अनंद युत, भयो राम अभिषेक ॥
नृत्य गान दानादि बहु, घर घर होत अनेक ॥ ५७ ॥
तिहूँ लोक आनंद भो, सबते अवध अपार ॥
छयो शोर चहुँ जैतिजै, दशरथ राजकुमार ॥५८॥
इति श्रीरसिकविहारीकृत श्रीरामरसायनगन्थे अभिषेक
विधाने श्रीरामचन्द्रराज्याभिषेकवर्णनो
नामद्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

हरिगीतिका छंद ।

श्रीरामराज अनंद तीनहु लोक सब सुख छायगे ॥
दुख दोष दुष्ट दरिद्र दुष्कृत द्वेष सकल नशायगे ।
बहु भूप सुर मुनि नारि नर दशहूँ दिशाते आवहीं ॥
बरदान मान समेत दरशन पाय सकल अघावहीं ॥ १ ॥
आनंद भरि कौशिक सु अत्रि अगस्त्य आदिक बहु मुनी ॥
चहुँ ओरते आये सु निज निज मंडली युत अति गुनी ॥
तिन हेरि प्रभु उत्थान दै नमि उचित वर आसन दये ।
विधि सहित पूजे प्रेमते सब दरशलहि प्रमुदित भये ॥ २ ॥
बूझी परस्पर कुशल तब बोले अगस्त्य मुनीश यौं ॥
भुविभार दीन उतार प्रभु अजहूँ न होवै कुशल क्यौं ॥
बहु कुशल सुर मुनि तबहि भे जब वध भयो घननादको ॥
पुनि अपर निश्चर निकर भंजे पारकह अहलादको ॥ ३ ॥
दोहा– सुनि रघुवर चित चकित ह्वै, कही कहा हे नाथ ।
सकल निश्चरनते घनो, रहो तासु बल गाथ ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब अगस्त्य मुनि राम सों, बहु विधि करि निरधार ॥
सकल निश्चरनकी कथा, कही सहित विस्तार ॥ ५ ॥
पुनि बोले ऋषि रामसों, निश्चर प्रबल महान ॥
तब ते अति जबते दयो, पार्वती वरदान ॥ ६ ॥
जन्मतही निश्चर तुरत, माता वैस समान ॥
होत प्रौढ ताही समैं, समर योग बलवान ॥ ७ ॥

प्र० ॥ वा० उ० कां० ॥ स० ४ श्लोके ॥

पुरमाकाशगं प्रादात्पार्वत्याः प्रियकाम्यया ॥
उमयापि वरो दत्तो राक्षसीनां नृपात्मज ॥ १ ॥
सद्योपलब्धिर्गर्भस्य प्रसूतिः सद्य एव च ॥
सद्य एव वयःप्राप्तिं मातुरेव वयः समम् ॥ २ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—याते बाढत अमित नित, देत सबहि संताप ॥
सो गति अजहूँ पै अबै, करि न सकैं बहु पाप ॥ ८ ॥
गो द्विज हत्या रैनि दिन, करत हुते खल भूरि ॥
रही दुखित बहु भूमि सो, भयो सकल दुख दूरि ॥ ९ ॥
अब सु ब्रह्महत्या सदा, रही चार अस्थान ॥
प्रभुहि विदित कारण सकल, है बहु ठौर बखान ॥ १० ॥
चार मास पावस विषे, एक अंशते खास ॥
चंड ब्रह्महत्या करै, सरितन माहिं निवास ॥ ११ ॥
बहुरि ब्रह्महत्या प्रबल, सो इक अंश सदाहिं ॥
रहै निरंतर रैनि दिन, ऊपर धरणी माहिं ॥ १२ ॥
तिय रजवंतिनमें सदा, तीन दिवस लग जोय ॥
वास ब्रह्महत्या प्रबल, एक अंशते होय ॥ १३ ॥
सदा ब्रह्महत्या रहै, एक अंश तिन माहिं ॥
गो द्विज तिय शिशु आत्महन, अरुमिथ्या बतराहिं ॥ १४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्र० वा० ॥उ० का० ॥ स० ८६ ॥श्लो० ॥

देवानां भाषितं श्रुत्वा ब्रह्महत्या महात्मनाम् ॥ संदधौ स्थान-
मन्यत्र वरयामास दुर्वसा ॥ ३ ॥ एकेनांशेन वत्स्यामि पूर्णोदासु
नदीषु वै ॥ चत्वारो वार्षिकान्मासान्दर्पघ्नी कामचारिणी ॥ ४ ॥
भूम्यामहं सर्वकालमेकेनांशेन सर्वदा॥ वसिष्यामि न संदेहःसत्ये
नैतद्ब्रवीमि वः ॥५॥ योयमंशस्तृतीयो मे स्त्रीषु यौवनशालिषु ॥
त्रिरात्रं दर्पपूर्णासु वसिष्ये दर्पघातिनी ॥६॥ हंतारो ब्राह्मणान्ये तु
मृषा पूर्ववदूषकान् ॥ तांश्चतुर्थेन भागेन संश्रयिष्ये सुरर्षभाः ॥७॥

दोहा–इन विहाय अब और थल, रहो न पातक लेश ॥
राम कृपाते रावरी, सुखी भये सब देश ॥ १५ ॥

चौ०–जो प्रभुलंकनाथको मारा ❀ सो प्रसिद्ध तिहुँलोकमझारा॥
जासु तेज बल गुण प्रभुताई ❀ आपहि प्रथमसमस्त सुनाई॥ १६॥
जे कुकर्म वश जीव अपारा ❀ परे दुखित बहु नरक मझारा ॥
तिन उद्धारक तिहुँ पुर माहीं ❀ तुम बिन कोउसुरासुरनाहीं १७॥
सोरावण यम जीतन काजा ❀ गो यमपुर जब सहित समाजा ॥
लखि नारकी विकल विललाये ❀ दशमुखतेसबजीवछुड़ाये १८॥

प्र० वा०॥ उ० कां० स०२१ ॥ श्लोक ॥

रावणो मोचयामास विक्रमेण बलाद्बली ॥
प्राणिनो मोक्षितास्तेन दशग्रीवेण रक्षसा॥ ८ ॥
सुखमापुर्मुहूर्तं ते ह्यतार्कितमचिंतितम् ॥
प्रेतेषु मुच्यमानेषु राक्षसेन महीयसा ॥ ९ ॥ इत्यादि ॥

चौ–०सो रावणहि सहित परिवारा ❀ संयुत सैन समर संहारा ॥
पुनि नृप तिलकविभीषणसारा ❀ को प्रभुसम बलवंतउदारा१९

दोहा–इहि विधि मुनिवर बहु कथा, कहि पुनिअस्तुतिकीन॥
भई साँझ तब सबहि प्रभु, उचित वास वर दीन॥२०॥
रघुवर सादर प्रीत युत, राखे मुनिवर वृंद ॥
अपर कथा नित होत बहु, छायो परमानंद ॥२१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मिथिलाधिप केकयनृपति, काशि नृपादि अनूप ॥
जुरे अवधमें मुदित बहु, देश देशके भूप ॥ २२ ॥
द्विजमुनिकविकोविद निपुण, याचक गुणी अपार ॥
ज्ञातिवर्ग बर धनिक बहु, नर तिय वरन सुचार ॥ २३॥
अपर अमित जन अवधमें, छाये सब कहँ राम ॥
मान दान सादर सकल, करि राखे निज धाम॥२४॥
बीते बहु दिन प्रीतिवश, राम जान नहिं देत ॥
ते अतिही आनंदमें, भूले सकल निकेत ॥ २५ ॥

चौ०-तब मुनिगण रामहि समुझाई ❀ गये अनंदित बिदा कराई॥
विपुलमहीप राज धन धामा ❀ रामहिं अर्पिलहोविश्रामा ॥२६॥
राम उदार धर्म धुर धारी ❀ यथा उचितनृपनीति निहारी ॥
दीन बहोरि राज्यतिन काही ❀ कोऊ यहनकोनकोउनाहीं २७॥
राम नीतियुतसब रुचिराखी ❀ तिन प्रति मधुर गिरावर भाषी ॥
सहित प्रीतिनृपनीतिरसाला ❀ भयेबिदामुद सकल भुपाला॥२८
प्रभु अनुजनलै संग नरेशा ❀ गये पाय रघुवीर निदेशा ॥
तिनहिं राजधन अर्पण कीना ❀ उचितबहोरि ताहि सो दीना २९
विपुलवस्तु धनराजसमाजा ❀ लाये अनुज निकट रघुराजा ॥
सो लखितुरतराम सब दीने ❀ यथा योगपरितोषित कीने ३०॥
याचक भयेसमस्त अयाची ❀ ऋधिसिधि फिरैं अवधमें नाची ॥
इहिविधि होत अनंदसदाई ❀ रामराज वसुधा सुखछाई॥३१ ॥
प्रतिदिन होमदान सुरपूजा ❀ करि पुनि करैं काज निजदूजा ॥
ऊंच नीच जे गुणिजन आवैं ❀ तिनसबकीअभिलाषपुजावैं ३२॥
देश कोश कृत नैनन देखैं ❀ न्याय माहिं निजपर नहिं लेखैं ॥
पालैं प्रजहि पुत्र सम जानैं ❀ यथायोगसबही सनमानैं ॥३३॥

दोहा-साम दान अरु दंड पुनि, भेद पराक्रम बुद्धि ॥
कृपा रोष वसुगुण उचित, चहिय भूप महँ शुद्धि॥३४॥
ते सब युत रघुवंश मणि, राज करत निरद्वंद्व ॥
सकल चराचर लोक तिहुँ, रहत सदा सानंद ॥ ३५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-कबहुँ अहेर करैं वनजाई ❀ संग सखा सेवक तिहुँ भाई॥
कबहुँ सैन जोरैं इकठाई ❀ निरखैं वीर शस्त्र निपुणाई ॥३६॥
होहिं प्रसन्न देहिं बकशीशा ❀ करैं अनेक जनन जन ईशा ॥
कबहुँसकल गुणि गणन बुलावैं ❀ गुनहिंपरस्पर प्रकट करावैं३७
कबहूँ सब पुरवासिन जोरैं ❀ करिबहु नीति निदेश निहोरैं ॥
कबहुँ सखा सेवकन बुलाई ❀ सिखवहिं रीति प्रीति हुलसाई ३८
कबहुँ प्रात सरयू अस्नाना ❀ करहिं देहिं विप्रन बहु दाना ॥
गृह अनुजनके कबहुँ सिधारैं ❀ कबहुँ सखनके भवन पधारैं३९॥

दोहा-उचित प्रजा सेवक कबहुँ, विनय करैं युत प्रीति ॥
राम जात ताहू सदन, भक्ति वश्य सह रीति ॥ ४० ॥

चौ०-सब मातनके भवन सिधावैं ❀ चहूँ बन्धु समभाव बढावैं॥
जननी सखी जिती बहु वामा ❀ मातसरिससब जानत रामा४१॥
त्यौं सिय सब सासुन सम जानैं ❀ तिहुँ देवरन पुत्र इव मानैं ॥
भगिनी नित्यआय शिर नावैं ❀ जनकसुताबहुप्रीति बढावैं४२॥
तिहूँ बंधु नित सिय पग परसैं ❀ बाल सखाहू चरणन दरसैं ॥
पुरवासिन रनिवास सिधारैं ❀ दान मान सबही सतकारैं॥४३॥
सखा ज्ञाति गृह औसरमाहीं ❀ सासु संग आज्ञा लै जाहीं ॥
पुत्रवधू चहुँ धर्म सयानी ❀ प्रमुदित रहैं निरखि सब रानी४४
तिहुँ भगिनी सियरीति निहारी ❀ करैं उचितकृततिहि अनुसारी॥
सीता सबहि सुनीति सिखावैं ❀ सोलखिसकलसासु हुलसावैं४५

दोहा-पुत्रवधू चहुँ पुत्र चहुँ, परम परस्पर प्रीत ॥
धर्म रीति मर्याद कुल, संयुत सब नृपनीत ॥ ४६ ॥
इहि विधि अति आनन्द युत, रहत सबै नर नारि ॥
धन्य धन्य सुर मुनि सकल, वर्णत अवध निहारि ॥४७॥
प्रजा धर्मरत ज्ञान युत, विरुज सुखी गुणवन्त ॥
संतति संपति सुरुचिमय, आनँद दशहु दिगंत ॥४८॥
जन इच्छित वरसैं जलद, धरणी धान्य अपार ॥
रामराज प्रमुदित सबै, होत सु जै जै कार ॥ ४९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सीतारामहि सुमिरिकै, दृढ विश्वास कराय ॥
रसिकविहारी हीयकी, सब अभिलाष पुजाय ॥ ९० ॥
ब्रह्मादिक सुर वृन्द अरु, नारदादि ऋषिराज ॥
नित प्रति आवत अवधमें, राम दरशके काज ॥ ९१ ॥
इति श्री० रा० र० अ० वि० श्री० रामचंद्र राज्यरीति
वर्णनो नाम तृतीयो विभागः ॥ ३ ॥

दोहा—इहि विधि दशरथ चक्कवै, नृप सुत वर श्रीराम ॥
सार्वभौम दृढ राज्य शुभ, करत धर्म युत काम ॥ १ ॥
मात बंधु सेवक सखा, अपर सकल नर नारि ॥
धन्य राम सब कहतहैं, प्रीति सुनीति निहारि ॥ २ ॥
समै समै प्रति होतहैं, सकल काज सब ठौर ॥
अवध भूप श्रीरामइक, तिहूँलोक शिरमौर ॥ ३ ॥
एक दिवस रघुवंशमणि, विचरत सरयूतीर ॥
संग बंधु सेवक सखा, अपर विविध जन भीर ॥ ४ ॥
लखि सरयूतट रेणुवर, मृदुल विमल रघुराज ॥
राजे ताबिच मुदित महि, संयुत सकल समाज ॥ ५ ॥
ताछिन बहु नर नारि तहँ, ऊंच नीच सब कोय ॥
यथायोग प्रभु दरश लहि, अति आनंदित होय ॥ ६ ॥
विविध प्रजा चहुँ वरण अरु, मुनि तापस वर संत ॥
दरश करत आवत चलत, बैठत जात अनन्त ॥ ७ ॥
यूथ यूथ मिलि विविध जन, इत उत निकट सु दूर ॥
बैठि यथोचित परस्पर, बतरावत सुख पूर ॥ ८ ॥
श्रीरघुचन्द समीप इत, होत परम आनन्द ॥
कहत सुनत वर वैन बहु, प्रमुदित सज्जन वृंद ॥ ९ ॥
सो०—ताछिन प्रभु ढिग आय, रसिकबिहारी दीन इक ॥
पद गहि शीश नवाय, बोलो विकल अधीर अति ॥ १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सवैया कवित्त ।

उत वीत गई लरकाइँ सबै वा अजानतामें कछु जानो नहीं ॥
तिमि जात जवानी कुसंगहिमें छिन एक सुसंग जु आनोनहीं ॥
कर पाय सुधा तजि दीनो मैं हाय हलाहलखाय अघानो नहीं ॥
रशिकेस वृथा यह जन्म भयो सिय रामको नामकमानोनहीं ॥
दोहा–यौं कहि पुनि कर जोरिकै, भाषि विनय युत बैन ॥
अघम उधारन नाम सुनि, हौं आयो तुव ऐन ॥ १२ ॥
सोरठा–तासु विनय सुनि लीन,कछु विहँसे तिहि ओर लखि ॥
पै नाहिं उत्तर दीन, तब बोले पुनि दीन वह ॥ १३ ॥

सवैया कवित्त ।

गीध गयंदगनी गनिका सवरी कपि रीछहि आदि अनेकू ॥
तारे तबै रसिकेस तिनै हितकीन न लीन अलीन विवेकू ॥
पातकीमोहिं महा लखिराम न त्यागो दयालु जु आपनिटेकू॥
पाँवरो बावरो डावरो धावरो रावरो है अवलंब जु एकू ॥१४॥
टेरत दीन ह्वै दीन जबै तबही तिहिकी सुधि लेतहो लाघो ॥
रावरि रीति सदाकी बँधी अब सोमरयादकी लीकन नाघो ॥
पातक पुंज भरो रसिकेस पै धाय परो तुव पाय पै राघो ॥
राखत आये की लाज सबै प्रभु सामुहे जाय तौ खायन बाघो॥
दोहा–यों कहि पुनि बोलो निडर, मोहिं नहीं कछु लाज ॥
कठिन ताहि जाको विरद, होय गरीबनिवाज ॥ १६ ॥

सवैया–कवित्त ।

खैंच कसी है कुकर्मनते कटि शीश अधर्मनको धरो गट्ठा ॥
मोहिं न जानि परै कछु भार करों नितकार यही हिय कट्ठा
योंहीं चहूं बहु डोलतहौं दुहुँ कंध उठायके लोभकेलट्ठा ॥
देखि दशा रसिकेस कियाजग राम जुरावरो होतेहैठट्ठा॥१७॥
दोहा–सुनि रघुवर मुसक्यायकै, पुनि हेरे तिहि ओर ॥
कछू न उत्तर दीन तब, बोले वचन कठोर ॥ १८ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

करम खुटैला वरणाश्रम टुटैला मंजु धरम छुटैला जाति पाँ-
तिते उठैलाहै॥दीनको जुटैलाऔर मलीनकोलुटैलासदाआनवान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कान सान मान ते रुठैला है ॥ मनको मुटैला पातकीनको पुटैला चित्त चाहको चुटैला झूठ यशको झुठैला है ॥ रसिकविहारीतोहिं नीकी भांति जानौंराम द्विजकोकुटैला भीलनीको तूजुठैलाहै १९॥ शबरी अहल्या गणिकादि दुराचारी भारी ऐसी ऐसी घनी अधम कुनारिनको रंगी तू ॥ वायस निषाद गीध राकस अपावन येगज कपि रीछ भूर कूरनको अंगी तू ॥ काम क्रोध लोभ मोह विवश मलीन दीन दुःखित दरिद्री इमिरागिनकोढंगी तू॥रसिकविहारी भली भाँति पहिचानो राम हौंतो तोहिं जानो है सदाते नीच संगी तू ॥ २० ॥

सवैया–कवित्त ।

लूटि लयो तिहुँलोकनमें यशभारी न काम कहूँ कछुकीधो ॥
पाहन भील निशाचर कीश उधारे तिनै रहो काम सुसीधो ॥
दीनदयालु कहाय भले रसिकेस सुगीधेहो तारिकै गीधो ॥
जानि परै तुमैं राम तबै जब मोसम पातकिसे हठि वीधो ॥२१॥

दोहा–सुनि हँसि विकल सु दीन गुणि,कृपा करीरघुवीर ॥
हनुमंतहि आज्ञा दई, तिहि धराय बहु धीर ॥ २२ ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

ये हो अंजनीके पूत देत हौं रजाय यह रसिकविहारीमो अनन्य भक्ति पावही॥काम क्रोध लोभ मोह दुरित दरिद्र दोष कोऊ दुख याके नेक निकट न आवही ॥ नाम रूप लीला धाम बहु गुण ग्राम सत्यसकुल चरित्र मो समस्त दरशावही॥सहित अनंद निरद्वंद यश गावै भूरि फरि ह्वै निशंक मम संनिध रहावही ॥२३॥

दोहा–सुनि प्रभु आयसु पवनसुत, कही धीर दै ताहि ॥
हम तुव रक्षक हैं सदा, दोऊ लोक बनाहि ॥ २४ ॥
सुनि सुदीन कर जोरिकै, भाषी हनुमत पाहिं ॥
मो अवगुणजित देखियो, निज दिशिलखोसदाहिं ॥२५॥

घनाक्षरी कवित्त ।

जो कछु सकल कर्म करिहौं करे मैं करौं तिनकी प्रतीतिहिय रंचहू न धारी है ॥ रसिकविहारी दृढ राखो है विश्वास येहीकेसरी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किशोर मम रक्षक सु भारी है॥ह्वैहै लोक दोऊ सुख संपतिसुयश सदा सुधरै सुधारी सुधरैगी बातसारीहै॥ मेरीप्रभुताईकरौ प्रभुता तिहारी यह जो पैं लघुताई करौ लघुता तिहारीहै॥२६॥ जानत हौं नीकी भांतिमेरे मैं कुकर्मनको याते अकुलात उर आवत न धीरता॥ये हो रामदूत अब ऐसी कृपा कीजे जाते सकल अनंद होय धार चित्त धीरता॥नीके कर्म कीने सब नीकोफल देत सोई कीनी तुम यामें का कहावैं तुव मीरता॥रसिकविहारी कर्मखोटे हू किये पै मोहिनीको फल दीजे तो तिहारी वीर वीरता॥२७॥

दोहा—सुनि हनुमत भाषी तबै, त्याग सकल अब सोक॥
राम कृपा तुव सबहि विधि,शुद्ध भये दुहुँ लोक॥ २८॥
रसिकविहारी दीनतब, कहि जैजै रघुचन्द॥
करन लगो विनती विपुल, पुलकित परमानन्द॥ २९॥
तब रघुवीर कृपालु तेहि, सादर निकट बुलाय॥
अभय कियो कर शीश धर, गयो सुपद शिरनाय॥३०॥
रसिकविहारी दीन द्रुत, तहँ ते मुदित सिधार॥
आय पुकारो पाहि कहि, कनक भवनके द्वार॥ ३१॥
दीन गिरा सुनिकै सिया, भेजी अली उताल॥
सपदि आय बूझो सुतब, बोलो सब निज हाल॥ ३२॥

घनाक्षरी कवित्त।

रहत अनीता रंचनीता ना पुनीता कर्म धर्म ते अतीता ज्ञान गुणत न गीताको॥ जन्म सब वीता विपरीता औकुरीता बीच सहज अभीता हौं सभीता नाहि भीताको॥ काल यौव्यतीत नेक मनको न जीता कबौ कीनी न सुरीता औभरोनाह्वियरीताको॥ वेदनाअधीता पुण्यपूरननकीता मोहि रसिकविहारीहै भरोसो एक सीताको॥३३॥जाकी ओर ताकी नेक नजरकृपाकी कोर ताकी करताकीलिपि दूर कर ताकी है॥अमित गुणकी तौ क्षमाकी यह काकीवाणि कीरति सुधाकी चन्द्रमा की समता की है॥शारदा रमाकी मतिछाकी क्यो समाकीहोय रसिकविहारी हितहेतकिमि थाकी है॥दीन सुखदाकी खल सैन दुखदाकीशुभदृष्टिपुण्यपाकी मिथिलेशकी सुताकी है॥ ३४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा-रसिकविहारी दीन इमि,कही सखीहि निहोरि ॥
हौं आयो स्वामिनि शरण,कहिय वेगि कर जोरि॥३५॥
अली दयालु सुजाय द्रुत, सियहि कहो सब हाल ॥
सुनि शिशु जानिसमीप तिहि, लियोबुलाय उताल ॥३६॥
रसिकविहारी दीन तब, धाय चरण गहि लीन ॥
त्राहि त्राहि कहि जोरिकर,पुनिबहु विनतीकीन ॥३७॥

घनाक्षरा कवित्त।

कुटिल कुपंथी है कुकर्मी औ कुसंगी सदा कुमतिकुतर्की क्रूर कपटी कुकामको॥कायर कलंकी क्रुद्ध कुयशी जुकामी कुत्स कुवसी कठोरऔ कुचालोहौंकुठामको॥दुष्टदुराचारी दीन दुखित दरिद्रीद्रोही दायाहीन दंभी दोषभाजन अदामको॥रसिकविहारी सुखकारी अवलंब मोहिं स्वामिनी तिहारेपदपंकजललामको ३८ कीरति तिहारी तिहुँ लोक उजियारीभारीभाषैंवेदचारी सुखकारी दीन जनकी ॥ हौं तौ दृढ़धारी यही हृदय विचारी निजमन वच कायगति रावरे चरनकी ॥रसिकविहारी ओरहेरौकृपाकोरकारि राखेहीबनैंगीलाजकिंकर करनकी॥काहू की न आश सब जगते निराश भयोमोकों बडी आश सिया स्वामिनीशरनकी ॥३९॥ जाय हौं नऔरढ़िगदीनता सुनाय हौंनध्याय हौं नऔरयश और को न गायहौं॥खायहौं न और को प्रसाद चितलायहौं नचायहौं नऔरशीश और को ननायहौं ॥ रसिकविहारी मैं कहाय सिय रामजूकोभूलिहूकै कबहूँ न औरको कहाय हौं॥गहे द तौ सकल अभीष्ट फल स्वामिनीतिहारे पदपंकज ते पायहौं ॥४० चौ०-दीन वचनसुनि जनकदुलारी ❀ कृपादृष्टि करिताहिनिहारी रसिकविहारी शिरकरधारी ❀ कियो अभैदुहुँलोकमझारी॥४१॥ सखी चारुशीलाहि बुलाई ❀ करगहि सौंपो हिय हुलसाई ॥ शरण लहो मम रसिकविहारी ❀ याहि सदाराखियो सुखारी४२॥ तब सो अति अनंद उमगाई ❀ सविनय स्वामिनि पद शिरनाई॥ कहनलगो दंपतिगुणगाथा ❀ रसिकविहारीअति सुखसाथा४३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–स्वामिनि हियकी लता, इत अलि करैं बखान ॥
उत रघुवर उर सरलता, लखि सबही सुखमान ॥४४॥
रसिकविहारी दीन ह्वै, भाषे वचन कठोर ॥
सो क्षमिकै पुनि अति कृपा, कीनी राजकिशोर ॥ ४५ ॥
क्षमा दया श्रीरामकी, लखि सब करैं बखान ॥
धन्य धन्य रघुवीर सम, स्वामी कोउ न आन ॥ ४६ ॥
ताछिन बोले राम सों, कपिपति दुहुँ कर जोर ॥
सब कहँ आदर देत प्रभु, निरखि चकित चित मोर ॥४७॥
रंच दीन ह्वै आय फिरि, करैं कोटि अपराध ॥
सो क्षमिकै कीजे कृपा, प्रभु हिय दया अगाध ॥४८॥
तब रघुवर हँसिकै कही, सुनौ सखा दृढ़ वैन ॥
बडो कहावो लोकमें, यह साधारण है न ॥ ४९ ॥
धन ते गुन ते रूप ते, कुल ते वयते नाहिं ॥
बडो कहावै जाहि ते, ते लक्षण ये आहिं ॥ ५० ॥
दीननके अवगुण क्षमै, मेटै दुखित कलेस ।
यथायोग सब आदरै, सोई बडो सुदेस ॥ ५१ ॥

सवैया--कवित्त ।

जू कहि बोल यथोचितसों अरु तू कहि बोलै न बोल कड़ो॥
आसन देत विठारत पास औ आवत जात जु होवे खडो ॥
योग जितो जिहि आदर होत तितो तिहि हेत सदा उमड़ो ॥
और की राखै बडाई भली विधि सो जगमें रसिकेसबड़ो ५२
दोहा–पुनि जगमें छोटे बडे, सब प्रकारके लोय ।
पै ऐसे अति स्वल्प हैं, शुद्ध हृदय जिहि होय ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

ढूँढ़े नर नारी बहु बालक जवान बूढ़े रूढ़े और गूढ़े तिनै बुद्धि ते विचारे भाफ ॥ देखे तौ दुरंगी कोउ काहु केन अंगी होत स्वारथके संगी परकाज हेत आवै जाफ ॥ रसिकविहारी यही रीति मैं निहारी चहूँ तब या उचारी बात साँची चूक कीजो माफ ॥ दानी गुनी ज्ञानी मानी जगमें घनेरहि पै होतहै करोरनमें

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोऊ एक जीको साफ ॥९४॥खूबीमें खुवत कोऊ डूबत डिमाक माहि कोऊ गरकाब ह्वै गरूर भूरमें गडै॥कोऊ मतवारो मतवारो वनि बैठत है कोऊ आन आन के कहे आन में अडै ॥ वित्त वसुधा औ वाम हेत तजि हेत सबै जितै अवलोकौ तितै एक एक ते लडै। रसिकविहारी कोउ सज्जन मिलैं है तबै ताको अविलोकि घनो चैन चित्तमें चडै ॥ ९५ ॥

दोहा—तब भाषी कर जोरिकै, भरत सुमति प्रभु पाहिं ॥
काहूको कह दोष सब, माया विवस भुलाहिं ॥९६॥
काम क्रोध मद लोभ अरु, मोह प्रबल ये पांच ॥
इनके होत अधीन तब,सबै सुरासुर नाच ॥९७॥
हैं पांचहुये प्रबल पै, अधिक सबहि ते लोभ ।
दुहूँ लोक नाशक दुखद, करैं सदा मन छोभ ॥९८॥

सवैया कवित्त ।

ज्यों मद मत्त मतंग बली निबली अति होत जुपंक रहैखुभि ॥
ज्यों वर वीर सुधीरहु होय अधीर जबैं दृग तीर अडैंचुभि॥
दारु विधीरसिकेसमलिंद ज्यों होत अधीन सुपंकजमें गुभि ॥
त्यों मतिमंत रु संत गुणी बहु वेवसहोत जु लोभ परै लुभि ९९

दोहा—सो सुनि बोले लषण ते, लो भल काज ॥
विन धनके जगमें कछू, होय नहीं सुख साज ॥६०॥

सवैया कवित्त ।

पैसहिते सुख होय सबै अरु पैसहिते दुख छूटत गाढू ॥
पैसहिते जग काम चलै अरु पैसहिते सतकार हो बाढू ॥
पैसा न हो तब और कहा समबंधिहु होत सुद्वार न ठाढू॥
पैसा रहे रसिकेस जु पास तौं होय घने श्वशुरेअरु साढू६१॥

दोहा—सो सुनि बोले शत्रुहन, सबकी है मर्याद ॥
मर्यादा युत काज भल, त्यागे ताहि विषाद ॥ ६२ ॥

सवैया कवित्त ।

ख्यात चहूँ यह ताहि कहूँ न मिलैं सुख जो मर्याद चलै नघि॥
सूखतहै अति बेगहि सो जल जो सरिता सर सीम बहै नघि॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याते अनन्द चहैरसिकेस तौ लोकदुहूनकीलीक नहीनघि ॥
देखहु कैसोकलेश लहोमिथिलेशसुता धनुरेखकढी नघि६३॥
चौ०—तबहिंविभीषण बात उचारी ❋ जो मम भ्रात सहित सनरनारी
करै सकल मर्याद विहाई ❋ ताहि कहौ का चलै उपाई ॥६४॥
सो०—सुनत वचन श्रीराम, मुसक्याने मुख वसन दै ॥
जाम्बवन्त मतिधाम, तब भाषी लंकेशप्रति ॥ ६५ ॥
कोऊ हो नर नारि, क्रूर कृपण वर धर्मगत ॥
ताको संग न कारि, सबते उत्तम यत्न यह ॥ ६६ ॥
तब बोले रघुचंद, सत्य कही ऋछराजपै ॥
जो मन होय प्रबंद, करै कोउ तिहिको कहा ॥ ६७ ॥
ताछिन पवनकुमार, बिनय करी कर जोरिकै ॥
कहा प्रबल उपचार, जाते मन बंधन रहै ॥ ६८ ॥
सुनि बोले श्रीराम, मन बंधन करिवो कठिन ॥
बहु सुर मुनि मतिधाम, विवसरहैं याते सदा ॥ ६९ ॥
विविध उपाय उदंड, सों मन बन्धन हेत हैं ॥
साँचो सदा अखंड, सबते उत्तम यत्न यह ॥ ७० ॥
मन बंधनके काज, प्रीति करै सज्जन विषे ॥
त्यागि सकल जग काज, तौ पुनि वेवस होय सो ॥७१॥

सवैया कवित्त ।

है मति क्रूर महाबल भूर छुटै तब काहुके हाथ न लागा ॥
ज्ञान विराग जंजीरन ते जकरो तिन तोरि फिरै चहुँ भागा ॥
जो रसिकेस निशंक चहूँ तरु लाज ढहावत है मदपागा ॥
सो मनमत्तमतंग अधीन ह्वै आप वधै हठिप्रेमके धागा॥७२॥
दोहा—यौं कहि बोले फेरि पै, कीजे प्रेम विचारि ॥
हो अनन्द दुहुँ ठौर जिहि, सो लीजे निरधारि॥७३॥

सवैया कवित्त ।

प्रीति निभै न कबौं तिहिसोंजिहिकेहियमां हिम अंतरहायद॥
तासों मिलै न कबौंसुख काहुकोजा मनमेंकट मध्य वसायप॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याहिते नेह करौ उहिसों जिय जाको सदासर और जनायल॥
जो रसिकेसरहौइहिभाँतितौ नन्दकेआदि हमेश मिलायव७४
दोहा--पुनि सो काज न कीजिये, जाते लघुता होय ॥
नीति प्रीति वररीति युत, करै काम भल सोय ॥ ७५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

लौकी बात तासोंकहै जाको जी गँभीर होवै वासों कहिये ना जो कहत फिरै चहूँ ॥ जैये तिहि पास जो गयेको पास राखै मान जौन मानराख तौ न जैये भलो होनहूँ॥रसिकविहारी होय नेहीतो सनेह कीजे नेही जौ नहोतौ त्यागिदीजे भूपहो जहूँ ॥ आनवान मान सानकान निजचाहै तब येही ठान ठानै घर बाहर रहैंकहूँ७६
दोहा--ताछिन बोले लषण पुनि; दुखमें सुधि न रहाय ॥
तब भाषी प्रभु तबहिं दृढ, रहै धीर सो आय ॥ ७७ ॥

सवैया कवित्त ।

ठूठहु नाहिं रहैं तरु कोउ नवै जब लागत है वन ठाढा ॥
वृक्ष जु कोउ जरै उजरै विन शाख सुपत्र रहै तहँ ठाढा ॥
सो फिरि होत हरो रसिकेश सपल्लव फूलै फलै बहु बाढा ॥
त्यौं सुखआनन त्यागै कबौ कहुँकैसहु आय परैदुखडाढा७८
दोहा--कोऊ साँचे जीयते, शुभ प्रणगहै दिढाय ॥
ताहि प्रथम हो दुखहुतो, अन्त सुखहु ध्रुव आय ॥ ७९॥

सवैया कवित्त ।

त्रास कछू नकबौं तिहि को जिहिको जिय रंचहुहोयनकाचू॥
चाहै इकन्तरहै नितही अरु बैठहि चाहै सदा मिलि पांचू ॥
सत्य सुसत्यहिसत्य भलो रसिकेश कहौं ध्रुवरेखहि खांचू ॥
देखोसिया प्रहलाद भिया इमिसाँचहि आवैकबों नहिंआंचू८०
दोहा--राम वचन सुनिकै तबहि, कह सुकंठ कर जोरि ॥
नाथ सिया प्रहलाद सम, ह्वैहै दृढ़ता थोरि ॥ ८१ ॥
सुनि रघुवर भाषी सखा, लोक अमित नरनारि ॥
गुण अवगुण मिश्रित सकल, हेरो बुद्धि विचारि ॥ ८२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पैहो दुर्गुण गुण कहूँ, गुण कहुँ दुर्गुण होय ॥
प्रकृति समे अरु विवश वश,गुण अवगुण दुहुँ जोय॥८३॥
याते जे बुधिंमत ते, करत समस्त विचार ॥
सत्य शुभाशुभ शुद्धता, सब विधि लेत निहार ॥८४॥
केते अंतर शुभ सकल, ऊपर लगत कुभेष ॥
केते अंतर अशुभ पै, प्रगट परै शुभ देख ॥ ८५ ॥
सोअंतरगति लषणकी,बुद्धि सहज नहिं होय ॥
करै घनो सतसंग सो, ज्ञान चहै जो कोय ॥ ८६ ॥
विना ज्ञान गति अंतरी, नहीं परै पहिचान ॥
बिन पहिचाने शुभ अशुभ, कर्म किये बहु हान ॥८७॥
याते मो मत है यही, भाषों सहित उमंग ॥
सकल कुसंगहि त्यागिकै, सदा करै सतसंग ॥ ८८ ॥
सुनि रघुवरके बैनवर, मुदित भये सब कोय ॥
दृढ़ धारी सतसंगते, दुहूँ लोक सुख होय ॥ ८९ ॥
इहि विधि वाक्य विलास बहु, होत अनेक प्रकार ॥
कहत सुनत सब जन उचित,सह चहुँ राजकुमार ॥ ९० ॥
अपर अनेक विनोद वर, नृत्य गान रस रंग ॥
हास विलास सुहोत बहु, सब उर भरी उमंग ॥ ९१ ॥

ति श्री० रा० र० अ० वि० बाक्य विलास
वणनो नाम चतुर्थो विभागः ॥ ४ ॥

दोहा–श्रीकौशलपति निकट उत, होत अपार अनन्द ॥
इत जहँ तहँ बैठे विविध,कहत सुनत जन वृंद ॥ १ ॥
संत विप्र मुनिमंडली, जुरी होत सतसंग ॥
वर्णत सुमुख मुनीशबहु, प्रभु यश सहित उमंग ॥ २ ॥
ताछिन सुमुख मुनीशते,बोले हरषि सुयज्ञ ॥
कहिय उपासक रीतिवर, मुनिवर वर सर्वज्ञ ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-सुनिमुनिसुमुखपरमसुखमाना ❀ तिनसराहिबोलेमतिमाना
हो वसिष्ठसुत परम प्रवीना ❀ तुमहिविदितसबहमलखिलीना४॥
पै कछुनिजमतिकेअनुसारा ❀ कहिहौं यदपि सुभेद अपारा ॥
है परन्तु यह गुप्त बखाना ❀ याते बरणौं सभा प्रमाना॥ ५ ॥
पुनि कबहूं येकांत मझारा ❀ कहि हैं हम समेत विस्तारा ॥
यह उपासना रीति अनूपा ❀ जानिलहैजन शुद्ध स्वरूपा ॥६॥
यों कहि पुनि बोलेमुनिनाथा ❀ सुनियसुयज्ञाविशदवर गाथा ॥
परम गुप्त सो गुप्तहि राषौं ❀ है प्रसिद्ध योगै सो भाषौं ॥७॥

दो-सुर नर सब रघुचन्दको, ध्यावैं मन वच कर्म ॥
करैं अनन्य उपासना, लहैं शुद्ध पद पर्म ॥८॥
सो उपासना पंचविधि, मुख्य प्रथम शृंगार ॥
सख्य दास्य वात्सल्य पुनि, है ऐश्वर्य विचार ॥ ९॥
जो अपने हित सत्य यह,राखे सदा विचार ॥
हम दंपति की हैं सखी , सो जानौ शृंगार ॥ १० ॥
याही अंतर दासिका, आदिक भाव अनेक ॥
मिथिला अवध प्रसंग युत, जानौ सहित विवेक ॥ ११ ॥
जो दृढ जानै हीय दृढ, अपने हेत सदाय ॥
राजकुँवरके हम सखा, सोई सख्य कहाय ॥ १२ ॥
सुहृद नर्म सचिवादि बहु,भेद सकल इहिमाहिं ॥
जाति विजाति कुटुंब कुल,रीति घनी दरशाहिं ॥ १३ ॥
जो ध्रुव दशरथनंदको, सेवहि स्वामी जानि ॥
सत्य दास होआपतिहि, दास्य उपासन मानि ॥१४॥
मात पिता गुणि आप कहँ,जो दृढ प्रीति कराय ॥
बाल लख दशरथसुतहि, सो वात्सल्य कहाय॥ १५ ॥
जो श्रीराजकिशोरको, परब्रह्म दृढ मानि ॥
ध्यावैं सबचर अचरमें,सो ऐश्वर्यबखानि ॥ १६ ॥
ये वर पंच उपासना, तिनके निज निज ठाम ॥
सकल उपासक जनलहै, जहां मोद विश्राम ॥ १७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०–जिते उपासक हैं शृंगारी ❀ तिहूँ लोक कोऊ नर नारी ॥
तिनको पूजनीय है जानौ ❀ कनकभवन वर मुख्य बखानौ १८
सख्य उपासक हेत प्रमाना ❀ रंगभवन है पूज्य प्रधाना ॥
दास्यजननलग रतनसिंहासन ❀ जोवरराज्यतिलकको आसन १९
बातसल्य जन हित सो ठामा ❀ जन्मसदन जहँ प्रगटे रामा ॥
थल ऐश्वर्यिनको वह आई ❀ बैठि जाहिं जहँ ध्यान लगाई २०

दोहा–पंच उपासकहेत ये, मुख्य पंच अस्थान ॥
अपर सबहि सब पूज्य है, सरयू अवध प्रधान ॥ २१ ॥
याही विधि सिय रामको, ध्यावत हैं, सब कोय ॥
भक्ति मुक्ति वर भक्ति रुचि, होय सुपूरित होय ॥ २२॥
जे प्रवीन ते भूलिहू, भक्ति मुक्ति नहिं चाय ॥
निज सुभक्ति सिय रामकी, चाहत कृपा सदाय ॥२३॥
अति उदार मृदु चित्त पुनि, समरथ सीताराम ॥
रसिकबिहारी हीयके, पूजैं सबही काम ॥ २४ ॥
अतिसमर्थ सिय राम सों, होहि भक्ति आधीन ॥
भक्ति नाम आधीन है, नाम सुगुरु आधीन ॥ २५ ॥
गुरु सतसंग अधीन है, संग सुभाग्य अधीन ॥
भाग्यहीन बहु जन्मके, ले पति कर्म मलीन ॥ २६ ॥
सो कुभाग्यको जो चहै, हो सुभाग्य सुखधाम ॥
तौ अनन्य दृढ नेम ते, सुमिरै सीताराम ॥ २७ ॥
सुनि सुयज्ञ आनंद ह्वै, कही सहित सनमान ॥
धन्य धन्य ऋषिराज वर, बहु गुणज्ञान निधान ॥ २८ ॥
ताछिन अपर सुभक्त वर, बोले शीश नवाय ॥
मुनिवर पुनि उपदेश कछु, कीजै कृपा दिढाय ॥ २९ ॥
जाते दोऊ लोकको, होय शुद्ध निरवाह ॥
सोई शिख शुभ दीजिये, दाया युत मुनिनाह ॥ ३० ॥
तब मुनि बोले प्रेम युत, प्रश्न करौ तुम जोय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुहूँ लोक अनुकूल हम, उत्तर देवैं सोय ॥ ३१ ॥
सुनि प्रमुदित ह्वै सुमति जन, ह्वै इक मुख सब कोय ॥
करत प्रश्न मुनि तासुको, उत्तर वर्णत जोय ॥ ३२ ॥

प्रश्न ॥ करै क्या ? ।

उत्तर–सिया राम भजिये सदा, करै दान सनमान ॥
सतसंगति दाया क्षमा, येही बात प्रधान ॥ ३३ ॥

प्रश्न ॥ संग किसका करै ? ।

उत्तर–संत सुजन पंडित चतुर, इनको कीजे संग ॥
कै अपने दृढ़ मीतको, जानो वैन अभंग ॥ ३४ ॥

प्रश्न ॥ सज्जन कौन है ? ।

उत्तर–दयावंत दानी गुनी, रामभक्त रतधर्म ॥
अविरोधी सज्जन भले, शुभ संतत सत कर्म ॥३५॥

प्रश्न ॥ दुर्जन कौन है ? ।

उत्तर–धर्म विरोधक पापरत, कपटी लोभी जान ॥
रामविमुख दुर्जन लखौं, वचन सबै दृढ़मान ॥३६॥

प्रश्न ॥ सुख काहेमें ह ? ।

उत्तर–राम भजन दानादि बहु, सुख है प्रीय मिलाप ॥
येकाकी सुनिरास पुनि, जानौ सज्जन आप ॥३७॥

प्रश्न ॥ दुख काहेमें है ? ।

उत्तर–राम विमुख दाया रहित, दुखहै प्रीय विछोह ॥
परबश निर्धन निर्गुणी, वचन सबै जन जोह ॥ ३८ ॥

प्रश्न ॥ मित्र कोहै ? ।

उत्तर–विद्यामित्र बखानिये, पुनि चित भावैं सोय ॥
तन मन धनते जो चहै, लखौ सुजन सब कोय ॥३९॥

प्रश्न ॥ पढ़ै क्या ? ।

उत्तर–सधै लोक परलोक दुहुं, बढ़ै हिये आनंद ॥
सोई पढ़िबो चाहिये, होवे बुद्धि अमंद ॥ ४० ॥

प्रश्न ॥ सुनिये क्या? ।

उत्तर–राम कथा सुनिये सदा, चतुराईकी बात ॥
विविध प्रसंग सुग्रंथके, लखौ सुजन अवदात ॥ ४१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रश्न ॥ रहिये किस रीति? ।

उत्तर—सबसों नमि रहिये घने, मनमें दीन सदाय ॥
लोक वेद दोऊ लिये, समुझौ सुजन दिढाय ॥४२॥

प्रश्न ॥ जाना किस जगे? ।

उत्तर—जैयेकैती रथनकै, राम कथा जहँ होय ॥
कै दुहुं लोक बनै तहाँ, यह समुझौ सब कोय ॥४३॥

प्रश्न ॥ कमाव क्या ? ।

उत्तर—नाम कमावै रामको, क यश लोक मझार ॥
कै सुख दोऊ ठौरको, लीज वचन विचार ॥४४॥

प्रश्न ॥ विचारै क्या ? ।

उत्तर—लोक और परलोकको, कीजे सदा विचार ॥
आपरूप पररूपको, वचन सुनौ यह सार ॥ ४५ ॥

प्रश्न ॥ त्यागिये क्या ? ।

उत्तर—कामादिक चारहु तजो, पुनि जो सियवर हीन ॥
अरु कुसंग अभिमानको, जानौ वचन प्रवीन ॥ ४६ ॥

प्रश्न ॥ गहिये क्या ? ।

उत्तर—गहिये सकल सुधर्म निज, गुणधीरज मन नैन ॥
नेह नेम अरु शत्रुकों, ये जानौ दृढ़ बैन ॥ ४७ ॥

प्रश्न ॥ शत्रु को है ? ।

उत्तर—तन धन हित घातक रिपू, अरु कामादिक जान ॥
कुसमय सम शालक सदा, वचन लेहु दृढमान ॥४८॥

प्रश्न ॥ विश्वास किसका करै ? ।

उत्तर—श्रीसीता अरु रामको, चहिये दृढ विश्वास ॥
कै पुनि साँचे मित्रको, मानौ वचन सुपास ॥४९॥

प्रश्न ॥ गुरु को है? ।

उत्तर—भव बन्धन छोरै सबै, ताको गुरू बखान ॥
रक्षक अरु शिक्षक लखौ, हेरो हरषि सुजान ॥ ५० ॥

प्रश्न ॥ मोक्ष कैसे होवेहै ? ।

उत्तर—राम भक्ति हिंसा रहित, जानौ मोक्ष प्रमान ॥
बचै सुपर संतापसे, गहियो वचन प्रधान ॥५१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रश्न ॥ नरक काहेसे होवैहै? ।

उत्तर–पर पीडित निंदा निरत, हिंसक राम विरोध ॥
गुरु द्विज शाप सुमित्रकी, नरक होय जिय शोध ॥ ५२ ॥

प्रश्न ॥ अमर कौन है? ।

उत्तर–सुकृती सुयशी रामरत, योगी योग प्रवीन ॥
सदा अमर सो जानिये, वेद वचन रसलीन ॥५३॥

प्रश्न ॥ मृतक कौन है? ।

उत्तर–राम विमुख अयशी सदा, मृतक समान सुजान ॥
नीच देव सेवक सबै, देखौं वचन प्रमान ॥ ५४ ॥

प्रश्न ॥ सार क्या है? ।

उत्तर–प्रीति राम द्विज संतमें, दया अधिक जिय माहि ॥
ज्यों चाहै त्योंही रहै, सार गहै शुभ ताहि ॥५५॥
इहि विधि प्रश्न अनेकके, मुनिवर उत्तर दीन ॥
पुनि सबही दिशि हेरिकै, बोले वचन प्रवीन ॥ ५६ ॥
लोक और परलोकमें, सुखद सत्य शुभसार ॥
राम नाम सांचो सदा, अपर असत्य असार ॥५७॥
यातें कैसहु कीजिये, भजन बनै जिमि जोय ॥
भाव कुभाव सुविधि अविधि, राम जपे सुख होय॥५८॥
सियारामकी भक्ति दृढ, सियाराम गुणग्राम ॥
सियारामकी ध्यान नित, सियारामको नाम ॥५९॥
नाम प्रभाव अपार है, विधि हरि हरहु न जान ॥
मवरणौं किहि भाँतिते, अति मतिमंद अजान ॥६०॥

घनाक्षरा कवित्त ।

ताप दूर करबेको सीतकर सोहैसीत तमके नशायवेकोभानुकी समान है ॥ बुद्धिके बढायवेको शारदासे बुद्धिवंत वित्तपूरिवेको जो कुबेर सो महान है ॥ पालिवेकोविष्णुउपजैवेको विरंचिऐसो खलके संहार हेत शंभुसो प्रधान है ॥ अभिमत देनवारो रामनाम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कामतरुरसिकविहारीभला रामनामगानहै॥६१॥कामक्रोध लोभ मोहमारवेकोमारन हैविधि हरि हर आदि मोहिबेकोयंत्रहै॥ महा दुखदारिद्र त्रितापकोउचाटनहै आकरषवेकोसुखसंपतिकोतंत्रहै॥ कठिन कुचालरत इन्द्रिनके हेत असतंभन प्रबलभूरि परमसुतंत्र है॥रसिकविहारी रामनाममें प्रयोग षट रामवश्यकरवेकोवसीकर मंत्रहै ॥६२॥ जगत अथाह सिंधु भरोहै कुमति नीरपावतनथाह कोऊ सुर मुनि राज हैं ॥ कामक्रोध लोभ मोह भँवरगँभीरपरैतामें जलजंतुभूरवासनादराज हैं॥कोऊ बहैं बूडे कोऊ बूडबचडूबपुनि कोऊहैंविकल चढेज्ञानकी जहाजहैं॥तेईह्वै निशंक भयेरसिकविहारी पार रामनामसेतुपैचले जेतजिकाज हैं ॥६३॥ नामकभरोसे सब भाँतितेनिशंकरहैं लोकपरलोकको उपाय नाकरतहैं ॥ नामके भरोसेउपजावैंविधिपालैंहरिहरहूसंहारेनामओटैलै तरतहैं॥ नामके भरोसे भील सबरी सुगीध कीश भयेबडभारी राम जाकोसुमिरत हैं॥रसिकविहारी रामनाम अवलंब बडोजाते दिन रैनियमराजहू डरत हैं ॥ ६४ ॥

दोहा--ऐसो नाम अनूप जो, नहिं सुमिरै मन लाय ॥
कोऊ कैसहु होय तिहि, जन्म अकारथ जाय ॥ ६५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

योग जप साधैकोटि देव अवराधैकरै संयम समाधैनिरूपाधै हो न पावैना॥ज्ञान अरु ध्यानमान पूजा असनान दान निगम पुरानके बखान सुख आवैना ॥ तीरथ घनेरे नेम यज्ञ बहुतेरे प्रेम रसिकबिहारी रूप फेरते सुहावैना ॥येते हैं निकामकोऊ कामकेन काम कछु ह्वै हैं नाहिं काम जौलों राम नाम ध्यावैना ॥ ६६ ॥ पढो चारौ वेद औ अठारह पुराण षट् शास्त्र यंत्र मंत्र तंत्र आदिक प्रवीनता ॥गान तान अदिक अनेक विद्यामें प्रधान बहु गुनज्ञान धन माननमें पीनता॥रूपमंतनीके मतिमंत औ कहावे संत फिरेसे दिगंतनमेंजैहैना अधीनता॥रसिकविहारी सब भाँति भलोचाहौ तोपै जपौ राम नाम जाते मिटत मलीनता ॥ ६७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सवैया कवित्त ।

सी कहते सब सिद्धि मिलै अरु ता कहते तन आनँद आवै॥
रा कहते रस होत महा कहतेही मकार महत्व बढ़ावै ॥
जो रसिकेस प्रतीति समेत सुवर्ण भले ये चहूँ चित लावै ॥
होय उजागरलोक तिहूँ बिचताहिहिये सियराम लगावै॥६८॥

दोहा—कहत राम सीता मिलत, सीता कहतहि राम ॥
रीति अनोखी देखिये, सुमिरत सीता राम ॥ ६९ ॥
राम विना सीताभजै, सीता विन जो राम ॥
होय ताहि फल है सकल, पूरो पुजैन काम ॥ ७० ॥
जे जन प्रीति प्रतीति युत, सुमिरें सीता राम ॥
सुख पावैं दुहुँ लोकते, लहैं सदा विश्राम ॥ ७१ ॥

प्र० ॥ गुणावलीग्रंथ ॥ श्लोक ।

सीतया सहितं रामं सीतां रामेण संयुताम् ॥
न स्मरेत्स फलं पूर्णं लभते न कदाचन ॥ १ ॥

धनाक्षरी कवित्त ।

प्रीति राम नाम सों प्रतीतिराम नाम सों सुरीति रामनामसों सबहि भाँति भांतिये ॥ आशराम नामसों विलास राम नाम सों सुपास राम नाम सों अनेक विधि जानिये ॥ लोक राम नाम परलोक राम नाम सों हे रसिकविहारी सो विचार चितठानिये॥ राम नामको विहाय पावै जो पियूष सोहै हलाहल की समान तामैं धूर सानिये॥ ७२ ॥

दोहा—करे लोकपरलोकके, साधन वृथा निकाम ॥
भये सकल निष्फल जु पै, भजे न सीता राम ॥ ७३ ॥

सवैया कवित्त ।

मूड़ मुडाय कहाय कै साधु लगाई विभूति कहा तो भयो ॥
जग लोग रिझाय घने रसिकेश रचोहन धाम कहा तो भयो॥
नख केश बढाय बिछाय कैचाम धरो बक ध्यान कहातो भयो ॥
दृढनेहन लायोसियावरसोंनरजन्म लियेहीकहातोभयो ॥७४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी कवित्त ।

रूप गुण धनमें जु शंका अति होत आय त्याग औ विरागमें अनेक विघ्न लेखिये ॥ रसिकबिहारी यज्ञ योगमें उपाधि भारी देहमें मरन नेहमें बिछोह पेखिये ॥ भूत प्रेत पूजे गति अंतकी नशात सबै जगमें वृथाही पचि दुःख अवरेखिये ॥ जामें अवलोकौ एक एक है कलंक तामें सीताराम नामैं निकलंक सदा देखिये ॥ ७५ ॥

दोहा—सीता राम सुनाम यह, सकल सिद्धिको मूल ॥
ताहि त्यागि साधत अपर, साधन मति भ्रम भूल॥७६॥
सो यह भ्रम सतसंग बिन, कबौं न होवै दूर ॥
याते तजै कुसंग सब, जो चाहै सुख पूर ॥ ७७ ॥

सवैया कवित्त ।

ग्राम नशै धन धाम नशै सुत वाम नशै सब काम कुढंगू ॥
राज नशै सुख साज नशै जग लाज नशै औ नशै वर अंगू ॥
मान नशै तन प्राण नशै गुण ज्ञान नशै दुख होय अभंगू ॥
याते सुदूर रहौ रसिकेश जु भूलि कबोंकरियोन कुसंगू॥७८॥

दोहा—पै कहुँ कहुँ संसारमें, धूतहु धरत सुभेष ॥
याते बुद्धि विचार युत, संग कीजिये देख ॥ ७९ ॥

सवैया कवित्त ।

डिंभ दिखावतलो गनको अति झूठे सुनावत ज्ञानकेगाथे॥
औरनको उपदेशैं विराग सु आप घने जगजालमें गाथे ॥
बैलसे डोलत हैं नित गैल करैं बहु फैलहु लोभसे नाथे ॥
ऐसन ते रसिकेसबचै हठि सोई नशै जो लगै इन साथे८०
औरहि काह सुझावहि ते सुजनै अपनेहीं न औगुण सूझे॥
औरहि काह बुझावहिं ते नर आपुहिंजे सब भाँति अबूझे।
औरहिते सुरझावहिका अति आपुहि जे जगजाल अरूझे॥
भाषतहैं रसिकेश सुनौ लखि भेष पता वनहीं विनबूझे॥८१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्षौर करावतहैं शिखते नखलों कहुँ केशको लेश नराखत॥
भेस बनाय सुदेस सुदेस फिरैं सब वेस छऊ रस चाखत ॥
ठानै प्रपंच क्षमा नहिं रंचहु तोष न नेकमें रोषके माखत॥
पूछत हैं रसिकेस कोऊ तब फूलिहिये हम साधुहैं भाषत८२

दोहा—बहु नख जटा बढायके, माला तिलक सुधार ॥
प्रगट भले जिनके हिये, लोभ कपट आगार ॥ ८३ ॥
कष्ट सहैं तन मन मलिन, योगी सिद्ध लखाय ॥
काम क्रोध मद लोभमें, पागे रहैं सदाय ॥ ८४ ॥
ज्ञान ध्यान पूजन पठन, त्याग योग जप दान ॥
जगत रिझावनको करैं, भरे लोभ अभिमान ॥ ८५ ॥
ऐसे जन कोऊ अजहुँ, कहूँ कहूँ दरशाहिं ॥
गृही विरक्त अनेक इमि, कलियुग चहुँ प्रगटाहिं ॥ ८६ ॥
पुनि मतवादी होत बहु, तिनहुं संग सुख नाहिं ॥
जिनके वचननको सुनत, भ्रम बाढै मन माहिं ॥ ८७ ॥

सवैया कवित्त ।

एकहि मंडित एकहि खंडित कीनो जु पंडित ह्वै यह सूझो ॥
है रसिकेस कहा इमिमें दिनरैन वृथा मत वादमें झूझो ॥
ताहि कहा नर जानि सकै विधि जाहि विचारत होत अबूझो॥
नेति कहै जिहिभेदहि वेद जु वेदहुते अतिभेद है गूझो॥८८॥
द्रोही महा मतिमंद ते मूढ भये जु हरी हरके मत खंडू ॥
लोक नशै परलोक नशै तिनको सबही विधि होत कुभंडू ॥
है उनकी वर विद्या वृथा कछु ज्ञान न आयो रही मतिचंडू ॥
न्हायो मतंग ज्यौं आपनेही कर लै अपनेशिर डारतपंडू ८९॥
भये मतवारे भये मतवारे करैं मत वाद करै मतवादी ॥
हरी हरहैं न हरी हरहैं न हरीहर हैं यौं ठनै बकवादी ॥
लखैं न गुणैं न लखैं नगुणैंजिहिअंतन आदिन अंत न आदी॥
कहै रसिकेस कहैरसिकेससुदोऊ अनादि हैं दोऊअनादी९०॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—इहि विधि सुमुख मुनीश वर, करत हुते उपदेश ॥
ताछिन इक तापस जटिल, आयो तहाँ कुभेष ॥ ९१ ॥
इक कौपीन कमंडलू, धूर भरे सब अंग ॥
कर लीने कंथा मलिन, ठाढो आय कुढंग ॥ ९२॥
ताहि निरखि अज्ञान जन, हँसे परस्पर हेरि ॥
सोलखि तापस क्रोध भरि, बोले तिन प्रति टेरि ॥९३॥

सवैया कवित्त।

सूखेचनाहि चबात कबौं रहै भूखें कबौं कबौं खात है खाझा ॥
कोउके द्वार कबौं नहिं याचत चित्त रहे खुसहाल मे वाझा ॥
होत वही रसिकेस सदा करतार लिखो जु ललाट के माझा ॥
कैसहु हैं हम नीके बुरे पै कहो कछु याहुमें काहुको साझा॥९४॥
घी अरु खांड मिलै तो खुशी औखुशी हैमिलै जुपैरूखियेंभाजी
सूखियै रोटीको टूक मिले खुशीहैखुशी जो मिले थारिहिसाजी॥
कंथा मिलै तो खुशीखुशीशालपै प्यादेखुशीऔखुशीचढेवाजी॥
राजी रहैंरसिकेश घने नित हैं हम रामकी राजीमें राजी ॥९५॥

दोहा—यौं कहि बोलो जटिल पुनि,करिय नहीं अभिमान॥
गति अलक्ष है रामकी, कोऊ कछू न जान ॥ ९६ ॥
बने बिनाशत छिनकमें, विनशे बनत उताल॥
भूलिहु कै हँसिये न लखि, काहू बिगरे हाल ॥ ९७ ॥
सो सुनिकै इक विप्रवर, बोलो गनक सहेत ॥
जैसे जाके ग्रह परत, तिहि तैसो फल देत ॥ ९८ ॥
ताहि निदरि तापस बहुरि, कहे कुपति ह्वै वैन ॥
केवल परधन हरन बुधि, और ज्ञान कछु है न ॥ ९९ ॥

सवैया कवित्त।

दो छिनहू न भरोस तिहीतनुको बहु वर्षकी आयु कहेशठु ॥
बापुरो तूवह जानै कहापढ़िज्योतिष ज्ञानविहीन रहो लठु ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंकन भागे गुणै उनपै उन अंकन भागै गुणेन करे हठु ॥
जोगति गूढ विचारोचहै रसिकेश तौरामकोनामभलेपठु १००
दोहा–ग्रहसांचे फल सत्य पै, राम नामको इष्ट ॥
जाहि न सो जाने कहा, निजपर इष्ट अनिष्ट ॥ १०१ ॥
सो सुनिकै इक मंत्रविद, विप्र कही हुलसाय ॥
नाम मुख्य पै औरहू, मंत्रादिक सु उपाय ॥ १०२ ॥
ग्रन्थन माहिं अनेक हैं, देव सिद्ध समुदाय ॥
जाते कारज सिद्धि सब, गति त्रिकाल दरशाय ॥१०३॥
तब तापस तिहि प्रति कही,कही सत्य तुम जोय ॥
जाने नाम प्रभावतिहि, और न भावे कोय ॥ १०४॥

सवैया कवित्त ।

टूटत है जग मोह जबै तब छूटत है सब दुःख विषादू ॥
होत विराग विशेश हिये कछु फेरि न भावत वाद विवादू ॥
रामके नामहिमें दृढ़ प्रीति प्रतीति रहे रसिकेस अनादू ॥
नाम बिहायकै और सुहाय न मंत्र नयंत्र न तंत्र न जादू१०५
दोहा–यों कहि भाषी जटिल पुनि,सबहि सुनाय पुकार॥
राम नाम बिन और जो, जपै तासु मुख छार॥ १०६॥
तापस परम प्रवीन लखि, सुमुख सुयज्ञ तुरंत ॥
सादर कर गहिकै निकट, बैठारो गुणि संत ॥ १०७॥
ताछिन एक सुभक्त वर, कह सुयज्ञ प्रति दीन ॥
काह करौं जिहि नाशहीं, मोकृत कर्म मलीन ॥ १०८॥
सुनि सुयज्ञ बोले मधुर, हरि गुरु कृपा विहाय ॥
कोटि जतन कोऊ करै, तऊ न दुरित नशाय ॥ १०९॥
जो कोऊ गुरु विमुख हो,अथवा गुरू न कीन ॥
कृपा आश प्रभुकी धरै, सोई है मतिहीन ॥ ११०॥

सवैया कवित्त ।

ढेर सुमेर सो कंचन दान करैं नित जायके क्षेत्र कुरू ॥
धेनु अलंकृत कोटिन देतन अक्षत नीरते रीते चुरू ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मान प्रमान यही रसिकेश चहूँ युग भाषत धर्म धुरू ॥
कैसहु राम न रीझत काहु पै तो लग जौलों द्रवै न गुरू ११११॥
दोहा–गुरुद्वारा प्रभु शरण ह्वै, सदा जपे शुभ नाम ॥
तो दुहुँ लोक अनंद हो, कृपा करैं सियराम॥११२॥
राम नाम सुमिरै सदा, करै शक्तिसम दान ॥
तो नित सुख संपति बढै, होय नहीं कछु हान ॥११३॥
सुन सुभक्त सविनै कही, कहिय भजो नित सोय ॥
तब द्विज दै नामावली, कह याते भल होय ॥ ११४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सीतानाथ१ सीतावर२सीताकंत३ सीतापति४सुंदर५सुजान६ सुखमानिधान ७ शोभासिंधु ८ ॥ रसिकविहारी ९ हृषिकेश १० रघुचंद ११ राम १२ बुद्धिवर १३ दाता १४ वेद ज्ञाता १५ बीर १६ विद्यासिंधु १७ ॥ धाता १८ दीनत्राता १९ दुष्टघाता २० दुःखहाता२१ दोषदारिद्रनिपाता २२ देव २३ पाता२४दाता२५ दयासिंधु २६ ॥ अवधभुवाल २७ भक्तपाल २८ रघुलाल २९ प्रात लेवे तीस नाम ये सप्रेम द्रवैं–दीनबन्धु ३० ॥ ११५ ॥
दोहा–पुनि सुयज्ञ भाषी तबै, सबही प्रति दृढ़ बात ॥
याते सबही नारि नर, हो भुव मंडल ख्यात ॥११६॥

घनाक्षरी–कवित्त।

झंडा औ निसान के निसान ते न जाने कोऊ जानै है नकोऊ द्वार दुंदुभी बजायेते॥ऊंचे महिलानके उठानते न जानै कोऊ जाने है न कोऊ मत्तगजके बंधानते॥सानते न जाने औ गुमानते नजाने धन धाम ते न जाने कोऊ कोटिहू विधानते॥रसिकविहारी चार बातते जहान जाने विद्या हरी ध्यानते कृपानते सुदानते॥११७॥
दोहा–सुनि सुभक्त आनंद ह्वै, हृदै धरै दृढ़ वैन ॥
अपर विविध जन मुदित भे, जे बुधि विद्या ऐन॥११८॥
इहि विधि सरयूतीर मधि, वाक्य विलास उमंग ॥
राज समाज समेत बहु, भयो विशद सत्संग ॥ ११९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संध्या वंदन करि मुदित, सकल समाज समेत ॥
द्वै घटिका बीती निशा, गवने राम निकेत ॥ १२० ॥
यौंही नित प्रति होत है, अवध परम आनन्द ॥
कहैं नारि नर वृंद सब, जै जै जै रघुचन्द ॥ १२१ ॥
इति श्री रा० र० अ० वि० सत्संगवर्णनो नाम पंचमो विभागः ॥ ५ ॥

दोहा—इमि नित सुखमधि बीति गो, मास अधिक इक वर्ष॥
नृपति सुकंठादिक तिहूँ, दल युत रहैं सहर्ष॥ १ ॥
कोश ऋच्छ निश्चर सकल, पल मद मधु पकवान ॥
अशन पान प्रमुदित करैं, सहित प्रीत सनमान ॥ २ ॥

प्र० वा० ॥ उ० कां० ॥ स० ३९ ॥ श्लोक ॥

ते पिबंति सुगंधीनि मधूनि मधुपिंगलाः॥मांसानि च सुमिष्टानि मूलानि च फलानि च ॥१॥ एवं तेषां निवसतां मासःसाग्रो ययौ तदा॥मुहूर्तमिव ते सर्वे रामभक्त्या च मेनिरे ॥ २ ॥ रामोपि रेमे तैः सार्धं वानरैः कामरूपिभिः ॥ राक्षसैश्च महावीर्यैर्ऋक्षैश्चैव महाबलैः ॥ ३ ॥ इत्यादि ॥

दोहा ऋच्छ कीशतिय भूरि तिन, नित रनिवास मझार ॥
सादर बहु नूतन विविध, होत सकल सतकार ॥ ३ ॥

दोवई छन्द ।

लंकनाथ हरिपाल ऋच्छपति सदल सकुल यह चावैं ॥
इतहि रहिय नित कबहुँ नाथ अब हमैं न गेह पठावैं ॥
तिनको परमनेहु रघुवरमैं राम प्रेम तिन माहीं ॥
दोऊ हिये परस्पर चाहैं कोउ न छिन बिलगाहीं ॥४॥
तब रघुवीर ज्ञाननिधि हियमें दृढ विचार ठहरायो ॥
राज साज धन धाम कुटुम इन मो हित सकल भुलायो ॥
पै अब निज निज गेह सिधारैं लखैं काज जन जाई ॥
इमि गुणि सभा मध्य प्रभु बैठे लीजे सबहि बुलाई ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धर्म नीति वरज्ञान कथा कहि सबहि सुधीर धराई ॥
पुनि बोले तुम सकल हमारे हिय बिच वसो सदाई ॥
सखा सुकंठ प्राण ते प्यारे तुमते उऋण सु नाहीं ॥
तिमि लंकेश ऋच्छपति मेरे भरत लषण सम आहीं ॥ ६ ॥
हनूमान अंगद नीलादिक सकल प्राण सम प्यारे ॥
मो जियहोत यही काहूको छिन भरि करों न न्यारे ॥
पै नृप धर्म प्रजापालनको सो नआप विन होवै ॥
याते जाहु सदल तिहुँ भूपति सकल सुजन सुख जोवै ॥ ७ ॥
सुनि सब विनय करी बहु प्रभु सों भरे नैन बिच नीरा ॥
पुनि वर नीति प्रीति मृदु कहिके दई राम तिन धीरा ॥
यों कहि निकट बुलाय सुकंठहि दीन सु अंग प्रसादा ॥
निजकर सखहि विभूषितकीने भरे हृदय अहलादा ॥ ८ ॥
ऋच्छपाल लंकेशहि रघुवर सादर निज कर दीने ॥
भरत वेगि उठिकै दुहुँ भूपन प्रमुदित भूषित कीने ॥
अपर यथोचित गज साज बहु सादर दिये कृपाला ॥
सनमाने सब भाँति नेह युत राम तिहूँ भूपाला ॥ ९ ॥
अंगद नील नलादि मुख्य तिन लछमन अरु रिपुशाला ॥
हित करि यथायोग पहिराये शिख नख साज विशाला ॥
बहुरि विभूषन वसन अनूपम रघुवर भूर मँगाये ॥
कीश भालु निश्चरन यथोचित सन्मुख सबहि दिवाये ॥ १० ॥
ताछिन हनूमान उठि वेगे रामचरण धरि माथा ॥
पुलकित गात दीन ह्वै विनती करी जोरि युगहाथा ॥
मो अभिलाष नाथ यह तव पद सेवौं निकट सदाई ॥
जबलग प्रभु चरित्र महि तबलग श्रवण करौं हुलसाई ॥ ११ ॥
लखि हनुमंत प्रीति रघुनन्दन उठि गहि अंक लगायो ।
एवमस्तु कहि विशद हार निज लै प्रमुदित पहिरायो ॥
पुनि अंगदहि गोद लै सुत सम कियो प्यार बहु रामा ॥
तासु भार सुग्रीवहि दीनो भाषि बैन सुख धामा ॥ १२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उत तारा अरु रुमा आदि पुनि ऋच्छतिया जे रूरी ।।
सादर सबहि अमोल साज वर दये सुरानिन भूरी ॥
कौशल्यादि सियादि प्रीति युत अपर सखी पुरनारी ॥
सह सनमान उचित मिलि भेंटी भरे सकल दृग वारी ॥१३॥
इहि विधि इत रघुवीर निकट अरु उत रनिवास मझारा ।।
अतुल साज धन धाम ग्राम दै भयो अमित सतकारा ।।
ताछिन पुष्पकयान राम ढिग विचरत नभ मग आयो ॥
समै प्रमाण तासु आगमलखि प्रभु उर आनँद छायो ॥ १४॥
तब रघुवीर मुदित उठि तिहुँ नृप सादर अंक लगाये ।।
अपर यथोचित कीश भालु मिलि पुष्पक मधि बैठाये ॥
त्यौं कपि ऋच्छ तीय गण पद नमि भई अरूढ विमाना ॥
यौं सब सबहि उचित मिलि गमने हृदय प्रेम उमगाना ॥१५॥
निज निज धाम सबहि पहुँचाई पुष्पक बहुरि सिधारी ।।
राम धनद पद वंदि व्योम चहुँ विचरत इच्छाचारी ।।
हनूमान आनंद सहित नित रघुवर निकट रहाहीं ॥
राम चरित्र सनेम प्रेम युत सुनत अंग पुलकाहीं ॥ १६ ॥
तारा रुमा सहित उत हरिपति प्रमुदित कैर विहारा ।।
दये ग्राम धन बहु कपि ऋच्छन ते सब सुखी अपारा ।।
निज तिय अरु मन्दोदरि युत त्यौं लंकनाथ विलसावैं ॥
चहूँ मुख्य निश्चर समस्त पुनि परमानन्द रहावैं ॥ १७ ॥
पुनि लंकेश विभीषण प्रमुदित निज लघु सुतहि बुलाई ॥
मत्तगयंद नाम तिहि सादर दीनी हुलासिरजाई ।।
जाहु पुत्र मम दिशि ते प्रभुकी सेवा करौ सदाई ।।
पितु आज्ञा सुनिअति अनन्दसों साजि चले शिरनाई॥१८॥
आये बेगि राम ढिग प्रमुदित शीश नाय कर जोरे ॥
कही विनय युत पूर्व जन्म कृत सुकृत उदैभे मोरे ॥
सादर तिहि बैठारि निकट प्रभु सुत सम प्यार बढाई ॥
बूझि कुशल पुनि आज्ञा दीनी इतही रहौ सदाई ।। १९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौं कहि भूषण वसन अनूपम अपर यथोचित साजा ॥
मत्तगयंदहि अरु हनुमंतहि दियो सभा रघुराजा ॥
किय लंकेशसुतहि निजपुरको रक्षक अधिप महाना ॥
गढ़पति पवनपुत्रको थापो सबही मध्य प्रधाना ॥ २० ॥
पुनि बहु सखा सुसेवक पुरजन परिजन अपर अपारा ॥
यथायोग बहु राज काज तिन सौंपे सहित विचारा ॥
इहि विधि कौशलपाल कृपानिधि धर्म नीतिमय राजा ॥
करहिं निदेश न्याय पालन वर संयुत सकल समाजा ॥२१॥

इति श्री रा० र० वि० अ० सुग्रीवादि गमनवर्णनो
नाम षष्ठो विभागः ॥ ६ ॥

सो०—श्रीदशरथ सुत राम, करत राज मर्याद युत ॥
सबहींके मन काम, यथायोग पूजैं सदा ॥ १ ॥
सिंह पौरि कछु बार, बैठत हैं रघुराय नित ॥
करैं विनय सब झार, तहँ निबंध नहिं काहुको ॥२॥

दोहा—सभामध्य राजैं तबै, छिनहीं छिन सुधिलेत ॥
विनय कार कोऊ विमुख, जाय न आय निकेत ॥ ३ ॥
एक दिवस इक श्वान तहँ, आय पुकारो द्वार ॥
सुनतहि राम कृपालु तिहि, लिय बुलाय दरबार ॥४॥
बूझी तिहि कह विनय तुव, तब सो शीश नवाय ॥
कही नाथ हौं पंथ बिच, बैठो सहज सुभाय ॥ ५ ॥
अमुक ठाम वासी जु द्विज, मोको विन अपराध ॥
कियो प्रहार सुन्याय मम, कीजे बुद्धि अगाध ॥ ६ ॥
सुनि रघुवर तिहि विप्रको, वेगै सभा बुलाय ॥
बूझी श्वान प्रहारको, हेत कहो सतभाय ॥ ७ ॥
तब द्विज बोलो श्वान यह, बैठो पंथमझार ॥
भयो शंक वश अतिहि मैं, याको रूप निहार ॥ ८ ॥
दूरहिते बहु वार हौं, कही दूर हो दूर ॥
रहो तहाँइ:श्वान यह, दुरो नहीं मदपूर ॥ ९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुतौ क्षुधित मैं तासमै, आयो क्रोध अपार ॥
तबहि भजायो याहि मैं, करके दंड प्रहार ॥ १० ॥
हनो जु इहि अपराध विन, मोतें भो अपराध ॥
क्षमादंड जो उचित सो, कीजे नीति अगाध ॥ ११ ॥
सो सुनि प्रभु बूझी द्विजन, उचित दंड इहि काह ॥
विप्र अवध्य अदंड सब, कह पुनि रुचि नरनाह ॥१२॥
ताछिन बोलो श्वान पुनि, न्याय करिय प्रभु जोय ॥
तौ जो कछु हौं भाषहूँ, याहि दण्ड सो होय ॥ १३ ॥
सुनि तिहि बूझी राम तब, कह कूकुर शिरनाय ॥
चित्रकूट ढिग शिव सदन, ग्राम कलिंजरमाय ॥ १४ ॥
कीजे तहँको अधिप इहि, सुनि रघुवीर तुरंत ॥
किय अभिषेक चढाय गज, भेजो थापि महंत ॥ १५ ॥
राज साज गज वाजि जन, पाय मुदित भो विप्र ॥
राम रजायसुते तहाँ, गयो अधिपह्वै क्षिप्र ॥ १६ ॥
निरखि श्वान रुचि चकित सब, तब बूझी तिहि राम ॥
कही दिवायो दंड यह, भाष प्रगट मनकाम ॥ १७ ॥
कही श्वान तब सुनिये प्रभु, हौंहूं अधिप सुआउ ॥
तिही पापते योनि यह, पाई चहूँ भ्रमाउ ॥ १८ ॥
शिव निर्मायल वस्तुको, ग्रहण करत जो कोय ॥
प्रगट पुराणनमें सकल, ताको पाप जु होय ॥ १९ ॥
कहुँ पुनि मुखिया आपही, भषै सुवस्तु अकेल ॥
संनिध जनहिं न देय सो, परै नरक महँ पेल ॥ २० ॥
सो द्विज तहँको अधिपह्व, करिहै यह पाप ॥
मोसन ह्वै है श्वान ध्रुव सदा सहै संताप ॥ २१ ॥
यौं कहि श्वान नवाय शिर, गयो तासु गति सोच ॥
कहत सबै पर भागको, खैवो है अति पोच ॥ २२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि पुरजन यह न्याय गति, कहत मुदित वरबैन ॥
धर्म नीति ज्ञाता नृपति, और राम सम है न ॥२३॥

चौ०—यौंहीं सब चर अचर सुखारी ❀ रामराज नहिं कोउ दुखारी॥
दान मान अरु न्याय विचारा ❀ होय नीत संयुग कृत सारा२४॥
एक दिवस कौशलपति रामा ❀ सहित समाज सकल मतिधामा
सभा सदन मधि आय विराजे ❀ निजनिजकाजसाजसबसाजे२५
ताछिन द्वै पक्षी तहँ आये ❀ भूरि परस्पर वाद बढाये ॥
इक उलूक इक गृद्ध कराला ❀ झगरत दुहूँ सकोप विहाला२६
आय प्रभुहि दुहुँ शीश नवायो ❀ निरखि राम तिन विस्मयछायो॥
अतिहि उताल प्रथम ह्वै दीना ❀ अस्तुति कीनी गिद्ध प्रवीना२७
पुनि बोलो प्रभु मोर अगारा ❀ यह उलूक लेवैं वरियारा ॥
याको न्याय नाथ ध्रुव कीजे ❀ सत्य विचारि रजायसु दीजे२८॥
सुनि तिहि वचन उलूकहि रामा ❀ बूझी भाष कौनको धामा ॥
दुहूँ बखान सुनैं हम जबहीं ❀ न्याय विचार करैं पुनि तबहीं२९
सुनि उलूक बोलो हे नाथा ❀ दिवा अंध मुहि जानि अनाथा ॥
सदन मोर यह गीध सु लव ❀ वृथा सकुल मोको दुख देवै३०॥
सुनि दुहुँ वचन गुणी महिपाला ❀ जानो परै गीध वाचाला ॥
प्रथमहि अस्तुति मधुर बखानी ❀ कही बहोरि विवाद कहानी३१॥

दोहा—धूत होत ते काज निज, साधत चित्त लुभाय ॥
छल बल गुण धन दीनता, मन वच कर्म दिखाय ॥३२॥
यौं गुनि पुनि दुहुँ ते कही, भाषौ सत्य प्रमाण ॥
है वह केते वर्षको, निर्मित तव अस्थान ॥ ३३ ॥

चौ०—सुनि उताल पुनि गिद्ध बखानी ❀ जबते भूमि सृष्टिउपजानी
तबहीं ते वह आलय मेरो ❀ इमि प्राचीन करिय निरवेरो ३४ ॥
सुनि उलूक सत वचन सुनायो ❀ प्रभु जबते वह तरु प्रगटायो ॥
तब ते तिहि ऊपर मम धामा ❀ गुणि कीजिये न्याय श्रीरामा३५

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि रघुवीर सुहीय बिंचारा ❀ जब ते प्रगट भयो संसारा ॥
तबको द्रुम अबलग किमि रहई ❀ मिथ्या बात गीध यह कहई३६
याते गृह उलूकको आही ❀ यौं गुणि राम दिवायो ताही॥
गीध हाि गमनो सकुचाई ❀ भो उलूक मुद आलय पाई ॥३७॥
शीशनाय द्विज गयो सुधामा ❀ इमि वर न्याय करत श्रीरामा ॥
सकल चराचर परम सुखारी ❀ धर्मराज चहुँ आनँदकारी॥३८॥

इति श्री० रा० र० वि० अ० न्याय वर्णनोनाम सप्तमो विभागः॥ ७॥

पद्धरी छंद।

इक समय राम प्रमुदित विराज। शोभित समस्त सज्जन समाज ॥
ताछिन सुमंत तहँ वेगि आय।किय विनय जोरि कर शीश नाय १॥
भार्गव मुनीशच्यवनादिनाथ। आये समस्त सुनि विशद गाथ ॥
सुनतहि बुलाय लीने सुधाम। सत्कार उचित सब कीन राम॥२॥
जल सर्व तीर्थ लायें मुनीश। फल फूल दीन प्रभु लीन शीश ॥
बहु कुशल परस्पर बूझि दोउ।बैठे प्रसन्न मन सबहि कोउ॥३॥
तब कही राम कहहै रजाय।दीजे सु लेहु निज शिर चढाय ॥
सुनि सुनि समस्त बोले उताल। रघुलाल धन्य जन भक्तपाल॥४॥
दीनो उतार प्रभु भूमिभार। अब एक दुष्ट मधुपुर मझार ॥
मुनि जनन देत सो दुख अपार। द्रुति चहिय नाथ ताको सँहार॥५॥

सो०—है लवणासुरनाम,चंड शूलधारी सबल ॥
ताहि बधे विनराम,अजहु चराचर दुखित बहु ॥ ६ ॥
शूल रहैं करमध्य,जबलों मधु सुत लवणके ॥
तब लों निडर अवध्य,है इमि वर हरदत्त तिहि ॥ ७ ॥
गज मृग बाघ अपार,अपर जीव मानुष विपुल ॥
नित सो करत अहार,याते होत विनाश चहु ॥ ८ ॥

पद्धरी छंद।

सुनि तबहि कीन रघुवर विचार।कोकरहि जाय तिहि को संहार॥
तासमय शत्रुहन जोरि हाथ। भाषी रजा मुहिं होय नाथ ॥ ९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रभु भरत लषण बहु कीन काम। होंरहों आजलग अवध धाम॥
सेवा सु एक यह मैं कराउँ। वध हेत तासु अब द्रुतहि जाउँ॥१०
सुनि बन्धु वैन आनंद समेत। दीनी रजाय तिहि वधन हेत॥
चतुरंग सैन कीनी जु संग। प्रिय वीर धीर बर युद्ध ढंग॥११॥
पुनि दीन बाण इक प्रबल चंड। कह होय याहिते शूलखंड॥
इमिभाषि सोधिदिनसाजिसाज।किय विदाबन्धुकोअवधराज१२

दोहा—चलत कही प्रभु बन्धुसे, जिते सु सेवक संग।
सादर सबको राखियो, सब विधि सुखी सुढंग॥१३॥
धन गुन बल तिय बंधु हित, तिमि न देय आराम॥
प्रीतिपाल सेवक सुजिमि, सदा करै रुचि काम॥१४॥

पद्धरी छंद।

सुनि भ्रात सीख बर गुणदमान। मिलिशीशनाय कीनो पयान॥
मुनि वाल्मीकिते भेंटि वीर। मधुपुरहि गये सह सुभट भीर॥१५
सो लवण:सदाही प्रातकाल। चहुँ जाय गहत बहु जीव घाल॥
त्यौं नित समान लै शूल आन। उठिकै प्रभात कीनो पयान॥१६
इत वीर शत्रुहन समय पाय। औचकहि आय मधुपुर तराय॥
धनुबाण साजिकै नगर द्वार। ठाढ़े सचेत चहुँ दिशिनिहार॥१७॥
दिनयुगल याम भो तब सुरारि।आयो अपार मृत जीव धारि॥
लखि राजसुतहि सो क्रोध लाय। बूझी मनुष्य तू कौन आय१८
तब रामबन्धु निज नामठाम। भाषो निशंक कुलग्राम धाम॥
सुनि लवणरोष करिकै उताल। बोलो प्रचारि वाणी कराल१९
तुव भ्रात रावणहि कीन घात। हौ सुनि तबही ते जरत गात॥
तिहिबन्धु आज मोनिकट आय।अबफेरिनाहिंगृहजियतजाय२०
टुक धीर धार हे नृपति बाल। हौं गेहजाय आऊँ उताल॥
वर चंड शूल लाऊं तुरंत॥ तब लखहुँ फेरि तुव बलअनंत॥२१

दोहा—सुनि भाषी रिपुदमन तब,अरे असुर मतिमंद॥
अब गृह जैवो सहज नहिं, परो वीरके फन्द॥ २२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्ववश पायकै शत्रुको, जो नहिं साधत काज ॥
दुख पावै पछताय सो, पुनि हो अधिक अकाज ॥२३॥
याते खल याही समै, यमपुर पठऊं तोहि ॥
शूल आश तजि अंगबल, जो दरशाव सु मोहि ॥ २४ ॥

पद्धरी छंद :

शत्रुघ्न बैन सुनिकै सुरारि । घालो विशाल इक द्रुम उखारि ॥
तिहि राम बंधु बहु शर प्रहारि। करिखंड खंडदियभूमिडारि२५
तरु घात देखि निष्फल सुभूरि।पुनि किय प्रहार सो वृक्ष पूरि॥
ते सकल शत्रुहन कीन छिन्न।बहुबाण मारि तन तासु भिन्न२६॥
तब लवण कोपि गहि विटपचंड । घालो भ्रमायबल करि उदंड ॥
सो लगो आयततकाल भाल। महिगिरेशत्रुसूदन विहाल ॥२७॥
जानी सुरारि मो मृतक बीर । याते निसंक ह्वै धार धीर ॥
गवनो न धाम लायो न शूल। तिनभषणहेतु धायो सुभूल॥२८॥
तत्क्षण सचेत ह्वै शत्रुशाल ।उठि गहो द्वार अतिही उताल ॥
साजो सुबाण जोराम दीन।तिहि समय त्रसित भे लोकतीन २९
सो चंडबाण तिहि उर मझार ।किय शत्रुशाल क्रोधितप्रहार ॥
भ्रमि गिरो लवण भूमधि तुरंत । ह्वै हृदय चूर भो प्राण अंत॥३०॥
तेहि निधन देखि सुर भे निहाल । स्व कियो जैति जै शत्रुशाल॥
वरषे प्रसून दुंदुभी बजाय ।तिहुँलोक रहो आनंद छाय ॥३१॥
तिहि मारि शत्रुहन सहसमाज ।मधुपुरी मध्य कीनो सु राज ॥
तहँ रहे वर्ष द्वादश प्रमाण । बहु प्रजापाल परबंध ठान ॥ ३२ ॥
बहु सैन सचिव सेवक प्रवीन। तहँ राखि आप पुनि गमन कीन॥
आये उताल श्रीरामपास । कीनो प्रणाम संयुत हुलास ॥ ३३ ॥
उठि राम बंधु लिय अंक लाय। सब मिलेउचित आनंद अघाय॥
रघुवीर अनुजको बहु सराह । वर मान दीन कीनो उछाह॥३४॥
इमि सप्त दिवस तिन भवन राखि।दीनी रजाय बहु नीतिभाखि
प्रभु कहीं जाहु मधुपुर उताल ।विन भूपआनकोप्रजहिपाल३५॥
सुनि प्रभु रजाय रिपुदमन वीर । कछु ह्वै उदास पुनिधारि धीर॥
सजि साज ईशआयसु प्रमाण। नमि कीनबेगि मधुपुरपयान३६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तहँ जाय सबहि आनंद दीन। रिपुदमन राजधानी सु कीन ॥
मधुपुर निवास कर सह समाज।तियसचिव सखा सेवक विराज ३७
लखि समय कबहुसोअवधआय।रहिकछूदिवसपुनितितहिजाय॥
इहि भाँति शहञ्जन युत समाज!सानंद करत मधुपुर सराज ३८॥
इत भरत लषण युत रामचंद । कर अवध राज अतिही अनंद॥
निज समै समै सब होत काज। बहु दान मान नृपनीति भ्राज॥३९॥

इति श्रीरामरसायन वि० अ० लवणासुरवधवर्णनो
नम अष्टमो विभागः ॥ ८ ॥

सो०—एक समै रघुवीर, सभामध्य शोभित सदन ॥
ताछिन निपट अधीर, वृद्धविप्र आयो रुदत ॥ १ ॥
तासु पुत्र वर एक,योवन वय ज्ञानी गुणी ॥
संयुत परम विवेक,सो सुठि बालक मृतक भो ॥ २ ॥
मात पिता मृत बाल,लाये भूपति द्वार प ॥
रोवत विकल बिहाल,कहि नृपके पातक मरो ॥ ३ ॥
भूपति करै अनीति,होय दुखी तिहि फल प्रजा ॥
प्रजा करै अनरीति, नृपति पाप सो लागही ॥ ४ ॥
यों कहि द्विज सो बाल,राज द्वार धरि दीन हठि ॥
प्रभु ढिग आय उताल,भाखी हत्या लेहु मम ॥ ५ ॥
कै नृप कै ते लोग,राज काज अधिकार जिन ॥
कारज करै अयोग,प्रजा दुखी हो पाप तिहि ॥ ६ ॥
सो तव पाप कदंब,जाते मम बालक मरो ॥
हौं इत सहित कुटुंब, प्राण देहुँ गो राज प ॥ ७ ॥
सुनि विप्रहि कर जोर,समुझायो बहु राम मृदु ॥
कही मोर जो खोर,होय सकल निर्णय अबहि ॥ ८ ॥

चौ०—यों कहि करुणाकर अकुलाये ❀ मंत्री द्विज गुरु बेगिबुलाये॥
नारदहू विचरत तहँ आये ❀ सादर सबहि राम बैठाये ॥ ९ ॥
बूझी राम द्विजन कर जोरी ❀ कहिये कह अनीति है मोरी ॥
तब त्रिकाल दरशी वर ज्ञाता ❀ नारद मुनि बोले बचरुयाता १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनहु राम सतयुगके माहीं ❀ सदा तपस्या विप्र कराहीं ॥
तब काहू नहिं होय कलेसा ❀ रहैं न रंचहु पातक लेसा॥११॥
त्रेता मध्य करै तप क्षत्री ❀ तब इक पदधर पाप धरत्री ॥
पुनि द्वापर तप वैश्य दिढ़ावै ❀ महि पातक द्वै चरण जमावै १२॥
कलिमें नीच शूद्रगण आदी ❀ करैं तपस्या मूढ़ विवादी ॥
तृतिय चतुर्थ चरण तब पापा ❀ धरत भूमि बाढ़ै तिहुँ तापा १३॥
जब कलि करै शूद्र तप भूरी ❀ रहै पाप तब चहुँ पद पूरी ॥
अल्प मृत्यु दारिद्र दुख नाना ❀ तिहि फलते सब लहत निदाना १४

दोहा–सिद्ध साधुको भेष बहु, लेत नीच जन नष्ट ॥
निजते उच्च तिनैं सुते, करत विविध विधि भ्रष्ट ॥ १५ ॥
वेद पुराण प्रमाण जो, सो नहिं करैं प्रमाण ॥
नूतनगाथा जोरकै, ठानैं महत बखान ॥ १६ ॥

सवैया कवित्त ।

ज्ञान अखंड पखंड कथैंरसिकेश भरो उर लोभ अगाधू ॥
जोरत दाम सँवारत धाम भये ममतामदमें अति आनू ॥
धूत महा अवधूत बने बहु देतहैं पूतन धैं जगनाधू ॥
कर्म कुकर्म करैं कपटी जन ते कलिकाल कहावत साधू ॥१७॥

दोहा–हो विरक्त अथवा गृही, चहिये विप्रकुल जन्य ॥
तप महत्व पद उचिततिहि, अनुचित करै जु अन्य ॥१८॥
बिन द्विज कुल जे सुर सदन, पूजन पाक कराय ॥
करता कारयिता दुहुँ, ते ध्रुव नरकहि जायँ ॥१९॥
विना विप्र तिहुँ वरण जे, कोऊ गृही विरक्त ॥
देत मंत्र गुरु शिष्यते, दुहूँ नरक अनुरक्त ॥ २० ॥
द्विज कुल विन जे सत कथा, कहि सुनाय विधि युक्त ॥
सो वक्ता श्रोता दुहुँ, हों न नर्कसे मुक्त ॥ २१ ॥
ऐसे पातक भूरिते, होत सदा कलि माहिं ॥
जातें जग नरनारि सब, संतत दुखी रहांहि ॥२२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताही पातकते नृपति, होवै धन सुत हीन ॥
पुनि रुजपीड़ित रहत हैं, प्रजा नशैं सुख छीन ॥ २३ ॥
महा पाप यह जानिये, शूद्र बनै जो सिद्ध ॥
यह प्रबंध भूपहि उचित, होय न कर्म निषिद्ध ॥ २४ ॥
सो जु शूद्र तप पाप है, द्वापर कलिहू घोर ॥
त्रेताहीमें होय तौ, पातकको कह छोर ॥ २५ ॥
प्रजा जासु अवनीशके, संतत पाप कराय ॥
राज्य नाश हो ताहि ते, पुनि नृप नरकहि जाय ॥ २६॥
कृषी जनित धन धान्य अरु, पाप पुण्य ये चार ॥
षष्टम भाग प्रजानते, लहै भूप अधिकार ॥ २७ ॥
याते भूपहि उचित है, प्रजा करै जो पाप ॥
ताहि निवारै जतनते, तौन होय संताप ॥ २८ ॥
आप प्रजा सेवक सहित, रहै सधर्म नरेश ॥
तौ काहू कबहूँ कछू, होय नरंच कलेश ॥ २९ ॥

प्रमाण ॥ वाल्मीकीये ॥ उत्तरकांडे । सर्ग ७३॥ श्लोक ॥

रामस्यदुष्कृतंकर्म महदस्ति न संशयः ॥ यथा हि विषयस्थानां बालानां मृत्युरागतः ॥१॥ रामद्वारे मरिष्यामि पत्न्या सार्धमनाथवत् ॥ ब्रह्महत्यां ततोरामसमुपेत्यसुखी भव॥२॥राजदोषैर्विपद्यंते प्रजा ह्यविधिपालिताः॥असद्वृत्ते हि नृपतावकालेम्रियतेजनः३ यद्वा पुरेष्वयुक्तानि जना जनपदेषु च ॥ कुर्वते नच रक्षास्ति तदां कालकृतं भयम् ॥ ४ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ स० ७४ ॥ श्लोक ॥

श्रुत्वा कर्तव्यतां राजन्कुरुष्व रघुनंदन ॥ पुरा कृतयुगे राजन्ब्राह्मणा वै तपस्विनः॥५॥ अब्राह्मणस्तदा राजन्न तपस्वी कथंचन ॥ तस्मिन्युगे प्रज्वलिते ब्रह्मभूते त्वनावृते ॥ ६ ॥अमृत्यवस्तदा सर्वे यज्ञिरे दीर्घदर्शिनः॥ ततस्त्रेतायुगं नाम मानवानां वपुष्मताम्॥७॥ क्षत्रिया यत्र जायंते पूर्वेण तपसान्विताः ॥ वीर्येण तपसा चैव तेऽधिकाः पूर्वजन्मनि॥८॥तस्मिन्युगेप्रज्वलिते धर्मभूतेह्यनावृते॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अधर्मः पादमेकं तु पातयत्पृथिवीतले॥९॥ ततः पादमधर्मस्य द्वितीयमवतारयत्॥ततो द्वापरसंख्या सा युगस्य समजायत ॥१०॥ अस्मिन्द्वापरसंख्यानेतपो वैश्यान्समाविशत् ॥ त्रिभ्यो युगेभ्यो त्रीन्वर्णान् क्रमाद्वै तप आविशत्॥११॥त्रिभ्यो युगेभ्यो त्रीन्वर्णान्धर्मश्च परिनिष्ठितः॥न शूद्रो लभते धर्मं युगतस्तु नरर्षभ॥१२॥ हीनवर्णो नृपश्रेष्ठ तप्यते सुमहत्तपः॥ भविष्यच्छूद्रयोन्यांहितपश्चर्या कलौ युगे ॥१३॥ अधर्मः परमो राजन्द्वापरे शूद्रजन्मनः ॥ स वै विषयपर्यंते तव राजन्महातपाः॥१४॥अद्य तप्यति दुर्बुद्धिस्तेन बालवधोह्ययम्॥योऽद्यधर्ममकार्यं वा विषयेपार्थिवस्यतु१५ करोति चाश्रीमूलं तत्पुरे वा दुर्मतिर्नरः॥क्षिप्रं च नरकं याति स'च राजा न संशयः ॥१६॥ अधीतस्य च तप्तस्य कर्मणः सुकृतस्य च ॥ षष्ठं भजति भागं तु प्रजा धर्मेण पालयन् ॥१७॥षड्भागस्य च भोक्तासौ रक्षते न प्रजाः कथम्॥सत्वं पुरुषशार्दूल मार्गस्व विषयं स्वकम्॥१८॥ दुष्कृतंयत्र पश्येथास्तत्र यत्नं समाचर॥एवं चेद्धर्मवृद्धिश्चनृणांचायुर्विवर्धनम्॥ भविष्यति नरश्रेष्ठ बालस्यास्य च जीवितम् ॥ १९ ॥

पुनः ॥ अन्यत्रापि ॥ ब्राह्मे ॥

ये च भागवताः शुद्धास्ते नूनं मम मूर्तयः॥तान्विप्रान्ये नमस्यंति ते मामेव नमंति वै ॥ २० ॥ शुद्धा भागवताः पूज्या द्रष्टव्याःसर्वदा नृभिः॥विशेषेण कलौब्रह्मन्द्विजरूपोह्यवस्थितः२१

विष्णुपुराणे ।

वर्णाश्रमाचारवता पुरुषेण परः पुमान् ॥
विष्णुराराध्यते पंथा नान्यत्तत्तोषकारकम् ॥२२॥

वसिष्ठसंहितायाम् ।

ज्ञानिनोऽज्ञानिनो वापि यावद्देहस्य धारणम् ॥
तावद्वर्णाश्रमप्रोक्तं कर्तव्यं कम मुक्तये ॥ २३ ॥

मनुस्मृतौ ।

न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यस्तु पश्चिमाम् ॥
स शूद्रवद्बहिःकार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणः ॥ २४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लक्ष्मीतंत्रे ।

सर्वलक्षणसंयुक्तो ब्राह्मणो वेदपारगः ॥ षट्कर्मनिरतःशांतःपंच-कालरतःशुचिः ॥ २५ ॥ न स्थूलो न कृशो ह्रस्वो न काणो नैव रोगवान्॥ नांधो न बधिरो मूढ़ो न खल्वाटो न पंगुकः ॥२६॥न हीनांगोतिरिक्तांगो न श्वित्री न चदांभिकः ॥ क्रोधनो नैव दुष्कर्मा लोभोपंहतचेतनः॥२७॥ अकुलीनं दुराचारं शठं जिह्मं च वर्ज-येत्॥दयादमशमोपेतं दृढ़भक्ति क्रियापरम् ॥ २८ ॥ कुर्याल्लक्षण-सम्पन्नमाचार्यं चारुहासिनम्॥एवं गुणगणाकीर्णं गुरुं विद्यात्तुवैष्णवम्॥२९॥ उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्विजः॥सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते ॥ ३० ॥ पाराशरस्मृतौ ॥ दुःशी-लोपि द्विजः पूज्यो नतु शूद्रो जितेंद्रियः॥कः परित्यज्य गांदुष्टां दुहेच्छीलवतीं खरीम्॥३१॥महाभारते॥ श्वचर्मणि यथा क्षीरमपेयं ब्राह्मणादिभिः॥तद्वच्छूद्रमुखाद्वाक्यं न श्रोतव्यं कथंचन ॥ ३२॥ पंडितस्यापि शूद्रस्य शास्त्रज्ञानरतस्य च ॥ वचनं तस्य न श्राव्यं शुनोच्छिष्टं हविर्यथा ॥३३॥ कर्मसिंधौ ॥ भविष्यंति नरा मूढाः कलौ धर्मच्युतास्तथा॥ अमर्यादां करिष्यंति प्रमादाद्विष्णुमंदिरे ॥३४॥ अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा अमर्यादां करोति यः ॥ इह लोके भवेद्भ्रष्टः परलोके विनश्यति॥३५॥विष्णुस्थानेषु कुर्वंति अमर्या-दां च ये नराः॥ नो बुधाः न च धार्मिष्ठाः न भक्ता न च वैष्णवाः॥ ॥३६॥आचारहीना ये कार्या भवंति विष्णुमंदिरे॥ तस्यापराधा-ब्रश्यन्तिधर्माःस्थानाधिकारिणः॥३७॥तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सर्वा-चारसमन्विताः॥सर्वे कार्याणिकुर्वंति साचारैर्विष्णुमंदिरे॥३८॥ पूर्वाचार्यकृतांशुद्धां मर्यादां योसमाचरेत् ॥तस्य सर्वसुखं भूया-त्सदा विष्णुः प्रसीदति ॥३९॥ विष्णुस्थाननिर्णयः॥ स्वयंव्यक्ति स्तु या मूर्तिर्वेदमंत्रात्प्रतिष्ठता॥भवेद्यत्र हितत्स्थानं विष्णुस्थानं निगद्यते॥४०॥विष्णुस्थाने योग्यायोग्यनिर्णयः॥पाकपाकाधि-काराय पूजनाय महत्पदे॥विष्णुस्थानेषुतिष्ठेयुर्वैष्णवा द्विजजातयः ॥ ४१ ॥ द्विजवैष्णवनिर्णयः॥पंच द्राविडगौडाश्च ब्राह्मणा दश

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज्ञातयः॥तेषां मध्येपि भूयासुर्वैष्णवा द्विजवैष्णवाः॥४२॥ वैष्ण-
वपरत्वे कार्यनिर्णयः॥अन्ये तुवैष्णवाःसर्वे सर्वकार्याधिकारिणः॥
चत्वारिनहिकार्याणियोग्यानिविष्णुमंदिरे॥४३॥विष्णुस्थाना-
तिरिक्ता हिवैष्णवाः सर्वज्ञातयः॥सर्वेष्वप्युचितंपाकंपूजनंविष्णु-
हेतवे॥४४॥ पंचसंस्कारसंयुक्ता वैष्णवाः सर्वज्ञातयः ॥ पूजनी-
याश्च ते सर्वे स्थानमर्यादसंयुताः॥४५॥ स्पर्शनिर्णयः॥ स्पर्शा-
स्पर्शं न चिंतेयुर्बिष्ण्वर्चायां हि ये नराः॥ते च्युताः सर्वधर्मेभ्यो
नरके यांतिरौरवे ॥४६॥ वेदसंस्कारसंयुक्ताविष्णुमूर्तिःप्रतिष्ठता॥
नैवान्यस्पर्शनीया सा विनापि द्विजवैष्णवम् ॥ ४७ ॥ ह्युत्तरे
ताम्रपर्ण्याश्च पुरुषोत्तमपुरीष्वपि॥स्पर्शनेपि च पाकार्चेस्पर्शदोषो
न विद्यते ॥४८॥ पाकनिर्णयः ॥ विष्णुस्थानेषु यो मूढो विनापि
द्विजवैष्णवम्॥कुर्यात्पाकार्चनं विष्णुर्नो गृह्णाति कदाचन॥४९॥
स्वयं व्यक्तां तथा मूर्तिं वेदसंस्कारसंयुताम् ॥नार्पयेदन्यकृत्पाकं
विनापिद्विजवैष्णवम् ॥५०॥ द्विजवैष्णवकृत्पाकमर्पितं हिहरेस्स-
दा॥ पाकार्चा तत्कृता नूनं विष्णुस्थाने सदोचिता ॥ ५१ ॥

विष्णुपुराणे ।

सर्वेब्रह्मवदिष्यंतिसंप्राप्ते तुकलौयुगे॥ नावतिष्ठंतिमैत्रेयशिश्नो-
दरपरायणाः॥५२॥यदा यदा सतांहानिर्वेदमार्गानुवर्तिनाम्॥तदा
तदा कलेर्वृद्धिरनुमेया विचक्षणैः ॥५३॥ वसिष्ठस्मृतौ॥ श्रुतिस्मृ-
त्युदितं धर्ममकृत्वा यश्चरेन्नरः॥विकर्मस्थःस विज्ञेयःसर्वकर्मविग-
र्हितः॥५४॥यो वेदार्थं गर्हयतिधर्माधर्मं न विदति॥ नबुध्यते परं
लोकं सनास्तिक उदाहृतः ॥५५॥ उक्तधर्मं परित्यज्य यो ह्यधर्मे
प्रवर्तते॥पतितःस तुविज्ञेयःसर्वधर्मबहिष्कृतः॥५६॥महाभारते ॥
श्रुतिः स्मृतिर्ममैवाज्ञायस्तामुल्लंघ्य वर्तते ॥ आज्ञाच्छेदीमम द्रोही
मद्भक्तोपिनवैष्णवः॥५७श्रुतिस्मृती उभे नेत्रे ब्राह्मणानां प्रकी-
र्तिते।एकेन विकलः काणो द्वाभ्यामंधस्तथैवच॥५८॥इत्यादि ॥

दोहा—यातें हौं जानौं अबै, करत सूद तप कोय ।
ताहि दंड दीने तुरत, द्विजसुत जीवित होय ॥ ३० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-सुनि नारदहि राम शिरनाई ❀ बेगिकही लछमनहिं बुझाई॥
द्विज सुतमृतकहिजतनसमेता ❀ राखौसबहि भाँतिसह चेता३१॥
यौंकहिपुनिकिय पुष्पक ध्याना ❀ आयोअतिहि उतालविमाना॥
सजिसबसाज बैठि द्वुत रामा ❀ कियोपयान लखेबहु ठामा३२॥
पश्चिम. उत्तर पूरब देखी ❀ दक्षिण दिशा जाय चहुँ पेखी॥
इकतडाग तहँविशदनिहारा ❀ सैवल गिरिअरुबिंध्यमँझारा३३॥
तहाँ अधोमुख इक नर झूलो ❀ करहि तपस्या आनँद फूलो॥
ताहि जाय बूझो रघुराजा ❀ को तू तपसाधे किहि काजा ३४॥
सुनि सो कही शूद्र मम जाती ❀ देव होन हित यह तप थाती॥
हे शंबूक राम मम नाथा ❀ हौं नहिं भाषौं वचन अकाथा३५॥
सुनतहि राम खड्ग खरधारा ❀ अति उताल तिहि कंठ प्रहारा॥
तापस प्राण गयो प्रभु हाथा ❀ दुर्गति दूर ह्वै भयो सनाथा३६॥
तापस शूद्र भयौ बध जबहीं ❀ बालक विप्र जियो सो तबहीं॥
सो लखि जन समस्त हुलसाये ❀ मात पिता आनद अघाये३७
उततिहि वध लखिसब सुर हरषे ❀ अस्तुति करत सुमनवरवरषे॥
ताछिनमुदितकहीसुरराजा ❀ निजरुचिवर याँचौंरघुराजा॥३८॥
तब रघुवर बोले सुरराई ❀ दीजे सो द्विज पुत्र जिवाई॥
इंद्र कहीइहि मरतहिं वीरा ❀ जियोसुबाल मिटी सब पीरा३९॥
सुनि हुलसाय सुरन शिरनाई ❀ पुनि बैठे पुष्पक रघुराई॥
आय अगस्त मुनिहि श्रीरामा ❀ गहि सप्रेम पदकीनप्रणामा४०
ऋषि रघुवर कर आदर कीना ❀ भूषण इक अमोल वर दीना॥
तब करजोरिमुनिहि शिरनाई ❀ मधुर वचनबोले हुलसाई ४१॥

दोहा-क्षत्रिन काहू दानको, लैवो उचित न आय॥
अरु द्विज धनतौ कैसहू, ग्रहण अयोग कहाय॥ ४२॥
सो हम क्षत्रिय बहुरि नृप, प्रभु मुनिवर द्विजराय॥
उचित कहा करतव्य है, दीजे नाथ रजाय॥ ४३
तब अगस्त ऋषि रामको, बहु विधि कियो बखान॥
नीति धर्म संयुत बहुरि, बोले सत्य प्रमाण॥ ४४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देव गुरू नृप पितर द्विज, साधु प्रजा सहतोष ॥
सादर देवै वस्तु कछु, लिये न काहू दोष ॥ ४५ ॥
चौ०-मुनिआज्ञा सुनिकैरघुराइ ❀ लिय कर भूषणशीशचढाई ॥
पुनितिहिभूषणकथाविशाला ❀ ऋषिवरकहीसुनीरघुलाला ४६ ॥
तिहिनिशिमुनिआश्रम वसिरामा ❀ प्रात चलेकरिदंडप्रणामा ॥
पुष्पक बैठि अयोध्या आई ❀ उतरि विमानहि दई रजाई ॥ ४७ ॥
द्वारपालते खबर जनाई ❀ आये भरत लषणदुहुँ भाई ॥
करि प्रणामरामहिकर धारी ❀ गये भवनजन आनँदकारी ४८ ॥
द्विज अशीश दै प्रमुदित भारी ❀ गयो सदन संयुत सुत नारी ॥
राम सुयश वर्णत सब कोई ❀ तिहूँ लोक नित आनँदहोई ४९ ॥
दोहा-दान मान वर न्याय नित, करत राम नृप काज ॥
पालत प्रजहि सुधर्म युत, प्रमुदित सकल समाज ॥ ५० ॥
राजसूय आदिक विविध, मख कीने श्रीराम ॥
अमित दान दीने सविधि, धेनु धाम धन ग्राम ॥ ५१ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ युद्धकांडे सर्ग १३० श्लोक ॥

पौंडरीकाश्वमेधाभ्यां वाजिमेधेन चासकृत् ॥
अन्यैश्च विविधैर्यज्ञैरयजत्पार्थिवात्मजः ॥ ५९ ॥

इति श्री रा० र० अ० वि० द्विजपुत्रसंजीवन-
वर्णनो नाम नवमो विभागः ॥ ९ ॥

दोहा-श्रीरघुवर गुण गण विमल, सुर मुनि करत बखान ॥
कहत सबै को राम सम, है त्रिलोक बलवान ॥ १ ॥
जो दशमुख निज बाहुबल, जीति लये सब लोक ॥
ताहि मारि रघुवीर प्रभु, कीने सकल विसोक ॥ २ ॥
सो अस्तुति सुनि राम सौं, कही सिया मुसक्याय ॥
देखहु सब लघु बातको, वर्णत किती बढाय ॥ ३ ॥
तब रघुवर मन माषिके, बोले वैन उताल ॥
किमि लघुबात जु वध कियो, महा प्रबल दशभाल ॥ ४ ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-सो सुनि भाषी जनकदुलारी ❀ कहाहुतोरावण बलभारी॥
लघु निश्चर ताको प्रभु मारा ❀ यामहँकौन वीर गुण सारा॥५॥
मिथिला माहि सुनी हौं ख्याता ❀ गौतमलषि वरणी वर ज्ञाता॥
त्रैरावण इक लंक रहाही ❀ दूजो सो पाताल बसाही॥ ६॥
त्रितिय महारावण जिहि नामा ❀ जाके सहस शीश अभिरामा॥
रहैसु पुष्कर द्वीप मझारा ❀ दशमुखसम तिहि दास अपारा७॥
सुनतहि राम क्रोध उरलाई ❀ दई सपदि मंत्रीन रजाई॥
सकल सैन चतुरंग सजाओ ❀ अरु चहुँदिशिके भूपबुलावो॥८॥
पुष्कर द्वीपहि बेगि सिधारैं ❀ सुभट महा रावण तिहि मारैं॥
सुनि मंत्री द्रुत पत्र पठाये ❀ सदलभूप बहुअवधहि आये॥९॥

दोहा-तब रघुवर ध्यायों सपदि, आयो पुष्पक यान॥
बंधु सैन युत बैठि तिहि, कीनो सुदिनपयान॥१०॥
राम संग सुग्रीव अरु, जाम्बवन्त लंकेश॥
अपर भूप निज निज विपुल, साजे सैन सुदेश॥ ११॥
अगद हनुमत नील नल, आदिक वीर अपार॥
यह दल ताहूते अधिक, रहो जु लंक मझार॥ १२॥

चौ०-पुष्करद्वीपहिजायउताला ❀ परो घेरिचहुँ कटकविशाला॥
रावण सुनीसदल रघुनाथा ❀ आये युद्ध करनमम साथा॥१३॥
सहज विहँसि सो वैन उचारे ❀ करैं समर कह राम विचारे॥
हौं तिनहित क्यों सैन सजाऊँ ❀ एकबाणतेसबहिभजाऊँ॥१४॥
यौं कहि सहज बाण धनु लीनो ❀ चलो महारावण मद भीनो॥
आप एकदलसन्मुखआवा ❀ तिहिलखिरामकटककिय धावा१५
तबै महारावण धनुताना ❀ छाँडो सहज एक वर बाना॥
तिहि शरजनितप्रचंड समीरा ❀ लागि उडे सबप्रभुदलबीरा१६॥
उड़े सबन्धु सदल श्रीरामा ❀ परे आय कौशलपुर धामा॥
जाम्बबन्त अंगद कपिराई ❀ गिरेसुभटकिष्किन्धा जाई॥१७॥
परे लंकपति लंक मझारी ❀ संयुत सकल निशाचर धारी॥
सैन समेत अपर नृप जेते ❀ निजनिज ठाम गिरेसब तेते १८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–निज निज थल इहि भाँति सब, छिनमें परेजु आय ॥
स्वप्न माहिं सुख सोक ज्यों, जागे कछु नलखाय ॥ १९ ॥
नहिं तनु भंग न व्रण कछू, भेद न परो जनाय ॥
जनु कोऊ उतते तै, लायो अंक उठाय ॥ २० ॥

दोवई छन्द ।

सो गति हेरि चकितह्वै सबही सोच सकोथ बढाये ॥
राम रजाय पाय पुनि सजि दल सकल अवधपुर आये ॥
सहित सैन रघुवीर धीर धरि बेगि जाय तहँ छाये ॥
रावण फेरि प्रथम सम शरतेनिज निज थलहि पठाये ॥ २१ ॥
गति विलोकि सो जनकदुलारी कछु न कहैं मुसक्यावैं ॥
रघुनंदन सिय ओर लखैं तब हृदय अधिक सकुचावैं ॥
पुनि बहु क्रोध लाय कौशलपति सबहि बुलाय सजाये ॥
कीश ऋच्छ निश्चर नर सारे महारोष उर छाये ॥ २२ ॥
साजि सैन जब चलन चहे तब बोलीं जनककिशोरी ॥
अबकी बार नाथ सँगहौंहूँ चलौ सु यह रुचि मोरी ॥
लंक युद्ध कीनो प्रभु तब मैं विवस हुती न निहारो ॥
यातें उर अभिलाष लखौं चलि समर वीर बल भारो ॥ २३ ॥
सिय रुचि जानि संगलै रघुवर कीनो सदल पयाना ॥
परम प्रबंध ठानि द्रुत आये छाये भट बलवाना ॥
सुनी महारावण पुनि राघव कियो प्रबल अति घेरा ॥
यातुधान तब चलो समरहित साजि कटक बहुतेरा ॥ २४ ॥
दोहा–भिरे दुहूँ दल प्रबल भट, भयो युद्ध अति घोर ॥
छायो हाहाकार चहुँ, करत सुरासुर शोर ॥ २५ ॥
कोपि महा रावण तबै, फेर तजो सो तीर ॥
सब निज निज थल उड़ि परे, रहे सिया रघुवीर ॥ २६ ॥
पवनपुत्रको हेत गुणि, बीचहि राखो पौन ॥
सँभरि वीर तहँते सपदि, प्रभु ढिग कीनो गौन ॥ २७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—तहां रहीं सिय एक दुरानी ❀ दूजे श्रीरघुवर धनुपानी ॥
तीजे हनूमान बलवाना ❀ चौथो कोउ रहो नहिं आना॥२८॥
निरखि महा रावण वरियारा ❀ गर्जि धाय राघवहि प्रचारा ॥
ता छिन राम अमित शर मारे ❀ सोऊ बान अपार प्रहारे ॥२९
तासु सहस्र शीश वपु भारी ❀ रथ बैठो शिर व्योम मझारी ॥
सो शर हनत लगत प्रभुगाता ❀ रामबाण तिहि कंठ न जाता ३०
लखि रामहिंशिर धरिहनुमाना ❀ ताहू ते तनु उच्च बढाना ॥
तब रघुवीर अनल शर मारा ❀ भयो तुरंग रथसारथि छारा॥३१॥
पुनि बहुविशिख बाणप्रभु छंडे ❀ यातुधान अगणित रणखंडे ॥
हाय हाय करि निश्चर भागे ❀ सभयविहालभभरिसबभागे ३२
हेरी सहस्रशीश बलवाना ❀ प्रभुहिय हनो चंड वर बाना॥
लागत सो उदंड खर तीरा ❀ मूर्छित भये विकलरघुवीरा ३३
तब कपि शिरतै प्रभुहि उतारी ❀ बैठारे गहि भूमि मझारी ॥
सोचत हनूमान मनमाहीं ❀ इनतजिहमकिमियुद्धकराहीं३४

दोहा—हम कीजे उत युद्ध इत, नाथहि निरखि विहाल ॥
घात करै खल कोउ तौ, होवै निपट कुचाल ॥३५॥
इत सोचत इहि भाँति कपि, मोचत लोचन वारि ॥
उत कीनो बहु क्रोध सिय, पियहि विहाल निहारि ३६॥

चौ०—तबहिंकालिकारूप कराला ❀ प्रगटीं लीने खड्ग विशाला॥
कर खप्पर उर नर शिर माला ❀ मुखतेकढतहुतासनज्वाला३७॥
बिथुरे केश तेज तनु भारी ❀ श्याम अंग दुर्जन भयकारी ॥
संग शक्ति गण चंड अपारा ❀ सकल खड्ग खप्पर करधारा३८
कीनों महा कालिका क्रोधा ❀ मारे सकल निशाचर योधा ॥
काटि काटितिनखप्पर डारैं ❀ शोणितपान करैं किलकारैं३९॥
इहिविधि शक्तिसकल खलखाये ❀ कितहूँ कोउ न बचे दुराये ॥
रहो सहस्रमौलि इक आपा ❀ धाये हनत शक्तिकारिदापा॥४०॥
महा कालिका तबकरि रीसा ❀ खंडन लगी तासु बहु शीशा ॥
ता छिनभयो आचरज भारी ❀ जो विलोकिडरपे सुरझारी॥४१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोवई छंद ।

शोणित बिंदु परै भूतल मधि असुर अंगते जेते ॥
होयँ महारावण तिन कणते प्रगटते तत्क्षण तेते ॥
गति विलोकि यह महा कालिका निज रसना विस्तारी ॥
झंपित करी वेगि ताही ते सो रण धरणीसारी ॥ ४२ ॥
तब तिहि तनुते रक्तबिंदु जो गिरैं सकल सो चाटैं ॥
गहि कर खड्ग महारावणके शीश भूरि ते काटैं ॥
महा कालिका शक्तिन संयुत इमि ताको संहारा ॥
असुर मरन लखि सुर हरषाये किये सु जै जैकारा ॥४३॥
वरषि सुमन दुंदुभी बजाई अस्तुति करी कदंबा ॥
सो सुनि क्रोध त्यागि शक्तिन युत गुप्त भई जगदंबा ॥
सिय ह्वै प्रगट राम ढिग धाई लखे निपट बेहाला ॥
ताही छिन विधि शंभु इन्द्र तहँ आये अतिहि उताला॥४४॥
दोहा—तब विरंचि प्रभु अंगपर प्रमुदित फेरो हाथ ॥
विनय करी बहु चेतलहि, हरषि उठे रघुनाथ ॥ ४५ ॥
सिय महिमा सुन राजसुत, लहो परम आनन्द ॥
दुहुँ अस्तुति करिकै मुदित, गये सकल सुरवृंद ॥ ४६ ॥
रघुवर सिय हनुमंत युत बैठि सुपुष्पक यान ॥
आये कौशलनगर मधि कीनो बिदा विमान ॥ ४७ ॥
राम सिया आगमन सुनि, धाये तीनहु बन्धु ॥
आय परे पग प्रेम भरि उमगाये सुखसिंधु ॥४८ ॥
पुर परिजन सिय राम लखि, भये परम आनन्द ॥
घर घर भये बधावने,कहैं जैति रघुचन्द ॥ ४९ ॥
भयो महा रावण निधन, शोर छयो तिहुँ लोक ॥
सिय प्रभाव वर्णत सबै, मिटो सकल दुख शोक ॥ ५० ॥
सीताराम अनन्द युत, राजत अवध मझार ॥
सुर मुनि नर यश गावहीं, होत सु जै जैकार ॥ ५१ ॥

इति श्री० रा० र० अ० वि० महारावणवध
वणनो नाम दशमो विभागः ॥ १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—एक समै श्रीरामसों, हनुमत कह कर जोरि ॥
भुव मंडल हेरौं चहूँ, है प्रभु यह रुचि मोरि ॥ १ ॥
हो रजाय इक दिवसकी, आऊँ निरखि उताल ॥
सुनि कपि रुचि आज्ञा दई, पुनि बोले रघुलाल ॥ २ ॥
जयो सबही देशपै, बंग देशके नाय ॥
है सुन्दर इक रतन वन, न तहँ धारियो पाय ॥ ३ ॥
सुनि प्रभु सिख शिर नायकै, उछले कपि वरजोर ॥
अवलोको द्वै याम मधि, भुव मंडल चहु ओर ॥ ४ ॥
आये प्राची दिशि तब, लखि कौशिक अस्थान ॥
गये मुनिहि शिरनायकै, बोले कपि हनुमान ॥ ५ ॥
मुनिनायक मम स्वामि गुरु, मो हिय शंका भूर ॥
कृपा सहित उपदेश करि, कीजे सो भ्रम दूर ॥ ६ ॥
विधि विरचित यह सृष्टि मधि, सुख दुख रूप कुरूप ॥
किहि गुण औगुण होतहैं, सो वरणिय मुनि भूप ॥ ७ ॥
तब सादर कह गाधिसुत, सुनो वीर हनुमान ॥
जीव लहै ससार फल, पूरव कृत्य प्रमाण ॥ ८ ॥
प्रथम किये जप योग तप, दान जीव सो आय ॥
धन गुण प्रभुता रूप बल, सुख युत जग विलसाय ॥ ९ ॥
जिन कुकम कीने तिन, दुख होवें दुहुँ ठौर ॥
हौं भाषौं संक्षेप इमि, गुणि लीजो बहु और ॥ १० ॥
परधन तिय सुत हरनते, होतामिश्र जु नर्क ॥
गो द्विज पितृ वध द्रोहते, कालसूत्र सन्तर्क ॥ ११ ॥
दडा दडहि देत सो, शूकरमुख मधि जात ॥
अंध कूपते परहिं ज, सुरस अकेले खात ॥ १२ ॥
गरलद अग्निद चौर ते, सारमेय मधि जायँ ॥
दंदसूक पावैं पिसुन, निंदक रौरव मायँ ॥ १३ ॥
चौ०-जे विश्वासघात कछु करहीं ❀ ते जन शूल नर्क महँ परहीं ॥
मिथ्यावादी बीचिहि जाहीं ❀ गुरु श्रुतिविमुखसुक्षार रहाहीं १४

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इमि अनेक जे पातक आहीं ❀ तिहि कृत जीवनर्कमधिजाहीं॥
भोगि पाप पुनिजग महँआवैं ❀ तिहिप्रमाणसबचिह्न जनावैं १५
दोहा–श्याम दंत मदपी लखौ, वादी खंडित अंग ॥
निंदक हो खल्वाट अरु, परहासक दृढ़ भंग ॥ १६ ॥
मातागामी लिंग विन, कन्यागामी कुष्ट ॥
भगिनीगामी के हृदै, होय महा व्रण पुष्ट ॥ १७ ॥
मित्र तियागामी जु सो, रहै भारजाहीन ॥
स्वामिगम्य तिय गमन ते, गंडमाल दुख दीन ॥ १८ ॥
राखैं तियन प्रतीतिपै, तिनके करै अधर्म ॥
तासु अंगमें दुखद बहु, रुज होवैं गज चर्म ॥ १९ ॥
उच्च जात जो आप ते, तिहि तिय भोग कराय ॥
ताके मस्तकमें सदा, महा रोग सरसाय ॥ २० ॥
आत्मघाती हस्त रुज, मिथ्यावादी मूक ॥
परसुख अनदर्शी हिये, उठै सदाही हूक ॥ २१ ॥
देवनिंद प्रिय बधिर हो, कुब्ज कुटिलता पाय ॥
वट पारी पद रुज रहै, पिशुन श्वास उपजाय ॥ २२ ॥
गर्भपात कारिहि सदा, क्षईःजलोदर जान ॥
छर्दि विषद धूर्तहि मृगी, मत्त कृतघ्नी मान ॥ २३ ॥
अग्निदाह कारीहि बहु, होय रक्त अति सार ॥
शतकृत बाधकके रहै, रुज नित उदर मझार ॥ २४ ॥
शिशुघाती सुतहीन अरु, तियघाती धनहीन ॥
गोद्विज स्वामी घात ते, गलित कुष्ट तनु छीन ॥ २५ ॥
मृषा पक्षकारी सुतहि, होवै पक्षाघात ॥
गुदरोगी जल सुर सदन, जे विट मूत्र करात ॥ २६ ॥
इहि विधि चिह्न अनेक ते, नर नारीके अंग ॥
पूरव कृत पातकनके, लखे परै सब ढंग ॥ २७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्र० ॥ पद्म० श्लोक ॥

परवित्तं परापत्य कलत्र हरते च यः ॥
तस्य पातं तु तामिस्रे कुर्वन्ति यमकिंकराः॥ १॥ इत्यादि ॥

तत्रैव।

मातृगामी च पुरुषो जायते लिंगवर्जितः ॥
स्वसुतागमने चैव रक्तकुष्ठं प्रजायते ॥ २ ॥इत्यादि।

चौ०—यौं कहि भाषी गाधिकुमारा ❀ हैनहिं पाप पुण्यको पारा ॥
याते सबहि उचित यह बाता ❀ हरिहि भजै दुहुँलोक सुत्राता २८
सुनि सुनि वचन वीर हुलसाने ❀ धन्य धन्य ऋषिवरहि वखाने॥
शीशनाय गवने बजरंगा ❀ वश भवितव्य भई मतिभगा॥२९॥

दोहा—किय विचार कपि ईश मुहिं,क्यों वरजो तह जान।
चलि हेरौं तौ देश वह,किमि सुरत्न वन थान ॥ ३० ॥
यौं विचारि हनुमत सपदि,जाय लखो सो देश।
पुनि अवलोको रतन वन,परम अनूप सुदेश ॥ ३१ ॥
रजत हेम विद्रुम विटप,मणि मुक्ताफल फूल।
द्विज सजीव बहु रत्न मय,सरित तडाग अतूल ॥ ३२ ॥
तिहि वन चहुँ प्राकारवर,चारु चार दृढ द्वार।
परम विचित्र विशाल बहु,तासु मध्य आगार ॥ ३३ ॥
तहाँ द्वार रक्षक तिया, एक वृद्ध बलरास।
तेज पुंज दुर्बल अतिहि,बैठी सहित हुलास ॥ ३४ ॥
ताढ़िग हनुमत आयकै,कही लखौं वनजाय।
सो वरजी तब तिहि निदरि,चले वीर वरियाय ॥ ३५ ॥
तब वह तिय कपि पगपकरि,फेंके भूरि भ्रमाय।
राम निकट हनुमंत द्रुत, परे अवधमें आय ॥ ३६ ॥
लखि सकुचे कपि प्रभु हँसे, तब हनुमत करजोरि ॥
विनय करी रघुवर क्षमी, आज्ञाभंग जुखोरि ॥ ३७ ॥
निज अपराध क्षमायकै, रहे मुदित हनुमंत ॥
राम स्वभाव कृपालुता, यश वर्णत सबसंत ॥ ३८ ॥

इति श्री० रा० ० अ० वि० हनुमत पर्यटन वर्णनो
नाम एकादशो विभागः ॥ ११ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो०—श्रीरघुवर गुणग्राम, कथा होत तिहुँलोक मधि ॥
सुर नर मुनि वसु याम, यूथ यूथ वर्णत सुनत ॥ १ ॥
चौ०—मुनि अगस्त्य इक समैसुजाना ❀ करत हुतेरघुवर यशगाना
ताछिन ऋषि बोले हुलसाई ❀ करौं कहाँलग रामबडाई ॥ २ ॥
दोहा—लखौं कीश नल लंकमें, किमि कीनो अपराध ॥
अपनायो तिहि करि क्षमा, ऐसे कृपा अगाध ॥ ३ ॥
सुनि बूझी सब चकित ह्वै, कहा कियो नलनाथ ॥
तब मुनिवर ऋषि गणनते, वर्णन लगे सुगाथ ॥ ४ ॥
चौ०—कीनी लंक विजै जब रामा ❀ तब वर भूषण वसन ललामा ॥
तीजे दिवस सबहि बहु दीने ❀ कीश भालु परितोषित कीने ॥ ५ ॥
तादिन पट भूषण सजि नाना ❀ नल कपि धरि नरतनु बलवाना ॥
हाट वाट चहुँलंक मझारी ❀ निरखत पुर शोभा सुखकारी ॥ ६ ॥
ताछिन एक निश्चरी बाला ❀ ऋतु मंजन किय युवा रसाला ॥
मोहित भई नलहि सो हेरी ❀ कीशहु दृष्टि नारि सों भेरी ॥ ७ ॥
धाय आय सो निश्चर वामा ❀ कपिहि बोलि लैगई स्वधामा ॥
बहु सन्मान सहित बैठारे ❀ सकुचि विहँसि मृदु वचन उचारे ८ ॥
कीन आजहौं ऋतु अस्नाना ❀ तुमहि निरखि मोचित्त लुभाना ॥
लावोहीय न और विचारा ❀ मोमिलि करौ निसंक विहारा ॥ ९ ॥
तासु वचन सुनि कपि हियसोचा ❀ परतिय गमन कर्मअतिपोचा
बहुरि कीश यह उर ठहराई ❀ उत्तर दीने नाहिं भलाई ॥ १० ॥
दोहा—तिय सपष्ट मुख आपने, जो माँगै रतिदान ॥
ह्वैसमर्थ नहि देय तौ, तिहि सम दोष न आन ॥ ११ ॥
यौं गुणि भाषी कीश तिहि, सुनौ सुन्दरी बाल ॥
तुम निश्चरी अनूप हौ, नव योवना रसाल ॥ १२ ॥
पैं विशुकर्मादेवके; अंश जनित हम आहिं ॥
सुर निश्चरी विहारमें; पातक दुहूँ लगाहिं ॥ १३ ॥
तब बोली वह निश्चरी, सुनौ एक इतिहास ॥
सत्य प्रमाण बखानहूँ, मानौ दृढ विश्वास ॥ १४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोवई छंद ।

कोविद एक विप्र होता ढिग बाल पढनहित आवैं ॥
पुत्री तासुहुतीगुण आगर कंठ शास्त्र षट आवैं ॥
सो द्विजसुता एक द्विज सुतको रूप निहारि लुभानी ॥
करै कटाक्ष व्यंग्य बहु नित पै सो न हिए कछुठानी ॥१५॥
तब तिय ह्वै अधीर मनसिजवश ताहि इकंत बुलाई ॥
निज मुखते रतिदान सुयाचो सविनय सकुचविहाई ॥
सुनि सो द्विजकुमार तिहि भाषी धर्मभगिनि तू मेरी ॥
पातक महा होय दोउनका कहा भई मतितेरी ॥ १६ ॥
सुनि द्विजसुता क्रोधकरि बोली दुष्ट कुष्ट होजाई ॥
शाप दियो ताके सप्तम दिन गयो अंग विनशाई ॥
विप्रकुमार विहाल रहै इमि पंच वर्ष तिहि बीते ॥
विचरतहीं औचक इक आयो सिद्धि संत कितहीते॥ १७ ॥
तिहि लखि सो द्विज पुत्र जोरि कर विनय करी ह्वै दीना ॥
तब धरि ध्यान ज्ञान निधि ताको शाप पाप लखि लीना ॥
कही सिद्ध वर सुनो विप्र अब याकी वही उपाई ॥
ताही मिलि रति होय ततक्षण तौ यह रुज मिटि जाई॥१८॥
तब द्विज पुत्र चकित ह्वै भाषी हौं सुधर्म दृढ राखा ॥
कहा रीति विपरीत भई प्रभु जाते यह फल चाखा ॥
सुनिकै संत कही है याको कारण इमि दृढ जानौ ॥
धर्म अधर्म दुहूँ गति सूक्षम कछु आचरज न मानौ ॥१९॥
निज तिय परतिय होय कोउ सो कोटि कला दरशावै ॥
पै रति दान सपष्ट न याचै अरु बहु युक्ति लगावै ॥
जब निज मुख ते विना व्यंग्यके तिय रतिसन्मुख माँगे ॥
तब जो पुरुष समर्थ नमानैं तौ अधम तिहि लागे ॥ २० ॥
पै यह धर्म अधर्म होतहै त्रेता द्वापरमाहीं ॥
सतयुग अरु कलिकाल दुहूँमधि रीति उचित इमि नाहीं ॥
यौं कहि संत गमन कीनो तब द्विजसुत हिय पछिताई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाय पाय औसरतिहि तियसो बहु विधि विनयसुनाई ॥२१
तब सो नारि विचारि दया उर पर उपकार निहारी ॥
बोली गयो समय वह तबही अब दुहुँ दशा नियारी ॥
पै तुव प्राण देह रक्षाहित करौं सु अंगीकारा ॥
यौं कहि कीनी कृपा विप्र लखिभयो शाप उद्धारा ॥ २२ ॥
द्विज सुत अंग विरुज भो तबहीं दुहुँ भे पातक हीना ॥
सो युग धर्म अधर्म अलख है कहावीर चित दीना ॥
यौं कहिकै निश्चरी सुंदरी मदन प्रेम मदसानी ॥
दै गलबाँह प्यार करि नलके हिये हरषि लपटानी ॥ २३ ॥
दोहा–अंक भरत ही मैनके, विवश भये नल वीर ॥
मिले रहसि थल नारि नर, बहुरि रहै किमिधीर ॥ ॥२४॥
चौ०–ताहि कीशगहि अंकलगाई ❀ सोतियहियआनन्द अघाई
तब दोऊ करि वर मद पाना ❀ कियोविहारमुदितमनमाना२५
पुनि दुहुँनेहनसा सुखसाने ❀ देह गेह सुधि सकल भुलाने ॥
इत सुकंठ सब सुभट सम्हारे ❀ औरसकलपै नलननिहारे २६
द्रुत हरीश बहु कीश पठाये ❀ सो नहिं मिलेखोजि सबआये ॥
तब रघुवर भेजे हनुमन्ता ❀ कही लावकहँ नलबलवंता २७॥
जाय पवनसुत नगर मझारी ❀ चहूंओर सब लंक निहारी ॥
जब न मिले तब ह्वै मंजारा ❀ गृह गृह पैठि लखोपुरसारा२८
जब तिहिभवनगये बजरंगा ❀ लखे नगन सोवै दुहुँ संगा ॥
तब मुख फेरि ओटमधिआई ❀ धरिकपितनुनिजगिरासुनाई२९
हनुमत वाणी सुनिकपिजागा ❀ सकुचितशंकभभरिउठि भागा ॥
चलत निश्चरी कर गहि बोली ❀ अबतजिजाहुसुनाहि ठठोली३०
तव सम मो संतति उपजाई ❀ नरलखि लेहिं निशाचर खाइ॥
तिहि रक्षणहित इत रहिजावो ❀ कै मोको लै संग सिधावो ॥३१
सुनितिहिबैनचकितकपि दोऊ ❀ कहि न सके काहू कछुकोऊ॥
तब हनुमंत राम ढिग धाई ❀ सकल दशालगिश्रवणसुनाई३२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि पुनि राम कहीद्रुत जावो ❀ दुहूं निशंक बोलि इत लावो ॥
धाय आयहनुमत लैसाथा ❀ पहुँचे वेगिजहां रघुनाथा ॥ ३३ ॥
नल सकोचवश शीशनवाये ❀ लखि रघुवर तिन विहँस बुलाये
क्षमि अपराध निकट बैठारे ❀ दै बहु धीर सुवैन उचारे ॥३४॥
पुनि सो तियहु बिमान बिठारी ❀ तहँते कियो पयान खरारी॥
जबहिं यान आयो बहुदूरी ❀ सिंधु निकट देखी महि रूरी ॥३५

दोहा—तहाँ राम सो निश्चरिहि, भूतलदई उतारि ॥
पुनि दीनो वरदानवर, गति भवितव्य विचारि ॥ ३६॥
हो संतति तव उदरते, द्वै सुत कन्या एक ॥
वृद्धि लहै तिनते कुटुम, प्रगटै अपर अनेक ॥ ३७ ॥
नर कपि आकृतरूप हो, पितु प्रभावते सर्व ॥
अशन पान बहु आसुरी, तव गुण रहै निगर्व ॥ ३८ ॥
मम अशीशते गौरतन, हो गुण बुद्धिनिधान ॥
नीति धर्म ज्ञाता विपुल, परम प्रतापी मान ॥ ३९ ॥
राज्य लहें कलिकालमधि, कछु भुव मंडल माहिं ॥
भानुदेव तिन पै सदा, अतिही कृपा कराहिं ॥ ४० ॥

प्र० ॥ भविष्योत्तरपुराणे ॥ श्लोक ॥

गौरांगाः सूर्य्यभक्तास्ते विद्याबुद्धिविशारदाः ॥
कलौ राज्यं करिष्यन्ति वर्णाश्रमविवर्जिताः ॥ १ ॥

दोहा—यौं वरदै रघुनाथ तिहि, गमन कियो निज धाम ॥
सो तिय ताही थल रही, संतति लही ललाम ॥ ४१ ॥
चौ०-प्रगटे तिमितिहुँ रूपविशाला। जिमिबरदानदयोरघुलाला ॥
तिन बयप्रौढ पाय तपकीना ❀ भानुप्रसन्नहेतुप्रण लीना ॥ ४२ ॥
लखि बहुतप प्रमुदित रविआये ❀ हरिहि हेरि सोशीश नवाये ॥
पायरजाय सहित अनुरागा ❀ दुहुँ करजोरिसुवर यह मांगा ४३

दोहा—मम कुटुंब बहु वृद्धि ह्वै, राज्यलहै कलि माहिं ॥
प्रजापाल ते सब रहैं, नहीं अनीति कराहिं ॥ ४४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-एवमस्तु तब कहीदिनेशा ❀ पुनि बोलेतिहुँवचन सुदेशा ॥
कीनी कृपा यथा दिनराई ❀ तिमि कुटुंब पर रहै सदाई ॥४५॥

दोहा-इमि वर दै ग्रहपति गये, सो आये निज ठाम ॥
दिनईशहि नित ध्यावहीं, मुदित रहैं वसुयाम ॥ ४६ ॥

चौ० सप्तसहस्र वर्ष अब बीते ❀ तिन कुटुंब बाढ़त तबहीते ॥
ते कलि मध्य करैं महिराजा ❀ इमि वरदानदियो रघुराजा ४७
न्याय नीति तत्पर मतिधामा ❀ प्रजापाल वर वीर ललामा ॥
विसुकर्मा सुदेव शुभ अंशी ❀ शिल्पकर्म अति होय प्रशंसी ४८
अपर अनेक अनूपम काजा ❀ करैं सुधर्म नीति मयराजा ॥
भूरि काललग राज्यकराहीं ❀ रहे प्रताप चहूं दिशि माहीं॥४९॥
इहि विधि विपुलकथा मुनिगाई ❀ रघुपति कीरति जननसुनाई ॥
सुनि सुर नर ऋषिसंतअपारा ❀ करत रामको जैजैकारा ॥५०॥

इति श्री० रा० र० अ० वि० गौरांगकथा
वर्णनो नाम द्वादशो विभागः ॥ १२ ॥

इति श्रीरसिकविहारीकृत श्रीरामरसायनग्रंथे अभिषेक-
चरित्र वर्णनो नाम सप्तमोविधानः ॥ ७ ॥

दोहा-यथा योग वर नीतिमय, समै समै सब काज ॥
अष्ट याम मर्याद युत, करत सदा रघुराज ॥ १ ॥

चौ०-चारदंड निशिरहीसु जबहीं। निरखि जु ब्रह्म मुहूरततबहीं ॥
आय द्वार द्विज वेद उचारे ❀ बंदीजन वर विरद पुकारे ॥२॥
बाजै वर नवबत सहनाई ❀ सजे साज सेवक समुदाई ॥
कुंज कुंज अलि पुंज अपारा।निज निजथल किय सार सम्हारा३

दोहा-ह्वै शुचि सेवक सेवकिनि, प्रथमहि सौंज सजाय ॥
पुनि औसर लखि कै अली, करैं गान वर आय ॥ ४ ॥

चौ०-पुनिजे अंतरंगिनीबाला ❀ ते शुचि ह्वै रचि रूपरसाला ॥
प्रमुदित कनकभवनके माहीं ❀ सैन कुंज वर नृत्य कराहीं ॥५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि अति अंतरंगिनीजोई ❀ गवनी निकट मंदगति सोई ॥
दंपति पद सरोज मृदु चापे ❀ मधुरमधुर सुरगीतअलापे ६॥
दोहा–तब दंपति निद्रा विगत, उठि बैठे सानन्द ॥
बलिहारी सखि लेत सब, लखि दोऊ मुखचंद ॥ ७ ॥
पुनि दंपति उठि सेजते, सैन सिंगार उतारि ॥
अपर वसन धारे विशद, निज निज कुंज पधारि ॥ ८ ॥
चौ०-यथायोगदंपतिहि अलीगन ❀ निजनिजथल सेवैंप्रसन्नमन ॥
सकलसौच करि कर पद धोये ❀ वदन प्रछालिनींदसबखोये ९॥
पुनि स्नान कुंजमधि आये ❀ सखिन सविधि मंजन करवाये ॥
वर शुचि पीतांबर तनु धारे ❀ कीने देव नित्य कृत सारे ॥१०॥
दोहा–होम ध्यान जप यजन वर, दान विधान अपार ॥
यथा उचित कीने सकल, दंपति सहित विचार ॥ ११ ॥
स्वणदान गोदान अरु, अन्नदान महिदान ॥
अपर दान बहु सविधि किय,सह श्रद्धा सन्मान ॥१२॥
चौ०–पुनि शृंगार कुंजपग धारे ❀ भूषण वसन सु अंग सँवारे॥
विविध सुगंध प्रसूनन माला ❀ साजि कियो शृंगार रसाला १३
इहि विधिसखिन दुहूँ शृंगारे ❀ पुनि इक सिंहासन बैठारे ॥
शुचि फल मेवा सरससुहाये ❀ कछुक दंपतिहि अशनकराये १४
पुनि सरयू जल पान कराई ❀ कर प्रक्षालि वर विरी पवाई ॥
साजि आरतीअलिनदुहुँकीनी ❀ सविधि चतुर्दशआवृतिदीनी १५
दोहा–चरणवेद४दृग२लंकमुख, शशि १वासर७सब अंग ।
इमि चतुर्दशा१४ वृत्ति सो, सविधि आरती ढंग ॥१६॥
प्र० ॥ नाभाजी कृत अष्टजामे ।
दोहा–चार आवरत चरण पुनि, कटि युग मुख पर एक ॥
सत आवरत सर्व अंग, विधि युत करि सविवेक२इत्यादि
चौ०–पुनि तहँते दंपति पग धारे ❀ संग सखीगणयूथ अपारे ॥
छत्र विजन चामर बहु साजा ❀ लियेयथोचितअलीसमाजा १७
विलगविलगसिविका मधिराजे ❀ निरखिछटारतिमनसिजलाजे॥
सखियन दुहुँ पालकी उठाई ❀ प्रमुदित निजनिजओरसिधाई १८

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंतर मग ह्वै जनकदुलारी ❀ रानी वंदन हेत सिधारी।
जाय सासु ढिगराजकुमारी ❀ पदगहि कीनप्रणामसुखारी१९॥
उतसियभगिनीविशदसुहाई ❀ रानी सदन सखिन सँग आई ॥
तेतिहुँ सासुसियहिनमिसोही ❀ सबही मुदित चहूँ मुखजोही२०॥

दोहा—राम मातके ढिग जुरीं, रानी अपर अनेक ॥
तिन सबको सादर बधुन, किय प्रणाम सविवेक ॥२१॥

चौ०—पुत्र वधुनसबदयो अशीशा ❀ बैठारी सुघ्राण करि शीशा ॥
इत रघुवीर कनक गृह द्वारे ❀ अलिगण संग मुदित पग धारे२२
तहाँ सखा सेवक बहु राजे ❀ निजनिज साजसमयसम साजे ॥
आवतहीउठिसकलप्रवीना ❀ प्रमुदितउचितसुवंदन कीना २३॥
यथायोग रघुवर सनमाने ❀ सबही अति आनंद अघाने ॥
पुनिसिविकाते राजकुमारा ❀ उतरि भये स्यंदन असवारा २४॥
तबअलिगणमिलि महलसिधारी ❀ सियकेनिकटगईं ते सारी ॥
इत रघुवीर समेत समाजा ❀ गमनेगुरुपदवंदन काजा ॥ २५ ॥

दोहा—नित्य कर्म करि बंधु दुहुँ, अपर सखा सरदार ॥
जुरे आय जन वृंद बहु, रंगभवनके द्वार ॥ २६ ॥
तहँ आये रघुवंश मणि, उचित वंदि सब कोय ॥
मिलि गमने गुरु गेहको, सहित भक्ति मुद होय ॥ २७ ॥

चौ०—आयसबंधुगुरुहिशिरनाये ❀ दियआशिषवासिष्ठहुलसाये ॥
जुरे सुविपुल विप्रतिहि ठामा ❀ सबहि कीनरघुवीरप्रणामा२८॥
पुनि गुरुपत्निहि शीश नवाई ❀ चले राम शुभ आशिष पाई ॥
आये मात भवन हुलसाई ❀ संग सकल सज्जनसमुदाई॥२९॥

दोहा—बाल सखा अरु बंधु वर, संग लिये रघुराय ॥
अपर द्वार थपि मातु ढिग, गवने विदित कराय ॥३०॥
जाय सकल जननीन पद, सादर नायो शीश ॥
कंठ लाय शिर घ्राण करि, सबही दयो अशीश ॥ ३१ ॥
बैठारे सादर सबै, राम मात हुलसाय ॥
कियो प्यार सुत लखनसों, अति उमंग उमगाय ॥ ३२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जे नृप सुत संगी सखा, सेवक बैठे द्वार ॥
सब दिशिकी वर वंदना, अलिगण करी उचार ॥ ३३ ॥
चौ०—ताछिनकौशल्या महरानी ❀ आलिन प्रतिभाषीमृदुवानी॥
मधुर सरस मेवा पकवाना ❀ लावो साजि थाल वर नाना३४॥
सुनि सखिगण अतिआतुर जाई ❀ भरिभरि थार सौंजलै आई ॥
तब सबसुतन सखान समेता ❀ निजकरपरसिमातभरिहेता३५॥
पय पकवान सविधि फल मेवा ❀ मात कराये सबहि कलेवा ॥
नीर प्याय वर बिरी खवाई ❀ निजपटमुखपोछोहुलसाई३६॥
पुनि जे द्वार सखा सेवकगण ❀ अशन पानतिन पठै मुदितमन॥
निज सुत सों सबहीको प्यारा ❀ कियमहरानीपरम उदारा३७॥
उत कैकयी सुमित्रारानी ❀ अपरभूरि हियअतिसुख मानी॥
पुत्र वधुन आलिन युत तेऊ ❀ करवायो मनमुदितकलेऊ३८॥

दोहा—सखा बंधु युत राम पुनि, मातन शीश नवाय ॥
चले विपुल जन संग चहुँ, दिवस याम इक आय ॥३९॥
सभा धाम मधि आयकै, श्रीरघुराज विराज ॥
जुरे विप्र सुर संत मुनि, अपर अनेक समाज ॥ ० ॥

चौ०—तहां वेद वर शास्त्र पुराना ❀ नीति धर्म इतिहासजु नाना॥
होत कथा सतसंग अनूपा ❀ कहतसुनत कौशलपुर भूपा४१॥
इहि विधि दिन आयो द्वै यामा ❀ दीनी सबहि रजायसु रामा॥
अपर सकल निज धाम सिधारे ❀ रहे संग जे जेवन हारे॥४२॥
ताछिन राजसदन ते आई ❀ सेवक वृन्द सुविनय सुनाई॥
सो सुनि गमने राजकुमारा ❀ संगसखा सेवकसरदारा४३ ॥
आय सकल शृंगार उतारा ❀ ह्वै सब शुचि पीतांबर धारा ॥
बैठे हेम पीठ रघुराजा ❀ यथायोगसहबंधुसमाजा४४॥

दोहा—कंचनमय मणि जटित वर, पात्र अनूप अपार॥
अशन पान बहु वस्तु सब, परसी सुमति सुआर ॥ ४५॥
चौ०—पंचग्रासयुतभोजनकीना ❀ पुनिसबमुदितआचमन लीना॥
बहुरि सकल सेवक हरषाई ❀ कियोसुअशन प्रसादअघाई४६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यौंहीं तिहुँ भगिनी युत हेता ❀ अपर नारिवर सखिनसमेता ॥
राम भामिनी भोजन कीना ❀ दासीजनप्रसादसबलीना४७॥
पुनि सब सासुन शीशनवाई ❀ निजनिज भवनवधूमुद आई॥
उत रघुवीर रजायसुपाई ❀ गवने बंधु सखा समुदाई॥४८॥
सैन कुंज मधि जाय सुरामा ❀ कीनो द्वै घटिका विश्रामा॥
पुनि उठिसजि शृंगार अनूपा ❀ आये सभाअवध पुर भूपा॥४९॥
रत्न सिंहासन मध्य विराजे ❀ सेवक सखा सचिवजन भ्राजे॥
राज काज अधिकारी जेते ❀ आये सभा समै लखि तेते॥५०॥
मंत्र निदेश न्याय नृप काजा ❀ यथायोग किय सब रघुराजा॥
वासर रहो दंड युग जबहीं ❀ उठे सभातेरघुवर तबहीं॥५१॥
प्रमुदित रंगभवनमधि अ मुख प्रक्षालि शृंगार सजाये॥
बंधु सखा सेवक हित संगी ❀ तहाँजुरे सब जन बहु रंगी॥५२॥
बाहनविविधवाजि गज स्यंदन ❀ शिविका अरुविमानवरवृन्दन॥
पदचर वीर शस्त्र धर भूरी ❀ बहु चतुरंग सैन अति रूरी ५३॥
छत्र चमर व्यजनादिक साजा ❀ लियेयथोचितसुजन समाजा॥
वाद्यकार गायननर्तक गन ❀ वेतपाणि रक्षक बंदीजन॥५४॥
भूषण बसन वित्त बहु लीने ❀ कोशप मुख निरखे दृगदीने॥
इ ि सब राज साज वर साथा ❀ सहसमाजगवनेरघुनाथा॥५५॥
यथायोग बाहन सब राजे ❀ रघुवर शत्रुंजय पर भ्राजे॥
मंद मंद विचरत पुरमाहीं ❀ चले राम जन दरश कराहीं॥५६॥
नगरनिवासी उचित जुहारैं ❀ मान सहित रघुवीर निहारैं॥
कर उठाय सबही सनमानैं ❀ नमैं ताहि जिहि भूसुर जानैं॥५७॥
बसन विभूषन वित्तअपारा ❀ कोशप वरषत गज असवारा॥
इहिविधि संध्या लग रघुवीरा ❀ पुर निरखतगे सरयूतीरा॥५८॥
तहँ मज्जे जन संयुत प्रेमा ❀ सध्य वंदन कियो सनेमा॥
पुनितहीविधिसहित समाजा ❀ आये मातुसदन रघुराजा॥५९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जननी पद गहि वंदन कीने❀ सोलखि सुतहि अंक भरिलीने॥
कंचन जटित पीठ बैठारी ❀ करि आरती लई बलिहारी६०॥
पुनि कछु पय मेवा पकवाना❀ अशन कराय दये सुख पाना ॥
सखा बंधु युत रामहि माता।कियो प्यार इमि प्रफुलित गाता६१

दोहा–पुनि जननिहि शिरनायके, गवने सहित समाज ॥
रंगभवन आये मुदित, कौशलपति रघुराज ॥ ६२ ॥
दई रजायसु अपर बहु, गमने निज निज ठाम ॥
सखा बंधु सेवक उचित, रहे निकट अभिराम ॥ ६३ ॥
मणिनजटित वरमंच मधि, सोभित श्रीरघुराय ॥
राजे सादर उचित बहु,बंधु सखा समुदाय ॥ ६४ ॥
नृत्य गान वर वाद्य बहु, कौतुक हास विलास ॥
भयेरैनि इक याम लों, रंग सदन बिचखास ॥ ६५ ॥
पुनि उठि बंधु सखान युत, बोलि संग सरदार ॥
राजमहल आये मुदित, दशरथ राजकुमार ॥ ६६ ॥
मिलि बैठे संग अपर सब, भोजन कीन अघाय ॥
रंच रंचही ग्रास लिय, बंधु सहित रघुराय ॥ ६७ ॥

चौ०-यौंसब मिलि तहँभोजन कीना। सेवकवृंद प्रसाद सुलीना ॥
दई रजाय तबहि श्रीरामा ।गये अपर जन निज निज धामा६८
बंधु सखा सेवक अति प्यारे❀ तिन युत कनकभवन पगधारे॥
द्वार आयदिय सबहि रजाई❀ निज निजसदन गये शिरनाई ६९
साज सहित प्रथमहि सखि वृंदा❀ खरींतहाँ लखिसमयअनंदा॥
तिन संगअंतर महल पधारे❀ मुदित उठीं सिय पीय निहारे७०
कर गहि सिंहासन पधराये ❀ राजकुँवर लखि आनँद छाये ॥
सादर मधुरवचन कहि प्यारी❀ वाम भाग निज ढिगबैठारी७१
ताछिनसौंज साजि सखि आई ❀ करी आरती हिय हुलसाई॥
पुनि दंपति शृंगार उतारे ❀ रैनि साज वर अपर सुधारे॥७२॥
दुहुँरुचिमयदुहुँकियो शृंगारा❀ साजि परस्पर करि करि प्यारा॥
अंगराग शुचि वसन विभूषण❀ सुमनसुगंध धारि प्रमुदितमन७३

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर पद मुख प्रछालि पुनिराजे ❀ हेमपीठ इक ठौरहि भ्राजे ॥
ताछिनसखी सुव्यंजन लाई ❀ षटरस स्वाद सुवरणि न जाई ७४
मद मादक सुगंध मय नाना ❀ रंग रंग शुचि स्वाद प्रमाना ॥
आमिष मिष्ट अनेक प्रकारा ❀ व्यंजन अपर भरे बहुथारा ७५॥
सखि दंपति मिलि प्यार बढावैं ❀ अरस परस मद पान करावैं॥
पुनि दोऊइकठौर जिमाये ❀ करि करि हास विलास रिझाये७६
देत लेत मुखग्रास परस्पर ❀ करि मनुहार बखानि स्वादवर ॥
व्यंग्य हास आनंद अनेका ❀ ठानत उचित एक प्रति एका७७॥
इमि दंपति कियभोजन पाना ❀ करि आचमन लीनदुहुँ पाना॥
सखी दासिका युतअहलादा ❀ लियोसबहि सानंद प्रसादा ७८॥
दुहूँ परस्पर पुनि कर धारे ❀ प्रमुदित शैन भवन पग धारे ॥
सुभग सेज मृदुआय विराजे ❀ चंद्रकलादिसाजसब साजे॥७९॥
परम प्रवीण अली वर रूपा ❀ नृत्य गानते करैं अनूपा ॥
सरस वाद्यबहु विविधबजावैं ❀ हाव भावदंपतिहि दिखावैं॥८०॥
इहि विधि रंग उमंग अपारा ❀ होत कनक आगार मझारा ॥
पिय प्यारी आनंद अघावैं ❀ मुदित परस्पर दुहुँ बतरावैं ॥८१॥

युगल याम यामिनि इमि आई ❀ तब दंपति दृग आलस छाई॥
लखिसखि वृंदलईबलिहारी ❀ सबहीनिज निजठौर सिधारी८२

दोहा—परम अतरंगी सखी, रहीं निकट कछु दूर ॥
अपर गईं निज निज थलहि, कियो शैन सुख पूर॥८३॥
बिरी मसाले सुमन शुचि, मादक अशन सुनीर ॥
अपर साज सब साजि सखि, धरे सेजके तीर ॥ ८४ ॥
इहि विधि सकल विलासयुत, आनंद भरे अछेह॥
शन कियो दंपति मुदित, पगे परस्पर नेह ॥ ८५ ॥

विपुल अलीगण शस्त्र धर, पुरुष वेष वर जोर ॥
सम समै प्रति पाहरू, फिरैं महल चहुँ ओर ॥ ८६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मणि दीपक बहु भवन चहूँ, छायो परम प्रकाश ॥
तासु छटाहै अकथ जो, रहसि विलास अवास ॥८७॥
अष्टयाम सिय राम इमि, करत रीति युत काज ॥
नीत प्रीत मर्याद लखि, प्रमुदित सकल समाज ॥ ८८ ॥
अष्टयाम प्रति रीति जिमि, करत काज श्रीराम ॥
तिहुँ बन्धुन तिमि निज उचित, रहत सदामतिधाम ८९॥

इति श्री० रा० र० विहारविधाने अष्टयामरीति-
वर्णनो नाम प्रथमो विभागः ॥ १ ॥

दोहा–अवध नगर आनंद अति, नित नव होत उछाह ॥
ब्रह्मादिक वर विविध बहु, आवत दरश उमाह ॥१॥

पवंगम छंद।

देश देशके भूप अवध पुर आवहीं। सब रघुवर नृपनीति हेरि हुलसावहीं। अखिल प्रजा गुणवंत आप चहुँ ओरके ॥ दरश करैं सानंदित राजकिशोरके॥२॥यथायोग सनमानदानअधिकायकै। सबहि देत सुखराम सुआश पुजायकै॥ कोऊ वर महिपालसमय लखि रामको ॥युत समाज लैजाहिं मुदित निजधामको ॥ ३ ॥ कबहूँ मिथिलानाथ सप्रेम बुलावहीं ॥ लक्ष्मीनिधि चहुँ भागिनि आय लै जावहीं। भरत लषण रिपुदमन जायतिन लावहीं। कबहूँ नेहवश रामहिं आप सिधावहीं ॥ ४ ॥ मिथिला अवध समाज जबै इक ठौरहो। ताछिनको आनंद अकथ कछु औरहो ॥ राम सियाकी वर्ष ग्रंथि प्रति वर्षके ॥ को वरणै किमि सो जिमि होय सहर्षके॥५॥ जनक नगरते विविध वस्तु वर आवहीं ॥ नृपरानी जन विपुल सप्रेम पठावहीं।इहिविधि बहु व्यवहार लोककुलरीति-के ॥ सब राखत रघुवीर सहित नृप नीतिके ॥ ६ ॥ अगणित उत्सव होत यथोचितमोदमें। हुलसावैं नर नारि समस्तविनोदमें॥ सकल तिया सानंद सदा रनिवासमें ॥ छकी रहैं नित उचित उछाह हुलासमें ॥ ७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोवई छंद ।

कबहूँ सखा बन्धु सेवक युत ऋतुवसंत रघुराई ।
प्रमुदित जाय लखैं वन वागन बहुवर साज सजाई ॥
अशन पान अरु नित्य गान तहँ मृगयो हास विलासा ॥
होत रहै मर्यादमोद मय सहित सखी रनिवासा ॥ ८ ॥
ग्रीषम ऋतु कबहूँ जल विहरैं सखन सहित रघुवीरा ॥
कबहूँ रहसि सरयूमधि सिय युत रमैं सखिनकी भीरा ॥
कबहूँ सुमन कुंजमहँ राजैं कहुं उशीर गृहमाहीं ॥
दशरथ सुत अरु जनकनंदिनी इमिसानंद विलसाहीं ॥ ९ ॥
दोहा—प्रति ऋतु अति अनुपम अवध, शोभा बढत अपार ॥
पैषावस ऋतुमें छठा औरै बहु सुखसार ॥ १० ॥
परमरम्य सुरसदन वे, जिनते सुखद न आन ॥
तिनते उत्तम अवधमें, लघु सेवक गृहजान ॥ ११ ॥
जहाँ सिया रघुवीर नित, रहत अवध पुर सोय ॥
तिहि समान तिहुँलोकमें, दूजो थलकिमि होय ॥ १२ ॥

हरिगी० छंद ।

सुंदर विराजै भूमि चिंता मणि जटित छबि छावही ॥
तहँ राजमहल ललामकी सोभा अतुल सरसावही ॥
चहुँ ओर कंचन खचित रचित अमोल बहु माणिक लगे ॥
तहँ विविध लीलाके सुभग चित्राम नवरंगनरंगे ॥ १३ ॥
कहुँ जाल रंध्र विशाल सुभग कपाट सोभित अति भले ॥
मणि नील अरुण अनूपराजै खंभ झलकत झलमले ॥
सुन्दर चँदोवा स्वच्छ मुक्ताझालरैं झूमत घनी ॥
बिच बीच नील सुरंग पीत अनेक विधि मर्कतमनी ॥ १४ ॥

चौपैया छंद ।

बहु महल सुधारे न्यारे न्यारे निज निज समय सुहाये ॥
रक्षक भट भारे रहत अपारे शस्त्र विचित्र सजाये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि तीनहुँ भैया मोद भरैया सुख युत करत कलोलैं ॥
रघुवर रुचि लीने रहत प्रवीने संगसखनकी गोलैं ॥ १५ ॥
रघुनंदन संगी सखा सुढंगी निज निज महलन राजैं ॥
जिनकी प्रभुताई बरणि न जाई लखि धनेश मन लाजैं ॥
सब भाँति सुपासा भोग विलासा करत दास अरु दासी ॥
मिथिला पुरबासी अवधनिवासी सकल सुकृतकी रासी॥ १६॥

भुजंगी छंद ।

छटा औधकी को सकै गायकै । सिया राम राजैं भले भायकै ॥
सदाही प्रभामंत सो धाम है। पुरी सातमें मुख्य जो नामहै॥ १७॥
कहूं गेह सोहैं घने रंगके । सुचित्राम राजैं भले अंगके ॥
कहूं हाट वाटैं सुगंधैं सिची। कहूँ चांदनी है चहूंघाखिची॥ १८॥
कहूं फूल डाली धरी हैं घनी । सुधासी कहूँ वस्तुकेती बनी ॥
मिली झुंड गावैं सुनै नीकहू । कहूँकौतुकी खेलठाने चहूँ॥ १९॥
कहूं मल्ल जोरी भिरैंजंगसे । कहूं बाल खेलैं घने रंगसे ॥
कहूं लेततानैं सुरावर्तकी ॥ कहूं नृत्य ठानैं भले नर्तकी ॥ २०॥
कहूं विप्र उच्चारहीं वेदको। हरैं वेगि कामादिके खेदको ॥
कहूं छैल डोलैं भरे मोदमें । कहूं बाललीने तिया गोदमें ॥ २१॥
कहूं वाम सोहैं पिया संगमें । हिंडोरे सुझूलैं छकी रंगमें ॥
भरे मोदमें औधवासीरहैं । सिया लालके सो उपासी रहैं ॥ २ ॥
घने जन्मलों शेष जो गावहीं । प्रभा धामकी पार ना पावहीं ॥
कही कौनपैजात सोभामहा । विहारस्थली लाड़िलेकीजहां २३॥

दोहा–पुनि सबही ते रुचिर अति, शैन सदन तिहि ठाम ॥
शिव अगस्त्यआदिक अमित,कहो जासु गुणग्राम ॥ २४॥

पद्धरी छंद ।

श्रीकनक भवन आनंद रूप । शोभा अभंग अतुलित अनूप॥
तिहिसप्तावरनविचित्र सोह।जिहि देखिकोटि सुरधाम मोह २५॥
सिय रघुनंदनकोकेलिभौन । तिहि की समता कवि कहहिकौन ॥
सोमहल मध्यसखिगण अनूप।जहँ प्राप्त होत नहिं पुरुष रूप २६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इकराज कुँवर प्यारे विहाय। तहँ सखी वृन्द सबही लखाय ॥
निज निज सेवाकी सौंज साज।सेवें नित दम्पति रसिकराज२७॥
सेवें श्रीसियपतिको सदाय। ते धन्य सखी दम्पति सुहाय ॥
प्रति कुंज कुंज शोभा अपार।सुखधाम नित्य लीला विहार२८॥
कहुँ सुभगलसतअस्नानकुंज। सजि अमितवस्तु जहँअलिनपुंज॥
तहँ मंजन करत जु सीयलाल। बहुभांति परस्पर होत ख्याल२९
कहुँ सुखद सुभग शृंगार कुंज। जहँ लहिसुगंध बहु मधुप गुंज॥
नव बसनविभूषणअंगराग। साजैंअलिदम्पतिकरि विभाग३०॥
कहुँ भोग कुंज सुंदर अनूप। जहँ अमित वस्तुवर अमृत रूप ॥
सखिवृन्द सबै निजसौंजसाज।सेवैं नित दंपति रसिकराज ३१॥
कहुँ शैन कुंज शोभा अभंग। जिहि देखि लजैं शतरति अनंग॥
जहँ लाललाडिली सुख समेत।विहरत दोऊआनंद लेत ॥३२॥
कहुँ रास कुंज अतिहीललाम। जहँ लहत मोद सुखधाम श्याम॥
सङ्गीतानपुणतहँ विविधिबाल।निजनिजसेवा तत्परविसाल ३३॥
कहँ शरदकुंज अति स्वक्षचारु। जहँकरत सीय रघुवर विहारु॥
तहँ सखी वृंदनितैं सुढंग।जिहि रूप देखि लजरति अनंग॥३४॥
हेमंत कुंज सुखमा ललाम। जहँ करत विहार जु सीय श्याम ॥
बहु केलिसाज साजेअभंग।सरसात मोद सुनि राग रंग ॥३५॥
कहुँ शिशिरकुंज शोभा लखात।बहु दीप माल दुति जगमगात
नववसनमसाले गृहसुहाय।निरखतग्रीषमजिहिअति लजाय ३६॥
कहुँ लसत अनूप वसंत कुंज। जहँ सरस सुहाई अलिनपुंज॥
विलसतपियप्यारीमुदितहीय।रसऋतुरतिसुरपतिलजतजीय ३७
कहुँ ग्रीषम कुंज विशाल सोह। लखि जाहि शिशिर हेमंतमोह॥
जहँसकलसुशीतलविविधसाज।राजतपि यारीयुतसमाज ३८॥
कहुं पावस कुंज अनूपराज। जहँ मुदित ीय प्यारी विराज ॥
तहँ सदालखिय प्राविट अभंग।द्रुम वेलिफूलनभ सरस रंग३९॥
कहुँ फाग कुंज शोभा अपार। हिंडोल कुंज कहुँ अतिसुढार ॥
कहुँ सखीभवन सोहैंअनूप। मुद रसिकविहारीनिरखि रूप४०॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो–इहि विधि कुंज अपार, कनक भवन मधि राजहीं ॥
एक कोश विस्तार, शैन धाम सिय रामको ॥ ४१ ॥
पुनि सरयू तट कुंज, बाग वाटिका वन विविध ॥
यूथ यूथ अलि पुंज, रहैं यथोचित सकल थल ॥ ४२ ॥
श्री सरयू तट धाम, अपर अमित तिय नरनके ॥
उचित घाट वर ठाम, परमरम्य शोभित सरित ॥ ४३ ॥

कुंडलिया ।

नीके घाट सुहावहीं, मणि गण जटित विचित्र ॥
बहु सोपान अनूप अति, मोहत मनहिं पवित्र ॥
मोहत मनहिं पवित्र तीर सुर मंदिर राजैं ॥
सुखद सुभग आराम सरस वन उपवन भ्राजैं ॥
रसिकविहारी मधुर शब्द शुक पिक अलि नीके ॥
विप्र वृंद उच्चरत वेद धुनि मृदु रव नीके ॥ ४४ ॥
राजैं नर नारीनके विलग विलग शुचि घाट ॥
पुनि न्यारे मज्जत जहाँ, विपुल वाजि गज ठाट ॥
विपुल वाजि गज ठाठ अमित गोवृंद पियत जल ॥
उत्तम मध्यम नीच गहत अपने अपने थल ॥
विविध वृंद वृंदारकानके बहु छबि छाजैं ॥
रसिकविहारी युगुल ध्यान युत मुनि गण राजैं ॥ ४५ ॥
रामघाट अति सुभग जहँ, मज्जतहैं सब भाय ॥
करत विविध विधिकेलि तहँ, सखन सहित सुखदाय ॥
सखन सहित सुखदाय अधिक आनंद लहैं जाति ॥
निरखि सकल सुरलोग हृदय पावत प्रमोद गति ॥
रसिकविहारी मौनरहत शारद नारद मति ॥
को वरणै छबि अतुल स्वच्छ वर राम घाट अति ॥ ४६ ॥

चौ०–सुभग जानकी घाट विशाला ❀ मज्जैं अंतरंगिनीबाला ॥
तहँ प्रमोद वन परम सुहावन ❀ कोटिन अमरावती लजावन ४७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लतिका छंद ।

सुखद सुंदर वन प्रमोद विराजही । विमल सरयू तट अधिक छवि छाजही । जहाँ पावस प्रगट रूप दिखावही ॥ सो सदा सिय श्यामके मन भावही ॥४८॥ कलित कदलि कदंब तरु राजत घने॥ बकुल विविध रसाल सरस सुहावने॥ पनस पाकर पल्लवित सोहैं भले ॥ सुफल समय निहारि निज निज सो फले ॥४९॥ ललित लतिका तरुन तनु लपटावहीं ॥ मोर नर्तत सुखद शब्द सुनावहीं शोर करि पपिहा घनो पी पी रटै ॥ जाहि सुनि बिरहीनकी छाती फटै ॥५०॥ झूमि झुकि झुकि पवन झोका लेत हैं ॥ करत घन घनघोर अति सुख देत हैं ॥ दामिनी दमके चहूँदिशि धायके ॥ नीर बरसत भूमि मंडल छायके ॥५१॥ श्याम घन चहुँओर सुंदर घेरही ॥ अरुण नील सुपीत रँग बहु फेरही ॥ इन्द्रधनुषविशाल कबहूँदरसई।सुखदपावसकी छटाअति सरसई५२

दोहा—इमि अति सुभग प्रमोद वन, बाढ़ी छटा अपार ॥
पावसऋतु उत्सव समय, वर हिंडोल विहार ॥५३॥
श्रावण शुक्ल सु तीज तिथि, लखि औसर अलिवृंद ॥
वन प्रमोद हिंडोलनव,सजो सुभग सानंद ॥ ५४ ॥

लतिका ।

हेम खंभ विशाल मणि गण खचित है । बेल बूँटे रंगके बहु रचित है ॥ मुकुर अगणित भाँतिके लागे घने । मनो मनसिजके सुभग करते बने॥ ५५ ॥ रुचिर डाँडी राजहीं बहु रंगकी । जगमगत जिहि ज्योति सरस सुढंगकी ॥ नगन जटित अमोल चारौं चारु है ॥ मनो सुखमाकी सुखद सुखसार है ॥ ५६ ॥ लाल बेलन चाखडी चित्रित घनी । ललित चमकत चहूँदिशि मर्कत मनी ॥ झूमका बहु स्वच्छ मोतिनके बने । बीच बिच कहुं लाल पन्नासों घने ॥५७॥ सुभग पटुली अरुण विद्रुम मय लसै । मध्य चहुं बहु मणिनकी अवली बसै ॥ झालरे नव रंग जरित जरावकी । अमल मोतिन युक्त नवल बनावकी ॥ ५८॥ मृदुल रेसम डोर पचरंगी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खरी। अधिक छबि सरसात मोतिनसों भरी॥ कहूँ गाथे नव सुगंधित फूल हैं। जहाँ अलि कल रव करैं अनुकूल हैं॥५९॥ शिखर सुंदर अरुण मणिमय राजहीं। निरखि सो छबिबालरविद्युति लाजहीं॥ हरित नीलमणीनके बहु मोर हैं। नचत मनहुँ सजीव करत न शोर हैं॥६०॥ सखिन साजि हिंडोल सबही भांति सो। अति विचित्र अनूप निज गुण जाति सो॥झूलि हैं सिय पीयदोऊ मोदसों। करति अलि अभिलाष सकल विनोदसों॥६१॥समय लखि सखिगण चलीं शृंगार कै। वसन भूषण सरस अंगसुधार कै॥ जाय दंपति ढिग रहीं कर जोर कै॥ बैन मृदु हँसि कहत दुहुँन निहोर कै॥ ६२॥ सुभग पावस चहूँ दिशि छबि छै रही। त्रिविध सरस समीर अति सुख दै रही॥हरित भूमि विशाल उपवन राजही।मधुर शब्द सुहावने घन गाजहीं॥६३॥ ललित लघु बुंदन फुही सुंदर परै॥ निरखि सावन रूप मनमनसिज हरै। हुलसिप्यारीपीयमुदित सिधारिये॥ झूलिये गल बाँह दै सुखकारिये॥ ६४॥सुनि सखिनके बैन मृदुल सुहावने। भये दंपति मुदित सुख सरसावनें॥ पीय मुख सिय सीय मुख पिय देखिकै। धरे दुहुँ गल बाँहआनँद पेखिकै॥६५॥वन प्रमोदहि चले सखि गण संगमें। होत कौतूहल विविध रस रंगमें।लिये अलि सुखपाल दंपतिराजहीं।निरखि छबि रति मैन कोटिन लाजहीं॥६६॥ सरयुतीर प्रमोद वन शोभा महा। नित्य पिय प्यारी विहारस्थल जहाँ॥गयेयुगलकिशोर हिय आनँद भरे॥ झूलहीं सिय पीय भुज अंस नधरे॥६७ भाँति इहि झूलत सदा दंपति भले। गीत वाद्य सँगीतके नवरँग रले॥नचति गावति सखीगण प्रमुदित सबै।समैनिजनिज रागिनि सुंदर फबै॥ ६८॥ कोउ झोका देत अली झुलावहीं। कोउभर आनँद विजन डुलावहीं॥ कोउ प्यारे दृग दृगनसों जोरहीं॥ कोउ बलिहारी करैं तृण तोरहीं॥६९॥ कबहुँ झोंका देत प्यारे रमकिकै।डरपि उर लगि जातप्यारी झमकिकै॥ कबहुँ पियगहि लेत सियको अंकमें॥ कबहुँ हँसि बतरात दोउ निसंकमें॥७०॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रँग भरे इहि भाँति झूलतसोहहीं॥ निरखि छबि रति काम कोटिन मोहहीं॥कहति प्यारीलाल धीरेझूलिये॥डरति हम सुकुमारिक्यों इमि भूलिये ॥ ७१ ॥ वीरके सुत वीर हौ तुम श्यामजू ॥ डरति अधिक अधीरहैं हम वामजू॥तुमहिं धनु तोरत न लागी बारहै ॥ हमहिं निजशृंगारहीको भारहै ॥ ७२ ॥ सुनि रसीले बैनप्यारीके नये ॥ प्राणप्यारे सुरसहिय प्रमुदित भये ॥ चाह उर बाढ़ीघनेरी लालके ॥ बहुरि झोकादियो मिसकरि ख्यालके ॥ ७३ ॥लखि निठुरता लालकी अति लाडिली ॥ मानिकै मनमान उठि तहँ ते चली॥लसत पावस कुंज बहुसोभाजहाँ॥मोरि मुखनख लिखत महि बैठी तहां ॥ ७४ ॥देखि अलिगण मान चकित जहँ तहीं॥ कछूसियजूसंग कछु पियढिग रहीं॥ विकलबोलत बैनप्यारेदीन हैं ॥ धरत धीर न नीर विन जिमि मीनहैं ॥ ७५ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

कोऊ जाय सुघरसहेलीलाडिलीको यहविनयहमारीकरजोरकै सुनावो धाय ॥ इतौ तिहारे रस रूपकेअधीनघने तुमहौप्रवीन निठुराई यौं धरा क्या हाय॥रावरो निहारि रुखरहतसदाहीमोद तन मन प्राण भये विकल वियोग पाय॥रसिकविहारीप्यारीडारि गलबाही वेगि विरह कटारी लगी भारी सौ सँभारो आय॥७६॥ चंद्रकला परम प्रवीन गुण आगरी होजाय प्राणप्यारी ढिगकहो कर जोरिकै॥सुभगसलोनी तुम सुंदरचतुर बालप्रियाको मिलावो वेगि नेह रस बोरिकै ॥रसिकविहारी हेमा क्षेमादिकप्यारीअली क्यौं न अब विरह सुनावो हायदौरिकै ॥ विनैहमओरतेजूकीजो चारुशीला चारुकाहे चित्तचोरिआज बैठी मुखमोरिकै७७।जाय सखि बृंदपायऔसर विलोकिरुख जोरि कर मंद मृदुवचन उचारे हैं॥स्वामिनी सुजान प्राणप्यारी सुनिलीजै विनैं विकल विहाल लाल विरह तिहारेहैं ॥ खानपान भूषण वसन सुख सनसवै रावरे वियोग वश निपटविसारे हैं॥रसिकविहारी चलिकीजियेसुखारी बेगि मन वच कर्म प्यारे रसिक तिहारे हैं ॥७८॥पलकबिछोह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जासों आज लों भयो ना कहूँ तासों मुख मोरिमान गहि के रहीजे क्यौं॥हाय प्राणप्यारीजक लागीतबही तेयह दयाहिय लाय तिनै आनँद न दीजे क्यौं॥ रसिकविहारी बरसावन सुहायो चहूँ प्यारे संग झूलि सुख सुन्दर न लीजे क्यौं ॥ घेरि घहरावैं घनघुमड़ प्रमोद वन गल्ल भुज डार प्यारी रमन न कीजे क्यौं ॥ ७९ ॥

सो०—हे प्यारी सुखदान, जैसी तुम गुण आगरी ॥
त्यों प्यारे रसखान, योग विरंचि भलो रचो ॥ ८०॥
कीजे तहँ न विछोह, तुम विन प्यारे विकल अति ॥
दुहुँन दुहूँ मिलि सोह, दुहुँ विन लखिय मलीन दुहुँ८१॥

सवैया कवित्त ।

क्यों हठि मान कियो नवला तुम जीवनमूर ललाकि सदाई॥
श्याम निरंतर रावरे हीय बसैं छिनहूँ विलगाय न जाई ॥
रीति नई विपरीति कहा यह रूठि रही पिय सों अनखाई ॥
लाडिलीरोष विहाय सबै रसिकेश मिलौ हियसोंहियलाई ८२
आज दशा लखि लालनकी सखियान सबै उर बाढत पीर है॥
रावरो मान विलोकतही तनु प्राण घनोविधि होत अधीरहै ॥
राजकुमारि विनै सुनिये रसिकेश मिलो सजि भूषण चीर है॥
हो मिथिलेशसुता इततो उत वे अवधेश तनै रघुवीर है॥८३॥
शील दया अरु प्रीति सुरीति हियबिच रावरे सोह विशेखी॥
ज्यों घनदामिनि फूल सुवासहि कोऊ कहूँ विलगात सुपेखी॥
प्यारी बिनापियप्यारीबिना पिय रंचलहैं सुख हैकिनलेखी ॥
त्यों रसिकेश तिहारे विषे सुइती निठुराई न आजलों देखी८४

चौ-इहिविधिसखिप्यारिहिसमुझावैं ❀ करिमृदुविनयसुमानछुटावैं
तौ लग राजकुमर अकुलाई ❀ बोलेमधुरप्रिया ढिग आई॥८५॥

सवैया कवित्त ।

नेक निहारौ प्रिया इत तौ किहि हेत इती निठुराई धरी है॥
लाडिली क्योंन कहोहँसिकैसु कहा हमते बड़ि चूक परी है॥
चन्द्रकला विमलादि सखी विनती हम ओरते केती करीहै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रंच दया नहिं आई हिये अजहूँ दृग सैन सुरोष भरीहै॥८६॥
कहूँ घनसों तड़िता मिलि जात लता लपटी तरु मध्य चहूँ ॥
चहूँ दिशि प्राविट रूप अनूप भलो दरशै ऋतु माहिं छहूं ॥
छहूं अरु चार अठारहमें प्रिय हीन प्रमोद लखो न तहूं ॥
तहूं पुनि हीय विचारौ प्रिया कोउसावन मान करै न कहूँ८७॥
नव रूप उजागरि नागरि आगरि रोष तजौ किन भूतनया ॥
इन मोरनको निक सोर सुनौ कह बोलत हैं पपिहा छनया ॥
रसिकेश विचारहु प्यारी हिये यहयोग भलो विधिने बनया॥
हम हूँअवधेश किशोर प्रिया तुमहूँ मिथिलाधिपकीतनया८८॥
सुनि बैनसिया जूकहो हँसिकै हम जानतिहैं तुमप्यारे छली॥
पिय बोले जू जैसेहैंतैसे तिहारे प्रियाजू भलातुम तौ हौ भली॥
रसिकेस लखौ अलिके गुणकैसे तऊ रस देत प्रसून कली ॥
कपटी सबकारे सुनौघनश्याममलिंद विचारेकी काह चली८९
स्वारथ के तुम मीत लला कछु रंच दया नहिं हीय तिहारे ॥
पीर पराई न जानत हौ छल छंदनमें सुप्रवीन अपारे ॥
जीय रुचै सु करौ न डरौ सिगरे हम रावरे फैल निहारे ॥
आये मनावन बोलत मीठे सुबैन इतै जु भले पगधारे॥९०॥
कोर भले सब प्यारी सुनौ जगजीवन दायक हैं घनकोरे ॥
नैन रुचैं कजरारे हिये रसिकेश सुकेश सुहात हैं कारे ॥
कोकिल कारे कितो सुख देत सिंगार मनोज सुभावत कारे॥
रावरी आयसु पालैं तिहूँ पुर सो कमलापतिहू अतिकारे ९१
लाल सुनौ इककारे भुजंग डसैं जिहिको वह होत अचेत है ॥
पावसरैनि जु कारी अंध्यारी घनो विरहीन हिये दुख देतहै ॥
कारो हि है विरहा कपटी जिन कोटिन प्राण लये विनहेतहै ॥
कारेठगीमिथिलापुरकीतियऊची उसाँस सो आजलोंलेतहै९२
लाल कही हँसि प्यारी सुनौ हम तौनकछू छलछन्द न जानैं॥
नागरि होति प्रवीण घनी जिहिकी रति लोकहु वेद बखानैं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रावरो आनन पंकज सो तिहिकी रस चाह मलिंद समानै॥
वादिन दीजिय दोषप्रियारसिकेश बनैगीदया उर आनै ९३॥
झूलतहीं मिचकी निक देत धरो तुम रोष प्रिया जु विशेखो॥
चूक निहारि किती विनती कर जोरकरी सु कछू नहिं लेखो॥
रावरो कोमल चित्त घनो सुन कानन रंचन नैंनन पेखो॥
प्यारी पियासोंकहूँ रसिकेशइतोहममान नआजलोंदेखो९४॥

घनाक्षरी-कवित्त।

सरस रसीले व्यंग्य वचन दुहूँके होत ताही समै घेरि घनघटा घहरानी है॥झोकिझोकि पवनप्रचंड तरुतोरै लगी धाराधर धारा धरा मध्य सरसानी है॥रसिकविहारीकारी रैनि अँधियारीअति दामिनी दमकि मेघमंडल समानीहै॥ नवल किसोरीदेखिपावस ससंकित ह्वै नृपति किशोर उर दौरि लपटानी है॥ ९५॥

दोहा-भयो मान मोचन दुहूँ, हृदय बढो आनंद॥
करी आरती बेगही, मुदित सहचरी वृंद॥ ९६॥
पुनि आनंदित नित्य प्रति, झूलत युगल किसोर॥
परम परस्पर प्रीति लखि, सखि डारैं तृण तोर॥ ९७॥

सवैया कवित्त।

सुंदर दंपति की छवि देखनको पुरवासिनि आवैं घनी॥
सब चंद्र मुखी तिय साजे शृंगार स्वरूप अनूपम अंग बनी॥
रसिकेस परस्पर बैन कहैं बहु भाग्य सराहत मोदसनी॥
हम धन्यलखैभरनैननजो सियस्वामिनिओ रघुवंशमनि ९८॥
कोऊ कहैं सियजू पटरानी मिली बडभागी नरेश लला॥
कोऊ कहैं इनकी सम को कमला विमलादिक चंद्रकला॥
कोऊ कहैं तिय प्यारिहि धन्य जु त्यागत पीय न एकोपला॥
कोऊ कहैंहमसों जगको रसिकेसलखै छवि जो अमला ९९॥
कोऊ पसारकै अंचलको विधिसे कर जोर कै येही मनावैं॥
औध निवासिनि होवैं सबै हम जोरी अनूप निहारि सुहावैं॥
हेरैं कृपा करि लाल सिया रसिकेश सदा सुख सों अपनावैं॥
प्यारीपियापदपंकजमेंनितनेहबढैयह आशिख पावैं॥१००॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोऊ कहैं इन राजकिसोरकी आँखनमें है सखी कछु टोना॥
जाके विधैं डर अंतरमें तिहि फेर:सुहाय नहीं सुख सोना॥
कोउ कहैं मुसक्यान कृपान ह्वैलागत दुःख परै री सहो ना॥
कोउ कहैं रसिकेश सबै तनु सुंदरहै कछु जातकहोना॥१०१॥
कोउ कहैं सखिरी निरसंक ह्वै प्रीतमप्यारी निहारिबो कीजे॥
कोउ कहैं तजियेकुलकानभट्ट इनसों मिलि कै कह लीजे॥
कोउ कहैं रसिकेश सुनौ अब एक उपाय भलो चित दीजे॥
योगिनि ह्वैतनुलायविभूतिसुऔधकीवीथिनवीच रमीजे १०२
दोहा—इहेविधि नेह भरी सबै, वचन परस्पर भाष॥
प्रति दिन सुख पावत रहैं,सिय सियवर हियराख॥१०३॥
झूलत अष्टादश दिवस, यों सिय पिय मिलि दोउ॥
मणि पर्वत वन महल कहुँ,जबै जहाँ रुचि होउ॥ १०४॥
कोऊ सिय कृत मानको, भ्रम कछु हीय न मान॥
प्रथम लिखे जे ग्रंथ वर, तिन महँ लखो सुजान॥१०५॥
बहुरि स्वकीय मानको, है बहु ठौर प्रमान॥
भेद लखौ साहित्यके, तहाँ सकल विलगान॥ १०६॥

प्र०। रसमंजरीग्रंथे। सूत्र।

स्वामिन्येवानुरक्तास्वकीया।स्वीया तु त्रिविधा।मुग्धामध्या प्रगल्भा चेति।मध्याप्रगल्भेप्रत्येकं मानावस्थायां त्रिविधे॥ धीरा अधीरा धीराधीरा चेति॥ इत्यादि।

इति श्री रा० र० वि० वि० हिंडोल बिहार वर्णनं नाम द्वितीयो विभागः॥ २॥

दोहा—इमि अगणित आनंद नित, पुनि पावसके अंत॥
आई शरद अनूप ऋतु, सब हिय मोद अनंत॥ १॥
संतत प्रति ऋतु शरदमें, करैं सखी गण रास॥
निरखैं सिय रघुवर मुदित, बाढत हृदय हुलास॥२॥
कबहूँ दंपति नेह युत, अति अनंद उमगाय॥
सखिन मध्य एकांत थल, नटत मनोहर गाय॥ ३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याते सब आली सदा, सजे रहैं सब साज ॥
नृत्य गान बहु वाद्य नित, ठानैं तीय समाज ॥ ४ ॥

हरिगी० छंद ।

कबहूँ सुभैरव १ मालकोश २ हिंडोल ३ दीपक ४ गावहीं ॥
श्रीं ५ मेघ ६ ये षट राग नारि समेत शुद्ध सुहावहीं ॥
कबहू जु शंकर रागिनी बहु सरस सुरन उचारहीं ॥
तिहुं ग्राम इकविस मूर्छना युत सकल भेद सचारहीं ॥ ५ ॥

दोवई छन्द ।

भैरव तिय भैरवी १ सिंधवी २ मधुमाधवी ३ रसाला ॥
बंगाली ४ बैराड़ी ५ सुंदर गान करैं वरबाला ॥
मालकोशकी नारि गुणकली १ खंबावती २ अनूपा ॥
ककुभा ३ अरु टोडी ४ सुठि गौरी ५ गावैं सखी सुरूपा॥ ६॥
पटमंजरी १ बिलावल २ सुंदर रामकली ३ मनहारी ॥
अरु देसाख ४ ललित ५ ये गावैं हैं हिंडोलकी नारी ॥
कामोदी १ देशी २ केदारा ३ नट ४ कान्हरा ५ सुढंगा ॥
ये दीपक तिय गान करैं तिय शुद्ध सुरनके संगा ॥ ७ ॥
आसावरी १ मालश्री २ मालव ३ अरु धनाशिरी ४ नीकी ॥
सुभग वसंत ५ सरस सुरगावैं सखी नारि ये श्रीकी ॥
मेघतिया सुठि टंक १ मलारी २ देशकार ३ भूपाली ॥४॥
सुखद गूजरी ५ शुद्धरीत सोंगान करैं वर आली ॥ ८ ॥
दोहा–पंज पंच य सहित जे, हैं षट राग रसाल ॥
गान करैं आली सबै, शुद्ध समय सुरताल ॥ ९ ॥
पुनि जे शंकर रागिनी, रागिन राग मिलाय ॥
तिनहुं सखी सब गावहीं, शुद्ध सुरन सरसाय ॥ १० ॥
ईमन १ हंस २ हमीर ३ परेवी ४ मारू ५ गौड ६ सहाना ७॥
दरबारी ८ काफी ९ सिंदूरा १० सूहा ११ तिलक १२ अडाना ॥१३॥
धौलशिरी १४ बड़हंस १५ अहीरी १६ सरपरदा १७ खत १८ गारा १९

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पीलू२०बरवा२१माझ२२शंकरा२३लूम२४तिलंग२५बहारा २६
सिंधुभैरवी२७ककुभबिलावल२८चैती२९ जाजमलारा ॥ ३० ॥
मुलतानी३१घाटो३२प्रदीपकी ३३ परज३४ कमोदमलारा ३५॥
चौरा अष्टक३६मंगल अष्टक३७ गौडकली३८भठियारा ॥३९॥
लंकदहन सारंग४०सावानी४१पट४२हिंड़ोलबहारा ४३ ॥१२॥
सोरठ४४रामपूरिया४५जँगला४६पंचम४७ नटकल्याना ॥४८॥
जैजैवंती ४९ भीमपलासी ५० देवगिरी ५१ कल्याना ॥५२॥
नट नारायण ५३ चैती गौरी५४ युगिया५५ गौडमलारा ॥५६॥
श्याम५७शंकराभरन५८त्रिवेनी५९सारंग६०देवगंधारा ६१॥१३
लंकदहन ६२ पूरवी ६३झंझौटी ६४ खेमखरज ६५ सुधरैया६६ ॥
तिलक कमोद६७विहाग६८विहंगा६९कुंभावती ७० अहैया ७१
नट सारग ७२ विभास ७३ पहाड़ी ७४फरोदस्त ७५ सामंता७६॥
जैतश्रिरी७७पूरिया७८मनोहर७९जैत ८० बहारवसंता८१॥१४॥
दोहा--नट मलार ८२ बागेसरी ८३, अरु ईमनकल्यान ८४॥
देशमलार८५विहागडा८६, देश८७श्यामकल्यान८८।१५
सरस्वती८९बंगालश्री९० और लूम सारंग ९१ ॥
सिवरी ९२कुंभारी ९३ तथा, अपर गौडसारंग ९४॥१६॥
गौरीकालँगडा९५ रुचिर, अरु सोरठमल्हार ९६॥
पुनि सारंग बड़हंस ९७ सोवर धूरिया मलार९८॥१७॥
बहुरि सु गौरी कान्हरा ९९, अपर झूम सारंग ॥ १०० ॥
अरुसोहनी१०१सुईमनी, १०२पुनिसामतसारंग १०३॥१८
झूम१०४धूरिया१०५नारदी१०६, अरुकान्हरामलार१०७
गरिनारीसोरठ१०८तथाभगवंती१०९गिरिनार११०॥१९

दोवई छंद ।

श्रीबहार १११ भैरवीकलंगडा११२ काहल११३ नटकेदारा११४
काफी सिंधु ११५सिंदूरा सोरठ ११६अरु कान्हरा बहारा११७॥
सूर मलारी११८राम मलारी११९ यमन मलारी१२० बाला१२१

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इनहि आदि शंकर सुरागिनी गावैं सखी रसाला ॥ २० ॥
खरज १ ऋषभ २ गंधार ३ सु-मध्यम ४ पंचम ५ धवत ६ हीके ॥
अरु निषाद७ये सप्त सुरनको लै स १ रि२ ग३म४प५ध६नी७के
औडव १ अरु षाडव २ सम्पूरण ३ अस्थाई १ आगेही ॥ २ ॥
अवरोही ३ संचारी ४ संयुत गान करैं मनमोही ॥ २१ ॥
इकताला १ अद्धा २ अरु रूपक ३ धीमा ४ जलद तिताला ५ ॥
सूल ६ झपक७त्यौंरा ८ धमार९पुनि आडा१०शुधचौताला११॥
असावरी १२ तिमि फरोदस्त १३ इन आदि ताल अभिरामा ॥
ब्रह्म१४रुद्र१५लक्ष्मी १६गणेश१७वर विष्णु१८बजावैंवामा२२॥

दोह—इमि अपार संगीतके, भेद सकल नित ठान ॥
नृत्य गान बहु वाद्य युत, साजे रास विधान ॥ २३ ॥
सो लखि दंपति मुदित ह्वै, दीनी हुलसि रजाय ॥
शरद रैनि अब रास वर, ठानौ साज सजाय ॥ २४ ॥
सरयू उत्तर तीर थल, परमरम्य सुखधाम ॥
त्रै योजन मंडल विशद, रचौ रास तिहि ठाम ॥ २५ ॥
कुंजवाटिका बाग वन, सरि सर सुभग सुढार ॥
तिहि थल रास विहारको, आनँद होय अपार ॥ २६ ॥
लहि रजाय अलि वृन्द तहँ, सपदि सजे सब साज ॥
गये सुदंपति मोद भरि, संयुत रहशि समाज ॥ २७ ॥
शुभ्र वसन भूषण विविध, दंपति कियो शृँगार ॥
सब ललनागण त्यौं सजे, नख सिख अंग सुढार ॥२८॥

दोवई छन्द।

चंद्रकला १ उर्वशी २ मेनका ३ चन्द्रमुखी ४यरबाला ॥
मृगलोचना ५ चारुशीला ६ अरु क्षेमा ७ रूप रसाला ॥
त्यौं राधा ८रंभा९ सुमालिनी १० सुठि सुलोचना११ नारी ॥
हारिणी १२ ये द्वादश आली हैंसियकी प्राणपियारी ॥२९॥
हेमा १ वीणाधरी २ हंसिनी ३ गुणवल्लरी ४ ललामा ॥
चन्द्रावली ५ सुभद्रा ६ पदमा ७ मनोरमा ८ अभिरामा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुखद चन्द्रभागा ९ सुमोहनी १० पदमगंध ११ मतवाली ॥
सरस बरारोहा १२ द्वादश ये राजकुँवरकी आली ॥ ३० ॥
दोहा—चतुरविंश ये मुख्य सखि, इनके यूथ अपार ॥
मिलि सुरासमंडल रचो, सजि अनूप शृंगार ॥ ३१ ॥
अधिक चतुर्दश त्रिशतअरु, चौविस सहस२४३१४सुबाल॥
रचो रासमण्डल रुचिर, लखत सिया रघुलाल ॥ ३२ ॥
चन्द्र चंद्रिका चारुचहुँ, राका शरद प्रकाश ॥
मणिदीपक भूषण प्रभा, मिलि भो अमित उजास ॥३३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

श्यामा श्यामसुभग सिंहासन विराजे चारु आली सब साजे साजसहित उमंगके॥ वीणा औ मृदंग वेणु मधुर मंजीर मंजु बाजने बजावें वर विविधसुढंगके ॥ ठानो गतिकार झनकार घुँघुरूनछाई रसिकविहारी पद न्याय बोल संगके ॥ थेईततथेईतातिथैयाथुंग तत्ता थेई आदिक सचारैं भेद जैसे गीत अंगके ॥३४॥पद चपलाई कोमलाई मधुराई मंजुकर कमनीयताई अतिछबि छाईहै॥ लंककी लटकलोनी लोचन चटक चारु मटक उतंक बंक भ्रुकुटी निकाई है॥ ग्रीवकी डुलन शोभा खुलन सुअंगनको हार नथ कुण्डलकी झूलन सुहाई है ॥ रसिकविहारी रासमंडलके मंडल की कुण्डली विलोकि बिज्जु कुण्डली लजाई है॥३५॥मंजु मृगनैनी पिकबैनी सुखदैनी बालकरैं कलगान कोकिलानकीसमानके॥सम सुरताल लै विरामरिक्त पूर भूर गीत पदछंद बन्दविविध विधानके॥ निर्तत नवेली तांडवादि जे अनेकगति कर पदजानुभेद सकलकलानके॥ रसिकविहारी सुरनारी अवलोकि सारी दंग ह्वै किये हैं मान भंग अप्सरानके॥३६॥अमित उमंग है अभंग वर अंग भरी अंतरंग अरु बहिरंग ढंग छावै है॥ नैन सन वैन कर चैन औ अचैन दशा नख शिखहावभाव शुद्ध दरशावैहै ॥ दीपकुम्भ कंदुककृपानमाल जाल कलावारीचित्रकारी ये सुनृत्य सरसावैं हैं॥रसिकविहारीगुण वारीनौल नारी सारीरुचि अनुसारी श्यामाश्यामको रिझावैंहैं३७

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरिगीतिका छंद।

इमि रास बहु सुखरास ठानो शरदरैनि प्रकाशमैं।
गंधर्व किन्नर अमर तिय मिलि लखहिं दुरि आकाशमें॥
तिहि समय सरयू सलिल खग मृग अपर जड़ चेतन जिते॥
सबही थकित ह्वै रहे जहँ तहँ भये अति मोहित तिते ॥३८॥

दोहा—शिव विरंचि सुर राज रवि, नारदादि ऋषिराय॥
लखत रासमंडल सबै, दुरि नभ मंडल आय ॥ ३९ ॥
उडुगणपति उडुगण सहित, अचल भये लखि रास॥
गति मति भूले मुदित अति, कीनो अमित प्रकास॥४०॥

घनाक्षरी कवित्त।

दरनपैद्वारनपैकलितेकिवारनपद्रुमनपैडारनपैलोनीलतिकानपै हाटन पै बाटनपैनीकेनव घाटनपै गेहनपैसेजनपैअमलअटानपै॥ वागन पै वनपै निकुंजन पै पत्रनपै फूलन पै कूलनपै सर सरितान पै॥ रसिकविहारी सुखदाई चहुँघाई भाई छाई यह शरद जुन्हाई वनितान पै॥ ४१॥

दोहा—सो चंद्रिका विलोकिकै, हुलसे सिय रघुचंद॥
नहिं मायो सुख हीयमें, उमगो अधिक अनंद॥ ४२॥
उठि दंपति अनुराग भरि, नृत्य साज सब साज॥
आय रास मंडल विषे, ठाढ़े मध्य समाज॥ ४३॥
निरखि व्योम दिशि अर्ध निशि, जानी राजकुमार॥
रही याम द्वै यामिनी, हिय मधि कियो विचार॥ ४४॥
कही सियहि तब रैनि अब, बीति गई ह्वै याम॥
या छिनबाढत रामको, छिन छिन सुखअभिराम॥४५॥
शरदनिशा यह आजकी, जुपै रहै इक वर्ष॥
तौ प्यारी अभिलाष भरि, होय रासयुत हर्ष॥ ४६॥
सुनि बोलीं सिय लाडिले, होय यही भलि बात॥
हेरो रास अनंद अब, छिन छिन प्रति अधिकात॥ ४७॥
तब रघुवर भाषी प्रिया, ऐसिहि अब ध्रुव होय॥
आज रैन इक वर्षकी, रहै न जाने कोय॥ ४८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इत इमि दंपति हिय रुची, उत सब देव समाज ॥
यही चहैं आनँदछके, प्रात होय नहिं आज ॥ ४९ ॥
भई तेसिही रैनि वह, एक वर्ष परमान ॥
सुर मायावश भेद सो, कोऊ कछू न जान ॥ ५० ॥
करहिं रासलीला मुदित, सहित सीय रघुचंद ॥
रीझत रिझवत परस्पर, अलिदंपति सानंद ॥ ५१ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कौशलाधिराज सुत राम रमणीय जैसे तैसी मिथिलेश सुता सिय अभिराम हैं॥रसिकबिहारी सुखकारी छबि धारी दोउ नृत्य गान वाद्यमें प्रवीण गुणधाम हैं ॥ पूरण मयंकराका शरदनिशामें रास करत उमंग संग रंग भरी वामहैं ॥ दम्पति सुरूप उपमाकोहै न रूप कहूं श्यामा श्याम रूपसे अनूप श्यामा श्याम हैं ॥ ५२ ॥

दोहा–छाई सुंदर शरद ऋतु, सुखदाई चहुंओर ॥
निरखि छटा आनंद भरि, निर्तत युगल किशोर ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

गुंजत मलिंद पुंज नव नव कुंजनमें छाकेमत्तडोलैमकरंद पान करिकै ॥ शीतल सुधाकरहूमुदित मयूखनते श्रवत पियूष सोचको रहेत धरिकै॥रसिकविहारीसुखकारी चंद्रिका अनूप हृदै हुलसात अनुराग राग भरिकै ॥ निर्तत सुढंग रस रंग श्याम श्यामा संग अंग अंग मोरत अनंग मान हरिकै ॥ ५४ ॥ ता छिन अपार सुख छायोरासमंडलकोजेतेजड़चेतन ते सकल लुभायगे ॥ झूमि भूमि चूमेंडार अंबन कदंबनकीपक्षीतेनिपक्षीसेअचेत महिआयगे॥ चित्र सम ह्वैकै रहे परम विचित्र मृग मुर्छे सुर सुरताकी सुरति भुलायगे॥रसिकबिहारीसोनिहारी छबि भारी सबै तनमनप्राण होय आनंद छकायगे ॥ ५५ ॥

दोहा–चंड चेतन मोहित भये, काहु कछू सुधि नाहिं ॥
अति मूर्च्छित ह्वै चंद्र तहँ, गिरो सु धरणी माहिं ॥ ५६ ॥
ता छिन भयो प्रकाश अति, निरखि सीय रघुराज ॥
उझकि चौंकिचितये चहूं, संयुत सकलसमाज ॥ ५७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लखो मयंकहि विकल तब, जनकसुता अकुलाय ॥
करुणाकरि धाई सपदि,परम कृपा उर लाय ॥ ५८ ॥
वर सरयूतट रेणुमधि, धावत अतिहि उताल ॥
चणकत्वचाइक शुष्क अति,चरण चुभी तिहिकाल॥५९॥
सो लखि सिय दीनो तबै, घोर शाप रिसलाय ॥
कबहूँ इमि थल आज ते, चणक नहीं उपजाय ॥ ६० ॥
यौं कहि पुनि उमगायकै,धाय चंद्रढिग आय ॥
परसायो तिहि शीशकर, सुतसम गोद उठाय ॥ ६१ ॥
सियकर परसत चेत भो, लहो परम आनंद ॥
शीश नाय सकुचायकै, गयो व्योम मधि चंद ॥ ६२ ॥

दोवई छंद ।

सो लखि मुदित राम तब भाषी चन्द्रगिरो इहि ठामा ॥
सिय पालो याते या थलको चन्द्रपालहै नामा ॥
यौं कहि गहि प्यारी कर सानँद गवने अतिहि उताला ॥
ताछिन भयो प्रभात पक्षिगण कीनो शोररसाला ॥ ६३॥
तब सब रास शृंगार उतारे ताछिन जनकदुलारी ॥
कछु मुसक्याय मधुर पिय कर गहि मंजुल गिरा उचारी॥
वर्ष प्रमाण होय रुचि कीनी भई रासनिशि सोई ॥
एकहि दिवस शेष यह तामधि दीनो चन्द्र विलोई ॥६४॥

दोहा–कही तबै रघुवर प्रिया, कीजत रास सदाहि ॥
प यह इक दिनशेषसो, ह्वै है द्वापर माँहि ॥६५॥
यौं कहि अति आनंद युत, ठानत हास विलास ॥
सिय समाज युत महल मधि, आये सहित हुलास ॥६६॥
इमि प्रति दिन प्रति शरद ऋतु, होय रास अभिराम ॥
अपर अमित उत्सव सदा, विहरत सीताराम ॥ ६७॥

इति श्रीरामसायन र० वि० वि०रासविहारवर्णनं नाम तृतीयो विभागः ॥ ३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—श्रीसीतारघुवर सदा, विहरत अवध मझार ॥
समै समै उत्सव उचित, होत अनंद अपार ॥ १ ॥
एक समय मिथिलाधिपति, लक्ष्मीनिधिहि पठाय ॥
परम प्रेम युत रामको, बुलवाये हुलसाय ॥ २ ॥
लषण शत्रुसूदन अपर, सेवक सखा अपार ॥
लै सानँद रघुवर गये, मिथिलापुर ससुरार ॥ ३ ॥
जनक सुनैना आदि बहु, निमिवंशी नर नारि ॥
पुरवासी सबही मुदित, रघुवर रूप निहारि ॥ ४ ॥
नई पहुनई प्रति दिवस, होय नगर रनिवास ॥
सिद्धा आदिक नारि बहु, ठानैं हास विलास ॥ ५ ॥

दावई छंद।

जनकनगर नर नारि अनंदित राघव छटा निहारी ॥
कहैं सकल मृदु बैन परस्पर छिन छिन लै बलिहारी ॥
धनुषभंग कीनो जबही अति हुतो सुभग वर रूपा ॥
पुनि आये तब और बढ़ी छबि अब कछु और अनूपा ॥ ६ ॥
तब बोली इक तिया बुद्धि वर अति अचरज यह आही ॥
छबि अधिकात सदा पैवयवपु एकै सरिस जनाही ॥
ता छिन विशद नारि भाषी यौं मुनि मुख सुनो प्रमाना ॥
सियारामको रूप रहै नित षोडश वर्ष समाना ॥ ७ ॥
इहिविधि निरखि श्यामसुंदर छबि छाकी हैं बहु नारी ॥
तिनमें एक वाम इमि मोही दियो प्राण तन वारी ॥
तासु दशा लखि संग सहेली जानि लई गति जीकी ॥
हृदय सनेह भूरि ऊपर कटु कही बात हितहीकी ॥ ८ ॥

सवैया कवित्त।

न्यारी चलै सब ते नितही अरु संग सखीन ते न्यारी रहै छट ॥
न्यारहि ठाट सुन्यारिहि वाट औ न्यारहि घाट रहै सरिता तट ॥
जानि परै रसिकेस न तो गति बात कहा तुव हीय गई जट ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोल भटू घटको अटको घट आयभरै तब आयभरै घट॥९॥
दोहा—यौं कहि पुनि बोली अली, बात लई हौं जान ॥
प्रथम दई सिख फेर हौं, कहों लेहु सो मान॥ १० ॥

सवैया कवित्त।

डीठ बचायके पीठ दै ईठहि ढीठ ह्वै ढीठ सों डीठहि जोड़ौ॥
जो कहिये कछु प्रीत ते नीतकी रीत तबैं सुनि भौंह मरोड़ौ॥
मानौ कही रसिकेश यही हौ बड़े घरकीकुल कान न तोडौ॥
फेरभलीपछतैहौललीनित या गलिकोअलीआयबोछोडौ११॥
टक दै तिहि देखनकी टक छोडभटू यह तोटक है न भली ॥
चहुँ चोचँद चोल चबाई करैं पुनि चोज चले चरचाजु चली॥
रसिकेश रसीली रहौ रसमें रसते रस राखहु रंग रली ॥
गुणलेहु कहों गुणके गुणबातन औगुणको गुणमान अली१२॥
दोहा—पुनि हेली यह प्रीति सम, और न दुख जगमाहिं ॥
जान परै जब जिय लगे, तब सब गुण दरशाहिं ॥१३ ॥

सवैया कवित्त।

लाज तजै निज साज तजै गृह काज तजै सुख दूर धरै सो ॥
मान तजै तन प्राण तजै कुलकान तजै दुख भूर भरै सो ॥
लोक तजै परलोक तजै हिय शोक तजै सब धूर परै सो ॥
योग औभोग स्वलोगतजै तबहीरसिकेश सु प्रीतिकरै सो१४॥
दोहा—पुनि हेली ये नैन निज, निपट प्रपंची जान ॥
मिले रहे मिलि मारहीं, ऐसे धूर्त महान॥ १५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

मिलत अगाऊ जाय नेकहूँ न मानै शंक फेरे ना फिरैहैं लोक लाज सब डारै तोरि ॥ लावत मिलायबेगि आपने सजातिनको आसन दै चित्तकी हियेसो नेह लावैं जोरि॥ रसिकबिहारी भनै रसनाको रसनासो रसनाके रसहि पिवाय मति डारैं भोरि॥ ऐसे ठग नैननकी कर ना प्रतीत ये तो देत पर हाथ मन माणिक वृथाहीं छोरि ॥ १६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–प्रीति बुरी वै गहि सखि, फेर विदेशी संग ॥
जिहि बिछुरे मिलिबो कठिन, विरह दहै नित अंग॥१७॥

सवैया कवित्त ।

गिरिसे गिरबोभरबोविषसेनिज हाथसे काटबो नीको गरेको ॥
पावकनें जरबोहै भलो नहिं खेद हिमालेंमें जाय गरेको ॥
त्यागबोहै दुहुँ लोकको लोनो नहीं है कछू दुख नर्क परेको॥
रसिकेश कलेशनजो इतनेनें सुहोत विदेशीसे प्रीत करेको१८॥

दोहा–सुनि बोली वह वाम तब, कहो सत्य सखि बैन ॥
कहा करों अब विवशहूँ, दरश विना नहिं चैन ॥ १९ ॥
अली श्याम गुण रूपको, कहँ लग करौं बखान ॥
तुमहिविदितहै सकल अरु, मो हियकी हिय जान॥२०॥

सवैया कवित्त ।

आननको उपमा अरविंदसो इन्दु कलासी कोऊ अनुमानैं ॥
नैन कुरंगसे कोऊ कहैं अलिखंजन मीनसे कोऊ बखानैं ॥
शेष न भाषिसकै छबिसो रसिकेश हिये शत शारदा आनैं ॥
साँवरेकीवा निकाई भटूअँखियाने तेमेरी लखैं सोई जानैं२१॥

घनाक्षरी कवित्त ।

आसन किधौं हैरूपभूपतिके शोभा देत कीधौंयह पंचबानहींके नौल घर है॥कीधौं पंथ आनँदके रसिकविहारी स्वच्छकीधौंवास हेत नैन मीननकेसर हैं । प्रेम केविलोकिवेके कीधौं द्वै मुकरराजें कीधौं मन मोहिबेके यंत्र वसी कर हैं ॥ लालके कपोल कीधौं कामने दिखाये युग सुमन गुलाबके बनाये आप कर हैं ॥ २२ ॥ खुलत चहूँधा खुशबोई के खजानेखूब वह महबूब जब आयकेचढैं अटा ॥ अलकैं अनूप अति अतर भरी सो चारुमुख पैं परैहैं जनु चन्द पैं घिरैं घटा॥रसिकविहारी रूप सरसरसीलो मंजु कोहै जो न जो हैं मन मोहे छैलकी छटा । आनन बिलोकि अंग भान न रहैरी वीर मार नैन बानन ते प्राणन करै कटा ॥ २३ ॥

दोहा–सुनि बुझाय पुनि अलिकही, करौ भटू वह काज॥
जाते सबही भाँति तुव, रहै लोक कुल लाज ॥ २४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—तबवहवामनेह मदमाती❀सत्यविशुद्ध रामरँगराती॥
संग सहेलिन प्रति झहराई❀वचन कहे दृढ सबहि सुनाई २५॥

सवैया कवित्त ।

होत नहीं कछु काहुहिते जग लोग वृथा समुझाय कै खूटै॥
प्राण रहै किन जाय भले धन धाम सो काम नहींकोउ लूटै॥
भूमि चलै नभ मेरु हलै बरु ऊपर ते शशि सूरहु टूटै ॥
होय सबैअनहोनी तऊरसिकेशलगी यह प्रीति न छूटै॥२६॥
डौंडी बजायके प्रीति करी तब कौन कीहौं अब लाजलजौं॥
जो कछु होनी हुती सु भई पुनि औरहु होय सु होयअजौं ॥
शंक न काहु की है रसिकेश रही पग रोपि कहा मैं भजौं॥
नेह न छोडोकबौंउन सोंसजनीवरु गेहऔ देह तजौं॥२७॥
टोकौं नहीं अब रोकौंनहीं हमसे सजनी न वृथाहिं अरूझौ॥
लाज बड़ाई घनी कुलकान की रारमें जाय तुमैं सब जूझौ॥
हौंतौं रँगी रंगसाँवरेके कछु होत न कोउ किते कहूँ झूझौ॥
होरसिकेश कहूँटुक काहूसनेही सों नेहकी रीतितौ बूझौ॥२८॥

दोवई छंद ।

तासु वचन सुनिकै सब बोलीं लोक लाज जौं त्यागो ॥
तौ तप करौ भस्म तनु लावो ब्रह्म ज्ञानमें पागो ॥
तब वह वाम राम अनुरागिनि तिन दिशि देखि रिसानी॥
भाषी बहुरि संग आलिन सों परम तत्त्व मय बानी ॥२९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

टौवा ये बनौवाजायऔरकोंसुनावोहम नेह कथा छोड़ बातदूसरी सुनैं नहीं ॥ रसिकविहारी श्यामसुंदरको त्यागि और दूजौ ज्ञान ध्यान हीय काहूको गुनैं नहीं । प्रेम वारि शीतलको मंजन विहाय नित्य योग ज्वाल मध्य निज देहको भुनैंनहीं।नीको मनमोहनके नेहमें पगोहै हम ब्रह्मज्ञान सीख वृथा शीशको धुनैं नहीं ॥३०॥

दोहा यौं कहि पुनि बोली तिया, मैं बहु सुने पुरान ॥
राम भक्ति ते अधिक कछु, कोउ न कियो बखान॥३१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्रह्मज्ञान तप योग जप, दान नेम व्रत भूर ॥
राम सहित उत्तम सबै, राम रहितहै धूर ॥ ३२ ॥

प्र० । महारामायणे श्लोक ।

न विधिर्न निषेधश्च प्रेमयुक्तं रघूत्तमः।इंद्रियाणामभावः स्यात्सोऽनन्योपासकः स्मृतः ॥ १॥ ध्याने पाठे जपे होमे ज्ञाने योगेसमाधिभिः ॥ विनोपासनया मुक्तिर्नास्ति सत्यं ब्रवीमि ते ॥ २ ॥ पद्मपु०।नतत्पुराणं न हि यत्र रामो यस्यां नरामो नच संहितासा॥ स नेतिहासो न हि यत्र रामःकाव्यंन तत्स्यान्न हि यत्र रामः॥३॥ शास्त्रं न तत्स्यान्न हि यत्र रामस्तीर्थं नतद्यत्र न रामचंद्रः॥यागः सयागो न हि यत्र रामो योगो सरोगो न हि यत्र रामः॥४॥नसा सभा यत्रन रामचंद्रः कालोप्यकालो कलिरेव सोस्ति॥संकीर्त्यते यत्र न रामदेवो विद्याप्यविद्या रहितांत्वनेन॥५॥येषां तुमानसंरामे लग्ननास्ति मनोरमे॥वंचिताविधिनापापास्ते वै क्रूरतरेण च ॥ ६॥ येषां रामः प्रियो नैव रामे न्यूनत्वदर्शिनः ॥ द्रष्टव्यं न मुखंतेषां संगमैश्च कुतस्ततः ॥ ७॥ पुनःमहारामायणे ॥रामनाम्नः समुत्पन्नो प्रणवो मोक्षदायकः॥ रूपं तत्त्वमसेश्चासौ वेदतत्त्वाधिकारिणः ८॥ रकारस्तत्पदो ज्ञेयस्त्वंपदोकार उच्यते ॥ मकारोसिपदं विद्धि तत्त्वं असिसुलोचने॥९॥ब्रह्मेतितत्पदं विद्धित्वंपदो जीवनिर्मलः ॥ ईश्वरोसिपदं प्रोक्तं ततो माया प्रवतते ॥१०॥ चिद्वाचको रकारः स्यात्सद्वाच्योकार उच्यते ॥ मकारानंदकं वाच्यं सच्चिदानंदमव्ययम्॥११॥व्यंजनाच्च क्षरोत्पत्तिरकाराद्ब्रह्म चाक्षरः ॥ रेफोनिरक्षरो ब्रह्म सर्वव्यापी निरंजनः ॥१२॥ इच्छा भूतोक्षरस्तस्य चाक्षरस्तेज उच्यते ॥ निरक्षरो घनस्तेजो वर्तते जानकीपतेः ॥१३॥ स्वयं निरक्षरातीतो राम एव इति श्रुतिः ॥ ब्रह्मज्ञाननिमग्ना ये भजंति सनकादयः ॥ १४ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—तासु वचन सुनिकै सकल, नारी परम प्रवीन॥
दृढ अनुरागिनि बालको, हरषि अंग गहि लीन ॥ ३३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब सराहि बहु भाँति तिहि, कही धन्य तू धन्य ॥
पाई पूरव सुकृत ते, रघुवर भक्ति अनन्य ॥ ३४ ॥
इमि रघुनन्दन रूप लखि, मुदित रहैं पुर लोग ॥
चहैं रहैं इत राम नित, होय न कबहुँ वियोग ॥ ३५ ॥
पुर परिजन नृपरानि सब, रामहि बिदा न देत ॥
प्रेम पगे सोऊ अधिक, भूले अवध निकेत ॥ ३६ ॥
जानत मिथिला अवधके, देखतके द्वै रूप ॥
अन्तरगति सुख अंग फल, एकहि सकल अनूप ॥३७॥
एक दिवस सिद्धा सदन, राजत हे रघुराज ॥
मिथिला वासिनि तियनको, तहँ बहु जुरो समाज ॥३८ ॥
होत सु हास अनन्द अति, ता छिन बोले राम ॥
आई पावस ऋतु अबै, हम जैहैं निज धाम ॥ ३९ ॥
तहँ बैठीं पुरवासिनी, वारवधू वररूप ॥
तिन महँ इक बोली विहँसि, सविनय बैन अनूप ॥४०॥
पावसऋतुमें कैसहू, कोऊ तजै न धाम ॥
मिथिला अवध सु एकहै, याते बूझौ श्याम ॥ ४१ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

सम्पाको न त्यागै नेक मेघ है पुरुषसो तौ लतिका तियासों लपटी हैं तरु जो हौं जू ॥जल है नपुंसक पै मिलै सरितासों सोउ सबै जड़चेतनकोमैनमन मोहौजू॥रसिकविहारी ऋतुपावस अनूप ऐसी यामें छैल तुमहिं विदेश किमि सोहौ जू॥नर हौ नमारी ना नपुंसक हौमेरीजानयेहो प्राणप्यारे यह साँची कहौकोहौजू॥४२॥

दोहा–सुनि तिहिके रसबैन मृदु, हँसीं अपर सब बाल ॥
हेरि मन्द मुसक्यायकै, मौन रहे रघुलाल ॥४३॥
पुनि तहँते उठि अनुज युत, मित्र सखनके संग ॥
गवने बाग बिहारहित, सजि सजि सुभग तुरंग ॥४४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आये विचरत बाग मधि, लखि पावस चहुँ ओर ॥
सबही प्रति हिय हुलसिकै, बोले राजकिशोर ॥ ४५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

घिरन लगेहैं घन घूम घूम चारौं ओर पावसके दूत आय फिरन लगे किधौं ॥ दौरि दौरि दामिनी दमंकन लगी हैं चौंकि विरहिनि कामिनीचमंकनलगी किधौं॥रसिकविहारी मोर नाचन लगेहैं मंजु रसिकविहारी रंगराचन लगे किधौं॥चलन लगो है यह शीतल समीर आज मनसिज वीर तीर घालन लगो किधौं॥४६॥

दोहा—इमि वर्णत विचरत बहुरि, आये धाम मझार ॥
ताछिन लाये पत्रिका, अवध नगर ते चार ॥ ४७ ॥
अपर पत्र सबही सुने, सियकर लिपि कर धार ॥
लखि सुख दुख छायो हिये, रघुवर करत विचार ४८ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

भोगभरी योग भरी सकल संयोग भरी प्रेम भरी पूरण पुनीतताकी रीतकी । साम भरी दान भरी दंडअरु भेद भरी वेद भरी परम अभेद भरी नीतकी॥रसिकविहारी बहु चाह भरी नेम भरी क्षेम भरी क्षमा भरी भरी शुभ गीतकी । मोद भरी विपुल विनोद भरी आई आज पातीलाडिलीकी किधौंथाती,यह प्रीतकी॥४९॥

दोहा—इमि मिथिलामें रामको, बीतगयो इकवर्ष ॥
जात न जाने रैनि दिन, नित नव आदर हर्ष ॥५०
सुंदर शेखर शीलनिधि, तेज रूप रसिकेश ॥
इनहि आदि बहु प्रियसखा, रघुवर संग सुदेश ॥ ५१ ॥
तिन सखानकी तीय अरु, सिया सखी समुदाय ॥
निजनिज पिय दरशन बिना, सकल हीय अकुलाय५२॥

चौ०-वरअशोकवाटिकामझारी ❀ सिया सहितबैठीं सब नारी ॥
ताछिन एक वाम चहुँघाई ❀ लखि बोली अतिही अतुराई५३

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी कवित्त।

घौर घौर द्रुमन लगेहैं फल ठौर ठौर शोभितहै झौर झौर पल्लव प्रसून पेखु॥मौर मौर मंजुल मलिंद मडरात मत्त रसिकविहारी सुखकारी सबही कौ लेखु॥और और बोलै कीर कोकिल सु तौर तौर डौर डौर वल्ली लपटानी जो वहा विशेखु॥घौर झौर मौर और तौर चहुँ ठौर भये दौर दौर आली आज आयो ऋतुराजदेखु॥ ॥५४॥ झौर झौर ठौर ठौर झूमत रसाल मौर पीवैं मकरंद लै मलिंद वृंद धापि धापि॥सबै जड चेतनके अंग उमँगो अनंग लपटीं सुमालती तमालतरु ढापिढापि॥रसिकविहारीहैं संयोगिनीसुखारी हीय कोकिला अलापैं सुर पंचमको थापि थापि॥सुनि सुनिकूकैं उर विरह भभूकैं उठैं निरखि वसंत रहैं विरहिनि कापि कापि॥५५ पेखिये पलाशन पै प्रबल हुताशनहै पाय अनुशासन विरह सरसायोहै॥कोकिलाकी कहिये हूकसी उठावतहै लूकसी लगावत समीर अधिकायोहै॥रसिकविहारी मैन मनकों मरोरतहै भौंरन को शोर जोर अधिक जनायो है॥संतह्वै असंत प्राण लेहै विनकंत हेली आज विरहनपै वसंत चढि आयोहै॥ ५६ ॥

दोहा—याकहि दीह उसाँसलै, पुनि बोली अकुलाय ॥
कहादोष ऋतुराजको, है वियोग दुखदाय॥ ५७ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

हेलीहौं विकल विललाता तबही तें घनी जबते विदेश गौन भयो प्राणप्यारेको॥रसिकविहारी तोहिं बूझों यह बात भटू कौन विधि देहुँ धीर हृदय विचारेको॥विरह सतावै दिन रैनि दुख कासों कहौं ऐसो को मिलावै हाय प्रीतम हमारेको॥हेम लंकदाही कपि नीको मैन जागे शंभु कोऊ नाव रायो या वियोग दई मारेको५८

दोहा—तोछिन दूजी बाल इक, पिय सुधि करि अकुलाय ॥
सुधि बुधि भली विरहवश, बोली सखिहि रिसाय॥५९॥

घनाक्षरी कवित्त।

भौन दधि राखैं ताको भौनहौं न राखौं बीर कै है जो गणेश ताहि देश त निकारौंगी॥ज्योतिष पढैंगो मेरे ग्राम ते कढैंगो वह धान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो बवैगो ताकी सान मैं बिगारौंगी।रसिकविहारी यह डौंडी फिरवाय देरी आज ते चहूँधा यही आज्ञा अनुसारौंगी।प्रथम भई सो भई अब तौ समै पै सदा सासु औ ननँदकै प्रबंद बंद पारौंगी६०

दोहा–इमि निज निज प्रीतमसुरति,करि करि होय अधीर ॥
जनकनंदिनी प्रीति युत,तिनहिं धरावैं धीर ॥ ६१ ॥
ग्रीषमऋतु आई तबै,बोली विरहिनिबाल ॥
अब किमि बचिहैं प्राण ये,एक अंग द्वैजाल॥ ६२ ॥

सवैया कवित्त ।

यौं मुरझाय रहीं द्रुम बेलि हुताशनसी जनु लागी पहारन ॥
नीर ते छीन भये सरिता सर कौन सहै यह आतप झारन॥
है रसिकेश अनंग पिया संगया ऋतु है विरहीनके कारन॥
एक तो जारततो विरहा पुनि दूजहु ग्रीषम लागि है वारन६३

घनाक्षरी कवित्त ।

कीधौं शेष मुख झाल कीधौं बड़वाग्नि ज्वाल कीधौं भानु काल भानु भानु कीनो वासहै।कीधौं हर तीजो नैन खोलोफेरि क्रोधित ह्वै कीधौं शंभु कंठते कढो जो विष त्रास है।कीधौं महा प्रलयको आतप प्रचंड अति कीधौं महाकाली कोप प्रगट प्रकाशहै।कीधौंयह ग्रीषमकी तपन समेत पौन रसिक विहारी कीधौं विरहीउसीसहै६४

दोहा–यौं विलपत ग्रीषम गई,पावस आई घोर ॥
जनकसुता सखियान सों,कही चहूँ दिशि होरे॥६५॥

घनाक्षरी कवित्त ।

मोरनमें मगमें मनोजमें सु मीननमें मनमें महीमें गति औरहि छई है आज।तरुन तमालनमें तालनमें तरुनीमें तममें तमीमें यति औरहि ठई है आज।रसिकविहारी रस रंगनमें रागनमें रीति रमनीमें रति औरहि नई है आज।पवनमें पावसमें पत्रनमें पुष्पनमें प्रीतिमें सु पीमें मति औरहि भई है आज॥६६॥वेई मेघमंडल मढ़े हैं नभमंडलमें वेई मोर कोकिला कलाप करैं नीके री॥वेई बनवेईबाग सघनानिंकुज वेई वेई रागरंग जो प्रमोददानही केरी।वेई नवनागरी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सहेली संग वेई रैनिकारीहितवेईकोंधा दामिनी केरी॥रसिकविहारी वेई पावस मनोज वेई साज सब पीके बिन दाहकहैं जीकेरी ॥६७॥ आवन न दीने पिय चारौंदिशि रोकि राखी चातक शिखंडी व्यंग्य वाणी सो उचारी है। विरह विलोकि मेरो दामिनी हँसतहेली रैं नि दिन संधि पाय होत अरु नारी है। इंद्र धनु भ्रुकुटी चढ़ाई करि कोप येरी पवन प्रचंड दूती सीखदैं सिधारी है॥ रसिक विहारी हम जानी री सयानी सुनौ पावस नहीं है यह सवति हमारी है ॥ ६८ ॥

दोहा–सुखछावन सावन छयो, तिय मनभावन संग ॥
झूलैं हुलसि हिंडोरने, हृदय बढाय उमंग ॥ ६९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

वृन्द वृन्द जुरिकै अनंद भरी चंद्रमुखीझूलतीं हिंडोरेहियहुलसि बढाय चाव॥रसिकविहारी सजे भूषन अनूप अंग वसन सुरंग रंग रंग रचिकै बनाव॥गाय गाय उमग अभंग उमँगाय उर भाय भाय सरस जनाय पिय प्रीत भाव॥सावन अपार सुखछावन सुहावन हैं प्यार ते बुलावैं मनभावन पियारी आव ॥ ७० ॥

दोहा–इमि सबके पिय प्यार करि, झूलैं प्रिया समेत ॥
राजकुँवर बिन यासमै,हम उसाँस नित लेत ॥ ७१ ॥
इमि पावस सोचत गई,छायो शरद प्रकाश ॥
रास सुरति करि सिय कही,लै अति दीह उसास ॥७२॥

घनाक्षरी कवित्त।

आतपसी चांदनी तपन तन दूनी देत लागत हिये में चन्द्र किरनै करदसी ॥ आवत उसाँस ऊंची सुखद सुवास लहि त्रिविध समीर धीर शालतदरदसी॥रसिकविहारी है संयोगिनी अनंद सबै विकल वियोगिनी न लागतशरदसी॥आशतेनिराशह्वै निराशहूते आश पाय मरि मरि जीवत हैं चौपर नरदसी ॥ ७३ ॥

दोहा–यौं सबही अकुलायकै,वर्ष बिताई वाम ॥
आई फेर बसंत पै, नहिं आये घनश्याम ॥ ७४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवध नगर ते सिय सहित,तिय अति विह्वल होय ॥
निज निज पिय हित पत्रिका, पठवत हैं सबकोय ॥७५॥

दोवई छंद ।

उत रघुवर बहु जनक राजसों गमन रजाय सु चाहैं ॥
पै विदेह राखत मिसही मिस नित नव नेह उमाहैं ॥
जे मिथिलावासी निमिवंशी वर किशोर सुठि रूपा ॥
तिन मिलि राम परस्पर अतिही बाढ़ी प्रीति अनूपा ॥७६॥
ते सांचे रघुवीर मित्र सब छिनहु संग नहिं त्यागैं ॥
वनविहार मृगयादि खेल बहु केलि ठनैं अनुरागैं ॥
जब जब अवध चलनकी चर्चा राजकिशोर चलावैं ॥
तब तब सकल मित्र कछु उत्सव रचैं तहाँ बिलमावैं ॥ ७७॥
दोहा–यों बहु काल व्यतीत भो,तब भाषी रघुचंद ॥
अहो मित्र अब हमहिं शिष,देहु सकल सानंद ॥ ७८ ॥
सुनि सब भाषी रामसों, लखो जनकपुर माहिं ॥
जिमि सुखहोत बसंत तिमि, कहुँ त्रिलोक मधि नाहिं७९

दोवई छंद ।

माघ मास शित पक्ष पंचमी शुभमुहूर्त सुखधामा ॥
ऋतुपतिको प्रस्थान दिवस है अति पुनीत अभिरामा ॥
तादिन ते ऋतुराज दशौं दिशि छावत करत विहारा ॥
याते ख्यात वसंत पंचमी नाम त्रिलोक मँझारा ॥८०॥
दोहा–सो आनँद अरु फाग लखि, चलैं अवध सब फेरि ॥
लक्ष्मीनिधि सों राम तब, कही कंठ भुज गेरि ॥ ८१ ॥
जनक नगरके नारि नर, सबही मंत्र प्रवीन ॥
पढ़ि भुरकी डारी कहा, हमै स्ववश करि लीन ॥ ८२ ॥
अनुज सखा सेवक जिते,तेऊ पगे सनेह ॥
अवध सुरति काहू नहीं ,भूल गये सब गेह ॥ ८३ ॥
यौं कहि बोले राम पुनि,राजपुत्र सुव बैन ॥
कबहूँ काहू भाँति हम,रंच उलंघि सकैन ॥ ८४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याते तव रुचि राखि हम, और रहैं इक मास ॥
फाल्गुन अर्ध बितैं बिदा, दीजो सहित हुलास ॥ ८५॥
तव लक्ष्मीनिधि राम रुचि, पालि कही दृढ ठान ॥
राज कुँवर ह्वैहै यही, सत्य लीजिये मान ॥ ८६ ॥
यौं विचार ठनि कै सबै, रहे परमआनंद ॥
भो वसंत उत्सव महा, जुरे नारि नर वृंद ॥ ८७ ॥
लागो फाल्गुनमास तब, रंग रचे सब कोय ॥
अवधनिवासी छैल बहु, खेलैं प्रमुदित होय ॥ ८८ ॥
इक होरी ससुरार पुनि, कहा लाजको काज ॥
धूम करैं घर घर चहूँ, रंग गुलालहि साज ॥ ८९ ॥
डफ मृदंग वंशी बजै, जनक नगर चहुँ ओर ॥
रैनि दिवस छायो रहै, होरी होरी शोर ॥ ९० ॥
बचियोरी बचियो कहैं, एकहि एक पुकार ॥
अवधनिवासी लोगते, सबै बडे फगुहार ॥ ९१ ॥
राम अनुज रिपुदमन ते,औरहु चपल प्रवीन ॥
संग सखन लै फिरत हैं, रंग गुलालहि भीन ॥ ९२ ॥
इहि विधि मिथिलावासिनी, कोउ कहैं सकुचाय ॥
कोऊ ह्वै सन्मुख रचैं, फाग रंग वरसाय ॥ ९३ ॥
कोऊ तिय जुरिकै रहसि, करैं परस्पर बात ॥
सखी न होरी होइ यह वरजोरी दरशात ॥ ९४ ॥
ताछिन बोली एक तिय, सुन गोरी मम बात ॥
अबकी फागुन माहँ यह, नये ढंग दरशात ॥ ९५ ॥

सवैया—कवित्त ।

धूँधर लाल गुलालकी छाई चहूं दिशि केशर रंग रहो रचि ॥
गावत हैं डफ ताल बजावत गारी दै लंक लचावत हैं नचि ॥
होरी कहा वरजोरी भट्ट रसिकेश भई सब रीति नई सचि ॥
लैचलमोहींकहूं सजनीइहिलागकी फाग ते भागदुरौंबचि ९६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–ताछिन बोली अपर तिय, सखी एक खिलवार ॥
अवध निवासी कौन धौं, हैं वह बडो धुतार ॥ ९७ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

छेकत गलीमें छैल नवल छबीलिनको छाती छै छिपात जो छरिलै तिहि धावै तौ ॥ गजब गरार गारी गावत गरूर भरो गुणगन वाकेगिनैपारनहिंपावै तौ॥रसिकविहारीरूप चतुर रसिलो अति रिसहू करौ जोरस रीति तें रिझावै तौ॥येरी यह गांवछोड़ि अनत वसीजे अब कीजैका उपाय जाते लाज रहिजावै तौ॥९८॥

दोहा–तासु वचन सुनि एक तिय, बोली अतिहि उताल ॥
हौं भाषौं तोसों भटू, सुन होरीको हाल ॥ ९९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

लीने पिचकारीकर झोरिनगुलाल भरे खेलत छबीले छैल होरी मद छाकि छाकि॥रंग बरसावैं अंग जोबन अभंग भीनै घालत हैं कुंकमा कपोलनपै ताकि ताकि॥रसिकबिहारी सबै सुघरखिलारी भारी देखि नौल नारी गाय गारी देत वाकि वाकि ॥तूतो है भली पै अली चरचा चली मैं सुनी जात या गली है छली तेरो भौन झांकि झांकि ॥ १०० ॥

दोहा–सो सुनि कही प्रवीन तिय, कहा आपनो जोर ॥
ह्वैहै प्रति दिन दिन घनो, फाग रंगको शोर ॥ १०१ ॥
याते हौ हित बात यह, भाषौं सबहि बुझाय ॥
होरी बरजोरी रचै, कहा दोष तिहि आय ॥ १०२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

होरी में मचैगी धूम धूँधर चहुँ दिशान गानवान तानमें कानन पगैयो जनि ॥ रंग पिचकारिनकी धारनमें भीजि भीजि आवैंगीसहेली सबैदोष त्यौंलगैयो जनि ॥ रसिकविहारीहै अनोखे खिलवार इहाँ नीकै नैन बैननकी सैन भूलि जैयो जनि । हौं तो इहि फागुनमें फागनारचौंगी वीर कोऊ रंग डारैं बरजोरी कछूकै यो जनि ॥ १०३ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा—इमि बतरात हुतीं सबै,ताछिन तहँ इक बाल॥
आई भाजत रंग सनी,बोली निपट विहाल॥१०४॥

घनाक्षरी कवित्त।

थोरी वैस कोरी मोसे करि बरजोरी गोरी डारिकै ठगोरी मेरे गरभुज मेलिगो॥वेनी लै बिथोरी माल तोरी तनी छोरी भट्टझोरी भरि रोरी कहि सोरी तन झेलिगो॥काह मै कहोंरि रस चोरी में खरोरी छैन रसिकविहारी अंग अंग रंग रेलिगो॥होरी में भयोरी जो नयोरी स्वाँग देखो वीर कोधौं खिलवार आज ऐसी फाग खेलिगो॥ १०५॥

दोहा—इहि विधि मिथिलानगर मधि,मची फाग चहुँओर॥
अरु सिद्धा रनिवास मधि,सकल सखिनको जोर॥१०६॥
कोशलराज किशोरको,अनुज सखनके संग॥
रंग अबीर गुलाल भरि,रचैं तियाके अंग॥१०७॥
परमानंद समेत इमि,सब हिय भी असराग॥
फागुन द्वादश दिवस लग,खेंली नित प्रति फाग॥१०८॥
पुनि लक्ष्मीनिधिते कही,रघुवर नेह बढाय॥
अब नृपरानिहि विनय करि,दीजे हमैं रजाय॥१०९॥
तब लक्ष्मीनिधि बेगही,मातु पितहि समुझाय॥
रामबिदा को साज सब,साजो अमित सजाय॥११०॥
तब सब संगी मित्रते,रामहि कहैं सुबैन॥
हम चलि हैं सँग रावरे,क्षणहूँ बिलग रहै न॥ १११॥
सुनि रघुवर तिन धीर दै,समुझाये हिय लाय॥
तब सो कोऊ दीन ह्वै,बोले कोउ रिझाय॥ ११२॥

सवैया कवित्त।

चाहौ न चाहौ पियारे हम दिनरैनि सदा जिये रूसे घनेरहो॥
बोलौ न बोलौ हँसौ न हँसौ गर लागौ न लागौजुरो सजनेरहो॥
जो जिय भावै करौ रसिकेश भले सुख साजमें सार सनेरहो॥
नैननसे लखिलीजे लला युगकोटिनलों तुमनीके बनेरहो ११३

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहिले छलते मन मोहि लयो अब क्यौं जियरा तरसावत हो॥
मृदु बैन सुनावत ऊपरसे हियमें न दया कछु लावत हो॥
निठुराई तजो रसिकेश सबै तुमतो दिलदार कहावत हो॥
हम जानि लई हौ बड़े कपटी तब तौ ममप्राण सतावतहो ११४
भौंर दयो जिय पंकज पै तनु दीपमें जारत धाय पतंगी॥
त्यौं हम मित्र जु साँचे भये अजहूँ तुम यार न त्यागि दुरंगी॥
ठौर घनी अनरीति लखी जिहि दीजिये प्राण सु होय न संगी॥
नेह दुहूँ सु भले रसिकेश है हाय जरे यह प्रीत इकंगी ११५॥

दोवई छंद ।

राम मित्र मिथिलावासी बहु इमि अति होय दुखारी ॥
कोऊ मृदु कटु कोउ नेह वश विह्वल गिरा उचारी॥
हृन उमंगाय लगाय अंकसो समुझाये रघुनाथा ॥
दै बहु धीर काहु तहँ राखे काहु लये निजसाथा॥ ११६॥
उत सिय मात प्रेम भर प्रमुदित पुत्रिन निरखन हेता ॥
सिद्धाकी प्रिय सखी विचित्रा ताहि समाज समेता ॥
दई रजाय जाव कौशलपुर सो आनंद अघानी ॥
तिहि सँग अपर भूरि पुरवासिन गईं दरश रुचि ठानी ११७
तब मिथिलेश बिदा किय रामहि दै बहु साज समाजा॥
परम सनेह उमंग यथोचित मिले सबहि रघुराजा ॥
दुघरी शोध पयान कियो द्रुत संग विपुल नर नारी ॥
अति उताल पुर सन्निध आये सप्तम दिवस सुखारी॥ ११८॥
दोहा—इत सिय ढिग बहु नारि मिलि,करहिं परस्पर बात॥
भये घने दिन तबहिं ते,नित शुभ शकुन जनात॥ ११९॥

घनाक्षरी कवित्त ।

डेरी भौंह डेरी आँख डेरो भुज डेरो कुच डेरे अंग मेरे सब फर करहे हैं री।आजहूँ न आये कहँ छाये प्राणप्यारे लाल मेरी जान कोऊ हाल गाढ कै गहे हैं री।रसिकविहारी यह कारण कहा है वीरआँगीमें

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न मावैं मो उरोज उमहे हैं री। होत हैं शकुन वेई पीके मिलिवेकेनित्त
तीके हेत नीके नीके नीके जे कहे हैं री ॥ १२० ॥
दोहा—सो सुनि बोले एक तिय, सत्य कहौं मैं बाल ॥
हौं जानौ मो प्राणप्रिय, आवन चहत उताल ॥ १२१ ॥

घनाक्षरा कवित्त।

हिय हुलसात मन मोद सरसात भटू अचल उडात वाम नैन
बाहु फरकै। दाहिने कुरंग पाँत काग शुभ बोलि जात रसिकविहारी
त्यौं उरोज युग थरकै। गनक बुलायो प्रात सोउ कही नीकी बात
शकुन दिखात लोन नीवी फंद सरकै। हेली हम जानी मिलो
चाहत हमारे प्यारे बार बार आज कंचुकीके बंद तरके ॥ १२२॥
दोहा—ताछिन बोली मथिली, स्वपन लखो हम आज ॥
कौशलराजकिशोर जनु, आये सहित समाज ॥ १२३ ॥
इमि बतरात हुतीं सबै, ताछिन इक अलि धाय ॥
आय कही सानंद अति, आवत हैं रघुराय ॥ १२४ ॥
तासु वचन सुनिकै मुदित, सिय निज निकट बुलाय ॥
दीने भूषण वसन वर, परमप्रेम उमगाय ॥ १२५ ॥
भरत साज सजि जायके, लाये नगर लिवाय॥
घर घर भये बधावने, मिले सबै हुलसाय ॥ १२६ ॥
मिथिलाते आई अली, जासु विचित्रा नाम ॥
ताहि सिया सादर निकट, राखी हरषि सुधाम ॥ १२७॥
फागुन मास अनंदको, आये सब निज गेह ॥
मिले परस्पर नारि नर, हिय उमगाय सनेह ॥ १२८ ॥
रचो रंग निज निज सदन, खेलत सबही फाग ॥
बहु दिनके बिछुरे मिले, बाढो अति अनुराग ॥ १२९ ॥
इहि विधि ते रघुवंश मणि, अनुज सखान समेत ॥
करि विहार मिथिलामुदित, आये अवध निकेत ॥ १३०॥
इत सीता सखिगण सहित, सखन सहित उत राम ॥
दुहुँ दिशि फाग उमँग भरि, सजे साज सुखधाम ॥ १३१॥

इति श्री० रा० र० वि० वीमिथिलाविहारवर्णनो
नाम चतुर्थोविभागः ॥ ४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोवई छंद।

आये कौशल नगर मुदित सब रची फाग सुखरासी ॥
जनकनगर वासी नर नारी मिले अवध पुरवासी ॥
जे तिय पुरुष भूरि मिथिला ते राघव संग सिधारे ॥
ते अरु प्रथम हुते जे सिगरे जरे एक ह्वै सारे ॥ १ ॥
जबते सिय आई कौशलपुर तबते बहु नर नारी ॥
जनकनगर वासी सानंदित निवसे अवध मझारी ॥
तिनके सदन अपार अनूपम विस्तृत भूरि सुवासा ॥
पुनि आवत तेऊ तहँ विलसत सब विधि सकल सुपासा॥२॥
तिहि वर वास मध्य रघुवरके अनुज सखा प्रति वर्षा ॥
होरी धूम करैं कबहू तहँ रामहुँ जात सहर्षा ॥
सो मिथिलावासी नर नारी भये अवधपुर वासी ॥
तदपि सकल सम्बंध यथोचित रचैं फाग सुखरासी ॥ ३ ॥
ते सब हीय उमंग भरी अति ठानी फाग सुहाई ॥
रघुवर अनुज सखा सानंदित करी धूम तहँ जाई ॥
इत रघुवंशी छैल सुभग उत निमि वंशी नर वामा ॥
यूथ यूथ मिलि होरी खेलत सुख शोभा अभिरामा ॥४ ॥
दोहा–इमि माची नित घूम तब, एक तिया चहुँ धाय ॥
जे आई नव नारि तिन,सबही कही बुझाय ॥ ५ ॥

घनाक्षरी कावित्त।

छैलैं नित याही गैल आयकै मचावैं फैल भौंह मटकावैं औ नचावैं नैन गारी दै॥देखि नव गोरी बरजोरी करि धावैं ताहि रंगमें भिजावैं ताकि तन पिचकारी दै॥रसिकविहारी हैं अनोखे फगुहार फेर पकर बनावैं नर भेष हंसैं तारी दै ॥याते प्राणप्यारी सीख मानियो हमारी दुरि बैठियो अटारी चहु ओर ते किंवारी दै॥६॥
दोहा–यौं कहि पुनि बोली भटू, जे रघुवंशी छैल ॥
तिहूँ लोकते अवधमें, तिनकी न्यारी गैल ॥ ७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चैतमास आरंभकी, रंग पंचमी होय ॥
पुनि त्रैदिन लग अष्टमी, फाग गिनै सब कोय ॥ ८ ॥
इहि विधि मिथिलावासिनी, करैं परस्पर बात ॥
छिन छिन प्रति दिन दिन चहूँ, होरी सुख सरसात ॥९॥
उत खेलत पुर माहिं सब, नर नारी सानंद ॥
रचे फाग इत महल सिय, सहित सखिनके वृंद ॥ १०॥
आईं मिथिला ते सखी, तिहि सिय दई रजाय ॥
होहु सजग अलि यूथ मिलि, सुठि सिंगार सजाय॥ ११॥
सुनि सिय आयसु हुलसिकै, सुभग विचित्रा नारि॥
सजे अंग भूषण वसन, वर शृंगार सुधारि ॥ १२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

जावक लगायो युग पाँयन सुरंग अति घेरदार घाँघरो नवीन पहिरायकै॥नीलरंग चूनरी चटकदार चातुरि ते चुनि चुनिचारु राखीसरस उढ़ायकै॥रसिकविहारीभलीतियहिसिंगारी अलीमाँग रचि दीनी वर सेंदुर भरायकै ॥ मानो रसराजको विदारि आयो रौद्र रस लालमन जीतिवेको विजय बढाय कै ॥ १३ ॥

दोहा—तासु छटा लखि परसपर, कहैं अवधकी तीय ॥
याको शिख नख सुभग पै पीठ कहा कमनीय ॥ १४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कंचन पटी कै अँगनाई मैन मंदिरकी जोवन महीपके विराजिबेको कैधौंपीठ॥कैधौं मान गढकी दिवाल है बिशाल अति रूप परदाकै कोऊ ढीठकी परैना डीठ ॥ रसिकविहारी हेरि हेरि मतिहारै घनी ऐसेहैअनूप जाकीउपमामिलैहै नीठ॥कैधौंकदलीको पत्र कोमलनवीन मंजु कैधौं यहशोभितनवेली नागरीका पीठ १५॥

दोहा—निरखि विचित्राकी छटा, तिय बोलीं हुलसाय ॥
हो सुंदरि तुव नाम यह, सत्य रूप सम आय ॥ १६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सवैया कवित्त ।

धुर वृद्ध भयो करतार अब थहरै तनु औ कठि कंठ लपो ॥
इहिते तिहिते वर रूप बनै न बनावत पै उर आपि चपो ॥
अति तो छबि हेरि अनूप हिये रसिकेश यही दृढ हेत थपो॥
विरची विधि तोहिं भटू जबहींतब रंच कहूँ कर नाहिंकपो॥१७॥
भृंग चहूँ भ्रमते मड़रात विलोकतहैं दृग पंकज फूले ॥
आवत कीर हिये ललचात लखैं अधरारुण बिम्ब अतूले ॥
चंदके धोखे चकोर लखैं मुख है रसिकेश सदा अनुकूले ॥
तो छबि हेरतही नवला निरपक्ष कहा पुनि पक्षिहु भूले ॥१८॥

घनाक्षरी कवित्त ।

खंजन मलिन्द मीनहूते गुण चौगुणो है ऐसे दृग दोऊ जिनै निरखि लजाय कंज॥मधुते सुधाते बसै छैगुणो मिठास जामेंवाणी यौं अनूप सुनि सकल नशात रंज ॥ रसिकविहारी रूप नौगुणो गुलाबहूते जिनको कपोल ये ललाम मदकाम भंज ॥शीतकरहूते अति शीतकरसौगुणोहैयेरीप्राणप्यारीतेरो वदन मयंक मंजु॥१९

दोहा—सुनत विचित्रा सकुचिकै, कहे भाव युत बैन ॥
अवधवासिनी धन्य तुव, पद रज सम हम हैं न ॥ २० ॥
इमि अति आनंदित सबै, सखिगण कियो शृंगार ॥
आई सिय ढिग मणिजटित, पिचकारी कर धार ॥ २१॥
सिय शृँगार तिहि समय को, वरणि सकै कवि कोय॥
जिहि भाषै बहु शारदा, तऊ थकित मति होय ॥ २२ ॥
सो मिथिलाधिप नंदिनी, संयुत सखी समाज ॥
शोभित महल उमंग भरि, फाग साज सब साज ॥२३ ॥
साजे होरी साज सब, सकल अनूप अनेक ॥
सो अवलोकत ही बनैं, वर्णत बनै न नेक ॥ २४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

मृगमद चूर औ कपूर धूर भूर पूरकुंकुमा करोरनतेसु लघुविशालहैं ॥मेरु सम चारों फेर अबिर गुलाल ढेर स्वच्छ गुच्छ विपुल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रसूननकी मालहैं॥केशर कुसुंभ रंग पूरे कुंभ कुंड रूरे अतरतमोल येला अमित निरालहैं॥रसिकविहारी इमि फागकीतयारीसंगजन-कदुलारीके उमंग भरी बाल हैं॥२५॥ अनुज सखान वृंदयुत रघुचंद सजे अतिही अनंदते प्रबंद करिहोरीके॥रसिकविहारीकरधारीपिचकारी मंजु सहित अबीर औ गुलाल भर झोरीके॥ रंग रंगरंगके अपार घट लीने संग बाजत सुढंग ते मृदंग डफ जोरीके॥मिथिलानिवासिनमें अति अनुराग भरिखेलि फाग आये भौनजनककिशोरीके॥२६॥देखि रघुराईको विचित्रा उठि धाई वेगि सखिन समेत आय रंग झरिलाई सो॥करि चपलाईलँगराई औ ढिठाईभूरि मसलि गुलाल मुख औचक दुराई सो॥रसिकविहारी चारु परमप्रवीन नारी सकल खिलारिनको सुमति छकाईसो॥सरस अनूप रूप हेरि मन मोहित ह्व जानी सब येही मिथिला ते बाल आई सो॥२७॥

दोहा—निरखि विचित्राकी छटा, चकित भये रघुचंद॥
करत विचार सु हीयमें, पूरो परमानंद ॥ २८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

मेरो चित्त निश्चल छलैबे छल ठानि सीय गुण बलते धौं प्रगटाई यह भामिनी॥कैधौं किन्नरी है कै नरी है कै सुरी हैकोउ कैधौं घन त्यागि इत आईआज दामिनी॥रसिकविहारीरूपवारीहैअनूपनारी कहांतेसिधारी प्यारीढिग अभिरामिनी॥कैधौंभारतीहै कै रतीहैकै सती है तीय शरद शशीकी जोन्ह कैधौं भईकामिनी२९कैधौं भूप जोबनके चपल तुरंग युग कैधौं दलपंकजके सरससलोने ये॥कैधौं मदगंजन निरंजनहैं खंजनके कैधौं मृग मीन हेत भये अनहोने ये॥कैधौं मन मोहिबेके उभय अमून दूत कैधौं सुखदेत लेत अमीविष दोने ये ॥ रसिकविहारी कैधौं हरन सुहीके पीके लोचन सुतीके अतिनीके रचेकोने ये॥३०॥कैधौंशशि अंकमें विराजै शनिबाल रूप कैधौं कंज कलिकापै सो है भृंग नीको है ॥कैधौं हेम संपुटमें जटित सु नीलमणि कैधौं धरो आरसी पै फूल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अरसीकोहै॥कैधौं शुभ्र आसन पै बैठो है मनोज भूप कैधौं जंत्र मोहन है मोहन सु जीको है॥रसिकबिहारी कैधौं डीठ काहूकी है गडी कीधौं यह आनन पै गुदना सु तीको है॥ ३१ ॥

दोहा–इमि विचार करि राजसुत, बहुरि लखे तिहि ओर ॥
ताछिन कमला धायकै,दये रंगमें बोर ॥ ३२ ॥
लखि रिपुसूदन कुंकुमा, घालो तासु कपोल ॥
मुख गुलाल मलि मेनका,धाय मिली निज टोल॥३३ ॥
ताछिन आलीगण उमँगि,रंग गुलालहि छाय ॥
अनुज सखन युत श्यामको,नख शिख दये रचाय॥३४॥
तिहि औसर छबि फागकी,अकथ अभूत अनूप ॥
सो सुख जानै नैन मन,जहँ छायो वह रूप ॥ ३५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

बरसत रंग तिय दामिनी सी दौरैं दुरि घन अँधियारहै गुलाल अवरोधमें॥गरजत मेघसे मृदंग मैन यौन झौके होत कलगान कोकिलानके प्रबोधमें॥फागुन पलट भयो सावन सुहावन सो रसिकबिहारी कहौ निज मनि शोधमें।सरिता नवेली उमड़ीहै नेह नीर भरि धायकै मिलीहैं जाय प्रीतम पयोधमें ॥ ३६ ॥

दोहा–इहिविधि इत होरी मची,कोऊ कछू न जान ॥
राम विचित्रा डीठ लखि, सिय उत ठानो मान ॥ ३७ ॥
मिसकरि उठि तहँ ते सिया,विमलहि निकट बुलाय ॥
रहसि भवन मधि लै गयी,भाषी भौंह चढ़ाय ॥३८ ॥
सखीन हौं आयसु दई, पै सु विचित्रा नारि ॥
आवतहौं नृपनंद ढ़िग, धाई रूप निहारि ॥ ३९ ॥
पुनि श्यामहु की डीठ हौं, पहिचानी तिहि ओर ॥
चकित भये टक लाय दृग,मानो शशिहि चकोर ॥४०॥
याते हौं अब लाल ढ़िग,जाय न खेलौं फाग ॥
सुनि विमला समुझायकै,बोली युत अनुराग ॥ ४१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घनाक्षरी कवित्त।

नृपतिकिशोरी मोरी विनय सुनीजे इती कहति निहोरीकरजोरी मान लीजिये ॥ गोरीते सु जोरी डीठ होरी में न चोरी कछू खोरी तिन ओरी है न जीमें ठान लीजिये ॥ जोरी श्यामगोरीविधिजोरी या करोरी युग अचल सदाही सत्य नेह जान लीजिये ॥ राम एक नारी व्रतधारीसुनि झारी कहैं रसिकविहारी बातसारीछानिलीजिये ॥४२॥ हम सब आली दिन रैनि नित दंपतिकोसेवैं हैं सदाही जीय गति पहिचानै हैं ॥ रहसिरसैंहैं दरशैंहैं परसैंहैं अंग बोलैं हैं हँसैंहैं औ विनोद मोद ठानैंहैं ॥ रसिकबिहारी धीर अवधविहारी सत्यधर्म धुरधारी सोसुनीतिरीति जानैं हैं॥ मनवचकर्मतेसुभूलिहु कबौं न लाल रावरे विहीन काहु बाल उर आनैं हैं ॥ ४३ ॥

दोहा—यौं कहि पुनि विमला सुमति, बोली परम सुजान ॥
धनि दंपति जोरी मिली, दोऊ दुहूँ समान ॥ ४४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

प्यारे सों न कोऊ एक नारी व्रतधारी और प्यारीसीपतिव्रता पुनीत कहुँ नारी ना॥अवधविहारी ऐसे कितहूँ न रूपमंत नृपति दुलारीसी सुतीय छबिवारी ना॥रसिकविहारी दुहुँ दोऊ अनुहारी इमि काहु ठौर दंपति सनेह सत्य कारी ना ॥ एक मुख कैसे यह भाग्यकी बडाई करोंगिरिजारमाहु सम स्वामिनी तिहारी ना४५

सवैया कवित्त।

व्याह भयो जबहीते पिया तुव रूप लखैं नितही दृग दीने ॥
रंच न त्यागत हैं रसिकेश तिहारहि नेह सुधारस भीने ॥
रावरे अंगकी देखिप्रभा ललकैं पलकैं नहिं देत प्रवीने ॥
हौ बड़ भागिनि राजसुता रघुनंदनको अपने वश कीने॥४६॥

घनाक्षरी कवित्त।

परमसुजान ज्ञान गुणकी निधान मंजु अति मतिमान सुददान प्राणप्यारेकी॥ मेरी विनै मान मान त्यागौअनुरागप्रियासिखई सखीको आज यह गतिन्यारेकी ॥ कीजेफाग विजयसुढंगगहि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लीजे धाय सुथरीभली है यागुलालके अँध्यारेकी॥रसिकविहारी प्यारी रंग बरसावोचलिपिय दरशावोद्युतिआनन उज्यारेकी४७

दोहा–यौं कहि विमला सीयमुख, लखिपुनि कर गहिलीन ॥
नैननाय मुसकाय फिर, बोली अली प्रवीन ॥ ४८ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

झेलि झेलि झोरिन अबीर रंग रेलि रेलि मेलि मेलि कुंकुम गुलाल भरि मूठि मूठि ॥ खेलोफाग आई अनुरागभरीभाग्यनते काहे इतरात बातबोलतीहौतूठि तूठि॥ रसिकविहारी कौनवानि या तिहारी प्यारी प्यारेको वृथाही क्यौं लगावोखोरि झूठिझूठि॥ मानो सीख मोरी बैंस थोरी पै न भोरी वीर होरीमेंनगोरीबरजोरी चलो रूठि रूठि ॥ ४९ ॥

दोहा–सुनि आलीके वर वचन, हँसि लगाय तिहि हीय ॥
सीय कही विमला सखी, हौं अतिमतिकमनीय ॥ ५० ॥
यौं कहिके आनन्द भरि, लै पिचकारी हाथ ॥
कोउ न जानो भेद सिय, मिलीं सखिनके साथ ॥५१॥
बरसत है दुहुँ ओरते, रंग गुलाल अपार ॥
कोऊ लखै न काहुको, छायो अति अँधियार ॥ ५२ ॥
छिन छिन कहत उमंग भरि, सखी सखा दुहुँ ओर ॥
ज मिथिलाधिप नंदिनी, जै अवधेशकिशोर ॥ ५३ ॥

धनाक्षरी कवित्त ।

बरसत दोउ ओर रंग पिचकारिनते मृगमद मिश्रित गुलाल धुन्धछाईहै॥रलित कपूर धूर पूरोहै अबीर चहूँ केशरकी कीचबीच महल मचाई है॥चलतअपारचारु कुंकुमाप्रसूनगुच्छ रसिकविहारी गान धुनि सरसाईहै॥अवधकिशोर अरु जनककिशोरीगोरी खेलैं आज होरी आज होरी अधिकाई है ॥ ५४ ॥

दोहा–इमि खेलत होरी दुहूँ, आय भये इकठौर ॥
जनकनंदिनी राजसुत, रसिकनके शिरमौर ॥५५॥
ताछिन पिय कर गहि सिया, बोलीं मृदु मुसक्याय ॥
कितते बिचरत रँग भरे; आये हौ इहिं ठाय ॥ ५६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सवैया कवित्त।

फौज लिये फगुवारनकी सब सौंज सजे निज मौंजमें सूबे ॥
लाल गुलाल ते लाल भये छबि छाक छके दृग हैं मद ऊबे॥
हौ रसिकेश उमंग भरे रसरंगमें अंग सु रंगमें डूबे ॥
सांचिकहौकिहिके घर जायललाबनिआयेहौआज अजूबे५७॥

दोहा—सुनि हँसिकै बोले तबै, रघुवर प्रेम प्रवीन ॥
इन दिन मिथिलावासिनी, भई सबै रसलीन ॥ ५८ ॥
तिनके सदन सखान युत, कियो जाय रसपान ॥
अब इत आये तव सखी, सब करिहैं सनमान ॥ ५९ ॥
इमि बतरातहि औचकै, चन्द्रकला अलि आय ॥
अंजन रेख कपोल करि, बेंदी दई लगाय ॥ ६० ॥

सो०—ताछिन लषण प्रवीन, गहि बोरी तिहि रंगमें ॥
भरत धाय धरि लीन, हेमा मुख रोरी मली ॥ ६१ ॥
दुरत विचित्रा नारि, आई कर कज्जल लिये ॥
रिपुहन ताहि निहारि, गहि सोइ तिहि मुख मलो ॥६२॥
ताछिन ताहि निहारि, पहिचानी रघुवीर ध्रुव ॥
यह सु विचित्रा नारि, सिद्धाकी प्यारी सखी ॥ ६३ ॥
अति उताल रघुलाल, मारी मूठ गुलाल तिहि ॥
सो प्रवीन वर बाल, भजी श्याम मुख चूमिकै ॥ ६४ ॥
ताछिन अलिगण धाय, गहि लीने बहु सखनको ॥
नारी वेष बनाय, पाँय पराये सीयके ॥ ६५ ॥
लषण शत्रुहन धाय, गहि लाये सखियानको ॥
वर नर रूप सजाय, राम पाँय डारी मुदित ॥ ६६ ॥
सो लखि सिय उमँगाय, रँगगुलाल अरु कुंकुमा ॥
सहित सखी समुदाय, पिय तन तकि वरसन लगी ॥६७॥
अनुज सखन युत श्याम, होरी होरी शोर करि ॥
रँग गुलाल अभिराम, चहुँ दिशिते लाई झरी ॥६८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोवई छंद ।

लषण विचित्रा अंग शत्रुहन चन्द्रकला पर मेलैं ॥
भरत चारुशीला मिलि रघुवर जनक नंदिनी खेलैं ॥
सखा सखी अरु अपर अनेकन भरि भरि हृदय उमंगा ॥
गद प्रसून गुलाल कुंकुमा घालत बरसत रंगा ॥ ६९ ॥
बजत मृदंग झांझ डफ दुहुँ दिशि होत मनोहर गाना ॥
अतर मलत मुख पान देत हठि अति अनंद उमगाना ॥
राजकुँवर मिथिलेशनंदिनी दोऊ सुघर खिलारी ॥
खेलत दुहूँ परस्पर होरी भरे सनेह सुखारी ॥ ७० ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

श्यामा श्याम सुघरखिलारी हुसियारी करिरसिकविहारीधाय धाय दोऊ रेलै हैं॥केशरके रंगमें सुअंगसराबोर भीजे ताकिताकि कुंकुमाकपोलन पै मेलैं हैं । लाल मुख लाल सोहैं संहत गुलाल तापै अलकैं अबीर भरी झूमैं छबि झेलैं हैं। पीतजरतारीझंगापहिरे भुजंग छोना मानो बाल भानु संग धाय धाय खेलैं हैं ॥ ७१ ॥

दोवई छंद ।

ताछिन धाय अली कमलादिक औचकही द्रुत जाई ॥
चारहु राजकिशोरन गहिकै निज सु गोल मधि लाई ॥
नैन आँजि वेदी लिलरदै फूल माल गल डारी ॥
आय खरे कीने सिय सन्मुख हँसीं सकल दैतारी ॥ ७२ ॥
लखि मुसकाय कही सिय प्यारे अब कहँ सखा तिहारे ॥
मन भावै सो रचिय रूप चहुँ बोलि देहु किन हारे ॥
तब रघुचंद मंद हँसि भाषी प्रिया सदा हम हारे ॥
हैं अबला सबला सहाय जिहि मनसिज धनु शरधारे ॥ ७३॥
सुनि सिय नैन नचाय विहँसिकै पिय दुहुँ कर गहि लीने ॥
कही लाल मिलि अनुज सखन इत आय फैल बहु कीने ॥
फगुवा देहु छैल तब छूटौ नत ये मिथिला नारी ॥
साजि तिया शृंगार नचै हैं चहूँबंधु धनुधारी ॥ ७४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कही तबै रघुचंद मंद हँसि वर फगुवा हम देहीं ॥
अनुज सखा ये जिते तिते सब सखी एक इक लेहीं ॥
हमैं लेहु प्यारी तुम याते कह उत्तम सो दीजे ॥
पुनि बहु सखा सखिनको भूषण वसन विभूषित कीजे॥७६॥
दोहा–सुनि सिय पिय वाणी विहँसि, बोली हम लखि लीन ॥
सखा अनुज संयुत लला, हौ सब कला प्रवीन ॥ ७६ ॥
यौं कहि सिंहासन विशद, बैठारे रघुचंद ॥
श्याम वाम दिशि लाडिली, शोभित परमानंद ॥ ७७ ॥
असन पान मादक विविध, अतर तमोल सु माल ॥
वसन विभूषण विशद बहु, सकल रसाल विशाल ॥७८॥
यथायोग सादर सकल, देत लेत युत मोद॥
भरे परस्पर प्रेम सब, छाके फाग विनोद ॥ ७९ ॥
पुनि तहँ ते निज निज भवन, गवन कियो सब कोय ॥
इहि विधि फाग अनंद अति, अवधनगरमें होय ॥ ८०॥
बहुरि परस्पर करत सब, निज निज भवन उछाह ॥
अनुज सखा सेवक सखी, सहित सनेह उमाह ॥ ८१ ॥
सर सरिता गृह बाग वन, विहरत निज निज टोल ॥
भोग राज कौतुक करैं, ठानैं विविध कलोल ॥ ८२ ॥
इहि विधि फाग अनंद अति, होय अवधपुर माहिं ॥
जो सुख लखि सुरपालहू, निज सुख तुच्छ गिनाहिं॥८३॥
परमानंद समाज युत, कौशलनगर मझार ॥
इहि विधि सीताराम नित, करैं अनेक विहार ॥ ८४ ॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० फागविहार वर्णनो नाम पंचमो विभागः॥५॥

हरिगीतिका छंद ।

इहि भाँति श्रीरघुवीर सिय युत करत नित लीला नई ॥
अवलोकि पुर परिजन यथोचित रहत सब आनँद मई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वर बंधु सेवक सखन संयुत मुदित शहर निवासके ॥
वर विशद विधि मय सकल तीरथ किये सहित हुलासके ॥ १ ॥
दशसहस वर्ष सहर्ष बीते विविध विपुल विहारमें ॥
छाके रहैं नर नारि निशि दिन सब अनंद अपारमें ॥
रघुवीर निश्चल राज काज सुरीति संयुत बहु करैं ॥
नित नगर चरचा चरनते सुनि सुनि सुयशनिज सुख भरैं ॥ २ ॥
इक समय सियके सदन रघुवर मध्य दिन मधि जायकै ॥
बठे वरासन प्रियहि लखि भाषी हृदय हुलसायकै ॥
हे मैथिली कछु दिन व्यतीते सुभग संतति पाय हौ ॥
सुत गोदलै करि प्यार छिन छिन निरखि मुख सुख छाय हौ ३ ॥

प्रश्न । रामाश्वमधे । अध्याय॥ ९९ ॥ श्लोक० ।

रामो राज्यमयोध्यायां भ्रातृभिः सहितोऽकरोत् ॥
धमण पालयन्सर्वं क्षितिखंडं स्वया श्रिया ॥ १ ॥
सती दधार तद्बीजं मासाः पंचाभवंस्तदा ॥
अत्यंतं शुशुभ देवी त्रयीव पुरुषं धरा ॥ २ ॥

हरिगीतिका छंद ।

सुनि सीय हिय सकुचाय शीश नवाय कछु मुसकायकै ॥
करि वदन अं ल ओट निरखैं पीय मुख हुलसायकै ॥
रघुचंद पुनि स नन्द बूझी काह तव रुचि भामिनी ॥
अभिलाष उर जो होय सो सब पूजही गजगामिनी ॥ ४ ॥
सुनि जानकी आनंद भरि मृदु बैन यौं पिय ते कहे ॥
तब कृपा कंत अनंत सब सुख विविध भाँतिन ते लहे ॥
है और कछु नहिं चाह इक अभिलाष यह उरमें रही ॥
बूझी दया ते नाथ जानौं सोउ अब पूजै सही ॥ ५ ॥
दोहा–सुनि बोले पुनि राजसुत, भाषौ प्रिया उताल ॥
जो तुव उर अभिलाष सो, सब पूजै इहि काल ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोवई छंद।

तब सिय कही जोरि कर प्यारे यह रुचि मो मन माहीं ॥
बहु मुनि नारि तपोवन वासिनि सुरसरि तीर रहाहीं ॥
तिनके दरश करौं इक वासर प्रमुदित तितहिं रहाऊँ ॥
अशन वसन भूषण दै पूजौं पुनि प्रभु ढिग द्रुत आऊँ ॥ ७ ॥
सुनि सानंद कही रघुनंदन प्रिया प्रात द्रुत जावो ॥
सकल साज संयुत तिन पूजौ प्रमुदित दरश करावो ॥
इमि रजाय दै प्रीति रीति युत तहँ ते राम सिधारे ॥
राजे आय मध्य कच्छा बिच चरवर विविध जुहारे ॥ ८ ॥
उत सिय साज सजन लागी बहु उर अनंद उमँगाई ॥
सखिन कहैं चलि मुनिनारिनके दरश लहैं सुख छाई ॥
इत रघुवर ढिग विजय मत्त मधु भद्र आदि वर चारा ॥
वर्णत नगर कथा सानंदित हास विलास अपारा ॥ ९ ॥
तब कौशलपति सकल चरनते बूझी सहज विलासी ॥
हमहिं सियहि बंधुहि पितु मातहि काह कहैं पुरवासी ॥
भद्र दूत भाषी तब प्रणमित प्रभु सब सुयश अपारा ॥
वर्णत सकल नारि नर प्रमुदित चहुँ दिशि नगर मँझारा ॥ १० ॥
दोहा—सुनि बोले क्षितिपाल तब, यह जगरीति न आय ॥
सब सबही शुभही कहै, कोउ न अशुभ कहाय ॥ ११ ॥
सो मम शपथ निशंक जिय, भाषो सत्य जु होय ॥
यही काज हित नियतहौ, सदा सु चर सब कोय ॥ १२ ॥
चौ०-तब कर जोरि भद्रचर भाषो ❀ हों प्रभुते कछु गुप्त न राखो ॥
इक यह वर सेवक गति होई ❀ स्वामिनिंद सुनि कहै न कोई १३
पै मुहिं अब निज शपथ दिवाई ❀ याते भाषौं कौशलराई ॥
सो अपराध क्षमा प्रभुकीजे ❀ कुमति वचन पर चित्त न दीजे १४
वसै रजक इक नगरमँझारी ❀ भो विषाद रूठी तिहि नारी ॥
सो सब दिन कहुँ अनत रहाई ❀ संध्या समय गेह मधि आई १५ ॥
रजक ताहि ताडन करि भाषी ❀ हों नहिं राम लेउँ तुहि राखी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ते वर भूप रुचै सो करहीं ❀ हमतौ दुहूँ लोकते डरहीं॥१६॥
यौं सकोप ह्वै ताहि निकारी ❀ दीनी त्यागि रजक निज नारी॥
इमिपुनिअपरकुमति जनवृंदा ❀ करत परस्पर कछु प्रभुनिंदा १७
कहत लोग सिय लंक मझारी ❀ रही ताहि पुनि रघुवर धारी॥
भूपतिही जो ठान अनीती ❀ तो किमि करै प्रजा शुभरीती १८

दोहा—दूत वचन सुनि राम उर, भयो महादुख शोक॥
गुणत सीय वर धर्म धर, दोष देत तिहि लोक॥१९॥
पै कछु हो वै शुभ अशुभ, लोक देश कुलरीति॥
निपट त्यागि वो ताहुको, नीति प्रमाण अनीति॥२०॥
कर्म शुभाशुभ कैसहू, जाते निंदा होय॥
सुजन प्रतिष्ठित काज सो, भूलि करै नहिं कोय॥२१॥
इमि विचारि हिय विविध विधि, लिय उसाँस रघुराय॥
वेगि बुलाये अनुज तिहुँ, सेवक सुमति पठाय॥२२॥
तिहि औसर शत्रुघ्नहूँ, रहे अवधपुर माय॥
आये तीनहु बंधु द्रुत, राज रजायसु पाय॥२३॥

चौ०—तब सब दूत गये सिख पाई ❀ रहे इकंत चारहू भाई॥
बंधुन प्रति प्रभु कीन उचारन ❀ पुरचरचा निज हिय दुखकारन२४
तब तिहुँ अमित भाँति समुझाये ❀ पै रघुवर हिय तोष न लाये॥
लै उसाँस अनुजन प्रति भाषी ❀ आवो सियहि गंगतट राखी २५
सुनत वचन भे बंधु विहाला ❀ तब बहु शोक सहित रघुलाला॥
कही अनुज तिहुँ धर्म धुरीना ❀ सो मम आयसु चित्त न दीना२६॥
सुनि लछमन बोले शिरनाई ❀ प्रात करौं जिमि होय रजाई॥
तब नृपाल सब बंधुहि भाषी ❀ मुनितियदरशन रुचिसियराखी२७
ताही मिस सीतही लै जावो ❀ तहां राखि पुनि वेगहि आवो॥
इमि कहि सबहि बिदाकियरामा ❀ गये मौन तिहुँ दुखित सुधामा
प्रात होत लछमन रथलाई ❀ तामधि जनकसुताहि चढाई॥
सूत सुमत लषण सियसंगा ❀ गवने मुनि आश्रम तट गंगा॥२९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूजन दान साज बहु भांती ❀ लिये संग सिय हिय हुलसाती॥
मुनितियगणदरशन करिआऊं ❀ निजउरकीअभिलाषपुजाऊं३०
बाल्मीकि आश्रम मधि जाई ❀ लषण सियहि भाषी शिरनाई॥
दीनी नाथ रजायसु येही ❀ कछु दिन रहैं तहां वैदेही ॥३१॥
पतिआज्ञा सुनि हिय अकुलानी ❀ पुनितियधर्मरीतिअनुमानी ॥
वाल्मीकि आश्रममधि सीता ❀ सबहिपूजिवरवसी पुनीता॥३२॥
लषण सुमंत राम ढिग आई ❀ कहीसकलसिय गति शिरनाई॥
यह चरचा सुनिपुरनर नारी ❀ भयेसकल बहुहीय दुखारी॥३३॥
अति वहरजक हीयपछताता ❀ कहत कढी कह मो मुख बाता ॥
तब तिहि पूर्वजन्मसुधिआई ❀ जानीयह भवितव्य रहाई॥३४॥
हम शुकरहे जनकपुर माहीं ❀ तिय युत तजे प्राणसिय पाहीं ॥
ताते जन्म अवधमें पायो ❀ सो बदलो सीतासे आयो॥३५॥

दोहा—अपर नारि नर अमित विधि, करत परस्पर बात ॥
सुमति कुमतिबहु शुभ अशुभ, जोकछु जिहि उपजात३६

प्र० रा० ॥ अ०९ ॥ श्लोक ॥

तत्र नीचजनाच्छुत्वा सीताया अपमानताम् ॥
स्वां च निंदां रजकतस्तां तत्याज रघूद्वहः॥३॥

दोहा—उत मुनि आश्रम जानकिहि, बीते चार सु मास॥
तब प्रगटे द्वै सुत विशद, पितु सम जासु प्रकाश॥३७॥
बाल्मीकि मुनि दुहुँनकी, दृढ रक्षा वर कीन ॥
भये संग याते तिनै, को बड छोट न चीन ॥ ३८ ॥

चौ०-तब मुनिनाथसमेत विचारा ❀ पूरव पर उतपति निरधारा॥
जेठे सुतहि नाम कुश राखा ❀ पुनिकनिष्ठपुत्रहिलवभाषा३९॥
सीता लखिदुहुँसुत अभिरामा ❀ पायो अति अनँद विश्रामा ॥
रहैं निकटसखिमुनिजननारी ❀ सेवैंसियहि प्राणते प्यारी॥४०॥
इहि विधि बड़े भये दुहुँ भाई ❀ मुनिवर विद्या सकल पढ़ाई ॥
अस्त्र शस्त्र मधि परम प्रवीना ❀ गीतवाद्य संगीतधुरीना॥४१॥
विरचित वाल्मीकि मुनिनाथा ❀ राम चरित षटकांड सुगाथा॥
सो लव कुश सुरतालप्रमाना ❀ कंठमनोहर करैं सुगाना॥४२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–सियतिय मुनिसुत अरुमुनिन, निकट सदातिहिजान॥
इन विहाय कुश लव दुहूँ, नहिं काहू पहिचान ॥ ४३ ॥
चौ०–वाल्मीकि ऋषि गुरू हमारे ❀ हैं क्षत्रिय दुहुँ बंधु करारे ॥
यौं गुनि मुनि सेवा दुहुँ करहीं ❀ काननधनु शरधारि विचरहीं ४४
राम पुत्र दुहुँ तेज निवाना ❀ छबिगुण बलरूप पिता समाना॥
तिनयुतरहतिसियामुनिआश्रम ❀ करतिसदापतिनामभजनश्रम॥
इत रघुवीर अवधपुर माहीं ❀ राज काज सब सविधि कराहीं॥
पै दिन रैनि प्रिया को ध्याना ❀ राखतहृदय सहित वरज्ञाना ४६
बहुरि भये द्वैद्वै सुत नीके ❀ भरत लषण रिपुसूदनजीके॥
सबही निजनिजपितुअनुहारी ❀ सुंदर बली गुणी शुभकारी ४७॥
तक्ष और पुष्कल शुभनामा ❀ ये द्वै भरत पुत्र अभिरामा ॥
अंगद चित्रकेतु दुहुँ वीरा ❀ हैं लछमनके सुवन सुधीरा॥ ४८॥
इक सुबाहु अरु शत्रुघाति वर ❀ ये शत्रघ्न पुत्र दुहुँ धनुधर ॥
चहूँ राजसुत सब गुणराशी ❀ रूप तेज बल धर्मप्रकाशी॥ ४९॥
प्रमुदित रहत सदा सब कोई ❀ समय समय वर कारज होई ॥
लोक वेद कुलरीतिप्रमाना ❀ उत्सव करतसकलविधिनाना ५०
दोहा–तिहूँ लोक नर नारि अरु, अपर चराचर जोय ॥
श्रीरघुवरके राजमें, सुखी रहैं सबकोय ॥ ५१ ॥

इति श्रीरा०र०वि०वि० कुशलवादिजन्मवर्णनो
नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

सो०–इमि रघुवर मतिधीर, करत राज वर नीति मय॥
भरत लषण दुहुँ वीर, सेवत युत सेवक सखा ॥ १ ॥
चौ०–एक समयरघुवर करजोरी ❀ बोले गुरुहि सप्रीति निहोरी॥
प्रभु बहु बार सकलमख कीने ❀ यथाशक्तिदानहुकछुदीने॥ २॥
पै कृपालु यह रुचिहै मोरी ❀ अश्वमेध मखहोय बहोरी ॥
सुनि वशिष्ठआदिकऋषिराई ❀ भये प्रसन्न परम सुखपाई ॥ ३॥
बोले राज विलंब न कीजै ❀ साज सजनहित आयसु दीजै ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि मंत्री सेवकन बुलाई ❀ यथा योग सब दई रजाई ॥४॥
पुनि दशहूँ दिशि दूत पठाये ❀ यज्ञ निमंत्रन सबहि दिवाये॥
कपिपति जाम्बवंत लंकेशा ❀ आये सदल साजि वर वेशा॥५॥
अपर भूप सुर नर मुनि नागा ❀ जिनके हिय रघुवर अनुरागा ॥
ते सब सकल यज्ञ हित आये ❀ राम सकलसतकार कराये॥६॥
कोऊ नृपति वीर अभिमानी ❀ कियो विलंब युक्ति कछु ठानी॥
कोऊ हय सँग गमन विचारा ❀ ते गृह रहे साज सजि सारा
इहि विधि भईअवध अतिभीरा ❀ जुरे भूरि जन सुमतिसुधीरा॥
कोऊ अतिहिउताल सिधाये ❀ कोऊ कछु विलंब ते आये॥८॥

दोहा–कोऊ द्विज मुनि संतवर, कीनो हृदय विचार ॥
यज्ञ अंतलग जुरहिं जन, ह्वै है मोद अपार ॥ ९ ॥
याते जुरै समाज बहु, तब चलिये हुलसाय ॥
काहू कियो विलंब इमि, अरु छाये सब आय ॥ १० ॥
भूप प्रजा ज्ञानी गुनी, सब संयुत परिवार ॥
साज समाज समेत बहु, आये यज्ञ मझार ॥ ११ ॥
सुथल नैमिषारण्य मधि, भयो सकल मखकाज ॥
अशन वसन धन धाम वर, अपर उचित बहुसाज ॥१२॥
कंचनमय तिय सविधि सुठि, रची सीय अनुहारि ॥
विधि विशुकमार्हूं चकित, जाकी बनक निहारि ॥ १३ ॥
सकल अनूपम साज सजि, सविधि प्रथम श्रीराम ॥
बन्धु सखा सेवक अमित, पठे दये मखठाम ॥ १४ ॥
तिन तहँ साजो साज सब, तिहि पाछे रनिवास ॥
अपर अमित जन यज्ञ थल, गवने सहित हुलास ॥१५॥

चौ०पुनि शुभ समय मध्यरघुराजा ❀ नैमिष गये समेतसमाजा
लखिथलसाजसकलहुलसाये ❀ रामयथोचितकाजदिढाये॥१६॥
कीश ऋच्छ नरनिश्वर नाना ❀ करैंकाज जिमि जाहि बखाना ॥
अरु कपिभालु रैनिचरनारी ❀ लागींउचितकृत्यमहँसारी ॥१७॥
यथायोग सबही रनिवासा ❀ सखा सखी दासी अरु दासा ॥
पुर परिजन पाहुन नरनारी ❀ करैंकाजनिजनिज अनुहारी१८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–सब प्रबंध वर हेरि कै, ह्वै प्रमुदित रघुनाथ ॥
कियो अरंभ सु यज्ञको, विशद विप्र मुनि साथ ॥ १९ ॥
श्यामकरण तनु गौरवर, पुच्छ पीत मुख लाल ॥
तरुण सुलक्षण सर्व गति, बली तुरंग विशाल ॥ २० ॥

म० रा० अ० ९ श्लोक ॥

गंगाजलसमानेन वर्णेन वपुषा शुभः ॥
कर्णे श्यामो मुखे रक्तः पीतः पुच्छे सुलक्षितः ॥ १ ॥
मनोवेगः सर्वगतिरुच्चैःश्रवस्समप्रभः ॥
वाजिमेधे हयः प्रोक्तो शुभलक्षणलक्षितः ॥ २ ॥

दोहा–हेम पट्टिका राम यश, लिखित बँधी तिहि माथ ॥
साजि सविधि वाजी तजो, सदल शत्रुहन साथ ॥ २१ ॥
सदल वाजि तजि अवधपति, ह्वै सनेम विधि उक्त ॥
निकट शृंग मृग हेम सिय,मखकर मुनि द्विज युक्त॥२२॥
प्रतिदिन आवत विपुल जन,होत सकल सत्कार ॥
दान मान तिहि समयको,कोउ कहि पावै पार ॥ २३ ॥
उत रामानुज शत्रुहन, संग तुरंग प्रधान ॥
चले परम आनंद कहि, जैति राम बलवान ॥ २४ ॥

दोवइ छद ।

भरत पुत्र पुष्कल सिय भ्राता लक्ष्मीनिधि बलवान ॥
नील रत्न रिपुताप उग्रहय प्रतापाग्र नृप नाना ॥
जाम्बवंत सुग्रीव सु हनुमत आदि ऋच्छ कपि वीरा ॥
सकल भूप युत सैन राम दल रिपुहन संग सु धीरा ॥ २५ ॥
सचिव सुमति वर सखा सु सेवक सदल विभीषण भूपा ॥
इहि विधि अमित सैन तिहि पाछे अग्र तुरंग अनूपा ॥
जहाँ जहाँ निज रुचिते वाजी गवनत तहँ सब जावै ॥
नृपतिअनेक आयरिपुशालहि,सिर नमि संग सिधावै ॥२६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुंदरपुरी नाम अहिछत्रा तहां सुमद नरनाथा ॥
आवतही सो राज्य समर्पण कियो नाय पद माथा ॥
रिपुहन तासु पुत्र कहँ नृप करिसदल भूप लिय संगा ॥
परमानंद चले पुनि तितहीं गमनो जितै तुरंगा ॥ २७ ॥
चौ०-यौं विचरतमखवाजिअनूपम ❀ आयोच्यवनमुनीकेआश्रम ॥
राम बंधु नमि ऋषिहि सप्रीती ❀ गवने पुनिसुनिकथासुनीती२८
विचरत संग सैन चतुरंगा ❀ गयो नीलगिरि निकट तुरंगा ॥
जहँ चक्रांकापुरी अनूपा ❀ तहां सुबाहु नाम वर भूपा २९ ॥
तासु कुमार दमन जिहि नामा ❀ समर धीर वर गुणबल धामा ॥
सो नृपसुत मृगयाहित आयो ❀ मख तुरंग वनतिहि दरशायो३०
दोहा—नख शिख साज अमोल वर, साजो वाजि विशाल ॥
यह रघुवर यश खचित सो, पत्र लसै तिहि भाल ॥ ३१ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

श्रीयुतसकलधर्मधारी चक्रवर्ती ख्यात क्षत्री भानुवंशी दशरत्थ अवधेशके॥परम पवित्र पुत्र राजा रामचंद्र वीर ठानो अश्वमेधजो दलैया निश्चरेशके ॥तिनको तुरंगयाहि कोऊ होबली सोगहै जीतैं शत्रुशाल ताहि सदल सदेशके॥ नतरु नवायमाथ हाथ जोरिआव साथ रसिकविहारी ह्वै अधीन कौशलेशके ॥ ३२ ॥
चौ०—इमिलिपिदेखि दमनकारिक्रोधा।कही रामबिनऔर नयोधा॥
यौं हटि गयो धामलै वाजी ❀ चतुरंगिनी अनीद्रुतसाजी ॥३३
लै दल दमन युद्ध हित आयो ❀ प्रतापाग्र लखिकटक चलायो॥
भिरे दुहूँ दिशि वीर जुझारा ❀ भयोसमरतिहि समय अपारा३४
प्रतापाग्र नृप इत रणधीरा ❀ भूपति पुत्र दमन उत वीरा ॥
अस्त्र शस्त्र दुहुँ दुहुँन प्रहारे ❀ मुरैं न कोउ दोउभट भारे॥३५॥
तब नृपसुत वर बाण प्रहारा ❀ विधो सु भूपति हृदय मझारा ॥
प्रतापाग्र अति भये विहाला ❀ दिन रथ लैगो सूत उताला३६॥
सुनि रण हाल शत्रुहन धीरा ❀ पठयो भरत पुत्र वरवीरा ॥
पुष्कल सदल आय ततकाला ❀ दमन संग किय युद्ध कराला३७

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भरत पुत्र शर अग्नि प्रहारा ❀ होन लगो तिहि दल जरिछारा॥
वरुणबाण तब दमनचलावा ❀ अनल बुझीबहु जलचहुँछावा ३८
शर वायव्य सु पुष्कल छोरा ❀ छाई पवन भजे घनघोरा ॥
पर्वत अस्त्र तजो सो उद्धा ❀ भो गिरि कोट वायु बल रुद्धा३९॥
भरत पुत्र तब हनो वज्र शर ❀ गिरे कुधर ह्वै चूर धरणिपर ॥
पुनिदमनहि इक वर इषु शाला ❀ भयो राजसुत लगतविहाला४०

दोहा—दमनहि निरखि विहाल अति, वर सारथी प्रवीन ॥
तिहि युत रथ लै नगरगो, नृपहि विदित सबकीन ॥४१॥
सुनि सुबाहु निज सुत व्यथा, दुखित सकोप उताल ॥
साजि सैन चतुरंग लै, चलो महीप विशाल ॥ ४२ ॥

चौ०-नृपसुत इक चित्रांग ललामा ❀ दूजो हैविचित्र जिहिनामा॥
दोऊ दमन अनुज ये वीरा ❀ भूपति बंधु सुकेतु सुधीरा ॥४३॥
ये तिहुँ अपर अनेकन योधा ❀ लै गमनो नृप सुभुज सक्रोधा ॥
ताछिन दमनहु भयो सचेता ❀ चलो सोउ वर सैन समेता४४॥
आय भिरे भट सकल जुझारा ❀ दुहुँ दल एकहि एक प्रचारा ॥
उत सुबाहु जय होत पुकारा ❀ इत शत्रुघ्न जैति उच्चारा ॥४५ ॥
लक्ष्मीनिधि सुकेतु दुहुँ युद्धे ❀ पुष्कल अरु चित्रांग निरुद्धे॥
संयुग धीर सुभुज नरनाथा ❀ ठानो समर शत्रुहन साथा॥४६॥

दोहा—युद्ध करैं रिपुतापते, उद्धत दमन सुधीर ॥
लरत विचित्र विचित्र गति, नील रतनते वीर ॥ ४७ ॥
अपर वीर बहु वीर सँग, नर निश्चर कपि ऋच्छ ॥
अस्त्र शस्त्र वर मल्ल युध, करत सबै रण शिच्छ ॥ ४८ ॥
रुंड मुंड कर पद रुधिर, समर भूमि मधि छाय॥
भयो जु हाहाकार चहुँ, निजपर कछु न जनाय ॥४९॥
तब पुष्कल चित्रांगको, वध कीनो हनिबान ॥
सुभुजनृपति लखिसुत मरन, शोकदुःख अकुलान॥५० ॥
पुनि धरि धीर सकोप अति, धाय सुबाहु नृपाल ॥
अति उताल शत्रुघ्न पर, घाले बाण कराल ॥ ५१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०—ताछिन धाय पवनसुत वीरा ❀ बीचहि गहि भंजे सबतीरा॥
मर्दन किय स्यंदन हय सूता ❀ भिरे भूपकपिसुबल अकूता॥५२॥
तब हनुमंत क्रोध करि ताही ❀ चरण प्रहार कीन उर माही॥
गिरो भूमि भूपाल विहाला ❀ मूर्छित ह्वै अचेत ततकाला ५३॥
तब तिहितजि कपि अपरनिरुद्धे ❀ सो लखि क्रुद्ध उद्ध भट युद्धे॥
बहु सेवक जन धाय उतालै ❀ घेरि रहे ह्वै विकल नृपालै ५४॥
ताछिन भयो आचरज भारी ❀ जो न होत रणभूमि मझारी॥
मूर्छित परो अचेत जु भूपा ❀ तब लखो यह स्वप्न अनूपा५५॥

हरिगीतिका छंद।

श्रीराम शोभाधाम प्रमुदित यज्ञशाल विराजहीं॥
ब्रह्मांड अगणित देव ब्रह्मादिक अमित तहँ भ्राजहीं॥
ते सकल सुर मुनि नारदादि अपार अस्तुति ठानहीं॥
गंधर्व किन्नर अप्सरा बहु सुयश कर वर गानहीं॥५६॥

प्र०॥ रा०॥ अ०२८॥ श्लोक॥

तदा तु मूर्च्छितो राजा स्वप्नमेकं ददर्श ह॥
रणमध्ये कपिवरप्रपदाघाततताडितः॥ ३॥
रामचन्द्रस्त्वयोध्यायां सरयूतीरमंडपे॥
ब्राह्मणैर्याज्ञिकश्रेष्ठैर्बहुभिः परिवारितः॥ ४॥
तत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र ब्रह्मांडकोटयः॥
कृतप्रांजलयस्तत्र स्तुवंति स्तुतिभिर्मुहुः॥ ५॥

हरिगीतिका छंद।

यह लखत स्वप्न सुबाहु नृपहीं चेत भो मुरछा गई॥
उर ज्ञान आयो तबहिं श्रीरघुवीर प्रभुता हिय छई॥
उठि वेगि बरजे युद्धते सुत बंधु सेवक धायकै॥
पुनि सकल युत शत्रुघ्नके पद शीश नायो आयकै॥५७॥

सो०—कीनी विनय अनंत, नृप सुबाहुकरजोरिकै॥
राम अनुज मतिमंत, तब भूपहि उर लाय लिय॥५८॥
रामबंधु बलवान, किय सन्मान बखान बहु॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नृप गुण ज्ञान निधान, राज समर्पो प्रभुहि निज ॥ ५९ ॥
तब रिपुदमन उदार, दमनहिं करि अभिषेक पुनि॥
संयुत सैन अपार, चले संग लै नृप हरिहि ॥ ६० ॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० अश्वमेधयज्ञारंभ सुबाहु युद्धवर्णनो नाम सप्तमोविभागः ॥ ७ ॥

दोहा—इहिविधि श्रीरघुवीरको, मख तुरंग चहुँ ओर ॥
निज इच्छित गमनत मुदित, संग सैन बरजोर ॥१॥

दोवई छन्द।

विचरत वाजी गयो तेजपुर तहँ वर भक्त सुवाला ॥
सत्यवान जिहि नाम हरषि सो आयो अतिहि उताला ॥
शीशनाय निज राज समर्पो तब रिपुदमन प्रवीना ॥
तासु पुत्र रुक्महिं अभिषेको चले नृपहि सँग लीना ॥२॥
तहँते कछुक दूर गमने तब औचक भो अँधियारा ॥
धूरि पूरि नभ विज्जु चमंकी ह्वै घन गर्ज अपारा ॥
वरषि रुधिर कच अस्थि उपल मल तमकरि खलदल धायो ॥
दशमुख मित्र सुविद्युन्माली नाम निशाचर आयो ॥ ३ ॥
भयो विकल दल कछु नहिं सूझै ताछिन सो निशिचारी ॥
अंतरिक्ष ह्वै हरि हरि लैगो दुष्ट सु मायाकारी ॥
पुनि ताही छिन मिटो सबै तम दशहू दिशि उजियारा॥
यातुधान नभ मंडल छाये गर्जहिं विकट अपारा ॥४॥
सो विलोकि सब दल अकुलायो तबै शत्रुहन वीरा ॥
भाषी अबहिं निश्चरन नाशौं हौ भट सकल सुधीरा ॥
सुनि पुष्कल लक्ष्मीनिधि हनुमत आदि अमित बलवाना ॥
रामबंधु युत भये सु उद्धत समर हेत प्रण ठाना ॥५॥
समर धीर वर वीर दुहूँ दल भिरे क्रोध करि भारी ॥
पुष्कल संग सु विद्युन्माली ठनो युद्ध बलकारी ॥
तासु भ्रात जो उग्रदंत सो लै धनु खड्ग विशाला ॥
मिथिलापति लक्ष्मीनिधि साथै संयुग कियो कराला॥ ६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपर वीर बहु दुहुँ दिशि युद्धत उद्धत ह्वै करि शोरा ॥
हटत न यातुधान तब धायो कपि केशरी किशोरा ॥
तरु गिरि उपल दंत नख मुष्टन चरण चपेटन मारे ॥
आय जाय महिव्योमछिनहि छिन निश्चर निकर सँहारे॥७॥
यातुधान ह्वै विकल थकित तब निज माया विस्तारी ॥
मृतक पषाण रुधिर मल वरषो भयो चहूँ तम भारी ॥
भभरि भगे नर भालु कीश भट लखि रामानुज वीरा ॥
छिनमहँ दूर कियो सो खल छल मोहनास्त्र हनि तीरा ॥ ८ ॥
सो विलोकि निश्चर पुनि ठानो अस्त्र शस्त्र वर युद्धा ॥
व्याकुल भये सदल रामानुज तब छायो बहु क्रुद्धा ॥
राम सुमिरि नाराच प्रहारे लगत दुहूँ बलवाना ॥
उग्रदंत अरु विद्युन्माली गिरे भूमि गत प्राना ॥ ९ ॥
तब अनाथ ह्वै विकल भीतिवश लै तुरंग द्रुत धाई ॥
यातुधान सब रामबंधुके परे चरण मधि आई ॥
भये मुदित सब विजय वाजि लहि कियो सु जैजैकारा ॥
तहँ ते चलिपुनिविचरनलागो मख हय दल युत सारा ॥१०॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० विद्युन्मालीयुद्ध वर्णनो
नाम अष्टमोविभागः ॥ ८ ॥

चौ०—इमिविचरत वाजी वर वीरा ❀ पहुँचो रेवा सरित सुतीरा ॥
तहँ आरण्यक मुनि वर ज्ञाता ❀ तिनहि मिले सादर प्रभुभ्राता १
तहँते गमन कियो जन सारे ❀ तब हय सेवक आय पुकारे ॥
सरिता तट तडाग वर भारी ❀ तामहँ पान करत हो वारी॥२॥
जल पीवतही तुरँग न जाना ❀ भयो मध्य सर अंतरध्याना ॥
सो गतिसुनिरिपुहन अकुलाये ❀ सुमति सकलमिलिमंत्रदृढाये ३
तब रिपुहन पुष्कल हनुमंता ❀ सर प्रविशे जल मध्यतुरंता॥
लखो गंभीर नीरतल धामा ❀ मणि कंचनमय परम ललामा ४॥
तामहँ इक तिय तेज विशाला ❀ शोभित युत अनेक वर बाला ॥
तहां सु वाजि निबंधित देखा ❀ सबहि भयो आचरज विशेखा ५

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रिपुहन आदि सकल धरि धीरा ❀ नायो शीश जायतिहि तीरा॥
सो बूझी गति तब हनुमंता ❀ बरणी सत्य समस्त तुरंता ॥६॥
सुनि योगिनी कही हम काहीं ❀ जीतै कोउ सुरासुर नाहीं ॥
पै तुरंग मम प्रभुकर याते ❀ किमि हौं गहों जाहु ल ताते ॥७॥
यौं कहि पुनि योगिनी प्रवीना ❀ एक अस्त्र रिपुदमनहि दीना ॥
भाषी लरै वीरमणि राजा ❀ तहँ ऐहै तुमरे यह काजा ॥ ८ ॥
सुनि सबही आनंद अघाई ❀ लै तुरंग गवने शिरनाई ॥
सरजलते कढि दलमधि आये ❀ चले मुदित जै शोरमचाये ॥९॥
विचरत मख वाजी अभिरामा ❀ आये नगर देवपुर नामा ॥
तहँ गिरिवनसरिसुभगपुनीता। लखि तृणजलगोअश्वअभीता १०

दोहा—नृपति देवपुरमें प्रबल, नाम वीरमणि जासु ॥
शंकर नित रक्षा करैं, प्रगट सगणके तासु ॥ ११ ॥
हैं अनन्य शिवभक्त नृप,तासु पुत्र बलधाम ॥
परमरम्य गुणवंत वर, रुक्मांगद जिहि नाम॥ १२ ॥
सो तिय गण सयुत मुदित, वनविहार करवीर ॥
लखि तुरंग शिर पत्र पढि, गहि लायो रणधीर ॥ १३ ॥
पितहि बखानो हाल सब, सुनि शिवसहित नृपाल ॥
कही कियो अनुचित महा, ह्व है युद्ध कराल ॥ १४ ॥
पुनि पुरारि भाषी नृपहि, लाभ महारण माहिं ॥
हम तुम दोउनको इहाँ, रघुवर दरश मिलाहिं ॥ १५ ॥

प्र० । रा० । अ० ३९ ॥ श्लोक ।

परमत्र महालाभो भविष्यति रणांगणे ॥
यद्रामचरणांभोजं द्रक्ष्यामः स्वीयसेवितम् ॥ १ ॥

दोहा—सुनि नृप उठितिहिवाजिके, निज कर चरण प्रछाल ॥
किय निबंध दै अशन जल, वर हय शाल विशाल ॥ १६॥
सचिव सैन पति बोलि पुनि, कही वीरमणि वीर ॥
सजौ सैनहौं देखिहौं, किमि रिपुहन रणधीर ॥ १७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिहुँ पुरके सुर असुर जो, युद्ध करैं मम साथ ॥
तौ नहिं पावैं वाजि अब, बिन आये रघुनाथ ॥ १८ ॥
नृप रजाय सुनि वेग्ही, सजी सैन बलपूर ॥
जै महेश कहि वीरमणि, चलो संग भट भूर ॥ १९ ॥
नृपसुत रुक्मांगद प्रथम, द्वितिय शुभांगद नाम ॥
वीरसिंह भूपति अनुज, अपर अमित बलधाम ॥ २० ॥
इमि सुत बंधु अनीक युत, गमन कियो भूपाल ॥
इत रिपुसूदन सजग ह्वै, विरचो व्यूह विशाल ॥ २१ ॥
चौ०ताछिनआय भूप कटकाई ❀ कहि जैजैतिबाण झरिलाई ॥
कीश ऋच्छ निश्चर नर धाये ❀ इततेगिरि तरु शस्त्रचलाये२२॥
भिरे सुभट दुहुँ कटक विरुद्धे ❀ उद्ध प्रबुद्ध सु युद्ध निरुद्धे ॥
अस्त्र शस्त्र बहु करत प्रहारा ❀ लरत मरत भो हाहाकारा२३॥
ताछिन भूप कटक बिचलाना ❀ सो लखि रुक्मांगद धनुताना ॥
धाय भिरो पुष्कलसे योधा ❀ दोऊ हनत दुहूँ भरि क्रोधा२४ ॥
तब पुष्कल तिहि अस्त्र प्रहारा ❀ भ्रमो सरथ नभ मंडल सारा ॥
भानुनिकटजातहि हयस्यंदन ❀ दग्धभयोव्याकुल नृपनंदन २५॥
तासु हस्त इक भो जरिछारा ❀ गिरोविकल ह्वैधरणि मझारा ॥
रुक्मांगदहि विहालनिहारी ❀ भगेभीति भरि बहुभटभारी२६ ॥
लखिसुत गतिकरिक्रोध कराला ❀ धायोगहि धनुबाण भुवाला॥
मारिसायकन दलविचलावा ❀ निरखि हनूमत क्रोध बढावा२७
दोहा—धाय वीर कपि भिरि कियो, वीरसिंहते युद्ध ॥
पुष्कल अरु नृपवीर मणि, भये समर अवरुद्ध ॥ २८ ॥
पुष्कल रथ हय कवच धनु, दियो वीरमणि काटि ॥
भये विकल पुनि सजग ह्वै, हने बाण तिहिडाटि ॥२९॥
भरत पुत्र शरघाततें, गिरा भूमि भूपाल ॥
नृपगति लखि दल बिचलभो, भगे सुवीर विहाल ॥ ३०॥
वीरसिंह तब क्रोध भरि, किय हनुमतहि विहाल॥
शालि मुष्टिका भूमि तिहि, डारो अंजनिलाल ॥ ३१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-ताछिनकोपि शुभांगदवीरा ❀ कीनी सैनविकल हनि तीरा॥
रुक्मांगदहु सजग ह्वै धायो ❀ दुहूँबंधुमिलि दल बिचलायो३२॥
सो लखि हनुमानादिक वीरा ❀ धाय कियो नृप कटक अधीरा॥
नृपसुत बन्धु समेत अचेता ❀ निरखिभजे सबवीर निकेता३३॥
ताछिन शंभु क्रोध उर धारा ❀ भूत प्रेत गण संग अपारा॥
रथअरूढह्वै गहिधनु धाये ❀ लखिरिपुहन सजि बाण सिधाये३४
महादेव रिपुसूदन धीरा ❀ पुष्कल वीरभद्र वर वीरा॥
नन्दी हनुमत संग निरुद्धे ❀ इमि बहु एक एक मिलि युद्धे३५
चार दिवस भो समर महाना ❀ पुष्कल वीरभद्र बलवाना॥
अस्त्र शस्त्र दुहुँ दुहुन प्रहारे ❀ एकहि इक मूर्छित करिडारे३६॥
तब करि वीरभद्र रिसि चंडा ❀ हनित्रिशूल पुष्कल शिरखंडा॥
भरत पुत्र वध लखि सब वीरा ❀ सहित शत्रुहनभये अधीरा३७॥
पुनि धरि धीर वीर सब धाये ❀ युद्धे महा क्रुद्ध उर छाये॥
शंभु शत्रुहन दुहुँ बलवंता ❀ अस्त्रशस्त्र रण कियो अनंता३८॥

दोहा-इमि एकादश दिवस लग, युद्ध कियो दुहुँ वीर॥
हनो अस्त्र शर प्रबल हर, ह्वै हिय निपट अधीर॥३९॥
सो पीड़ित शर शत्रुहन, मूर्छित धरणि मझार॥
गिरे निरखि गति विकल दल, हाहाहोत पुकार॥४०॥
अपर शंभुगण क्रोध भरि, धाय धाय चहुँ ओर॥
बहु मूर्छित बहुबध किये, कपि नर भटवर जोर॥ ४१॥
यह गति लखि निज सैनकी, तब हनुमंत उताल॥
पुष्कल तनुको बहुरि पुनि, किय प्रबंध रथ घाल॥४२॥
आय शंभु सन्मुख सपदि, हनुमत कही सकोप॥
परम संत गुणवन्त ह्वै, कियो धर्म सब लोप॥ ४३॥
तब शिर भाषी सत्य कपि, पैं हौं भक्ति अधीन॥
याते हौं कछु क्रोध भरि, याछिन संयुग कीन॥ ४४॥

प्र०॥ रा०॥ अ० ४४॥ श्लोक॥

आगत्य सविधे रुद्रं समरांगणमूर्धनि॥
जगाद हनुमान्वीरः संजिहीर्षुःसुराधिपम्॥२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मया पुरा श्रुतं देव ऋषिभिर्बहुधोदितम् ॥
रघुनाथपदस्मारी नित्यं रुद्रः पिनाकधृक् ॥ ३ ॥
तत्सर्वं तु मृषा जातं शत्रुघ्नं प्रति युद्धचता ॥
पुष्कलो मे हतोः वीरः शत्रुघ्नोपि विमूर्च्छितः ॥ ४ ॥
इत्युक्तंवंत प्लवगं प्रोवाच स महेश्वरः ॥
धन्योसि वीरवर्य त्वं भवान्वदति नो मृषा ॥ ५ ॥
मत्स्वामी रामचन्द्रो वै सुरासुरनमस्कृतः ॥
तदश्वमानयामास तद्रक्षार्थं मयागतम् ॥ ६ ॥
निवसामि पुरे नित्यं तद्भक्त्यानुवशीकृतः ॥
यथा कथंचिद्भक्तोऽसौ रक्ष्यः स्वात्मा इति स्थितः ॥७ ॥
एवं वदति चंडीशे हनुमान्कुपितो भृशम् ॥
शिलामादाय कोपेन ताडयामास तद्रथम् ॥८॥इत्यादि॥

चौ०—सुनिहनुमतकरिक्रोधकराला।घालोगहिगिरिखंडविशाला॥
तिहि लागतहि सूत हय स्यंदन ❀ बचे शंभुतिहुँभयेनिकन्दन४५
तब शंकर नन्दी पर भ्राजे ❀ हनुमतबहुरि शैलहनि गाजे॥
शंभु कपिहि वर शूल प्रहारा ❀ सोगहि कीशभंजिमहिडारा४६
पुनि हर कीशहि शक्ति प्रहारी ❀ तासु घात सो भयो दुखारी॥
इहिविधि शंकर अरु हनुमाना ❀ उद्ध युद्धकर दुहुँ बलवाना४७
जौलग कपिप्रहार कृत तरुगिरि ❀ भंजतशंभुकीशतौ लगभिरि ॥
मर्दत शंकर दलहि कराला ❀ हरसन्मुखपुनिहोतउताला ४८
करते लरत शंभु ते वीरा ❀ दल पद पुच्छ दलै रणधीरा ॥
इमि किय उद्ध युद्ध बहु कीशा ❀ सगणभये विह्वलगौरीशा४९

प्र०॥ रा०॥ अ० ४४ ॥ श्लोक।

अत्यंतं विह्वलो जातो महेशानःप्रकोपनः ॥
क्षणेक्षणे प्रहारेण कुर्वत्तं विह्वलं भृशम् ॥ ९ ॥

दोहा—लखि हनुमतकी बुद्धिवर, भये प्रसन्न महेश ॥
कही वीर कपि याचहू, वर जो रुचै सुदेश ॥ ५० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब कपि भाषी और हौं, कछु न चहौं वरदान ॥
जो प्रसन्न तौ रक्षिये, मम दल सकल महान ॥ ५१ ॥
वायस गृद्ध शृगाल सुन, भूत प्रेत तब जोय ॥
मम दल घायल मृतक जे, तिनै भखै नहिं कोय ॥५२॥
हौं द्रोणाचल जायकै, वेगहि भेषज लाय ॥
करिहौं विरुज सजीव सब, रघुवर दल समुदाय ॥५३ ॥

चौ०सुनिभाषीशिवजाहुउताला ❀ करिहौंसदलसकलप्रतिपाला ॥
तबकपि उछलि व्योम पथ धाये ❀ द्रोण शैलढिगवेगहिआये ५४
तहाँ इंद्रसेवक बलवाना ❀ भेषज ग्रहण हेत रण ठाना॥
तिनहिं पराजय करि हनुमंता ❀ लै औषधिपुनिआयतुरंता५५

दोहा–पुष्कल शिर धर जोरिकै, हिय धरि जीवन मूर ॥
राम ध्यान करिकै कही, सत्य प्रेम प्रण पूर ॥ ५६ ॥
जौ हौं मन वच कर्म ते, ध्याऊं राम अनन्य ॥
तौ ए होउ सजीव द्रुत, कर भेषज गुण धन्य ॥५७॥
यौं कहतहि पुष्कल उठे, ह्वै सजीव धनुधारि ॥
वीरभद्र दुरिगो कहाँ, भाषत चहूँ निहारि ॥५८ ॥
पुनि रिपुहन ढिग जायकै, धरि औषधि तिन हीय ॥
सियाराम पद सुमिरि कपि, बोले वच रमणीय ॥ ५९ ॥
ब्रह्मचर्य व्रत सत्य मम, जो आजन्म प्रयंत ॥
जिय सचेत तौ होयँगे, याही समय तुरंत ॥ ६० ॥
यौं भाषतही शत्रुहन, उठि बठे सर साजि ॥
इत उत हेरत कहत हैं, गये शंभुकहँ भाजि ॥ ६१ ॥

पुनि हनुमत चहुँ धायकै, भेषज कियो उताल ॥
धाये विरुज सजीव सब, नर निश्चर कपि भाल ॥६२॥
पुनि शिव दल अरु रामदल, भिरौ भयो बहु घोष ॥
अति उद्धत युद्धत सुभट, कटत अटत सह रोष ॥६३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-ताछिन ह्वैसचेत धनु साजा ❀ धायोसदलवीरमणिराजा ॥
अस्त्र शस्त्रशिवनृपरिपु शाला ❀ हनैंपरस्परविशिखकराला६४॥
तब ब्रह्मास्त्र वीरमणि घाला ❀ सो विलोकि शत्रुघ्न उताला॥
अस्त्रयोगिनीदत्त विशाला ❀ योजित करि शर हनोकराला ६५॥
ब्रह्म अस्त्रको मर्दि सु तीरा ❀ मूर्छित कियो सदल नृप वीरा॥
ताछिन एक शंभु बिनु जेते ❀ गिरे भूत नरगण सब तेते॥६६॥
तब लखि पुनिक्रोधित शिवधाये ❀ अस्त्रनमारि वीरबिचलाये॥
रिपुहन भये कंठगत प्राणा ❀ विह्वल हनुमतादि बलवाना६७॥

दोहा-ताछिन रिपुहन विकल ह्वै, बोले वचन अधीर ॥
हाय नाथ हा भ्रात मम, पाहि पाहि रघुवीर ॥ ६८ ॥
यौं भाषतही वेगि अति, प्रगट भये श्रीराम ॥
यज्ञ साज साजे सकल, श्याम अंग छबि धाम ॥ ६९ ॥
दरशतही रघुचंदके, सबही भये अनंद ॥
त्राहि त्राहि कहि पद गहे, धाय धाय जन वृंद ॥ ७० ॥
शंभु धाय कीनी बिन, कही क्षमिय अपराध ॥
सुनि रघुवर उर लायकै, बोले कृपा अगाध ॥ ७१ ॥
हौं प्रसन्न राखो भलो, भक्तपाल वर धर्म ॥
रंच विलग मानौं नहीं, मम तव हित है पर्म ॥ ७२ ॥
मम तव भक्त सु एक है, मम तव हित इक आय ॥
पावैं नरक निवास जो, मम तव भेद कराय ॥ ७३ ॥

प्र० र० अ० ॥ ४६ ॥ श्लोक ॥

मया बह्वपकारा यत् कृतं कर्म तव स्फुटम् ॥
क्षम्यतां तत्कृपालो हि भवतोप्यभिधायकम् ॥ १० ॥
इति वाक्यं समाकर्ण्य महेशस्य रघूत्तमः ॥
उवाच धीरया वाचा कृपया पूर्णलोचनः ॥ ११ ॥
ममासि हृदये शर्व भवतो हृदये त्वहम् ॥
आवयोरंतरं नास्ति मूढाः पश्यन्ति दुर्धियः ॥ १२ ॥
ये भेदं विदधात्यद्धा आवयोरेकरूपयोः ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुंभीपाकेषु पच्यन्ते नराः कल्पसहस्रकम् ॥ १३ ॥
ये त्वद्भक्तास्त एवासन्मद्भक्ता धर्मसंयुताः ॥
मद्भक्ताअपिभूयः स्युर्भक्तास्तव नतिंकराः॥१४॥ इत्यादि॥
चौ० इमि दुहुँराम शंभुआनँदभर ❀ मिलेसमर महि मध्यपरस्पर ॥
पुनि रघुवीरउताल सिधाये ❀ सदलनृपहि निजकर परशाये ७४
विरुज सजीव वीरमणि राजा ❀ उठो उताल समेत समाजा ॥
सकुल भूप जोरे युग हाथा ❀ विनयकरी प्रभुपद धरि माथा ७५
रिपुहन हनुमतादि जे वीरा ❀ सबहि मिले नृप सकुल सुधीरा ॥
पुनि नृपराजसाज बहु साजी ❀ प्रभुहि समर्पोयुत मखवाजी७६
ताछिन रघुवर अंतरध्याना ❀ भये भेद कछु कोउ न जाना ॥
जै जै राम सबै उच्चारा ❀ दुहुँदिशि भयो अनंद अपारा ७७॥
सो०—सदल वीरमणि भूप, चले शत्रुहन सग मुद ॥
यज्ञ तुरंग अनूप, इमि विचरत इच्छित चहूँ ॥ ७८॥

इति श्रीरामरसायन र० वि० वि० वीरमणियुद्ध वर्णनो नाम नवमोविभागः ॥ ९ ॥

दोहा—इमि विचरतमखवाजिवर, इकअरण्य मधिआय ॥
पंथ चलत औचकरुपे, भूमि अश्व चहुँ पाय ॥ १ ॥
अचल भयो हरि चलत नहिं, कीनेहुँ कसा प्रहार ॥
पुनि हनुमानादिक सुभट, गहि उठाय रह हार ॥ २ ॥
तहाँ बिजन वन माहिं चहुँ, जन धाये अकुलाय ॥
दूरि गहन कानन विषे, शौनक आश्रम पाय ॥ ३ ॥
जाय शत्रुहन शीशनमि, कही सुगति अति दीन ॥
सादर सुनि प्रभु बंधु तें, कथा सुवर्णन कीन ॥ ४ ॥
पुनि बोले हे राजसुत, जहँ हय रुपो पवित्र ॥
तहाँ सविधि होवै कथन, सीताराम चरित्र ॥ ५ ॥
तौ हय पद मोचै तुरत, सुनि रिपुहन शिरनाय ॥
गये तहाँ हनुमत सविधि, कहो राम यश गाय ॥ ६ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छूटे पाय तुरंगके, हरषाने रिपुशाल ॥
गमन कियो मखवाजि लै, कहि जै जै रघुलाल ॥ ७ ॥
इहि विधि विचरत यज्ञ हय, संग सुभट समुदाय ॥
सप्तमास डोलत भये, अवध नगर ते आय ॥ ८ ॥

पद्धरी छंद ।

इक नगर नाम कुंडल विशाल। जहँ सुरथ भूप वर धर्मपाल ॥
नृप प्रजा सर्व तहँ रामभक्त। कोऊ न अन्य देवानुरक्त ॥ ९ ॥
सुनि राम वाजि आगम नृपाल। सादर गहाय बाँधो उताल ॥
मिलि प्रजाभूप सेवक अपार। कीनो सहर्ष यह दृढ़ विचार १० ॥
मिस याहि सबै प्रभु दरश होय। विन राम वाजि पावै न कोय ॥
इमि ठानि भूप चतुरंग सैन। साजी समस्त भट सुबल ऐन ११ ॥

दोवई छन्द ।

चंपक १ मोहक २ सुभट रिपुंजय ३ अरु दुर्वार ४ प्रतापी ५ ॥
बल मोदक ६ हर्यक्ष ७ और सहदेव ८ शत्रु संतापी ॥
भूरिदेव ९ गुणमंत सुतापन १० ये दशवीर विशाला ॥
सुरथ वीरके पुत्र धनुर्धर रण कोविद पुशाला ॥ १२ ॥

पद्धरी छंद ।

नृपराज पुत्र अरु भट अपार। दृढ़ कवच शस्त्र वर विविध धार ॥
इत राम बंधु करिकै विचार। भेजो सु दूत वालीकुमार ॥ १३ ॥
अंगद उताल नृप सुरथ पास। आये विलोकि छायो हुलास ॥
सब तिलक भाल गलमाल राज। तुलसी सुपत्र शिर मध्य भ्राज १४
सादर बिठाय बूझी नरेश। तब वालिपुत्र बोले सुदेश ॥
त्यागिय कृपाल वर मख तुरंग। सोहै न दासरण ईश संग ॥ १५ ॥
पुनि वृद्ध भूप कीजे न युद्ध। हैं तरुण वीर रिपुदमन उद्ध ॥
तिमि पुष्कलादि भट अमित धीर। जिन हेरि सैन तवहो अधीर १६
तब सुरथ भूप भाषे सु बैन। श्रीराम रूप निधि कमल नैन ॥
जौलौं सु आप इत आय हैंन। तौलौं सुकोउ हय पाय हैंन ॥ १७ ॥
अरु ईश दासको रण अयोग। ताकी सुरीति कह वीर लोग ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रभु ते सु युद्ध किहु उचित नाहिं।संयुग अदोष सेवकन माहिं१८॥
पुनि वैस नेम नहिं वीर केर । कीनो विचार बहु ठौर हेर ॥
सो युवा वृद्ध दुहुँ बल प्रशस्त।रण मध्य हेरि लीजो समस्त॥१९॥
तब सैन माहँ भट जे सगर्व । ह्वै हैं निबंधते सपदि सर्व ॥
हौं राम भक्त जानौ न आन।द्रुत कहौ शत्रुहन ठनहिं ठान ॥२०॥
सुनि सुरथ बैन अंगद उताल । रिपुहनहिं आय भाषो सुहाल ॥
तब रामबंधु बहु क्रोध छाय । ध्रुव होय युद्ध दीनी रजाय ॥२१॥
सुनिसकल वीर इत साजि साजि । शत्रुहन जैति कह गाजि गाजि
उत राम जैति वर कीन शोर।धायो नृपाल दल प्रबल जोर ॥२२॥
भिरि गये दोउ दल परम चण्ड । दुहुँ ओर राम सेवक उदंड ॥
भो द्वंद्व युद्ध तिहि समय भूर।दशहूँ दिशान मध बाण पूर ॥२३॥
दोहा—चंपक अरु पुष्कल भिरे, मोहक मिथिलानाथ ॥
विमल रिपुंजय वीरमणि, भूरिदेवके साथ ॥ २४ ॥
है दुर्वार सुबाहुते, सत्यवान सहदेव ॥
प्रतापाग्र नृप युद्ध कर, संग प्रतापी एव ॥ २५ ॥
नीलरतन हर यक्ष अरु, अंगद सह बल मोद ॥
असुतापन उग्राश्व इमि, भिरे भरे रण मोद ॥२६ ॥
अपर वीर दुहुँ ओरके, इहि विधि लरत अपार ॥
अस्त्र शस्त्र वर्षत विपुल, छायो हाहाकार ॥ २७॥

पद्धरी छंद ।

चंपकहिकीन पुष्कलविहाल।हनि अस्त्र शस्त्र अगणित कराल॥
तब राजपुत्र रामास्त्र घाल ।लिय भरत सुवनको बाँधि हाल ॥ २८॥
तब हनूमान धाये तुरंत । किय तासु संग संयुग अनंत ॥
नृप पुत्र पवनपुत्रहि उठाय । गहि पुच्छ भूमि डारौं भमाय ॥ २९॥
पुनि सँभरि वीर पद पकरि तासु । फेको फिराय बहु दूरि आसु॥
मूर्छित विहाल भो नृपति बाल । हनुमंत पुष्कलहि छोर हाल ३०॥
विह्वल विलोकि सुत सुरथ वीर । कीशहि प्रहार किय विपुल तीर॥
हनुमंत धाय तब तासु चाप । गहि कीन भंग भरि कोहदाप ॥३१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि धनुष आन लै नृपति मंड। कोदंड सोउ किय खंड खंड ॥
इमि असी चाप भंजे सुवीर। तब सुरथवीर अति ह्वै अधीर॥ ३२॥
गरु चंड शक्ति कीनी प्रहार। हनुमंत ताहु धरि भंजि डार ॥
पुनि कीश तासु स्यंदन उछाल।तब भूप कोपि दृढ परिघशाल ३३
चौ०-ताछिन तासुसूतरथस्यंदन ❀ गहिपछारिमहिकीननिकंदन॥
पुनि रथ आन बैठि नृप धावा ❀ सोऊ हनुमत वेगि नशावा३४॥
इहि विधि एकऊन पंचाशा ❀ वीर सुरथ रथ करे विनाशा ॥
अस्त्र पाशुपति तब नृप घाला ❀ तासुघात कछु भये विहाला ३५
ह्वै सचेत धाये वरियारा ❀ तब नृप ब्रह्मअस्त्र पुनि मारा ॥
तऊ न नेक मुरे हनुमाना ❀ सुरथ महीप अतिहि अकुलाना ३६
तब रामास्त्र कपिहि नृप घाला ❀ गिरे भूमि हनुमंत उताला ॥
सुरथ कापिहि दृढबंधनकीना ❀ गहिपुरगमनहेतचितदीना ३७॥

दोहा—तब बोले हनुमंत कपि, अहो सुरथ नृप धीर ॥
अपर अस्त्रते बांधते, तब हे सत्य सुवीर ॥ ३८ ॥
ताछिन कपिहि निबंध लखि, धाये पुष्कल वीर ॥
हने परस्पर दोउ दुहुं, विविध विषम खरतीर ॥ ३९ ॥

तोमर छंद।

तब नृपति बहु अकुलाय। धनु चंड बाण चढाय ॥
पुष्कल हिये महँ शाल। भे तासु घात विहाल ॥ ४० ॥
भूमधि गिरे मुरझाय। रिपुदमन लखि दुख छाय ॥
पुनि समय सम धरि धीर। करि कोप धाय सुवीर ॥ ४१ ॥
भूपहि हने बहु बान। छिंदे सु वीर महान ॥
तब शत्रुहन रिस धार। बहु अस्त्र कीन प्रहार ॥ ४२ ॥
ते भये निर्फल सर्व। तब कही नृपति सगर्व ॥
प्रभु दास सत्यजुआहिं। तिन पै न मंत्र चलाहिं ॥ ४३ ॥
यौं कहि सुरथ बलवान। रिपुहनहिं हन इक बान ॥
तिहि लगतही रथ माहिं। गिरि परे कछु सुधि नाहिं ॥४४॥
पुनि भूप बाणन मारि। दिय अपर भट माहि डारि ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिहि समय रिपुहन सैन । चहुँ भजत धीर धरै न ॥ ४५ ॥
लखि कटक गति कपिराय । गरुशैल कर धरि धाय ॥
कीनो सकोप प्रहार । दीनों सुभूप विदार ॥ ४६ ॥
पुनि विपुल तरु गिरि वीर । घाले सु सब नृपधीर ॥
बाणन विभंजि बहाय । कपितन दिये शर छाय ॥ ४७ ॥
सुग्रीव धाय उताल । नख दशनतिहि तनु शाल ॥
तब सुरथ अस्त्र प्रहारि । कपिपतिहि दिय महि डारि ॥ ४८ ॥
तिहि समय प्रभु दल माहिं । कोऊ सुभट इमि नाहिं ॥
जिहि नृपन बंधन कीन । तब विजय दुन्दुभि दीन ॥ ४९ ॥
शत्रुघ्न आदिक वीर । मुर्च्छित सबै रणधीर ॥
कछु पवनपुत्रहि चेत । अरु समस्त अचेत ॥ ५० ॥
सो विवश कपि रणधीर । वर अस्त्र बद्ध सु वीर ॥
नृप सबहि रथ मधि घाल । आयो सु धाम निहाल ॥ ५१ ॥
बैठो सभा हुलसाय । हनुमतहि लै तिहि ठाय ॥
भाषी तबै नृप धीर । अब सुमिरहू रघुवीर ॥ ५२ ॥
श्रीराम आपहि आय । जौलौं न देइँ छुडाय ॥
तौलौं न कोटिन वर्ष । छूटै न अस्त्र प्रकर्ष ॥ ५३ ॥
तब सबहि निरखि अधीन । दृग नीर भरि अति दीन ॥
श्रीरामपद हिय लाय । हनुमंत कह अकुलाय ॥ ५४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सीतानाथ सुभग दयाल भक्तपाल वीर दासहों तिहारो या प्रचंड फास तोरिये ॥ रसिकबिहारी दीन दुखित घनेरो त्राहि त्राहि त्राहि वेगि अब समय बहोरिये ॥ रावरोहि एक अवलंब है कदंब सत्य मेरे दोष देखिकै कबौं ना मुख मोरिये ॥ आपनी बडाई जानि कीजिये कृपालु कृपापाहिपाहिपाहि मोहिंबंधनतेछोरिये५५

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नीको हौं बुरो हौं सांचो झूठो हौं खरो हौं खोटो कैसहू हौं तोऊ सब भाषैं रामदास है ॥ रसिकविहारी मन वच अरु कर्म गति नाथहि प्रसिद्ध सदा हृदय निवास है ॥ भेषज उपाय यंत्र मंत्र तंत्र देवी देव काहूको न मानौं एक रावरीही आश है॥मोको वेगि दुसह कलेशत छुटावो राम यामें नत होत आपहीको उपहास है ॥ ९६ ॥

दोहा—इमि ध्याये हनुमंत तब, ताही छिन श्रीराम ॥
अति उताल दीनो दरश, करुणानिधि छबिधाम ॥ ९७॥
शोभित पुष्पकयान मधि,भरत लषण मुनि संग ॥
दूरहिते लखि कपि कही, भूप हिसहित उमंग ॥ ९८ ॥

सो०—देख नृपति मम नाथ, विनयसुनत आये सपदि ॥
भक्तपाल जिहि गाथ सो विलम्ब किमि ला हीं ॥ ९९ ॥

चौ०-यौंकहतहिकौशलपुर राजा ❀ आयेद्रुतलखिस हितसमाजा॥
धाय सुरथ रघुवर पद परसे ❀ जल आनंद नन दुहुँ बरसे॥६०॥
राम कही बहु भाँति सराही ❀ क्षत्री वीर धर्म यह आही ॥
सुनि नृप विनयकरी कर जोरी ❀ पूजीनाथसकल रुचिमोरी६१॥
तब रघुवर सब वीर छुटाये ❀ दुहुँ दलके भट मृतक जिवाये ॥
उठि रिपुहन भेंटे मुदभ्राता ❀ गहे कीशप्रभु पद जलजाता ६२ ॥
अपर समस्त प्रभुहि शिरनाये ❀ प्रजा नारि नर दरश अघाये॥
तीन दिवस तहँ श्रीरघुराजा ❀ रहे भक्तवश सहित समाजा६३॥

दोहा—पुनि रघुवर मुनि बन्धु युत, बैठि सु पुष्पविमान ॥
गये मुदित नृप सुरथको, बहु विधि करि सनमान ॥६४॥
कोउ न जानत भेद कछु, कहा करत रघुवीर ॥
यज्ञ करत उत नित इतै, हरत भक्तकी पीर ॥ ६५ ॥
रसिकविहारी दुख सबै, मिटे भयो सुखभूरि ॥
दुहूँ ओर आनंद ह्वै, चहुँ जै जै धुनि पूरि ॥ ६६ ॥
सुरथ चंपकहि थापि पुर, भये सदल हय साथ ॥
राम बन्धु गमने सुखी, कहि जै जै रघुनाथ ॥ ६७ ॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० सुरथयुद्धवर्णनो
नाम दशमो विभागः ॥ १० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–श्रीरघुवर मख वाजिवर, विचरत बहु दल साथ ॥
वाल्मीकिआश्रम तहाँ, आयो सुरसरिपाथ ॥ १ ॥
परमरम्य वन हेरिकै, डोलत चहूँ निशंक ॥
अशन करत तृण पियत जल, हिंसत हंक उतंक ॥ २ ॥
मुनि कुटीनते ठौर सो, योजन एक प्रमान ॥
तहँ मृगयाहित आवहीं, सिय सुत सजि धनु बान ॥ ३ ॥
तादिन लव आये तहां, कुश बिन आप अकल ॥
वन बिचरत मुनि सुतन युत, करत मुदित बहु खेल ॥ ४ ॥
सो लव वरवाजी निरखि, बांचि तासु शिर पत्र ॥
गहि बांधो तरुते तहाँ, कही न भूमि निक्षत्र ॥ ५ ॥
प्रबल होत भवितव्य गति, कोउ न जानत भेद ॥
औचक प्रगटै बुद्धि जिहि, होवै खेद अखेद ॥ ६ ॥
वाल्मीकि षट कांड जो, सिय सुत करत सु गान ॥
सो तिन हिय भो भ्रम इतो, को हैं राम न जान ॥ ७ ॥
त्योंहीं मति मुनि सुतनकी, ताछिन गई भुराय ॥
कही न कोऊ वाजि यह, तब पित मखको आय ॥ ८ ॥
ताछिन मुनि बालक लवहि, इमि भाषी समुझाय ॥
वर्ष पंचदश ते अधिक, निज मधि कोउ न आय ॥ ९ ॥
तजौ वाजि ह्याँते चलौ, करिय बाल कहँ युद्ध ॥
ह्वै हैं संग तुरंगके, रक्षक जन भट उद्ध ॥ १० ॥
पुनि मुनि शिष्यनको समर, उचित कहै नहिं कोय ॥
ताहू पै नृप दल अमित, तुम इक ते कह होय ॥ ११ ॥
तब लव भाषी हे सखा, तुम सब हौ द्विजबाल ॥
भोजन भिक्षा पढ़न तजि, और न जानो हाल ॥ १२ ॥
क्षुधित तृषित ह्वै हौ अतिहि, जावो गेह पराय ॥
इत अबहीं ह्व है समर, लखि तुव चित्त भ्रमाय ॥ १३ ॥
कही मित्र तुम सत्य यह, हैं अबहीं हम बाल ॥
पै क्षत्रीसुत शुद्ध सो, वीरनके उरशाल ॥ १४ ॥
रामहि इमि अभिमान है, जानत भूमि निक्षत्र ॥
बाँधो बैन उतंक लिखि, मख तुरंग शिर पत्र ॥ १५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कितहूँ वीर सु आजलों, मिलो न ह्वैहै कोय ॥
जानि परैगी सबहि अब, क्षत्रिय बल इमि होय ॥१६॥
ताछिन हय सेवक तहां, आये वीर विशाल ॥
तिनहिं दूरहीते निरखि, भाजि दुरे द्विजबाल ॥ १७ ॥
लव अकेल सजि बाण धनु, रहे वाजिके पास ॥
सो बंधित लखि बाल ढिग, कियसेवकगण हास ॥१८॥
ते सेवक लखिकै सपदि, छोरन लगे तुरंग ॥
लव बरजे माने न फिर, कीने नैन सुरंग ॥ १९ ॥
तब सीतासुत कोपिकै, सपदि धाय बहु डाट ॥
तिन सब हय सेवकनके, भुज डारे महि काट ॥ २० ॥
भजे विकल तहँते सकल, आये रिपुहन पास ॥
कही सबैं गति बिलपिकै, ह्वै हिय निपट हिरास ॥ २१ ॥
शत्रुशमन सुनि चकित ह्वै, कहे विचारि सु बैन ॥
विष्णु होय कै शंभु ध्रुव, सो नर बालक हैन ॥ २२ ॥

प्र० ॥ रा० ॥ अ० ६० ॥ श्लोक ।

नायं बालो हरिर्नूनं भविष्यति हयं धरः ॥
अथवा त्रिपुरारिः स्यान्नान्यथा मद्धयापहृत् ॥ १ ॥

दोहा—पै हरि हर हो कोउ सो, कहा विजय ले जाय ॥
श्रीरघुवर ते काहुको, छल बल कछु न चलाय ॥ २३ ॥
यौं कहि पुनि रिपुदमन द्रुत, सेनापतिहि बुलाय ॥
दई रजायसु युद्ध करि, लावो वाजि छुटाय ॥ २४ ॥
सो०—कालजीत जिहि नाम, सकल सैनपति वीर वर ॥
लै बहु भट बलधाम, चलो साजि चतुरंग दल ॥ २५ ॥

भुजंगप्रयात छन्द ।

चमूनाथ लै सैन आयो तहांई । अकेले सियापुत्र ठाढे जहांई॥
कहीसोतबै छोरिदेवाजिबाला।करैक्योंवृथाआपनीमृत्युहाला २६
सिया सूनु भाषी तबरे अयाना।जुहौंकालतेरोसु क्योंबालजाना॥
कछू वीरताहोय वेगैदिखावै। नतासनलफर पाछै सिधावै॥ २७॥
तबै फेर सेनापती यों बखानी। लखौं रामसो रूप दाया सुठानी॥
भली हैअजौंछोडिदैयज्ञवाजी।नतौबांधिहा तोहि तौहोयराजी२८

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताटक छन्द ।

सुनिकै लव वेगहि बाण सज । धनुतान सँधान सकोप तजे॥
छिनमें बहु सैन विदारि दई । वर वीरनकीमति हारगई॥२९
सजि सायक चाप अनीप घने।करि कोप महाबल अंगहने॥
नृपराज सबै शरभंजि दिये । बहुरौ तिहिप्राण विहाल किये३०
पुनि स्यंदनखंडि चमूपतिको।कियहाल विहाल कहै गतिको॥
तब सो द्रुत भीमगयंद चढ़ो । करधारिगदाबहु कोपमढ़ो३१

तोमर छन्द ।

सो गदा कीन प्रहार । लव भंजि तिहि दिय डार ॥
मारो परिघ पुनि चण्ड । किय सोउ नृप सुत खण्ड ॥३२॥
बहुरौ सुल करवाल । गज शुण्ड काटि उताल ॥
तिहि दंभ पद धरि वीर । करि शीश चढ़ि रणधीर ॥ ३३ ॥
कीनो मुकुट तिहि छिंदि । पुनि कवच वेगहि भिंदि ॥
दलपतिहि कच कर धार । डारो सु भूमि मझार ॥ ३४ ॥
तब कालजित अति पुष्ट । मारो लवहि दृढ मुष्ट ॥
पुनि लै कृपाण कराल । तानो सुहस्त उताल ॥ ३५ ॥
सो सपदि हनिशर चण्ड । सह खड्ग भुज किय खण्ड ॥
तब कोपिक दलनाथ । लिय गदा वामहि हाथ ॥ ३६ ॥
सोऊ भुजा लव वीर । दिय छिंद हनि खर तीर ॥
तब कालजित वरियार । किय कोपि चरण प्रहार ॥ ३७ ॥
लव पगहु खंडित कीन । सो गिरत शीर हनि दीन ॥
तिहि वीरता लखि वीर । जिय कहत वीर सु वीर ॥ ३८ ॥
पुनि ल कृपाण प्रचण्ड । लव तासु शिर किय खण्ड ॥
फिरि विशिषबाणन मारि। दिय सकल सैन बिडारि ॥३९॥
दोहा—लव लाघवता अकथ यह, लरत चमूपति संग ॥
आवत अमित हथ्यारते, करत तिनहुँको भंग ॥ ४० ॥
लाख यह गति सब थकित ह्वै, पुनि दलपतिको घात॥
विजय आश तजिकै सुभट, भगे विकल विललात॥४१॥
कही जाय रिपुदमन ते, रण गति सकल अधीर ॥
कालजीत दलपालको, वध कीनो शिशुवीर ॥ ४२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शत्रुशमन सुनि चकित ह्व, कीनो शोक अपार ॥
पुनि धरि धीरज पुष्कलहि, कही समेत विचार ॥ ४३ ॥
वीर जाहु भट सैन लै, गहि लावो सो बाल ॥
भरतपुत्र सुनिकै सकल, साजो साज उताल ॥ ४४ ॥
ख० गगन०नभ०महि १ ग्रह ९ निगम ४, स्यंदन इते सुढंग ॥
हय गज पद चर अपर बहु, दल चतुरंग अभंग ॥ ४५ ॥
इमि सजिक धाये सकल, सिया सुतहिं लखि वीर ॥
घेरि शस्त्र वर्षन लगे, शक्ति शूल असि तीर ॥ ४६ ॥

दोवई छंद ।

राज पुत्र तिन मध्य अकेले पद मंडल दै युद्धे ॥
खंड खंड करि चंड वीरते बाणन प्राण निरुद्धे ॥
गज तुरंग स्यंदन अरु पदचर लव निशंक बहु भंजे ॥
भये अधीर मरत तजि भागे सकल सुभट मद गंजे ॥ ४७ ॥
तौ लग पुष्कल आय वेगही सैन दशा अवलोकी ॥
फिरौ फिरौ कहि टेर धीर दै भगत अनी सब रोकी ॥
बचे वीर ते अपर भूरियुत भरत पुत्र द्रुत धाये ॥
सकल सुभट मिलि राम पुत्र पै अमित शस्त्र वरसाये ॥ ४८ ॥
लव ते सर्व हथ्यार शरनते छिंदि भूमि मधि डारे ॥
पुनि धनु तान बाण अगणित हनि विकल किये भट सारे ॥
तब पुष्कल बहु विशिख तीरते राजपुत्र तनुशाला ॥
सो फिरि सूत वाजि स्यदन दलि वीरहि कियो विहाला ४९ ॥
गिरे भूमि पुष्कल तब हनुमत लवहि वृक्ष लै मारा ॥
सियसुत सपदि छिंदि बाणन ते सो तरु भूमि पँवारा ॥
पुनि करि क्रोध शैल पाहन द्रुत कीश अनेक प्रहारे ॥
सोऊ सकल वीर तीरनत भजि महीतलडारे ॥ ५० ॥
पुनि हनुमंत लपेटि पुच्छ मधि चाहो सपदि उछाला ॥
लव अकुलाय उताल मुष्ट हनि कपि लंगूरहि शाला ॥
तासु घात ह्वै विकल वीर तिन छोड दये ततकाला ॥
वेगि सीयसुत दलि बाणन ते कीशहि कियो विहाला ॥ ५१ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-ताक्षणकपिविचारमनमाहीं।विशिखबाणअबनहिंसहिजाहीं॥
या क्षण मोर मरणभलि बाता ❀ सो न होय वर दियो विधाता९२
जो पै युद्ध त्यागि भगि जाऊं ❀ दुहूँ लोक निज हाल नशाऊँ ॥
याते उचित करौं छल तौलौं ❀ राम बंधुजीतैं इहि जौलौं ९३॥
इमि विह्वल ह्वै ठान विचारा ❀ गिरे कपट ते भूमि मझारा ॥
धरणि परत हनुमतदलसारा ❀ हायहाय करिसभय पुकारा ९४

प्र० ॥ रा० अ० ६१ ॥ श्लोक ॥

इत्येवं मानसे कृत्वापपातरणमंडले ॥
पश्यतां सर्ववीराणां कपटेन विमूर्छितः ॥ २ ॥

चौ०-ताक्षण सुनि सुवीर कर हाला ❀ धायेरिपुहनअतिहिउताला
संग अनेक सुभट रणधीरा ❀ भिरे आय करि नादगँभीरा ९५

अर्द्धावली छद ।

कोपि लव वीर तब बाण वर्षा करी ॥ प्रबल भट कटक लखि समर कर्षा भरी॥शत्रुहन प्रखर शर सबल बहु तज्जहीं॥ ते सकल वीर तीरन सपदि भज्जहीं ॥९६॥ अपर बहु वीर शर शक्ति तोमर घने ॥जे प्रहारे सबै तेउ बाणन हने॥ फेरि लव कोपि निज चंड शर छंडिकै ॥ शत्रुहन धनुषडारो धरणि खंडिकै ॥ ९७ ॥ बहुरि रथ सारथी वाजि भंजन करे॥बैठि स्यंदन अपर क्रोधारिपुहनभरे॥ शालि दिय तीर बहु वीर लव गातमें ॥ भाल दृग कंठ उर उदर पद हातमें ॥ ९८ ॥ तासमय सीय सुत रंच व्याकुल भये ॥फेर ह्वै सजग रिपुहनहि बहुशर हये ॥ लगत लवबाण शत्रुघ्न मूर्छित गिरे ॥ हेरि अकुलाय बहु भूप क्रोधित भिरे ॥९९॥ घेर चहुँ फेरतेशस्त्र घालनलगे ॥ शूल शर परिघ असि भल्ल शालन लगे ॥ तबहि लव कोपि किय युद्ध चहुँ चक्र दै ॥ मंडलाकार गति धाय पद वक्र दै ॥ ६० ॥ विशिख वर तीर लव वीर तज्जे तबै ॥ धीरख्वै पीरवश नृपति भज्जे सबै ॥ ता समय शत्रुहन सजग ह्वै धायकै ॥ युद्ध किय उद्ध पुनिकुद्ध उर छायकै ॥६१॥ वीर कुश बंधु रणधीर रिपुशालहैं॥दोउ अतिप्रबल रघुलालरघुलाल हैं॥दोउ दोउन हनत बाण संधानकै ॥ दोउ भंजत दुहूँ विधत उर आनकै ॥ ॥६२॥ तबहिं रिपुदमन सो तीर क्रोधित लियो ॥ जाहिते लवण

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वर वीरको बध कियो ॥ सपदि संधानि धनु कान लग तानकै॥ सबल घालो लगो सो हिये आनिकै॥ ६३ ॥घात वश तासु लव आसु मुर्छित गिरे ॥ हेरि हरषाय सब धाय चहुँदिशि घिरे ॥ राजपु- हि सपदि शत्रुहन धायक॥ धारि रथ मध्यगवने विजय पायकै ॥६४॥यज्ञ हय छोरिलव भयो हापत हियो ॥ जैति जै जैति जै शोर सबही कियो ॥ कहत जन परस्पर बाल अभिरामको ॥ रूप लखि मुदित मन होय श्रीरामको ॥ ६५ ॥

दोहा—जब इहि विधि लै लवहि सब, चले मुदित जय छाय ॥
तब जो मुनि बालक समर, देखत रहे दुराय ॥ ६६ ॥
सो सबही अकुलायकै, भागे निपट अधीर ॥
कहत सखा अब मिलिहि किमि, गहि लैगो नृपवीर॥६७॥
उत लवकी वह गति भई, लखि भाजे सब बाल ॥
जनकसुता सोचैं इतै, कहाकरत वन बाल ॥ ६८ ॥
इत उत देखैं सिय कहैं, दिवस गयो द्वै याम ॥
लव शिशुता अजहुँ न तजै, वन डोलै बिन काम॥६९॥
पुनि खलन वन जात सो, आवत सदा उताल ॥
आज प्रातहीको गयो, अबलों फिरो न बाल ॥ ७० ॥
मध्य दिवस आतप छयो, बालक अति सुकुमार ॥
क्षुधित तृषित ह्वैहै सुवन, कहा लगाई बार ॥ ७१ ॥
इहि विधि करहिं विचार सिय, मनहीं मन अकुलाय ॥
ताही छिन द्विज बाल सो,व्याकुल आये धाय ॥ ७२ ॥
निपट विहाल समस्त सो, हाल कहो विलपाय ॥
सुनत जानकी प्रानकी, सुधि बुधि गई भुलाय ॥ ७३ ॥
ते द्विज बालक रण लखो, याते हृदय विहाल ॥
कहि लवगति निज निज कुटी,जाय दुरे ततकाल ॥७४॥
को नृप काको वाजिहै, सिया न जानो भेद ॥
शिर उर धुनत विहाल अति, रुदन करै बहु खेद ॥७५॥
हाय हाय करि विलपिकै, कहै सिया अकुलाय ॥
कुश मुनि कोउ न को अबैं, लावै लवहि छुटाय ॥ ७६॥
इहाँ अगम वन दूरलो, नगर ग्राम पुर नाहिं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि मुनि गण विन इहि विपिन, और न कोउ रहाहि७७
सो सब गये अवंतिका, मुनि गण कुशहू साथ ॥
हाय करौ मैं काह अब, या छिन निपट अनाथ ॥ ७८॥
इमि अति बिलपतही सिया, ताही छिन कुशवीर ॥
आये औचक मातु गति, निरखत भये अधीर ॥ ७९ ॥
त्रिकालज्ञ मुनि चरित सब, जानत परम सुजान ॥
भेद न प्रगटो रंचहू, मानों निपट अयान ॥ ८० ॥
मातहि शिर नमि जोरि कर, तब कुश बूझो हाल ॥
निज दुख भाषो जानकी, विलपत सकल उताल ॥८१॥

चौ०-सुनि कुश हीय भयो अतिक्रोधा।मातहिकरिबहुभाँति प्रबोधा
साजो द्रुत अभंग तनु त्राणा❀चर्म कृपाण शक्ति धनुबाणा८२ ॥
गवने मातु चरण धरि शीशा❀सीय दई जय सिद्धि अशीशा ॥
कुशधाये करि क्रोध अपारा❀दूरहि ते लखि सबहिभ्रचारा८३
रिपुहन आदि कुशहि जब देखा❀छायो हिय आश्चर्य विशेषा॥
कहत बाल यह मायाकारी❀पुनि आयो दूजो तनुधारी ॥८४॥

दोहा-इक तनु ते इत विवश ह्वै, परो सबहि भरमाय ॥
दूजो वपु धरि औचके, आयो अंग सजाय ॥ ८५ ॥
वय वपु शोभा साज सब, दोऊ एक समान ॥
ध्रुव यह सुरमाया कछू, भेद परत नहिं जान ॥ ८६ ॥
कहत परस्पर चकित इमि, सजग भये सब कोय ॥
ताक्षण लव मुर्च्छा जगी, अति अलक्ष चहुँ जोय ॥८७॥
भ्रातहि आवत देखिकै, भयो महा आनंद ॥
तौ लग कुश पहुँचे सपदि, कियो शोर जनवृंद ॥ ८८ ॥
ताक्षण तुर धनुबाण गहि, रथते उछलि उताल ॥
परे भ्रात ढिग वीर लव, सजग भये तत्काल ॥ ८९ ॥

चारी छंद ।

अति मुदित दुहुँ बलवंत सिय सुत सपदि चाप चढाय ॥
चहुँ धाय धाय कराल बाणन घाल दल दिय छाय ॥
तब सकल वीर सुधीर गहि गहि शस्त्र अगणित उद्ध ॥
रिपुशाल आदि विशाल भट बहु करन लागे युद्ध ॥९०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वर सुभट वनचर भालु मानुष यातुधान अपार ॥
तरु कुधर पाहन शक्ति शर असि परिघ शूल प्रहार ॥
दुहुँ वीर ते बहु तीर हनि हनि करत सबहीं चूर ॥
पुनि मारिकै सु प्रचंड बाणन सकल गातहि पूर ॥ ९१ ॥
तब कोपि रिपुहन वीर तीरन छाय दिय दुहुँ वीर ॥
रणधीर सियसुत तदपि भे तिहि समय कछुक अधीर ॥
कुश अग्नि अस्त्र प्रहार सो लखि वरुणते किय खंड ॥
वायव्य छोड़ो ताहि पवत घालकै चहुँ मंड ॥ ९२ ॥
वर वज्र ते गिरि चूर किय तब कुश महारिस लाय ॥
नारायणास्त्र प्रहार सो रिपुहनहि कछु न जनाय ॥ ॥
लखि सीयसुत अरि शाल ते भाषी अहो नृप वीर ॥
अब तुमहिं डारत भूमि हौं सब भांति होउ सधीर ॥ ९३ ॥
यों कहि प्रहारे तीन शर सो लगतही रिपुशाल ॥
बहु व्यथित ह्वै अकुलाय मूर्छित गिरे भूमि विहाल ॥
तिहि समय हाहाकार भो धाये समस्त नृपाल ॥
तिन सबहि दोऊ बन्धु बाणन वेधि डारे हाल ॥ ९४ ॥
सो गति विलोकि समीर सुत तरु कुधर अमित प्रहार ॥
तीरन विदारे सकल ते दुहुँ वीर राजकुमार ॥
पुनि कीश बहु द्रुम शैल पाहन घाल चहुँ दिशि छाय
अकुलायकै सिय पुत्र कुश तब अतिहि कोप बढाय ॥ ९५ ॥
संहार अस्त्र प्रहार कीनो तबहि पवनकुमार ॥
कहि राम राम अचेत मूर्छित गिरे धरणिमझार ॥
पुनि कोपिकै लव कुश दुहूँ बहु चंड बाणन मारि ॥
दल सकल किय विध्वंस भागे सुभट हाय पुकारि ॥ ९६ ॥
सो हेरिक कपिनाथ धाये शैल तरु गिरि खण्ड ॥
दुहुँ बन्धु पर बरषाय छाये कीन क्रोध प्रचण्ड ॥
ते सकल राजकुमार बाणन भंजि डारे भूमि ॥
सुग्रीव तब लंगूर घालो भूरि बल युत हूमि ॥ ९७ ॥
कुशवीर कपिपति अंगमें बेधे अनेकन तीर ॥
तोऊ सुकंठन न फिरत फिरि फिरि भिरतभट रणधीर ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब वरुण अस्त्र चलाय सियसुत तिनहिं दीन गिराय ॥
सुग्रीवहू महि परे मूर्छित सकल सुरति भुलाय ॥ ९८ ॥
कपिराज गिरतहि सकल जन इत उत भगे चहुँओर ॥
आरत पुकारत हाय विलपत घोर करि करि शोर ॥
लहि विजय लव कुश दुहूँ परस्पर मिले भरि भरि अंक ॥
पुनि जायकै गहि लीन सो मख वाजि निपट निशंक ॥९९॥

दोवई छंद ।

बहुरि बन्धु दुहुँ निर्भय प्रमुदित फिरि चहुँ कटक निहारा ॥
कीट मुकुट धनु शर रिपुहनको साज विशद लिय सारा ॥
तब लव हनुमत पुच्छ पकरिकै कही हुलसि हे भ्राता ॥
ल चलि हैं सुठिकपि विनोद हित हो अनंदलखिमाता १०० ॥
गहि सुकंठ लंगूर कुशहु तब कही हमहुँ यह लेहैं ॥
दोऊ बंधु पालि हैं दुहुँ कपि निज निज फेरि लरैहैं ॥
यों गुनि युगल रामसुत इक इक कीश पुच्छ कर धारी ॥
खचत चले साज हय लीने विजयी परम सुखारी ॥ १०१ ॥
तब सुकंठ हनुमतहि चेत भो पर अति विवश दुखारी ॥
लखत परस्पर सभय न बोलत दुहुँ निज पुच्छ पसारी ॥
कपि कौतुक लखि हँसत बाल सो ऐंचत लीने जाहीं ॥
दूर जान तिन हरे पौनसुत भाषी कपिपति पाहीं ॥ १०२ ॥
कहिय नाथ अभ किहि विधि जीजे भयो अयश अति भारी ॥
किये जिते सब काज आज सो गई वीरता सारी ॥
तब सुकंठ बोले हे कपिवर कहा आपने हाथा ॥
मम उर यही शोच पै अब तौ रक्षक हैं रघुनाथा ॥ १०३ ॥
यों शोचत कपि तौ लग नृपसुत निज कुटीर नियराने ॥
ताक्षण सिय दोऊ सु कीश लखि दूरहि ते पहिचाने ॥
पै सुकंठ हनुमान मैथिलिहि नहिं देखी सो दूरी ॥
सीता सुनत कही कछु धीरे सपदि नैन जल पूरी ॥ १०४ ॥
तजौ पुत्र दुहुँ कीश वेगि सो मातु रजायसु पाई ॥
छोरि दये कपि भजे जीव लै दुरे सैनमधि आई ॥
उत कुश लव सानन्द सियापद परशि विजय गतिभाषी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सकल वस्तु लाये सो जननी सन्मुख प्रमुदित राखी ॥१०५॥
दोहा—सिय दुहुँ सुत हिय लायक, भई परम आनंद ॥
पै देखे कपि याहि ते, कछू वदन मति मंद ॥ १०६ ॥

दोवई छंद ।

ताक्षण कुश भाषी हे जननी सकल अनूपम साजा ॥
पुनि वर वाजि अवधपति मखको मम वाहनके काजा ॥
ताक्षण विदित भई सीतहि गति गिरी धरणि मुरझाई ॥
हाय हाय कहि विलपन लागी चकित निरखि दुहुँ भाई १०७
पुनि धरि धीर मैथिली वेगहि यज्ञ तुरंग छुडायो ॥
बहुरि पवित्र नीर लै करमें यह संकल्प दृढायो ॥
जो मन वचन कमत हौं निजपति बिन भजौं न कोऊ ॥
तौ अबहीं सब दल पूरब सम विरुज सजीव सु होऊ॥१०८॥
यों कहि सिया भूमि जल डारो ताक्षण तहँ सब कोई ॥
विरुज सजीव भये आनंदित प्रात उठे जनु सोई ॥
सो न भेद कछु काहु जनायो राम कृपा अनुमानी ॥
मख तुरंगलै प्रमुदित गमने आय गये रजधानी ॥ १०९ ॥
दोहा—निरखि अवध सरयू सबै, कीन्हो हरषि प्रणाम ॥
गये यज्ञथल शत्रुहन, दल हय युत अभिराम ॥ ११० ॥
सब सानँद प्रभु पद गहे, श्रीरघुवर हरषाय ॥
यथायोग आदर किये, सबहीके सतभाय ॥ १११ ॥
आठ मास दिग विजय करि, नवम प्रवेश तुरंग ॥
सदल कुशल आयो अवध,सविधि सुयज्ञ अभंग ११२ ॥
मख होवै प्रति दिवस वर, जुरो अपार समाज ॥
सुर नर मुनि नित आवहीं, सन्मानत रघुराज ॥ ११३ ॥
इति श्रीरा० र० वि० वि० लवकुशयुद्धवर्णनो नाम एकादशोविभागः११

सो०—अश्वमेध वर यज्ञ, करत कोशलाधीश तहँ ॥
मुनि द्विज परम गुणज्ञ, नित आवत मख दरश हित १॥
यज्ञ अवधि द्वै मास, रही व्यतीते मास दश ॥
तब मुनिवर तपराज, वाल्मीकि आये मुदित ॥ २ ॥
दुहुँ सिय सुत ऋषि संग, अपर भूरि मुनि मंडली ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सादर सहित उमंग, रहे मुदित मख दरशहित ॥ ३ ॥
लव कुश दोऊ वीर, जिन ठानो बहु युद्धवर ॥
पट कषाय द्रुम चीर, ते धारण कीने सुभग ॥ ४ ॥
चौ०-जाक्षण समर करो दुहुँबाला ❀ ताक्षणऔरहि छटाविशाला॥
अब सुत्रेष मुनि शिष्य प्रमाना ❀ इनहिंकियोरणकोउन जाना५
वाल्मीकि हियकी हिय राखी ❀ राम पुत्र ये काहु न भाषी ॥
सान्निधिऋषिजेतेगतिज्ञाता ❀ लखिमुनिरुचिकियकोउनख्याता६
जब सीता मखवाजि छटायो ❀ सुनत तबैसबकहि समुझायो ॥
सो लव कुश जानैं यह बाता ❀ राम अवधपति हैं मम ताता ७॥
पै दोऊ गुरु आज्ञाकारी ❀ यातेनिजमुख कछु न उचारी ॥
सदा रहैं मुनि शीश प्रमाना ❀ तिहितजिकाजकरैं नहिं आना८
सो कुश लव तापसके भेषा ❀ शोभितनखशिख अंग सुदेशा ॥
गुरुकृत रामायण नित गावैं ❀ परम रम्य वर वीण बजावैं ।९॥
राग रागिनी समय समाना ❀ शुद्धवर्ण स्वर ताल प्रमाना ॥
लय विश्राम सु भेद समेता ❀ गान करैं सह वाद्य सचेता १०
तिनलखिसबजनअतिहरषावैं ❀ मुनि द्विज नृपनिजनिकट बुलावैं
सादर बारहिं बार गवावैं ❀ रामायण सुनि अचरज लावै ११
सुनि रघुवर दुहुँ वेगि बुलाये ❀ गुणी समाज जोरि बैठाये ॥
तिन बिच रामायण तिन गाई ❀ सुनतसकलहियविस्मयछाई १२
अति प्रसन्न ह्वैरामप्रवीना ❀ वसुदशसहस १८००० स्वर्णतिन दीना
तब भाषी दुहुँ रघुवर पाही ❀ हममुनिशिष्यलेतधन नाहीं १३॥
पुनि इमि भाषी राम नृपाला ❀ हम सुनिहैं सब ग्रंथ रसाला॥
तब लै गुरु आज्ञा नित आई ❀ बहु दिन लग रामायण गाई १४
इहिविधिनितअनंदअधिकाना ❀ पूरण यज्ञ समै नगिचाना ॥
तब रघुवर निज हीय विचारी ❀ अबइतसियआगमशुभकारी १५
पुनि मुहिं वाल्मीकि मुनिराई ❀ सिय अंगीकृतहित समुझाई ॥
याते जाय लषण लै आवैं ❀ यज्ञ दरश सीताहू पावैं ॥ १६ ॥
यौं गुणि बंधुहि दई रजाई ❀ ऋषि आश्रम ते सीतहि लाई ॥
राख्यौ वाल्मीकि मुनिपासा ❀ सुनत लषणहियभयोहुलासा १७
दोहा-वाल्मीकि मुनिके जु हैं, शिष्य महोदय नाम ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिन युत रथ लैकै लषण, वेगि गये तिहि ठाम ॥ १८॥
प्रभु आज्ञा कहि शीश नमि, लाये अति समुझाय॥
वाल्मीकि ढिग सीयको, राखी राज रजाय ॥ १९॥

प्र० रा० ॥ अ० ६६ ॥ श्लोक।

इत्युक्त्वा लक्ष्मणो रामं रथे स्थित्वा नृपाज्ञया ॥
सुमित्रमुनिशिष्याभ्यांयुतोगाद्भूमिजाश्रमम्॥१॥इत्यादि॥

दोहा—जादिन मख पूरण हुतो, तादिन आई सीय ॥
सुनि अतिही आनँद भयो, पुर परिजनके हीय ॥ २० ॥
सो मखपूरण दिवस प्रभु, गुरु मुनि आयसु पाय ॥
दिये दान बहु सहित विधि, श्रद्धा भक्ति दृढ़ाय ॥ २१ ॥

दोवई छंद।

पुनि जेते नृप अरु नृपरानी नरपति पुत्र समाजा ॥
नृपति पुत्र नारी ये सबही सहित उचित रघुराजा ॥
ह्वै पुनीत इकठौर भये तब गुरु वसिष्ठ मुनि वृंदा ॥
ले शुचि जल समस्त अभिषेके बाढो हृदय अनंदा ॥ २२ ॥
पुनि अगस्त्य मुनि खड्ग मंत्रि कै सविधि राम कर दीना॥
सो लै वाजि पीठ प्रभुधारा दिव्यरूप तिहि लीना ॥
तजि पशुगात देव वपु ह्वै कै बैठि विमान सिधारा॥
सुर नर मुनि अवलोकितासु गति कियो सु जैजैकारा ॥ २३॥

प्र० ॥ रा० ॥ अ० ६७ ॥ श्लोके।

करवाले धृते पृष्ठे रामेण स हयः क्रतौ ॥
पशुत्वं तु विहायाशु दिव्यरूपमविंदत ॥ २ ॥
विमानवरमारुह्य अप्सरोभिः समंततः ॥
चामरैर्वीज्यमानश्च वैजयंत्या विभूषितः ॥ ३ ॥
गतोसौ शाश्वतस्थानं रामपादप्रसादतः ॥
पुनरावृत्तिरहितं शोकमोहविवर्जितम्॥४॥इत्यादि ॥

दोवई छंद।

बहुरि देव सब सविधि तृप्त करि पूरण आहुतिदीनी।
अपर क्रिया मख अंत उचित सो सकल यथारथ कीनी ॥
अश्वमेध वर यज्ञ समापत भयो मुदित सब कोई ॥
नृत्य गान सन्मान दान बहु चहुँ जैजै ध्वनि होई ॥ २४ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोहा–पुनि गुरु मंत्री राम मिलि, कियो विचार दृढाय ॥
सबहि बिदा अब दीजिये, भयो वर्ष इत आय ॥ २५ ॥
चौ०-तब रघुवरजननिकटबुलाये ❀ सबहियथोचितकाजदृढाये॥
भूपनके सतकारन हेता ❀ थपेअनुज तिहुँपरमसचेता ॥२६॥
द्विजगण आदर अर्थ महीशा ❀ दै शिख राखे निपुण कपीशा॥
मुनिजनमाननकाज कृपाला ❀ आरोपितकियलंकनृपाला॥३७॥
अपर जनन परतोषन हेता ❀ राखे सेवक सखा सचेता ॥
तियनबिदा रनिवास मझारा ❀ इमिप्रबंधरघुवरकियसारा॥२८॥

दोवई छंद।

इहि विधि बिदा प्रबंध ठानि पुनि राघव हृदय विचारी ॥
ऋषि आश्रमते आये सीतहि बीत गये दिन चारी ॥
लषणहि पठै बोलि लीनी मैं पुनि मुनि पास ह राखी॥२९॥
'ऐसे समय शपथ होवे तो भली भूरिजन साखी ॥
दोहा–यों विचारि श्रीराम तब, सभा मध्य द्रुत आय ॥
दूतन प्रति आज्ञा दई, ताक्षण सबहि सुनाय ॥ ३० ॥
वाल्मीकि मुनिनाथको, मम दिशिते शिरनाय ॥
विनय करो सियप्रातनिज, शपथ देय नित आय ॥३१॥
तब चर मुनि ढिग जायकै, कही कही जिमि राम ॥
भाषी ऋषि आशीषदै, पुजै राज मन काम ॥ ३२ ॥
चौ०–भयो शोर चहुँओर सुभारी ❀ जुरे प्रभात अमित नरनारी॥
नित्य नेम करि श्रीरघुराई ❀ शोभित भये सभा मधि आई३३॥
ताक्षण वाल्मीकि मुनिनाथा ❀ आये लै सिय कुश लव साथा॥
उठेराम नमिसहित समाजा ❀ आशिष दीनमुदितऋषिराजा ३४॥
नख शिख अंग सु वस्त्र दुराये ❀ कर जोरे लज्जित शिरनाये॥
वाल्मीकि पाछे सियठाढी ❀ शोकविरह व्रीड़ागिनिबाढी॥३५॥
दोऊ नृपसुत मुनि पट धारी ❀ खरे मातु युत सभा मझारी ॥
त्यों सियवसनकषाय निहारी ❀ भये सकलनरनारिदुखारी ३६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब मुनि कही सुनौ रघुनाथा ❀ अति पुनीत सिययुत तवगाथा ॥
सीय समान पतिव्रत नारी ❀ नहिं तिहुँ लोक धर्मधुरधारी ॥३७॥
हम बहु नेम धर्म व्रत लीना ❀ विपुल सहस्र वर्ष तप कीना ॥
ते मम सब निरफल ह्वै जाहीं ❀ जो कछु दोष होय सिय माहीं३८॥
ये कुश लव दुहुँ शिष्य हमारे ❀ हैं रघुवीर सुपुत्र तिहारे ॥
यौं कहि सत प्रतीति मुनि दीनी ❀ सुतन सहित सिय सन्मुख कीनी
तब करजोरि मुनिहिं शिरनाई ❀ सत्य वचन बोले रघुराई ॥
परम प्रमाण वाक्य तव नाथा ❀ प्रभु शिख हौं धरि लई सुमाथा ४०
पुनि बोले प्रभु मुनिहि विनीता ❀ हौं जानो सिय परम पुनीता ॥
पै पुरजन कछु अनुचित भाषी ❀ तब कछु दिन प्रभु आश्रम राखी
हैं मम पुत्र दुहूँ मैंजानो ❀ पूत मैथिली सत्य बखानो ॥
ताक्षण सुर नर मुनि चहुँ ओरा ❀ कही शुद्ध सीता करि शोरा४२
तिहि औसर पिय हियगति जानी ❀ सियनिशंक ह्वै त्यागगलानी
हाथजोर पतिपद उर आनी ❀ महि टकलाय कही वरवानी॥४३॥

दोहा—जो अनन्य मन कर्म वच, सदा भजे रघुराय ॥
तौ मोको याही समय, विवर देहि महि माय ॥ ४४ ॥

प्रश्न ॥ वाल्मीकीये ॥ उत्तरकांडे सर्ग ॥ ९७ ॥

सवास्तानागतान्दृष्ट्वा सीता काषायवासिनी ॥
अब्रवीत्प्रांजलिर्वाक्यमधोदृष्टिरवाङ्मुखी ॥ ९ ॥
यथाहं राघवादन्यं मनसापि न चिंतये ॥
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति ॥ ६ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—यों सिय मुख ते कढ़त ही, धरणी भई दरार ॥
इक सिंहासन विवरते, प्रगटो तेज अपार ॥ ४५ ॥
शीश धरे तिहि नाग बहु, ताही क्षण महि आय ॥
सिंहासन पै सीयको, कर गहि लई बिठाय ॥ ४६ ॥
सो सिंहासन वेगही, पुनि गो धरणि मझार ॥
विवर भयो पूरित सपदि, रही न भूमि दरार ॥ ४७ ॥
जै जै छायो शोर चहुँ, व्योम पताल मझार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुरगण अति आनंद ह्वै, वरषे सुमन अपार ॥ ४८ ॥
अंतर्द्धान सियाहि लखि, सब नर नाार पुकार ॥
विह्वल बहु विलपात चहुँ, छायो हाहाकार ॥ ४९ ॥
श्रीरघुवीर अधीर अति, कियो भूमिपै कोप ॥
लषण लाव धनु शर अबै, करौंधरणिको लोप ॥ ५० ॥
तब सुर मुनि कर जोरिकै, विनय करी समुझाय ॥
है तव अरधंगी सिया, प्रभु विहाय [illegible] जाय ॥ ५१ ॥
सियहि तजी बिन दोष प्रभु, यों तिहि मातु रिसाय ॥
ल गमनी निज धाम पुनि, देहै अवध पठाय ॥ ५२ ॥
अंतर मग प्रभुते प्रथम, गइ सिया तव धाम ॥
सदा निरंतरसे इहै, लखि लीजो श्रीराम ॥ ५३ ॥
सुनि रघुवर प्रमुदित भये, देव गये निज धाम ॥
तादिन नैमिष मध्य सब, कीनो निशि विश्राम ॥ ५४ ॥
चौ०-प्रात समय पुनि जुरो समाजा ❀ भयो समस्त बिदाकोसाजा
ताक्षण वाल्मीकि मुनिनाथा ❀ दै लव कुशही सप्तम गाथा ५५॥
पुनि भाषी यह यज्ञ प्रयन्ता ❀ अबहीं कहैं सुन सब संता ॥
अंत कथा वह गुप्तहि राखौ ❀ सहस वष पाछे पुनि भाषौ ॥५६॥
तब तिन निज गुरु शीष प्रमाना ❀ गायो सुनि सब अचरजमाना॥
ताक्षण शिव ब्रह्मासुर राजा ❀ बोले सकल सु देव समाजा ५७ ॥
दोहा–प्रभु तव आविर्भावते, वर्ष सहस चौवीश ॥
प्रथमहि विरचो ग्रंथ यह, वाल्मीकि मुनि ईश ॥ ५८ ॥
सोकुश लवको कांडषट, प्रथम दये ऋषिराज ॥
दीनो सप्तमकांड यह, प्रभु तव सन्मुख आज ॥ ५९ ॥
वेदमात सर्वोपरी, गायत्री जगमूल ॥
चतुावश वर वर्णमय, ब्रह्म अनादि अतूल ॥ ६० ॥
सो चौवीस सुवर्ण जे, वेदमातके आय ॥
सहस सहस अश्लोक प्रति, ते इक इक इहि माय ॥६१॥
याते उत्तम लोक तिहुँ, याते काव्य न आन ॥
परम प्रमाणिक ग्रंथ यह, है वर वेद समान ॥ ६२ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भानु चंद महि सिंधु ये, जबलग विदित रहाय ॥
वाल्मीकिकृत ग्रंथ यह, तौलग अचल सदाय ॥ ६३ ॥
सुनि सु कांडलै सातहू, श्रीरघुवर हुलसाय ॥
हिय लगाय दिय हनुमतहि, लियो सु शीशचढ़ाय॥६४॥
ताक्षण देव अदेव सब, अति आनँद उर आन ॥
कही धन्य जै जैति जै, वाल्मीकि भगवान ॥ ६५॥
इमि अतिही आनंद युत, नैमिष भयो समाज ॥
पुनि सबही सादर उचित, बिदा किये रघुराज ॥ ६६ ॥
इहि विधि पूरण यज्ञ भो, परमसुखी श्रीराम ॥
बिदा होय मिलिउचितजन, गये सु निजनिजधाम॥६७॥

चौ०-पुनि समाजसंयुत श्रीरामा ❀ आये अवध लहो विश्रामा ॥
सहित कुटुम्बमुदितरघुराजा।करत नीति मय नित सबकाजा ६८
राम पुत्र कुश लवहि निहारी ❀ रहत सदा पुरलोग सुखारी ॥
सब जननी राखैं समप्यारा ❀ एक सरिस दुहुँ राजकुमारा६९॥
वाल्मीकि वर ग्रन्थ अनूपा ❀ सादर सुनत प्रजा अरु भूपा ॥
धन्य धन्य श्रीराम चरित्रा ❀ पंचम वेद सु परम पवित्रा ७० ॥

प्र० ॥ रामाश्वमेधे ॥अध्याय॥ ६६ श्लोक ॥

इत्युक्तौ तौ सुतौ रामचरित्रं बहुपुण्यदम् ॥
आगायतां महाभागौ सुवाक्यपदचित्रितम् ॥ ७ ॥
वीणाया रणितं श्रुत्वा तालमानेन शोभितम् ॥
निखिला परिषत्तत्र शालभंजीव चित्रिता ॥ ८ ॥
हर्षादश्रूणि मुंचंतो रामाद्या भूमिपास्तथा ॥
तद्गानं पंचमो वेदो विहितश्चित्रितैः पदैः ॥ ९ ॥

इतिश्रीरा०र०वि०वि०अश्वमधयज्ञांतवर्णनोनाम द्वादशो विभागः १२॥

चौ०-इहि विधि पुनिबहुवर्षबितात ❀ पूरितसकल मोदसबहीते॥
राम मातु वय वृद्ध सुखारी ❀ युत अनंद सुरलोक सिधारी१॥
पुनि क्रम क्रम सब दशरथ रानी ❀ गईं देवपुर आनँदमानी ॥
ते सब जाय रहीं पति पासा ❀ सबैं प्रभुहि समेत हुलासा॥२॥
सबके सकल यथोचित कर्मा ❀ समय समय प्रति संयुतधर्मा ॥
कीने राम सप्रेम अपारा ❀ लोक वेद कुल विधि अनुसारा॥३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिहि पाछे बीते कछु वर्षा ❀ अंगिरादि ऋषि आप सहर्षा ॥
भाषी केकय भूपयुधाजित ❀ पठयेहमहिं नाथ ढिग या हित॥४॥
दोहा–कही निकट मम देशके, है नद सिंधु अनूप ॥
तिहि दुहुँ तटवर भूमि तहँ, है गन्धर्व जु भूप ॥ ५ ॥
तीस कोटि वर वीर हैं, युद्ध उद्ध गन्धर्व ॥
तिनहिं जीति प्रभु लीजिये, तासु राज्य शुभ सर्व ॥ ६॥
चौ०-तब रघुवरद्रुतभरत बुलाई ❀ कही जाहुबहु लै कटकाई ॥
तिनहिंजीतिदुहुँ सुतकरिराजा ❀ आवोपुनि इतसहितसमाजा७॥
इमिकहिप्रभु दुहुँ सुतन बुलाये ❀ पुष्कल तक्ष आय शिरनाये॥
दोउनको अभिषक सु कीना ❀ प्रमुदितराज राजपद दीना॥८॥
तब ले भरत अनीक अपारा ❀ ते मुनिगण दुहुँ राजकुमारा ॥
वेगि गये मातुल मिलि साजे ❀ भिरेजाय दोऊ दलगाजे ॥९॥
सप्तदिवस निशि युद्ध अपारा ❀ भयो भरत तब अस्त्र प्रहारा ॥
सो संवर्त्त अस्त्र ते सारे ❀ तीसकोटि गंधर्व सँहारे ॥ १० ॥
भरत विजय करि नगर निहारे ❀ परम अनूप सुभग सुखकारे ॥
तक्ष शिलापुर तक्षहि दीना ❀ पुष्कलावती पुष्कल कीना॥११॥
भूरि भूमि वर राज अपारा ❀ दुहुँ पुर साजविशद बहु सारा॥
पंचवर्ष तहँ भरत रहाये ❀ करि प्रबंध पुनि अवध सिधाये॥१२॥
दोहा–मिलि सबही प्रमुदित रहे, इतै भरत हुलसाय ॥
तिय उत निजनिज राजउत, करत सदादुहुँ भाय ॥१३॥
इत रघुवर पुनि लषणके, दोऊ सुतन बुलाय ॥
करि अभिषेक सुबंधु सँग, दीने सदल पठाय ॥१४॥
विशद कारुपथ देश जो, उत्तर भूमि मझार ॥
तहँ अंगद पुर राजसो, अंगद लहो अपार ॥ १५ ॥
मल्लभूमि मधि सुभग थल, चंद्रकांति पुर नाम ॥
चंद्रकेतु किय राज तहँ, सुभग देश सुखधाम ॥ १६ ॥
इमि दुहुँ सुतन सुराज दै, करि कछु दिन तहँ वास ॥
भरत लषण पुनि मोदयुत, आये रघुवर पास ॥ १७ ॥
इहि विधि राम सुनीति युत, बंधु सुतन दै राज ॥
प्रमुदित कौशल नगर नित, रहत समेत समाज ॥ १८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौ०-एक समयइक तापस आयो ❀ श्याम रूपतनुतेज सुछायो॥
विदित कराय सुआयसु पाई ❀ जाय सुबैठो शीश नवाई॥१९॥
आदर तासु राम बहु कीना ❀ बोलो तापस परम प्रवीना॥
कछु बिनवौं एकांत मझारी ❀ सुनियकृपाकरिअवधविहारी२०
तब द्रुत लषणहि राम बुलाई ❀ कही द्वार रक्षौ दृढ जाई॥
जौलग करैं बात हम दोई ❀ तौलग इतआवै नहिंकोई॥२१॥
याक्षण कोउ भूलि ढिग ऐहै ❀ सो ध्रुव दंड प्राण बध पैहै॥
सुनि लक्ष्मण धनु बाण सजाई ❀ ठाढे भये द्वारपर जाई॥२२॥
तब रघुवर अरु तापस दोऊ ❀ रहे भवन तीजो नहिं कोऊ॥
ताक्षण तिहि बूझी रघुनाथा ❀ सुनि भाषी सु जोरियुगहाथा२३
मो कहँ विधि प्रभु पास पठाई ❀ शीश नाय यह विनय कराई॥
सत्यसिंधु राघव प्रणपालक ❀ जनरक्षक दुर्जन दल घालक२४
एक समय प्रभु करी रजाई ❀ हम सुर लोक लखहिंगे आई॥
तब मैं बूझो समय प्रमाना ❀ ग्यारह सहसवर्ष प्रणठाना॥२५
सो अबअवधिआय नियराई ❀ याते प्रभुको सुरति दिवाई॥
पुनिजिमि नाथ हृदयरुचि होई ❀ कीजे राज रजायसुसोई॥२६॥
सुनि बोले रघुवर तिहि पाहीं ❀ हम मिथ्या प्रण नाहिं कराहीं॥
पै विधिजानतमो हिय बाता ❀ मुहि तजिअवध नऔरसुहाता२७
याते सदा अवध पुर माहीं ❀ रहैं मुदित हम अनत न जाहीं॥
जु पै हेतु वश कितहु सिधावैं ❀ तौपुनि वेगिअयोध्या आवैं२८
पुनि चरअचर अवधपुर वासी ❀ हैं अनन्य मम परम उपासी॥
एकहु दिवस दरश नहिं पावैं ❀ तौ सबहीक्षण क्षण अकुलावैं२९
ये मुहिं सकल प्राणते प्यारे ❀ काहू करौं न क्षण भर न्यारे॥
मैं इनको मेरे सब आहीं ❀ दोऊ हिय दुहुँ सदा बसाहीं३०
याते हौं निज समय प्रमाना ❀ करौं सत्य सो जो प्रण ठाना॥
लखि सुरलोक अवधपुनि ऐहौं ❀ पै प्रियजन सबही सँग लैहौं३१
इमि रघुवीर तापसहि भाषी ❀ चलन चहो सो सब उर राखी॥
तौ लग दुर्वासा मुनि आये ❀ राम द्वार द्रुतवचन सुनाये॥३२॥
कहां राम हम तिन ढिग जैहैं ❀ वेगि कहौ नत शाप सुदैहैं॥
तब करजोरि लषण शिरनाई ❀ दीन गिराकरि विनय सुनाई३३
नाथ नाथ कछु मंत्र कराहीं ❀ तहां गमन हित आज्ञा नाहीं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

याते नेक धीर प्रभु धारैं ❀ अबहिं कौशलाधीश पधारैं ॥३४॥
तब दुर्वासा कही रिसाई ❀ विदित करौ मम आगम जाई ॥
नातर शाप देत हौं भारी ❀ भस्म होय सब पुर नर नारी ३५ ॥
लखि मुनि गति किय लषणविचारा ❀ दुहूँ भाँतिते मरण हमारा॥
प्रभु ढिगगये दंड वध होई ❀ नातर अबहि नशत सबकोई ३६
राम बन्धु तब कीन विचारा ❀ मोतनु दिये बचै जन सारा ॥
तौ यामहँ कछु संशय नाहीं ❀ मुनि आगमद्भुत विदितकराहीं३७

दोहा–निज तन धन सुख हानिते, बहु जन सुखीरहाय ॥
तौ याते उत्तम न कछु, यो सब सुमति कहाय ॥ ३८ ॥
पुनि तन मन धन प्राण जन, छल बल कल किहुँ रीति ॥
होवै पर उपकार तौ, कीजे सब तजि भीति ॥ ३९ ॥
यौं गुणि लषण उताल अति, किये निचोहे नैन ॥
गये राम गृह दूरिते, कहे दीन ह्वै बैन ॥ ४० ॥
प्रभु दुर्वासा मुनि खडे, द्वार मध्य सहरोष ॥
प्रभु दरशन बिन और विधि, ऋषिहियहोय न तोष॥४१॥

चौ०–निरखि लषण रामहिं रिसछाई ❀ कहाँकछू नहिं रहे चुपाई॥
वेगि तापसहि दई रजाई ❀ सोगमनो द्रुत विनय सुनाई॥४२॥
उठि तुरंत प्रभु द्वार सिधारे ❀ मुनि पद गहि सन्मानि बिठारे ॥
तब दुर्वासा कही उताला ❀ याहित हम आये रघुलाला४३ ॥
हम कियवर्ष विविधतप भूरी ❀ आज भई निर्विघ्न सु पूरी ॥
व्यापी क्षुधाअतिहि इहिकाला ❀ वेगिकरावो अशनरसाला४४॥
सुनि उताल व्यंजन मँगवाये ❀ सरस पुनीत विविध मनभाये ॥
भोजनसविधि सप्रेमकराये ❀ दैअशीशऋषिमुदित सिधाये४५॥
पुनि रघुवरगुरुसचिव बुलाई ❀ निजप्रणगति कहिसकलसुनाई ॥
गद्गद कंठ नीर भरि नैना ❀ सत्य सिंधु बोले इमि बैना॥४६॥

दोहा–बिन वध कीने जाय प्रण, बंधु न मारो जाय ॥
काह करौं अब या समै, मुहिं निज मरण सुहाय ॥ ४७ ॥
सुनि लक्ष्मण कर जोर के, बोले निपट निशंक ॥
मम वध कीजे नाथ द्रुत, या क्षण मोह कलंक ॥ ४८॥
तब गुरु मंत्री सब कही, धर्म सुनीति प्रमाण ॥
सत्य बात यह त्याग वध, दोऊ एक समान ॥ ४९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनि रघुनाथ सुधर्मरत, बिलखि कही शिरनाय ॥
कियो त्याग हम लषण तव, बध समान यह आय॥५०॥
चौ०सुनत लषण तुरतहि शिरनाई ❀ अति उताल सरयू तट जाई ॥
रामचरण पंकज हिय ध्याई ❀ बैठि अखंड समाधि लगाई ५१
श्वासहि ऊर्ध्व चढ़ाय ब्रह्मंडा ❀ कीनो प्राण याम उदंडा ॥
पुनि तनु भयो सुअंतरध्याना ❀ काहू कछू न भेद लखाना ५२

प्र०।वा०॥ उ० कां० स० १०६ ॥ श्लो०।

विसर्जये त्वां सौमित्रे माभूद्धर्मविपर्ययः ॥
त्यागो वधो वा विहितः साधूनां ह्युभयं समम् ॥ १ ॥
रामेण भाषिते वाक्ये बाष्पव्याकुलितेंद्रियः ॥
लक्ष्मणस्त्वरितः प्रायात्स्वगृहं न विवेशह ॥ २ ॥
स गत्वा सरयूतीरमुपस्पृश्य कृतांजलिः ॥
निगृह्य सर्वस्रोतांसि निःश्वासं न मुमोच ह ॥ ३ ॥
अदृश्यं सर्वमनुजैः सशरीरं महाबलम् ॥
प्रगृह्य लक्ष्मणं शक्रस्त्रिदिवं संविवेश ह ॥ ४ ॥ इत्यादि ॥

चौ०बंधु वियोग राम अकुलाने ❀ अपर सकलजन अति विलपाने
ताही क्षण नारद मुनि आई ❀ सबहि धीर बहु भाँति धराई ५३॥
पुनि एकांत राम ढिग जाई ❀ नारद कही सुनिय रघुराई ॥
लषण प्रथम गवने सुरधामा ❀ तहाँ जाय करिहैं सबकामा ५४॥
कोऊ नृप कहुँ गमन कराही ❀ तहाँ सु सेवक प्रथमहि जाही ॥
यथायोग सब साज समाजा ❀ सजिहैं लषण सहित सुरराजा ५५॥
जब सुरलोक निरखि प्रभु ऐहैं ❀ तब लक्ष्मण पुनि संग सिधैहैं॥
मुदित सहानुज अवध सदाई ❀ हास विलास अखंड रहाई ५६
सुनि मुनि वचनधीर उर धारी ❀ गे ऋषि कहि जै अवधविहारी॥
यद्यपि राम अयोध्या माहीं ❀ रहैं लषण बिनकछुन सुहाहीं ५७
तब रघुवर वरदूत बुलाई ❀ कही कहौ रिपुहन ढिग जाई ॥
दोऊ सुतन राज्यदै आवैं ❀ मेरेही ढिग सदा रहावैं ॥५८॥
दूत उताल मधुपुरिहि जाई ❀ प्रभु संदेश कहो शिरनाई ॥
सुनि रिपुहन दुखसुखदुहुँ छायो ❀ वेगिसुतन अभिषेककरायो ५९

दोहा–मधुपुर राज सुबाहुको, दीनो बहु सुखसार ॥
दयो शत्रुघातिहि विशद, वै दिशि देश सुढार ॥ ६० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुहुँ पुत्रन इमि राजदै, आये अवध उताल ॥
मिले चरण गहि भ्रात लखि, मुदित भये रघुलाल ॥६१॥
पुनि रघुपति निज सुतनको, कीनो वर अभिषेक ॥
सरयू दक्षिण राज कुश, उत्तर लव सविवेक ॥ ६२ ॥
करत राज कुश लव दुहूँ, पितु आज्ञा अनुसार ॥
राम सरिस सब कृत्य वर, बलगुण धर्म विचार ॥ ६३ ॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० राज्यविभागवर्णनोनाम त्रयोदशोविभागः॥ १३

हरिगीतिका छंद ।

श्रीराम दोऊ सुतन दै सब राजभार प्रमोदमें ॥
नित करत विविध विहार लीला सुजन सहित विनोदमें ॥
कपि केसरीसुत सेवहीं सानंद प्रभु पद प्रीतिसे ॥
मुनि रचित रामचरित्र वर्णत सुनत सादर रीतिसे ॥१॥
जबसे लखो वर वाल्मीकि सुग्रंथ हनुमत प्रेमते ॥
तबसे सहर्ष प्रकर्ष आपहु रचत प्रभु यश नेमते ॥
हनुमाननाटक नाम धरि शुभ ग्रंथ कीनो स्वक्ष जो ॥
मुनि कृतहुते अति रुचिर छंद प्रबंध सह पद लक्षसो ॥ २ ॥
पाषाण पत्रन पै लिखो नखते विशुद्ध सुधारिकै ॥
राखो सुकंठ समस्त रामचरित्र विशद विचारिकै ॥
करिकै सु पूरण एक दिन औसर विलोकि अनंदको ॥
कर जोरि निज कृत ग्रंथ नाटक विदित किय रघुचन्दको॥३॥
कपिकाव्य उत्तम मुनिहुते सुनि राम अति प्रमुदित भये ॥
बहु बार बार सराहिकीशहि पुलकि अंक लगा लये ॥
ऋषि विप्र कवि कोविद सुरासुर श्रवण करि ज्ञाता सबै ॥
भाषी हनूमत सरिस तिहुँपुर कोउनहिं बुधिवर अबै ॥ ४ ॥
श्रीराम तब हनुमंत सों बोले अतिहि सकुचायकै ॥
हे वीर हम कछु चाहहीं सो देहु हिय हुलसायकै ॥
सुनि दीन ह्वै कपि कही कौन पदार्थ इमि बहु श्रेय है ॥
तनु प्राण हौं अर्पित कियो दृढ बहुरि काह अदेय है ॥ ५ ॥
तब मुदित ह्वै रघुवीर कह तुव रचित ग्रंथ अपार जो ॥
नाटक उताल दुराय आवो सिंधु नीर मझारसो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इहि देखिकै वर वाल्मीकि प्रभाव लघु जन मानि हैं ॥
सो गाथ है जग पूज्य तिहि लघुता किये बहु हानि हैं ॥६॥
सुनि ईश आयसु वीर गवने पै कछू मुख दीन भो ॥
लखि राम दिय बरदान जाते मुदित कीश प्रवीन भो ॥
कलिकाल मधि तुव ग्रंथ यह कछु कोउ नृप प्रगटाय है ॥
हनुमाननाटक विदित रैहै श्रम वृथा नहिं जायहै ॥ ७ ॥
सुनि वेगही कपि जाय प्रमुदित सिंधु वन गंभीर में ॥
लिपि उपल डारे सब गिरे बहु मध्य कछु तट नीरमें ॥
द्रुत आय पुनि प्रभु पास सहित हुलास विनय सुनायकै ॥
सेवन लगे नित चरण सादर परम प्रेम बढायकै ॥ ८ ॥
जहँ होत रामचरित्र तहँ हनुमंत वेगि सिधावहीं ॥
सादर सुनैं कर ज़ोर शिर धरि नैन भरि पुलकावहीं ॥
याते सब करि नेम आसन प्रथम कपि हित राखहीं ॥
शुचि सविधि प्रेम समर्थ श्रद्धा सहित प्रभु यश भाषहीं ॥९॥

प्रश्न० ॥ वाल्मीकिटीकायाम् ॥ श्लोक ।

यत्र यत्र रघुनाथकीर्त्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकांजलिम् ॥
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥ १॥

हरिगीतिका छंद ।

कोऊकरै विधि भंग कहुँ अस्थान अरु अभिमान ते ॥
अपराध अनुचितनेक सो सहिजाय नहिं हनुमान ते ॥
तब कीश ठानी देहुँ शिक्षा सबहि यों हिय दृढ गुनी ॥
करि हंक शोर उतंक भाषी शीख जो तिहुँपुर सुनी ॥ १० ॥
जो सुनहिं वर्णहिं रामचरित सदा हिं संयुत नेमसों ॥
सब भाँति सो दुहुँ लोकमें सानंद रैहैं क्षेमसों ॥
यह गाथ विशद त्रिलोक पूजित वेद पंचम जानिये ॥
इक एक वर्ण अनंत पातक प्रबल घातक मानिये ॥ ११ ॥
शुचि नेम उत्सव यज्ञ दान सु मान साज सजायकै ॥
श्रद्धा सनेह प्रतीति नीति समेत हिय हुलसायकै ॥
वक्तासु पुस्तक पूजि सविधि समस्त सुनहिं सुनायहैं ॥
यह राम चरित प्रभावते अभिलाष सकल पुजाय हैं ॥१२॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रति दिवस वा प्रति मास वा प्रति वर्ष प्रीति प्रतीतसे ॥
बाँचे सुनावैं सुनहि वा पुस्तकहि पूजैं रीतिसे ॥
सामर्थ्यहीन न करहिं कछु तिहि पै कृपा सिय रामकी ॥
रैहैं सदा रसिकेश रक्षा राखि हौ शुभ कामकी ॥ १३ ॥
अभिमान लोभ कुतर्क निंदा मलिनता कछु राखिहै ॥
शुभकथा मध्य विवाद मिथ्यालाप जगकृत भाखि है ॥
हरि रूप रामचरित्र दूजे गाय सम ठहराय है ॥
सो पाय है बहु दण्ड दोऊ लोक तासु नशाय है ॥ १४ ॥
सुनि पवनसुतकी शीख तिहुँ पुर पुरुष तिय सब शिरधरी ॥
युत रीति होत चरित्र दश दिशि सकल सुख बसुधा भरी ॥
रघुवीर लखि कपि वीरकी वर प्रीति नीति बखानहीं ॥
हनुमंत नित प्रभु सेवहीं मुद सुनत गुण गण गानहीं ॥ १५ ॥
वर विविध सुर मुनि संहिता विरची अनूप अनेक जो ॥
जिन माहिं सीताराम लीला अमित लेख विवेक सो ॥
हिंडोलरासादिक विहार प्रसन्न और प्रकाशके ॥
वर्णन किये ऋषि देव त्यों हनुमंत सहित हुलासके ॥ १६ ॥
ते सकल सीताराम यश वर शुद्ध सत्य प्रमानके ॥
ध्रुव भूति प्रगट सुवर्त्तमान भविष्य दृढ़ सब भानके ॥
रघुवीर करि करि श्रवण परम प्रमोद हिय हुलसावहीं ॥
इमि अवधपुर सियनाथ विलसत नित्य जन गुण गावहीं १७ ॥

इतिश्रीरा० र० वि० वि० श्रीरामचरित्रप्रभाववर्णनोनामचतुर्दशोविभागः १४

दोहा—तिय सुत बन्धु समेत बहु, प्रजा समस्त समाज ॥
एक दिवस बैठे सभा, प्रमुदित श्रीरघुराज ॥ १ ॥
ताक्षण सबहि सुनायके, वचन कहे रघुलाल ॥
हम विधिसे कछु प्रण कियो, सो आयो अब काल ॥ २ ॥
याते हम सुरलोक ह्वैं, आवैं अतिहि उताल ॥
रहियो सब सानंद अति, हैं कुश लव भूपाल ॥ ३ ॥
सुनि सबहीं अकुलायके, कहे दीन ह्वै बैन ॥
पुरवासी चर अचर अब, प्रभुबिन छिनहु रहैं न ॥ ४ ॥
तब रघुवर बहु भाँति ते, समुझाये सबकाहिं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सप्तदिवस लग कोउपै, कैसहु मानत नाहिं ॥ ५ ॥

प्र० वा०॥उ०कां० ॥स० ॥ १०७॥श्लोक॥

ततः सर्वाः प्रकृतयो रामं वचनमब्रुवन् ॥
गच्छंतमनुगच्छामो यत्र राम गमिष्यसि ॥ १ ॥

दोहा—पुनि बोले सब नाथ है, काह देवपुरमाहिं ॥
जाहि विलोकन हेतु प्रभु, अवध नगर ते जाहिं ॥६॥

अवध धाम आधीन हैं; सकल तिहूँ पुरधाम ॥
पुनि कौशलपुरतें अधिक, कोउ न सुखद ललाम॥ ७ ॥
ब्रह्मादिक सुर स कलते चाहत अवध निवास ॥
इत कोटिन वैकुण्ठ सम, सेवक सदन विलास ॥ ८ ॥

प्र० पद्मपुराणे श्लोक ॥

सरयूतमसयोर्मध्ये धवलग्रामवसुंधरे ॥
अमरामरणमिच्छन्ति का कथा इतरे जनाः॥ २ ॥

चौ०-सुनि तिनके वर वचन प्रमाने ❀ श्रीरघुवीर अधिक हरषाने॥
बोले सकल सत्य सब भाषी ❀ ऐसीही हौंहिय गुनि राषी ॥९॥
पै हम वचन विधातहि दीना ❀ सो प्रण पूरण चाहियकीना ॥
याते जाय देवपुर हेरी ❀ आवैं अवध माहिं द्रुत फेरी १०॥
तब सब भाषी हमहुँ सिधारैं ❀ कैसो है सुरलोक निहारैं ॥
पुनि प्रभु संग अवध मधिऐहैं ❀ लिहिनिजदृश अनंदितरैहैं ११
एवमस्तु बोले रघुवीरा ❀ हरषित भये सबै जन भीरा ॥
यह सु सप्तदिन मधि बहुशोरा ❀ फैलिभयो तिहुँपुर चहुँओरा १२
सुनिसुनिजन जिततितते धाये ❀ अति उताल कोशलपुर आये ॥
कपिपति जाम्बवंत लंकेशा ❀ पहुँचे सदल साजि शुभ वेशा १३॥
दै अंगदहि राज सुग्रीवा ❀ आये अवध अतुल बलसीवा ॥
तिहुँ नृप सदल राम पद परशे ❀ सादर उचित परस्पर दरशे॥ १४
बिनय करी सबही नमि माथा ❀ हम समस्त गमनैं प्रभु साथा ॥
सुनि श्रीरामधीर बहु दीनी ❀ यथायोग पुनि आयसु कीनी १५
प्रथम विभीषण प्रतिइमिभाषी ❀ भूपहिनीति उचित सब साषी॥
सो तुम सखा लंक महिपाला ❀ पुनिमम यहवरदान विशाला १६

दोहा—जब लग रवि शशि भूमि जग, मम चरित्र संसार ॥
अचल विभीषण राज तब, तौ लग लंक मझार ॥ १७ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अमर अजर धन धान्य युत, रहो सदा लंकेश ॥
गुण बल विद्या देवगति, लहि मम भक्ति सुदेश ॥१८॥
रहौ जाय लंकहि सदा, पालौ प्रजहि सुनीत ॥
सदानिरंतर परस्पर, है वर मम तव प्रीत ॥ १९ ॥
यदपि वेगि सुरपुर निरखि, ऐहौ अवध मझार ॥
तदपि तुमहिं बिन लंक मधि, होय नहीं निस्तार ॥२० ॥
यों कहि वेगहि राम पुनि, हनुमंतहि करि प्रीति ॥
बोले धीर धराय बहु, सहित रीति नृप नीति ॥ २१॥
मम चरित्र नित श्रवणको, नेम कियो भुवि माहिं॥
सोई प्रणको पालिबो, है कपि उचित सदाहिं ॥ २२॥
पुनि मम वर तुव हेतु यह, चिरजीवी वर वीर ॥
जब लग जग मो चरित है, तब लग सुनहु सुधीर ॥ २३ ॥
रसिकविहारी भक्त बहु, पालौ सहित सनेह ॥
सदा रहौ सानँद अवध, मम आज्ञा है येह ॥ २४ ॥
यौं कहि हनुमंतहि तुरत, जाम्बवंत प्रतिराम ॥
बोले अतिहि उताल वर, मृदुल बैन अभिराम ॥ २५ ॥
द्विविद मयंद समेत वर, तुमहिं दियो हम तात ॥
रहौ सु द्वापर अंतलग, चिरजीवी कुशलात ॥ २६ ॥
याते तिहुँ तुम लंकपति, अरु हनुमत ये पांच ॥
मम आज्ञा पालौ मुदित, जीय करौ नहिं कांच ॥२७॥
कोउ न उत्तर देहु कछु, करौ कही हम जोय ॥
मम आज्ञा पालो सदा, सबहीको भल होय॥ २८॥

प्र.वा.उ.कां.स.१०८—तरेवमुक्तः काकुत्स्थो बाढमित्यब्रवीत्स्मयन् ॥
विभीषणमथोवाच राक्षसेन्द्रं महायशाः ॥ ३ ॥
यावत्प्रजा धरिष्यन्ति तावत्त्वं वै विभीषण ॥
राक्षसेन्द्रमहावीर्य लंकास्थः स्वधरिष्यसि ॥ ४ ॥
यावच्चंद्रश्च सूर्यश्च यावत्तिष्ठति मेदिनी ॥
यावच्च मत्कथा लोके तावद्राज्यं तवास्त्विह ॥ ५॥
तमेवमुक्त्वा काकुत्स्थो हनूमंतमथाब्रवीत्॥
जीवितेकृतबुद्धिस्त्वं मा प्रतिज्ञां वृथा कृथाः ॥६॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मत्कथाः प्रचरिष्यन्ति यावल्लोके हरीश्वर ॥
तावद्भमस्व सुप्रीतो मद्वाक्यमनुपालयन् ॥ ७ ॥
जांबवंन्त तथोक्ता तु वृद्धं ब्रह्मसुतं तदा ॥
मैंदं च द्विविदं चैव पंच जांबवता सह ॥
यावत्कलिश्च संप्राप्तस्तावज्जीवत सर्वदा ॥ ८ ॥

दोह–पुनि हम सुरपुर विचरिकै, आवहिं अवध तुरंत ॥
तब सबही मुद मिलहिंगे, लीला करैं अनन्त ॥ २९ ॥
सुनि प्रभु आयसु पांचहू, शिर धरि कियो प्रणाम ॥
दीनो राम रजाय जिमि, तिमि कीनों सब काम ॥३०॥
पुत्र वधू युत पुत्रवर, तासु समाज समेत ॥
भेजे प्रभु जन पालहित, निज निज गये निकेत ॥ ३१ ॥

चौ०-इहि विधि सकल यथोचितकाजा ❀ परमानंदकियेरघुराजा
पुनि सुरपुर विहार हित साजे ❀ सबचरअचरसंग लगिभ्राजे३२
नर नारी पुर परिजन भूरी ❀ कीश ऋच्छ सेना बहु रूरी ॥
निश्चर पशु पक्षी बहु जीवा ❀ कीट पतंग समस्त अतीवा ३३
ताक्षण जे चर अचर अपारा ❀ भूरिभाग्य हे अवध मझारा ॥
ते सब शुद्धभक्ति अनुरागे ❀ परमानन्द राम सँग लागे३४॥
रामवाम दिशिशोभित रामा ❀ दक्षिणदिशि वर रमा ललामा॥
धनु शर आदि सु आयुधजेते ❀ पुरुष रूप आगेसबतेते ॥३५॥
गायत्रीसह द्विज वपु वेदा ❀ वषट्कार अरु प्रणव अखेदा ॥
अग्निहोत्र युत रघुवर संगा ❀ विपुल विप्र मुनि संतसुढंगा ३६
भरत शत्रुहन तियन समेता ❀ दासी दास सचेत अचेता ॥
मंत्री सेवक सखा अपारा ❀ ऊँच नीच सब सहपरिवारा३७
अपरअलक्ष जीव सँग लागे ❀ ताक्षण भये समस्त सुभागे ॥
परमानंद मगन हुलसावैं ❀ राम संग सुरपुर लखि आवैं३८
इमि सबही संयुत श्रीरामा ❀ गमने अवलोकन सुरधामा ॥
चहुँ दिशि विप्र वेद धुनि छाई ❀ जैजै राम गिरा सरसाई३९ ॥
अवधपुरी सरयू शुभ सरीता ❀ तिहूँ लोक जन पावन करिता॥
पश्चिम घाट सुभग सो पाना ❀ राजमहलते कोश प्रमाना॥४०

प्र० ॥ बा० ॥ ड० ॥ कां० ॥ ड० ॥ १०९ ॥ श्लोक १

रामस्य दक्षिणे पार्श्वे पद्मा श्रीः समुपाश्रिता ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सख्येपिच महादेवी व्यवसायस्तथाग्रतः ॥९॥
शरानानाविधाश्चापि धनुरायत्तमुत्तमम् ॥
तथायुधाश्चतेसर्वेययुः पुरुषविग्रहाः ॥ १० ॥
वेदा ब्राह्मणरूपेण गायत्री सर्वरक्षिणी ॥
ॐकारोऽथवषट्कारः सर्वेराममनुव्रताः ॥११॥
तथातामनुगच्छंति ह्यतःपुरचराःस्त्रियः ॥
सवृद्धबालदासीकाः सवर्षवरकिंकराः॥ १२ ॥
सांतःपुरश्चभरतः शत्रुघ्नसहितो ययौ ॥
रामं गतमुपागम्य साग्निहोत्रमनुव्रतः ॥ १३ ॥
तेच सर्वे महात्मानः साग्निहोत्राः समागताः ॥
सपुत्रदाराः काकुस्त्थमनुजग्मुर्महामतिम् ॥ १४ ॥
मंत्रिणो भृत्यवर्गाश्च सपुत्रपशुबांधवाः ॥
राघवस्यानुगाः सर्वे हृष्टा विगतकल्मषाः ॥१५ ॥
ऋक्षवानररक्षासि जनाश्च पुरवासिनः ॥
आगच्छन्परया भक्त्या पृष्ठतस्तु समाहिताः॥१६ ॥
यानि भूतानि नगरेप्यंतर्धानं गतानि च ॥
राघवं तान्यनुययुः स्वर्गाय समुपस्थितम् ॥ १७ ॥
यानि पश्यन्ति काकुत्स्थं स्थावराणि चराणिच ॥
सर्वाणि रामगमने अनुजग्मुाह तान्यपि ॥ १८ ॥
नोच्छ्वसत्त ह्ययोध्यायां किंसूक्ष्ममपि दृश्यते ॥
तिर्यग्योनिगताश्चैव सवराममनुव्रताः ॥ १९ ॥
अध्यर्धयोजनं गत्वा नदीम्पश्चान्मुखाश्रिताम् ॥
शरयूं पुण्यसलिलां ददर्श रघुनन्दनः॥२०॥ इत्यादि ॥

चौ०—आये मुदित तहाँ रघुवीरा ❀ संग अपार चराचर भीरा ॥
ताक्षण ब्रह्मादिक सब देवा ❀ धायेमुदितकरनहित सेवा ४१
शतकोटिन विमान नभ छाये ❀ विशद विशाल अनूपसुहाये॥
अस्तुति करहिं देव मुनि वृन्दा ❀ नटहिं अप्सरापरमअनंदा४२
तब रघुवर सरयू करि मज्जन ❀ सजोशृंगार मुदितलखिसज्जन
पुनि प्रभु कही चराचर जोई ❀ द्रुत स्नान करैं सब कोई४३॥
तब लाये विधिनिकटविमाना ❀ जासु तेज शत भानु समाना॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तामधि श्रीसंयुत श्रीरामा ❀ शोभित भयेसबंधु ललामा४४
अपर चराचर सरयू न्हाई ❀ ह्वै सु दिव्य शृंगार सजाई ॥
बैठे सकल विमानन माहीं ❀ तिनहिं देखि सुरवृन्द सिहाहीं४५
जै जै करैं देव समुदाई ❀ दुंदुभि हनैं सुमन वरसाई ॥
नभमंडल ह्वै सकल विमाना ❀ कियो सजन सुरलोकपयाना४६
निरखत जन चहुँसुगति विचित्रा ❀ देवधाम बहु सुभगपवित्रा ॥
सुरपुरभई भीर अतिभारी।चकित होत लखि लखि नर नारी ४७
बैठे वर विमान पुरवासी ❀ देव सरिस अति रूप प्रकाशी ॥
पहुँचे वेगि सहित श्रीरामा ❀ यथायोग पाये सब धामा ॥४८॥
जनकनंदिनीयुत रघुराई ❀ संग अनुज तिहुँ आनँद छाई ॥
कीनो वास उच्च वर धामा ❀ देव मुदितलहिदरश ललामा ४९
ब्रह्मादिकसुर विविधअपारा ❀ युत अस्तुति कियबहुसतकारा ॥
इमिरघुवर निजवचनप्रमाना ❀ लखो देवपुरसबसुखमाना ५०॥

दोहा–जिते चराचर राम सँग, आये सुरपुर माहिं ॥
ते विधि हरि हर से सकल, जिनलखि देवसिहाहिं ५१॥
सरयू अवध प्रभाव अरु, रामकृपा फल जानि ॥
तिनहिं सराहत देवसब, सुकृत सुभाग्य बखानि ॥ ५२॥
पै जेते चर अचर सब, अवध निवासी जोय ॥
कहा अधिक आनँद इहाँ, यों भाषैं सब कोय ॥ ५३ ॥
कब चलिये पुनि अवधमें, सबही जिय उमगाय ॥
कौशलपुर सुख सामुहें सुरपुर काहु न भाय ॥ ५४ ॥
इमि बहु भाषत पै विवश, प्रभु आज्ञा आधीन ॥
बहु सुख साज समेत पुनि, वास देवपुर कीन ॥ ५५ ॥
सीतारामहि नेह युत, नित सेवत सुरवृंद ॥
पुरजन परिजन चर अचर, विहरत सब सानंद ॥ ५६ ॥
देव भक्ति आधीन तहँ, रहे यदपि श्रीराम ॥
पै समाज संयुत सदा, सुमिरत अवध सुधाम ॥ ५७ ॥
इमि रघुवर सुर प्रेममें, मग्न रहे बहु काल ॥
दुष्ट दरन संकट हरन, करन भक्त प्रतिपाल ॥ ५८ ॥
पुनि सब देवन धीर दै, कहि मृदु वचन बुझाय ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देव लोकते मुदित हैं, गमन कियो रघुराय ॥ ५९ ॥
ऋतु बसंत लखि श्रीरमण, सहित समाज अपार ॥
पूरव सम सानंद द्रुत, आये अवध मझार ॥ ६० ॥
सिया बंधु तिहुँ मातु पितु, सेवक सखा समाज ॥
पुर परिजन चर अचर सब, युत आये रघुराज ॥ ६१ ॥
तिहूं लोक आनंद भो, छायो जैजै शोर ॥
रसिकविहारी सुख भरे सब अपार चहुँ ओर ॥ ६२ ॥
नितप्रति लीला होत बहु, प्रमुदित सकल समाज ॥
सुख शोभा लखि अवध पुर, अति सिहात सुरराज ॥ ६३ ॥
सीताराम समाज युत, परमानंद अपार ॥
सदा निरंतर अवधमें, करत अनेक विहार ॥ ६४ ॥
नित्य राम सिय अवध नित, नित्य नाम गुण रूप
नित्य चरित लीला सकल, नित्य समाज अनूप ॥ ६५ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० का० ॥ स० ॥ १३० ॥ श्लोक ॥

यावदावर्त्तते चक्रं यावती च वसुंधरा ॥
तावत्त्वमिह लोकस्य स्वामित्वमनुवर्तय ॥ २१ ॥

पुनः पद्मपुराणे—रामस्य नाम रूपं च लीलाधाम परात्परम् ॥
एतच्चतुष्टयं नित्यं सच्चिदानंदविग्रहम् ॥ २२ ॥

पुनः महारामायणे श्रीअयोध्यां परित्यज्य पदमेकं न गच्छति ॥
अशोकवाटिकायान्तु रमतेसर्वदैवहि ॥ २३ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—जे जन ज्ञाता विमल दृढ, राम भक्त मतिवंत ॥
ते याहे भेदहि जानहीं, हरि गुरु कृपा अनंत ॥ ६६ ॥
कल्प कल्पके चरित बहु, कोऊ लहै न अंत ॥
निजनिज मति अनुसारकछु, वर्णत सुर मुनि संत ॥ ६७ ॥
पै निज निज कृत ग्रंथमें, धरत अनूपम युक्ति ॥
सो सुबुद्धिते लखिय तो, एक मिलै सत उक्ति ॥ ६८ ॥
पक्षवाद भ्रम तर्क तजि, अवलोकै सदग्रंथ ॥
अर्थ व्यंग्य ध्वनिते मिले, सबको एकहि पंथ ॥ ६ ॥
हेरौ पद्मपुराख मैं, अश्वमेधके अंत ॥
परम प्रमाणिक उक्त सत, किमि राखी मतिमंत ॥ ७० ॥
युत समाज श्रीरामको, वर सुरलोक विहार ॥

CC-0. Panini Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुनि आगम श्रीअवधमें, कियोयुक्ति निरधार ॥ ७१ ॥

प्र० ॥ पद्मपुराणांतर्गतराम स्वमेधे। अध्याय ६८ ॥ श्लो० ॥

राजेंद्रं सीतया साकं गच्छंतं सरितं प्रति ॥
विलोक्य मुदितं लोकाश्चिरं दर्शनलालसाः ॥ २४ ॥
अनेकराजकोटीभिः परितः परिवारिभिः ॥
जगाम स सरिच्छ्रेष्ठां पक्षिवृंदसमाकुलाम् ॥ २५ ॥
तत्र गत्वा स वदेह्या रामः कमललोचनः ॥
प्रविवेश जलं पुण्यं वसिष्ठादिभिरन्वितः ॥ २६ ॥
अनुप्रविविशुः सर्वे राजानो जनता तथा ॥
तत्पादरजसा पूतं जलं लोकैकवंदितम् ॥ २७ ॥
परम्परं प्रसिंचंतो जलं यत्रैर्मनोरमैः ॥
सुशोणनयनाः सर्वे हर्षं प्रापुर्मनोधिकम् ॥ २८ ॥
स रामः सीतया साकं चिरं पुण्यजलप्लवे ॥
क्रीडित्वा जलकल्लोलैर्निरगाद्धर्मसंयुतः ॥ २९ ॥
दुकूलवासाः सकिरीटकुंडलः केयूरशोभांबरकंकणान्वितः ॥
कंदर्पकोटिश्रियमुद्वहन्नृपो राजा च सर्वैरुपसंस्तुतो बभौ ३०

दोहा—इहि विधि अमित प्रमाण मय, है श्रीरामचरित्र ॥
कछु संदेह न कीजिये, गुणिये ग्रंथ पवित्र ॥ ७२ ॥
जनम१व्याह२वन३सियहरण४,शोध५युद्ध६अभिषेक ७॥
राज८केलि९मख१०सुत११पै, राम चरित्र अनेक ॥ ७३ ॥
धन्य राम यश कहहिं अरु, श्रवण करैं ते धन्य ॥
धन्य धन्य सिय रामके, जे दृढ़ भक्त अनन्य ॥ ७४ ॥
राम रसायन ग्रंथ यह, प्रगट भयो सुखरूप ॥
अवलोकत हुलसायहैं, जे शुचि सुमति अनूप ॥ ७५ ॥
गिरा गुरू सिय राम कपि, यह यश मो मुख द्वार ॥
प्रगटायो करिकै कृपा, हेतु जगत उद्धार ॥ ७६ ॥
मैं मतिमंद अजान अति, अभिमानी खल क्रूर ॥
जन्म जन्मके कुकृतको, भरो सु पातक भूर ॥ ७७ ॥
सो मम कहा समर्थ जो, विरचौ ग्रंथ ललाम ॥
मोहिं दीन अवलोकिकै, अपनायो सियराम ॥ ७८ ॥
लखो प्रत्यक्ष सु ग्रंथ यह, गिनती रुद्र हजार ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रचि पूरो वसु मास अरु, सत्रह दिवस मझार ॥ ७९ ॥
राम रसायन ग्रंथमें, बहु ग्रंथनके अंग ॥
धरे यथोचित निरखि तहँ, जैसो जहाँ प्रसंग ॥ ८० ॥
पुनि होवै जिहि भ्रम कछू, सो भरि हीय उमंग ॥
लिखे प्रथम जे ग्रंथ वर, तिनको लखैं सुढंग ॥ ८१ ॥
अति प्रमाणमय पुण्यमय, पूज्य प्रतिष्ठ पवित्र ॥
है अपार अनवधि अमित, अगणित रामचरित्र ॥ ८२ ॥

घ.क.—होके कोटि शेष शेष शेष प्रति कोटि शीश शीश शीश प्रति कोटि मुख प्रगटावैंगे।प्रति मुख कोटि कोटि रसनाधरावै फेरि प्रति रसना पै कोटि भारती बसावैंगे।कलप अनंतलों निरंतर अनंत यौं हीं जन्मलैं अनंत जो अनंत गुण गावैंगे।रसिकविहारी तऊ सीता रामचंद्रजूके चरित अपारको न नेक पार पावैंगे ॥ ८३ ॥

दोहा—सीताराम चरित्र सो, कोउ लहै किमि पार ॥
वर्णत निज उद्धार हित, सुर नर मति अनुसार ॥ ८४ ॥
विद्या बुद्धि विवेक को, फल है यही पवित्र ॥
कहै सुनै विरचै गुणै, सीताराम चरित्र ॥ ८५ ॥
सब सज्जन जन ते यही, विनय करौं कर जोरि ॥
कृपा सदाही राखियो, चूक क्षमो जो मोरि ॥ ८६ ॥

चौ०—सीताराम चरित यह कोई ❀ बाँचै सुनै सुनावै जोई ॥
सोइह लोक स्वरुचि फल पावै ❀ अंत समय श्रीराम मिलावै ८७॥
जैजै जै श्रीजनकदुलारी ❀ जै श्रीरघुवर प्राणपियारी ॥
जैजै जै श्रीअवधविहारी ❀ जैसियकंत वीर धनुधारी ॥ ८८ ॥
जै जै भरत लषण रिपुहंता ❀ जै जै कपि हनुमत बलवंता ॥
जै शिव गौरि गिरा गणराजा ❀ जै हरिभक्त समस्त समाजा ८९ ॥
सुयश सुबुद्धि सुवित्त सुकर्मा ❀ सुख सुरीति शुभ सुगति सुधर्मा॥
सीताराम भक्ति हितकारी ❀ सानँद पावैं रसिकविहारी ॥ ९० ॥
गुरू संत हरि विप्र कृपाला ❀ रामभक्त जे प्रजा नृपाला ॥
कहौं निहोरि जोरि कर दोई ❀ करौ कृपा मो पर सब कोई ॥९१॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० सुरलोक विहार वर्णनो नाम पञ्चदशो विभागः ॥ १५ ॥
इति श्रीर० वि० कृत रामरसायनग्रन्थे विहारचरित्र वर्णनोनाम अष्टमोविधानः ॥ ८ ॥
इति श्रीरसिकविहारी कृत श्रीमद्रामरसायन समाप्त ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

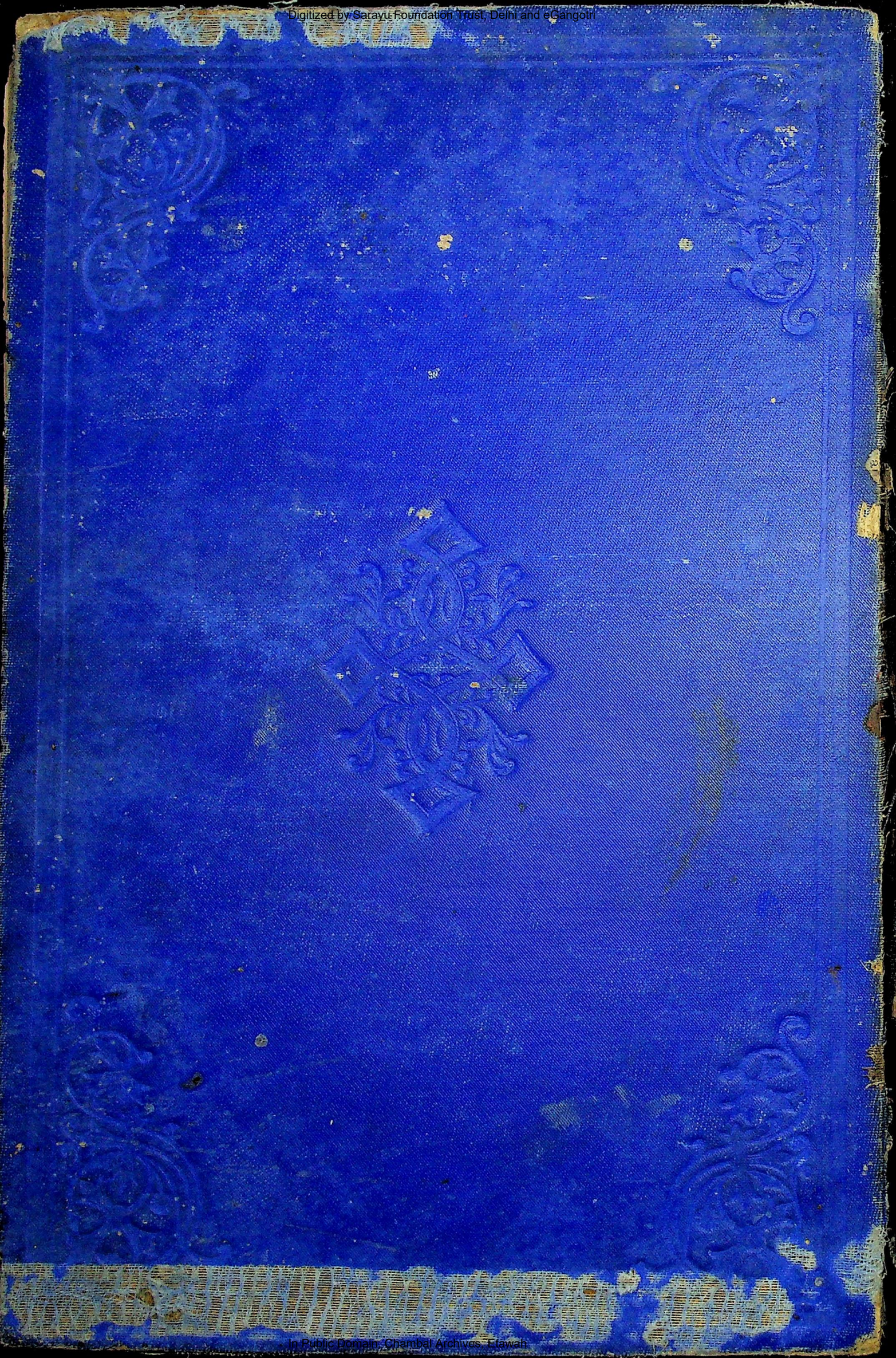

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

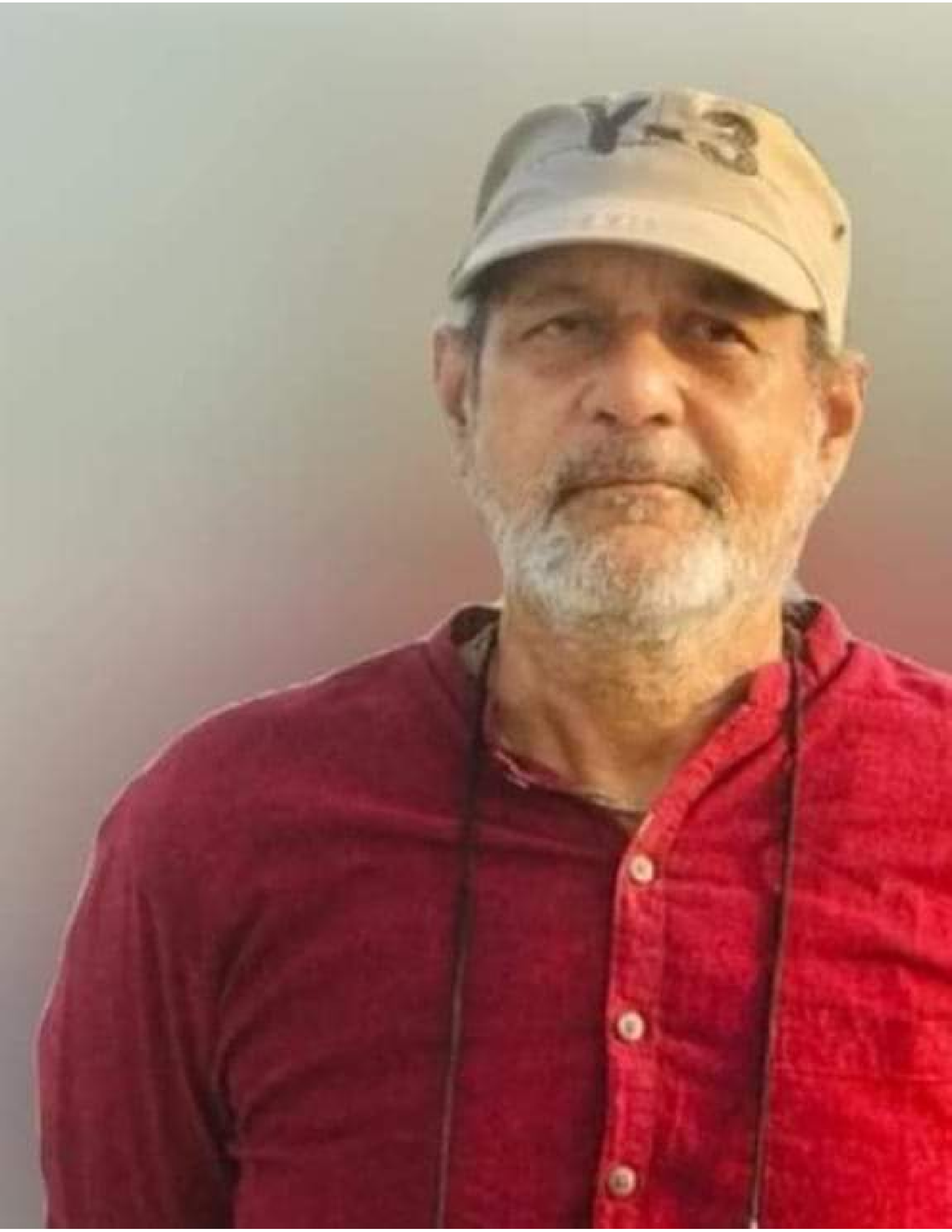

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents from the Chambal Archives Collection in Etawah, UP

The Archive was collected over a lifetime through the efforts of Shri Krishna Porwal ji (b. 27 July 1951) s/o Shri Jamuna Prasad, Hindi Poet. Archivist and Knowledge Aficianado

The Archives contains around 80,000 books including old newspapers and pre-Independence Journals predominantly in Hindi and Urdu.

Several Books are from the 17th Century. Atleast two manuscripts are also in the Archives - 1786 Copy of Rama Charit Manas and another Bengali Manuscript.Also included are antique painitings, antique maps, coins, and stamps from all over the World.

Chambal Archives also has old cameras, typewriters, TVs, VCR/VCPs, Video Cassettes, Lanterns and several other Cultural and Technological Paraphernelia

Collectors and Art/Literature Lovers can contact him if they wish through his facebook page

Scanning and uploading by eGangotri Digital Preservation Trust and Sarayu Trust Foundation.